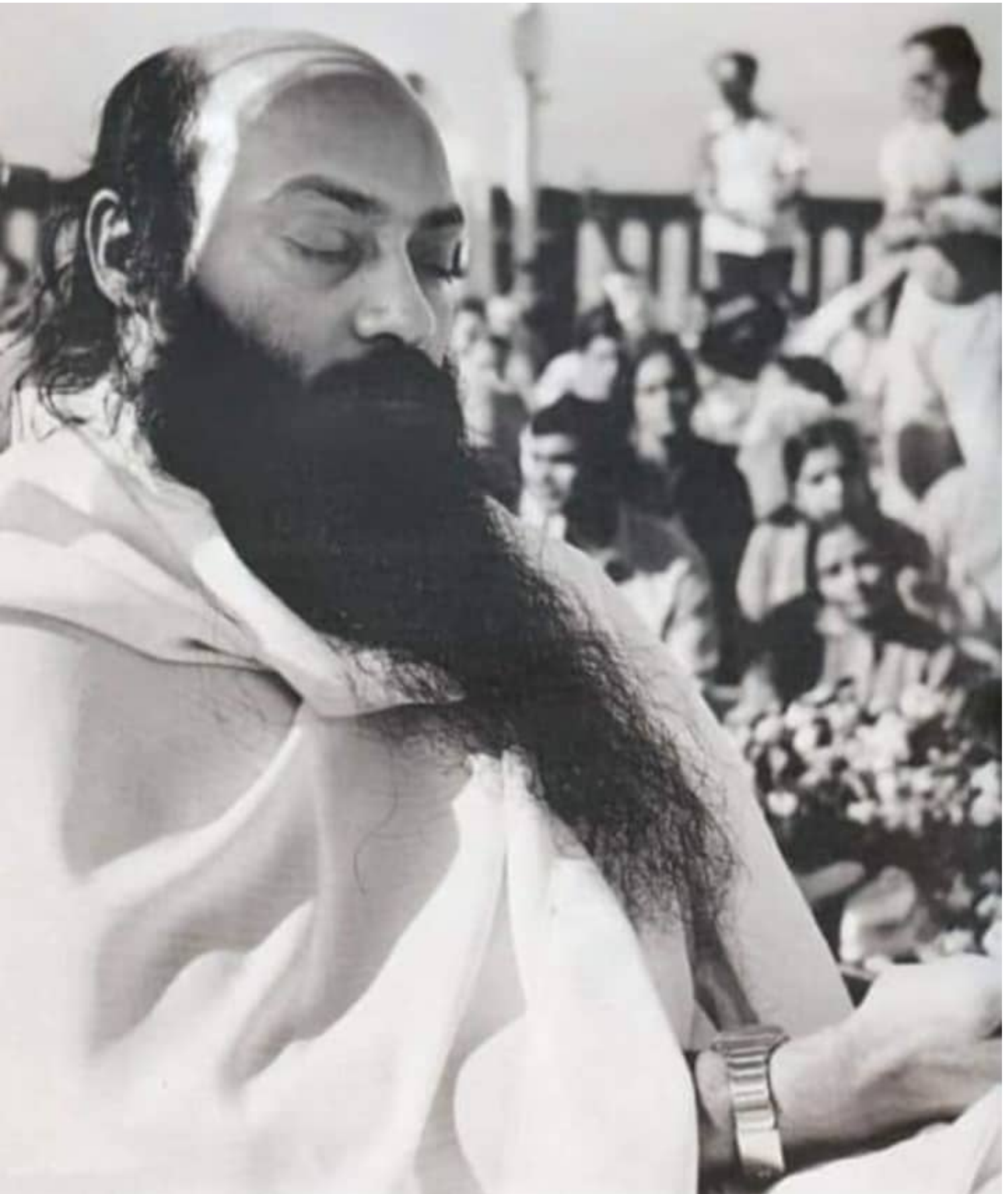










दुनिया कसी बावरी,

पत्थर पूजन जाए।

घर की चक्की कोई ना पूजे,

जिसका पीसा खाए ॥

कबीर दास • तर्कशील कलम



ॐ श्री परमात्मने नमः

हे
नाथ!
मेरे
नाथ!



मैं
आप
को
भूलों
नहीं !

भगवत्प्राप्ति के जितने भी साधन
है, उन सबमें उत्तम-से-उत्तम
साधन है-भगवान को हर समय
याद रखना । इसके समान और
कोई साधन है ही नहीं । चाहे कोई
उत्तम-से-उत्तम भी कर्म हो, पर
वह भगवत स्मृति के समान नहीं
है । चाहे भक्ति का मार्ग हो, चाहे
ज्ञान का, चाहे योग का । सभी
मार्गोंमें भगवान की स्मृति की ही
परम आवश्यकता है ।

-श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका सेठजी

पदार्थों में समस्या नहीं है हमारे उपयोग करने में समस्या है। कभी-कभी विष की एक अल्प मात्रा भी दवा का काम करती है और दवा की अत्याधिक मात्रा भी विष बन जाती है। विवेक से, संयम से, जगत का भोग किया जाये तो कहीं समस्या नहीं है।

संसार का विरोध करके कोई इससे मुक्त नहीं हुआ। बोध से ही इससे ज्ञानीजनों ने पार पाया है। संसार को छोड़ना नहीं, बस समझना है। परमात्मा ने पेड़-पौधे, फल-फूल, नदी, वन, पर्वत, झरने और ना जाने क्या-क्या हमारे लिए नहीं बनाया ? हमारे सुख के लिए, हमारे आनंद के लिए ही तो सबकी रचना की है।

संसार की निंदा करने वाला अप्रत्यक्ष में भगवान् की ही निंदा कर रहा है। किसी चित्र की निंदा चित्र की नहीं अपितु चित्रकार की ही निंदा तो मानी जाएगी। हर चीज भगवान् की है, कब, कैसे, कहाँ, क्यों और किस निमित्त उसका उपयोग करना है यह समझ में आ जाये तो जीवन को महोत्सव बनने में देर ना लगेगी।

The Great Kabir



गुरु
आज्ञा मानै नहीं,
चलै अट-पटी चाल,
लोक वेद दोनो गये,
आगे
सिर पर काल ॥

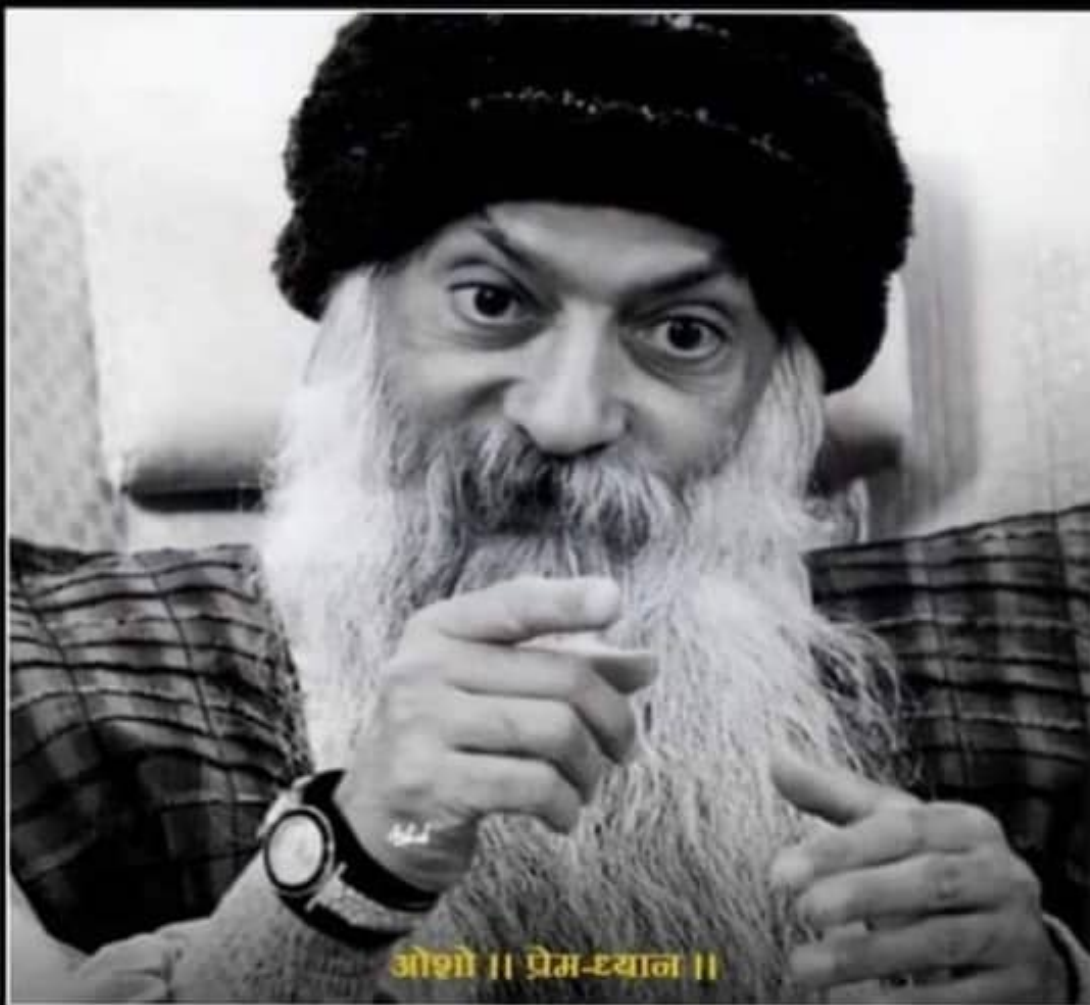


आप थोड़े दिन, सात दिन के लिए एक कमरे में बंद हो जाएं, जहां कोई दुख पहुंचाने नहीं आता, कोई गाली नहीं देता, कोई क्रोध नहीं करवाता। आप चकित हो जाएंगे कि सात दिन में अचानक आप किसी क्षण में दुखी हो जाते हैं, जब कि कोई दुख पहुंचाने वाला नहीं है। और किसी क्षण में अचानक क्रोध से भर जाते हैं, जब कि किसी ने कोई गाली नहीं दी, किसी ने कोई अपमान नहीं किया। और किसी समय आप बड़े आनंदित हो जाते हैं, जब कि कोई प्रेम करने वाला नहीं है।

अगर सात दिन आप मौन में, स्वात में बैठें, तो आप चकित हो जाएंगे कि आपके भीतर भावों का वर्तन चलता ही रहता है। और बिना किसी के आप सुखी-दुखी भी होते रहते हैं।

ओशो-
गीता दर्शन





ओशो ॥ प्रेम-ध्यान ॥

समस्या आने पर न्याय नहीं समाधान
होना चाहिए..

क्योंकि न्याय में एक के घर दीप
जलते हैं और दूसरे के घर
अंधेरा होता है..

मगर समाधान में दोनों के घर दीप
जलते हैं..



बांमन झुठा, वेद बी झुठा
झुठा बांमन अकेला रे!
पत्थर मुर्ती कछु नही खाती
खाते बांमन चेला रे!!

संत रविदास

किसी की मानकर चलने के लिए
तुम्हारा जन्म नहीं हुआ है, किसी के
गुलाम मत बनना..!!
-OSHO'A.





कुछ लोग अपना सारा जीवन इसमें ही व्यतीत करते हैं कि उनके बच्चे बड़े हों, उनके बच्चे शिक्षित हों, उनके बच्चे विवाहित हों, उनके बच्चे व्यवस्थित हो जाएं। उनसे कोई पूछे कि यही तुम्हारे पिता कर रहे थे तुम्हारे लिए, यही तुम्हारे बच्चे उनके बच्चों के लिए करेंगे, यह गोरखधंधा किसलिए है? तुम्हारे पिता इसलिए जिए कि तुम बड़े हो जाओ, शिक्षित हो जाओ, व्यवस्थित हो जाओ; तुम इसलिए जी रहे हो कि तुम्हारे बच्चे बड़े हो जाएं; तुम्हारे बच्चे भी इसलिए जिएंगे। इस जीने का प्रयोजन क्या है?

ओशो



बनाया होगा...देखा होगा सूली पर लटके हुए। अगर वे न भी लटकते तो ईसाई उनको लटका देते, क्योंकि गंभीर आदमी को सूली पर लटका होना चाहिए। लेकिन अब हम जीसस को हंसा कर रहेंगे। हमें तो जीसस की नई तस्वीरें बनानी पड़ेंगी, जिनमें वे हंस रहे हों, फूल के बगीचे में खड़े हों।

नये आदमी को सुखी और स्वस्थ और आनंदित--इस पृथ्वी पर; स्वर्ग में नहीं; इस पृथ्वी पर सुख और स्वास्थ्य को स्वीकार करना पड़ेगा तो हम एक विधायक नीति के आधार रख सकते हैं। और मुझे कोई कारण नहीं दिखाई पड़ता कि ये आधार क्यों नहीं रखे जा सकते हैं। मैं आपसे इतनी प्रार्थना करूंगा, इन दिशाओं में सोचें। बड़ा सवाल है, जिंदगी के सामने बड़ी समस्या है कि हम नई नीति को कैसे जन्म दें। इन दिशाओं में सोचें। शायद हम सब सोचें तो हम कुछ रास्ते खोज लें।

मैं कोई उपदेश देने वाला नहीं हूँ कि मैं आपको उपदेश दूँ और आप ग्रहण कर लें। वह मामला छोड़ें, वह गुरु-शिष्य का संबंध गया। अब कोई उपदेश देगा, कोई ग्रहण करेगा, यह सवाल नहीं है। हम सब इकट्ठे होकर सोच सकें, हम सब मित्र की तरह साथ सोच सकें और नये मनुष्य की रूप-रेखा निर्मित कर सकें, इस दिशा में मैंने कुछ बातें कहीं।

मेरी बातों को इतने शांति और प्रेम से सुना, उससे बहुत अनुगृहीत हूँ। और अंत में सबके भीतर बैठे परमात्मा को प्रणाम करता हूँ। मेरे प्रणाम स्वीकार करें।

समाप्त

ओशो प्रवचन माला "स्वर्ण पाखी था जो कभी अब भीखारी जगत का" के प्रवचन संख्या 11 से....



कुछ लोग अपना सारा जीवन इसमें ही व्यतीत

— — — — —



अगर आप रास्ते से गुजरते हैं और जो भी आदमी मिलता है, उससे आप कहते हैं, बड़ा दुख में हूँ, बड़ी परेशानी में हूँ, तो आप अनैतिक आदमी हैं। क्योंकि आपका यह दुख दुसरे को दुखी करता है। मैं आपको नैतिक आदमी नहीं कहूँगा। जो आदमी अपने दुख का रोना रो रहा है सुबह से शाम तक, वह बिलकुल अनैतिक है। क्योंकि वह दूसरों को भी दुखी करने के उपाय कर रहा है लेकिन जो आदमी मुस्कुरा रहा है और जो दूसरों को मुस्कुराहट के रास्ते बना रहा है वह आदमी नैतिक है। क्योंकि वह आदमी को खुशी की तरफ ले जाने का मार्ग खोज रहा है।

लेकिन हमारे पुराने साधु-संत सब उदास और गंभीर थे। असल में संत होने के लिए रोती हुई शक्ल लेकर पैदा होना बहुत जरूरी है। नहीं तो कोई आदमी संत नहीं हो सकता है। बिलकुल रोती शक्ल हो कि आंसू अब टपके...अब टपके, तभी कोई संत हो सकता है। संत होने के लिए अगर हंसती हुई, स्वस्थ...तो कठिनाई की बात है। आप संत नहीं हो सकते। संत होने के लिए गंदा होना जरूरी है, इसलिए साधु-संत नहाते नहीं। जैनियों के मुनि नहाते नहीं, स्नान नहीं करते बल्कि जैन शास्त्रों में यह लिखा है कि हाथ पर मैल जम जाए तो उसे पोंछना भी पाप है। उसको जमने देना चाहिए--सब तरह की गंदगी ओढ़ कर सब तरह की उदासी, बीमारी ओढ़ कर...

हिंदुस्तान से एक आदमी जर्मनी लौटा--काउंट कैसरलिंग, तो उसने अपनी डायरी में लिखा कि हिंदुस्तान में जाकर मुझे पहली दफा पता चला कि स्वास्थ्य एक अनैतिकता है, बीमार होना नैतिकता है। और हिंदुस्तान में जाकर मुझे पता चला कि अस्वच्छ रहना, गंदगी से रहना अध्यात्म है। स्वच्छ रहना और ताजे रहना, साफ-सुथरे रहना भौतिकवाद है, मैटीरियलिज्म है।

नहीं, यह सब हमें बदल देना पड़ेगा। एक नई नीति--स्वस्थ सुखी आदमी को, मुस्काराते आदमी को स्वीकार करेगी। हमें बुद्ध और महावीर की नई मूर्तियां ढालनी होंगी, जिनमें वे खिलखिला कर हंस रहे हों। अब उदास महावीर और उदास बुद्ध नहीं चल सकते हैं। ईसाई तो कहते हैं कि जीसस कभी हंसे ही नहीं क्योंकि हंसने जैसी छोटी-ओछी चीज जीसस कर सकते हैं! उनकी किताबें कहती हैं: 'जीसस नेवर लॉफ्ड'--हंसे ही नहीं कभी जिंदगी में। तो उन्होंने जैसा जीसस को बनाया होगा...देखा होगा सूली पर लटके हुए। अगर वे न भी लटकते तो ईसाई उनको लटका देते, क्योंकि गंभीर आदमी को सूली पर लटका



अब सुख को स्वर्ग में रखने की कोई जरूरत नहीं। हम उसे पृथ्वी पर ही बसा सकते हैं। इसलिए एक नई पॉजिटिव मारैलिटी, जो कहती हो, यह करो, सुख के साधन बढ़ाओ। अब जैसे समझें; हम एक आदमी को महात्मा कहेंगे, क्योंकि उसने लंगोटी लगा ली है। अब लंगोटी कोई लगा ले, इसकी मौज है। इसमें महात्मा होने की क्या बात है? आपको लंगोटी लगाने का शौक है, मजे से लगाइए। आपको सर्दी में खड़े होने का शौक है, खड़े हो जाइए। आपको धूप में खड़े होना है, धूप में खड़े हो जाइए। इसमें नैतिक होने का क्या अर्थ है? लेकिन यह आदमी महात्मा है। लेकिन एक आदमी है दूसरा, जो रात में मरघट से मुर्दे को चुरा कर और चीर-फाड़ करके पता लगा रहा है कि आदमी का पेट कैसे काम करता है? यह आदमी महात्मा नहीं था पहले। यह चोर था। इसने मुर्दा चुरा लिया। यह पकड़ा जाए तो इसकी सजा हो जाती। लेकिन इस आदमी ने दुनिया के सुख बढ़ाने में बड़ा काम किया। आज अगर हमारे पेट स्वस्थ हैं, तो उन आदमियों की वजह से जिन्होंने मरघट से मुर्दे चुराए। और जिन्होंने मरघट के मुर्दे चुरा कर रात के अंधेरे में छुपके उनको चीरा और फाड़ा और पता लगाया कि आदमी का पेट कैसे काम करता है। अल्सर कैसे बन जाता है और अपेंडिसाइटिस कहां है और क्या है और क्यों है। जिन लोगों ने रात के अंधेरे में आदमी के सुख की तलाश की...आदमी के ही विरोध के बावजूद, क्योंकि आदमी चारों तरफ कह रहा था कि यह बात गलत है, यह नहीं होनी चाहिए। आप मुर्दा कैसे चुरा सकते हैं। उन लोगों को हमने अब तक महात्मा नहीं कहा। लुई-फिशर को हम महात्मा नहीं कहेंगे। हम एक आदमी को महात्मा कह देंगे जो कि ठंड में बैठा हुआ है! बड़े मजे की बात है, ठंड में कोई बैठे, बड़े मजे से बैठे। कोई तकलीफ देने की जरूरत नहीं। उसको रोकने की भी कोई जरूरत नहीं क्योंकि किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचा रहा है। लेकिन ठंड में बैठना, महात्मा होने का क्या मतलब है? नैतिक होने का क्या अर्थ है? पॉजिटिव मारैलिटी होगी भविष्य की...जो आदमी मनुष्य के सुख को बनाने के लिए कुछ कर रहा है वह आदमी नैतिक होगा। अगर हम एक विधायक नीति की धारणा दे सकें--हम कैसे मनुष्य के सुख को बढ़ायें? और मनुष्य का सुख हजार रास्तों से बढ़ाया जा सकता है। और ध्यान रहे, कोई आदमी अकेला सुखी नहीं हो सकता। हम सब मिल कर अगर चेष्टा करें तो सुख का फूल खिल सकता है। हजार रास्ते हैं। आप रास्ते पर निकलते हैं और अगर उदास चेहरे से निकलते हैं आप, तो मैं आपको अनैतिक कहूंगा।



करा।

अगर बाइबिल के टेन कमांडमेंट्स हम देखें तो वे सब यह कहेंगे कि यह मत करो, यह मत करो, यह मत करो। नई नैतिकता कहेगी, यह करो, यह करो, यह करो। 'मत करो' अर्थहीन है। आप झूठ न बोलें, तो इतना ही है कि आपको झूठ से जो नुकसान पहुंचता है, वह नहीं पहुंच रहा है। लेकिन इससे जिंदगी बहुत सुख को उपलब्ध न हो जाएगी। अगर जिंदगी को सुखी बनाना है तो मारेलिटी का पॉजिटिव होना पड़ेगा की यह करो। पुरानी नैतिकता कहती हैं कि चींटी को मत मारो, तो बच कर निकल जाओ। और अगर चींटी मर रही हो तो तुम्हें क्या प्रयोजन है? तुम बच कर बाहर निकलो। तुम्हें मारना नहीं है। पुरानी नैतिकता कहती है, अहिंसा। अहिंसा निगेटिव शब्द है--हिंसा मत करो। वह कहती है कि किसी की छाती में छूरा मत मारो। लेकिन वह यह नहीं कहती है कि किसी की छाती में छूरा लगा हो तो निकालो। पुरानी नैतिकता निगेटिव है। वह कहती है, चींटी मरती है, तो तुम्हें कोई मतलब नहीं है। तुम अपने रास्ते जाओ। तुम मत मारो। लेकिन तुम्हारे न मारने से भी चींटी मर सकती है। तो उसे बचाने का कोई उपाय पुरानी नीति में नहीं है। पुरानी नीति का निषेधात्मक रूप दुख के कारण था। नई नीति का पॉजिटिव रूप--अगर हम सुख को केंद्र पर रखते हैं--तो सारी मनुष्य-जाति को सुखी होने का अधिकार है। स्वर्ग कहीं और नहीं है। स्वर्ग हमें कहीं और रखना पड़ा था। सिर्फ इसलिए कि पृथ्वी पर बनाने में हम असमर्थ हो गए थे। पृथ्वी दुख थी तो सुख हमें स्वर्ग में रखना पड़ा था। अब सुख को स्वर्ग में रखने की कोई जरूरत नहीं। हम उसे पृथ्वी पर ही बसा सकते हैं। इसलिए एक नई पॉजिटिव मारेलिटी, जो कहती हो, यह करो, सुख के साधन बढ़ाओ। अब जैसे समझें; हम एक आदमी को महात्मा कहेंगे, क्योंकि उसने लंगोटी लगा ली है। अब लंगोटी कोई लगा ले, इसकी मौज है। इसमें महात्मा होने की क्या बात है? आपको लंगोटी लगाने का शौक है, मजे से लगाइए। आपको सर्दी में खड़े होने का शौक है, खड़े हो जाइए। आपको धूप में खड़े होना है, धूप में खड़े हो जाइए। इसमें नैतिक होने का क्या अर्थ है? लेकिन यह आदमी महात्मा है। लेकिन एक आदमी है दूसरा, जो रात में मरघट से मुर्दे को चुरा कर और चीर-फाड़ करके पता लगा रहा है कि आदमी का पेट कैसे काम करता है? यह आदमी महात्मा नहीं था पहले। यह चोर था। इसने मुर्दा चुरा लिया। यह पकड़ा जाए तो इसकी सजा हो जाती। लेकिन इस आदमी ने



करक हा कसालशन आर सत्वना उपलब्ध का जा सकता था।

अब सब बदल गया है। अब दुख को स्वीकार करने की कोई भी जरूरत नहीं है। अगर दुख है तो हम जिम्मेवार है। अगर दुख है तो हम नहीं बदल रहे, इसलिए है। अब दुनिया में दीनता, पीड़ा, परेशानी को स्वीकार करने की कोई जरूरत नहीं है। अब हमें सुख को केंद्र पर रखना पड़ेगा। और जो आदमी सुखी होने को और सबको सुखी करने की कोशिश में संलग्न है, उसे साधु, सज्जन और अच्छा आदमी कहना पड़ेगा। जो आदमी लोगों के दुख बढ़ाने की कोशिश कर रहा है त्याग के, तप के नाम पर, उस आदमी को नैतिकता के दायरे के बाहर करना पड़ेगा। वह आदमी अनैतिक है।

अब नैतिक वह आदमी है, जो जिंदगी में ज्यादा फूल सुख के खिलाने में संलग्न है। अब वह आदमी नैतिक है, जो जिंदगी से बीमारियां दूर करने में लगा है। पुरानी नैतिकता बड़ी अजीब थी। एक आदमी चोरी न करे, नैतिक हो जाता था। एक आदमी झूठ न बोले, नैतिक हो जाता था। एक आदमी किसी की स्त्री को न भगाए, नैतिक हो जाता है। नैतिकता निगेटिव थी। आपने कभी खयाल किया? पुरानी नैतिकता कहती थी: डू नॉट डू--यह मत करो। बस, न करो...न करो...न करो...पुरानी सारी नैतिकता निगेटिव थी। वह कहती थी, चोरी मत करो। वह कहती थी झूठ मत बोलो। वह कहती थी, यह मत करो, यह मत करो, यह मत करो।

अगर बाइबिल के टेन कमांडमेंट्स हम देखें तो वे सब यह कहेंगे कि यह मत करो, यह मत करो, यह मत करो। नई नैतिकता कहेगी, यह करो, यह करो, यह करो। 'मत करो' अर्थहीन है। आप झूठ न बोलें, तो इतना ही है कि आपको झूठ से जो नुकसान पहुंचता है, वह नहीं पहुंच रहा है। लेकिन इससे जिंदगी बहुत सुख को उपलब्ध न हो जाएगी। अगर जिंदगी को सुखी बनाना है तो मारेलिटी का पॉजिटिव होना पड़ेगा की यह करो। पुरानी नैतिकता कहती हैं कि चींटी को मत मारो, तो बच कर निकल जाओ। और अगर चींटी मर रही हो तो तुम्हें क्या प्रयोजन है? तुम बच कर बाहर निकलो। तुम्हें मारना नहीं है। पुरानी नैतिकता कहती है, अहिंसा। अहिंसा निगेटिव शब्द है--हिंसा मत करो। वह कहती है कि किसी की छाती में छूरा मत मारो। लेकिन वह यह नहीं कहती है कि किसी की छाती में छूरा लगा हो तो निकालो। पुरानी नैतिकता निगेटिव है। वह कहती है, चींटी मरती है, तो तुम्हें कोई मतलब नहीं है। तुम अपने रास्ते जाओ। तुम मत मारो। लेकिन तुम्हारे न मारने से भी चींटी मर

**रजनीशपुरम**

Munabai Makvana · 1d · 🌐

...



ओशो

भारत माता की जय, पाकिस्तान माता की जय, जर्मन माता की जय,
अब भी जारी है।

नये मनुष्य को इन सब माताओं को विदा करना होगा। एक ही माता
काफ़ि है--पृथ्वी-माता; अलग-अलग माता बांटने की कोई जरूरत नहीं।
और पृथ्वी बंटी हुई नहीं है। पृथ्वी अखंड है।

एक अंतिम बात और कहना चाहूंगा--पुरानी नीति दुख को केंद्र मान कर
चलती थी। उसने स्वीकार कर लिया था कि दुख जीवन का केंद्र है।

उसके कारण थे। पुराने आदमी ने सुख बहुत कम जाना। पुराना आदमी
दुख में ही जीआ। असल में सुख को पैदा करने की व्यवस्था पहली दफा
विज्ञान और टेक्नालॉजी से हमें अब उपलब्ध हुई है। अब तक सुख को
पैदा करने की व्यवस्था ही न थी। आज के पहले दस बच्चे पैदा होते थे
तो आठ बच्चें मर जाते थे। दो बच्चे जीते थे। और जिस समाज में दस
बच्चें मरते हों, उसमें दो बच्चे भी मरे-मरे ही जी सकते थे। क्योंकि
उनको भी इतना अदभुत स्वास्थ्य नहीं मिल सकता था।

आज से पुरानी दुनिया में आदमी किसी भांति जी रहा था--दुख में,
बीमारी में, पीड़ा में, परेशानी में। दुख जीवन का केंद्र था, इसलिए बुद्ध
कह सके कि जीवन दुख है। इसलिए पुराने विचारक कह सके कि जीवन
दुख है। दुख को केंद्र मान कर चले थे हम। और हमने दुख को स्वीकार
कर लिया था, दरिद्रता को स्वीकार कर लिया था। इसलिए पुरानी
नैतिकता दुख को वरण करने को आदर देती थी कि जो आदमी अपनी
तरफ से दुख को वरण करता है, वह बहुत नैतिक आदमी है। वह बहुत
सज्जन आदमी है, संत है, साधु है, महात्मा है। पुरानी नैतिकता दुख को
वरण करने वाले को तपस्वी, त्यागी और महान कहती थी। क्योंकि दुख
था और दुख से बचने का कोई उपाय न था। तब फिर दुख को स्वीकार
करके ही कंसोलेशन और संतुष्टि उपलब्ध की जा सकती थी।

अब सब बदल गया है। अब दुख को स्वीकार करने की कोई भी जरूरत
नहीं है। अगर दुख है तो हम जिम्मेवार हैं। अगर दुख है तो हम नहीं
बदल रहे, इसलिए है। अब दुनिया में दीनता, पीड़ा, परेशानी को स्वीकार
करने की कोई जरूरत नहीं है। अब हमें सुख को केंद्र पर रखना पड़ेगा।

अगर कोई वस्तुओं को छोड़कर भाग जाए,
तो थोड़े दिन में उन्हें भूल जाता है।
लेकिन भूल जाना, मुक्त हो जाना नहीं है।

भाग जाना, मुक्त हो जाना नहीं है।

namdev Ramer
सच तो यह है, भागता वही है,
जो जानता है कि

मैं साथ रहकर मुक्त न हो सकूंगा।
अन्यथा भागने का कोई प्रयोजन नहीं है।
भागता वही है, जो अपने को कमजोर पाता है।

आचार्य श्री रजनीश
गीता दर्शन अ.6.अपरिग्रही चित्त प्र.64/7



ओशो अहोभाव
तृषा गई एक बूंद से
प्रवचन-04

खो जाना ही पा लेने का मार्ग है।
झुक जाना ही उठ जाने की कला है।



हमारे मुल्क में आदतें भी तो बड़ी अजीब हैं न। अगर कोई आदमी कहे, मेरे पैर मत छुओ! यह पैर छुलाने की अच्छी तरकीब भी है। यह बहुत बढ़िया तरकीब है। अगर लोगों से कहो, पैर मत छुओ! तो लोग पैर छूने और भी आ जाएंगे। लोगों से कहो, दूर रहो! तो वे और पास आएंगे। अगर लोगों को गाली दो, तो वे समझेंगे कि परमहंस है यह आदमी। यह हमारी गलत आदत हजारों वर्ष की है। और होशियार और चालाक लोग इसका फायदा भी उठा रहे हैं। क्योंकि लगता है कि जो आदमी कहता है, मेरे चरण मत छुओ! बड़ा महापुरुष है। इसके तो चरण जरूर छूने चाहिए।

इसलिए नहीं कहा है मैंने। कहा है मैंने इसलिए कि जरूर झुको कहीं, लेकिन गलत जगह मत झुक जाना। झुको जरूर, झुको जरूर, झुकना ही कला है धर्म की; टूट जाओ, मिट जाओ, बिखर जाओ, बह जाओ। लेकिन कहाँ? अनंत के लिए। सर्व के लिए। सबके लिए। वह जो व्यापक है, वह जो विराट है, वह जो फैला है, उसके लिए। सीमित के लिए, क्षुद्र के लिए, क्षण के लिए, जो आज है और कल नहीं होगा, उसके लिए मत झुको।

लेकिन ध्यान रहे, झुकने के मैं विरोध में नहीं हूँ। झुकना ही तो राज है, मिट जाना ही तो राज है। जब तक हम अपने को मजबूती से पकड़े हुए हैं और झुक नहीं सकते, टूट नहीं सकते, तब तक हम पहुंच नहीं सकते वहां जहां पहुंचना है। मिट जाना ही पा लेने का सूत्र है।

खो जाना ही पा लेने का मार्ग है। झुक जाना ही उठ जाने की कला है।

तृषा गई एक बूंद से

प्रवचन-04

ओशो



लाओत्से कहता था: धन्य हैं वे जो झुके हुए हैं, क्योंकि उनको झुकना नहीं पड़ेगा।

इसे मैं फिर दोहरा दूँ, यह आदमी बहुत अदभुत बात कहता है। वह कहता है, धन्य हैं वे जो झुके हुए हैं, क्योंकि फिर उनको कोई झुका नहीं सकता। अब झुके आदमी को कैसे झुकाइएगा?

लाओत्से कहता है, धन्य हैं वे जो हारे हुए हैं, क्योंकि उनको कोई हरा नहीं सकता। अब हारे हुए आदमी को कैसे हराइएगा? जीते हुए आदमी को हमेशा हार का डर होता है। इसलिए जीता हुआ आदमी पूरा जीता हुआ कभी नहीं है, क्योंकि हार का डर मौजूद है।

लाओत्से कहता है, धन्य हैं वे जो हारे हुए हैं--वे पहले से ही हारे हुए हैं--क्योंकि उनको अब कोई हरा नहीं सकता। धन्य हैं वे जो पीछे खड़े हैं, क्योंकि अब और पीछे हटाने का कोई उपाय नहीं है।

लेकिन ये किससे पीछे खड़े हैं? किससे हारे हुए हैं? किससे झुके हुए हैं? जो अनंत के प्रति झुके हुए हैं--वे उठ गए, उठा लिए गए। जो अनंत के प्रति हारे हुए हैं--वे जीत गए, जीत गए, अब हार की कोई संभावना न रही।

जरूर मैं कहता हूँ कि मेरे चरणों में मत झुकना। क्योंकि ये मेरे और तेरे के जो चरण हैं, यह मेरे और तेरे का जो भाव है, यही भाव झुकने में बाधा है। जहां मेरात्तेरा नहीं रह जाता, वहीं झुकना शुरू हो जाता है, वहीं झुकना आ जाता है।

तो नाराज मत हो जाना। कुछ मित्रों ने मुझसे कहा कि हम बहुत...ऐसी बात आपने कह दी, हम तो छुएंगे पैर!

हमारे मुल्क में आदतें भी तो बड़ी अजीब हैं न। अगर कोई आदमी कहे, मेरे पैर मत छुओ! यह पैर छुलाने की अच्छी तरकीब भी है। यह बहुत बढ़िया तरकीब है। अगर लोगों से कहो, पैर मत छुओ! तो लोग पैर छूने और भी आ जाएंगे। लोगों से कहो, दूर रहो! तो वे और पास आएंगे। अगर लोगों को गाली दो, तो वे समझेंगे कि परमहंस है यह आदमी। यह



इसलिए कहता हूं, कोई झुकने की जरूरत नहीं है। झुको जरूर! यह मत सोच लेना... क्योंकि यह बड़ा डेलीकेट, बहुत नाजुक बात है। क्योंकि जब मैं कहता हूं कि मेरे चरणों में मत झुको, तो कुछ हैं जो बड़े खुश होंगे कि बहुत बढ़िया बात कही। इसलिए नहीं कि वे किन्हीं और चरणों में झुकेंगे परमात्मा के, बल्कि इसलिए कि झुकने में उनको बड़ी बेचैनी मालूम पड़ती है, झुक नहीं सकते कहीं भी। वे कहेंगे, बिल्कुल दुरुस्त, एकदम ठीक बात कही। जहां भी भीतर अहंकार मजबूत है, वे कहेंगे कि बिल्कुल ठीक बात कही। झुकना नहीं चाहिए!

लेकिन मैंने झुकने को मना नहीं किया है, मैंने मेरे चरणों में झुकने को मना किया है। इस भूल में मत पड़ जाना कि मैंने झुकने को मना किया है। मैंने तो बेकार झुकने को मना किया है। यह बिल्कुल बेकार झुकना है। एक आदमी के चरणों में झुकने का क्या मतलब है? कोई भी मतलब नहीं है। यह शरीर बिल्कुल मिट्टी है। इस मिट्टी में झुकने का कोई मतलब नहीं है। यह मिट्टी की पूजा है। फिर यहीं से आदतें बिगड़नी शुरू हो जाती हैं। फिर यह आदमी खत्म हो जाए तो एक पत्थर की मूर्ति बना कर उसमें झुकना शुरू हो जाता है। वह झुकने की गलत आदत हो गई।

नहीं; एक चिन्मय जीवन है चारों तरफ, उसके चरण चारों तरफ हैं, उसके चरणों में झुकने के लिए हाथ-पैर बांध कर सिर नहीं झुकाना पड़ता; उसके चरणों में झुकना एक आंतरिक लोच, एक आंतरिक समर्पण, एक भीतरी समर्पण है। झुक गया आदमी!

और यह बड़े मजे की बात है कि जो झुक जाता है उसके चरणों में, उसका फिर झुकना बंद हो जाता है, फिर और झुकने की कोई जरूरत नहीं रह जाती। जो झुक जाता है उसके चरणों में, उससे ऊंचा कोई नहीं रह जाता, वह सबसे ऊंचा हो जाता है। वे चरण इतने ऊंचे हैं कि उनमें झुकने में आप नीचे नहीं हो जाते, उनमें झुक कर आप ऊंचे हो जाते हैं, वे चरण इतने ऊंचे हैं।

लाओत्से कहता था: धन्य हैं वे जो झुके हुए हैं, क्योंकि उनको झुकना नहीं पड़ेगा।

इसे मैं फिर दोहरा दूं, यह आदमी बहुत अदभुत बात कहता है। वह



अहोभाव

एक मित्र ने पूछा है कि मैं मना करता हूं कि मेरे पैर मत छुएं! लेकिन मैं क्यों मना करता हूं?

रामकृष्ण के पास एक आदमी गया। रामकृष्ण से कहने लगा, गंगा-स्नान को जा रहा हूं। सुना है मैंने, परमहंसदेव, कि वहां नहाने से पाप बह जाते हैं।

परमहंस ने कहा, बिलकुल बह जाते हैं। लेकिन गंगा से बाहर मत निकलना! निकले कि फिर चढ़ जाते हैं। वे जो झाड़ देखे हैं न किनारे पर खड़े हुए, जब तक तुम डुबकी लगाते हो, गंगा तो पवित्र है, जब तुम डुबकी लगाओगे, वे झाड़ पर बैठ जाएंगे। वे बड़े-बड़े झाड़ इसीलिए हैं गंगा के किनारे, पता है आपको? वे उस पर बैठे रहेंगे कि बेटा, कब निकलते हो! और आखिर बेटा कब तक डूबा रहेगा? थोड़ी-बहुत देर में निकलेगा कि निकल गए पाप, वे फिर उतर कर सवार हो जाएंगे।

तो रामकृष्ण ने कहा, ऐसी गंगा में डूबो जहां से निकलना न पड़े। ऐसी भी गंगा है परमात्मा की, जहां डूबो तो निकलना न पड़े। निकलने को जगह ही नहीं है फिर वहां, डूबे तो डूबे ही, वही-वही है। फिर निकलना भी चाहो तो कहीं भागने का उपाय नहीं है, क्योंकि वही-वही है।

तो मैं भी कहता हूं कि चरण ऐसे भी हैं कि जहां झुको तो झुक ही जाओ, फिर उठना न पड़े। उन्हीं चरणों में झुकने का अर्थ है। जिन चरणों में झुको और उठो, तो बेकार की कवायद हो जाती है, कोई मतलब नहीं होता।

इसलिए कहता हूं, कोई झुकने की जरूरत नहीं है। झुको जरूर! यह मत सोच लेना...क्योंकि यह बड़ा डेलीकेट, बहुत नाजुक बात है। क्योंकि जब मैं कहता हूं कि मेरे चरणों में मत झुको, तो कुछ हैं जो बड़े खुश होंगे कि बहुत बढ़िया बात कही। इसलिए नहीं कि वे किन्हीं और चरणों में झुकेंगे परमात्मा के, बल्कि इसलिए कि झुकने में उनको बड़ी बेचैनी मालूम पड़ती है, झुक नहीं सकते कहीं भी। वे कहेंगे, बिलकुल दुरुस्त, एकदम ठीक बात कही। जहां भी भीतर अहंकार मजबूत है, वे कहेंगे कि





उस फकीर ने कहा, तुम बीच में मत बोलो। तीन दिन तक मुझे इसी बात की जरूरत थी। वह मेरी जरूरत का खयाल रखता है। तीन दिन तक भूखे रखना, तीन दिन तक भूखे रहना मेरे लिए लाभ का हुआ है। तीन दिन तक भूख और अपमान खाने के बाद भी मैं प्रार्थना कर सकूँ, यही मेरी जरूरत थी। उसने अवसर दिया। सुख मिले तब धन्यवाद देना तो बहुत आसान है पागलो! जब दुःख मिले तब धन्यवाद देने की क्षमता प्रार्थना की ही छाती में होती है।

उसने मुझे एक मौका दिया। उसने मुझे एक अवसर दिया। मगर मैं भी समझ गया कि अवसर क्यों दे रहा है। वह इसलिए दे रहा है कि अब देखूँ। एक दिन उसने कुछ भी न दिया, भूखा रखा, फिर भी मैंने प्रार्थना की। दूसरे दिन भी उसने कहा, अच्छा ठीक है, एक दिन तूने कर ली, दूसरे दिन? दूसरा दिन भी बीत गया, अब यह तीसरा दिन भी आ गया। उसने फिर एक मौका दिया कि आज तीसरा दिन फिर आ गया। अब तू बिल्कुल भूखा है, जीर्ण—जर्जर है, गिरा पड़ता है, अब तू धन्यवाद देगा कि नहीं देगा? अब तो रुकेगा न? अब तो बंद कर देगा प्रार्थना। मगर मैंने कहा कि तू मुझे हरा न सकेगा। मैं धन्यवाद देता ही जाऊँगा। अंतिम घड़ी तक धन्यवाद देता चला जाऊँगा। जब तक श्वास है, धन्यवाद उठेगा। श्वास ही न रहे तो फिर बात और। मरते क्षण तक ओंठ पर धन्यवाद होगा। तू अगर मौत भी देगा तो वह मेरी जरूरत है तो ही देगा; नहीं तो क्यों देगा?

इसका नाम श्रद्धा है। इसका नाम प्रार्थना है। प्रार्थना की नहीं जाती। प्रार्थना बड़े गहरे अनुभव से प्रकट होती है।

ओशो

संकलन-रामजी 🙏🌹🌹



13

3 comments • 4 shares



Like



Comment



Send



Share



एकांत

Vandana Nagotra · 26m · 🌐



**Osho Nirvana (ओशो निर्वाण समूह)**

...



Satish Purohit · 13h · 🌐

एक सूफी फकीर रोज अपनी प्रार्थना में परमात्मा को धन्यवाद देता था : कि अहा, तू भी खूब है! मुझ नाकुछ को इतना देता है कि मैं कैसे तेरा धन्यवाद करूं? किस जबां से तेरा धन्यवाद करूं?

नंगा फकीर! उसके पास कुछ था भी नहीं। और रोज धन्यवाद दे। उसके शिष्य भी थक गए थे उसकी बातें सुन-सुनकर। फिर एक दिन तो ऐसा हुआ कि तीन दिन तक खाना न मिला। यात्रा पर निकले थे, तीर्थयात्रा पर। न खाना मिला तीन दिन तक, न किसी गांव में ठहरने की जगह मिली।

लोग उस फकीर के खिलाफ थे, जैसे लोग फकीरों के खिलाफ सदा से रहे हैं। लोग कहते थे, वह फकीर कुछ उपद्रव की बातें कर रहा है, बगावती है। उसकी बातें कुरान से मेल नहीं खातीं। उसकी बातें मुहम्मद के विपरीत पड़ती हैं। वह फकीर अपने शिष्यों के बीच कहता है बैठकर : "अनलहक"—कि मैं परमात्मा हूं। यह बात ठीक नहीं है। यह कुफ्र है।

उसको तीन गांवों में तीन दिन तक ठहरने नहीं दिया गया। भोजन भी नहीं मिला। रेगिस्तान में थके—मांदे तीसरे दिन जब वे सांझ को रुके एक वृक्ष के नीचे, वह फकीर फिर अपने मुसल्ले को बिछाकर बैठ गया। फिर उसने हाथ जोड़े। शिष्य बैठे देख रहे थे, देखें आज क्या यह कहता है! भूखा तीन दिन का, थका—मांदा, धूलि—धूसरित! स्नान भी नहीं कर पाए, कहीं ठहर भी नहीं सके। मगर उसने फिर वही कहा कि हे प्रभु! उसकी आंखें चमक रही हैं आनंद से। उसके चेहरे पर फिर वही आनंद का भाव, फिर वही प्रार्थना : "हे प्रभु! तेरा बड़ा धन्यवाद है। तू सदा मुझे जिस चीज की जरूरत होती है, पहुंचा देता है।"

एक शिष्य ने कहा कि अब बस, ठहरो! अब हद हो गई। जिस चीज की जरूरत होती है, पहुंचा देता है। और तीन दिन से हम भी तुम्हारे साथ हैं, जिस चीज की जरूरत है, वही नहीं मिली है। रोटी नहीं मिली, पानी नहीं मिला, आवास नहीं मिला। अब और क्या है? मिला क्या है तीन दिन में?



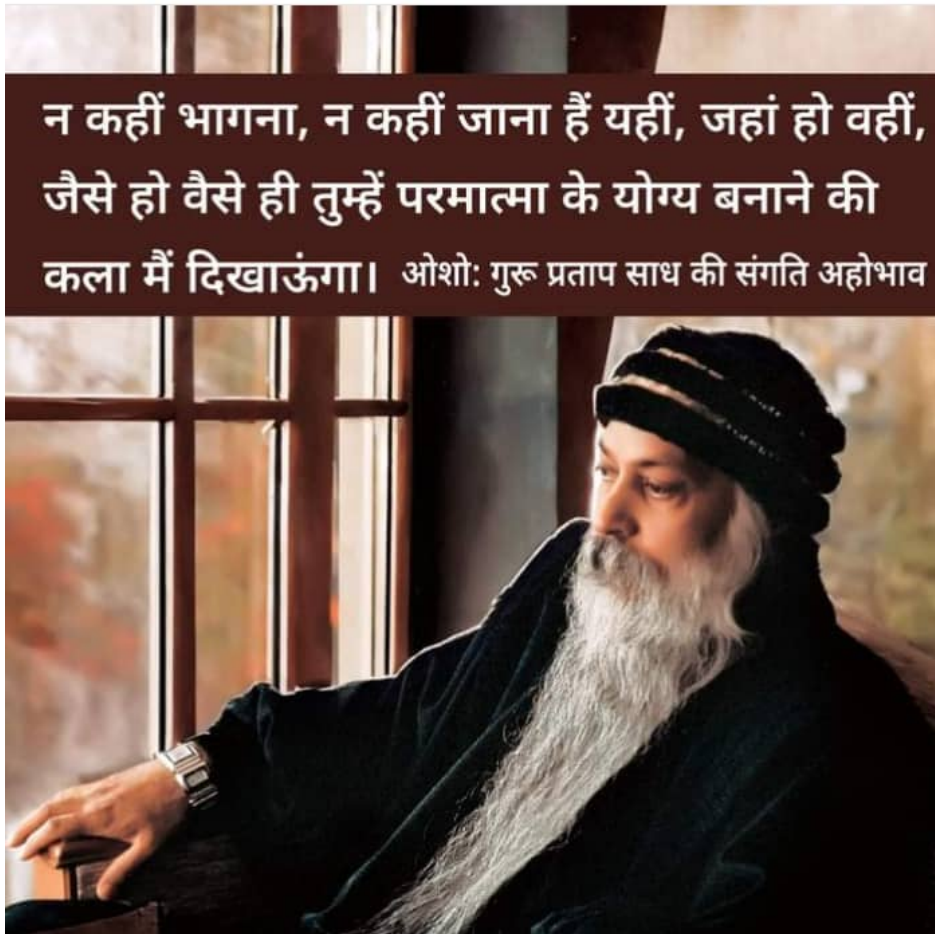
अपने को स्वीकार करो।

मेरा संन्यास स्वीकार का संन्यास है - इसमें त्याग नहीं है, इसमें पलायन नहीं है, इसमें भगोड़ापन नहीं है, इसमें जीवन को अंगीकार करना है क्योंकि जीवन परमात्मा की देन है, इसमें से कुछ भी निषेध नहीं करना है।

हां, रूपांतरित करना है बहुत, मगर कटना कुछ भी नहीं है, एक पत्ता भी नहीं काटकर गिराना है। इसके पत्ते - पत्ते पर राम लिखा है। इसके पत्ते-पत्ते पर उसके हस्ताक्षर हैं। इस पूरे के पूरे जीवन को ही उसके चरणों के योग्य बनाना है। न कहीं भागना, न कहीं जाना हैं यहीं, जहां हो वहीं, जैसे हो वैसे ही तुम्हें परमात्मा के योग्य बनाने की कला मैं दिखाऊंगा।

ओशो

गुरू प्रताप साध की संगति



Ravindra + 22

1 comment

॥ श्रीहरिः॥



यदि वैराग्य हो तो घर में रहने से
भी कोई हानि नहीं और वैराग्य
न होने पर घर छोड़ देने से भी
कोई लाभ नहीं।



भागो मत, वहीं रह कर डूबते चले जाओ, खोजते चले जाओ। खोज उस दिन पूरी समझ लेना, जिस दिन बाजार में बैठे रहो और बाजार भी रहे, और तुम्हारे लिए बाजार न रह जाए

॥ श्रीहरिः ॥



मृत्यु को सदा अत्यन्त समीप
समझकर व्यर्थ-अनर्थ कार्यों से बचो
और सावधानी के साथ भगवान् का
स्मरण करते हुए भगवत्सेवा के भाव
से ही आवश्यक शुभ कार्य करो।

॥श्रीहरिः॥



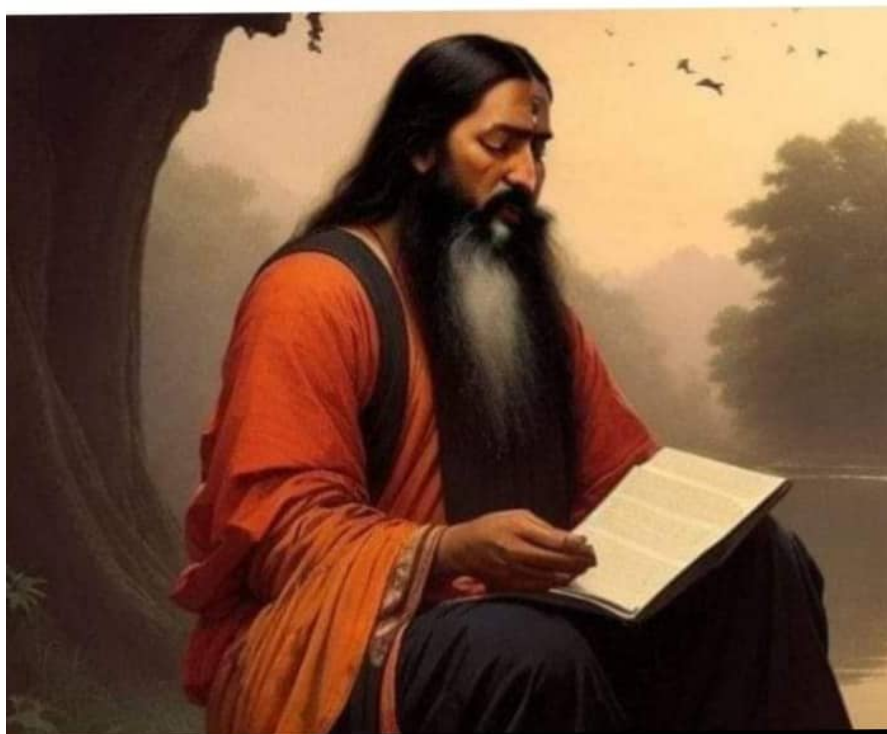
अनन्त सुख की खोज ही जीव का धर्म है। जब तक यह सुख उसे प्राप्त नहीं हो जायेगा, तब तक उसे चैन नहीं मिलेगा, न उसका भटकना ही बंद होगा और न तो उसे विश्राम ही मिलेगा।

जब मुस्लिम आक्रांताओं ने सन्त रविदास जी को इस्लाम कबूल करने को कहा तब, सन्त रविदास ने भीष्म प्रतिज्ञा की थी और ये करारा जवाब दिया था की

"वेद धर्म सबसे बड़ा, अनुपम सच्चा ज्ञान,
फिर मैं क्यों छोड़ू इसे, पढ़ लू झूठ कुरान।"

"वेद धर्म छोड़ू नहीं, कोशिस करो हज़ार,
तिल-तिल काटो चाहि, गोदो अंग कटार।"
(रैदास रामायण)

ऐसे पूज्य सनातन धर्म रक्षक सन्त शिरोमणि पूज्य
रविदास जी महाराज की जन्म जयंती की कोटि कोटि
शुभकामनाएं। 🌸🌸





See all >



रिश्तो की अहमियत

Ritesh Dayma · 2h ·

Jay shree ram



वेद पढ़ना आसान है किंतु जिस दिन
आपने किसी की वेदना को पढ़ लिया
तो समझिये ईश्वर को पा लिया ।



20

7 comments



Like



Comment



Send



दोस्ती, प्रेम और स्त्री- पुरुष~ ओ'शो



मैं अपने संन्यासी को
न तो ईसाई मानता हूं,
न हिन्दू,
न मुसलमान,
न जैन,
न बौद्ध।

मेरा संन्यासी तो सिर्फ
शून्य की खोज कर रहा है।
सारी दीवारें गिरा रहा है।
मेरा संन्यासी तो
अनहद की तलाश में लगा है,
सीमाओं का अतिक्रमण
कर रहा है।

घर छोड़ना नहीं है।
घर में रहते ही जानना है
कि घर मेरी सीमा नहीं है।
परिवार छोड़ना नहीं है।
परिवार में रहते ही जानना है
कि परिवार मेरी सीमा नहीं है।

बस, यह बोध!
इस बोध को
ध्यान कहो,
जागरण कहो,
विवेक कहो,
सुरति कहो;
जो भी शब्द तुम्हें
प्रीतिकर हो, वह कहो।
लेकिन इसे लक्ष्य समझो
कि पहुंचना है शून्य में;
तभी तुम्हें विश्राम मिलेगा...
- ओशो,
अनहद में बिसराम



तुम इतने बैड-बाजे बजा रहे हो! परमात्मा तुम्हें पुकार रहा है, तुम्हीं उसे नहीं खोज रहे हो। परमात्मा भी तुम्हें खोज रहा है, मगर तुम मौजूद ही नहीं हो। तुम कभी अपने घर पाए ही नहीं जाते, तुम हमेशा कहीं और हो। तुम जहां हो वहां नहीं हो, और कहीं भी हो सकते हो।

चुप हो जाओ। चुप्पी से बड़ी और क्या प्रार्थना है! इसलिए इस तीसरे सूत्र में ध्यान और प्रार्थना एक ही हो जाते हैं। ध्यान का अर्थ है मौन हो जाना। और प्रार्थना भी अपनी परम अर्थवत्ता में मौन हो जाती है।

प्रार्थना शुरू होती है परमात्मा से बोलने से और अंत होता है उसका: परमात्मा बोले और मैं सुनूं। तुम कुछ कहो, इतना निवेदन प्रार्थना करती है और फिर चुप होकर सुनती है।

चितरंजन, तुम कहते हो--

हे अनंत अपने में ले ले!

तुममें मिल जाऊंगा अनजान

मिल कर तेरे साथ हृदय का

पूरा कर लूंगा अरमान।

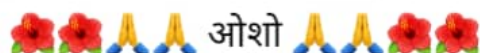
उससे बिना मिले हृदय की अभीप्सा पूरी होती भी नहीं। उससे मिलन में ही, मिटना भी है और पाना भी है। उससे मिलना मृत्यु भी है और नव जीवन भी। तुम जैसे हो ऐसे तो मिट जाओगे। तुम्हारी सीमाएं खो जाएंगी, तुम्हारा रूप-रंग रेखा तुम्हारी परिभाषा खो जाएगी। तुम भी उसी जैसे अपरिभाष्य हो जाओगे, उसी जैसे अनिर्वचनीय हो जाओगे, उसी जैसे अथाह-अगम हो जाओगे। बूंद मिट जाएगी, तभी तो सागर हो सकेगी। और सागर हो जाएगी तो फिर बूंद कहां!

तुम मिटने की तैयारी करो। परमात्मा तो कभी भी उतर आने को राजी है। हम खाली करें सिंहासन। हम सिंहासन पर विराजमान हैं। हम अपने भीतर स्वयं से इतने भरे हैं कि अगर परमात्मा अभी आना भी चाहे तो वहां कहीं कोई जगह नहीं है। न मालूम क्या-क्या कचरा-कूड़ा भर रखा है! उससे अपने को खाली करना है।

जो व्यक्ति शून्य होने को राजी है, वह पूर्ण को पाने का अधिकारी हो जाता है। यही प्रार्थना, यही पूजा, यही आराधना, यही ध्यान, यही समाधि--सिर्फ नामों के भेद हैं।



प्रीतम।छवि नैनन बसी #10



**"Osho Universal"**

Atul Solanki · 1h · 🌐



❤❤❤ परमात्मा ने प्रत्येक व्यक्ति को अद्वितीय बनाया है।

वह दोहराता नहीं।

दोबारा दो एक जैसे व्यक्ति नहीं बनाता। बस एक को एक ही बार बनाता है। न तुम्हारे जैसा व्यक्ति पहले कभी हुआ, न आज है, न कभी आगे होगा। परमात्मा को पुनरुक्ति भाती ही नहीं--बहुत मौलिक सर्जक है। उस मौलिक सर्जक के साथ अगर संबंध जोड़ना हो तो थोड़ी मौलिकता सीखनी जरूरी है।

इसलिए बंधे-बंधाए सूत्रों से प्रार्थना नहीं होती। उनसे गंदे डबरे पैदा होते हैं। उनसे हिंदू, मुसलमान, ईसाई, जैन, बौद्ध पैदा होते हैं--गंदे डबरे! उनसे धार्मिक व्यक्ति पैदा नहीं होता।

और क्या मंदिरों में जाना है, क्या मस्जिदों में जाना है! अगर यह सारा अस्तित्व उसका मंदिर नहीं, उसकी मस्जिद नहीं, तो आदमी के बनाए हुए मंदिर उसके मंदिर हो सकते हैं? क्या काबा, क्या काशी, क्या गिरनार? जहां तुम झुके, जहां हृदय से आविर्भूत भाव उठा, जहां तुम्हारा गीत गुनगुनाया, जहां तुम नाचे मस्त हो कर, चितरंजन--वहीं काशी है, वहीं काबा है। जहां भक्त है वहां भगवान है। भक्ति में भगवान है। जहां प्रार्थना है वहां परमात्मा है। प्रार्थना ही परमात्मा के आगमन की खबर है, उसकी पगध्वनि है।

और तीसरी बात: जरूरी नहीं है कि परमात्मा से तुम कुछ कहो ही। क्या जरूरी है कि कुछ कहो? ज्यादा जरूरी है कि कुछ सुनो। इस बात को खयाल में लेना। यह प्रार्थना का प्राण है। लोग सोचते हैं कि कुछ कहेंगे तब प्रार्थना होगी। मैं तुम्हें कहना चाहता हूं कि सुनोगे तब प्रार्थना होगी। चुप हो जाओ, सुनो। परमात्मा बोल रहा है। तुम्हारे भीतर भी बोल रहा है। तुम्हारे हृदय की किसी अतल गहराई से उसकी आवाज आ रही है। मगर तुम इतने खोए हो अपने विचारों में, इतना कोलाहल तुमने पैदा कर रखा है कि कहां सुनाई पड़े! नक्कारखाने में तूती की आवाज हो गई है। तुम इतने बैड-बाजे बजा रहे हो! परमात्मा तुम्हें पुकार रहा है, तुम्हीं उसे नहीं खोज रहे हो। परमात्मा भी तुम्हें खोज रहा है, मगर तुम मौजूद ही नहीं हो। तुम कभी अपने घर पाए ही नहीं जाते, तुम हमेशा कहीं और हो। तुम जहां हो वहां नहीं हो, और कहीं भी हो सकते हो।

चप हो जाओ। चप्पी से बड़ी और क्या प्रार्थना है। इसलिए दस तीसरे



See all >



ओशो - जीवन-मृत्यु



Pushpa · 19h · 🌐

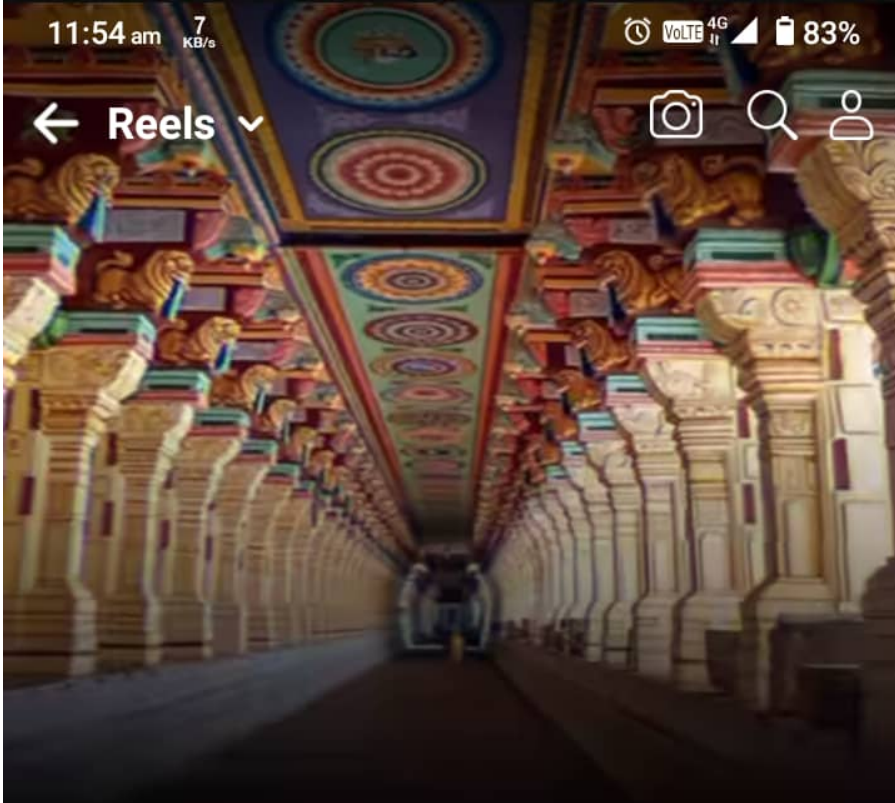


जमीन लहलुहान हो गई इन्हीं
धर्मों के नाम पर और फिर भी
तुम पूछते हो कि मैं धर्मों के
खिलाफ क्यों बोलता हूँ।

OSHO_MADHUSHALA_
आचार्य रजनीश

अच्छे विचारों को वश में रखो
क्योंकि यही तुम्हारी वाणी बनेगी,
अपनी वाणी को वश में रखो
क्योंकि यही तुम्हारा कर्म बनेगी,
अपने कर्मों को वश में रखो क्योंकि
यही तुम्हारी आदत बनेगे, अपनी
आदतों को वश में रखो क्योंकि
यही तुम्हारा चरित्र बनेगे, और
अपने चरित्र को वश में रखो
क्योंकि इसी से तुम्हारा भाग्य
बनेगा..

← Reels ▾



रामनाथ स्वामी मंदिर में बना गलियारा
विश्व का सबसे बड़ा गलियारा है, यह पूरा
गलियारा 3850 फीट में फैला हुआ है।
रामेश्वरम मंदिर में बने गलियारे में 1212
खम्बे हैं और यह सभी 1212 खम्बे एक ही
बिंदु पर जा कर मिलते हैं।



12K



2



57



Send



@factus46

🎵 Use audio



factus46 @

Follow for more Amazing facts 100 ❤️ @f... more

🎵 Basrur · Sound of Salaar

Add a comment...



← Reels ▾



जिस बट वृक्ष के नीचे श्रीकृष्ण ने
अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था
वह आज भी मौजूद है ज्योतिसर के
इस बरगद को महाभारत का एकमात्र
साक्षी माना जाता है दिल करे वहीं लीखे



134K



390



Use audio



491



jai_maa_durga._ @

श्री मद्भागवत गीता 🙏... more

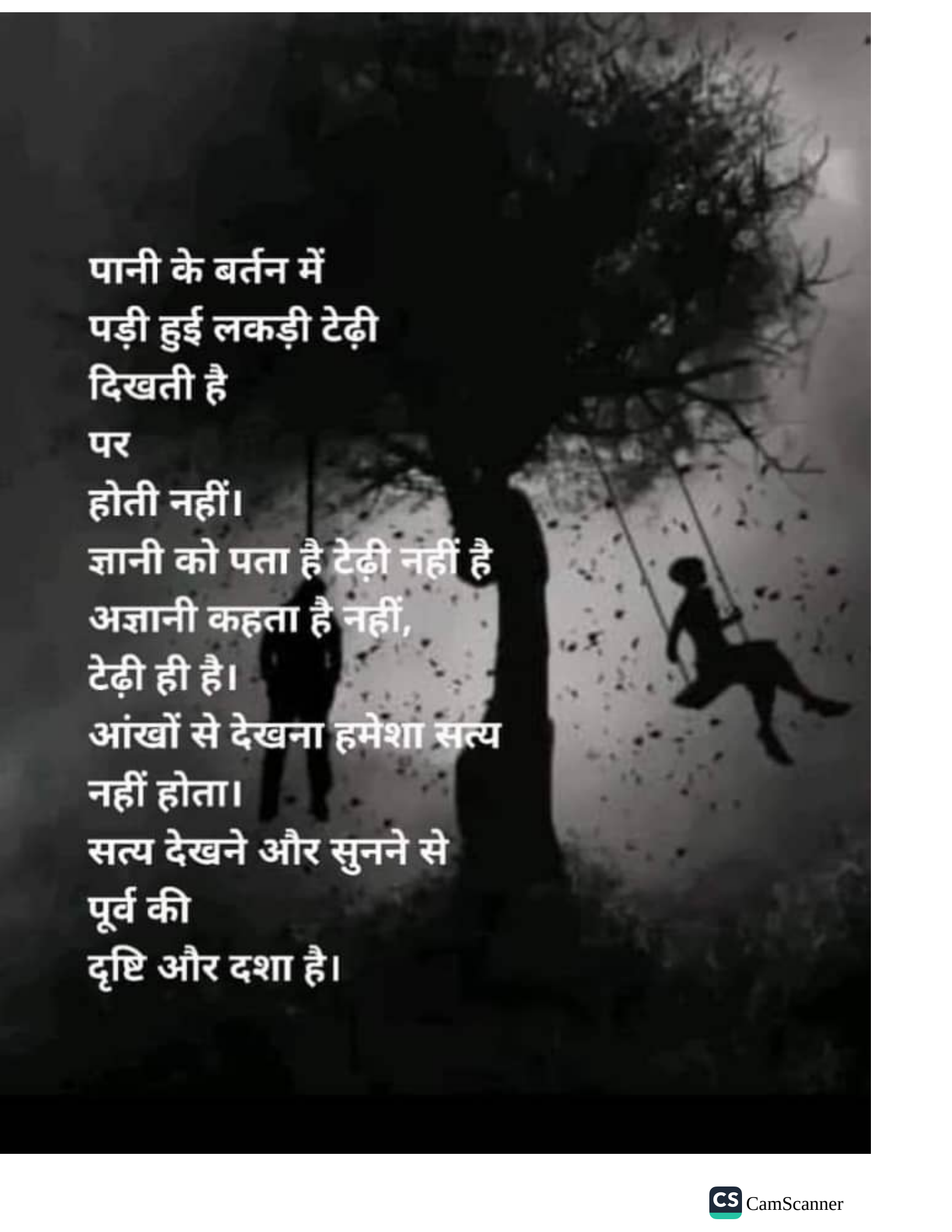


Send



USHWAH · Bhole Charni





पानी के बर्तन में
पड़ी हुई लकड़ी टेढ़ी
दिखती है
पर
होती नहीं।
ज्ञानी को पता है टेढ़ी नहीं है
अज्ञानी कहता है नहीं,
टेढ़ी ही है।
आंखों से देखना हमेशा सत्य
नहीं होता।
सत्य देखने और सुनने से
पूर्व की
दृष्टि और दशा है।



मैंने कोई नियम तुम्हें नहीं दिए।
या तो तुम धार्मिक होओ, या अधार्मिक।
बीच की मैंने तुम्हें सुविधा नहीं दी है।
इसलिए मैं तुम्हें वही आखिरी बात कहता हूँ
जो बुद्ध ने आनंद को कही, होश साधना।
आंख बंद करना, न करना; क्या फर्क पड़ता है।
मेरी दृष्टि में ऐसा है कि अगर तुमने होश साधा
-आंख खुली रखो, स्त्री को छुओ, धन कमाओ, मकान में रहो,
बाजार में बैठो, कोई अंतर नहीं पड़ता।
होश न सधा-आंख बंद रखी, जंगल में भाग गए,
धन न छुआ, नंगे खड़े हो गए, सब त्याग दिया,
तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता।

होश से ही क्रांति होती है।

इसलिए होश अकेला नियम है, एकमात्र नियम।

एस धम्मो सनंतनो।

यही एकमात्र सनातन नियम है।



आचार्य श्री रजनीश

एस धम्मो सनंतनो-(प्र-04)

अकंप चैतन्य ही ध्यान

रजनीश

११५, नेपियर टाउन
जबलपुर (म.प्र.)
१८.१०.६२

सुनना है,
देखना है और
बीच में कोई शब्द नहीं है।
शब्द सत्ता से तोड़ देता है।
शब्द सत्य के सम्बंध में है, सत्य नहीं है।
सत्य तक शब्द से नहीं,
शब्द खोकर पहुँचना होता है।



और
शब्द खोना समाधि है।
लेकिन केवल शब्द खोना मात्र समाधि
नहीं है।
शब्द तो मूर्च्छा में भी खो जाते हैं :
सुशुप्ति में भी खो जाते हैं
शब्द खोकर भी जाग्रत,
चेतन और प्रबुद्ध बने
रहना समाधि है।

रजनीश के प्रणाम



"चीजों की ब्रह्मांडीय उत्पत्ति,
हमारी बुद्धि, हमारे मन, हमारे शब्दों के पार है।
लेकिन गहरे मौन में हम वहां पहुंच जाते हैं"
ओशो





कोई योग नहीं है। अष्टावक्र की दृष्टि में कुछ साधन नहीं करना है। सीधी छलांग है! तुम सिर्फ देखते रहो! क्रोध उठे तो तुम कहो कि ठीक है, स्वाभाविक है। काम उठे तो कहो ठीक है, स्वाभाविक है। तुम देखने वाले बने रहो। तुम विचलित न होओ द्रष्टा से। तुम्हारा साक्षी न कंपे बस। और सब कंपता रहे, सारा संसार तूफान में पड़ा रहे—तुम तूफान के मध्य साक्षी में ठहरे रहो।

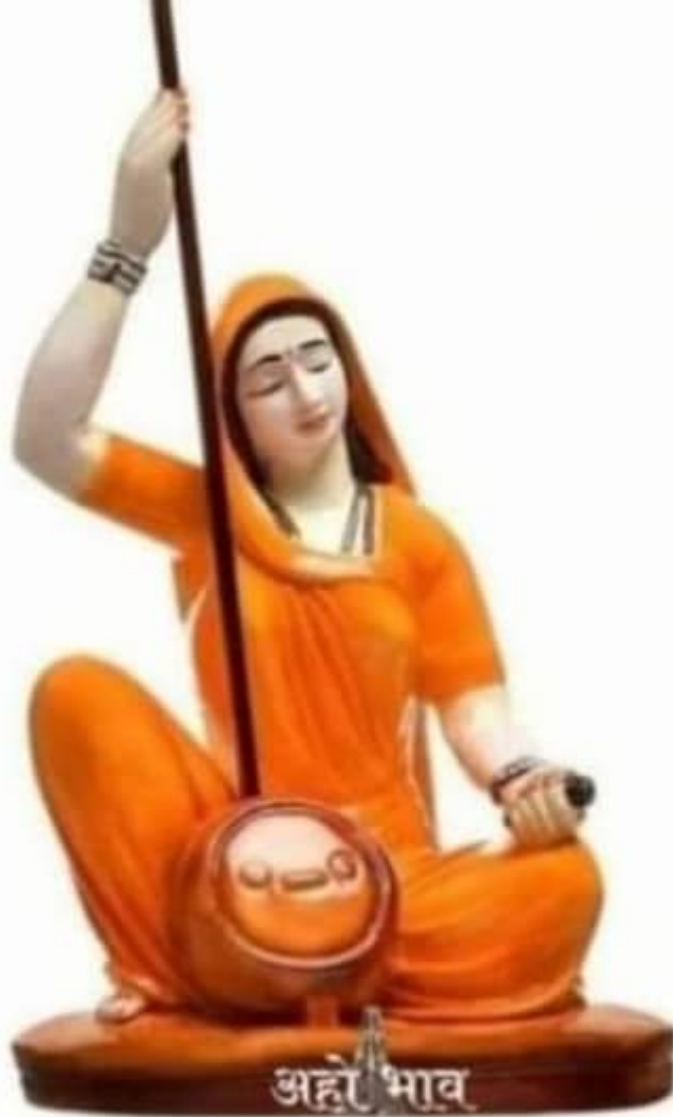
अष्टावक्र महागीता -प्र-13



अक्टूबर 24 - प्रलोभनों पर विजय पाना
वासनायें मनुष्य की सबसे निष्ठुर शत्रु हैं;
वह उन्हें तृप्त नहीं कर सकता। केवल
ईश्वर को जानने की एकमात्र अभिलाषा
रखो। इन्द्रियों की माँगों को सन्तुष्ट करके
तुम सन्तुष्ट नहीं हो सकते, क्योंकि
इन्द्रियाँ तुम्हार स्वरूप नहीं हैं, वे तो
केवल तुम्हारी सेवक हैं।



- श्री श्री परमहंस योगानन्द जी,
“परमहंस योगानन्द जी के वचनामृत”



ओशो

मीरा कहती है: मैंने तो खरीद लिया गोविंद को।

कैसे खरीदा मीरा ने? कोई कैसे खरीदता है परमात्मा को?
मीट कर खरीदा। अपने को गंवा कर पाया।
अपनी गर्दन रख दी वहां उसके चरणों में। बस वही
बाधा थी।

तुम्हारा सिर ही बाधा है। तुम्हारा अहंकार ही बाधा है।
उसी को चढ़ा दिया, तो परमात्मा तुम्हारा हो जाता है।

6:22 pm

0 KB/s

VoLTE

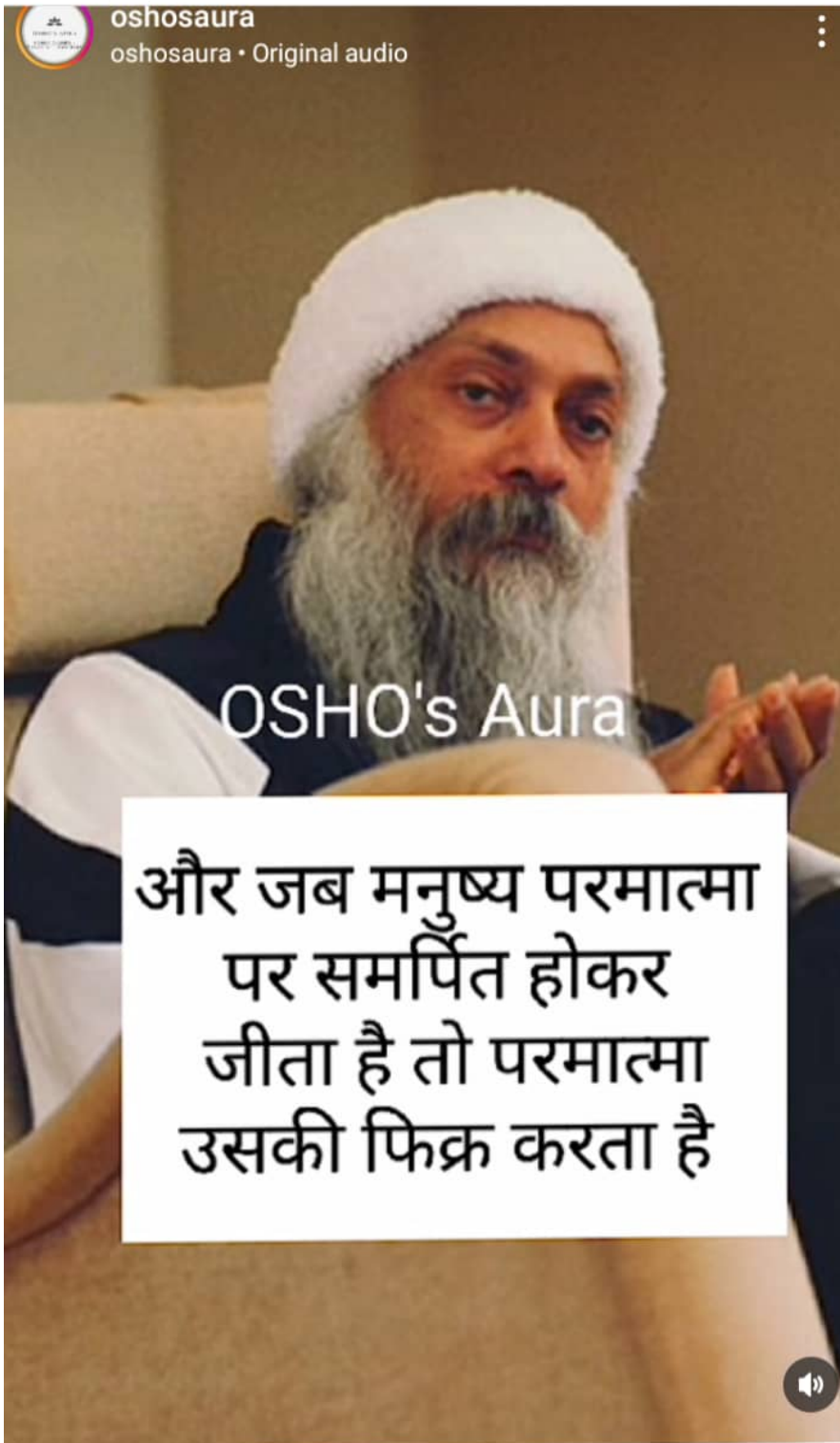
4G

67%



oshosaura

oshosaura • Original audio



OSH0's Aura

और जब मनुष्य परमात्मा
पर समर्पित होकर
जीता है तो परमात्मा
उसकी फिक्र करता है



2,602 likes

oshosaura — ओशो 🌸... more

View all 11 comments



CamScanner

View all 10 comments



Add a comment...

2 days ago • See translation



oshospirituality

Bhadoli : The Carpet City

Osho Flute • Osho Flute



यदि हम छोड़ सकें अपने को, जैसा स्त्री छोड़ देती है प्रेम में, ऐसा ही अगर हम जगत अस्तित्व के प्रति, परमात्मा के प्रति, जैसे हम उसके आलिंगन में छूट गए हों, तो हम जीवन के सत्य के निकट सरलता से पहुंच जा सकते हैं।

TAO UPNISHAD #19, OSHO



101 likes

oshospirituality #OSHO

View 1 comment



Add a comment...

8 hours ago



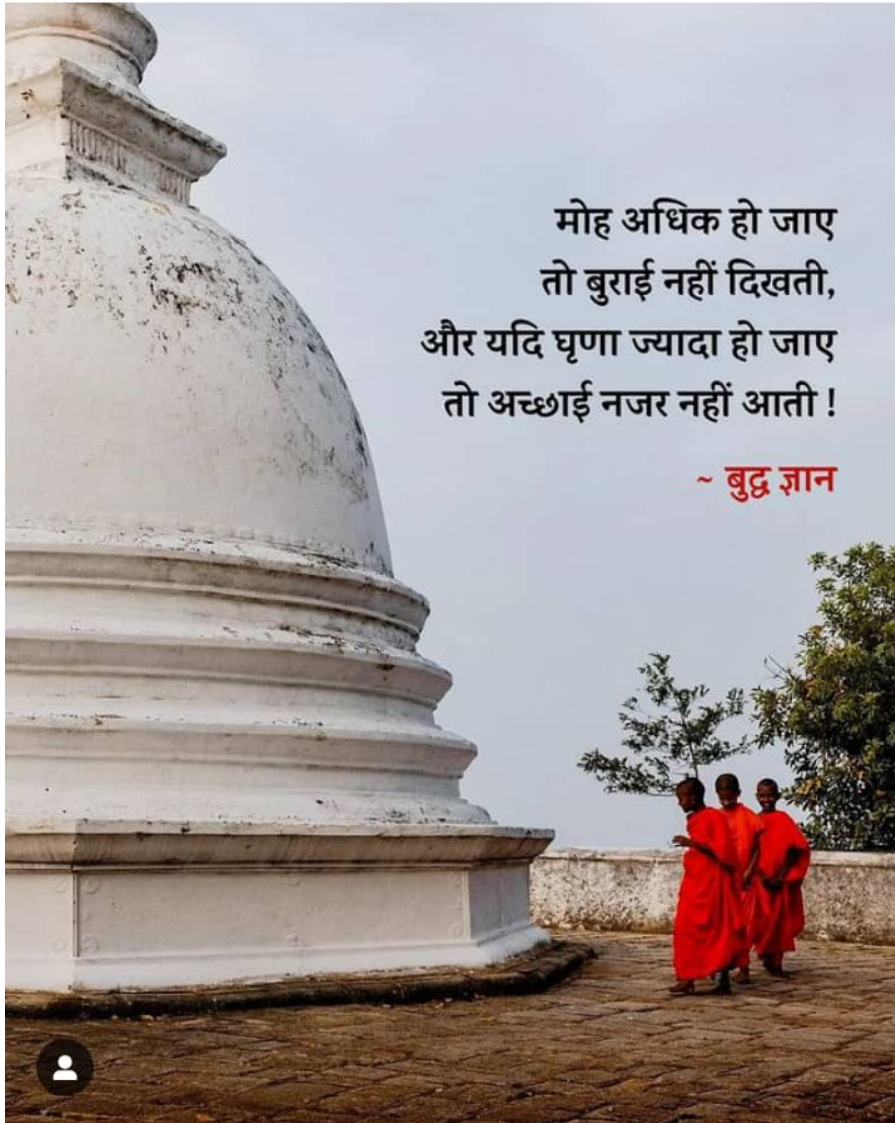
only_osho_1968



sufinama सूफियों की बातें (क्रिस्त -82)... more

View all 2 comments

1 day ago • See translation

**buddha.gyaan**
Delhi, India

5,488 likes

buddha.gyaan इसे ही बेहतरीन सुविचार पढ़ने के लिए @buddha.gyaan को जरूर फॉलो करे ❤️💬... more

View all 10 comments



Add a comment



Instagram



Your story



divine.mother.s...



lokeshanand_p...



o.s.h.o_

o



oshospiritality

Buddha's Flute • Osho Dream



पुरुष हीरे-जवाहरात न पहने, तो कोई अंतर नहीं पड़ता है। स्त्री हीरे-जवाहरात देखती ही नहीं। पुरुष सुंदर है या नहीं, इसकी भी स्त्री फिक्र नहीं करती। उसका प्रेम है, तो सब है। लेकिन पुरुष जिस स्त्री को प्रेम करता है, अगर उसका सब आवरण और सब सजावट अलग कर ली जाए, तो नब्बे प्रतिशत प्रेम पुरुष का तो विदा हो जायेगा।

TAO UPNISHAD #19, OSHO



Liked by osho_mania and 170 others

oshospiritality #OSHO



Add a comment...

1 day ago



Instagram



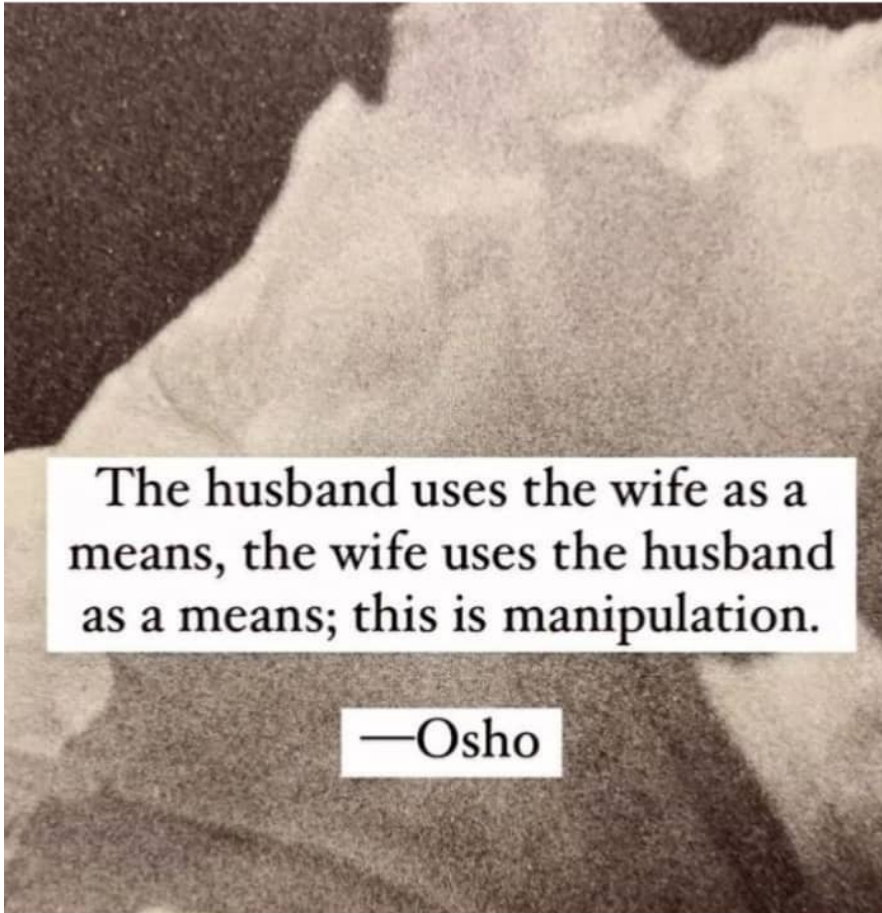
osho_meditation #osho

View all 9 comments

2 days ago



osholifestyle



944 likes



Add a comment...

23 hours ago



ครูสอนหุ่น
Sponsored



osholifestyle #osho

View all 59 comments

7 hours ago



osholifestyle



There is no one lonelier than God!

—Osho



2,450 likes

osholifestyle osho

View all 6 comments



Add a comment...

7 hours ago



osholifestyle



osholifestyle • Original audio

Subscribe





ChatGPT 3.5 ▾

**ChatGPT**

महावीर के ये आठ सूत्र "पांच समिति और तीन गुप्ति" के हैं।
उनके नाम हैं: ईर्या, भाषा, एषणा, आदान-निक्षेप, उच्चार,
मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, और कायगुप्ति।

< 3 / 4 >  **You**

Write these eight rules in English

**ChatGPT**

Sure, here are the eight rules in English:

1. Irya (Control of Movement)
2. Bhāṣā (Restraint of Speech)
3. Eṣaṇā (Restraint of Desires)
4. Ādāna-Nikṣepa (Carefulness in Handling Objects)
5. Ucchāra (Restraint in Consumption)
6. Manogupti (Control of the Mind)
7. Vachangupti (Control of Speech)
8. Kāyagupti (Control of the Body)



Message ChatGPT...



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.



समितियां हैं विधायक, पाजिटिव, और गुप्तियां हैं निगेटिव, नकारात्मक। समिति में खयाल रखना है उसका जो आप करते हैं, और गुप्ति में खयाल रखना है उसका जो आप नहीं करते हैं। और, विधायक और नकार दोनों सम्हल जाएं तो आप दोनों के पार हो जाते हैं।

‘ईर्या, भाषा, एषणा, आदान और उच्चार--ये पांच समितियां हैं।’

‘ईर्या’ का अर्थ है: साधक जो भी प्रवृत्ति करे, उसमें सावधानी रखे। महावीर ने कहा है: उठो, बैठो, चलो--होशपूर्वक, अवेयरनेस। कोई भी प्रवृत्ति करो, वह बेहोशी से न हो, इसका नाम ‘ईर्या-समिति’ है।

हम जो भी कर रहे हैं, बेहोश हैं। चलते हैं, लेकिन चलने से कोई मतलब नहीं है, मन कुछ और करता रहता है। और जब मन कुछ और करता रहता है, तो चलने में हम बेहोश हो जाते हैं। भोजन करते हैं, मन कुछ और करता रहता है--तो भोजन करने में बेहोश हो जाते हैं। किसी से बात भी आप कर रहे हैं तो भी बात ऊपर चल रही है, भीतर आपका मन कुछ और कर रहा है--तो आप बात में भी बेहोश हो जाते हैं।

महावीर ने कहा है कि साधक का प्राथमिक चरण है, उसकी सारी क्रियाएं होशपूर्वक हो जाएं। जिसको गुरजिएफ ने ‘सेल्फ-रिमेंबरिंग’ कहा है, और जिस पर गुरजिएफ ने अपने पूरे साधना का आधार रखा है, या जिसको कृष्णमूर्ति ‘अवेयरनेस’ कहते हैं, उसे महावीर ने ‘ईर्या-समिति’ कहा है। वह उनका पहला तत्व है, अभी सात तत्व और हैं। लेकिन पहला इतना अदभुत है कि अगर उसे कोई पूरा साधने लगे तो सात के बिना भी सत्य तक पहुंच सकता है।

जो भी आप कर रहे हैं, करते वक्त क्रिया के साथ आपकी चेतना मंगल होती है--

महावीर ने कहा है: जो इन आठ सूत्रों की साधना से न गुजर जाए उसे बोलने का हक भी नहीं है। महावीर खुद बारह वर्ष तक मौन रह गए। बहुत मौके आए जब सलाह देने की तीव्र वासना उठी होगी, लेकिन उसे उन्होंने रोक लिया। एक ही बात सदा ध्यान रखी कि जब तक मैं पूरा मौन नहीं हो जाता, तब तक शब्द पर मेरा कोई अधिकार नहीं है।

यह बड़ा उल्टा दिखाई पड़ेगा। जो मौन हो जाता है, वही शब्द का अधिकारी है; जो शून्य हो जाता है, वही प्रवचन का हकदार है। जो भीतर शब्दों से भरा है, वह जो भी बोल रहा है, वह बोलना वमन है, उलटी है। वह इतना भरा है कि उसे निकालने की उसे जरूरत है। आप सिर्फ एक पात्र हैं, जिसमें वह वमन कर देता है। लेकिन आपकी जरूरत का सवाल नहीं है कि आपको क्या चाहिए, असली जरूरत बोलने वाले की है कि उसे क्या अपने से निकालना है।

आप खुद भी जानते हैं कि अगर कुछ आप पढ़ लें सुबह अखबार में, तो बेचैनी शुरू हो जाती है कि जल्दी किसी को जाकर कहें। कोई कुछ खबर दे दे, किसी की अफवाह सुना दे, किसी की बदनामी कर दे, किसी की निंदा कर दे--तो फिर आपसे रुका नहीं जाता, जल्दी ही इस संवाद को, इस सुखद समाचार को आप दूसरे को देना चाहते हैं। और निश्चित ही देते वक्त आप थोड़ी कल्पना का भी उपयोग करते हैं। आप भी थोड़े कवि हैं, आप उसमें कुछ जोड़ते हैं; उसको सजाते हैं; संवारते हैं। सुबह की अफवाह शाम अगर उसी आदमी के पास वापस लौट आए, जिसने शुरू की थी, तो वह पहचान नहीं सकेगा कि यह बात मैंने ही कही थी। इतने लोगों के हाथ से निखर जाएगी। सुबह पांच रुपये की चोरी हुई हो तो सांझ तक पांच लाख की हो जाना कुछ अड़चन की बात नहीं है।



लोकतत्व-सूत्र: 6

अट्ट पवयणमायाओ, समिई गुत्ती तहेव य।
पंचेव य समिईओ, तओ गुत्तीओ आहिया ॥
इरियाभासेसणादाणे, उच्चारे समिई इय।
मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती य अट्टमा॥
एयाओ पंच समिईओ, चरणस्स य पवत्तणे।
गुत्ती नियत्तणे बुत्ता, असुभत्थेसु सव्वसो॥
एसा पवयणमाया, जे सम्मं आयरे मुणी।
से खिप्पं सव्वसंसारं, विप्पमुच्चइ पंडिए॥

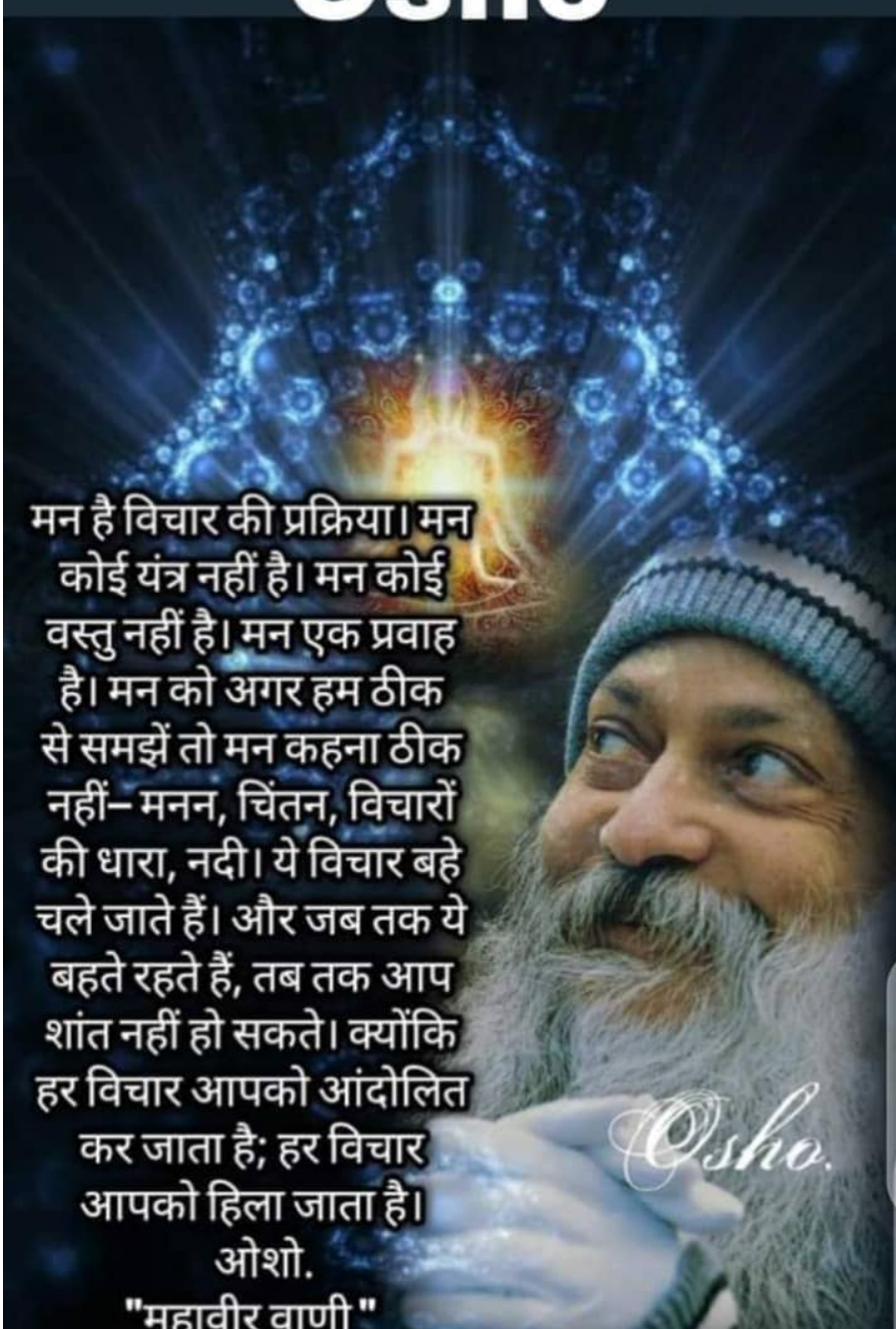
पांच समिति और तीन गुप्ति--इस प्रकार आठ प्रवचन-
माताएं कहलाती हैं।
ईर्या, भाषा, एषणा, आदान-निक्षेप और उच्चार या
उत्सर्ग--ये पांच समितियां हैं। तथा मनोगुप्ति,
वचनगुप्ति और कायगुप्ति--ये तीन गुप्तियां हैं। इस
प्रकार दोनों मिल कर आठ प्रवचन-माताएं हैं।
पांच समितियां चारित्र्य की दया आदि प्रवृत्तियों में काम
आती हैं, और तीन गुप्तियां सब प्रकार के अशुभ
व्यापारों से निवृत्त होने में सहायक होती हैं।
जो विद्वान मुनि उक्त आठ प्रवचन-माताओं का अच्छी
तरह आचरण करता है, वह शीघ्र ही अखिल संसार से
सदा के लिए मुक्त हो जाता है।

साधना के आठ सूत्र महावीर ने इन वचनों में कहे हैं।
जीवन के दो पहलू हैं। एक उसका विधायक रूप है--
सक्रिय, एक उसका निषेधक रूप है--निष्क्रिय। जीवन
में जो हम करते हैं, जीवन में जो हम होते हैं, उसमें दोनों
का हाथ होता है। पुण्य भी किया जा सकता है सक्रिय
होकर, और पुण्य किया जा सकता है निष्क्रिय होकर





Osho



मन है विचार की प्रक्रिया। मन कोई यंत्र नहीं है। मन कोई वस्तु नहीं है। मन एक प्रवाह है। मन को अगर हम ठीक से समझें तो मन कहना ठीक नहीं—मनन, चिंतन, विचारों की धारा, नदी। ये विचार बहे चले जाते हैं। और जब तक ये बहते रहते हैं, तब तक आप शांत नहीं हो सकते। क्योंकि हर विचार आपको आंदोलित कर जाता है; हर विचार आपको हिला जाता है।
ओशो.
"महावीर वाणी"

Osho.





और यदि तुम ठीक से तय नहीं कर पाते
और तुम यह समझ नहीं पाते कि तुम्हें क्या करना है
तो तुम रुग्ण हो जाओगे,

तुम सारा सुख-चैन खो दोगे और बेचैन बन जाओगे।
यदि तुम चौदह वर्ष की आयु में प्रेम नहीं कर सकते,
तो तुम बयालीस वर्ष की आयु में प्रार्थना करने में समर्थ न हो सकोगे।

तुम चूकते रहे हो,
और तुम्हारा पूरा विकास एक निरंतरता है। यदि तुम एक कदम चूक
जाते हो तो वह निरन्तरता टूट जाती है। बच्चा अहंकार इकट्ठा करता
है-वह प्रेम नहीं कर सकता,

और न वह किसी अन्य के साथ विश्राममय हो सकता है।
अहंकार निरंतर संघर्ष करता रहता है। तुम शांत और मौन बैठ सकते हो,
लेकिन अहंकार निरंतर संघर्ष करता हुआ केवल यह देखता और
निरीक्षण करता रहता है-

कि कैसे वर्चस्व प्राप्त किया जाए कैसे तानाशाह बना जाए और कैसे
संसार भर में सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति बना जाए। इससे हर कहीं समस्याएं उत्पन्न
होती हैं, मित्रता में, सेक्स में, प्रार्थना, प्रेम और समाज में भी-

तुम प्रत्येक स्थान पर संघर्ष ही में रहते हो।
यहां तक कि अपने माता-पिता के साथ भी, जिन्होंने तुम्हें यह अहंकार
दिया था, वहां भी संघर्ष होता है।

ऐसा बहुत कम होता है कि
कोई पुत्र अपने पिता को क्षमा कर दे,

बहुत कम कोई पुत्री अपनी मां को क्षमा कर पाती है।

ऋतु आये फल होय-(प्रवचन-04)



यह ठीक वैसा ही है, जैसे चौदह वर्ष की आयु के बाद प्रत्येक

लड़के और लड़की को सेक्स की समस्या को सुलझाना होता है, और यदि तुम उन समस्याओं को गलत ढंग से निपट तो वे समस्याएं एक ही स्थान पर चक्कर लगाती बनी ही रहेंगी। जैसे कि सेक्स चौदह वर्ष की आयु में परिपक्व होता है

ठीक वैसे ही बयालीस वर्ष की आयु में एक नया आयाम खुलता है। क्योंकि प्रत्येक सात वर्ष बाद तुम्हारे अस्तित्व में शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक परिवर्तन होते हैं-

प्रत्येक सात वर्ष बाद।

बचपन सातवें वर्ष में समाप्त हो जाता है, चौदहवें वर्ष से किशोरावस्था चली जाती है, और इक्कीसवें वर्ष में फिर नए परिवर्तन होते हैं-

प्रत्येक सात वर्ष बाद, जीवन की लय कुछ और होती है। बयालीस वर्ष की आयु आने पर एक नया आयाम खुलता है,

प्रार्थना का आयाम, धर्म का आयाम।

और यदि तुम ठीक से तय नहीं कर पाते और तुम यह समझ नहीं पाते कि तुम्हें क्या करना है तो तुम रुग्ण हो जाओगे,

तुम सारा सुख-चैन खो दोगे और बेचैन बन जाओगे। यदि तुम चौदह वर्ष की आयु में प्रेम नहीं कर सकते, तो तुम बयालीस वर्ष की आयु में प्रार्थना करने में समर्थ न हो सकोगे।

तुम चूकते रहे हो, और तुम्हारा पूरा विकास एक निरंतरता है। यदि तुम एक कदम चूक जाते हो तो वह निरन्तरता टूट जाती है। बच्चा अहंकार इकट्ठा करता है-वह प्रेम नहीं कर सकता,



शिव की जगह-जगह पूजा हो रही है, लेकिन शिव पूजा की बात नहीं है। शिवत्व उपलब्धि की बात है। वह जो शिवलिंग तुमने देखा है बाहर मंदिरों में, वृक्षों के नीचे, तुमने कभी ख्याल नहीं किया, उसका आकार ज्योति का आकार है। जैसे दीये की ज्योति का आकार होता है। शिवलिंग अंतर-ज्योति का प्रतीक है। जब तुम्हारे भीतर का दीया जलेगा तो ऐसी ही ज्योति प्रकट होती है, ऐसी ही शुभ्र! यही रूप होता उसका। और ज्योति बढ़ती जाती है, बढ़ती जाती है। और धीरे-धीरे ज्योतिर्मय व्यक्ति के चारों तरफ एक आभामंडल होता है; उस आभामंडल की आकृति भी अंडाकार होती है।

रहस्यवादियों ने तो इस सत्य को सदियों पहले जान लिया था। लेकिन इसके लिए कोई वैज्ञानिक प्रमाण उनके पास नहीं थे। लेकिन अभी रूस में एक बड़ा वैज्ञानिक प्रयोग चल रहा है--किरलियान फोटोग्राफी। मनुष्य के आस-पास जो ऊर्जा का मंडल होता है, अब उसके चित्र लिए जा सकते हैं। इतनी सूक्ष्म फिल्में बनाई जा चुकी हैं, जिनसे न केवल तुम्हारी देह का चित्र बन जाता है, बल्कि देह के आस-पास जो विद्युत प्रकट होती है, उसका भी चित्र बन जाता है। और किरलियान चकित हुआ है, क्योंकि जैसे-जैसे व्यक्ति शांत होकर बैठता है, वैसे-वैसे उसके आस-पास का जो विद्युत मंडल है, उसकी आकृति अंडाकार हो जाती है। उसको तो शिवलिंग का कोई पता नहीं है, लेकिन उसकी आकृति अंडाकार हो जाती है। शांत व्यक्ति जब बैठता है ध्यान में तो उसके आस-पास की ऊर्जा अंडाकार हो जाती है। अशांत व्यक्ति के आस-पास की ऊर्जा अंडाकार नहीं होती, खंडित होती है, टुकड़े-टुकड़े होती है। उसमें कोई संतुलन नहीं होता। एक हिस्सा बड़ा, एक हिस्सा छोटा; कुरूप होती है।

शिवलिंग ध्यान का प्रतीक है। वह ध्यान की आखिरी गहरी अवस्था का प्रतीक है।

🌺 आचार्य श्री रजनीश "ओशो" 🌺

हंसा तो मोती चुगै--प्रवचन-01



ध्यानी नहीं शिव सारसा, ग्यानी सा गोरख।

और लाल कहते हैं: न तो आज दिखाई पड़ते हैं ध्यानी, जिन्होंने शिव को निमंत्रण किया हो, जो शिव जैसे हो गए हों। हां, शिव की प्रतिमाएं पूजी जा रही हैं। गांव-गांव, घर-घर शिव के आराधन, पूजन के आयोजन चल रहे हैं।

ल जितनी शिव की प्रतिमाएं हैं, उतनी तो किसी और की नहीं।

सरल भी है, कहीं से भी गोल पत्थर ढूंढ कर रख दो किसी भी झाड़ के नीचे और शिव की प्रतिमा निर्मित हो गई। शिवलिंग कहीं से भी ढूंढ लाओ और किसी भी पेड़ के नीचे बिठा दो। छप्पर की भी कोई जरूरत नहीं है।

शिव की जगह-जगह पूजा हो रही है, लेकिन शिव पूजा की बात नहीं है। शिवत्व उपलब्धि की बात है। वह जो शिवलिंग तुमने देखा है बाहर मंदिरों में, वृक्षों के नीचे, तुमने कभी ख्याल नहीं किया, उसका आकार ज्योति का आकार है। जैसे दीये की ज्योति का आकार होता है। शिवलिंग अंतर-ज्योति का प्रतीक है। जब तुम्हारे भीतर का दीया जलेगा तो ऐसी ही ज्योति प्रकट होती है, ऐसी ही शुभ्र! यही रूप होता उसका। और ज्योति बढ़ती जाती है, बढ़ती जाती है। और धीरे-धीरे ज्योतिर्मय व्यक्ति के चारों तरफ एक आभामंडल होता है; उस आभामंडल की आकृति भी अंडाकार होती है।

रहस्यवादियों ने तो इस सत्य को सदियों पहले जान लिया था। लेकिन इसके लिए कोई वैज्ञानिक प्रमाण उनके पास नहीं थे। लेकिन अभी रूस में एक बड़ा वैज्ञानिक प्रयोग चल रहा है--किरलियान फोटोग्राफी। मनुष्य के आस-पास जो ऊर्जा का मंडल होता है, अब उसके चित्र लिए जा सकते हैं। इतनी सूक्ष्म फिल्में बनाई जा चुकी हैं, जिनसे न केवल तुम्हारी देह का चित्र बन जाता है, बल्कि देह के आस-पास जो विद्युत प्रकट होती है, उसका भी चित्र बन जाता है। और किरलियान चकित हुआ है, क्योंकि जैसे-जैसे व्यक्ति शांत होकर बैठता है, वैसे-वैसे उसके आस-पास का जो विद्युत मंडल है, उसकी आकृति अंडाकार हो जाती है। उसको तो शिवलिंग का कोई पता नहीं है, लेकिन उसकी आकृति अंडाकार हो जाती है। शांत व्यक्ति जब बैठता है ध्यान में तो उसके



❀● शिवत्व उपलब्धि की बात है! ●❀

इन वचनों को पीना; ये वचन रसायन हैं!

ध्यानी नहीं शिव सारसा, ग्यानी सा गोरख।
रै रमै सूं निसतिरयां, कोड़ अठासी रिख।।

लाल कहते हैं: दो सूत्र समझ लेने चाहिए। एक तो ध्यान और एक ज्ञान।

ध्यानी नहीं शिव सारसा...

शिव जैसा ध्यानी नहीं है। ध्यानी हो तो शिव जैसा हो। क्या अर्थ है?
ध्यान का अर्थ होता है : न विचार, वासना, न स्मृति, न कल्पना। ध्यान का अर्थ होता है: भीतर सिर्फ होना मात्र। इसीलिए शिव को मृत्यु का, विध्वंस का, विनाश का देवता कहा है। क्योंकि ध्यान विध्वंस है--विध्वंस है मन का। मन ही संसार है। मन ही सृजन है। मन ही सृष्टि है। मन गया कि प्रलय हो गई। ऐसा मत सोचो कि किसी दिन प्रलय होती है। ऐसा मत सोचो कि एक दिन आएगा जब प्रलय हो जाएगी और सब विध्वंस हो जाएगा। नहीं, जो भी ध्यान में उतरता है, उसकी प्रलय हो जाती है। जो भी ध्यान में उतरता है, उसके भीतर शिव का पदार्पण हो जाता है।

ध्यान है मृत्यु--मन की मृत्यु, "मैं" की मृत्यु, विचार का अंत। शुद्ध चैतन्य रह जाए--दर्पण जैसा खाली! कोई प्रतिबिंब न बने।

तो एक तो यात्रा है ध्यान की। और फिर ध्यान से ही ज्ञान का जन्म होता है। जो ज्ञान ध्यान के बिना तुम इकट्ठा करते हो, वह ज्ञान नहीं है, ज्ञान का धोखा है--मिथ्या ज्ञान है। शास्त्रों से, सिद्धांतों से, दूसरों से, अन्यो से तुम जो इकट्ठा कर लेते हो, वह ज्ञान नहीं है। ज्ञान तो ध्यान में जन्मता है। ध्यान है शुद्ध बोध। उस बोध में तुम्हें दिखाई पड़ना शुरू होता है--जीवन का अर्थ, जीवन का रहस्य। ध्यान तो है कुंजी, खोल देती है अनंत के द्वार।

ध्यानी नहीं शिव सारसा, ग्यानी सा गोरख।



लेकिन बुद्ध ने राहुल के फैले हुए हाथों में अपना भिक्षापात्र दे दिया और कहा, तेरी दीक्षा हो गई, तू भी भिक्षु हुआ। मेरे पास यही धन है देने को। मैं ध्यान लेकर लौटा हूँ, ध्यान तुझे दूंगा।

और यशोधरा को कहा कि तुझे भी मेरा निमंत्रण है। मैं परम संपदा लेकर लौटा हूँ, तू भी उसमें भागीदार बन। मैं गंवाकर नहीं लौटा हूँ, कमाकर लौटा हूँ। मेरी आंखों में फिर से देख। यह वही आदमी नहीं है जो तुझे छोड़कर गया था।

मेरे हाथ के भिक्षापात्र को देखती है, मेरी आत्मा को देख। मेरी चारों तरफ झरती हुई आभा को देख। यह संगीत जो मेरे हृदय में बज रहा है, इसको सुन।

क्रोध में थी यशोधरा। और क्रोध बिल्कुल स्वाभाविक था। लेकिन बुद्ध की यह सिंहगर्जना! उसने अपने आंसू पोंछे, गौर से बुद्ध को देखा। यह प्रमाद! यह सौंदर्य!

यह निश्चित ही दूसरा व्यक्ति है। देह वही है, आत्मा बदल गई है। यह गरिमा, यह गौरव-मंडित रूप, यह इस पृथ्वी का नहीं है। यह परलोक से उतरा है। यह दिव्य है।

पश्चिम के बहुत बड़े विचारक, इतिहासज्ञ एच० जी० वेल्स ने लिखा है कि इस पृथ्वी पर बुद्ध से ज्यादा ईश्वर-विहीन और ईश्वर-जैसा व्यक्ति दूसरा नहीं है।

बुद्ध ईश्वर को मानते नहीं थे इसलिए ऐसा लिखा है। "सो गॉडलेस एंड सो गॉडलाइक" : इतना ईश्वरशून्य और इतना ईश्वर-जैसा!

झुकी यशोधरा, भिक्षुणी हो गई।

ओशो, नाम सुमिर मन बावरे-७

**Punjabhai Bharadiya**

11h · 🌐

बुद्ध बारह वर्ष बाद घर लौटे, उनकी पत्नी नाराज थी। उसने अपने बेटे को उनके सामने खड़ा कर दिया। कहा, राहुल, ये तेरे पिता हैं।

ये घर छोड़कर भाग गए थे। अब मिल गए हैं। अब दुबारा कभी मिलना हो या न मिलना हो, इनसे अपनी वसीयत मांग ले।

यह मजाक था, व्यंग्य था। बुद्ध के पास अब क्या था वसीयत देने को? भिखारी थे। हाथ में सिर्फ एक भिक्षापात्र था। मां मजाक कर रही थी। मां व्यंग्य कर रही थी। अपने बेटे से कह रही थी, देख ले, ये हैं तेरे पिता।

तू बार-बार पूछता था कि मेरे पिता कौन, मेरे पिता कौन हैं? यह जो भिखमंगा तुम्हारे सामने खड़ा है, यह तुम्हारा पिता है। इसने तुम्हें जन्म दिया और उत्तरदायित्व नहीं समझा और घर से भाग गया। अब इससे अपनी वसीयत मांग लो, अब दुबारा मिलना हो कि न मिलना हो। फिर यह आए, न आए।

लेकिन यशोधरा को पता नहीं था कि बुद्धों के साथ मजाक में भी जुड़ जाओ तो मजाक महंगी पड़ जाती है। राहुल ने हाथ फैला दिए। मां कहती थी कि वसीयत मांग लो।

मां यह दिखाना चाहती थी कि बुद्ध को समझ में आए कि तुम सिर्फ भिखमंगे हो गए हो, और क्या हुआ? पाया क्या? खोया बहुत। सम्राट् थे, भिखमंगे हो गए। आज बेटा हाथ फैलाए खड़ा है तुम्हारे पास देने को एक पैसा भी नहीं है। यह क्या पाना हुआ? क्या कमाकर लौटे हो, मां यह कह रही थी।

लेकिन बुद्ध ने राहुल के फैले हुए हाथों में अपना भिक्षापात्र दे दिया और कहा, तेरी दीक्षा हो गई, तू भी भिक्षु हुआ। मेरे पास यही धन है देने को। मैं ध्यान लेकर लौटा हूँ, ध्यान तुझे दूंगा।

और यशोधरा को कहा कि तूझे भी मेरा निमंत्रण है। मैं परम संपदा



Like



Send



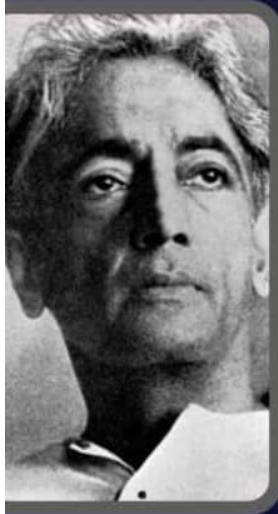
Share



जिदू कृष्णमूर्ति हिंदी (Jiddu Krishnamu... ⋮



Sachit Awasthi · 37m · 🌐



गहराई किताबों में नहीं होती.
यह किसी गुरु के पास नहीं है.
ये किसी मंदिर या चर्च में नहीं है.
इसे अपने भीतर ही खोजना है।
आपको बहुत गहराई से खोदना होगा,
आपको एक एक कदम
गहराई से इसमें जाना होगा।
विचार की प्रत्येक गतिविधि,
भावना की प्रत्येक क्रिया को देखें,
और तब आप पाएंगे कि
जो कुछ आप देखते हैं
उसकी कोई सीमा नहीं है,
कोई तलहटी नहीं है।



मुक्तिमार्ग

जे. कृष्णमूर्ति

👍❤️ 28

6 shares



Like



Comment



Send



Share



You chose to see more posts like this one.



ओशो - जीवन-मृत्यु ⋮

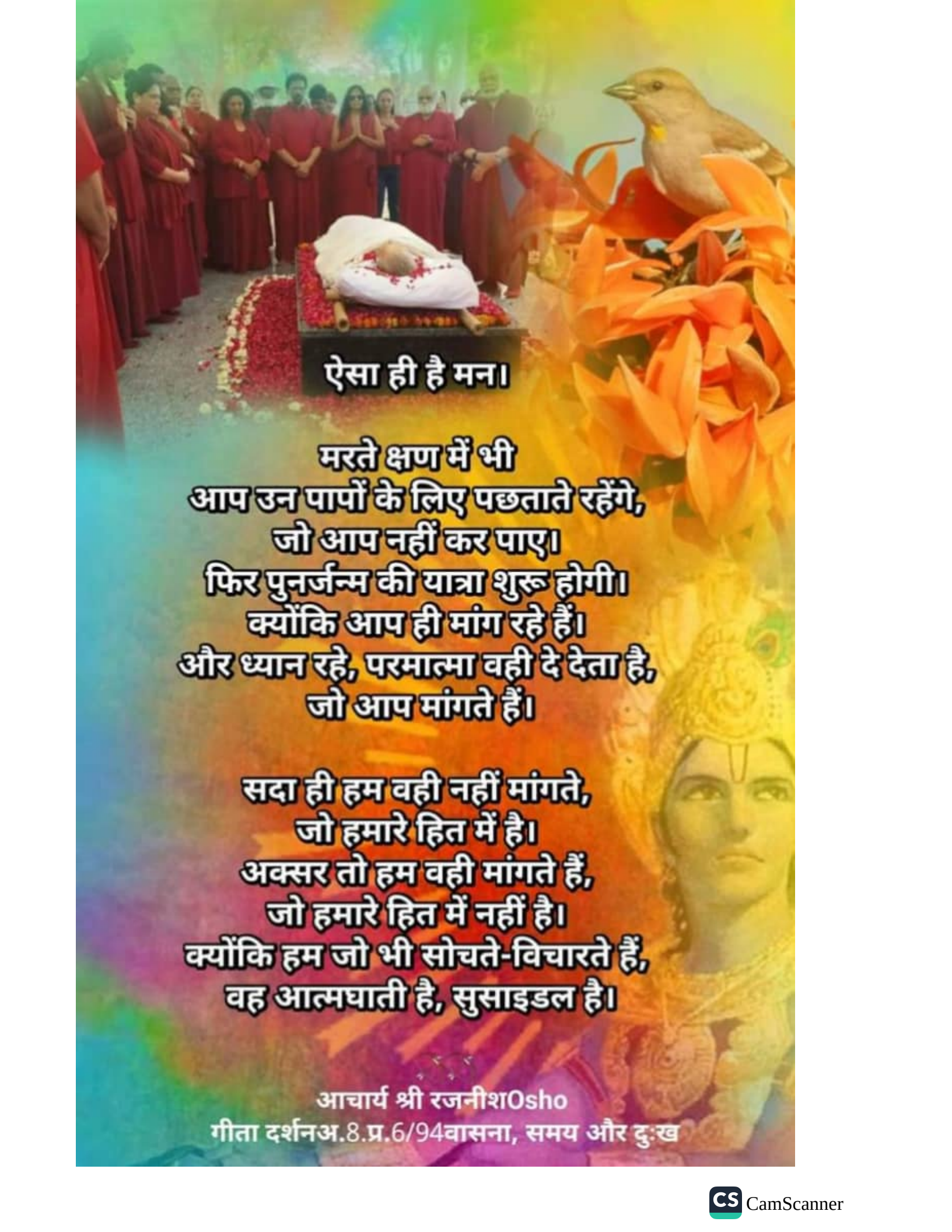


Swami Premraj Osho · 11h · 🌐



Radhya S

Reels · 11h · 🌐



ऐसा ही है मन।

मरते क्षण में भी
आप उन पापों के लिए पछताते रहेंगे,
जो आप नहीं कर पाए।
फिर पुनर्जन्म की यात्रा शुरू होगी।
क्योंकि आप ही मांग रहे हैं।
और ध्यान रहे, परमात्मा वही दे देता है,
जो आप मांगते हैं।

सदा ही हम वही नहीं मांगते,
जो हमारे हित में है।
अक्सर तो हम वही मांगते हैं,
जो हमारे हित में नहीं है।
क्योंकि हम जो भी सोचते-विचारते हैं,
वह आत्मघाती है, सुसाइडल है।

आचार्य श्री रजनीशOsho
गीता दर्शन अ.8.प्र.6/94 वासना, समय और दुःख



Create story

ओशो की बातें

सत्य सनातन

Laf

**Anamcara Rames**

21h · 🌐

नसरुद्दीन मर रहा है। फांसी पर लटकाने के पहले ही पुरोहित उससे कहता है, माफी मांग ले परमात्मा से, पश्चात्ताप कर ले। रिपेंट! नसरुद्दीन कहता है, पश्चात्ताप जरूर मेरे मन में बहुत है, लेकिन मेरे और आपके विचार में जरा-सा भेद है। शायद आप सोच रहे हैं, मैं उन पापों के लिए पश्चात्ताप करूँ, जो मैंने किए। और मैं उन पापों का पश्चात्ताप कर रहा हूँ, जो मैं नहीं कर पाया। पश्चात्ताप मेरे मन में भी है। लेकिन बड़ा दुख हो रहा है कि जब फांसी ही लगनी थी, तो वे पाप भी और कर लेता, जो छोड़े। और जब इतने पापों के लिए जो कुछ होगा, थोड़ा और दंड मिलता, और क्या होने वाला था! फांसी से ज्यादा और क्या हो सकता है?

ऐसा ही है मन। मरते क्षण में भी आप उन पापों के लिए पछताते रहेंगे, जो आप नहीं कर पाए। फिर पुनर्जन्म की यात्रा शुरू होगी। क्योंकि आप ही मांग रहे हैं। और ध्यान रहे, परमात्मा वही दे देता है, जो आप मांगते हैं।

सदा ही हम वही नहीं मांगते, जो हमारे हित में है। अक्सर तो हम वही मांगते हैं, जो हमारे हित में नहीं है। क्योंकि हम जो भी सोचते-विचारते हैं, वह आत्मघाती है, सुसाइडल है।



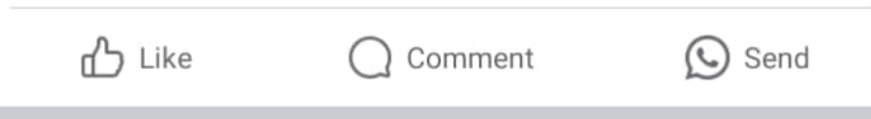
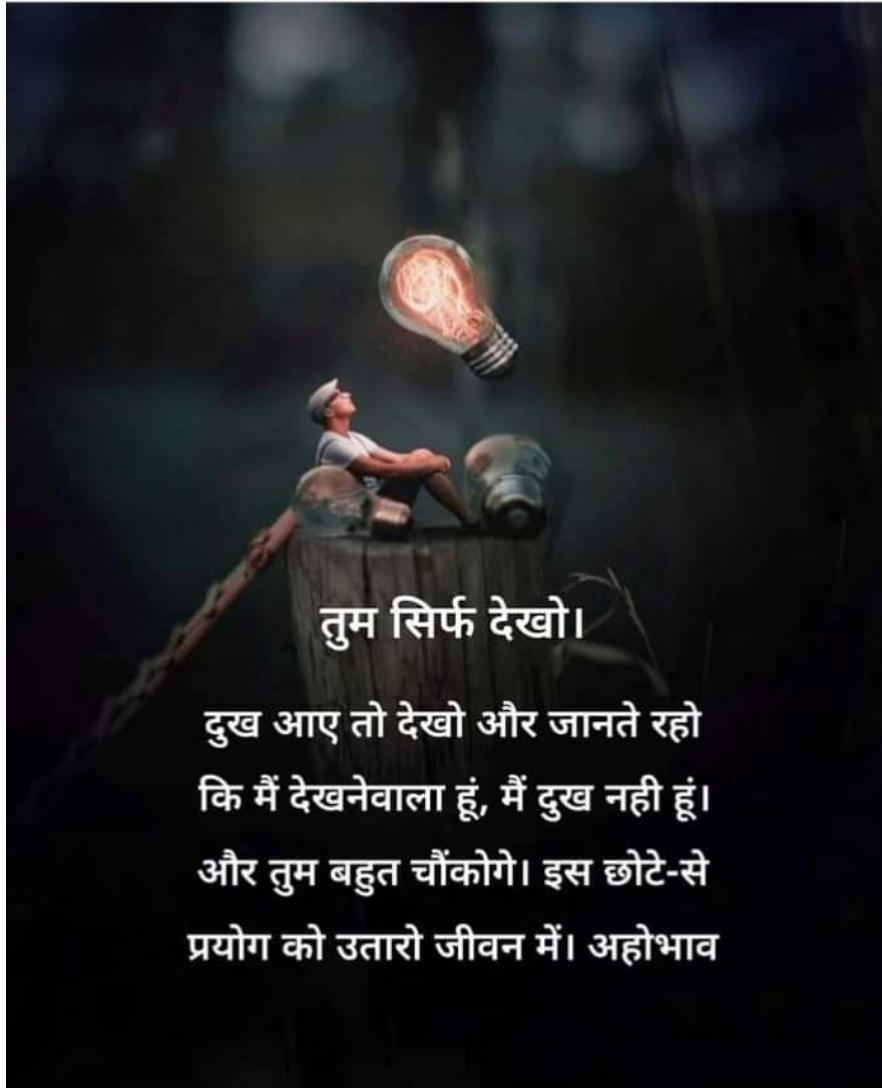
आचार्य श्री रजनीशOsho

गीता दर्शनअ.8.प्र.6/94वासना, समय और दुःख



The truth of Life

अहोभाव · 4h · 🌐🌐🌐🌐



Suggested Pages for you



Suggested Pages for you





संतों का बालक · 1d ·



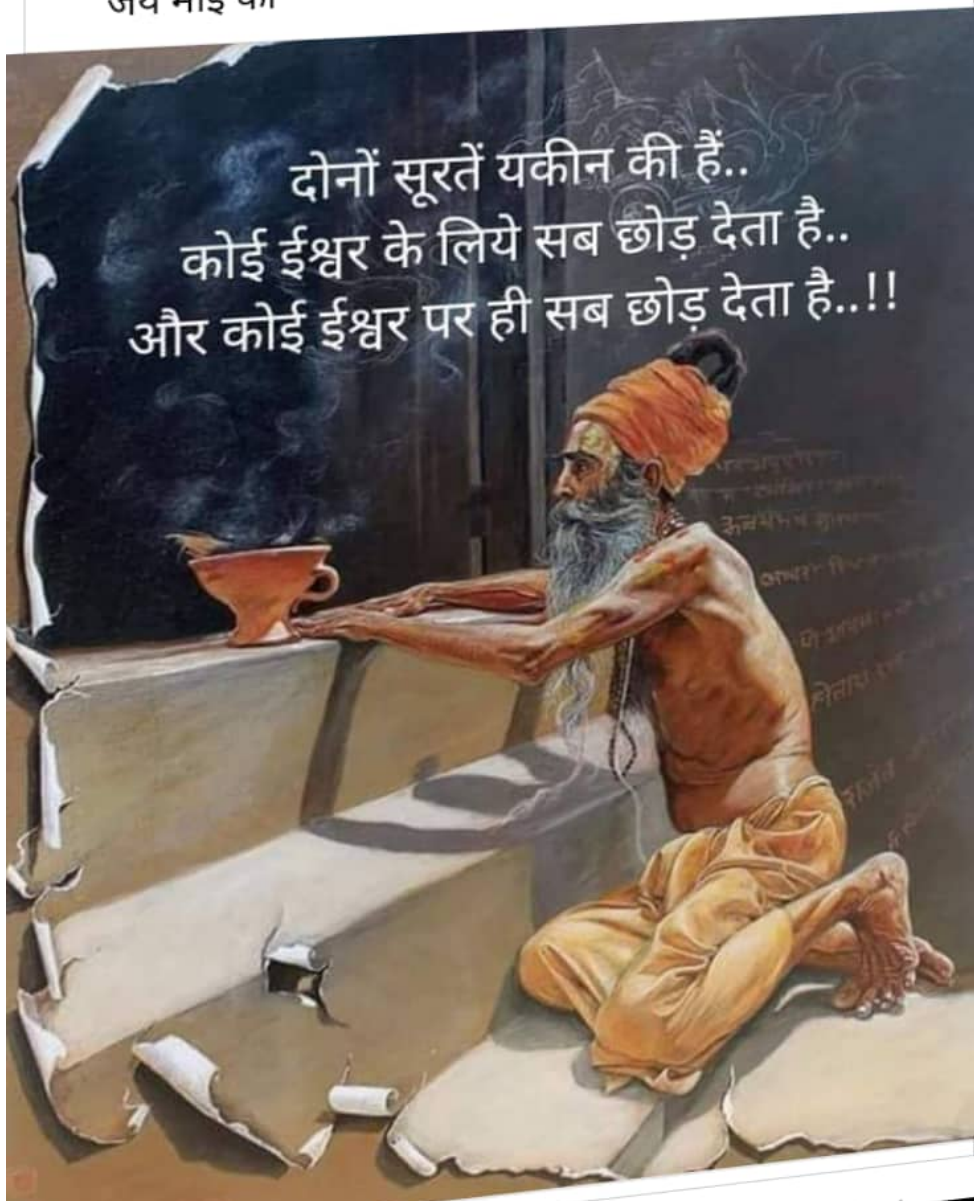
संतों का बालक

1d ·

साधू भूखा भाव का, धन का भूखा नाही ।
धन का भूखा जो फिरे, सो तो साधू नाही ॥

अर्थ : संत केवल भाव व ज्ञान की इच्छा रखते हैं। उन्हें धन का कोई लोभ नहीं होता। जो व्यक्ति साधू बनकर भी धन-संपत्ति के पीछे भागता है, वह संत नहीं हो सकता।

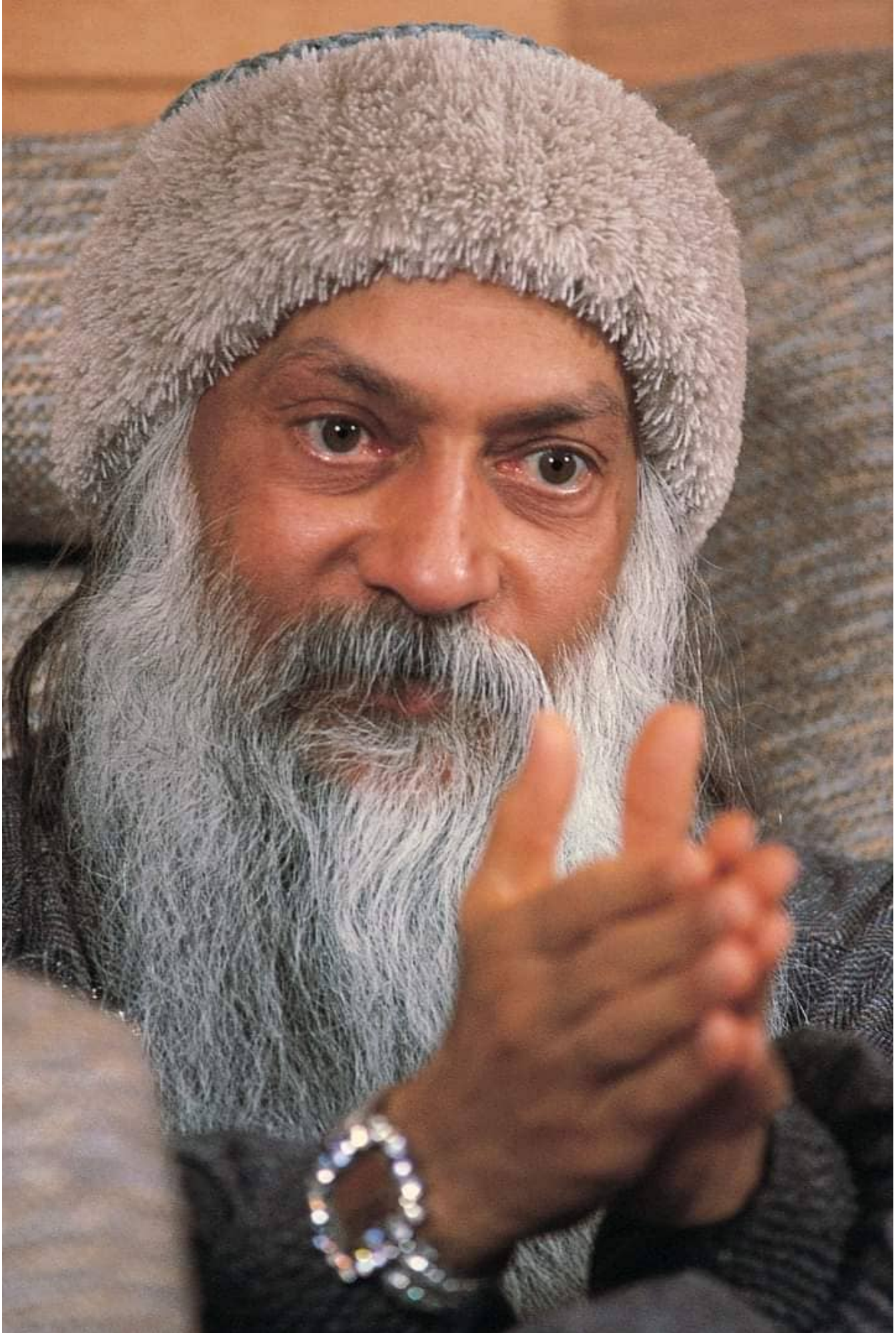
जय माई की



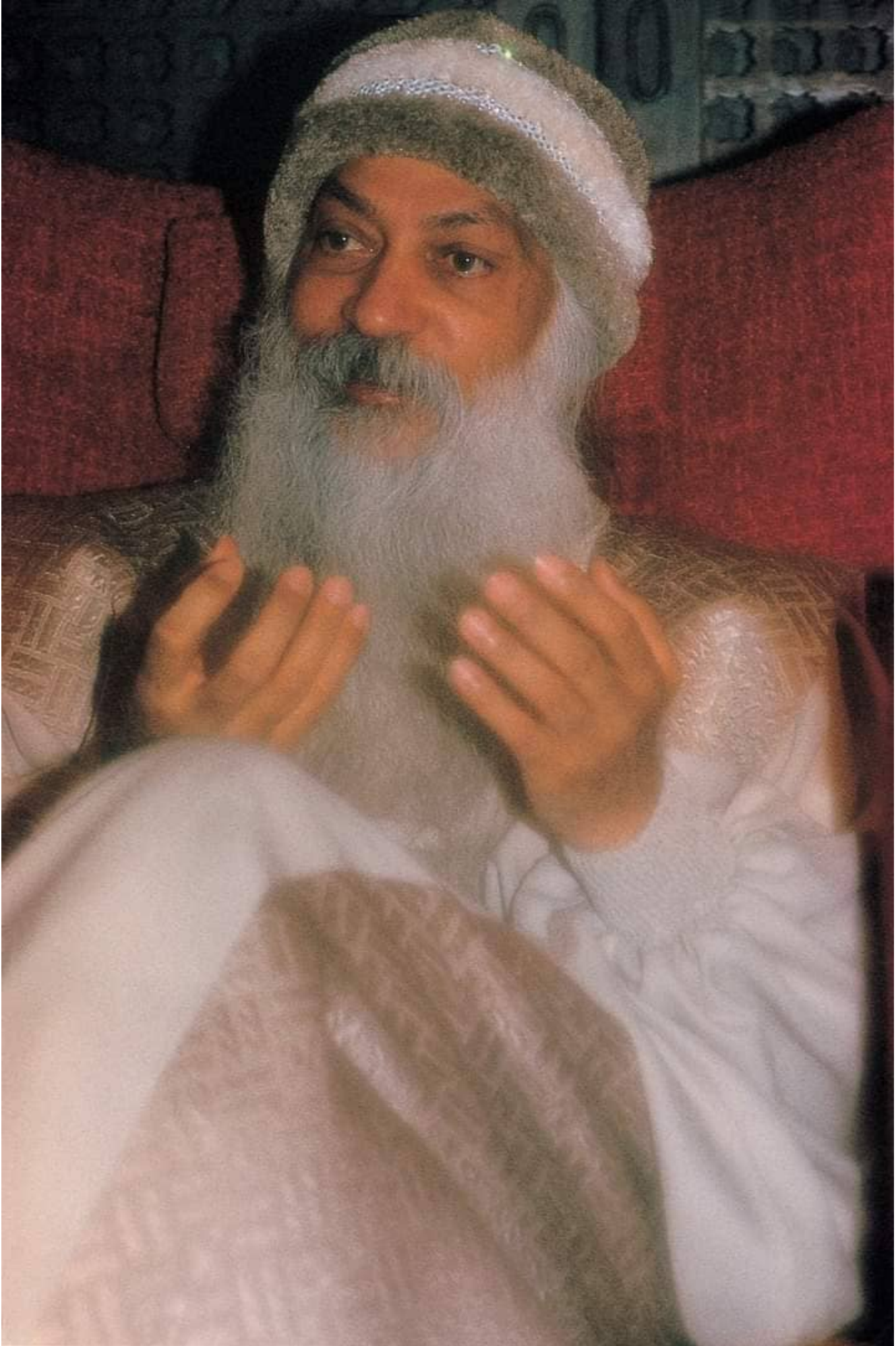
“आपके मनमें जिस व्यक्ति के प्रति
नाराज़गी है, उसे क्षमा कर दीजिए,
हृदय से क्षमा कर दीजिए। क्षमा करने
से हमारे दो चक्र पवित्र हो जाते है। एक
तो आज्ञा चक्र खुलता है क्योंकि वह
व्यक्ति आपके आज्ञा चक्र में बैठा हुआ
होता है। और दुसरा, क्षमाभावना से
हृदय चक्र खुलता है।”

♥ ओशो ♥



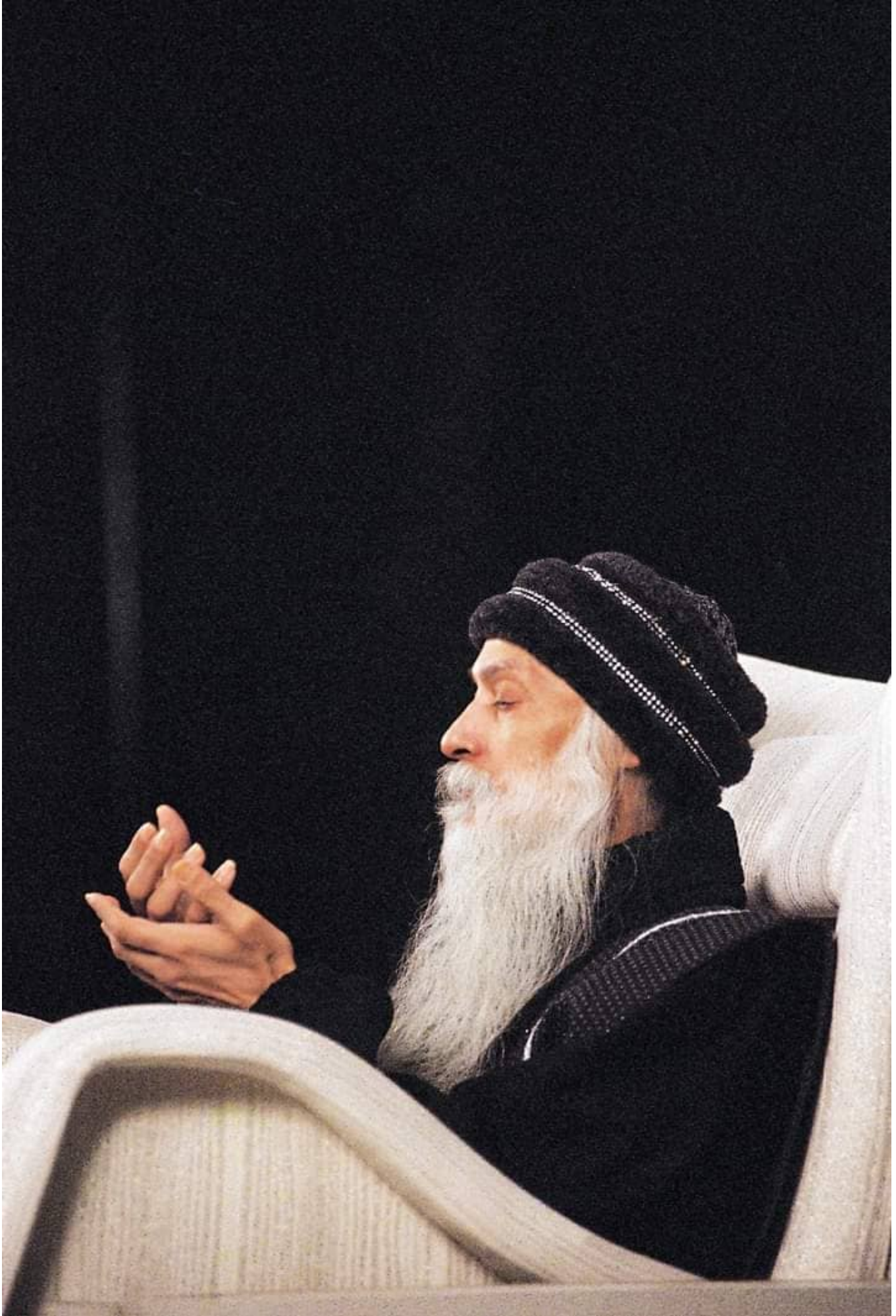




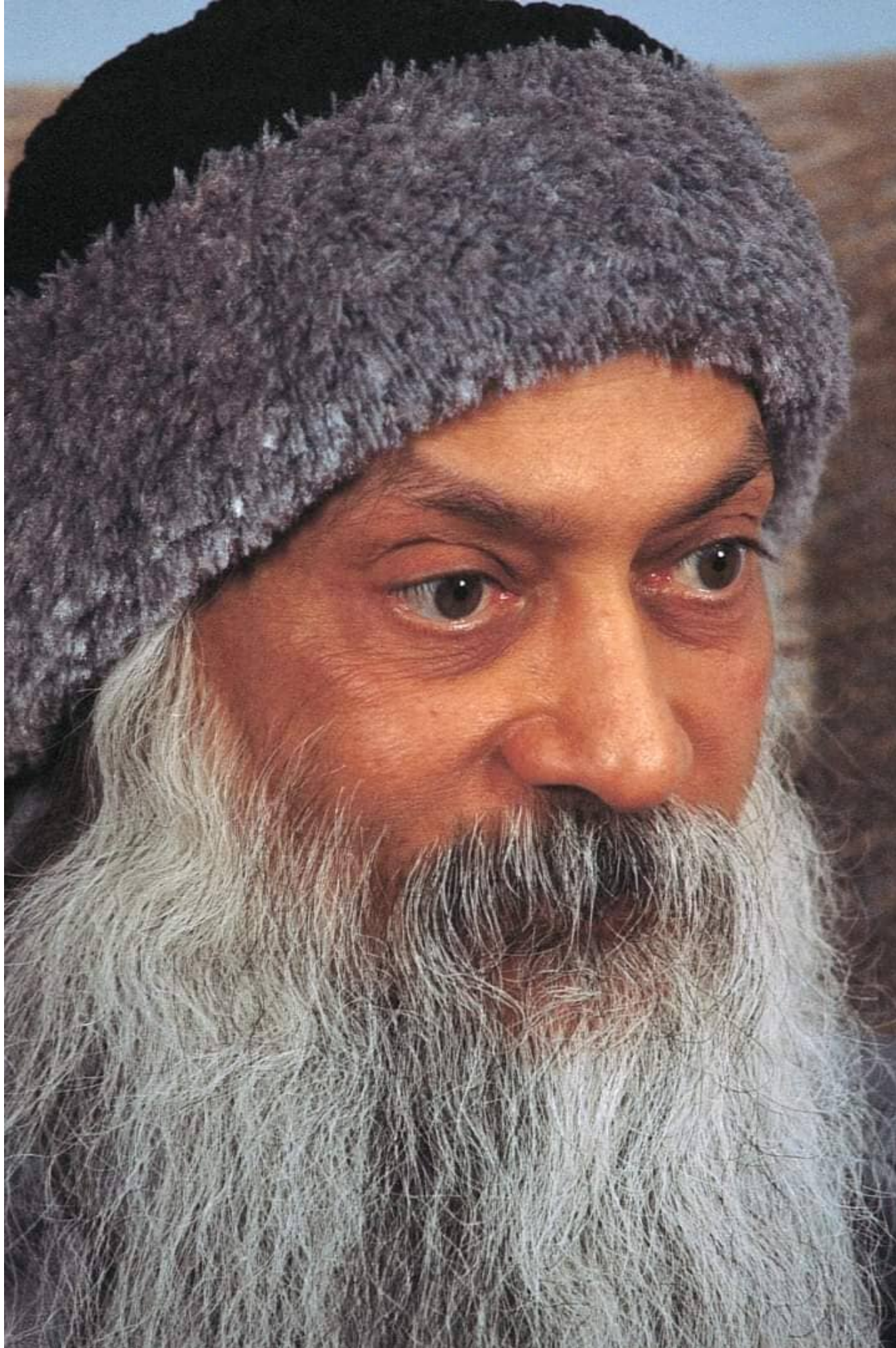










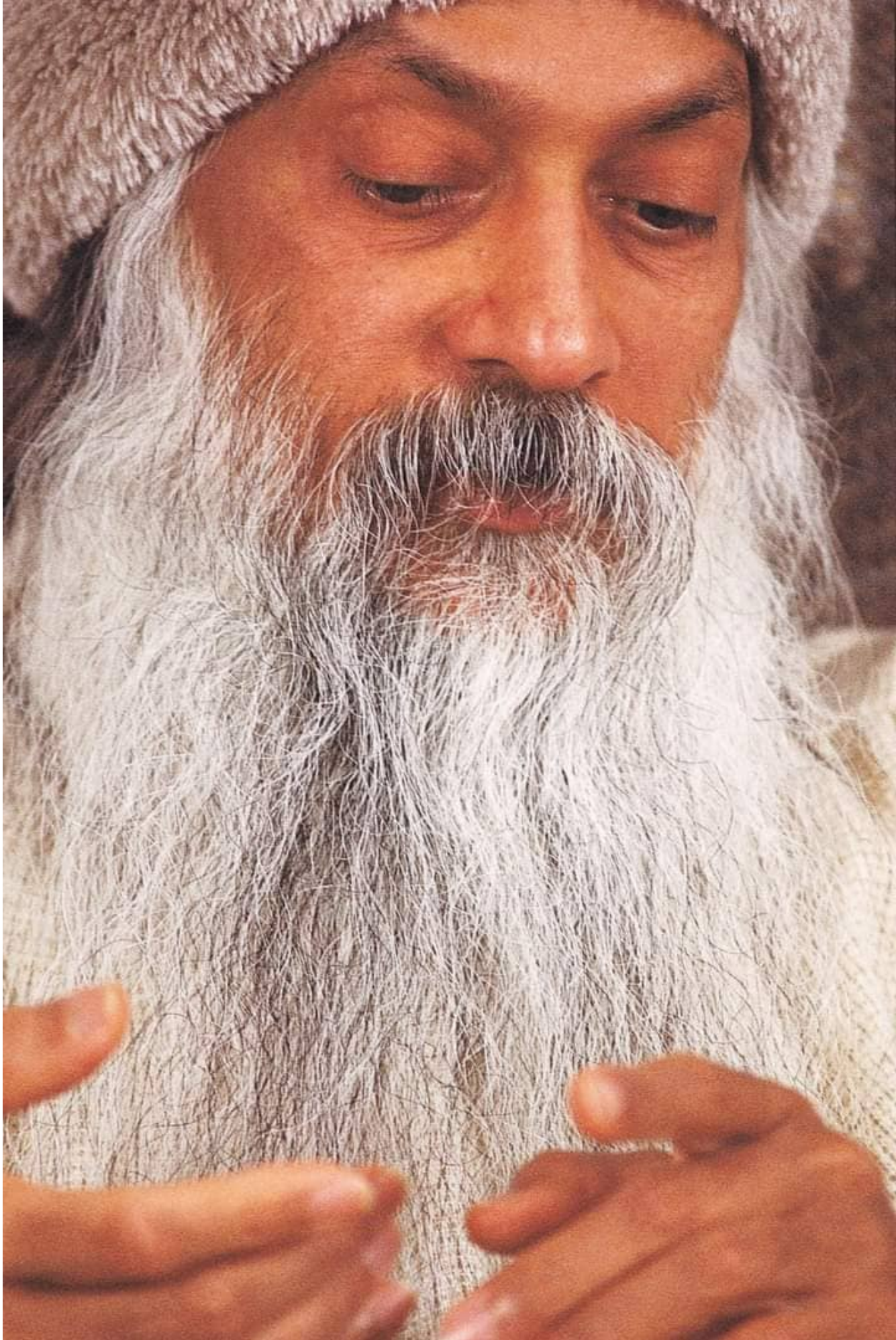




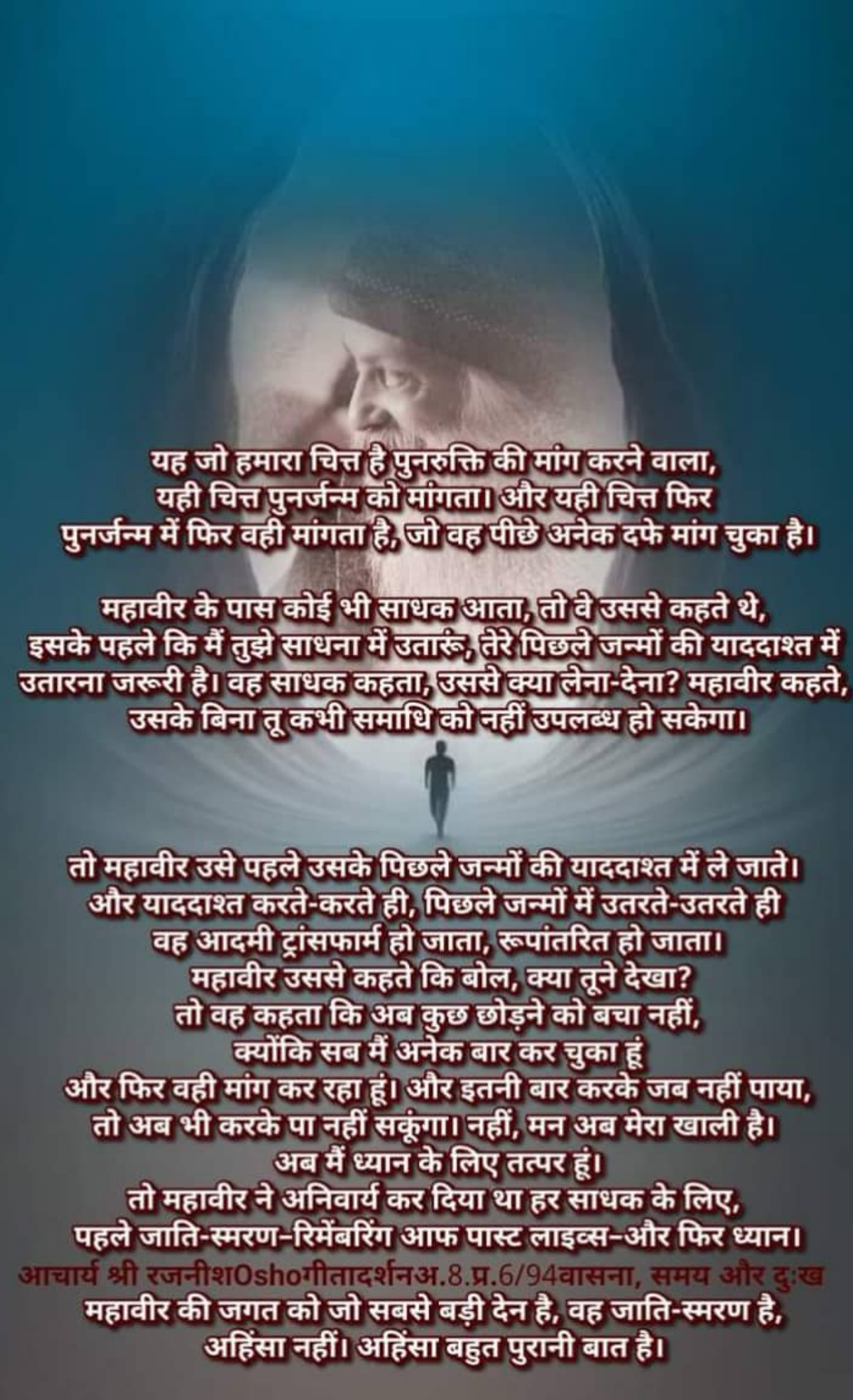












यह जो हमारा चित्त है पुनरुक्ति की मांग करने वाला,
यही चित्त पुनर्जन्म को मांगता। और यही चित्त फिर
पुनर्जन्म में फिर वही मांगता है, जो वह पीछे अनेक दफे मांग चुका है।

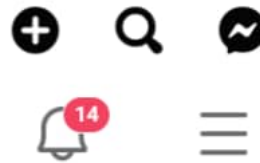
महावीर के पास कोई भी साधक आता, तो वे उससे कहते थे,
इसके पहले कि मैं तुझे साधना में उतारूं, तेरे पिछले जन्मों की याददाश्त में
उतारना जरूरी है। वह साधक कहता, उससे क्या लेना-देना? महावीर कहते,
उसके बिना तू कभी समाधि की नहीं उपलब्ध हो सकेगा।

तो महावीर उसे पहले उसके पिछले जन्मों की याददाश्त में ले जाते।
और याददाश्त करते-करते ही, पिछले जन्मों में उतरते-उतरते ही
वह आदमी ट्रांसफार्म हो जाता, रूपांतरित हो जाता।
महावीर उससे कहते कि बोल, क्या तूने देखा?
तो वह कहता कि अब कुछ छोड़ने को बचा नहीं,
क्योंकि सब मैं अनेक बार कर चुका हूं
और फिर वही मांग कर रहा हूं। और इतनी बार करके जब नहीं पाया,
तो अब भी करके पा नहीं सकूंगा। नहीं, मन अब मेरा खाली है।
अब मैं ध्यान के लिए तत्पर हूं।

तो महावीर ने अनिवार्य कर दिया था हर साधक के लिए,
पहले जाति-स्मरण-रिमेंबरिंग आफ पास्ट लाइव्स-और फिर ध्यान।

आचार्य श्री रजनीश Osho गीतादर्शन अ.8. प्र.6/94 वासना, समय और दुःख
महावीर की जगत को जो सबसे बड़ी देन है, वह जाति-स्मरण है,
अहिंसा नहीं। अहिंसा बहुत पुरानी बात है।

facebook



महावीर कहत, उसका बनावू कमा समाय का
नहीं उपलब्ध हो सकेगा।

तो महावीर उसे पहले
उसके पिछले जन्मों की याददाश्त में ले जाते।
और याददाश्त करते-करते ही,
पिछले जन्मों में उतरते-उतरते ही
वह आदमी ट्रांसफार्म हो जाता,
रूपांतरित हो जाता।

महावीर उससे कहते कि बोल, क्या तूने देखा?
तो वह कहता कि अब कुछ छोड़ने को बचा नहीं,
क्योंकि सब मैं अनेक बार कर चुका हूं
और फिर वही मांग कर रहा हूं।
और इतनी बार करके जब नहीं पाया,
तो अब भी करके पा नहीं सकूंगा।
नहीं, मन अब मेरा खाली है।
अब मैं ध्यान के लिए तत्पर हूं।

तो महावीर ने अनिवार्य कर दिया था
हर साधक के लिए,
पहले जाति-स्मरण—रिमेंबरिंग आफ पास्ट लाइव्स
—और फिर ध्यान।

महावीर की जगत को जो सबसे बड़ी देन है,
वह जाति-स्मरण है, अहिंसा नहीं।
अहिंसा बहुत पुरानी बात है।



आचार्य श्री रजनीशOsho

गीता दर्शन अ.8.प्र.6/94 वासना, समय और दुःख—

**Anamcara Rames**

1h · 🌐



यह जो हमारा चित्त है
पुनरुक्ति की मांग करने वाला,
यही चित्त पुनर्जन्म को मांगता।
और यही चित्त फिर पुनर्जन्म में
फिर वही मांगता है,
जो वह पीछे अनेक दफे मांग चुका है।

महावीर के पास कोई भी साधक आता,
तो वे उससे कहते थे,
इसके पहले कि मैं तुझे साधना में उतारूं,
तेरे पिछले जन्मों की याददाश्त में उतारना जरूरी है।
वह साधक कहता, उससे क्या लेना-देना?
महावीर कहते, उसके बिना तू कभी समाधि को
नहीं उपलब्ध हो सकेगा।

तो महावीर उसे पहले
उसके पिछले जन्मों की याददाश्त में ले जाते।
और याददाश्त करते-करते ही,
पिछले जन्मों में उतरते-उतरते ही
वह आदमी ट्रांसफार्म हो जाता,
रूपांतरित हो जाता।

महावीर उससे कहते कि बोल, क्या तूने देखा?
तो वह कहता कि अब कुछ छोड़ने को बचा नहीं,
क्योंकि सब मैं अनेक बार कर चुका हूं
और फिर वही मांग कर रहा हूं।
और इतनी बार करके जब नहीं पाया,
तो अब भी करके पा नहीं सकूंगा।
नहीं, मन अब मेरा खाली है।
अब मैं ध्यान के लिए तत्पर हूं।

तो महावीर ने अनिवार्य कर दिया था

क्रोध करके आपने कुछ पाया है? कुछ मिला?
कोई रत्न हाथ लगा? कहेंगे, कुछ भी नहीं पाया;
सिर्फ राख हाथ लगती है; और अपना ही
पतित मन हाथ लगता है। गड़ढे में गिर गए।
अपने ही हाथ से कीचड़ से भर गए।
ऐसा हो जाता है।

लेकिन दुबारा फिर क्रोध क्यों करते हैं? क्योंकि
वासना रिपिटीटिव है।
चौबीस घंटे में फिर भूल जाते हैं। फिर वासना मांग करती है।
कामवासना से भरता है चित्त।

अगर वैज्ञानिक हिसाब से सोचें, तो एक आदमी साधारणतः
अपने जीवन में चार हजार बार संभोग करता है।

साधारणतः। यह साधारण आदमी की बात कर रहा हूं,
असाधारण का हिसाब लगाना मुश्किल है।
बिल्कुल कामन आदमी, साधारण आदमी
चार हजार बार अपने जीवन में संभोग करता है।
और चार हजार बार करने के बाद भी,
नहीं करना चाहता, ऐसा नहीं है।
नहीं कर पाता, यह दूसरी बात है।
करना तो चाहता ही है।



उसने कहा कि नहीं बेटे,
मैं अंधा नहीं हूँ न तेरी मां अंधी है;
हम आख वाले हैं,
मगर किसी कर्म का फल होगा
कि हमें अंधा बेटा मिला।
लेकिन बेटे ने कहा, नहीं,
आप अंधे हैं और मेरी मां भी अंधी है।

बाप ने पूछा, तेरा मतलब क्या?
तो बेटे ने कहा, मेरा मतलब यह है
कि जीवनभर कठिन तपश्चर्या
करके मांगा भी तो पुत्र मांगा।

अंधे हो।
जीवनभर तपश्चर्या करके जब
देवता प्रगट हुआ तो मांगा भी तो पुत्र मांगा,
तुम अंधे हो। इसलिए तो मैं अंधा हुआ।

तुम संन्यास से भी सुख ही मांगते
हो—वही सुख जो संसार से मांगते थक
गए हो और नहीं मिला।
संन्यास से शांति मांगो, सुख नहीं।
शांति मिलती है,
शांति की छाया की तरह सुख चला आता है।
तुमने जगत में सुख मांगा अब तक,
सुख की छाया की तरह अशांति मिलती है।

इस सूत्र को खयाल रखना,
यह फिर एक विरोधाभास।
सुख मांगो, अशांति मिलती है;
शांति मांगो, सुख मिलता है।

एस धम्मो सनंतनो



**रजनीशपुरम**

Munabai Makvana · 3d · 🌐



पुराणों में कथा है
 देवशर्मा नाम के एक ब्राह्मण थे,
 और उसकी पत्नी थी सुधर्मी।
 देवशर्मा पुत्रविहीन थे।
 उन्होंने बहुत तपश्चर्या की,
 बहुत योग साधा, बहुत ध्यान किया,
 फलस्वरूप देवता उन पर प्रसन्न हुए;

और जब देवता प्रगट हुआ
 तो देवशर्मा ने पुत्र मांगा।
 पुत्र पैदा हुआ, वरदान फला।
 लेकिन पुत्र अंधा था।
 मां—बाप बहुत दुखी हुए।
 बुढ़ापे में मिला भी बेटा तो अंधा।
 जीवनभर इसी बेटे के लिए प्रार्थनाएं कीं,
 पूजाएं कीं, तप किया, योग किया,
 जो भी कर सकते थे किया;
 तीर्थ गए, सब किया और मिला अंधा!
 पर अब तो कोई उपाय न था।

इस अंधे बेटे को बड़ा किया,
 गुरुकुल भेजा।
 कुछ थोड़ा—बहुत पढ़—लिखकर
 बेटा वापस लौटा।
 जब अंधा बेटा गुरुकुल से वापस आया,
 तो उसने अपने पिता से पूछा
 कि क्या आप अभी अंधे हैं?
 क्योंकि अंधे पिता के बिना
 अंधा पुत्र कैसे हो सकता है?
 देवशर्मा तो बहुत हैरान हुआ।

शारीरिक मृत्यु के उपरांत भी
विचार निरंतर बना रहता है।
इसे सिद्ध भी किया जा चुका
है।-- जे.कृष्णमूर्ति
(कृष्णमूर्ति ने यहां जो शब्द
'यादें' प्रयोग किया है वह
विचार ही है।)

यादें
मृत
होती है।
और हम
मृत
चीज पर
जीते है।

जिहू कृष्णमूर्ति



महावीर की जो मौलिक, ओरिजिनल कांट्रिब्यूशन है मनुष्य को,
वह है जाति-स्मरण की प्रक्रिया, पिछले जन्म की याददाश्त।

और एक बार पिछले जन्मों की याददाश्त आ जाए,
तो आप खुद ही कहेंगे, यह मैं क्या कर रहा हूं?
एक जन्म में चार हजार दफे संभोग किया; और
हजारों जन्म हो चुके, करोड़ों बार संभोग किया;
और अब तक कुछ पाया नहीं। अब फिर आज संभोग करना है?
फिर आज संभोग में उतरना है? क्या फिर भी उतर पाएंगे?

कुछ कहा नहीं जा सकता। कुछ कहा नहीं जा सकता।
शायद मन कहे कि पता नहीं,
अब तक न हुआ हो अनुभव आनंद का, एकाध बार और।
कह सकता है मन कि क्या पता, अब तक न हुआ हो,
एकाध बार और। लेकिन मुश्किल हो जाएगा कहना।
अगर इतना याद आ जाए, तो मुश्किल हो जाएगा।

facebook



Like



Comment



Send



Share



ओशो का हिन्दी साहित्य

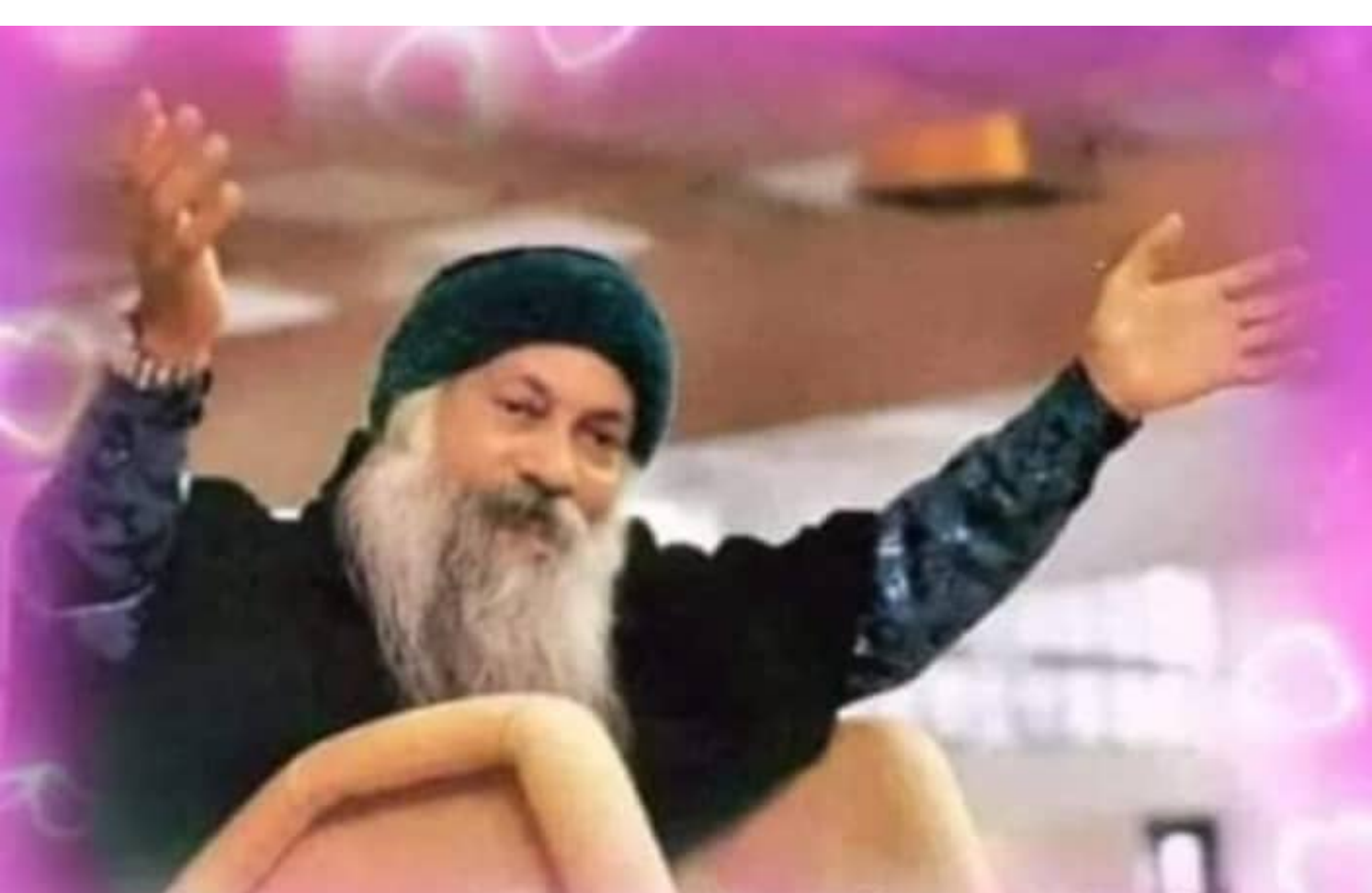


Raj Gupt · 43m · 🌐

मैंने सुना है कि मुल्ला नसरुद्दीन ने शादी की। तो उसको बच्चा नहीं होता था। तो डाक्टरों ने कहा कि आपरेशन करवा लें और बंदर की ग्रंथि लगानी पड़ेगी। तो मुल्ला ने कहा, कुछ भी हो, बच्चा होना चाहिए। बंदर की ग्रंथि लगवा ली। फिर बड़ा खुश हुआ और बड़ी मिठाइयां बांटी, क्योंकि पत्नी गर्भवती हो गयी। और बड़े बैडंबाजे बजवाए। फिर नौ महीने भी पूरे हो गये। फिर पत्नी अस्पताल में भर्ती हुई। मुल्ला दरवाजे पर खड़ा आतुरता से प्रतीक्षा कर रहा है, उसका दिल धड़क रहा है। डाक्टर बाहर आया, तो उसने पूछा कि डाक्टर साहब, लड़का हुआ कि लड़की? उसने कहा, भई, ठहरो जरा! जो भी हुआ है छलांग मार कर सीलिंग फैन पर चढ़ गया है। उतरे तो पता लगाएं कि लड़का है कि लड़की। अब बंदर की ग्रंथि लगवाओगे, तो तुम और ज्यादा आशा कर भी नहीं सकते!

तुम्हारे जीवन में अगर सिर्फ रोग ही रोग हाथ में आता है और तुम्हारे जीवन में अगर दुर्गंध ही दुर्गंध मिलती है और दुख ही दुख मिलता है तो कुछ आश्चर्य नहीं है, सीधा—साधा गणित है। तुम गलत बीजों को इकट्ठा करते हो। तुम घास—पात तो इकट्ठा कर लेते हो, फूलों को नष्ट कर देते हो।

अष्टावक्र महागीता 🌸🙏🌸 ओशो



भीड़ का अनुसरण न करो; वरना तुम दुखी रहोगे
क्योंकि वे दुखी हैं। वे चाहते हैं कि तुम उनके
सिद्धान्तों का, उनकी परंपराओं का, उनके धर्म का,
उनकी सभ्यता का पालन करो। हर भीड़ तानाशाह,
सर्वसत्तात्मक है। हर भीड़ स्वतंत्रता की विरोधी,
निजता की विरोधी, सत्य की विरोधी, हर उस चीज
की विरोधी है जो मूल्यवान है। तो पहला साहस है
अकेले होना।

दि गोल्डन विंड-----ओशो...



LIKE

COMMENT

SEND

SHARE

**Anamcara Rames**

...



3h · 🌐

क्या आपको पता है,
सभी वासनाएं रिपिटीटिव हैं?
आप बहुत-सी वासनाएं नहीं कर रहे हैं,
एक-एक वासना को हजार-हजार बार दोहरा रहे हैं।
और बड़ा मजा यह है
कि हर बार दोहराकर कहते हैं,
कुछ नहीं पाया। और
चौबीस घंटेभर बाद फिर
दोहराने को तैयार खड़े हैं।
बड़े अजीब हैं!

अपनी भी याद नहीं रहती
कि चौबीस घंटे पहले क्या कहा था!
कितनी बार आपने क्रोध किया है?
और हर क्रोध के बाद कितनी बार आप पछताए हैं?
शायद क्रोध से ज्यादा पछताए होंगे।
क्योंकि आदमी एक दफे क्रोध करता है,
तो पीछे पांच-सात दफे पछताता है।
लेकिन यह पछताना क्रोध के
आने में रुकावट नहीं बनती।
बल्कि जो जानते हैं, वे कहते हैं,
यह पछतावा फिर से क्रोध करने की
तैयारी है।



आचार्य श्री रजनीशOsho

गीता दर्शन अ.8.प्र.6/94 वासना, समय और दुःख—

पिछली याद भुला दो पिछली याद भुला दो
गुजरें बीते अफसानों का
गुजरे बीते अफसानों का हर एक नक्श मिटा दो
पिछली याद भुला दो पिछली याद भुला दो

www.hindilyrics4u.com www.hindilyrics4u.com

अहदे वफ़ा पे मर मिट जाना, अहदे वफ़ा पे मर मिट जाना
ये है रसम पुरानी

इश्क मोहब्बत प्यार की कसमे समझो एक कहानी
दिल को समझा दो, दिल को समझा दो
गुजरे बीते अफसानों का हर एक नक्श मिटा दो
पिछली याद भुला दो

www.hindilyrics4u.com www.hindilyrics4u.com

भुला बिसरा जज्बात कोई, भुला बिसरा जज्बात कोई
कदमों को बहकने दे

आंच पुरानी यादों की ना, चिंगारी सुलगा दे
इनके राज बना दो, इनके राज बना दो
गुजरे बीते अफसानों का हर एक नक्श मिटा दो
पिछली याद भुला दो

www.hindilyrics4u.com www.hindilyrics4u.com

भरे खजाने खुशियों के, भरे खजाने खुशियों के
किस्मत से आज मिले है

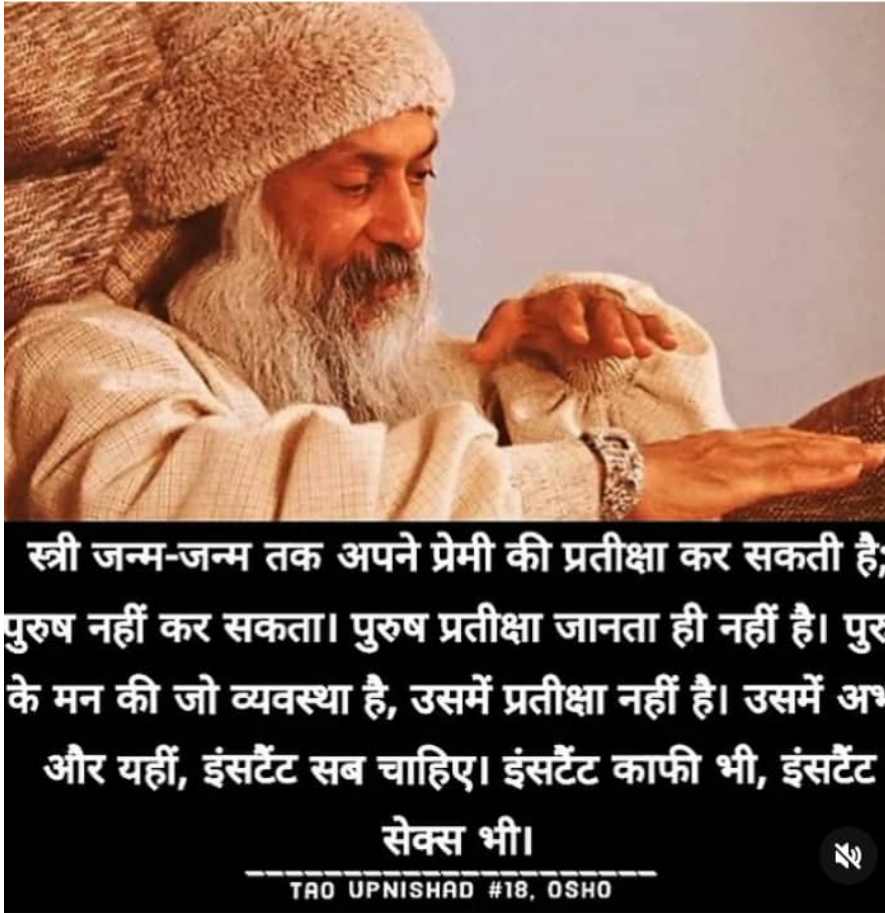
आशाओं की फुलवाड़ी में फूल ही फूल खिले है
चुन चुन सेज सजा दो, चुन चुन सेज सजा दो
गुजरे बीते अफसानों का हर एक नक्श मिटा दो
पिछली याद भुला दो पिछली याद भुला दो
पिछली याद भुला दो

<https://www.hindilyrics4u.com>

[View all 11 comments](#)2 days ago • [See translation](#)**oshospirituality**

Bhadohi : The Carpet City

🎵 Little Music Box • Marigold

Liked by [osho_mania](#) and 170 others[oshospirituality](#) [#OSHO](#)[View 1 comment](#)

Add a comment...

3 days ago

**oshosatsang**

Bhadohi : The Carpet City

🎵 MusicoterapiaTeam • Spirit of the Montain





insta:- swami_dhyan_rohan

"तुम्हें एक और बहुत ऊँचे नियम का पता नहीं है "
अस्तित्व उनकी सुरक्षा करता है, जो सत्य की खोज में है।

~ आचार्य रजनीश

Instagram



Visit Instagram profile

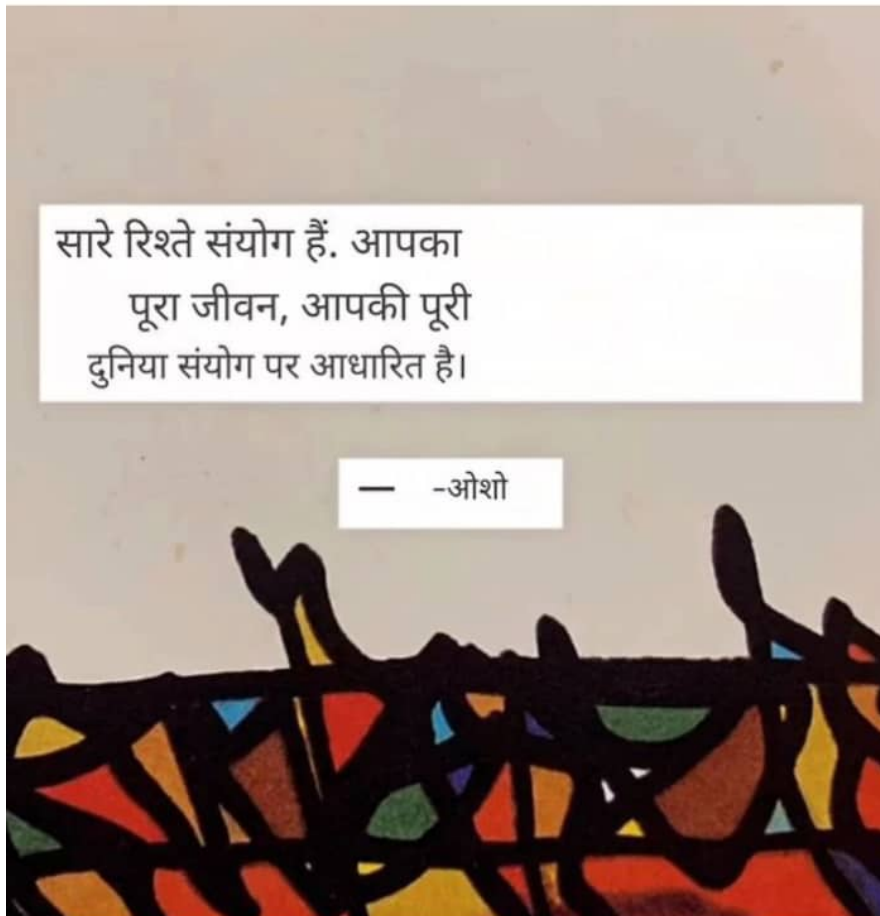


2,937 views

amit_chauhan_07 "Yoga is the journey of the self, through the self, to the self." – The Bhagavad Gita. 🙏... more



only_osho_1968



147 likes

1 day ago



sw_dhyan_rohan



क्रोध करके आपने कुछ पाया है? कुछ मिला?
कोई रत्न हाथ लगा? कहेंगे, कुछ भी नहीं पाया;
सिर्फ राख हाथ लगती है; और अपना ही
पतित मन हाथ लगता है। गड़ढे में गिर गए।
अपने ही हाथ से कीचड़ से भर गए।
ऐसा हो जाता है।

लेकिन दुबारा फिर क्रोध क्यों करते हैं? क्योंकि
वासना रिपिटीटिव है।
चौबीस घंटे में फिर भूल जाते हैं। फिर वासना मांग करती है।
कामवासना से भरता है चित्त।

अगर वैज्ञानिक हिसाब से सोचें, तो एक आदमी साधारणतः
अपने जीवन में चार हजार बार संभोग करता है।

साधारणतः। यह साधारण आदमी की बात कर रहा हूं,
असाधारण का हिसाब लगाना मुश्किल है।
बिल्कुल कामन आदमी, साधारण आदमी
चार हजार बार अपने जीवन में संभोग करता है।
और चार हजार बार करने के बाद भी,
नहीं करना चाहता, ऐसा नहीं है।
नहीं कर पाता, यह दूसरी बात है।
करना तो चाहता ही है।

आचार्य श्री रजनीश Osho
गीता दर्शन अ.8.प्र.6/94 वासना, समय और दुःख

पश्चात्ताप आदमी इसीलिए करता है,
ताकि फिर क्रोध कर सके।
यह बहुत उलटा लगेगा। लेकिन
आपका अनुभव भी यही कहेगा।

तो मैं तो आपसे कहूंगा,
अगर क्रोध से मुक्त होना हो,
तो अब की बार क्रोध करना,
पश्चात्ताप मत करना।
फिर देखें, क्रोध दुबारा आता है कि नहीं!
अगर पश्चात्ताप से बच गए,
तो फिर क्रोध को दोहरा न सकेंगे,
क्योंकि क्रोध के लिए पुरानी
स्थिति उपलब्ध नहीं होगी।

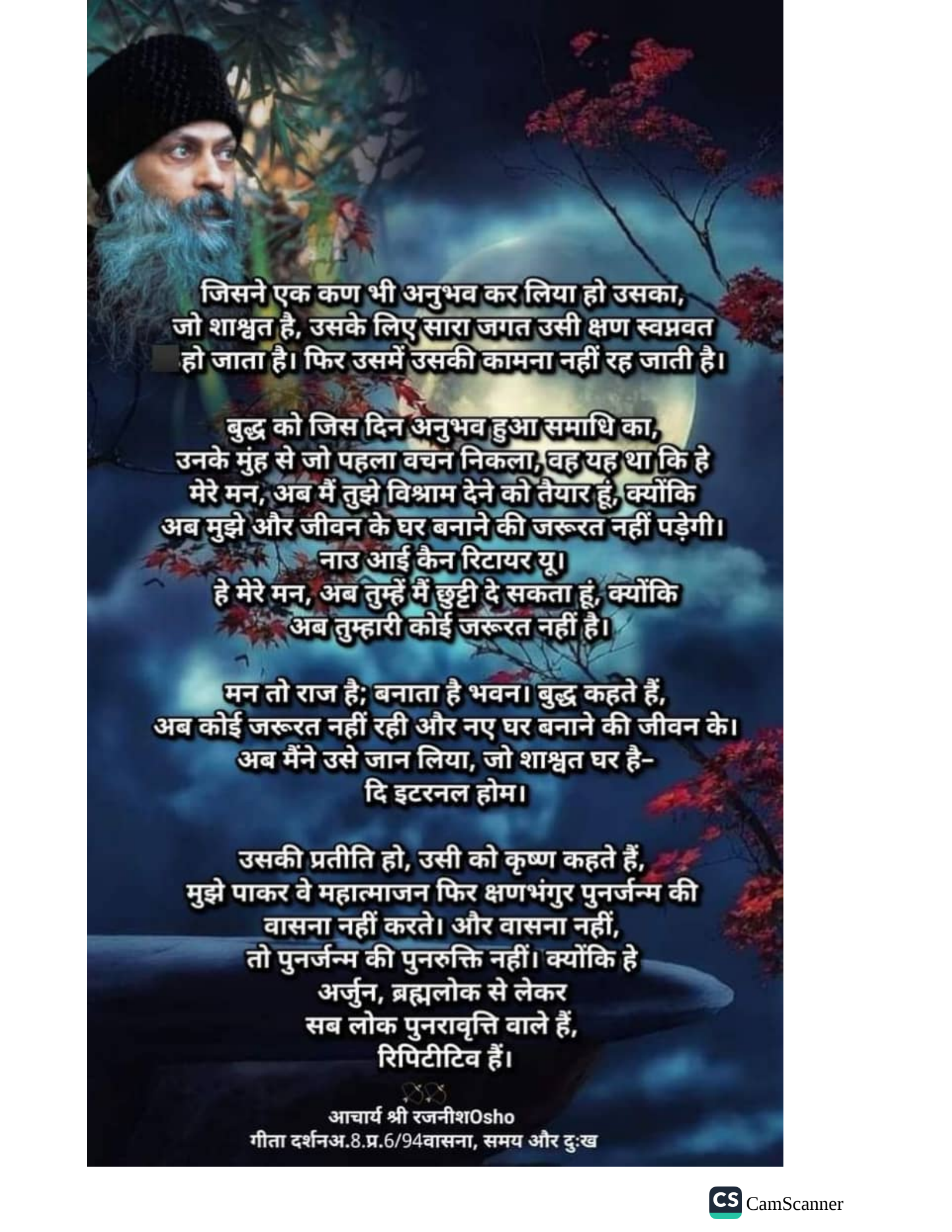
लेकिन पश्चात्ताप से बचना
उतना ही मुश्किल है,
जितना क्रोध से बचना मुश्किल है।
दोनों अनकांशस हैं, दोनों अचेतन हैं।
आप कहते हैं,
क्या करें, क्रोध आ ही गया!
फिर ऐसे ही, क्या करें,
पश्चात्ताप आ ही गया!
दोनों एक साथ चलते रहेंगे।



आचार्य श्री रजनीशOsho

गीता दर्शन अ.8.प्र.6/94 वासना, समय और दुःख





जिसने एक कण भी अनुभव कर लिया हो उसका,
जो शाश्वत है, उसके लिए सारा जगत उसी क्षण स्वप्नवत
हो जाता है। फिर उसमें उसकी कामना नहीं रह जाती है।

बुद्ध को जिस दिन अनुभव हुआ समाधि का,
उनके मुंह से जो पहला वचन निकला, वह यह था कि हे
मेरे मन, अब मैं तुझे विश्राम देने को तैयार हूं, क्योंकि
अब मुझे और जीवन के घर बनाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

नाउ आई कैन रिटायर यू।
हे मेरे मन, अब तुम्हें मैं छुट्टी दे सकता हूं, क्योंकि
अब तुम्हारी कोई जरूरत नहीं है।

मन तो राज है; बनाता है भवन। बुद्ध कहते हैं,
अब कोई जरूरत नहीं रही और नए घर बनाने की जीवन के।
अब मैंने उसे जान लिया, जो शाश्वत घर है-
दि इटर्नल होम।

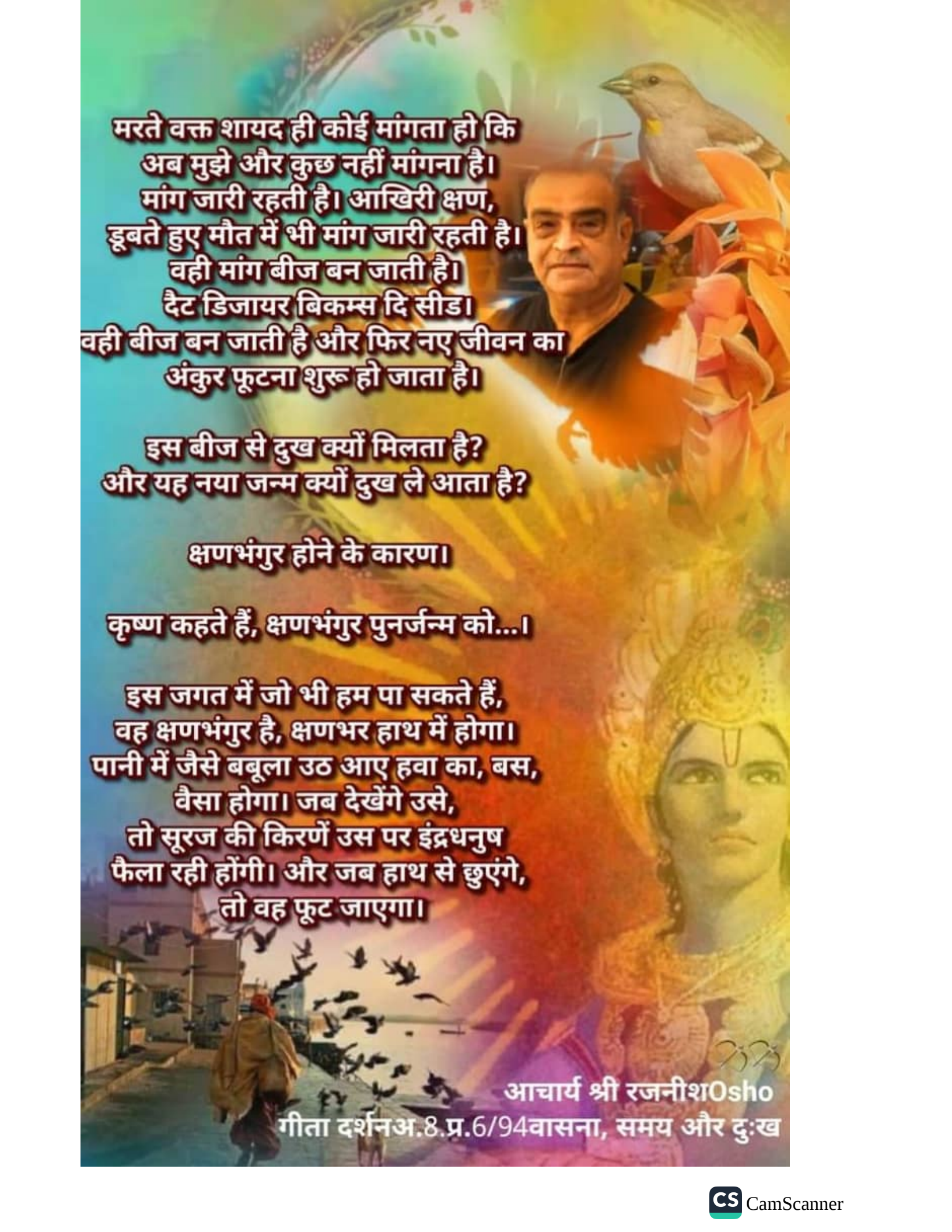
उसकी प्रतीति हो, उसी को कृष्ण कहते हैं,
मुझे पाकर वे महात्माजन फिर क्षणभंगुर पुनर्जन्म की
वासना नहीं करते। और वासना नहीं,
तो पुनर्जन्म की पुनरुक्ति नहीं। क्योंकि हे
अर्जुन, ब्रह्मलोक से लेकर
सब लोक पुनरावृत्ति वाले हैं,
रिपिटीटिव हैं।

आचार्य श्री रजनीश Osho
गीता दर्शन अ.8.प्र.6/94 वासना, समय और दुःख

क्या आपको पता है,
सभी वासनाएं रिपिटीटिव हैं?
आप बहुत-सी वासनाएं नहीं कर रहे हैं,
एक-एक वासना को हजार-हजार
बार दोहरा रहे हैं।
और बड़ा मजा यह है
कि हर बार दोहराकर कहते हैं,
कुछ नहीं पाया। और
चौबीस घंटेभर बाद फिर
दोहराने को तैयार खड़े हैं।
बड़े अजीब हैं!

अपनी भी याद नहीं रहती कि
चौबीस घंटे पहले क्या कहा था!
कितनी बार आपने क्रोध किया है?
और हर क्रोध के बाद
कितनी बार आप पछताए हैं?
शायद क्रोध से ज्यादा पछताए होंगे।
क्योंकि आदमी एक दफे क्रोध करता है,
तो पीछे पांच-सात दफे पछताता है।
लेकिन यह पछताना क्रोध के आने
में रुकावट नहीं बनती।
बल्कि जो जानते हैं,
वे कहते हैं, यह पछतावा फिर से
क्रोध करने की तैयारी है।

आचार्य श्री रजनीश Osho
गीता दर्शन अ.8.प्र.6/94 वासना, समय और दुःख



मरते वक्त शायद ही कोई मांगता हो कि
अब मुझे और कुछ नहीं मांगना है।
मांग जारी रहती है। आखिरी क्षण,
डूबते हुए मौत में भी मांग जारी रहती है।
वही मांग बीज बन जाती है।
दौट डिजायर बिकम्स दि सीड।
वही बीज बन जाती है और फिर नए जीवन का
अंकुर फूटना शुरू हो जाता है।

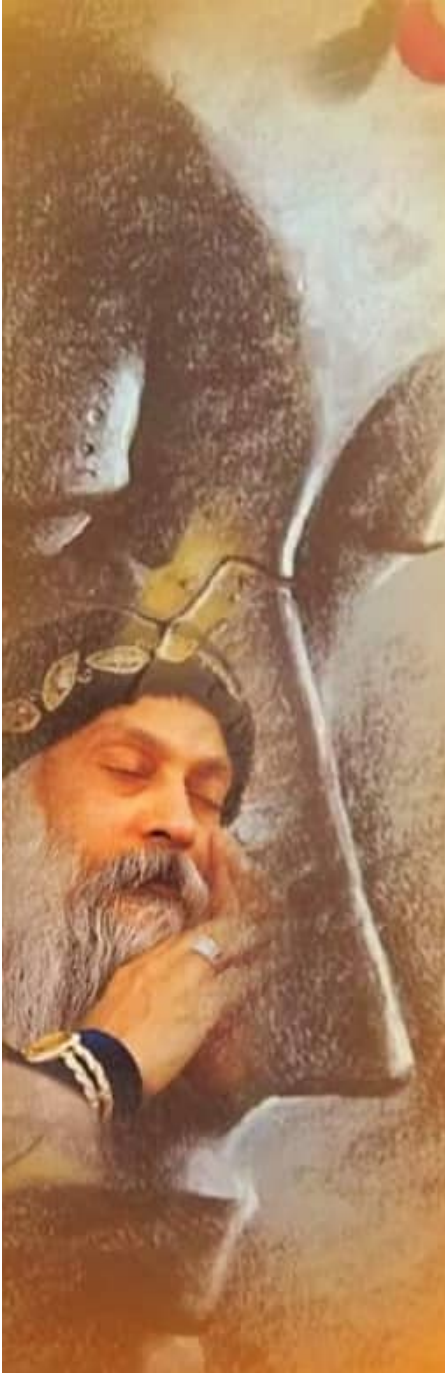
इस बीज से दुख क्यों मिलता है?
और यह नया जन्म क्यों दुख ले आता है?

क्षणभंगुर होने के कारण।

कृष्ण कहते हैं, क्षणभंगुर पुनर्जन्म को...।

इस जगत में जो भी हम पा सकते हैं,
वह क्षणभंगुर है, क्षणभर हाथ में होगा।
पानी में जैसे बबूला उठ आए हवा का, बस,
वैसा होगा। जब देखेंगे उसे,
तो सूरज की किरणें उस पर इंद्रधनुष
फैला रही होंगी। और जब हाथ से छुएंगे,
तो वह फूट जाएगा।

आचार्य श्री रजनीश Osho
गीता दर्शन अ. 8. प्र. 6/94 वासना, समय और दुःख



क्षणभंगुर सब कुछ है इस जगत में।
एक क्षण होना है उसका, और
उस क्षण में हम उसे पाने निकलते हैं।
जब तक हम पाने के करीब पहुंचते हैं,
वह क्षण बीत चुका होता है।
दुख हाथ लगता है। असफलता,
विषाद, फ्रस्ट्रेशन हाथ लगता है।
और इस जगत में कोई भी चीज
क्षणभंगुर से ज्यादा नहीं हो सकती।

बुद्ध कहते थे-
जब भी कोई उनके पास आता,
तो बुद्ध कहते थे जाते वक्त उससे
-कि ध्यान रखना,
तुम जो मुझसे मिलने आए थे,
वही तुम वापस नहीं लौट रहे हो।
वह आदमी चकित होता।
वह कहता, मैं वही हूं।
आप कैसी बात कर रहे हैं!
मैं ही आया था घड़ीभर पहले।
आपसे बात की।
अब वापस लौट रहा हूं।



बुद्ध कहते, भ्रांति में हो तुम।
इस जगत में सभी कुछ क्षणभंगुर है।
क्षणभर पहले जिस मन को
लेकर तुम आए थे,
अब वह कहां है? वह जा चुका।
सब बह चुका है।
जिस शरीर को लेकर तुम आए थे,
वह भी एक बहाव है।

आचार्य श्री रजनीशOsho

गीता दर्शन अ.8.प्र.6/94 वासना, समय और दुःख

क्षणभंगुरता अस्तित्व का स्वभाव है।
यहां कोई भी चीज थिर नहीं है।
यद्यपि हम कोशिश करते हैं निरंतर कि
सब कुछ थिर हो जाए।

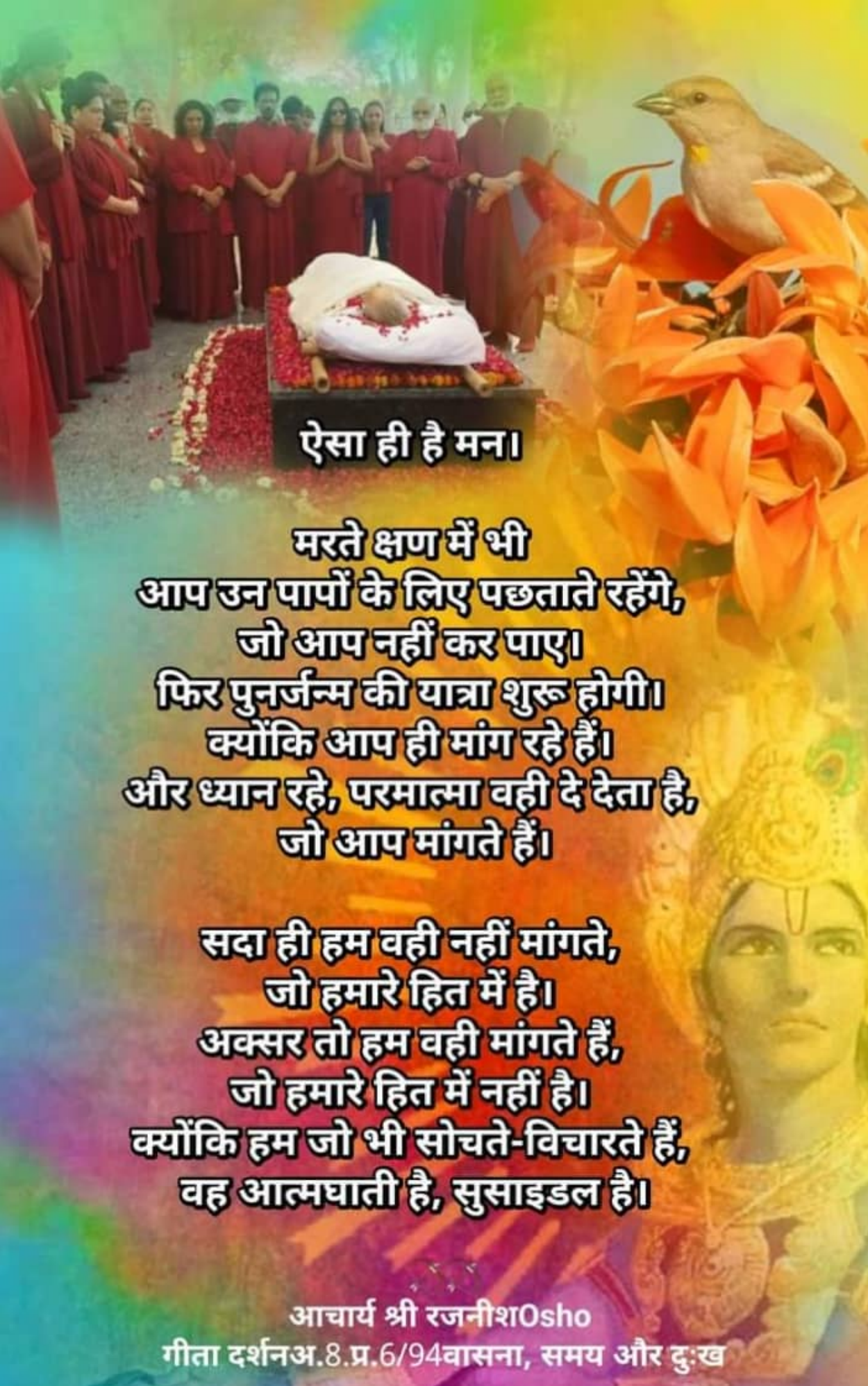
अगर मैं आपसे प्रेम करूं, तो मैं कहूंगा
कि यह मेरा प्रेम शाश्वत है, सदा रहेगा।
सभी प्रेमी कहते हैं।

और कोई चीज इस जगत में शाश्वत नहीं है।
मजा तो यह है कि जितनी देर लगेगी
यह बात कहने में कि यह प्रेम शाश्वत है
और सदा रहेगा, और चांदतारे मिट जाएं,
लेकिन यह प्रेम नहीं मिटेगा-शायद
इतना कहने में जितनी देर लगी, उतने में ही
मिट गया हो।

लेकिन कोशिश चलती है कि प्रेम को
हम थिर बना लें, इटर्नल बना लें।
फिर दुख लगता है। क्योंकि जो
थिर नहीं है, वह थिर नहीं हो सकता।
जो क्षणभंगुर है, वह क्षणभंगुर रहेगा।
वह उसका अंतर-स्वभाव है।

इस जगत की प्रत्येक वस्तु का
स्वभाव क्षणभंगुर है।
जवान रहना चाहें सदा, न रह पाएंगे।
प्रसन्न रहना चाहें सदा, न रह पाएंगे।
मजा तो यह है कि अगर दुखी भी रहना
चाहें सदा, तो न रह पाएंगे।
दुख भी क्षणभंगुर है।
वह भी बदलता रहेगा।
वह भी बदलता रहेगा।
यहां सभी कुछ बदलता हुआ है,
फ्लक्स है।

आचार्य श्री रजनीश Osho
गीता दर्शन अ.8. प्र.6/94 वास्तव, समय और दुःख



ऐसा ही है मन।

मरते क्षण में भी
आप उन पापों के लिए पछताते रहेंगे,
जो आप नहीं कर पाए।
फिर पुनर्जन्म की यात्रा शुरू होगी।
क्योंकि आप ही मांग रहे हैं।
और ध्यान रहे, परमात्मा वही दे देता है,
जो आप मांगते हैं।

सदा ही हम वही नहीं मांगते,
जो हमारे हित में है।
अक्सर तो हम वही मांगते हैं,
जो हमारे हित में नहीं है।
क्योंकि हम जो भी सोचते-विचारते हैं,
वह आत्मघाती है, सुसाइडल है।

आचार्य श्री रजनीशOsho
गीता दर्शन अ.8.प्र.6/94 वासना, समय और दुःख

सदा ऐसा लगता है कि कल मिलेगा आनंद।
आज तो दुख है, कल मिलेगा आनंद।
यह कल बहुत खतरनाक है,
यह सिर्फ आज को भुलाने का उपाय है।
आज इतना दुख से भरा है कि कल की आशा में ही
हम उसे भुला सकते हैं। और मजा यह है कि कल,
बीते कल में भी हमने ऐसा ही किया था। और
जिसे हम आज कह रहे हैं, वह बीते कल में कल था।
और कल भी हमने यही कहा था
कि आने वाले कल में आनंद मिलेगा,
और आज भी वही कह रहे हैं, और आने वाले कल में भी
हम वही कहेंगे। और हर जन्म में हमने यही कहा,
अगले जन्म में, अगले जन्म में, आगे।

जो भी व्यक्ति आज को पोस्टपोन कर रहा है
कल के लिए, वह अगले जन्म की तैयारी कर रहा है।

अगर आप कहते हैं, कल करूंगा,
तो आपको पुनर्जन्म लेना ही पड़ेगा।
और अगर एक जन्म में नहीं कर पाए,
तो आने वाले जन्म में भी क्या करिएगा?
उसी को फिर पुनरुक्त करिएगा-वही बचपन, वही जवानी,
वही बुढ़ापा, वे ही बीमारियां, वे ही रोग-वही सब होगा।

आचार्य श्री रजनीशOsho
गीता दर्शन अ.8.प्र.6/94 वासना, समय और दुःख

बुद्ध कहते थे, दुख का अर्थ है,
जिसे हम खोजते थे, उसे खोज न पाए;
और जिसे बचाना चाहते थे, वह खो गया।
जिसके लिए हम चले थे, वह मिला नहीं;
और जो साथ लेकर हाथ में चले थे,
वह भी उलटा खो गया!
वासनाएं कोई पूरी नहीं होती हैं और
जीवन पूरा चुक जाता है।
हाथ में जो अवसर लेकर चले थे समय का,
वह रिक्त हो जाता है; और जिसे पाने चले थे,
उसकी कोई गंध भी नहीं मिलती कि
वह कहां है।
मृत्यु में यही दुख गहन हो जाता है।

दुख बहुत आयामी है।

आचार्य श्री रजनीशOsho
गीता दर्शन अ.8.प्र.6/94 वासना, समय और दुःख

इधर वासना है, वह समय को चुका देती है।
थोड़ा-बहुत समय बचता है, तो वासना से थका हुआ मन
उसकी भुलाने के लिए सिनेमागृह में बैठता है,
चायघर में बैठता है, काफी हाउस में बैठता है,
ताश खेलता है-हजार उपाय करता है।
समय को हम इस भांति नष्ट करते हैं, और
मरते वक्त फिर वही मांग कि हमें
फिर समय चाहिए।

और अनंत है परमात्मा का विस्तार।
हम जितना मांगते हैं, हमें मिलता चला जाता है।
और हर जीवन में हम वही पुनरुक्त करते हैं,
जो हमने पीछे किया था।

कृष्ण इसे दुख क्यों कहते हैं?
दुख यही है कि जो हम पाना चाहते हैं,
वह मिलता नहीं और
मेहनत बहुत होती है।
दुख नहीं होगा, तो क्या होगा!
दुख का एक ही अर्थ है,
जो मैं पाना चाहता था, वह नहीं मिला;
और जो मैं नहीं पाना चाहता था,
वह मिल गया है।
दुख का और कोई अर्थ नहीं है।

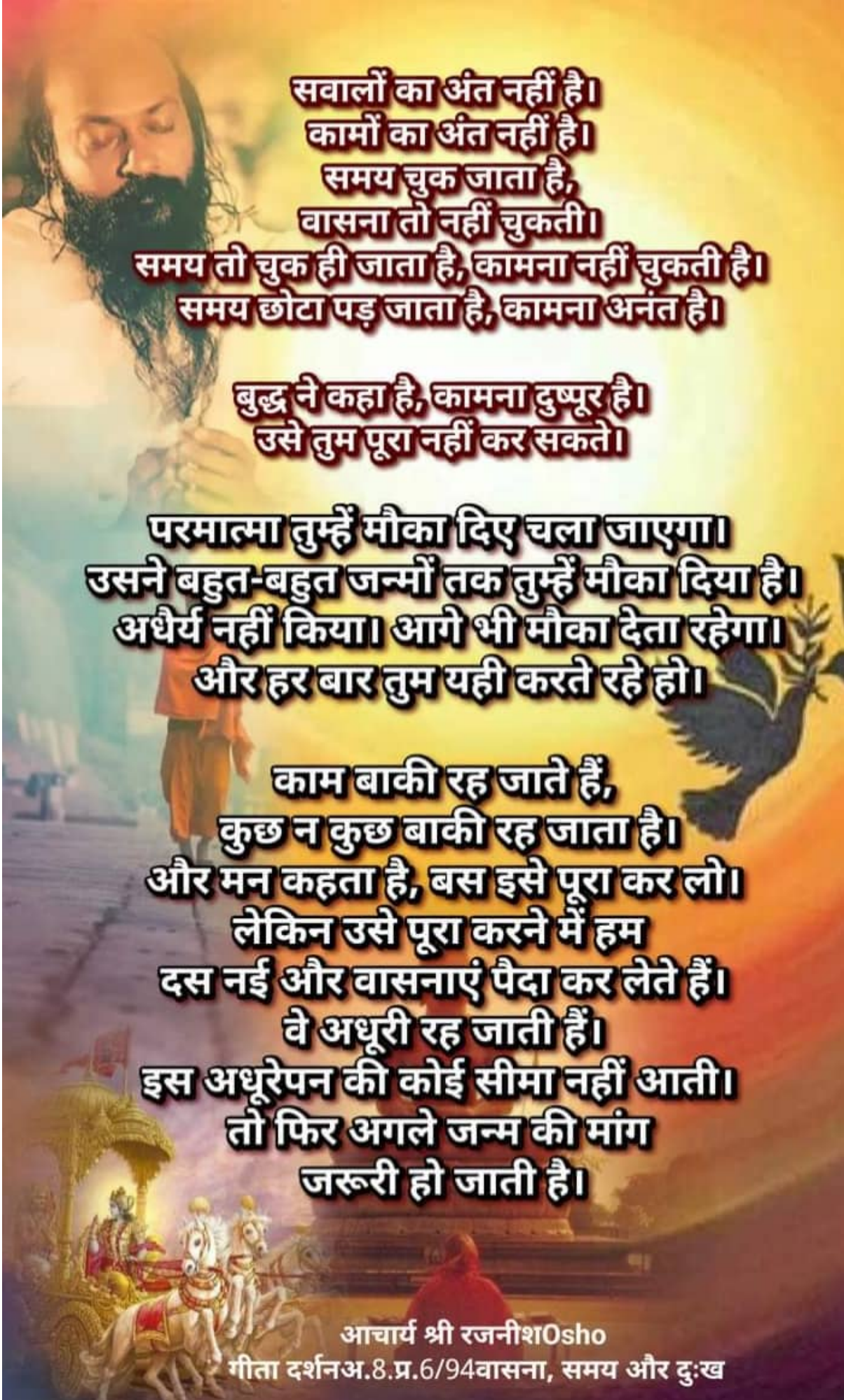
आचार्य श्री रजनीश Osho
गीता दर्शन अ.8.प्र.6/94 वासना, समय और दुःख

मरते क्षण में भी जो अधूरा रह जाता है,
उसी के कारण हमें दूसरे जन्म को
स्वीकार करना पड़ता है।
मरते क्षण में जो पूरा करके मर सकता है,
उसका अगला जन्म नहीं होगा।
क्योंकि उसे मांग ही नहीं रह जाएगी।
जन्म का करिएगा क्या?
उसका कोई उपयोग नहीं है।
समय की मांग बंद हो जाए, तो
अगला जन्म नहीं होता। लेकिन
समय की मांग तो बनी रहती है।

और बहुत अजीब लोग हैं हम।
एक तरफ कहते हैं कि समय बहुत कम है,
और दूसरी तरफ कहते रहते हैं दिन-रात
कि समय काटे नहीं कटता!
एक तरफ कहते हैं कि समय बहुत
थोड़ा है हाथ में, और दूसरी तरफ
निरंतर रोते रहते हैं
कि समय कैसे काटें?
जरूर कुछ कारण होगा इस दुविधा का।
दुविधा का कारण है।

समय तो निश्चित कम है,
क्योंकि वासनाएं बहुत हैं।
और सब चीजें
तुलनात्मक होती हैं।

आचार्य श्री रजनीश Osho
गीता दर्शन अ.8.प्र.6/94 वासना, समय और दुःख



सवालॉ का अंत नहीं है।
कामों का अंत नहीं है।
समय चुक जाता है,
वासना तो नहीं चुकती।
समय तो चुक ही जाता है, कामना नहीं चुकती है।
समय छोटा पड़ जाता है, कामना अनंत है।

बुद्ध ने कहा है, कामना दुष्पूर है।
उसे तुम पूरा नहीं कर सकते।

परमात्मा तुम्हें मौका दिए चला जाएगा।
उसने बहुत-बहुत जन्मों तक तुम्हें मौका दिया है।
अधैर्य नहीं किया। आगे भी मौका देता रहेगा।
और हर बार तुम यही करते रहे हो।

काम बाकी रह जाते हैं,
कुछ न कुछ बाकी रह जाता है।
और मन कहता है, बस इसे पूरा कर लो।
लेकिन उसे पूरा करने में हम
दस नई और वासनाएं पैदा कर लेते हैं।
वे अधूरी रह जाती हैं।
इस अधूरेपन की कोई सीमा नहीं आती।
तो फिर अगले जन्म की मांग
जरूरी हो जाती है।

आचार्य श्री रजनीशOsho
गीता दर्शन अ.8.प्र.6/94 वासना, समय और दुःख

अगर आपके शरीर को दौड़ाना है,
तो स्थान की जरूरत पड़ेगी, स्पेस की।
लेकिन अगर आपके मन को दौड़ाना है,
तो स्थान की कोई भी जरूरत नहीं;
समय काफी है।

इसलिए आप सपने में भी दौड़ सकते हैं।
सपने में कोई स्पेस नहीं होती,
लेकिन टाइम होता है,
समय होता है।

सपने में भी दौड़ सकते हैं।
आरामकुर्सी पर लेटकर आंख बंद करके भी
अनंत-अनंत यात्राएं कर सकते हैं।
वे यात्राएं वासना की यात्राएं हैं
और समय में घटित होती हैं।

महावीर से कोई पूछता है कि
जब समाधि उपलब्ध हो जाती है,
तो हमारे भीतर से कौन-सी चीज
गिर जाती है? तो महावीर कहते हैं,
समय, टाइम। समय गिर जाता है।
क्योंकि जिस व्यक्ति के भीतर
समाधि फलित होती है,
उस व्यक्ति के भीतर
वासना की दौड़ नहीं रह जाती।
और उस दौड़ का जो मार्ग है,
वह गैर-अनिवार्य हो जाता है,
वह गिर जाता है।

आचार्य श्री रजनीशOsho
गीता दर्शन अ.8.प्र.6/94 वासना, समय और दुःख

पुनर्जन्म होता है जीवन की आकांक्षा से; जीवन की आकांक्षा होती है, वासना को तृप्त करने के लिए समय की मांग से। तो अगर ठीक से समझें, तो पुनर्जन्म का सूत्र या दुख का सूत्र, वासना है, तृष्णा है, डिजायर है। अगर कोई भी वासना नहीं है, तो आप कहेंगे कि कल की अब मुझे कोई जरूरत न रही, देन टाइम इज़ नाट नीडेड।

जीसस से कोई पूछता है कि तुम्हारे मोक्ष में सबसे खास बात क्या होगी? शायद पूछने वाले ने सोचा होगा कि जीसस कहेंगे, प्रभु का दर्शन होगा, परम आनंद होगा, मुक्ति होगी, शांति होगी। ऐसा कुछ कहेंगे। लेकिन जीसस ने जो जवाब दिया है, वह बहुत हैरानी का है। जीसस ने कहा, देयर शैल बी टाइम नो लांगर-वहां समय नहीं होगा।

शायद ही सुनने वाले की समझ में आया हो! आपने भी अगर पूछा हो कि मोक्ष में क्या होगा, और अगर जीसस या कृष्ण जैसा व्यक्ति कहे, वहां समय नहीं होगा, तो आपकी भी समझ में नहीं पड़ेगा।

समय नहीं होगा, इसका अर्थ यही है कि वहां कोई वासना नहीं है, जिसके लिए समय की जरूरत पड़े। वासना नहीं होगी, समय नहीं होगा, तो वहां पुनर्जन्म नहीं होगा। वहां कल होगा ही नहीं। वहां सिर्फ आज ही होगा।

आचार्य श्री रजनीश Osho
गीता दर्शन अ.8.प्र.6/94 वासना, समय और दुःख

पुनर्जन्म होता है जीवन की आकांक्षा से; जीवन की आकांक्षा होती है, वासना को तृप्त करने के लिए समय की मांग से। तो अगर ठीक से समझें, तो पुनर्जन्म का सूत्र या दुख का सूत्र, वासना है, तृष्णा है, डिजायर है। अगर कोई भी वासना नहीं है, तो आप कहेंगे कि कल की अब मुझे कोई जरूरत न रही, देन टाइम इज़ नाट नीडेड।

जीसस से कोई पूछता है कि तुम्हारे मोक्ष में सबसे खास बात क्या होगी? शायद पूछने वाले ने सोचा होगा कि जीसस कहेंगे, प्रभु का दर्शन होगा, परम आनंद होगा, मुक्ति होगी, शांति होगी। ऐसा कुछ कहेंगे। लेकिन जीसस ने जो जवाब दिया है, वह बहुत हैरानी का है। जीसस ने कहा, देयर शैल बी टाइम नो लांगर-वहां समय नहीं होगा।

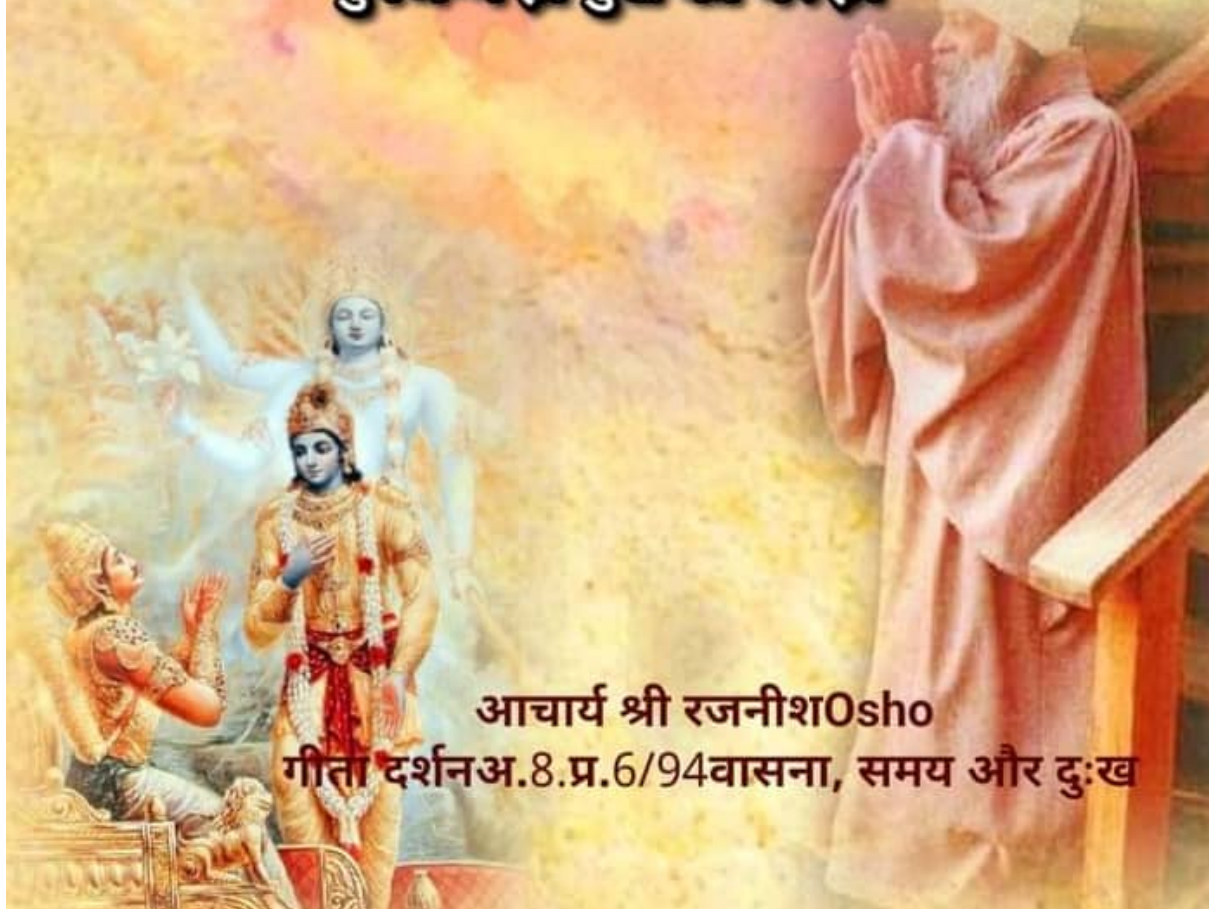
शायद ही सुनने वाले की समझ में आया हो! आपने भी अगर पूछा हो कि मोक्ष में क्या होगा, और अगर जीसस या कृष्ण जैसा व्यक्ति कहे, वहां समय नहीं होगा, तो आपकी भी समझ में नहीं पड़ेगा।

समय नहीं होगा, इसका अर्थ यही है कि वहां कोई वासना नहीं है, जिसके लिए समय की जरूरत पड़े। वासना नहीं होगी, समय नहीं होगा, तो वहां पुनर्जन्म नहीं होगा। वहां कल होगा ही नहीं। वहां सिर्फ आज ही होगा।

आचार्य श्री रजनीश Osho
गीता दर्शन अ.8.प्र.6/94 वासना, समय और दुःख

मजा यह है कि पूरे जीवन
हम वासनाओं को पूरा करने की कोशिश करते हैं
और आखिर में पाते हैं, कोई वासना पूरी नहीं हुई,
मरते क्षण हम और भी वासनाओं को जिंदा कर लिए हैं।
जन्म के समय जितनी वासनाएं हमारे पास होती हैं,
मृत्यु के समय तक उनमें से एक भी कम नहीं होती,
यद्यपि बहुत बढ़ जाती हैं।
तब मरते क्षण और जन्म की आकांक्षा पैदा होती है।
क्योंकि वासना है, तो और जीवन चाहिए।
और जीवन पुनर्जन्म बन जाता है;
और जीवन को पाने की इच्छा पुनर्जन्म
बन जाती है।

और कृष्ण कहते हैं,
पुनर्जन्म ही दुख का घर है।



आचार्य श्री रजनीशOsho
गीता दर्शन अ.8.प्र.6/94 वासना, समय और दुःख

पूरब की मनीषा ने दुख का कारण,
पश्चिम की मनीषा से बिलकुल ही भिन्न जाना है। शायद
धर्म और विज्ञान का वही भेद है।

या ऊपर से जीवन की जो खोज करते हैं और
भीतर जीवन के गहन तत्व में जो प्रवेश करते हैं,
उनकी दृष्टि का वह अंतर है।

पश्चिम सदा से सोचता रहा है कि दुख का कारण परिस्थिति में है,
स्थिति में है। और यदि हम परिस्थिति को बदल लें,
तो दुख विनष्ट हो जाएगा।

ॐ

पूरब और तरह से सोचता है। पूरब ने जाना है
कि परिस्थिति में दुख नहीं, मनुष्य की चेतना में ही दुख है।

मनुष्य की चेतना ही बदल जाए, तो ही दुख से
छुटकारा हो सकता है। अन्यथा मनुष्य की चेतना को
कैसी भी परिस्थिति मिले, दुख को पकड़ लेने वाली,
दुख को पैदा कर लेने वाली चेतना,
पुनः-पुनः दुख पैदा कर लेती है,
हर स्थिति में दुख पैदा कर लेती है।
दुखवादी हर जगह दुख को खोज लेता है।

यह मनुष्य की चेतना का रूपांतरण ही दुख से
मुक्ति बन सकता है।

कृष्ण अर्जुन से इसका पहला सूत्र कहते हैं।
वे कहते हैं, परम सिद्धि को जो प्राप्त हुए महात्माजन हैं,
वे मुझे पाकर, दुख के स्थान, आलयरूप,
क्षणभंगुर पुनर्जन्म को नहीं प्राप्त होते हैं।
दुख के आलयरूप, दुख का जहां घर है, ऐसे क्षणभंगुर
जीवन को वे उपलब्ध नहीं होते हैं।



Album गीता दर्शन अध्याय 8 से आगे



Anamcara Rames

1h · 🌐



समय के बाहर होना बुद्धिमत्ता है। टु ट्रांसेंड टाइम, समय के पार हो जाना बुद्धिमत्ता है। क्योंकि जो समय के पार हो गया, वह सृष्टि और प्रलय के पार हो गया। जो समय के पार हो गया, वह जन्म और मृत्यु के पार हो गया। जो समय के पार हो गया, वह दुख और सुख के पार हो गया। जो समय के पार हो जाता है, वह उस अलोक को उपलब्ध हो जाता है, जहां से न कोई लौटना है, जहां से न कोई वापसी है, न कोई पुनरागमन है। जहां परम जीवन में प्रवेश, परम अस्तित्व में प्रवेश है; अनादि और अनंत।

काल के इस रहस्य को अगर जानना हो, तो ध्यान में थोड़ी गति करें, क्योंकि ध्यान काल के विपरीत है। ध्यान में जितनी गति होगी, उतने समय के बाहर हो जाएंगे।

इसलिए कभी तो ध्यान में ऐसा हो जाता है कि घंटों बीत गए और जागकर वह व्यक्ति कहता है कि क्या हुआ, कितना समय बीत गया! मुझे तो कुछ पता ही नहीं। मैं था, होश था, बेहोश नहीं था, लेकिन समय का मुझे कुछ पता नहीं है। घड़ी जैसे रुक गई, ठहर गई भीतर की।

ध्यान समय के बाहर उतरने की विधि है।

<https://oshostsang.wordpress.com/2018/08/03/%e0%a4%97%e0%a5%80%e0%a4%a4%e0%a4%be-%e0%a4%a6%e0%a4%b0%e0%a5%8d%e0%a4%b6%e0%a4%a8-%e0%a4%aa%e0%a5%8d%e0%a4%b0%e0%a4%b5%e0%a4%9a%e0%a4%a8-094/>



आचार्य श्री रजनीशOsho

गीता दर्शनअ.8.प्र.6/94वासना, समय और दुःख





फकीरों ने जबान काट दी है, जननेंद्रिया काट दी हैं। विक्षिप्तताएं हैं ये। यह तुम समझ ही नहीं पा रहे हो कि शरीर तो सिर्फ यंत्र है। शरीर के पास कोई चेतना नहीं है, चेतना तो तुम हो। इसलिए अगर दोष है तो तुम्हारा, अगर गुण है तो तुम्हारा। अगर नर्क जाओगे तो तुम, अगर स्वर्ग जाओगे तो तुम।

शरीर को दोष देने वाला बिलकुल निर्बुद्धि है। उपनिषद की इस धारणा को समझकर, आप इस सूत्र में प्रवेश करें।

द्वितीय अध्याय / द्वितीय वल्ली

कठोपनिषद---प्रवचन--11

बोध ही ऊर्ध्वगमन



जागते ही साधक ध्यान नहीं करता , सोते-सोते भी ध्यान में होता है ।

कृष्ण ने कहा है न , कि जो सबके लिए रात है , वह भी योगी के लिए रात नहीं ।

" या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।"

वह जो साधक है , वह तब भी जागा रहता है जब सारे लोग सो जाते हैं । इसका यह मतलब मत समझ लेना कि साधक खड़ा रहता है ; कि रात भर खड़े हैं !

ऐसे साधक मत हो जाना ।

रात जागे रहने का यह अर्थ नहीं है कि तुम खड़े हो कोने में जागे हुए । रात जागे होने का अर्थ है: शरीर तो विश्राम करे , लेकिन भीतर बोध न चूक जाए ।

भीतर बोध की सतत धारा बनी रहे । भीतर कोई एक हिस्सा तुम्हारा साक्षी बना रहे , जानता ही रहे ।

पहले जागते में जागो , फिर धीरे-धीरे निद्रा में भी जागरण का प्रवेश हो जाता है । - ओशो - झरत दसहं दिस मोती - प्रवचन १ से



यह तो वैसे ही है जैसे कोई उठकर अपनी कार की पिटाई करने लगे, क्योंकि यह कार मुझे कहीं भी ले जाए जा रही है। कार तुम्हें कैसे कहीं ले जाएगी? तुम उसमें पेट्रोल डालते हो, तुम उसकी साज-संवार करते हो, तुम उसका स्टिअरिंग सम्हालते हो। तुम्हीं कहीं जाना चाहते हो, इसलिए कार जाती है। हालांकि तुम उसके भीतर बैठे हो, लेकिन कार तुम्हारे पीछे जा रही है। तुम कार के पीछे नहीं जा रहे।

शरीर रथ है, जैसा कि इस उपनिषद में कहा है। एक कार है, उसमें भीतर बैठकर तुम्हीं चला रहे हो। तो अगर तुम पाप की तरफ जाते हो, तो यह मत सोचना कि शरीर ले जा रहा है। यह बहुत नासमझी की बात है। तुम पाप की तरफ जाना चाहते हो, शरीर तुम्हारे साथ चला जाता है। तुम कार को वेश्यालय की तरफ ले जाते हो, कार वेश्यालय चली जाती है। कार को कोई 'प्रयोजन नहीं कि तुम कहां जा रहे हो। कार का काम चलना है। तुम मंदिर ले जाना चाहते हो, कार मंदिर के द्वार पर रुक जाती है। लेकिन जब वेश्यालय के द्वार पर रुकती है, तो तुम उतरकर कार की पिटाई शुरू कर देते हो। तुम नासमझ हो।

और ऐसा नहीं कि तुम, जिनको बहुत लोगों ने आदर दिया है, ऐसे अनेक लोग इस तरह का काम करते रहे हैं। हाथ काट दिए हैं फकीरों ने, क्योंकि हाथ ने कोई बुराई की। हाथ कैसे बुराई कर सकता है? आंख फोड़ दी हैं फकीरों ने, क्योंकि आंख ने वासना जगाई। आंख क्या वासना जगाएगी? आंख के भीतर तुम छिपे हो। तुम जहां आंख को ले जाते हो, आंख वहां जाती है। आंख अपने आप चलती नहीं, तुमसे चलती है। दोष तुम करते हो, आंख फोड़कर सजा तुम किसको दे रहे हो?

फकीरों ने जबान काट दी है, जननेंद्रिया काट दी हैं। विक्षिप्तताएं हैं ये। यह तुम समझ ही नहीं पा रहे हो कि शरीर तो सिर्फ यंत्र है। शरीर के पास कोई चेतना नहीं है, चेतना तो तुम हो। इसलिए अगर दोष है तो तुम्हारा, अगर गुण है तो तुम्हारा। अगर नर्क जाओगे तो तुम, अगर स्वर्ग जाओगे तो तुम।

शरीर को दोष देने वाला बिल्कुल निर्बुद्धि है। उपनिषद की इस धारणा को समझकर, आप इस सत्र में प्रवेश करें।



आप यह बात बिलकुल भूल ही गए हैं। आप ऐसा समझते हैं कि जैसे शरीर ने आपको पकड़ा हुआ है। और तब इससे बहुत नासमझिया पैदा होती हैं।

ईसाइयों का एक संप्रदाय था, जिसके फकीर अपने को दिन—रात कोड़े मारते थे, शरीर को कष्ट देने के लिए। क्योंकि शरीर दुश्मन है। और जो जितने ज्यादा कोड़े मारता, उतना बड़ा संत समझा जाता। अगर आज वैसे संत हों, तो हम उनको कहेंगे कि वे मैसोचिस्ट हैं, वे अपने को सताने में रस लेने वाले बीमार लोग हैं। उनको हम पागलखाने में रखेंगे। लेकिन मध्य—सदी में पूरा यूरोप ऐसे संतों से भरा था। वे संत नहीं थे, सिर्फ रुग्ण, बीमार लोग थे।

ऐसे ईसाई फकीर हुए हैं, जो जूते पहनेंगे जिनमें अंदर कीले लगे होंगे; कमर में पट्टे बांधेंगे जिनमें अंदर कीले चुभे होंगे, ताकि शरीर में कीले चुभे रहें और शरीर को पीड़ा दिन—रात र सोते—जागते मिलती रहे। उन्हें लोग बड़ा आदर देते थे।

हम भी उसी तरह के लोगों को आदर देते हैं जो शरीर को सता रहे हैं। कोई भूखा मरकर सता रहा है। कोई धूप में खड़ा होकर सता रहा है। कोई पैर के बल खड़ा है तो बैठता ही नहीं, खड़े होकर सता रहा है। कोई काटो पर लेटकर सता रहा है। काशी में जाकर देखें, ऐसी बहुत सी प्रदर्शनियां लगी हुई हैं। कुंभ के मेले में चले जाएं, वहा पूरा प्रदर्शन इस सब पागलपन का है।

लेकिन यह शरीर को सताने वाले आदमी के लिए हमारे मन में भी आदर उठता है कि क्या गजब की बात है! कुछ भी नहीं हो रहा है। शरीर को सताने का मतलब केवल इतना ही है कि तुम्हें अभी यह भी पता नहीं चल सका कि शरीर तुम्हें नहीं पकड़े हुए है, तुमने शरीर को पकड़ा है।

यह तो वैसे ही है जैसे कोई उठकर अपनी कार की पिटाई करने लगे, क्योंकि यह कार मुझे कहीं भी ले जाए जा रही है। कार तुम्हें कैसे कहीं ले जाएगी? तुम उसमें पेट्रोल डालते हो, तुम उसकी साज—संवार करते हो, तुम उसका स्टिअरिंग सम्हालते हो। तुम्हीं कहीं जाना चाहते हो,



आदमी का मन बहुत गहरे जाल से भरा हुआ है। मनसविद यह आज कहते हैं। लेकिन पूरब के मनोशास्त्री निरंतर यह कहते रहे हैं कि यह बात—हम जो कुछ भी हो जाते हैं, हम जो भी हैं, हमारी ही इच्छाओं का सघन रूप है। इस जन्म में, पिछले जन्म में, और पिछले जन्मों में हमने जो चाहा है, जो इकट्ठा किया है, वह आज पूरा हो गया है।

तो शरीर को घृणा करने का कोई भी कारण नहीं है। यही शरीर आपने मांगा था, यही शरीर आपको उपलब्ध हो गया है।

दूसरी बात ध्यान रखनी जरूरी है कि पृथक् शरीर आपको नहीं पकड़े हुए है। शरीर कैसे आपको पकड़ेगा! आप शरीर को पकड़े हुए हैं। और जिस दिन भी आप शरीर को छोड़ने में समर्थ हो जाएंगे, शरीर विदा हो जाएगा। एक क्षण भी रुकेगा नहीं। एक का को भी भीतर आप शरीर से अपने को पूरा अलग कर लें, शरीर विदा होने लगेगा।

इसलिए संत स्वेच्छा से मर सकते हैं। स्वेच्छा से मरने की कला यही है कि वे उस राज को जानते हैं कि शरीर से कैसे अलग हो जाएं। शायद एक—आध खूंटी शरीर में गड़ाए रखते हैं, ताकि शरीर का कोई उपयोग है, वह पूरा हो ले। जिस दिन भी उन्हें लगता है कि विदा हो जाना है, आखिरी खूंटी भी उखाड़ लेते हैं, नाव छूट जाती है।

इसलिए संत अक्सर अपनी मृत्यु की खबर दे देते हैं कि फलां दिन मैं मर जाऊंगा। यह कोई भविष्य—दर्शन के कारण नहीं, जैसा कि लोग समझते हैं कि संत को भविष्य का पता है। नहीं, संत शरीर से अपने को किसी भी क्षण मुक्त कर सकता है। यह उसकी स्वतंत्रता है। वह जिस दिन चाहे, उस दिन विदा हो सकता है। उसने इस रहस्य को समझ लिया है कि शरीर उसे नहीं पकड़े हुए है, उसने ही शरीर को पकड़ा है। तो जब तक पकड़ना हो, ठीक है 'जब छोड़ना हो, तब छोड़ा जा सकता है।

आप यह बात बिलकुल भूल ही गए हैं। आप ऐसा समझते हैं कि जैसे शरीर ने आपको पकड़ा हुआ है। और तब इससे बहुत नासमझिया पैदा होती है।

ईसाइयों का एक संप्रदाय था, जिसके फकीर अपने को दिन—रात कोड़े



एक छोटा बच्चा धीरे— धीरे अनुभव करता है कि वह जब बीमार होता है, तब जरूर कोई गरिमापूर्ण घटना घट जाती है। पिता ज्यादा प्यार करता है, मां पास बैठती है। बहुत चाहता है वह कि मां पास बैठे, पिता प्यार करे, सब उसकी फिक्र करें, लेकिन कोई उसकी फिक्र नहीं करता। लेकिन जब बीमार होता है, तब उसकी सब इच्छाएं पूरी हो जाती हैं। बीमारी के साथ एक आकांक्षा जुड़ जाती है।

यह बच्चा जिंदगी में बहुत वर्षों बाद जब भी अनुभव करेगा कि कोई ध्यान नहीं दे रहा, तभी इसकी भीतरी इच्छा प्रबल हो जाएगी कि मैं बीमार पड़ जाऊं। यह चेतन में नहीं होगी, यह गहरे अचेतन, अनकाशस में होगी।

स्त्रियों की तो अधिकतम बीमारियां ध्यान न मिलने की बीमारियां हैं। जब एक स्त्री को कोई प्रेम करता है, तो वह स्वस्थ होती है। अलै जैसे ही प्रेम विदा होने लगता है, या समाप्त हो जाता है, या क्षीण हो जाता है, वह रुग्ण होने लगती है। उसका रोग यह कह रहा है कि अब उस पर कोई ध्यान नहीं दे रहा।

स्त्रियों की पचास प्रतिशत बीमारियां कामना से, कोई ध्यान दे, उस आकांक्षा से पैदा होती हैं। पति के घर आते ही स्त्री बीमार हो जाती है। जब तक वे घर नहीं, तब तक वह ठीक है। और ऐसा नहीं कि वह कोई झूठा आडंबर रचती है। नहीं, पति को देखते ही बीमार हो जाती है। पति को देखते ही—पति उस पर ध्यान दे, उसके सिर पर हाथ रखे, उसकी फिक्र करे. चिंता करे—यह वासना जगती है। यह वासना भीतर बहुत—सी चीजों को छोड़ देती है अचेतन में। और वह उन स्थितियों में अपने को रख लेती है, जहां पति ध्यान करेगा, उसका विचार करेगा, उसकी सेवा करेगा।

आदमी का मन बहुत गहरे जाल से भरा हुआ है। मनसविद यह आज कहते हैं। लेकिन पूरब के मनोशास्त्री निरंतर यह कहते रहे हैं कि यह बात—हम जो कुछ भी हो जाते हैं, हम जो भी हैं, हमारी ही इच्छाओं का सघन रूप है। इस जन्म में, पिछले जन्म में, और पिछले जन्मों में हमने जो चाहा है, जो इकट्ठा किया है, वह आज पूरा हो गया है।



एक आदमी बीज बोता है। वर्षों बाद अंकुर निकलता है। वह भूल ही जाता है कि बीज बोया था। आप जानकर चकित होंगे कि सैकड़ों ऐसी जातियां जमीन पर रही हैं, और आज भी अफ्रीका के कुछ कबीले हैं, जो यह नहीं मानते कि बच्चे का जन्म संभोग से होता है। क्योंकि संभोग किए हुए तो महीनों बीत जाते हैं, तब बच्चे का जन्म होता है। तो कई जातियां यह तर्क ही नहीं उठा पाईं कि बच्चे का जन्म संभोग से होता है। फिर सभी संभोग से जन्म होता भी नहीं। सैकड़ों संभोग में एक संभोग जन्म बनता है। फिर जो संभोग जन्म बनता है वह भी तत्काल नहीं बन जाता, उसमें भी महीनों लग जाते हैं। तो उन जातियों को यह स्मरण ही नहीं आ पाया कि संभोग से जन्म का कोई संबंध है। वे सोचते हैं कि जन्म परमात्मा की कृपा है, या किसी देवता का वरदान है, या किसी गुरु का आशीर्ष है। लेकिन संभोग से उसका कोई संबंध नहीं जोड़ पाते। फासला इतना है।

आदमी के कर्म और आदमी की वासनाओं और इच्छाओं और उनके पूरा होने में तो कई बार बहुत लंबा फासला हो जाता है। आप खुद ही भूल जाते हैं कि यह आपने चाहा था।

मनसविद कहते हैं कि बहुत—सी बीमारियां आप ही बुला लेते हैं। आप उन्हें चाहे हैं कभी, और वह चाह अचेतन में दबी रह गई। फिर धीरे—धीरे शरीर उस बीमारी को पैदा कर लेता है। यह थोड़ी हमें सोचकर कठिनाई होगी, मानने में थोड़ी मुसीबत होगी, क्योंकि बीमारी तो कोई भी चाहता नहीं, इसलिए कौन बीमार होना चाहेगा? उसके बीज कोई क्यों बोएगा? लेकिन बड़े गहरे कारण मनुष्य के जीवन में हैं, बड़ा जटिल जाल है।

एक छोटा बच्चा है। जब भी वह बीमार पड़ता है, तो लोग उसकी चिंता करते हैं, फिक्र करते हैं। जब वह स्वस्थ रहता है, तब उसकी तरफ कोई भी ध्यान नहीं देता। बच्चे के अचेतन में एक बात निश्चित हो जाती है कि बीमार होना भी एक गुण है, तभी लोग उस पर ध्यान देते हैं। और सभी लोग चाहते हैं कि ध्यान दिया जाए। बड़ी गहरी आकांक्षा है कि लोग आप पर ध्यान दें, क्योंकि ध्यान भोजन है। जब कोई आपकी तरफ देखता है, आप प्रफुल्लित होते हैं। जब कोई भी नहीं देखता तो आप उदास हो जाते हैं।



एक आदमी बीज बोता है। वर्षों बाद अंकुर निकलता है। वह भूल ही जाता है कि बीज बोया था। आप जानकर चकित होंगे कि सैकड़ों ऐसी जातियां जमीन पर रही हैं, और आज भी अफ्रीका के कुछ कबीले हैं, जो यह नहीं मानते कि बच्चे का जन्म संभोग से होता है। क्योंकि संभोग किए हुए तो महीनों बीत जाते हैं, तब बच्चे का जन्म होता है। तो कई जातियां यह तर्क ही नहीं उठा पाईं कि बच्चे का जन्म संभोग से होता है। फिर सभी संभोग से जन्म होता भी नहीं। सैकड़ों संभोग में एक संभोग जन्म बनता है। फिर जो संभोग जन्म बनता है वह भी तत्काल नहीं बन जाता, उसमें भी महीनों लग जाते हैं। तो उन जातियों को यह स्मरण ही नहीं आ पाया कि संभोग से जन्म का कोई संबंध है। वे सोचते हैं कि जन्म परमात्मा की कृपा है, या किसी देवता का वरदान है, या किसी गुरु का आशीर्ष है। लेकिन संभोग से उसका कोई संबंध नहीं जोड़ पाते। फासला इतना है।

आदमी के कर्म और आदमी की वासनाओं और इच्छाओं और उनके पूरा होने में तो कई बार बहुत लंबा फासला हो जाता है। आप खुद ही भूल जाते हैं कि यह आपने चाहा था।

मनसविद कहते हैं कि बहुत—सी बीमारियां आप ही बुला लेते हैं। आप उन्हें चाहे हैं कभी, और वह चाह अचेतन में दबी रह गई। फिर धीरे—धीरे शरीर उस बीमारी को पैदा कर लेता है। यह थोड़ी हमें सोचकर कठिनाई होगी, मानने में थोड़ी मुसीबत होगी, क्योंकि बीमारी तो कोई भी चाहता नहीं, इसलिए कौन बीमार होना चाहेगा? उसके बीज कोई क्यों बोएगा? लेकिन बड़े गहरे कारण मनुष्य के जीवन में हैं, बड़ा जटिल जाल है।

एक छोटा बच्चा है। जब भी वह बीमार पड़ता है, तो लोग उसकी चिंता करते हैं, फिक्र करते हैं। जब वह स्वस्थ रहता है, तब उसकी तरफ कोई भी ध्यान नहीं देता। बच्चे के अचेतन में एक बात निश्चित हो जाती है कि बीमार होना भी एक गुण है, तभी लोग उस पर ध्यान देते हैं। और सभी लोग चाहते हैं कि ध्यान दिया जाए। बड़ी गहरी आकांक्षा है कि लोग आप पर ध्यान दें, क्योंकि ध्यान भोजन है। जब कोई आपकी तरफ देखता है, आप प्रफुल्लित होते हैं। जब कोई भी नहीं देखता तो आप उदास हो जाते हैं।



● बोध ही ऊर्ध्वगमन...

◆ द्वितीय वल्ली :

उपनिषद के ऋषियों के मन में मनुष्य के शरीर की कोई भी निंदा नहीं है। मनुष्य के शरीर के प्रति बहुत सदभाव है, बहुत श्रद्धा भाव है, क्योंकि मनुष्य का शरीर वस्तुतः मंदिर है। उस परमात्मा का निवास जिसके भीतर है, उसकी निंदा तो कैसे की जा सकती है! परमात्मा जिसके भीतर बसा है, उस परमात्मा के बसने के कारण ही शरीर पवित्र हो जाता है।

उपनिषद की दृष्टि में शरीर अपवित्र नहीं है। साधारणतः धार्मिक लोग—तथाकथित धार्मिक लोग—शरीर के प्रति एक तरह की गहरी निंदा से भरे होते हैं, एक कडेमनेशन, जैसे शरीर कुछ बुरा है, गर्हित, घृणित। जैसे शरीर के कारण ही जीवन में दुख, पीड़ा और बंधन है। जैसे शरीर ही नर्क का द्वार है।

लेकिन इस तथाकथित धार्मिक दृष्टि के लिए कोई भी आधार नहीं है। और अगर कोई आधार है तो केवल दमित—चित्त मनुष्यों में है।

शरीर आपको बांधे हुए नहीं है। शरीर आपको पकड़े हुए भी नहीं है। शरीर तो आपको पकड़ भी कैसे सकता है! आपने ही शरीर को पकड़ा है। आपने ही शरीर को चुना है। यह आपकी ही वासनाओं और इच्छाओं का मूर्तरूप है।

तो पहले तो इस बात को समझ लें कि जो भी शरीर आपको उपलब्ध हुआ है—मनुष्य का, कि पशु का, कि पक्षी का, कि वृक्ष का, कि पत्थर का; कि स्त्री का, कि पुरुष का; सुंदर या कुरूप; स्वस्थ या बीमार, जैसा भी, जो भी देह आपको उपलब्ध हुई है, यह आपकी ही कामनाओं, आपकी ही वासनाओं और इच्छाओं का मूर्तरूप है। जो आपने चाहा था, वह आपको मिल गया है। लेकिन यह हमें दिखाई नहीं पड़ता, क्योंकि चाह में और पूरे होने में बड़ा फासला है।

एक आदमी बीज बोता है। वर्षों बाद अंकुर निकलता है। वह भूल ही जाता है कि बीज बोया था। आप जानकर चकित होंगे कि सैकड़ों ऐसी

**Osho Thoughts**

...



Munabai Makvana · 15h · 🌐

शरीर रथ है, जैसा कि इस उपनिषद में कहा है। एक कार है, उसमें भीतर बैठकर तुम्हीं चला रहे हो। तो अगर तुम पाप की तरफ जाते हो, तो यह मत सोचना कि शरीर ले जा रहा है। यह बहुत नासमझी की बात है। तुम पाप की तरफ जाना चाहते हो, शरीर तुम्हारे साथ चला जाता है। तुम कार को वेश्यालय की तरफ ले जाते हो, कार वेश्यालय चली जाती है। कार को कोई 'प्रयोजन नहीं कि तुम कहां जा रहे हो। कार का काम चलना है। तुम मंदिर ले जाना चाहते हो, कार मंदिर के द्वार पर रुक जाती है। लेकिन जब वेश्यालय के द्वार पर रुकती है, तो तुम उतरकर कार की पिटाई शुरू कर देते हो। तुम नासमझ हो।

शरीर के पास कोई चेतना नहीं है, चेतना तो तुम हो। इसलिए अगर दोष है तो तुम्हारा, अगर गुण है तो तुम्हारा। अगर नर्क जाओगे तो तुम, अगर स्वर्ग जाओगे तो तुम। शरीर को दोष देने वाला बिल्कुल निर्बुद्धि है।

द्वितीय अध्याय / द्वितीय वल्ली

कठोपनिषद---प्रवचन--11

बोध ही ऊर्ध्वगमन



● बोध ही ऊर्ध्वगमन... 📄

◆ द्वितीय वल्ली :

उपनिषद के ऋषियों के मन में मनुष्य के शरीर की कोई भी निंदा नहीं है। मनुष्य के शरीर के प्रति बहुत सदभाव है, बहुत श्रद्धा भाव है, क्योंकि मनुष्य का शरीर वस्तुतः मंदिर है। उस परमात्मा का निवास जिसके भीतर है, उसकी निंदा तो कैसे की जा सकती है! परमात्मा जिसके भीतर बसा है, उस परमात्मा के बसने के कारण ही शरीर पवित्र हो जाता है।

उपनिषद की दृष्टि में शरीर अपवित्र नहीं है। साधारणतः धार्मिक लोग—तथाकथित धार्मिक लोग—शरीर के प्रति एक तरह की गहरी निंदा से भरे होते हैं, एक कडेमनेशन, जैसे शरीर कुछ बुरा है, गर्हित, घृणित। जैसे शरीर के त्याग ही जीवन में सर्व पीछा और तंभन है। जैसे शरीर ही

जागते ही साधक ध्यान नहीं करता , सोते-सोते भी ध्यान में होता है ।

कृष्ण ने कहा है न , कि जो सबके लिए रात है , वह भी योगी के लिए रात नहीं ।

" या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।"

वह जो साधक है , वह तब भी जागा रहता है जब सारे लोग सो जाते हैं । इसका यह मतलब मत समझ लेना कि साधक खड़ा रहता है ; कि रात भर खड़े हैं !

ऐसे साधक मत हो जाना ।

रात जागे रहने का यह अर्थ नहीं है कि तुम खड़े हो कोने में जागे हुए । रात जागे होने का अर्थ है: शरीर तो विश्राम करे , लेकिन भीतर बोध न चूक जाए ।

भीतर बोध की सतत धारा बनी रहे । भीतर कोई एक हिस्सा तुम्हारा साक्षी बना रहे , जानता ही रहे ।

पहले जागते में जागो , फिर धीरे-धीरे निद्रा में भी जागरण का प्रवेश हो जाता है । - ओशो - झरत दसहं दिस मोती - प्रवचन १ से



Rahul Kumar Ojha · 23h ·

प्रेम के आँसू- एक बोधकथा

उस राजा ने शर्त ये रखी थी कि कोई सच्चा प्रेमी दिल खोलकर प्रेम की बात करे लेकिन बिना रोए, आँखों से आँसू का एक कतरा भी न निकले। और इनाम में थी लाखों की स्वर्ण मुद्राएँ।

काफी दिनों के बाद भी एक भी प्रेमी उपस्थित नहीं हुआ। अब जिसको उस परमधन का पता चल गया हो, हृदय का खजाना मिल गया हो, उसको इस धन की परवाह कब से होने लगी।

अंत में सैनिकों ने खुद लोगों से पूछ-पूछकर पूरे शहर भर से ढूँढ-ढूँढ कर प्रेमियों को जमा किया और उनको धन का लालच दिया गया। बहुत ज्यादा नहीं थे लेकिन जो भी थे उनको दरबार में उपस्थित किया गया।

सबने एक- एक कर अपने प्रेम के अनुभव बताये, अपने दिल का बयान किया। लेकिन अंत में वही हुआ जिस बात का अंदेशा था, उनमें से एक भी ऐसा नहीं था जिसने आँसू न बहाया हो, उल्टे वो इतना रोए कि पूरा दरबार आँसुओं से भर गया।

ये सब देखकर राजा भी रो पड़ा और उसने चाहा कि इनाम की पूरी राशि सबमें बराबर-बराबर बाँट दी जाए। लेकिन प्रेमी तो आखिर प्रेमी ठहरे। उन्होंने यही अनुरोध किया कि सारी मुद्राएँ जरूरतमंदों में बाँट दी जाये क्योंकि उनके पास पहले से ही पर्याप्त से ज्यादा है (हाँ, प्रेम पर्याप्त से ज्यादा है) जबकि उनमें से कुछ के पास पहनने के कपड़े और रहने को घर भी नहीं थे।

और फिर पता चला वो सब आये ही हारने के लिए थे। जिसने कभी भी जीतना चाहा हो या जीतने का प्रयास किया वह प्रेमी काहे का। प्रेम तो हारने की कला है।

और हार कर भी बाजी जीत जाने वाले को प्रेमी कहते हैं।

ओशो



ह।

इसलिए आज आप आंख बंद करके बैठ जाएंगे, तो भीतर की आवाज नहीं सुनाई पड़ेगी। आंख बंद करके भी बाहर की ही आवाज सुनाई पड़ती रहेगी। कल, परसों-बैठते रहें, बैठते रहें, जल्दी न करें, घबड़ाएं न। तेईस घंटे बाहर की दुनिया को दे दें, एक घंटा अपने को दे दें। बस, आंख बंद करें और सुनने की कोशिश करें भीतर। सुनने की कोशिश, जैसे भीतर कोई बोल रहा है, उसे सुन रहे हैं।

जैसे कि इतनी भीड़ है। यहां बहुत लोग बातचीत कर रहे हैं और आपको किसी की बात सुननी है, तो आप सबकी बातों को छोड़कर अपनी पूरी चेतना और एकाग्रता को उस आदमी के ओठों के पास लगा देते हैं। वह फुसफुसाकर भी बोलता हो, विस्पर भी करता हो, तो भी आप सुनने की कोशिश करते हैं-और सुन पाते हैं। चेतना सिकुड़कर सुनती है, तो सुन पाती है। एकाग्र हो जाती है, तो सुन पाती है~ओशो



ऐसा बहुत बार हुआ। मेहर बाबा कब रुक जाएंगे किस काम को करने से ऐन बीच में, नहीं कहा जा सकता था; अनप्रेडिक्टेबल था। वे खुद भी नहीं कह सकते थे, क्योंकि उनको खुद भी पता नहीं था। कब अंतर की आवाज क्या कहेगी, उन्हें भी पता नहीं। जो कहेगी, वही वे करेंगे, जो भी हो। यह भी पता नहीं कि क्या परिणाम होगा। हवाई जहाज से क्यों रोक रहा है अंतर-मन? लेकिन अंतर-मन कहता है, नहीं, तो फिर नहीं। हां, तो हां।

मेहर बाबा की जिंदगी स्वधर्म की तलाश की जिंदगी है। भीतर के स्वर की खोज की जिंदगी है। वह भीतर का स्वर क्या कहता है, उससे ही चलेंगे। कोई भी व्यक्ति अगर तेईस घंटे काम की दुनिया से हटाकर एक घंटा अपने लिए निकाल ले—ज्यादा निकाल सकें, और अच्छा। कभी वर्ष में पंद्रह दिन, तीन सप्ताह निकाल सकें इकट्ठे, तो और भी अच्छा। धीरे-धीरे भीतर की आवाज साफ होने लगे, तो आपकी जिंदगी में भूल-चूक बंद हो जाएगी। क्योंकि तब जिंदगी परमात्मा से चलने लगती है, आपसे नहीं चलती।

स्वधर्म की खोज करनी हो, उसे बाहर की दुनिया से कम से कम चौबीस घंटे में घंटेभर के लिए बिल्कुल छुट्टी ले लेनी चाहिए, और भीतर की दुनिया में डूब जाना चाहिए। कर देने चाहिए द्वार बंद बाहर के। कर देना चाहिए बाहर के जगत को बाहर, और अब मैं होता भीतर। सब इंद्रियों के द्वार बंद करके भीतर घंटेभर के लिए डूब जाना चाहिए। वहीं पता चलेगा उस रहस्य का जो स्व है, जो निजता है। वहीं से सूत्र मिलेंगे, ध्वनि सुनाई पड़ेगी, वहीं से इशारे मिलेंगे। और धीरे-धीरे इशारे गहरे होते चले जाते हैं।

स्वधर्म का पता अंतर की वाणी के अतिरिक्त और कहीं से नहीं चलता है। इससे आप पता लगा लेना कि जिंदगी ठीक मार्गों से जा रही है या नहीं। घंटेभर के लिए चौबीस घंटे में, बंद कर देना बाहर की दुनिया को, भूल जाना; छोड़ देना सब बाहर का बाहर; अपने भीतर डुबकी लगा जाना। उस डुबकी में धीरे-धीरे भीतर की अंतर्वाणी सुनाई पड़नी शुरू होगी। सबके भीतर छिपा है वह। दि स्टिल स्माल वॉइस, छोटी है आवाज—धीमी, नाजुक, सूक्ष्म। केवल वे ही सुन सकते हैं, जो उतनी सूक्ष्म आवाज को सुनने के लिए अपने को ट्रेन करते हैं, प्रशिक्षित करते हैं।

इसलिए आज आप आंख बंद करके बैठ जाएंगे, तो भीतर की आवाज नहीं सुनाई पड़ेगी। आंख बंद करके भी बाहर की ही आवाज

**अहोभाव**

18h · 🌐

...

**अहोभाव**

. अंतर्वाणी के सुनने के लिए मेहर बाबा ने इस सदी में जितना श्रम किया, उतना किसी दूसरे व्यक्ति ने नहीं किया है। और अंतर्वाणी को सुनने के लिए, स्वधर्म की आवाज को सुनने के लिए जो गहरे से गहरा तप किया जा सकता था, वह यह था कि वाणी ही उन्होंने छोड़ दी, शब्द ही छोड़ दिए; मौन हो रहे बाहर से, ताकि शब्द का लेन-देन बंद हो जाए। ताकि अंततः कभी जरा-सी भी भूल न हो, कि भीतर की आवाज और बाहर की आवाज में कहीं भी कोई संदेह और संभ्रम, कोई कनफ्यूजन पैदा न हो। बाहर की आवाज ही बंद कर दी, ताकि निपट भीतर की आवाज से जीया जा सके।

फिर बहुत-सी घटनाएं उनके जीवन में हैं, एक-दो मैं कहूं, जिससे खयाल आ सके कि अंतर की आवाज... हैदराबाद के पास उन्होंने एक छोटा-सा आश्रम बनाया था। बनकर तैयार हुआ। बड़ी प्रतीक्षा से बनाया था। फिर उसके द्वार तक गए-प्रवेश का दिन था-और ठीक दरवाजे पर खड़े होकर वापस लौट आए और इशारा कर दिया कि उस मकान में वे प्रवेश नहीं करेंगे। रात वह मकान गिर गया।

हिंदुस्तान से वे यूरोप जा रहे थे। हवाई जहाज से यात्रा। बीच में हवाई जहाज सिर्फ फ्यूल भरने के लिए किसी एअरपोर्ट पर उतरा। फिर हवाई जहाज उड़ने को हुआ। यात्रियों को खबर की गई। मेहर बाबा ने इनकार कर दिया कि वे उस पर सवार नहीं होंगे। साथी उनके बड़ी परेशानी में पड़ते थे। शिष्य बड़ी मुश्किल में पड़ जाते थे। अब यह बड़ी बेहूदगी हो गई! चलती यात्रा में, बीच हवाई जहाज से उतर जाना, फिर कह देना कि नहीं जाएंगे! वह हवाई जहाज पंद्रह मिनट बाद उड़ा और गिर गया और सब यात्री समाप्त हो गए।

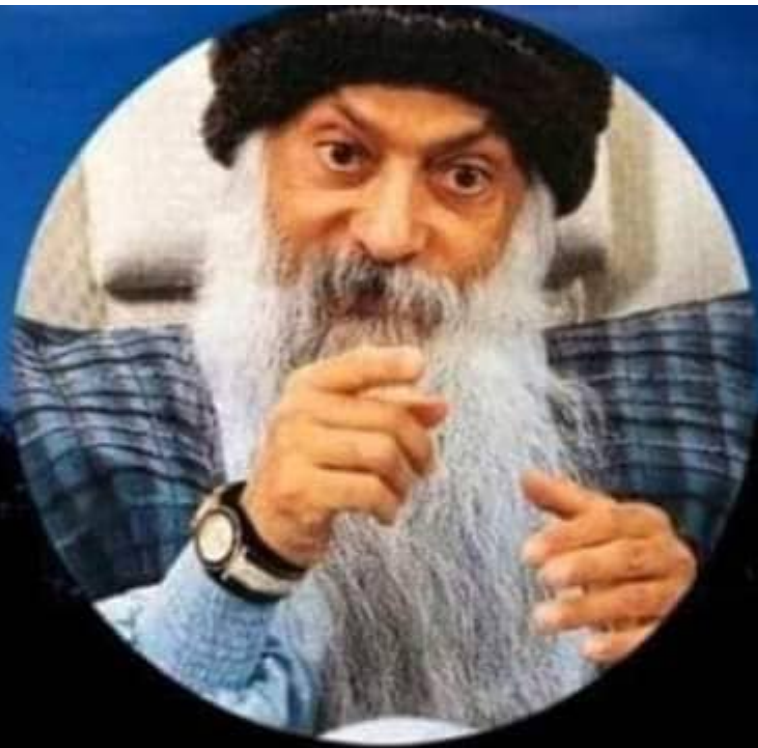
ऐसा बहुत बार हुआ। मेहर बाबा कब रुक जाएंगे किस काम को करने से ऐन बीच में, नहीं कहा जा सकता था; अनप्रेडिक्टेबल था। वे खुद भी नहीं कह सकते थे, क्योंकि उनको खुद भी पता नहीं था। कब अंतर की आवाज क्या कहेगी, उन्हें भी पता नहीं। जो कहेगी, वही वे करेंगे, जो भी हो। यह भी पता नहीं कि क्या परिणाम होगा। हवाई जहाज से क्यों रोक रहा है अंतर-मन? लेकिन अंतर-मन कहता है, नहीं,

तृष्णा के लिए
एक क्षण से ज्यादा चाहिए।
फैलाव के लिए, विस्तार के लिए
भविष्य चाहिए। और
भविष्य के फैलाव के लिए अतीत में जड़ें
और स्मृति चाहिए।
अगर अतीत भी नहीं,
भविष्य भी नहीं, यही क्षण है,
तो समय गिर गया
और वासना भी गिर गई।

इसलिए ज्ञानी
क्षण में जीना शुरू कर देता है,
अभी और यहीं।
और जैसे ही कोई
अभी और यहीं जीता है,
समय के बाहर हो
जाता है।

क्षण जो है,
समय के बाहर होने का
द्वार है।

आचार्य श्री रजनीश Osho
गीता दर्शन अ.8.प्र.7/95 सृष्टि और प्रलय का वर्तुल



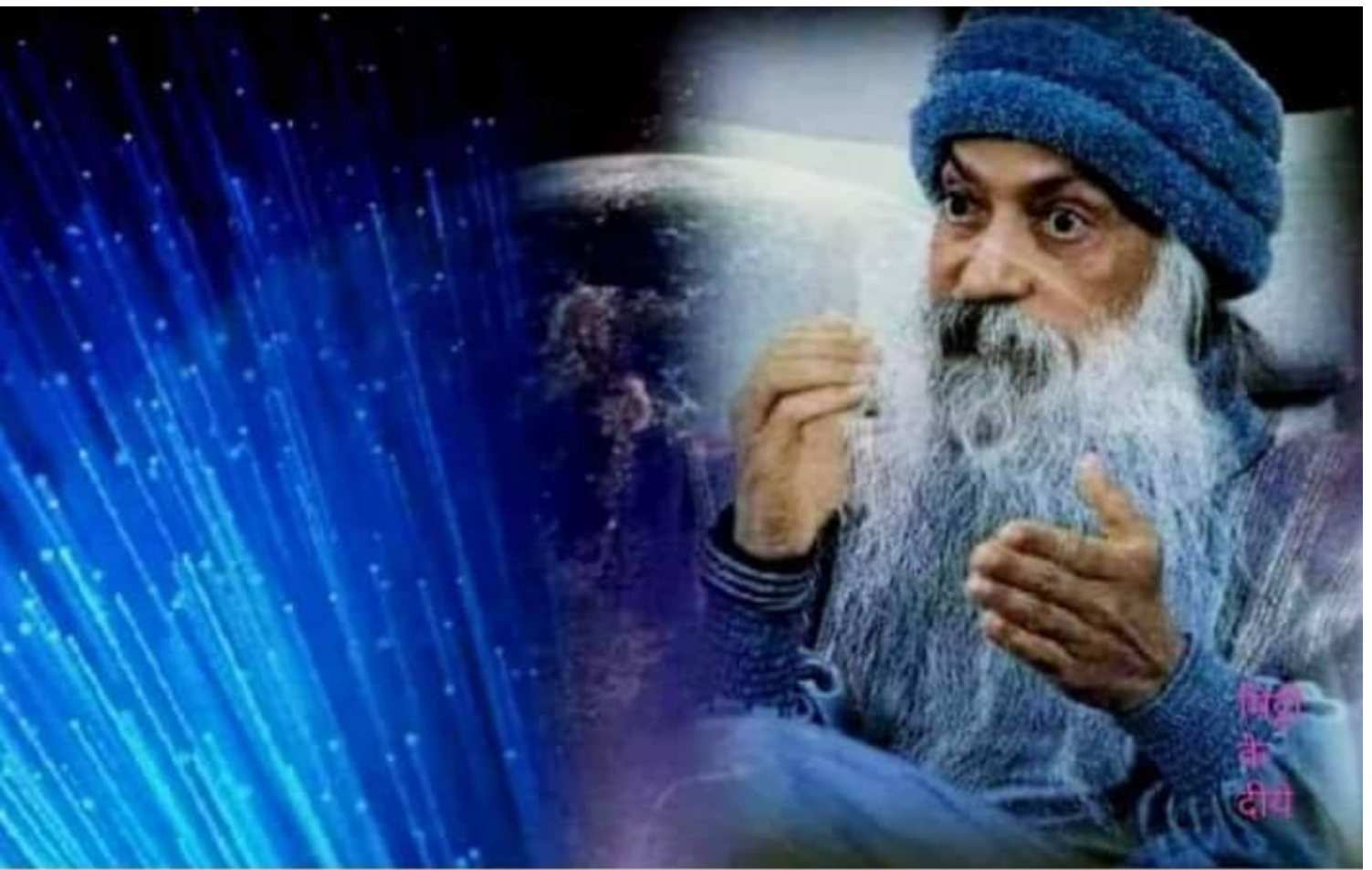
शब्द तो मन तक ही जाएंगे।
उनकी दौड़ उसके आगे नहीं।
जहां निःशब्द शुरू होता है,
वही मनुष्य की असली सत्ता का प्रारंभ है।
जहां विचार गिर जाते हैं और निर्विचार का
आयाम खुलता है,
वही मनुष्य की चेतना में पहली दफे तुम्हारा
प्रवेश होता है।
अहोभाव
ओशो

लाओत्से कहता है,
ईश्वर होता है तब जब मनुष्य में ईश्वर को
अनुभव करने की क्षमता होती है।
उसी मात्रा में ईश्वर प्रकट होता है
जिस मात्रा में मनुष्य का हृदय
उसे अनुभव करने में सक्षम होता है।



ईश्वर की उपस्थिति मनुष्य के
अनुभव करने की क्षमता पर निर्भर है।
ईश्वर है या नहीं, यह मूल्यवान नहीं है;
उसे अनुभव करने का द्वार खुला है या नहीं,
यही मूल्यवान है।

#-ताओ उपनिषद-प्र-74, ओशो



जो बाहर प्रतीत होता है , वह नहीं , वरन जो भीतर उपस्थित है --- वह जीवन में मौलिक और आधारभूत है । इस सत्य पर सतत जिनकी दृष्टि है --- वे बाह्य से मुक्त हो अंतरस्थ में प्रतिष्ठित हो जाते हैं । सुख और दुख में , घृणा और प्रेम में , मित्र और शत्रु में --- जो इस मूल - स्रोत पर ध्यान रखते हैं वे अंततः पाते हैं कि मेरे स्वयं के अतिरिक्त न कोई सुख है , न दुख ; न कोई शत्रु है , न मित्र। मैं ही अपना शत्रु हूं और मैं ही अपना मित्र हूं । ओशो संकलन : Dr Sohan Lal Narang



ओशो-Life with Osho:

समय पर सब होता है। समय पर जन्म, समय पर मृत्यु; समय पर सफलता, समय पर असफलता—समय पर सब होता है। कुछ भी समय के पहले नहीं होता है। ऐसा जो जानता है कि विपत्ति और संपत्ति दैवयोग से समय आने पर घटती हैं, वह सदा संतुष्ट है। फिर जल्दी नहीं, फिर अधैर्य नहीं। जब समय होगा, फसल पकेगी, काट लेंगे। जब सुबह होगा, सूरज निकलेगा, तो सूरज के दर्शन करेंगे, धूप सेंक लेंगे। जब रात होगी, विश्राम करेंगे, आराम करेंगे; सब छोड़—छाड़, डूब जाएंगे निद्रा में। सब अपने से हो रहा है और सब अपने समय पर हो रहा है। अशांति तब पैदा होती है जब हम समय के पहले कुछ मांगने लगते हैं; हम कहते हैं, जल्दी हो जाए।

अष्टावक्र महागीता -3/31



सत्योपलब्धि के मार्ग अनंत हैं

सत्योपलब्धि के मार्ग अनंत हैं। और व्यक्ति-व्यक्ति पर निर्भर करता है कि उसके लिए क्या उपयुक्त है। और इसलिए जो एक के लिए सही है, वही दूसरे के लिए बिल्कुल ही गलत हो सकता है। इसीलिए दूसरे के साथ धैर्य की आवश्यकता है। और स्वयं को सबके लिए मापदंड मानना खतरनाक है। मैं अनेकांत या स्यादवाद में इसी सत्य की अभिव्यक्ति देखता हूं। विचार-प्रधान व्यक्ति के लिए जो मार्ग है, वह भाव-प्रधान व्यक्ति के लिए नहीं है। और बहिर्मुखी, एक्स्ट्रोवर्ट के लिए जो द्वार है, वह अंतर्मुखी, इंट्रोवर्ट के लिए दीवार है। ज्ञान का यात्री अंततः ध्यान की नाव बनाता है। प्रेम का यात्री प्रार्थना को। ध्यान और प्रार्थना पहुंचते हैं एक ही मंजिल पर। लेकिन उनके यात्रा-पथ नितांत भिन्न हैं। और उचित यही है कि अपना यात्रा-पथ चुनें, और दूसरे की चिंता न करें। क्योंकि स्वयं को ही समझना जब इतना कठिन है, तो दूसरे को समझना तो करीब-करीब असंभव है।

सब मार्ग ध्यान के ही विविध रूप हैं

ध्यान के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है। या जो भी मार्ग हैं, वे सब ध्यान, मेडीटेशन के रूप हैं। प्रार्थना भी ध्यान है, पूजा भी, उपासना भी। योग भी ध्यान है, सांख्य भी। ज्ञान भी ध्यान है, भक्ति भी। कर्म भी ध्यान है, संन्यास भी। ध्यान का अर्थ है--चित्त की मौन, निर्विचार, शुद्धावस्था। कैसे पाते हो इस अवस्था को, यह महत्वपूर्ण नहीं है। बस पा लो, यही महत्वपूर्ण है। किस चिकित्सा-पद्धति से स्वस्थ होते हो, यह गौण है। बस स्वस्थ हो जाओ, यही महत्वपूर्ण है।



ध्यान की अनुपस्थिति है मन

ध्यान के लिए श्रम करो। मन की सब समस्याएं तिरोहित हो जाएंगी। असल में तो मन ही समस्या है, माइंड इज दि प्रॉब्लम। शेष सारी समस्याएं तो मन की प्रतिध्वनियां मात्र हैं। एक-एक समस्या से अलग-अलग लड़ने से कुछ भी न होगा। प्रतिध्वनियों से संघर्ष व्यर्थ है। पराजय के अतिरिक्त उसका और कोई परिणाम नहीं है। शाखाओं को मत काटो। क्योंकि एक शाखा के स्थान पर चार शाखाएं पैदा हो जाएंगी। शाखाओं के काटने से वृक्ष और भी बढ़ता है। और समस्याएं शाखाएं हैं। काटना ही है तो जड़ को काटो। क्योंकि जड़ के कटने से शाखाएं अपने आप ही विदा हो जाती हैं।

और मन है जड़। इस जड़ को काटो ध्यान से। मन है समस्या। ध्यान है समाधान। मन में समाधान नहीं है। ध्यान में समस्या नहीं है। क्योंकि मन में ध्यान नहीं है। क्योंकि ध्यान में मन नहीं है। ध्यान की अनुपस्थिति है मन। मन का अभाव है ध्यान। इसलिए कहता हूं--ध्यान के लिए श्रम करो।

मन का विसर्जन--साक्षीभाव से

मन के रहते शांति कहां? क्योंकि वस्तुतः मन ही अशांति है। इसलिए शांति की दिशा में मात्र विचार से, अध्ययन से, मनन से कुछ भी न होगा। विपरीत मन और सबल भी हो सकता है; क्योंकि वे सब मन की ही क्रियाएं हैं। हां, थोड़ी देर को विराम जरूर मिल सकता है; जो कि शांति नहीं, बस अशांति का विस्मरण मात्र है। इस विस्मरण की मादकता से सावधान रहना। शांति चाहिए तो मन को खोना पड़ेगा। मन की अनुपस्थिति ही शांति है। साक्षीभाव, विटनेसिंग से यही होगा। विचार, कर्म--सभी क्रियाओं के साक्षी बनो। कर्ता न रहो। साक्षी बनो। पल-पल साक्षी होकर जीयो। जो भी करो--साक्षी रहो। जैसे कि कोई और कर रहा है और मात्र गवाह रहा हो। फिर धीरे-धीरे मन भोजन न पाने से निर्बल होता जाता है। कर्ताभाव मन का भोजन है। अहंकार मन का ईंधन, (फ्यूल) है। और जिस दिन ईंधन बिल्कुल नहीं मिलता है, उसी दिन मन ऐसे तिरोहित हो जाता है कि जैसे कभी रहा ही न हो।

सत्योपलब्धि के मार्ग अनंत हैं

सत्योपलब्धि के मार्ग अनंत हैं। और व्यक्ति-व्यक्ति पर निर्भर करता है

**Naye bharat ke khoj**

23m · 🌐



ध्यान योग-ओशो-(अध्याय-02)

ध्यान योग-(प्रथम ओर अंतिम मुक्ति)

अध्याय-दूसरा-प्रवचन अंश

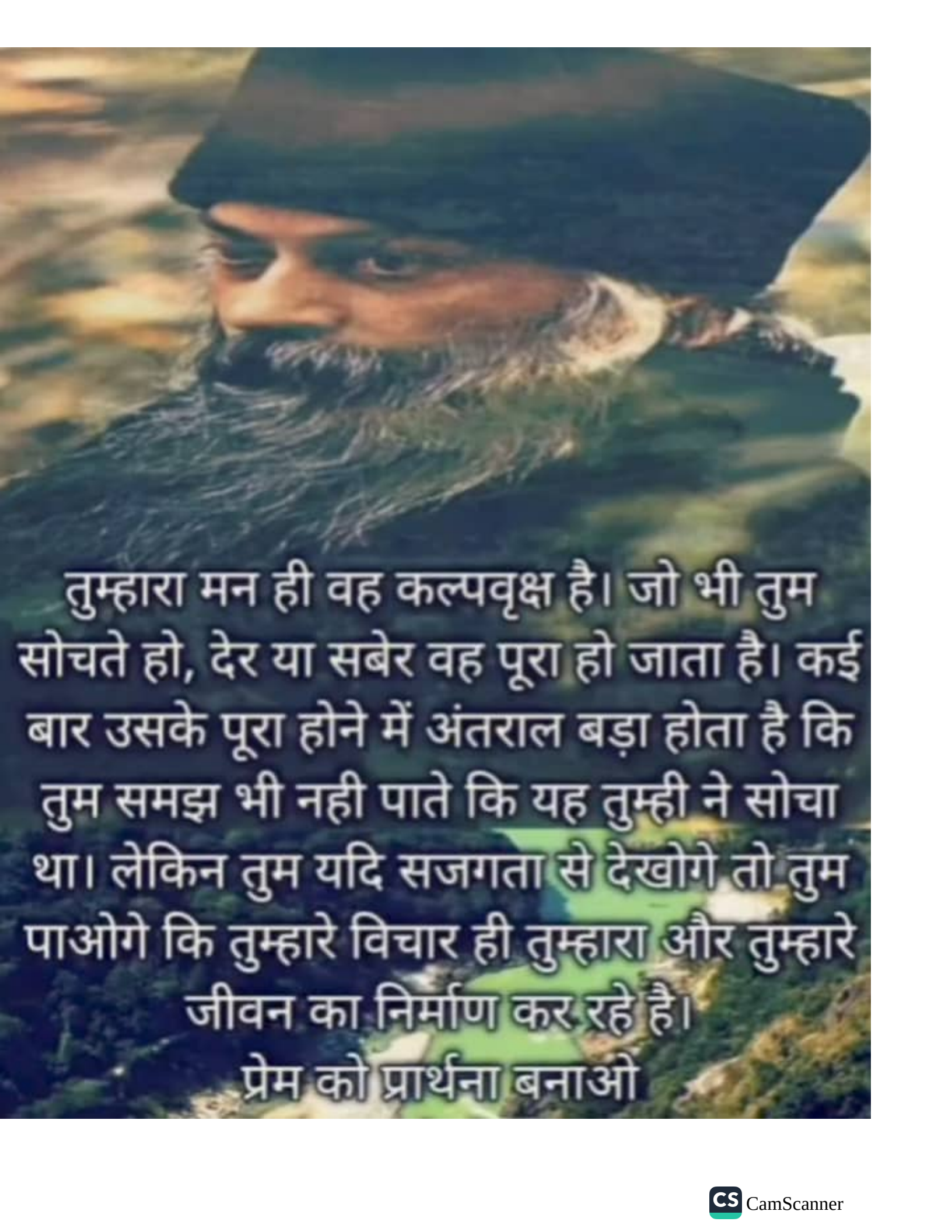
ध्यान है भीतर झांकना

बीज को स्वयं की संभावनाओं का कोई भी पता नहीं होता है। ऐसा ही मनुष्य भी है। उसे भी पता नहीं है कि वह क्या है--क्या हो सकता है। लेकिन, बीज के भीतर झांक भी नहीं सकता है। पर मनुष्य तो झांक सकता है। यह झांकना ही ध्यान है। स्वयं के पूर्ण सत्य को अभी और यहीं, हियर एंड नाउ जानना ही ध्यान है। ध्यान में उतरें--गहरे और गहरे। गहराई के दर्पण में संभावनाओं का पूर्ण प्रतिफलन उपलब्ध हो जाता है। और जो हो सकता है, वह होना शुरू हो जाता है। जो संभव है, उसकी प्रतीति ही उसे वास्तविक बनाने लगती है। बीज जैसे ही संभावनाओं के स्वप्नों से आंदोलित होता है, वैसे ही अंकुरित होने लगता है। शक्ति, समय और संकल्प सभी ध्यान को समर्पित कर दें। क्योंकि ध्यान ही वह द्वार हीन द्वार है जो कि स्वयं को ही स्वयं से परिचित कराता है।

ध्यान है अमृत--ध्यान है जीवन

विवेक ही अंततः श्रद्धा के द्वार खोलता है। विवेकहीन श्रद्धा, श्रद्धा नहीं, मात्र आत्म-प्रवचना है। ध्यान से विवेक जगेगा। वैसे ही जैसे सूर्य के आगमन से भोर में जगत जाग उठता है। ध्यान पर श्रम करें। क्योंकि अंततः शेष सब श्रम समय के मरुस्थल में कहां खो जाता है, पता ही नहीं पड़ता है। हाथ में बचती है केवल ध्यान की संपदा। और मृत्यु भी उसे नहीं छीन पाती है। क्योंकि मृत्यु का वश काल, टाइम के बाहर नहीं है। इसलिए तो मृत्यु को काल कहते हैं। ध्यान ले जाता है कालातीत में। समय और स्थान, स्पेस के बाहर। अर्थात् अमृत में। काल, टाइम है विष। क्योंकि काल है जन्म; काल है मृत्यु। ध्यान है अमृत। क्योंकि ध्यान है जीवन। ध्यान पर श्रम, जीवन पर ही श्रम है। ध्यान की खोज, जीवन की ही खोज है।

ध्यान की अनुपस्थिति है मन



तुम्हारा मन ही वह कल्पवृक्ष है। जो भी तुम सोचते हो, देर या सबेर वह पूरा हो जाता है। कई बार उसके पूरा होने में अंतराल बड़ा होता है कि तुम समझ भी नहीं पाते कि यह तुम्ही ने सोचा था। लेकिन तुम यदि सजगता से देखोगे तो तुम पाओगे कि तुम्हारे विचार ही तुम्हारा और तुम्हारे जीवन का निर्माण कर रहे हैं।
प्रेम को प्रार्थना बनाओ



मुझे हमेशा इंतज़ार रहेगा ..
उन खोजियों का जो खुद को खोकर
खुद से मिलना चाहते हैं ..





ओशो एक सत्य 5h



Send message...



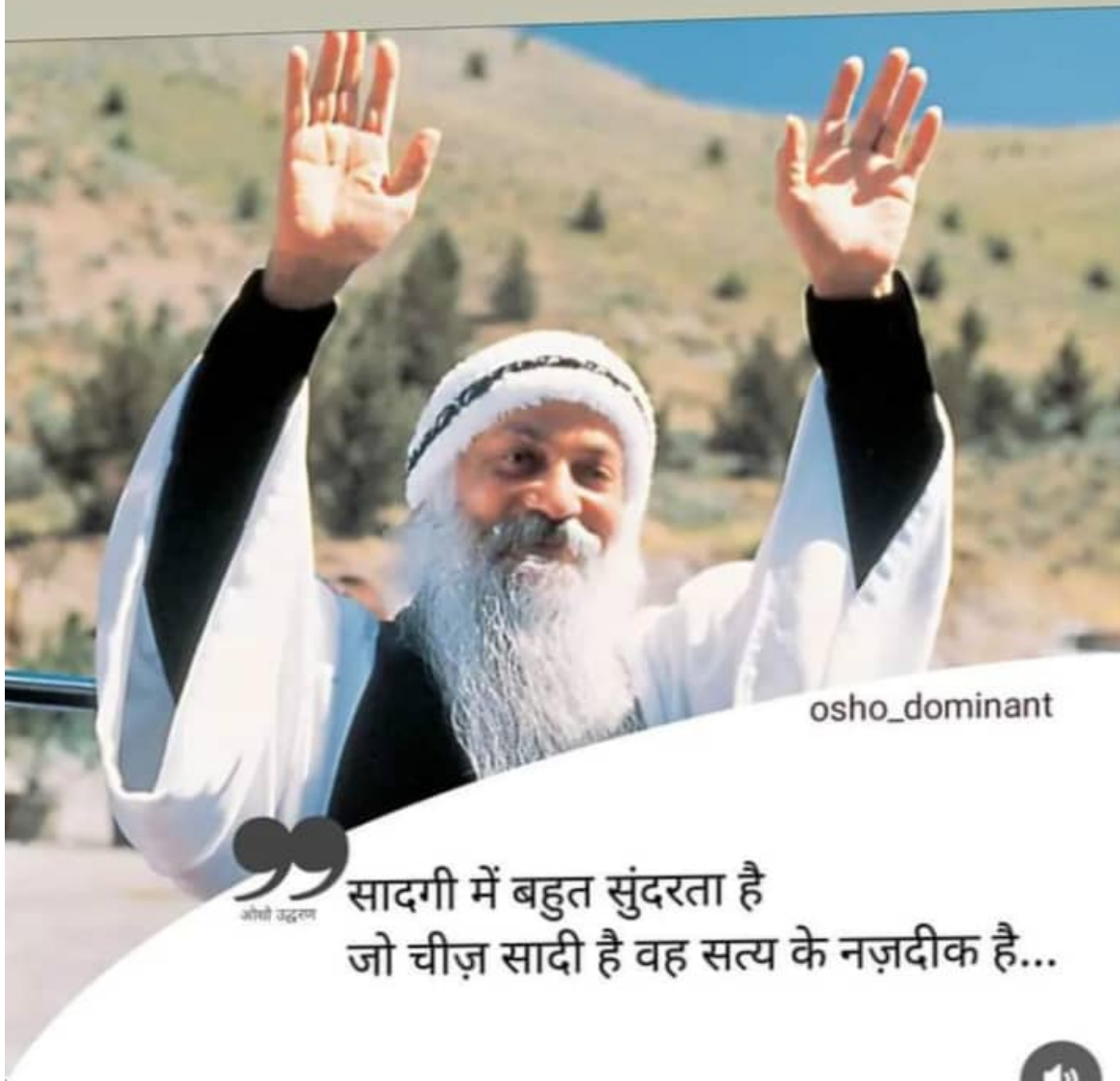


प्रत्येक पुरुष.! पत्नी में,
"माँ के प्रेम को खोज
रहा है! लेकिन उसे किसी
स्त्री में माँ नहीं मिल
पाती.! और पुरुष का पूरा
जीवन उसी प्रेम की खोज
में निकल जाता है.!!

ओशो



आशा एक सत्य था



osho_dominant



ओशो उद्धरण

सादगी में बहुत सुंदरता है
जो चीज़ सादी है वह सत्य के नज़दीक है...





लाओत्से से कहता है; अगर यह दिखाई पड़ जाए.!
की घटनाएं हो रही है.. मैं कुछ भी नहीं कर रहा हूं..
तो सारी चिंताएं क्षण भर में विलीन हो जाएगी...

आचार्य रजनीश



ओशो एक सत्य 7h



मेरी आँखों के जादू से तुम अभी वाकिफ़
नहीं हो, हम उसे भी जीना सिखा देते हैं. जिसे
मरने का शौक हो.!

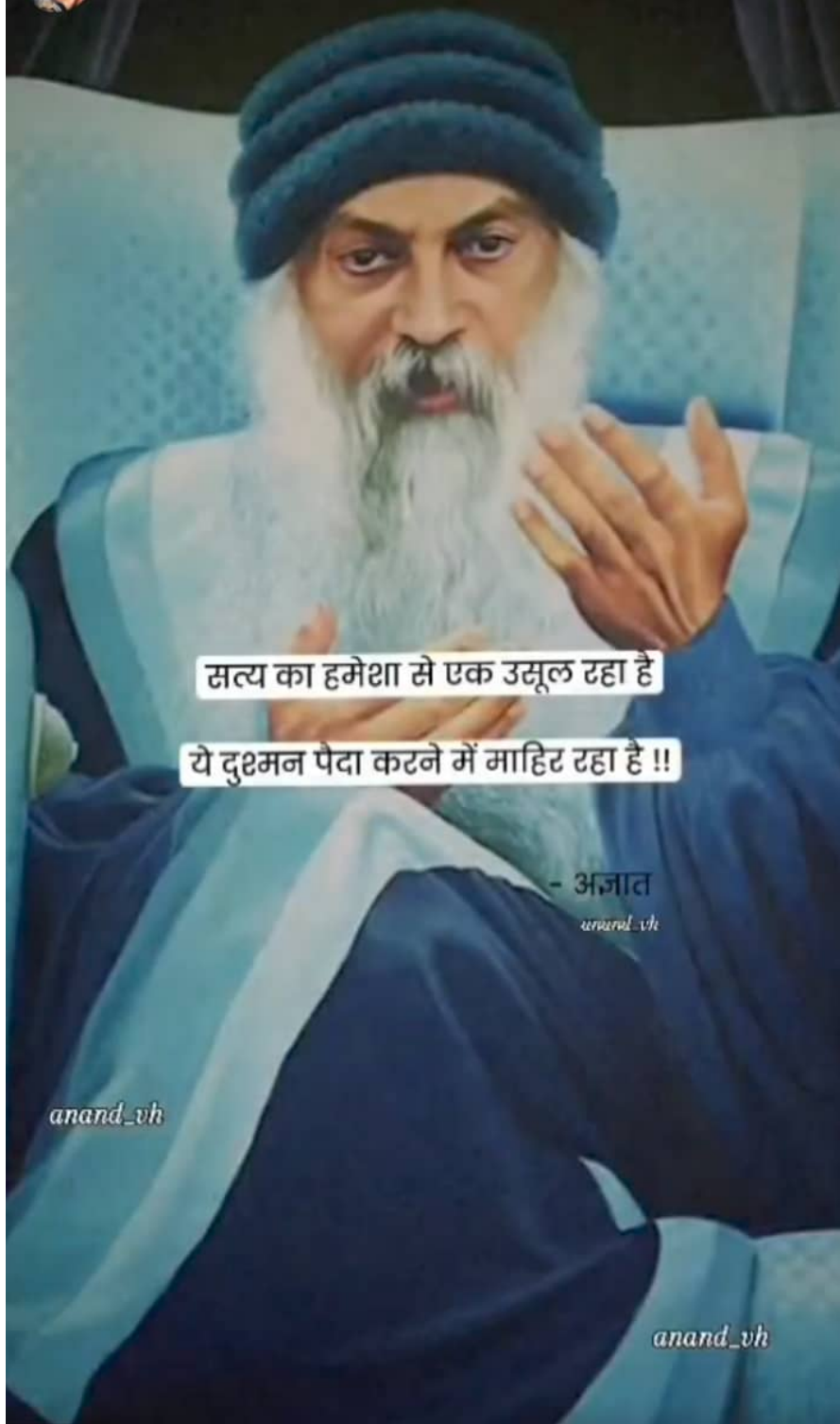
Osha

Send message...





ओशो एक सत्य 8h



सत्य का हमेशा से एक उसूल रहा है

ये दुश्मन पैदा करने में माहिर रहा है !!

- अज्ञात
anand_vh

anand_vh

anand_vh

Send message...





ओशो एक सत्य 10h



तुम्हारा जीवन ज़ेसा भी है
वो तुम्हारे मन का ही
परिणाम है !

Osho

@osho_philosophy

Send message...





ओशो एक सत्य 10h

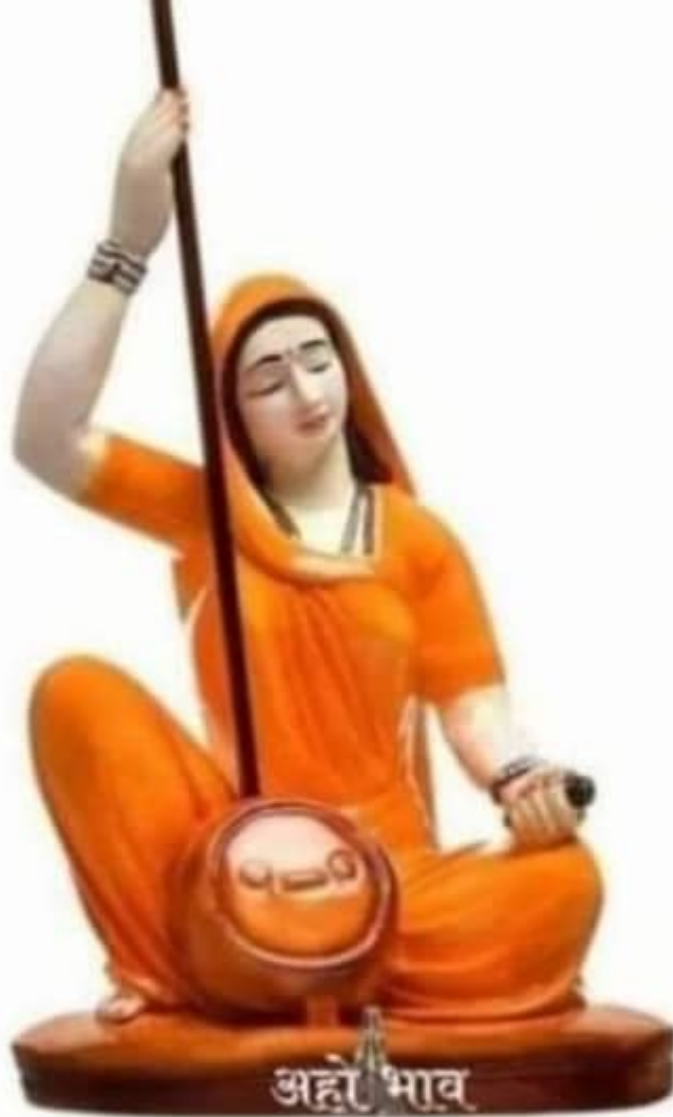


मृत्यु का कारण कोई रोग या दुर्घटना
नहीं बल्कि “जन्म” है।

OSHO
@osho__philosophy

Send message...



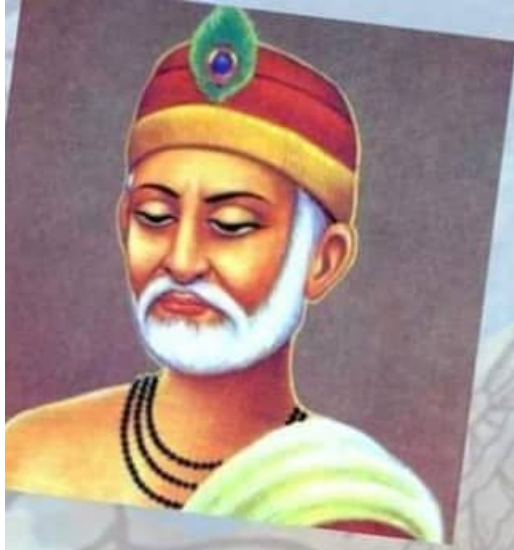


ओशो

मीरा कहती है: मैंने तो खरीद लिया गोविंद को।

कैसे खरीदा मीरा ने? कोई कैसे खरीदता है परमात्मा को?
मीट कर खरीदा। अपने को गंवा कर पाया।
अपनी गर्दन रख दी वहां उसके चरणों में। बस वही
बाधा थी।

तुम्हारा सिर ही बाधा है। तुम्हारा अहंकार ही बाधा है।
उसी को चढ़ा दिया, तो परमात्मा तुम्हारा हो जाता है।



मोकों कहाँ ढूँढ़े बंदे,
मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद,
ना काबे कैलास में।
ना तो कौन क्रिया-कर्म में,
नहीं योग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहों,
पल भर की तलास में।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो,
सब स्वाँसों की स्वाँस में॥

संत कबीर दास

DPPant/FB012024

महावीर की जो मौलिक, ओरिजिनल कांट्रिब्यूशन है मनुष्य को,
वह है जाति-स्मरण की प्रक्रिया, पिछले जन्म की याददाश्त।

और एक बार पिछले जन्मों की याददाश्त आ जाए,
तो आप खुद ही कहेंगे, यह मैं क्या कर रहा हूं?
एक जन्म में चार हजार दफे संभोग किया; और
हजारों जन्म हो चुके, करोड़ों बार संभोग किया;
और अब तक कुछ पाया नहीं। अब फिर आज संभोग करना है?
फिर आज संभोग में उतरना है? क्या फिर भी उतर पाएंगे?

कुछ कहा नहीं जा सकता। कुछ कहा नहीं जा सकता।
शायद मन कहे कि पता नहीं,
अब तक न हुआ हो अनुभव आनंद का, एकाध बार और।
कह सकता है मन कि क्या पता, अब तक न हुआ हो,
एकाध बार और। लेकिन मुश्किल हो जाएगा कहना।
अगर इतना याद आ जाए, तो मुश्किल हो जाएगा।



अध्ययन ही करना है,
तो जीवन का करें।
जीवन तो परमात्मा की
खुली किताब है।
परमात्मा ने तो एक ही
किताब लिखी है,
वह जिंदगी की किताब है।
और तो कोई किताब परमात्मा
की लिखी हुई नहीं है। और
सब किताबों पर आदमी के
हस्ताक्षर हैं।
और सब किताबें
आदमी के हाथ की हैं।
- ओशो

ओशो गीता-दर्शन

ओशो निर्वाण समूह



जगत हजार आयामी है, अनंत आयामी है। अनंत आयामों पर चेतना है। जिस दिन व्यक्ति जानता है अपनी चेतना की गहराई को, उसी दिन वह सारे जगत की चेतना को भी जान लेता है। इसलिए दूसरा अनुभव होता है चित का, चैतन्य का, सब चैतन्य है।



मोको कहाँ ढूँढे बंदे मैं तो तेरे पास में

कबीर

मोको कहाँ ढूँढे बंदे मैं तो तेरे पास में
ना मैं देवल ना मैं मस्जिद ना काबे कैलास में
ना तो कौन क्रिया-कर्म में नहीं जोग-बैराग में
ना मैं छगरी ना मैं भेंड़ी ना मैं छूरी गाँड़ास में
नहीं खाल में नहीं पूछ में ना हड्डी ना माँस में
मैं तो रही सहर के बाहर मेरी पूरी मवास में
खोजी होय तो तुरतै मिलिहीं पल-भर की तलास में
कहै 'कबीर' सुनो भाई साधो सब साँसन की साँस में

ऐ बंदे तू मुझे कहाँ ढूँढता फिर रहा है, मैं तो तेरे पास ही हूँ.
न मैं मंदिर में मिलूँगा न मस्जिद में, न का'बे और कैलाश में, न
पूजा-पाठ में, न योग-बैराग में.
सच्चे मन से खोजने वाला हो तो उसे मैं पल भर की तलाश में मिल
जाऊँगा.
'कबीर' कहते हैं, भाई साधु! सुनो, वो तो हर साँस में मौजूद है.

स्रोत :

पुस्तक : कबीर समग्र (पृष्ठ 753)

अगला पद

मोंही तोंहि लागी कैसे छुटे





तुम्हारे मन में अगर किसी को भी दुख देने का
जरा सा भी भाव है ,
तो तुम अपने लिए बीज बो रहे हो ।
क्योंकि तुम्हारे मन में जो दुख देने का बीज है ,
वह तुम्हारे ही मन की भूमि में गिरेगा
किसी दूसरे के मन की भूमि में नहीं गिर सकता ।
बीज तो तुम्हारे भीतर है ,
वृक्ष भी तुम्हारे भीतर ही होगा ।
फल भी तुम्हीं भोगोगे....!!

- ओशो

बुद्ध को खोजने के लिए,
आपको बस अपना स्वभाव देखना है।
तुम्हारा स्वभाव बुद्ध है।

और बुद्ध वह व्यक्ति हैं जो स्वतंत्र हैं,
योजनाओं से मुक्त हैं, चिंताओं से मुक्त हैं।
यदि आप अपने स्वभाव को नहीं देखते
हैं और पूरे दिन इधर-उधर भागते रहते हैं,
तो आपको कभी कोई बुद्ध नहीं मिलेगा।
सच तो यह है कि खोजने के लिए कुछ
भी नहीं है।

लेकिन ऐसी समझ तक पहुंचने के लिए
आपको एक शिक्षक की आवश्यकता
होती है।

और आपको खुद को समझाने के लिए
संघर्ष करना होगा।

बोधिधर्म





इस पागलपन में न पड़ो।

राम तो फिर भी धार्मिक व्यक्ति से लड़ रहे थे; रावण बहुत धार्मिक था, शिव का भक्त था। कहानी तो यह है कि इतना भक्त था कि अपनी गर्दन भी चढ़ा देता था। राम तो एक धार्मिक व्यक्ति से ही उलझ रहे थे, उसको भी न बदल सके!

तुम चीन को बदल सकोगे ???

जो कि ईश्वर को मानते ही नहीं, आत्मा को मानते ही नहीं ???

पहली दफा नास्तिकों के हाथ में देश है। चीन इस समय दुनिया का सबसे बड़ा देश है। एक अरब के करीब उसकी संख्या जल्दी ही पहुंच जाएगी। नब्बे करोड़ तो पहुंच ही गई। ये नब्बे करोड़ नास्तिकों का देश, जिसमें कोई ईश्वर को मानता नहीं, आत्मा को मानता नहीं, इनको भावातीत ध्यान से बदल सकोगे ???

कौरव कितने ही बुरे रहे हों, भगवान को तो मानते ही थे, आत्मा को तो मानते ही थे, नर्क और स्वर्ग से तो डरते ही थे।

उनको भी कृष्ण न बदल सके!

और कृष्ण ने अर्जुन को न समझाया कि बेटा, गांडीव छूट गया छूट जाने दे, यह ले भावातीत ध्यान, इससे सब हल हो जाएगा!

देश की समस्याएं क्या हैं ???

रोटी नहीं है, रोजी नहीं है, कपड़ा नहीं है। ध्यान से यह कैसे हल हो सकेगा ???

रोटी आकाश से बरसेगी ???

कपड़े जमीन से उगेंगे ???

पत्थर हीरे-जवाहरात बन जाएंगे ???

क्या होगा ???

ओशो

सांच-सांच सो सांच-(प्रश्नोत्तर)-प्रवचन-06

**रजनीशपुरम**

Munabai Makvana · 1d · 🌐

...



जागो भारत जागो

नागासाकी-हिरोशिमा दोनों नगरों में झेन फकीरों की बड़ी तादाद थी। उनके सुंदर आश्रम थे, जिनमें सुबह से लेकर सांझ तक लोग ध्यान में लीन थे। मगर जब एटम बम गिरा तो उसने कोई फर्क न किया कि ये ध्यानी हैं, इन्हें छोड़ दो; कि ये गैर-ध्यानी हैं, इन्हें मारो, दो गुना मारो! उसने न कुत्तों को देखा, न घोड़ों को देखा, न गधों को देखा, न वृक्षों को देखा, न इस बात की फिक्र की कि कौन बुद्धत्व को उपलब्ध हो गया है। उसने तो सभी को भस्मीभूत कर दिया।

जिन लोगों ने महावीर के कान में खीले ठोंके, महावीर उनका हृदय परिवर्तन न कर सके।
इतना भी ध्यान न था ???

बुद्ध की मृत्यु विषाक्त भोजन से हुई। इतना भी ध्यान न था कि शरीर में विष का असर न हो, ऐसा उपाय कर लेते ???
कितने उल्लेख तुम्हें दिए जाएं ???

खुद कृष्ण की मृत्यु बाण के लगने से हुई। वे विश्राम करने को एक वृक्ष के नीचे लेटे थे और किसी शिकारी ने भूल से उनके पैर को समझा कि वह किसी पशु का पैर है, दूर झाड़ियों में छिपे हुए उसने तीर मार दिया। पछताया बहुत, लेकिन वह तीर विषाक्त था, कृष्ण की मृत्यु हो गई। कृष्ण का ध्यान तीर से न बचा सका।

और महर्षि महेश योगी, जो कृष्ण की ही गीता पर प्रवचन दे-देकर महर्षि हैं, इनको यह पागलपन सवार हुआ है! ये देश को और देश के प्रधान मंत्री को सुझाव दे रहे हैं कि कोई जरूरत नहीं है अस्त्रों-शस्त्रों की; बिना अस्त्रों-शस्त्रों के, सस्ता-सुगम उपाय, लोग भावातीत ध्यान कर लें। पंद्रह मिनट सुबह, पंद्रह मिनट शाम। पाकिस्तान और चीन के हृदय बदल जाएंगे!

ये फूल

अभी कितने खुश दिखायी पड़ते हैं ।
सांझ मुझा जाएंगे ; गिर जाएंगे धूल में
और खो जाएंगे । ऐसा ही जीवन है ।

एस
धम्मो
सनंतनो
१२

Osho

Soni
Arts

शरीर में मत उलझे रहो।
जीवन शरीर का नहीं है।
शरीर का मालूम पड़ता है,
क्योंकि अभी चलता है,
उठता है, बैठता है, बोलता है,
खाता है, पिता है। मगर फिर
भी याद रखो जीवन तो भीतर
छुपी आत्मा का है।
ओशो अहोभाव
ज्यू था त्यु ठहराया



The Great Kabir



जाता हैं सो जाण दे,
तेरी दसा ना जाइ
खेवटिया के नाव ज्यू
घने मिलेंगे आइ ॥

भावार्थ :-

जाता हैं तो जाने दो पर तुम अपनी स्थिति
और दसा को न जाने दो,
यदि तुम अपने स्वरूप में बने रहे तो,
केवट की नाव की तरह, हर एक व्यक्ति
तुमसे आकर मिलेंगे ।



EPLAY



दूसरे के चरित्र पे बात करनेवाला मनुष्य

अधिकतर खुद के विचारों सहित
मुर्दा हो चुका होता है,,,,

आदमी मर भी जाए जिसे हमने बहुत प्रेम किया था,
तो कितने दिन, कितने दिन स्मरण रह जाता है?
रोते हैं, दुखी-पीड़ित होते हैं।
फिर सब विस्मरण हो जाता है, फिर सब घाव भर जाते हैं।
फिर नए राग, नए संबंध निर्मित हो जाते हैं।
यात्रा पुनः शुरू हो जाती है।

किसके मरने से यात्रा रुकती है!

किस चीज के खोने से यात्रा रुकती है!
कुछ रुकता नहीं; सब फिर चलने लगता है पुनः।

आचार्य श्री रजनीश
गीता दर्शन अ.6 प्र.64/7

ब्रह्मलोक तक,
कृष्ण कहते हैं,
सब लोक, ब्रह्मलोक तक...।

असल में जहां तक लोक हैं,
जहां तक जगत की पर्तें हैं,
चाहे हम उसे ब्रह्मलोक ही क्यों न कहें,
अंतिम लोक,
वहां तक भी
पुनरुक्ति ही होती रहती है।
फिर पुनरुक्ति कहां बंद होती है?
उसे कहा है जानियों ने अलोक,
नान-वर्ल्ड, नो वर्ल्ड।
जहां तक जगत हैं, वहां तक लोक हैं,
फिर अलोक है।
वह अलोक में ही
प्रवेश परमात्मा में प्रवेश है।
वहां पुनरुक्ति नहीं है।

आचार्य श्री रजनीश Osho
गीता दर्शन अ.8.प्र.6/94 वासना, समय और दुःख

**Anamcara Rames**

1d · 🌐

नीत्शे कहता था, ऐसा भी नहीं है कि पहले कोई दूसरे लोग हुए हैं; हम ही लोग! और ठीक ऐसा ही जगत हम बार-बार दोहराते रहे हैं; हम ही लोग! अगर नीत्शे को समझना हो, तो ऐसा समझें। यह सभा इस जमीन पर आज जो हो रही, आज ही नहीं हो रही। नीत्शे कहता था, यह सभा बहुत बार इन्हीं लोगों को लेकर, इसी बोलने वाले को लेकर, इन्हीं सुनने वालों को लेकर बहुत बार हो चुकी है।

घबड़ाने वाली है यह बात, घबड़ाने वाली बात है। लेकिन जगत इतना रिपिटिटिव है कि हो सकता है, नीत्शे भी सही हो। इसमें कोई अड़चन नहीं है। चीजें इतनी दोहरती हैं बार-बार, तो यह हो सकता है कि हम बहुत बार यही लोग, इसी भांति, इसी जमीन के टुकड़े पर बहुत बार मिल चुके हों। याददाश्त कमजोर है। फिर दुबारा मिलते हैं, और लगता है, फिर सब नया हो रहा है।

बुद्ध ने कहा है कि मैं और भी पहले बहुत बार इन्हीं बातों को तुमसे कहा हूं। क्राइस्ट ने कहा है, मैं कोई पहला नहीं हूं, जो इन बातों को कहने आया हूं। मुझसे पहले और लोग भी यही कह चुके हैं। क्राइस्ट ने कहा है, मैं कोई नई बात कहने नहीं आया, आइ हैव कम टु फुलफिल दि प्रोफेसीज आफ दि ओल्ड। वे जो पुराने वक्तव्य हैं, घोषणाएं हैं, उन्हीं को पूरा करने आया हूं। मोहम्मद ने भी कहा है, मैं नया नहीं हूं। मुझसे पहले और लोग आए हैं। उसमें एक इशारा तो बुद्ध की तरफ है। क्योंकि कहा है कि वट वृक्ष के नीचे बैठकर भी एक आदमी ने ऐसी कुछ बातें कही हैं, बोधि वृक्ष के नीचे बैठकर ऐसी कुछ बातें कही हैं।

इस जगत में कुछ भी नया नहीं है। लेकिन सब नया मालूम पड़ता है, क्योंकि हमारे लिए पहली दफा दिखाई पड़ता है। यह हम भूल गए होते हैं, और पहली दफे दिखाई पड़ता हुआ मालूम पड़ता है।



आचार्य श्री रजनीशOsho

गीता दर्शन अ.8.प्र.6/94 वासना, समय और दुःख

1 1 2 3 4 > »

ज्ञात्वा स्वयं प्रत्यगात्मनं बुद्धितद्वृत्तिसाक्षिणम्।
 सौहमित्येव तद्वृत्त्या स्वान्यत्रात्ममतिं व्यजेत्॥ 2॥
 लोकानुवर्तनं त्यक्त्वा त्यक्त्वा देहानुवर्तनम्।
 शास्त्रानुवर्तनम् त्यक्त्वा स्वाध्यासापनयं करु॥ 3॥
 स्वात्मन्येव सदा स्थित्या मनो नश्यति योगिनः।
 युक्त्या श्रुत्या स्वानुभूत्या ज्ञात्वा सावत्प्यिमात्मनः॥
 4॥
 निद्राया लोकवार्तायाः शब्दादेरात्मविस्मृतेः।
 क्वचिन्नावसरं दत्त्वा चिन्तयात्मानमात्मनि॥ 5॥

अपने को बुद्धि और उसकी वृत्ति का साक्षी-
 प्रत्यगात्मा जान कर वह मैं ही हूँ--ऐसी वृत्ति
 द्वारा(अपने सिवाय) सब पदार्थों के ऊपर से आत्म-
 बुद्धि का त्याग करना।

लोक का अनुसरण करना छोड़ कर देह का अनुसरण
 भी छोड़ देना, इसके पश्चात शास्त्र का अनुसरण छोड़
 कर आत्मा के ऊपर का अध्यास भी छोड़ देना।

अपनी ही आत्मा में स्थित होकर युक्ति, श्रवण तथा
 स्वानुभव द्वारा अपने को ही सबका आत्मरूप जान
 कर योगी का मन नाश होता है।

निद्रा को, लोगों की बातों को, शब्द, स्पर्श, रूप, रस,
 गंध आदि विषयों को तथा आत्मा के विस्मरण को
 किसी स्थल पर अवसर दिए बिना हृदय में आत्मा का
 चिंतन करना।

कैसे कोई सत्य में प्रवेश करे, कैसे उस परम रहस्य को जान पाए;
 जो निकट है फिर भी नहीं जाना जाता; और जो सदा से पास है फिर भी
 खो गया है; उस तक हम कैसे पहुंचें, उस तक कोई भी कभी कैसे पहुंचा
 है. इस सत्र में उस विज्ञान की व्याख्या है. उस मार्ग की विधि है।

ओटेगा वाई गासिप ने लिखा है अपने एक मित्र के बाबत कि उसने एक बहुत खूबसूरत गाड़ी फरारी खरीदी। बड़ी कीमती गाड़ी। और पहले ही दिन लेकर उसे निकला और एक जरा सी खरोंच लग गई।

बच्चा नहीं था मित्र, पचास साल का आदमी था! गैर पढ़ा-लिखा नहीं था, युनिवर्सिटी का प्रोफेसर था! साधारण विषय का प्रोफेसर नहीं था, फिलासफी का प्रोफेसर था!

ओटेगा वाई गासिप ने लिखा है कि मैंने अपने उस मित्र को अपनी मां के कंधे पर सिर रख कर रोते देखा। फरारी में खरोंच लग गई। कार थी कीमती, न मालूम कितने सपने देखे होंगे! जो खरोंच थी, वह भीतर तक चली गई, आत्मा तक प्रवेश कर गई होगी, तभी रोया है। रोते आप सब भी हैं। वह आदमी जरा ईमानदार रहा होगा। खुली सड़क पर, मां के कंधे पर सिर रख कर रोने लगा।

लेकिन कितने दिन चलेगा यह? दो-चार दिन में फरारी पुरानी पड़ जाएगी। महीने, दो महीने में यह आदमी इसी गाड़ी में बैठेगा, इसे पता भी नहीं चलेगा कि किस गाड़ी में बैठा है। इस गाड़ी से ऊब जाएगा, लेकिन गाड़ियों से नहीं ऊबेगा। दूसरी गाड़ी को सपना पकड़ लेगा। सोचेगा एक रॉल्स रायस हो जाए; कुछ और हो जाए। एक स्त्री से ऊब जाएगा मन, एक पुरुष से ऊब जाएगा, लेकिन स्त्रियों से नहीं ऊबेगा, पुरुषों से नहीं ऊबेगा।

ऊबते हम भी हैं, लेकिन हमारी ऊब वस्तुओं से बंधी होती है। हमारी ऊब दर्शन नहीं बनती; हमारी ऊब दृष्टि नहीं बनती। एक चीज से ऊबते हैं तो ठीक वैसी ही दूसरी चीज से पकड़ जाते हैं। और यह सिलसिला जारी रहता है।

10:49 pm 0 KB/s 4G 7%
बुढ़ापे में कठिनाई आ जाती है। मौत साफ होने लगती है। जिंदगी अब चेष्टा है। अब प्रयास से जीता है आदमी। अब इंच-इंच सोच कर चलता है कि कहीं मौत न आ जाए। इससे दुविधा पैदा हो जाती है, तनाव बढ़ जाता है भीतर। और पूरे समय चिंता, संताप पकड़ लेता है। वही चित्त को कुरूप कर जाता है।

मौत भी नहीं जान पाती उसको जो भीतर छिपा अमृत है। कारण एक ही है कि भीतर देखने की घटना ही तब घटती है जब बाहर देखने का सारा सिलसिला व्यर्थ हो जाए।

इसे थोड़ा हम समझ लें। व्यर्थ कई बार होता मालूम पड़ता है, फिर भी होता नहीं। ऐसा नहीं है कि आपको व्यर्थ नहीं हो जाता, आपको भी व्यर्थ हो जाता है। एक कार खरीदने का सोचते थे, खरीद ली। जब नहीं खरीदी थी तो रात उसके सपने भी आते थे। जिस दिन कार की डिलीवरी मिलने वाली थी उस दिन रात सो भी नहीं सके थे--रात भर!

ओटेगा वाई गासिप ने लिखा है अपने एक मित्र के बाबत कि उसने एक बहुत खूबसूरत गाड़ी फरारी खरीदी। बड़ी कीमती गाड़ी। और पहले ही दिन लेकर उसे निकला और एक जरा सी खरोंच लग गई।

बच्चा नहीं था मित्र, पचास साल का आदमी था! गैर पढ़ा-लिखा नहीं था, युनिवर्सिटी का प्रोफेसर था! साधारण विषय का प्रोफेसर नहीं था, फिलासफी का प्रोफेसर था!

ओटेगा वाई गासिप ने लिखा है कि मैंने अपने उस मित्र को अपनी मां के कंधे पर सिर रख कर रोते देखा। फरारी में खरोंच लग गई। कार थी कीमती, न मालूम कितने सपने देखे होंगे! जो खरोंच थी, वह भीतर तक चली गई, आत्मा तक प्रवेश कर गई होगी, तभी रोया है। रोते आप सब भी हैं। वह आदमी जरा ईमानदार रहा होगा। खुली सड़क पर, मां के कंधे पर सिर रख कर रोने लगा।

लेकिन कितने दिन चलेगा यह? दो-चार दिन में फरारी पुरानी पड़ जाएगी। महीने, दो महीने में यह आदमी इसी गाड़ी में बैठेगा, इसे पता भी नहीं चलेगा कि किस गाड़ी में बैठा है। इस गाड़ी से ऊब जाएगा, लेकिन गाड़ियों से नहीं ऊबेगा। दूसरी गाड़ी को सपना पकड़ लेगा। सोचेगा एक रॉल्स रायस हो जाए; कुछ और हो जाए। एक स्त्री से ऊब जाएगा मन, एक पुरुष से ऊब जाएगा, लेकिन स्त्रियों से नहीं ऊबेगा, पुरुषों से नहीं



10:41 pm 0 KB/s 4G 9%
है, जब संसार में देखने योग्य कुछ भी नहीं लगता, पाने योग्य कुछ भी नहीं लगता, खोजने योग्य कुछ भी नहीं लगता; जब संसार वासना नहीं रह जाती।

इसीलिए इतना जोर दिया है बुद्ध ने, महावीर ने और उपनिषदों ने कि निर्वासना द्वार है।

वासना है दूर जाने की व्यवस्था, निर्वासना है पास आने का द्वार।

इस सूत्र को अब हम खयाल में ले लें:

‘शरीर के भीतर छिपा है वह अजन्मा नित्य।’

कभी पैदा नहीं हुआ जो--और सदा है, और सदा है, और सदा है। ऐसा जो अजन्मा नित्य है, वह इसी शरीर के भीतर छिपा है, लेकिन शरीर को उसका कोई पता नहीं। शरीर है पृथ्वी का अंग, वह पृथ्वी के भीतर छिपा है, पर पृथ्वी को उसका कोई पता नहीं।

इसी की पुनरुक्ति है, इसी सूत्र की।

अग्नि के भीतर छिपा है, अग्नि को पता नहीं। सब जगह छिपा है; और जहां छिपा है, जिसके भीतर छिपा है, उसे ही पता नहीं। क्यों? क्योंकि जिसके भीतर छिपा है, वह बाहर दौड़ रहा है।

आपने कभी अनुभव किया? शरीर की भीतर की तरफ दौड़ अगर आप अनुभव कर लें, तो समाधि उपलब्ध हो जाए। आपने शरीर की बाहर की तरफ दौड़ अनुभव की है। एक सुंदर काया दिखाई पड़ती है, शरीर दौड़ने लगा, पुलक आ गई; शरीर का रोआं-रोआं भागने लगा। एक सुंदर फूल दिखाई पड़ा, आंखें भागने लगीं। एक सुंदर ध्वनि सुनाई पड़ी, कान भागने लगे।

शरीर भागता है सदा बाहर की तरफ। कभी आपने अनुभव किया कि भीतर की तरफ भी शरीर भागा हो? कभी अनुभव नहीं किया। तो शरीर को पता भी कैसे चले कि कौन भीतर छिपा है! जहां शरीर जाता ही नहीं, जहां शरीर कभी देखता नहीं, सुनता नहीं, खोजता नहीं। शरीर को पता कैसे चले? शरीर अपरिचित रह जाता है उससे ही, जिसका वह शरीर है।

सब दौड़ बाहर की तरफ है, इसलिए भीतर अज्ञान छा जाता है।



तो मिदास इस मुश्किल में पड़ गया; कवियों की बातों में आ गया। वरदान मांग बैठा। पत्नी हो गई सोने की। पानी सोना हो गया। भोजन सोना हो गया। लोग उससे भागने लगे। खुद के बेटे-बेटी दूर रहने लगे। कहीं वह छू न दे! कोई मित्र पास न आए कि कहीं छू न दे। मिदास अकेला हो गया। भरा-पूरा जगत था उसका; सम्राट था; अकेला हो गया। वजीर पास न आए। सदा एक फासला रखें, कि बचने का उपाय रहे, भागने की सुविधा रहे। अगर वह छू ही दे! और मिदास भूखा मरने लगा। पानी मिले न, भोजन मिले न। वह चिल्लाने लगा, चीखने लगा कि हे भगवान! वापस कर दे, वही ठीक था। यह तो वरदान अभिशाप हो गया।

मिदास की यह हालत हो गई, सब चीजें सोना होने लगीं; तब हमारी क्या हालत होगी, जब जो भी छूते हैं मिट्टी हो जाता है! पत्नी दूर थी तो सोने की मालूम पड़ती थी। जिस दिन विवाह किया, उसी दिन मिट्टी की होनी शुरू हो गई। दो-चार साल बाद मिट्टी रह जाती है, कुछ नहीं है उसमें। सब चीजें मिट्टी हो जाती हैं। जो भी छुएं मिट्टी हो जाता है।

जिस दिन आपको यह अनुभव होता है कि सब दौड़ व्यर्थ है, उस दिन आप उसी जगह खड़े रह जाते हैं जहां परमात्मा है। जिस दिन आपको पता चलता है कि दौड़ कर कुछ भी नहीं मिला, कुछ भी नहीं पाया, उस दिन दौड़ते नहीं हैं। और न दौड़ने की वजह से वह दिखाई पड़ जाता है, जो दौड़ने की वजह से दिखाई नहीं पड़ रहा था। दौड़ने की धुन थी सवार तो दूर की चीजें दिखाई पड़ती थीं। दौड़ना व्यर्थ हो जाए तो दूर से आंख पास लौट आती है।



10:34 pm 1 KB/s 11%
और अमीर के बीच अब कोई बहुत बुनियादी फासला नहीं है। अमीर का मजा किरकिरा हुआ जा रहा है। अमीर परेशान है। वह कुछ और तरकीबें खोज रहा है, जो वही कर सके और सभी लोग न कर पाएं।

परमात्मा में ही हम हैं, इसलिए परमात्मा में कोई अहंकार के लिए बुलावा नहीं है; कोई निमंत्रण नहीं है; कोई चोट, कोई चुनौती, कोई चैलेंज नहीं है। फिर परमात्मा की अभीप्सा कैसे पैदा होती?

संसार की अभीप्सा पैदा होती है दूरी से, बुलावे से, चुनौती से; परमात्मा की अभीप्सा होती है संसार की असफलता से।

इसे खयाल कर लें। जब आप सब तरफ दौड़ चुकते हैं और सब तरफ हार जाते हैं; सब पा लेते हैं और सब व्यर्थ हो जाता है; खोज पूरी हो जाती है और पूरे होते ही नकार हो जाता है; सब शून्य हो जाता है। हाथ में आते ही सब चीजें मिट्टी सिद्ध होती हैं, दूर सब सोना मालूम पड़ती हैं। जितनी हो दूरी उतना स्वर्ण शुद्ध मालूम पड़ता है। जैसे-जैसे पास आता है, अशुद्ध होने लगता है। और पास आता है, मिट्टी होने लगता है।

यूनानी कथा मिदास की है। कथा में बड़ा व्यंग्य है। कथा है कि मिदास ने ऐसी सिद्धि पा ली, ऐसा वरदान पा लिया कि जो भी छुए, सोना हो जाए। हम सब मिदास से उलटे हैं; जो भी छुएं, मिट्टी हो जाए! लेकिन बड़ा मजा है। मिदास भी मुश्किल में पड़ गया था तो हमारी मुश्किल का तो क्या अंत!

मिदास जो भी छूता, सोना हो जाता। उसने अपनी पत्नी को छुआ, वह सोना हो गई! उसने भोजन छुआ, वह सोना हो गया! उसने पानी पीने को उठाया, ओंठ तक पानी गया और सोना हो गया! मरा मिदास! बड़ी मुश्किल में पड़ गया, क्योंकि सोने से प्यास नहीं बुझती। और कितनी ही लोग बातें करें--कनक जैसा शरीर, स्वर्ण जैसा शरीर; सोने के शरीर से कोई तृप्ति होने वाली नहीं। कोई कितना ही कहे कि मेरी प्रेयसी की जो काया है, कनक-काया है, स्वर्ण-काया है; लेकिन हो जाए तब पता चले! तब सिर धुनें बैठ कर कि यह क्या हो गया! इससे तो वही काया बेहतर थी।

तो मिदास इस मुश्किल में पड़ गया; कवियों की बातों में आ गया। वरदान मांग बैठा। पत्नी हो गई सोने की। पानी सोना हो गया। भोजन सोना हो गया। लोग उससे भागने लगे। खुद के बेटे-बेटी दूर रहने लगे।

कभी न बूझ सके। कोई फिर पाया न आया कि नहीं कर रहे। मिदास



का खेल हैं। फासला बिलकुल नहीं है। इसलिए स्मरण नहीं आता। इसलिए स्मरण असंभव हो गया है। इसलिए संसार तो बहुत दिखाई पड़ता है, सत्य बिलकुल दिखाई नहीं पड़ता। संसार दूर है; जगह है दोनों के बीच में; इसलिए संसार की वासना जगती है।

वासना का अर्थ क्या है? वासना का अर्थ है, जिससे हमें दूरी मालूम पड़ती हो, उससे दूरी मिटाने की कोशिश। वासना का अर्थ है, जिससे हमें दूरी मालूम पड़ती हो, उससे दूरी मिटाने की कोशिश।

इसलिए परमात्मा की कोई वासना नहीं है, क्योंकि दूरी ही मालूम नहीं पड़ती। या कभी कोई परमात्मा को खोजता भी मालूम पड़ता है तो झूठी वासना मालूम पड़ती है। परमात्मा के नाम से कुछ और खोजता मालूम पड़ता है। नाम परमात्मा का लेता है, चाहता कुछ और है। शक्ति चाहता हो, सिद्धि चाहता हो, धन चाहता हो, पद चाहता हो--कुछ और!

एक मित्र मुझे आकर कहते थे कि जब से आपके शिविर में साधना में लीन होने लगे हैं, बड़ा लाभ हो रहा है! मैंने पूछा, क्या लाभ हो रहा है? तो उन्होंने कहा, अभी आध्यात्मिक तो नहीं हो रहा, लेकिन आर्थिक शुरू हो गया है।

ठीक! आध्यात्मिक की इतनी जल्दी भी क्या है! टाला जा सकता है, स्थगित किया जा सकता है। आर्थिक तत्काल है।

हम खोजते कुछ और हैं, नाम कुछ और देते हैं। जहां-जहां हमने परमात्मा लिख छोड़ा है, अगर जरा हम लेबल उखाड़ें, तो भीतर कुछ और पाया जाएगा। हम कुछ और चाहते हैं। जो आदमी कुछ और चाहता है परमात्मा के नाम से, वह आदमी उससे ज्यादा बेईमान है जो सीधा संसार चाहता है। कम से कम एक आनेस्टी, एक ईमानदारी है, एक प्रामाणिकता है।

एक आदमी कहता है, मैं धन चाहता हूं; एक आदमी कहता है, मैं कामवासना चाहता हूं; एक आदमी कहता है, मुझे पद चाहिए, अहंकार की तृप्ति चाहिए। एक आदमी कहता है, मैं तो परमात्मा चाहता हूं। लेकिन परमात्मा की चाह में मन उसका कुछ ऐसा ही है कि एक दिन





OSHO®

Contact Us



Welcome Rajesh | [My Account](#) | [Logout](#)

≡ MENU

*I am not going to give you a destination.
I can only give you a direction -
awake, throbbing with life,
unknown, always surprising, unpredictable.
I'm not going to give you a map.
I can give you only a great passion to discover.
Osho*

Osho

"Never born, never died.
Only visited this planet...."





सकता; क्योंकि किनारा बनता है किसी ओर चीज से। नदी का किनारा बनता है, सागर का किनारा बनता है, किसी ओर चीज से। परमात्मा के अतिरिक्त कुछ और नहीं है, जिससे किनारा बन सके। परमात्मा का अर्थ ही इतना है कि जिसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

परमात्मा का मतलब कोई आकाश में बैठे हुए किसी व्यक्ति का नहीं है, जो जगत को चला रहा हो। ये तो बच्चों की कहानियां हैं। परमात्मा से अर्थ है उस तत्व का, जिसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। यह उसकी वैज्ञानिक परिभाषा हुई। परमात्मा का अर्थ है: समस्त, सर्व, सब कुछ, जो भी है।

जो भी है उसका कोई किनारा नहीं हो सकता; क्योंकि उसके अतिरिक्त कुछ किनारा बनने को बचता नहीं है। इसलिए परमात्मा मझधार है। वहां कोई किनारा नहीं है। जो डूबने को राजी है, वह उबर जाता है; जो उबरने की कोशिश करता है, बुरी तरह डूबता है। कोई किनारा हो तो पता भी चल जाए। इसीलिए हमें पता नहीं चला है। उसी में हम हैं। जिसे हम खोजते हैं, उसी में हम हैं। जिसे हम पुकारते हैं, उसे पुकारने की जरा भी जरूरत नहीं है; क्योंकि इतनी भी दूरी नहीं है कि हमारी आवाज हमें जोर से पुकारनी पड़े।

इसलिए कबीर ने कहा है कि क्या तुम्हारा खुदा बहरा हो गया है जो तुम इतनी जोर से अजान पढ़ते हो? क्या तुम्हारा ईश्वर बहरा हो गया है जो तुम इतनी जोर से पुकारते हो? इतने पास है कि आवाज देने की भी तो जरूरत नहीं! अगर मौन भी कुछ भीतर होगा तो वह भी सुन लिया जाएगा, इतने पास है!

दूसरे को पुकारना हो तो आवाज देनी पड़ती है, खुद को पुकारने के लिए आवाज देने की भी क्या जरूरत है! दूसरे का तो तब ही सुनाई पड़ता है जब शब्द ध्वनित हो, स्वयं का तो मौन भी सुनाई पड़ता है।



तो उनके कारण बदल जाते हैं। कोई कहता है, सुंदर हो; कोई कहता है, असुंदर हो; कोई कहता है, भले हो, कोई कहता है, बुरे हो—यह सब इकट्ठा होता चला जाता है। और इन विपरीत मतों के आधार पर तुम अपनी आत्मा का निर्माण कर लेते हो। तुम ऐसी बैलगाड़ी पर सवार हो जिसमें सब तरफ बैल जुते हैं, जो सब दिशाओं में एक साथ जा रही है तुम्हारे अस्थिपंजर ढीले हुए जा रहे हैं। तुम सिर्फ घसिटते हो, कहीं पहुंचते नहीं—पहुंच सकते नहीं!

***अष्टावक्र महागीता

***ओशो





पत्नी ने कहा, इतने प्रसन्न क्या हो रहे हो?

उसने कहा, अगर मुझे पता होता कि मरने पर इतनी भीड़ आयेगी तो मैं पहले कभी का मर गया होता। तो हम पहले ही न मर गये होते, इतने दिन क्यों राह देखते! इतनी भीड़ मरने पर आये इसी के लिए तो जीये!

भीड़ के लिए लोग जीते हैं, भीड़ के लिए लोग मरते हैं।

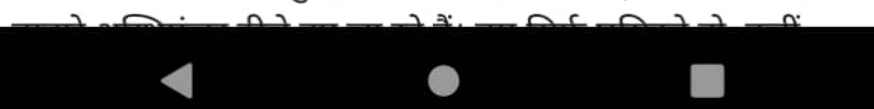
दूसरे क्या कहते हैं, यह इतना मूल्यवान हो गया है कि तुम पूछते ही नहीं कि तुम कौन हो। दूसरे क्या कहते हैं, उन्हीं की कतरन छांट-छांटकर इकट्ठी अपनी तस्वीर बना लेते हो। वह तस्वीर बड़ी डांवांडोल रहती है, क्योंकि लोगों के मन बदलते रहते हैं। और फिर लोगों के मन ही नहीं बदलते रहते, लोगों के कारण भी बदलते रहते हैं।

कोई आकर तुमसे कह गया कि आप बड़े साधु-पुरुष हैं, उसका कुछ कारण है-खुशामद कर गया। साधु-पुरुष तुम्हें मानता कौन है! अपने को छोड़कर इस संसार में कोई किसी को साधु-पुरुष नहीं मानता।

तुम अपनी ही सोचो न! तुम अपने को छोड़कर किसको साधु-पुरुष मानते हो? कभी-कभी कहना पड़ता है। जरूरतें हैं, जिंदगी है, अड़चनें हैं-झूठे को सच्चा कहना पड़ता है; दुर्जन को सज्जन कहना पड़ता है, कुरूप को सुंदर की तरह प्रशंसा करनी पड़ती है, स्तुति करनी पड़ती है, खुशामद करनी पड़ती है। खुशामद इसीलिए तो इतनी बहुमूल्य है।

खुशामद के चक्कर में लोग क्यों आ जाते हैं? मूढ़ से मूढ़ आदमी से भी कहो कि तुम महाबुद्धिमान हो तो वह भी इनकार नहीं करता क्योंकि उसको अपना तो कुछ पता नहीं है, तुम जो कहते हो वही सुनता है, तुम जो कहते हो वही हो जाता है।

तो उनके कारण बदल जाते हैं। कोई कहता है, सुंदर हो; कोई कहता है, असुंदर हो; कोई कहता है, भले हो, कोई कहता है, बुरे हो-यह सब इकट्ठा होता चला जाता है। और इन विपरीत मतों के आधार पर तुम अपनी आत्मा का निर्माण कर लेते हो। तुम ऐसी बैलगाड़ी पर सवार हो जिसमें सब तरफ बैल जुते हैं, जो सब दिशाओं में एक साथ जा रही है



**ओशो रजनीश**

Raj Gupta · 16h · 🌐



गुरजिएफ अपने शिष्यों से कहता था. अगर तुम्हें आत्मा को जानना हो तो तुम्हें लोगों को छोड़ना होगा। ठीक कहता था। सदियों से यही सदगुरुओं ने कहा है। अगर तुम्हें स्वयं को पहचानना हो तो तुम्हें दूसरों की आंखों में देखना बंद कर देना होगा।

मेरे देखे, बहुत—से खोजी, सत्य के अन्वेषक समाज को छोड़ कर चले गये—उसका कारण यह नहीं था कि समाज में रह कर सत्य को पाना असंभव है, उसका कारण इतना ही था कि समाज में रह कर स्वयं की ठीक—ठीक छवि जाननी बहुत कठिन है। यहां लोग खबर दिये ही चले जाते हैं कि तुम कौन हो। तुम पूछो न पूछो, सब तरफ से झलकें आती ही रहती हैं कि तुम कौन हो। और हम धीरे—धीरे इन्हीं झलकों के लिए जीने लगते हैं।

मैंने सुना, एक राजनेता मरा। उसकी पत्नी दो वर्ष पहले मर गयी थी। जैसे ही राजनेता मरा, उसकी पत्नी ने उस दूसरे लोक के द्वार पर उसका स्वागत किया। लेकिन राजनेता ने कहा. अभी मैं भीतर न आऊंगा। जरा मुझे मेरी अर्थी के साथ राजघाट तक हो आने दो।

पत्नी ने कहा अब क्या सार है? वहां तो देह पड़ी रह गयी, मिट्टी है।

उसने कहा मिट्टी नहीं; इतना तो देख लेने दो, कितने लोग विदा करने आये!

राजनेता और उसकी पत्नी भी अर्थी के साथ—साथ—किसी को तो दिखाई न पड़ते थे, पर उनको अर्थी दिखाई पड़ती थी—चले.। बड़ी भीड़ थी! अखबारनवीस थे, फोटोग्राफर थे। झंडे झुकाए गये थे। फूल सजाये गये थे। मिलिट्री के ट्रक पर अर्थी रखी थी। बड़ा सम्मान दिया जा रहा था। तोपें आगे—पीछे थीं। सैनिक चल रहे थे। गदगद हो उठा राजनेता।

पत्नी ने कहा, इतने प्रसन्न क्या हो रहे हो?

उसने कहा. अगर मैंने मरा तो मैं कि मरने पर स्वयं भीतर आगेगी तो मैं

मालकियत म्यूचुअल होती है,
पारस्परिक होती है।
आप किसी को गुलाम नहीं बना सकते
बिना उसके गुलाम बने।
anamcara Ramesh
यह असंभव है।



जब भी आप किसी को गुलाम बनाते हैं,
तो आपको पता हो, न पता हो,
आप उसके गुलाम बन जाते हैं।
गुलामी पारस्परिक है।

आचार्य श्री रजनीश
गीता दर्शन अ.6.अपरिग्रही चित्त प्र.64/7



ओशो जैसी चेतना का जन्म सैकड़ों वर्षों के बाद होता है। बुद्ध के बाद ओशो ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति है, जिन्होंने चेतना के गौरीशंकर को छू लिया है। पूरे ढाई हजार वर्षों बाद कोई ऐसा व्यक्ति हुआ, जिसे बुद्ध के समकक्ष रखा जा सकता है, लेकिन फिर भी ओशो में बुद्ध से कुछ अलग ही था। ओशो में ओशोपन था, जो उन्हें दुनिया के तमाम बुद्ध पुरुषों से अलग करता है



तुम भटकते रहे अपने कारण। नहीं, इसको परमात्मा के कारण मत कहो। परमात्मा के कारण कोई कभी भटका है?

और अब तुम फिर पूछते हो कि 'अब आगे मैं क्या करूँ, यह बताने की अनुकंपा करें।'

अनुकंपा! मैं तुम्हारा —दुश्मन नहीं हूँ कि अब तुम्हें और कुछ बताऊँ कि अब तुम यह करो! मैं तुमसे कहूँगा. बहुत हो गया करना, अब 'न—करने' में विराजो। अब न—करने के सिंहासन पर बैठो।

अब साक्षी बनो। अब देखो। कर्ता नहीं—द्रष्टा। अब तो सिर्फ बैठो, जो परमात्मा दिखाये, देखो; जो कराये, कर लो—लेकिन कर्ता मत बनो। भूख लगाये तो भोजन खोज लो। प्यास लगाये तो सरोवर की तलाश कर लो। नींद लगाये तो सो जाओ। नींद तोड़ दे तो उठ आओ। मगर साक्षी रहो। सारा कर्तापन उसी पर छोड़ दो।

अष्टावक्र का सार—सूत्र यही है कि तुम देखने में तल्लीन हो जाओ, द्रष्टा हो जाओ। भूख लगे तो देखो। ऐसा मत कहो, मुझे भूख लगी है। कहो, परमात्मा को भूख लगी। उसी को लगती है! नींद लगे तो कहो उसको नींद आने लगी, वह मेरे भीतर झपकने लगा, अब सो जाना चाहिए, मैं बाधा न दूँ। प्यास लगे, पानी पी लो। जब तृप्ति हो तो पूछ लो उससे कि 'तृप्त हुए न? तुम्हारा कंठ अब जल तो नहीं रहा प्यास से?' मगर तुम देखने वाले ही रहो। बस, इतना सध जाये तो सब सध गया। इक साधे, सब सधै। तुम हजार—हजार काम करते रहो, कुछ भी न होगा। तुम एक छोटी—सी बात साध लो. साक्षी हो जाओ।

ओशौ

**रजनीशपुरम**

Munabai Makvana · 49m · 🌐



कबीर तो मरते दम तक काशी में थे। आखिरी घड़ी बीमार जब पड़ गये, अपने बेटे से कहा कि अब मुझे यहां से हटा; मुझे मगहर ले चल। अब मगहर! कहावत है काशी में, काशी के लोगों ने ही गढ़ी होगी कि मगहर में जो मरता है, वह नर्क जाता है या गधा होता है, और काशी में जो मरता है—काशीकरवट—वह तो सीधा स्वर्ग जाता है। कबीर उठ कर खड़े हो गये अपने बिस्तर से और कहा कि मुझे मगहर ले चल। लड़के ने कहा, बुढ़ापे में आपका दिमाग खराब हो रहा है? मगहर से तो लोग मरने काशी आते हैं। मगहर में मरें तो गधे हो जाते हैं। तो कबीर ने कहा, वह गधा हो जाना मुझे पसंद है, लेकिन काशी का ऋण नहीं लूंगा। यह अहसान नहीं लूंगा। अगर अपने कारण स्वर्ग पहुंचता हूं तो ठीक है। काशी के कारण स्वर्ग गया, यह भी कोई बात हुई, किस मुंह से भगवान के सामने खड़ा होऊंगा? वे कहेंगे, काशी में मरे कबीर, इसलिए स्वर्ग आ गये, मगहर में मरते तो गधा होते। मैं तो मगहर में ही मरूंगा। अगर मगहर में मर कर स्वर्ग पहुंचूं तो ज्ञान से प्रवेश तो होगा। यह कह तो सकूंगा, अपने कारण आया, काशी के कारण नहीं आया।

तुम कहां खोजते फिर रहे हो? तुम कारण खोज रहे हो कि किसी बहाने, किसी पीछे के दरवाजे से परमात्मा मिल जाये। मैं तुमसे यह कहता हूं तीर्थयात्रा पर तुम इसीलिए जाते हो कि तुम झुकना नहीं चाहते, तुम बदगी करना नहीं चाहते। तुम्हें बड़ी उल्टी बात लगेगी। क्योंकि तुम तो सोचते हो बंदगी के लिए तीर्थयात्रा कर रहे हैं। बंदगी के लिए कहीं जाने की भी जरूरत है? तुम जहा हो वहीं झुक जाओ। तुम्हें अब तक समझाया गया है कि वहां जाओ जहां परमात्मा है, वहां झुकोगे तो मोक्ष मिलेगा। मैं तुमसे कहता हूं : तुम जहां झुक जाओ वहां परमात्मा के चरण मौजूद हो जाते हैं। तुम्हारे झुकने में ही—वही कला है—तुम्हारे झुकने में ही परमात्मा के चरण मौजूद हो जाते हैं। तुम झुके नहीं कि परमात्मा मौजूद हुआ नहीं। तुम झुके नहीं कि परमात्मा तुम्हारे भीतर उंडला नहीं।

तुम भटकते रहे अपने कारण। नहीं, इसको परमात्मा के कारण मत कहो। परमात्मा के कारण कोई कभी भटका है?

जो व्यक्ति वास्तव में ध्यानी है
वह खेलपूर्ण होगा; जीवन उसके
लिए मस्ती है, जीवन एक लीला,
एक खेल है। वह जीवन का
परम् आनंद लेता है वह गंभीर
नहीं होता विश्रामपूर्ण होता है।



इस जगत के सारे प्यार, सारी प्रीतिया, सारे लगाव, सारी आसक्तिया अनुभव करना जरूरी हैं। अनुभव के सिवाय और कोई मुक्ति नहीं है। मन की पीड़ा से गुजरना ही होगा। मन के विषाद को सहना ही होगा। मन की हार को अनुभव करना ही होगा। कोई सस्ता रास्ता नहीं है। और भगोड़े सस्ता रास्ता खोज लेते हैं। वे अनुभव से वंचित रह जाएंगे। और जो अनुभव से वंचित रह जाएगा, वह मुक्त नहीं हो सकेगा। उसके भीतर वासना दबी ही रह जाएगी। और दबी हुई वासना और भी खतरनाक है; क्योंकि उभरेगी, बार—बार उभरेगी, फिर—फिर उभरेगी। तुम दबाओगे और उभरेगी। इधर से दबाओगे, उधर से उभरेगी। एक दरवाजा बंद करोगे, दूसरा दरवाजा खोलेगी। और हर दरवाजा पहले दरवाजे से ज्यादा सूक्ष्म होगा। अच्छा यही है कि वासना को उसके सहज प्राकृतिक रूप में जान लिया जाए, पहचान लिया जाए। 🔥 ओशो 🔥



संन्यास इस बात का बोध है कि न तो दूसरे से कुछ मिला है, न मिल सकता है।



‘क्या **फर्क** पड़ता है, हमारे पास कितने
लाख, कितने **करोड़**, कितने घर,
कितनी गाड़िया है..!! खाना तो बस
दो ही **रोटी** है..!! जीना तो बस
एक ज़िन्दगी ही है, **फर्क** इस बात
से पड़ता है कितने पल हमने
खुशी से बिताए, कितने लोग हमारी
वजह से **खुशी** से जीए..!!

Years of meditation 🧘 wasted in a sec.



369
consciousness

ॐ श्री परमात्मने नमः



दुःखी प्राणी अभागे नहीं होते। सच तो यह है कि अभागे वही हैं, जो सुखी हैं। क्योंकि दुःखी को आनन्दधन भगवान् मिलते हैं, सुख को भोग। गहराई से देखिए, दुःखी अर्जुन ने कृष्ण को लिया और सुखी दुर्योधन ने कृष्ण की सामग्री; किंतु अंत में विजय अर्जुन की हुई। हाँ, दुःखी उसी समय तक अभागा है, जब तक संसार की ओर देखता है। संसार से सच्ची निराशा होते ही दुःखहारी हरि दुःख अवश्य हर लेते हैं, ऐसा जीवन की अनेक घटनाओं से अनुभव हुआ है।

स्वामीजी श्री शरणानन्दजी महाराजजी



सत्यं एव जयते नानृतम्।

निश्चित ही सत्य जीतता है, असत्य नहीं।

मगर सत्य लाओगे कहाँ से?

ध्यान के अतिरिक्त न कभी सत्य आया है, न आ सकता है।

शास्त्र से नहीं आता, सिद्धांतों से नहीं आता,

सिर्फ अपने भीतर परम मौन, पूर्ण शून्यता में उतरता है।

निर्विचार अवस्था में सत्य का बोध होता है।

लेकिन लोग अजीब हैं!

लोग सत्य के संबंध में विचार करने में लगे हैं कि सत्य क्या है!

युं वे दर्शन शास्त्र में भटक जाते हैं।

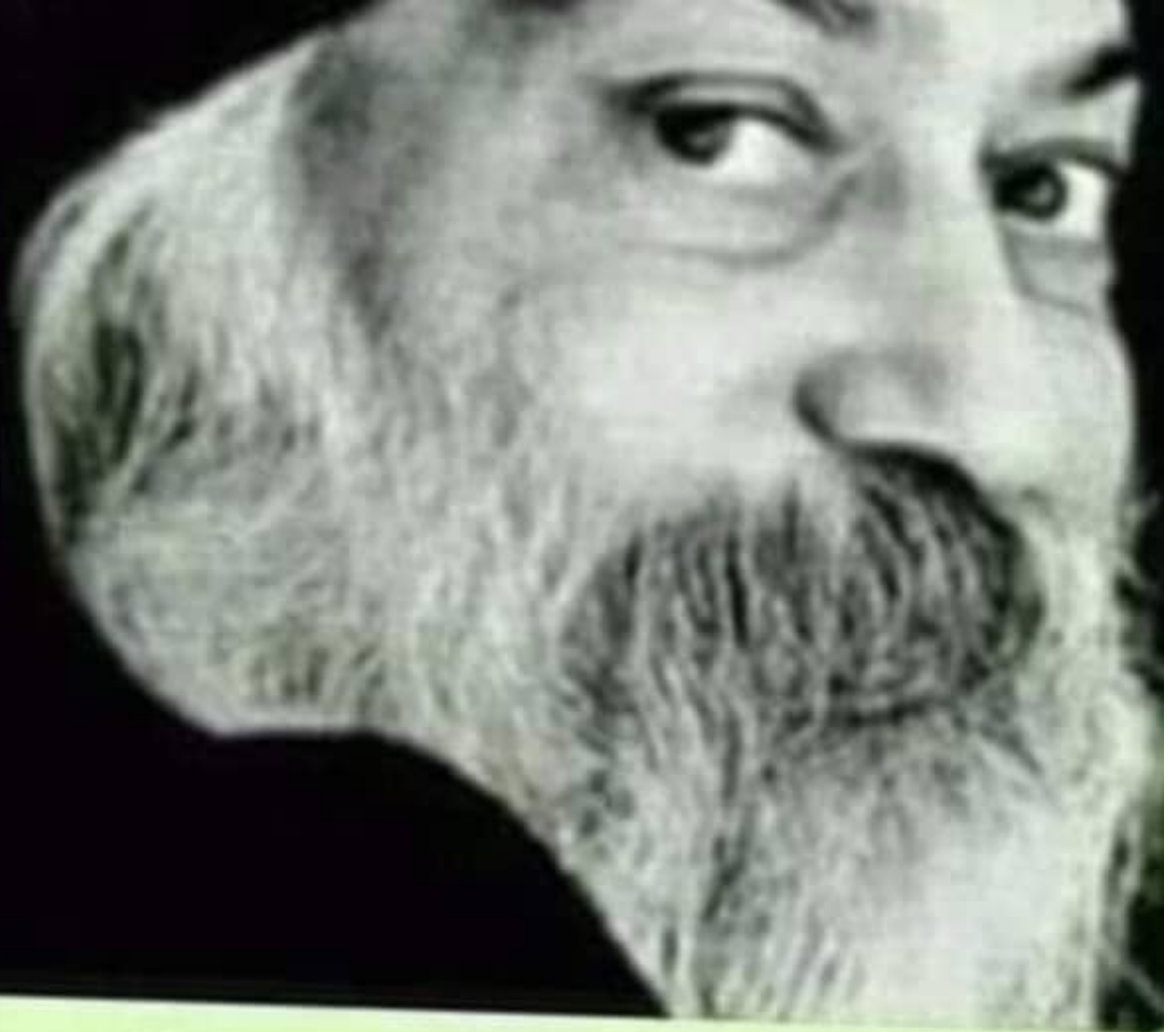
दीपक बारा नाम का, ओशो



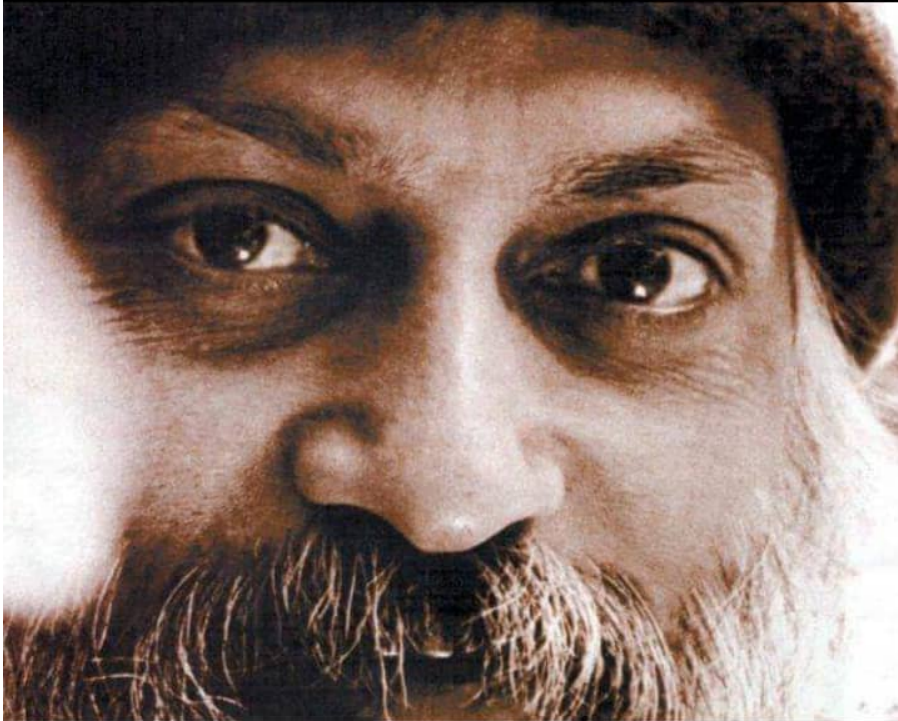
एकाग्रता का अर्थ होता है: सब तरफ से ध्यान को खींच लो और एक जगह लगा दो। एकाग्रता का अर्थ होता है: चित्त को संकीर्ण कर लो। ध्यान का अर्थ होता है: चित्त को विस्तीर्ण करो! ध्यान का अर्थ होता है: सब द्वार-दरवाजे खोल दो। कोयल ने गीत गाया है, वह भी आए; और यह ट्रेन की आवाज, वह भी समाहित हो; और मैं जो बोल रहा हूं, वह भी। इन सब में विरोध करने की कोई जरूरत नहीं है। ये सब एक साथ आत्मसात कर लेने हैं।
ओशो

भगवन शिव ने पावेतांजी से कहा :- "एकांत स्थान पर सुखासन में बैठ जाँएँ. मन में ईश्वर का स्मरण करते रहें. अब तेजी से सांस अन्दर खींचकर फिर तेजी से पूरी सांस बाहर छोड़कर रोक लें. श्वास इतनी जोर से बाहर छोड़ें कि इसकी आवाज पास बैठे व्यक्ति को भी सुनाई दे. इस प्रकार सांस बाहर छोड़ने से वह बहुत देर तक बाहर रुकी रहती है. उस समय श्वास रुकने से मन भी रुक जाता है और आँखों की पुतलियाँ भी रुक जाती हैं. साथ ही आज्ञा चक्र पर दबाव पड़ता है और वह खुल जाता है. श्वास व मन के रुकने से अपने आप ही ध्यान होने लगता है और आत्मा का प्रकाश दिखाई देने लगता है. यह विधि शीघ्र ही आज्ञा चक्र को जाग्रत कर देती है.

भगवन शिव ने पार्वतीजी से कहा :- "एकांत स्थान पर सुखासन में बैठ जाँएँ. मन में ईश्वर का स्मरण करते रहें. अब तेजी से सांस अन्दर खींचकर फिर तेजी से पूरी सांस बाहर छोड़कर रोक लें. श्वास इतनी जोर से बाहर छोड़ें कि इसकी आवाज पास बैठे व्यक्ति को भी सुनाई दे. इस प्रकार सांस बाहर छोड़ने से वह बहुत देर तक बाहर रुकी रहती है. उस समय श्वास रुकने से मन भी रुक जाता है और आँखों की पुतलियाँ भी रुक जाती हैं. साथ ही आज्ञा चक्र पर दबाव पड़ता है और वह खुल जाता है. श्वास व मन के रुकने से अपने आप ही ध्यान होने लगता है और आत्मा का प्रकाश दिखाई देने लगता है. यह विधि शीघ्र ही आज्ञा चक्र को जाग्रत कर देती है.



अगर तुमने सच में मुझे हृदय से सुना। तो मेरी आँखें सदा तुम पर रहेंगी। और मैं तुम्हारा आकाश हो जाऊँगा। तुम्हें घेरे हुए चलूँगा। तुम जहाँ भी जाओगे मुझे अपने साथ पाओगे। और जो भी सहायता आवश्यक होगी तत्क्षण तुम तक पहुँच जाएगी। ये मेरा वचन है -







आपके भीतर बिराजमान
वह परम् तत्त्व है
जो जानता है कि कब,
क्या करना है ।
अपने अहकारं को
त्याग कर उस, परमात्मा
के भरोसे हो जाये



बोले बिना रहा नहीं जाता।
अगर बिना बोले रह जाओ तो
बहुत कुछ हो।
अगर मौन रह जाओ तो
महान घट सकता है।
शब्द से सत्य के घटने में
कोई सहारा नहीं मिलता
शून्य से ही सहारा
मिलता है।

anandarama Ramdas

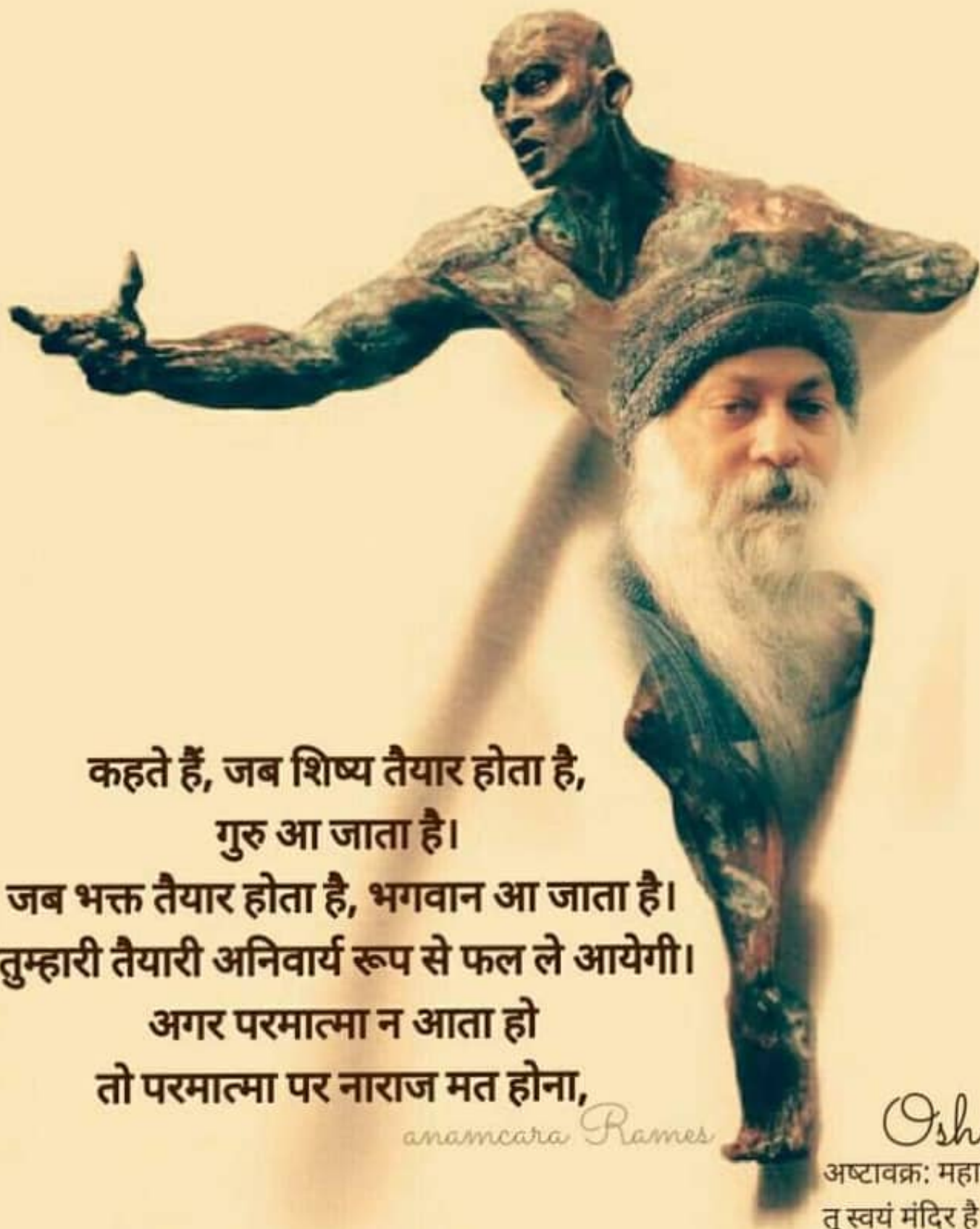


OSHO

अष्टावक्र महागीता--प्रवचन
ओशो



हमारे जीवन में समस्याएं
बिना किसी कारण के नहीं
आतीं, उन का आना एक
इसारा हैं, कि हमें अपने
जीवन में कुछ बदलना है!!!



कहते हैं, जब शिष्य तैयार होता है,
गुरु आ जाता है।

जब भक्त तैयार होता है, भगवान आ जाता है।
तुम्हारी तैयारी अनिवार्य रूप से फल ले आयेगी।

अगर परमात्मा न आता हो
तो परमात्मा पर नाराज मत होना,

anamcara Rames

Osho

अष्टावक्र: महागीता-
तू स्वयं मंदिर है

बुद्ध पुरुषों से संकेत लेना, सत्य मत लेना। सत्य तो कोई किसी को दे नहीं सकता। उनसे मार्ग लेना, मंजिल मत ले लेना। मंजिल तो कोई किसी को दे नहीं सकता। वे इशारा करें, उनके इशारे पर चलना, लेकिन चलना तुम्हीं। यह मत सोचना कि बुद्ध पुरुष तुम्हारे लिए चलें, और तुम उनकी आंखों से देख लोगे और उनके पहुंचने में तुम पहुंच जाओगे।



ओशोनिर्वाणसमूह



एक ही पुण्य है इस जगत में
और वह पुण्य है:
यह जानना कि मैं कर्ता नहीं हूं,
परमात्मा कर्ता है।
और एक ही पाप है इस जगत में-
यह जानना कि मैंने किया
और परमात्मा कर्ता नहीं है,
कर्ता मैं हूं।



सत्य को देखने की क्षमता धूमिल हो जाती है।



9

1 comment



Like



Comment



Send



ॐ 🙏 अपरोक्षानुभूति 🙏 ॐ

Prit Pal Goyal · 1d · 🌐



एक राजा जंगल में प्यास से व्याकुल हुआ तो एक वृक्ष की डाली से पानी की बून्द गिर रही थी। राजा ने पत्तों का दोना बनाकर उन बूंदों से दोने को भरने लगा, जब दोना भर गया तो एक तोते ने दोने को गिरा दिया, राजा ने दूसरी बार दोना भरा तो फिर तोते ने गिरा दिया पर तीसरी बार राजा ने दोना गिराने पर तोते को चाबुक से मार दिया। राजा डाली के पास गया, जहां से पानी टपक रहा था तो राजा के पाँवों की जमीन खिसक गई, वहाँ एक भयंकर अजगर सोया हुआ था और उस अजगर के मुँह से लार टपक रही थी, राजा जिसको पानी समझ रहा था वह अजगर की जहरीली लार थी, राजा के मन में पश्चोत्ताप का समन्दर उठने लगता है, हे प्रभु, मैंने यह क्या कर दिया जो पक्षी बार बार मुझे जहर पीने से बचा रहा था, भ्रम वश मैंने उसे ही मार दिया।

संत यही बार बार समझाते हैं के आपके साथ जो होता है उसमे हमारा भला छुपा होता है लेकिन हम संतों के वचन और सत्संग ध्यान से नहीं सुनते।

~PPG~

प्रतीक्षा करो!

प्रार्थना करो!

आशा को जगाए रखो!

आंख खोल कर पुकारते रहो!

अंधेरा भी उसका है,

प्रकाश भी उसका है!

मृत्यु भी उसकी,

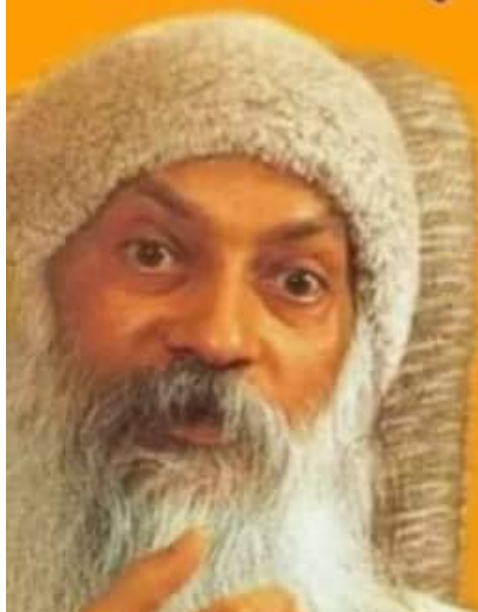
जीवन भी उसका।

इसलिए

सब जगह

उसे पहचानते रहो।

जो श्रेष्ठता किसी बाह्य वस्तु पर
निर्भर करती हो, वह उस वस्तु की
श्रेष्ठता होगी, व्यक्ति की नहीं।
अगर मेरे पास धन है, इसलिए श्रेष्ठ
हूं, तो वह श्रेष्ठता धन की है, मेरी
नहीं। मेरे पास पद है; वह श्रेष्ठता
पद की है, मेरी नहीं। मेरे पास
ऐसा कुछ भी हो जिसके कारण मैं
श्रेष्ठ हूं, तो वह मेरी श्रेष्ठता नहीं है।
अकारण ही अगर मैं श्रेष्ठ हूं, तो ही
मैं श्रेष्ठ हूं।



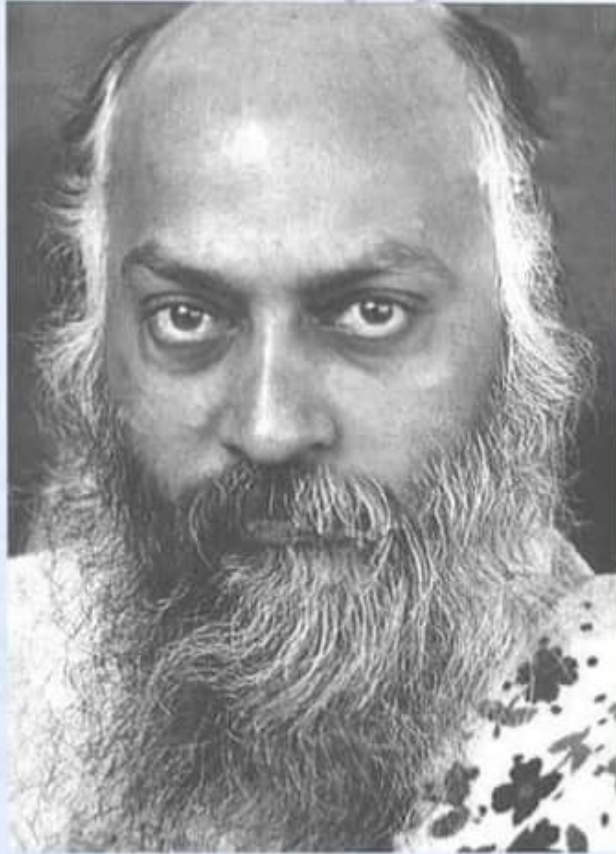
OSHO, ताओ
उपनिषाद--प्रवचन--021

OSHO SUTRA

अपनी आंख का आंसू भी यहां अपना नहीं होता,
और अपना क्या हो सकता है?

जिनको हम अपना कहते हैं, वो भी अपने नहीं हैं।

अपने अतिरिक्त अपना यहां कुछ भी नहीं।
स्वयं के अतिरिक्त और कोई संपत्ति नहीं है।



**जो जितनी जल्दी जाग जाए
उतना समझदार है।**

Osho
आचार्य श्री रजनीश

आचार्य श्री रजनीश
एस धम्मो सनंतनो--(प्र--03)



मैं न कहूंगा। मैं कोई आदेश न दूंगा।
मैं तो सिर्फ बोध दे सकता हूँ।



ओशो

ABC...

और मैं चाहूंगा कि संन्यासी अनुकरण न
करे। समझे, सुने, मनन करे, लेकिन जीए अपनी
निजता से। इसलिए मैं अपने संन्यासी को कोई
आचरण के नियम नहीं दे रहा हूँ, सिर्फ अंतस को
जगाने की प्रक्रिया दे रहा हूँ। फिर जागे हुए अंतस से
तुम्हें जैसा ठीक लगे, तुम जीना।

प्रेम-पंथ ऐसो कठिन

जो खुद का मालिक न बन
सकेगा

वो सदा दूसरों का गुलाम
रहेगा।



एक दिन पाने की विकलता और न पाने
का दुःख दोनों अर्थहीन हो जाते हैं।





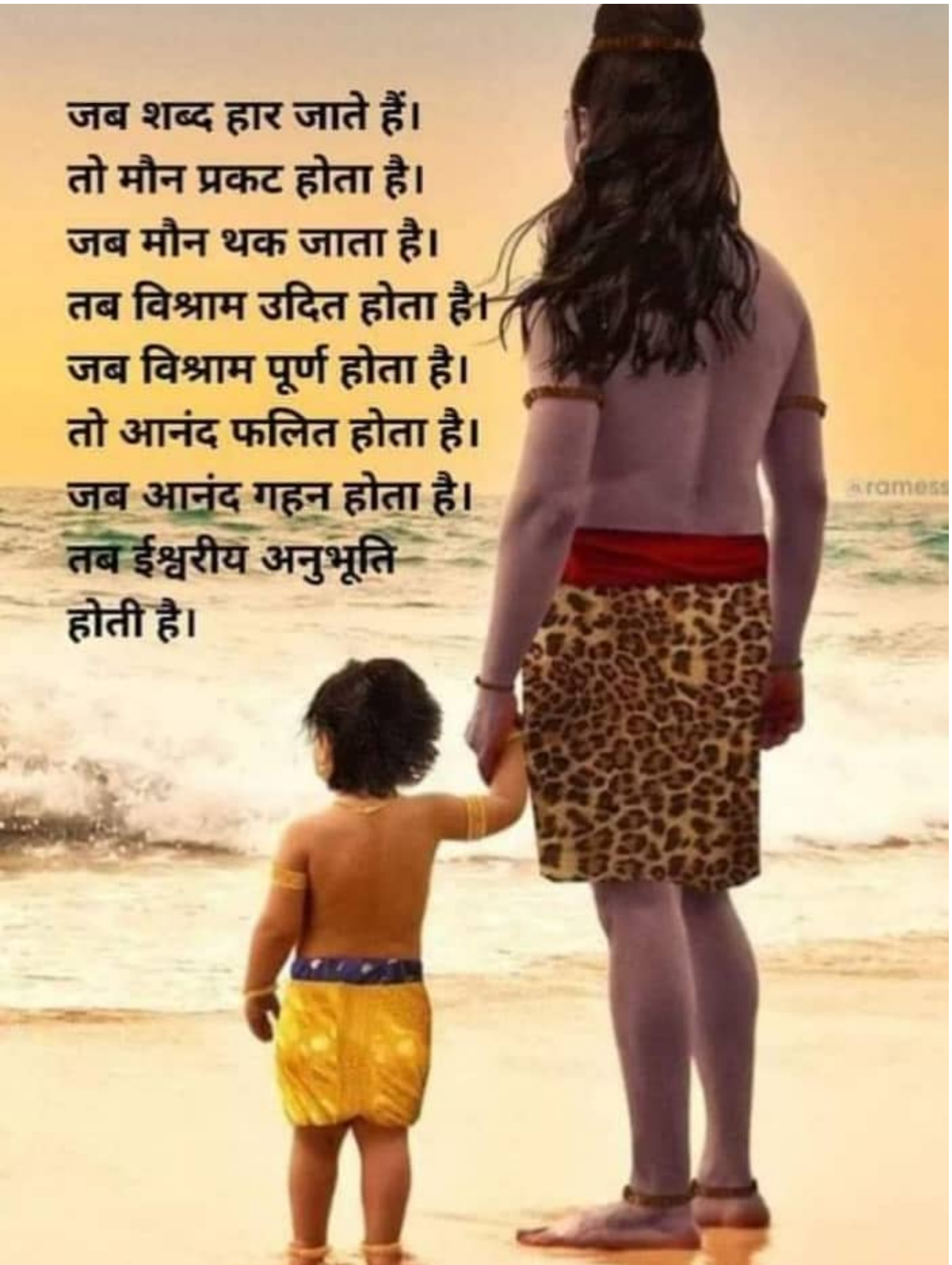
osho

शरीर वृद्ध होता जाता हैं , यह स्वभाविक ही है लेकिन स्मरण रहे कि कही मन भी तो वृद्ध नहीं हो रहा हैं ? शरीर वृद्ध हो और मन युवा से युवा होता जावे तो ही जीवन का सम्यक विकास हैं । शारीर जिस दिन मृत्यु में प्रवेश करे उस दिन मन यदि बिल्कुल नवजात शिशु जैसा हो तो जीवन की यात्रा सफल हो जाती हैं ।



"जीवन ठहराव और गति के
बीच का संतुलन है।"

जब शब्द हार जाते हैं।
तो मौन प्रकट होता है।
जब मौन थक जाता है।
तब विश्राम उदित होता है।
जब विश्राम पूर्ण होता है।
तो आनंद फलित होता है।
जब आनंद गहन होता है।
तब ईश्वरीय अनुभूति
होती है।



हे
नाथ!
मेरे
नाथ!



मैं
आप
को
भूलों
नहीं !

जैसे, गजराजने पूरा नाम भी उच्चारण नहीं किया, उसने केवल 'हे ना.....(थ)' आधा नाम लेकर पुकारा ।
उतनेमें भगवान् ने आकर रक्षा कर दी । 'शास्त्रीय विधियोंकी उतनी आवश्यकता नहीं है. जितनी इस तरह आर्त होकर पुकारनेकी है । इसलिये आर्त होकर दुःखी होकर, भगवान् को अपना मानकर पुकारें।

और केवल उनका ही भरोसा, उनकी ही आशा, उनका ही विश्वास रखें और सब तरफसे मन हटाकर उनका ही नाम लें और उनको ही पुकारें- हे राम ! राम ।। राम ।।। आर्तका भाव तेज होता है, इससे भगवान् उसकी तरफ खिंच जाते हैं और उसके सामने प्रकट हो जाते हैं । तभी तो भगवान् 'प्रह्लादके' लिये खम्मेमेंसे प्रकट हो गये । भीतरका जो आर्तभाव होता है, वही मुख्य होता है। 'राम' नाम उच्चारण करनेकी बड़ी भारी महिमा है । उस 'राम' नामका प्रकरण रामचरितमानसमें बड़े विलक्षण ढंगसे आया है ।

परम श्रद्धेय स्वामीजी श्री रामसखदासजी महाराज

ज्योतिषी साधारणतः कहते हैं, कि सब सुनिश्चित है, जो विधि ने लिखा है वह होकर रहेगा तो फिर सारा धर्म व्यर्थ होजाता है. मुहम्मद से भी अली ने पूछा आप क्या कहते हैं? मुहम्मद ने कहा, तू पहले एक पैर उठा अली ने एक पैर, बायां पैर उठा खड़ा हो गया. मुहम्मद ने कहा, अब तू दायां भी उठा ले. अली ने कहा, आप क्या बात करते हैं. तो मुहम्मद ने कहा, अगर तू चाहता पहले तो दाहिना भी उठा सकता था. अब नहीं उठा सकता मुहम्मद ने कहा कि एक पैर उठाने को आदमी सदास्वतंत्र है. लेकिन एक पैर उठाते ही तत्काल दूसरा पैर बंध जाता है. वह जो जिंदगी का नान एसेंशियल हिस्सा है, उसमें हम पूरी तरह पैर उठाने को स्वतंत्र हैं, लेकिन उसमें उठाए गए पैर एसेंशियल हिस्से में बन्धन बन जाते हैं. मुहम्मद ने कहा, तू उठा सकता था पहला पैर दायां भी कोई मजबूरी न थी. लेकिन अब चूंकि तू बायां उठा चुका इसलिए दायां उठाने में असमर्थता होगी आदमी की सीमाएं हैं. सीमाओं के भीतर स्वतंत्रता है-ओशो, ज्योतिष अर्थात् आध्यात्म



और कहां जागोगे ?

संसार ही है, यहीं सोए हो, यहीं जागना होगा।

इस बात को समझ लो जहां सोओगे, वहीं जागोगे न ! सोए तो पूना में और जागो दिल्ली में, ऐसा थोड़े ही होने वाला है।

सोए पूना में तो पूना में ही जागोगे। जहां सोए, वहीं जागोगे। इसे तुम जीवन के गणित की एक बहुत बहुमूल्य कड़ी मनो, यह एक परम मूल्यवान सिद्धांत है -- " जहां सोए हो, वहीं जागोगे। "

हां, सोए - सोए सपने तुम कहीं के भी देखते रहो, मगर जागना तो वहीं होगा जहां सोए हो। पूना में सोए, रात तुम सोचो संसार भर की, सपने देखो कलकत्ते में होने के, कि मद्रास में, कि दिल्ली में, जहां तुम्हारा मन हो, कि चांद - तारों पर, कोई रुकावट नहीं है; न कोई टिकट लगती, न कोई समय लगता, न कहीं आने जाने में कोई बाधा खड़ी होती, तुम जो चाहो सोचो, सपने में तुम कहीं भी हो सकते हो, लेकिन जब सुबह जागोगे तब पूना में होओगे

जहां सोए थे, वहीं जागना होगा।

संसार में सोए हो, तो संसार में ही जागना होगा।
यह संसार परमात्मा ने तुम्हें दिया, यह कसौटी है,
यह परीक्षा है।

इससे गुजरोगे तो निखरोगे।

यह आग है, जिसमें से गुजर गए तो स्वर्ण बन जाओगे, शुद्ध कुंदन बन जाओगे, तुम्हारा कूड़ा करकट जल जाएगा।

पत्नी को, पति को, बच्चों को, दुकान को, बाजार को अग्नि समझो,
कसौटी समझो :

इससे भागना नहीं है।

ओशो



उस दा मुख इक जोत है, घुंघट है संसार ।

घुंघट में ओह छुप्प गया, मुख पर आंचल डार ॥

उन को मुख दिखलाए हैं, जिन से उस की प्रीत ।

उनको ही मिलता है वोह, जो उस के हैं मीत ॥

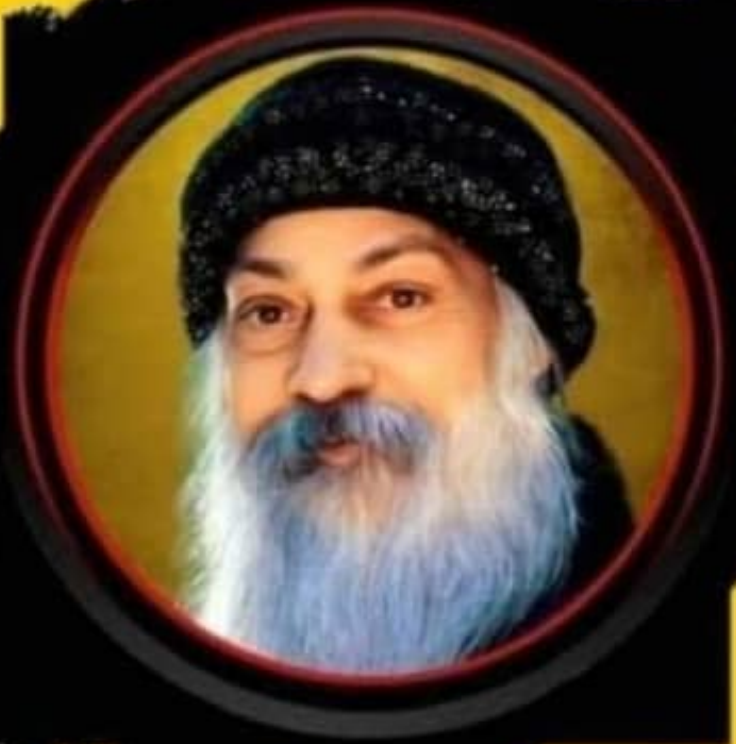
ना खुदा मसीते लभदा, ना खुदा विच का'बे।

ना खुदा कुरान किताबां, ना खुदा निमाज़े ॥

बुल्लया औंदा साजन वेख के, जांदा मूल ना वेख ।

मारे दरद फ़राक दे, बण बैठे बाहमण शेख ॥

~ बुल्लेह शाह



प्रत्येक घटना कुछ न कुछ सिखाती है!

आंखे खुली हो, तो पूरा जीवन ही विद्यालय है।
और जिसे सीखने की भुख है, वह प्रत्येक व्यक्ति
और प्रत्येक घटना से सीख लेता है। और स्मरण
रहे कि जो इस भांति नहीं सीखता है, वह जीवन में
कुछ भी नहीं सीख पाता।

ओशो

मैं कौन हूँ-के कुछ अंश

आशा विचार
OSHO WICHAR

जाति, वर्ण, धर्म, गोत्र, रूतबा, दहेज और नौकरी
देखकर विवाह करने वाला समाज किस मुंह से
कह देता है की जोड़ियां ईश्वर ने बनाई है ।





शिष्य पुस्तक लेकर कमरे में गया लेकिन तत्काल लौट आया। वह डर से कांप रहा था।

संत ने पूछा... "क्या हुआ? इतना डरे हुए क्यों हो?"

शिष्य ने कहा... "गुरुवर! कमरे में सांप है।"

संत ने कहा... "यह तुम्हारा भ्रम होगा। कमरे में सांप कहां से आएगा। तुम फिर जाओ और किसी मंत्र का जाप करना। सांप होगा तो भाग जाएगा।"

शिष्य दोबारा कमरे में गया। उसने मंत्र का जाप भी किया लेकिन सांप उसी स्थान पर था। वह डर कर फिर बाहर आ गया और संत से बोला... "सांप वहां से जा नहीं रहा है।"

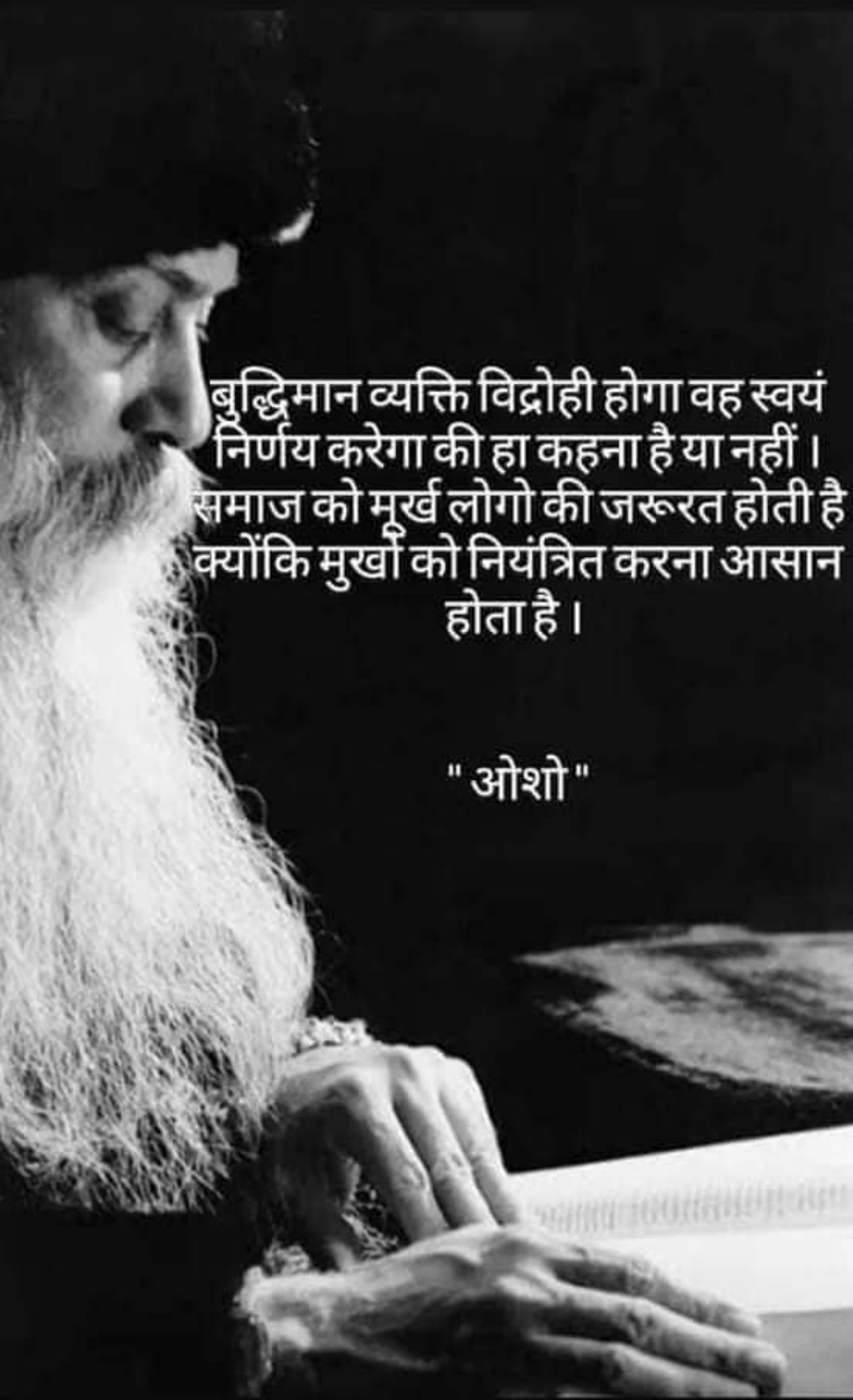
संत ने कहा... "इस बार दीपक लेकर जाओ। सांप होगा तो दीपक के प्रकाश से भाग जाएगा।"

शिष्य इस बार दीपक लेकर गया तो देखा कि वहां सांप नहीं है। सांप की जगह एक रस्सी लटकी हुई थी। अंधकार के कारण उसे रस्सी का वह टुकड़ा सांप नजर आ रहा था।

बाहर आकर शिष्य ने कहा... "गुरुवर ! वहां सांप नहीं रस्सी का टुकड़ा है। अंधेरे में मैंने उसे सांप समझ लिया था।"

संत ने कहा... "वत्स, इसी को भ्रम कहते हैं। संसार गहन भ्रम जाल में जकड़ा हुआ है। ज्ञान के प्रकाश से ही इस भ्रम जाल को मिटाया जा सकता है। यही शिक्षा का निचोड़ है।"

वास्तव में अज्ञानता के कारण हम बहुत सारे भ्रमजाल पाल लेते हैं और आंतरिक दीपक के अभाव में उसे दूर नहीं कर पाते। यह आंतरिक दीपक का प्रकाश निरंतर स्वाध्याय और ज्ञानार्जन से मिलता है। जब तक आंतरिक दीपक का प्रकाश प्रज्वलित नहीं होगा, लोग भ्रमजाल से मुक्ति नहीं पा सकते।



बुद्धिमान व्यक्ति विद्रोही होगा वह स्वयं
निर्णय करेगा की हा कहना है या नहीं ।
समाज को मूर्ख लोगो की जरूरत होती है
क्योंकि मूर्खों को नियंत्रित करना आसान
होता है ।

" ओशो "

आचार्य रजनीश

मार्च: १६ बुन्देल १९६३

दर्शन विभाग

हस्तशिल्प कला महाविद्यालय

११५, नैपियर टाउन,

जबलपुर (म०प्र०)

मां,

मैं तीन छोटे छोटे शब्दों के जेड पर मनुष्य की समस्त चेतना को घुमते हुए देखता हूँ। ये तीन शब्द कौन से हैं?

ये शब्द हैं: विवेक, बुद्धि और इन्द्रिय।

विवेक से प्रेरणित चलते हैं। बुद्धि से वे जो मध्यम हैं। और इन्द्रिय चेतना की निमित्त तम दिया है।

बुद्धि का प्रतीक है। बुद्धि मानवीय है। विवेक दिव्य है।

इन्द्रिय सदा और बंधी है। वह लिखा है। वह अचेतन का चाल है। वहां न भुम है, न अभुम। कोई भेद वहां नहीं है। वहां कोई अज्ञ: संघर्ष नहीं है। वह बंधी वास्तवों का सदा जगह है।

बुद्धि न लिखा है, न अज्ञान। वह अर्ध: मूर्ख है। **वह बुद्धि और विवेक के बीच संतुलन है।** वह पालीय है। उसमें एक भेद पैदा होगा है। लेकिन वे अचेतन हैं। उसके भेद-बोध है। भुम-अभुम का जन्म है। वास्तव भी है, विचार भी है।

विवेक पूर्ण जागृत है। वह भूत पैदा है। वह वेगल चलाता है। वहां भी कोई संघर्ष नहीं है। वह भी सदा है। वह भुम का, सत् का, सौंदर्य का सदा जगह है।

इन्द्रिय भी सदा, विवेक भी सदा। **बुद्धि बंधी वास्तव, विवेक सदा सदा, बुद्धि भर अज्ञान है।** उसमें पीछे की ओर बुद्धि है। आगे की ओर विवेक है। उसके विचार की लें। विवेक की ओर और अज्ञान की ओर बुद्धि में है। सदा बुद्धि, लज्जारी बुद्धि। वहां लीला है। वस्तु में दुखते का आकर्षण — उक्त में उक्त की पुर्णता — लेने में एक का है।

एक पुर्णता से दूसरे को प्रभु में दुखते का जगह करते हैं वे छंती में हैं। जो अज्ञ: पैदा होगा है वह अज्ञ: अचेतन नहीं होगा है। **जगत् व्यवस्था में भी लौटने का कोई मार्ग ही नहीं है।**

दूसरा पुर्णता को धारकर वे जगत् पर भुम-अभुम का प्रभाव करते हैं वे भी छंती में हैं। अज्ञान का प्रभाव और अज्ञान की निमित्त सदा नहीं होगा है। वह केवल चेतित अभिमत है। **जो चेतित है वह भुम ही नहीं है।** जगत् जगत् पर सदा है। जगत् लज्जारी में है। वहां जो सोचा है, उसे वास्तव है। अभुम नहीं, मूर्ख छोड़ती है।

अपने में दिन जगत् है।
यह भया करता है।

इन्द्रिय: सदा का सदा सदा है। वह सदा से सदा का है।

जगत् सदा



Osho dhyani. + 112

6 comments • 9 shares



Like



Comment



Send



Share

**ओशो का हिन्दी साहित्य**

Rahul Kumar Ojha · 1h · 🌐



यह किताब ऐसे व्यक्ति ने लिखी है। जिसे जुन्नैद जरूर पसंद करता। मेहर बाबा वह तीस साल मौन रहे। कोई दूसरा व्यक्ति इतने लंबे अरसे तक मौन नहीं रहा। महावीर सिर्फ बारह साल मौन रहे। यह रेकार्ड था। मेहर बाबा ने सारे रिकार्ड तोड़ दिये। तीस साल मौन रहना। वे अपने हाथों की मुद्राएं बनाते थे—जैसे मैं बनाता हूं। क्योंकि कुछ बातें हैं जो केवल मुद्राओं से ही कही जा सकती हैं। मेहर बाबा ने शब्द छोड़ दिये लेकिन वे मुद्राएं नहीं छोड़ सके। और यह हमारा सौभाग्य है कि उन्होंने मुद्राएं नहीं छोड़ीं। उनके जो निकटवर्ती शिष्य थे। उन्होंने उनकी मुद्राओं को समझाकर लिखना शुरू किया। और तीस साल बाद जो किताब प्रकाशित हुई उसका शीर्षक बड़ा अजीब था—जैसा कि होना चाहिए था—उसका शीर्षक था: गॉड स्पीक्स। ईश्वर बोलता है।

मेहर बाबा मौन में जिये और मौन में मरे। उन्होंने कभी बात नहीं की। लेकिन उनका मौन ही प्रखर वक्तव्य था—उनकी अभिव्यक्ति, उनका गीत। इस अर्थ में किताब का शीर्षक अजीब नहीं है—ईश्वर बोलता है।

एक झेन किताब है: फूल बोलते नहीं। यह बिल्कुल गलत है। फूल भी बोलता है। वह उसकी सुगंध से बोलता है। निश्चित ही, वह अँगरेजी जापनी या संस्कृत नहीं बोलता लेकिन वह फूलों की भाषा बोलता है। लेकिन मैं जानता हूं क्योंकि मुझे सुगंध की एलर्जी है। मैं मीलों से फूल की जबान सुन सकता हूं। इसलिए मैं अपने अनुभव से यह कह रहा हूं। यह कोई प्रतीक नहीं है। ईश्वर भी बोलता है—आवाज कैसी भी हो। यह मेहर बाबा के लिए एकदम सही लागू होता है। वह बिना बोले बोलते थे~

ओशो



ओशो ॥ प्रेम-ध्यान ॥

www.svlf.org

एक हृद के बाद इंसान,
सब कुछ छोड़ देता है।

शिकायत करना, मिन्नते करना, मनाना
और फिर दिल ऐसा हो जाता है,
कि कोई बात करें तो ठीक,
ना करें तो भी ठीक।

क्योंकि पता लग चुका होता है,

कि तनिका बहुत दली और पतली है।

संसार सराय है , घर नहीं।

हमारा आना किसी और लोक से है। और हमें जाना भी किसी और लोक है। जो इतना स्मरण रख सके , वह सराय में भी रहे तो भी सराय उसे छूती नहीं है। वह जल में कमलवत हो जाता है। और जल में कमलवत हो जाना ही संन्यास है। संसार छोड़ कर भागते है नासमझ ; संसार के साथ तादात्म्य कर लेते हैं नासमझ। समझदार न तो तादात्म्य करता है , न भागता है। जग कर इतना ही जानता है कि यह हमारा घर नहीं है। रात भर का बसेरा है , रैन - बसेरा , सुबह हुई , उड़ जाएंगे। ऐसी प्रतीति सतत बनी रहे , ऐसा भाव सघन होता रहे , तो समाधि दूर नहीं है , तो मोक्ष दूर नहीं है , तो परमात्मा दूर नहीं है। **ओशो** (Dr. Sohan Lal Narang)



प्रेम दूसरों से लेने की चीज नहीं,, देने की चीज है। हम प्रेम देते हैं। यदि शैतान से प्रेम करोगे तो वह भी प्रेम का हाथ बढ़ाएगा।

संत ने कहा- "अब समझा, राबिया!

तुमने उस पंक्ति को काट कर ठीक ही किया है। दरअसल हमारे ही मन के अंदर प्रेम करने का अहंकार भरा है। इसलिए हम प्रेम नहीं करते, प्रेम करने का नाटक करते हैं। यही कारण है कि संसार में नफरत और द्वेष फैलता नजर आता। "वास्तव में प्रेम की परिभाषा ईश्वर की परिभाषा से अलग नहीं है। दोनों ही देते हैं बदले में बिना कुछ लिये।

ईश्वर, माता-पिता, प्रकृति सभी बिना हमसे कुछ पाने की आशा किये हमें देते हैं और यह इंतजार करते रहते हैं कि हम कब उनसे और अधिक पाने के योग्य स्वयं को साबित करेंगे और वे हमें और अधिक दे सकेंगे। प्रेम को जानना है तो पेड़ों और फूलों को देखिये तोड़े और काटे जाने की शिकायत तक नहीं करते बस देने में लगे हैं..!

ओशो

Osho Prem Naman  

[Osho international](#)

**Osho international**

46m · 🌐



प्रेम की परिभाषा..

एक बार संत राबिया एक धार्मिक पुस्तक पढ़ रही थीं। पुस्तक में एक जगह लिखा था, शैतान से घृणा करो, प्रेम नहीं। राबिया ने वह लाइन काट दी। कुछ दिन बाद उससे मिलने एक संत आए। वह उस पुस्तक को पढ़ने लगे। उन्होंने कटा हुआ वाक्य देख कर सोचा कि किसी नासमझ ने उसे काटा होगा। उसे धर्म का ज्ञान नहीं होगा। उन्होंने राबिया को वह पंक्ति दिखा कर कहा, जिसने यह पंक्ति काटी है वह जरूर नास्तिक होगा।

राबिया ने कहा- इसे तो मैंने ही काटा है।

संत ने अधीरता से कहा- तुम इतनी महान संत होकर यह कैसे कह सकती हो कि शैतान से घृणा मत करो। शैतान तो इंसान का दुश्मन होता है।

इस पर राबिया ने कहा- पहले मैं भी यही सोचती थी कि शैतान से घृणा करो, लेकिन उस समय मैं प्रेम को समझ नहीं सकी थी,,लेकिन जब से मैं प्रेम को समझी, तब से बड़ी मुश्किल में पड़ गई हूं कि घृणा किससे करूं। मेरी नजर में घृणा लायक कोई नहीं है।

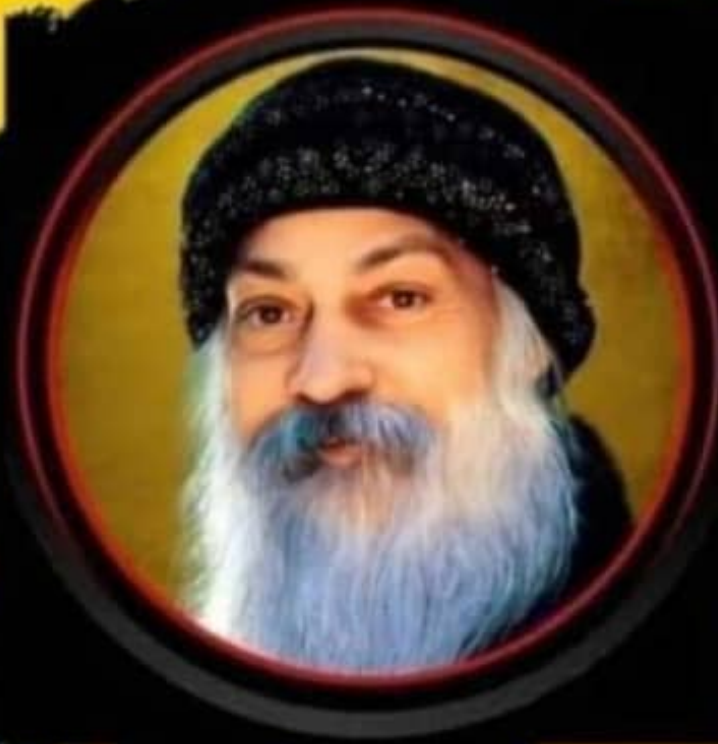
संत ने पूछा- "क्या तुम यह कहना चाहती हो कि जो हमसे घृणा करते हैं, हम उनसे प्रेम करें।"

राबिया बोली- प्रेम किया नहीं जाता। प्रेम तो मन के भीतर अपने आप अंकुरित होने वाली भावना है। प्रेम के अंकुरित होने पर मन के अंदर घृणा के लिए कोई जगह नहीं होगी। हम सबकी एक ही तकलीफ है। हम सोचते हैं कि हमसे कोई प्रेम नहीं करता। यह कोई नहीं सोचता कि प्रेम दूसरों से लेने की चीज नहीं,, देने की चीज है। हम प्रेम देते हैं। यदि शैतान से प्रेम करोगे तो वह भी प्रेम का हाथ बढ़ाएगा।

संत ने कहा- "अब समझा, राबिया!

तुमने उस पंक्ति को काट कर ठीक ही किया है। दरअसल हमारे ही मन के अंदर प्रेम करने का अहंकार भरा है। इसलिए हम प्रेम नहीं करते, प्रेम करने का नाटक करते हैं। यही कारण है कि संसार में नफरत और द्वेष फैलता नजर आता।" वास्तव में प्रेम की परिभाषा ईश्वर की परिभाषा से अलग नहीं है। दोनो ही देते हैं बदले में बिना कुछ लिये।

ईश्वर, माता-पिता, प्रकृति सभी बिना हमसे कुछ पाने की आशा किये हमें



प्रत्येक घटना कुछ न कुछ सिखाती है!

आंखे खुली हो, तो पूरा जीवन ही विद्यालय है।
और जिसे सीखने की भुख है, वह प्रत्येक व्यक्ति
और प्रत्येक घटना से सीख लेता है। और स्मरण
रहे कि जो इस भांति नहीं सीखता है, वह जीवन में
कुछ भी नहीं सीख पाता।

ओशो

मैं कौन हूँ-के कुछ अंश



ढेर सारी किताबें पढ़कर, डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, प्रोफेसर, वैज्ञानिक, प्रशासनिक अधिकारी व कर्मचारी बनने के बाद भी अगर दिमाग में अंधविश्वास, सड़े-गले विचार, अवैज्ञानिक पुराने तौर-तरीके वैसे ही बने रहें तो यह किताबी ज्ञान गधे पर रखी किताबों का बोझ जैसा है। इतना ज्ञान हासिल करने का क्या फ़ायदा जब कि आपका दिमाग पाखण्डी अन्धविश्वास से भरा है तो आपका ज्ञान व्यर्थ है



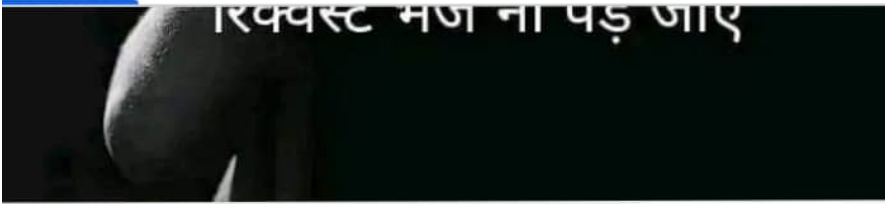
ध्यान को ठीक से समझो तो ध्यान का अर्थ होता है :
अपने से प्रेम । और जो निज के प्रेम में डुबकी मारता है,
उसे पता चलता है कि वहां मैं जैसी कोई इकाई नहीं है ।
लहर हूं सागर की । जिसने मैं में डुबकी मारी वह पाता
है कि मैं तो हूं ही नहीं । तब एक नये अर्थों में, एक नये
आयाम में, एक नयी भाव - भंगिमा में प्रेम का उदय
होता है । वह प्रेम संबंध नहीं है, वह प्रेम तुम्हारी स्वयं
की सहज, स्वस्फूर्त अवस्था है ।

हंसा तो मोती चुगे


दसतां प्रवचन

ओशो





381

451 comments • 21 shares



Like



Comment



Send



Share

**Anamcara Rames**

17h · 🌐



सुबह आप उठते हैं ताजे, लेकिन कभी आपने खयाल किया, यह ताजगी कहाँ से आती है? निश्चित ही, रातभर आपने ताजगी के लिए कुछ भी नहीं किया; न कोई व्यायाम किया, न कोई भोजन लिया। रातभर अगर आपने कुछ भी किया, तो इतना ही किया कि अपने को सब करने से रोका। रातभर आप सोए रहे। सोने में आप पुनः अव्यक्त में गिर जाते हैं। व्यक्त से हट जाते हैं, अव्यक्त में गिर जाते हैं। उसी अव्यक्त से ताजगी लेकर सुबह पुनः उठ आते हैं। सांझ होते-होते फिर थक जाते हैं; दिन ढल जाता है, रात शुरू हो जाती है। फिर...

इसलिए पुराने शास्त्र कहते हैं, निद्रा छोटी मृत्यु है, निद्रा आंशिक मृत्यु है; मृत्यु पूर्ण निद्रा है। रोज आदमी को मरना पड़ता है, इसीलिए सुबह वह पुनः जीवित हो पाता है। रात अंधेरे में डूब जाते हैं, सुबह फिर पुनरुज्जीवित होते हैं, ताजे, प्रफुल्लित; फिर काम में लग जाते हैं।

ठीक ब्रह्मा की यह पूरी सृष्टि भी दिनभर में थक जाती है, सांझ होने के करीब हो जाती है। फिर मृत्यु, फिर पुनर्जन्म। ठीक चौबीस घंटे के दिन की भांति ब्रह्मा का भी बड़ा वर्तुलाकार दिन घूमता रहता है।



आचार्य श्री रजनीशOsho

गीता दर्शनअ.8.प्र.7/95

सृष्टि और प्रलय का वर्तुल

यह ताजगी कहाँ से आती है? निश्चित ही, रातभर आपने ताजगी के लिए कुछ भी नहीं किया; न कोई व्यायाम किया, न कोई भोजन लिया।



कृष्ण सच यथा इतराणि हन्ताः कृष्ण का ता न दायाणा ह्य कृष्ण का
जितना प्रेम मैं कर रहा हूं, संभवतः मीरा ने भी नहीं किया होगा। कृष्ण
की जैसी प्रतिष्ठा मेरे भीतर है, शायद ही किसी के भीतर रही होगी।
यह तुम्हारे भीतर जो संकोच उठ रहा है, वह कृष्ण के प्रति नहीं है, वह
अपनी ही नासमझी के प्रति है। लेकिन अब उस खूंटी को देख कर तुम्हें
अड़चन होती होगी कि अरे, मैं इसी खूंटी से बंधा था! यही खूंटी सबूत है
मेरे बंधनों का। मेरी अर्चना, मेरी पूजा--सब झूठी थी। इतने दिन मैं कैसे
धोखा खाया, कैसे अपने को धोखा दिया--इससे तुम्हें संकोच पैदा होता
है।

लेकिन सच यह है कि तुम पहली बार कृष्ण के करीब आने शुरू हुए हो।
और पहली बार तुम्हारे भीतर भी मीरा जैसी पुलक पैदा हुई है। पहली
बार तुम्हारे पैरों में भी नृत्य की क्षमता आई है, तुम्हारा हृदय भी गीत गा
रहा है। तुम्हारे जीवन में धन्यता का क्षण आ गया है।

भगवान श्री रजनीश
पिय को खोजन मैं चली
प्रवचन 1
प्रश्न 1



पाना पिलाया

वह एक शिष्य मौजूद था। उसकी इतनी भी हिम्मत नहीं हो सकी कि जीसस को पानी पिला दे। वह भीड़ में चुपचाप ही खड़ा रहा।

जिंदा गुरु के साथ होना खतरनाक मामला है--बहुत खतरनाक सौदा है। और वे जो ग्यारह भाग गए थे और यह बारहवां साथ था, ये ही बारह जीसस के गणधर हुए। इन्हीं बारह को अवसर मिला ईसाइयत को पैदा करने का। अब तुम समझ लो कि ईसाइयत शुरू से ही झूठ हो गई। आज करोड़ों लोग ईसाई हैं। आज ईसाई होना बड़ी सुविधा की बात है। इसमें कुछ अड़चन नहीं है। इसमें कुछ उपद्रव नहीं है। आज कितने लोग ईसा के सामने आंसू बहाते हैं बैठ कर--तस्वीर के सामने। आज कितने घरों में सूली पर लटके हुए ईसा की तस्वीर या मूर्ति है! कितने लोग चर्चों में जाते हैं! आज रविवार का दिन है, सारी दुनिया में चर्च ईसाइयों से भरे होंगे। प्रवचन दिए जा रहे होंगे, पादरी समझा रहे होंगे। लेकिन अब कुछ खतरा नहीं है। अब मजे से बात सुनो, चर्चा करो। अब इसमें कुछ लेना-देना नहीं है। अब कुछ अड़चन नहीं है।

लेकिन जीसस के साथ कितने लोग थे? बुद्ध के साथ कितने लोग थे? आज पूरा एशिया बौद्ध है, तब कितने लोग बुद्ध के साथ खड़े हुए? महावीर के साथ कितने लोग खड़े थे? नानक के साथ कितने लोग खड़े थे? कबीर के साथ कितने लोग खड़े थे?

कारण साफ है--जिंदा गुरु के साथ होने में तलवार की धार पर चलना है। कल्पना करने में क्या कठिनाई है! बैठो और जो कल्पना करना हो करो--कृष्ण की करो, बुद्ध की करो, क्राइस्ट की करो--तुम्हारी मौज है। और जैसी करना हो, जैसा रंग भरना हो कल्पना में वैसा रंग भरो।

कृष्ण चैतन्य, तुम सौभाग्यशाली हो कि कल्पना की तूलिका से ही रंग नहीं भरते रहे। तुम सौभाग्यशाली हो कि जिस बात की तुम्हें अपेक्षा थी, जिसे तुमने चाहा था, वह घट सकी; जो तुम्हारी अभीप्सा थी, वह पूरी हो सकी। तुमने हिम्मत की तो पूरी हो सकी। तुमने साहस किया तो पूरी हो सकी। तुम चल पड़े। और जो चल पड़ा उसकी मंजिल दूर नहीं है। संकोच तुम्हें इसलिए नहीं लगता कि कृष्ण से तुम्हें कुछ एतराज है। कृष्ण से क्या एतराज होगा! कृष्ण का तो मैं दीवाना हूं। कृष्ण को जितना प्रेम मैं कर रहा हूं, संभवतः मीरा ने भी नहीं किया होगा। कृष्ण की जैसी प्रतिष्ठा मेरे भीतर है, शायद ही किसी के भीतर रही होगी। यह तुम्हारे भीतर जो संकोच उठ रहा है, वह कृष्ण के प्रति नहीं है, वह अपनी ही नासमझी के प्रति है। लेकिन अब उस खूंटी को देख कर तुम्हें



दब कर। तू है कौन?

उसने कहा, मैं एक अजनबी हूं। बाहर के गांव से आया हुआ हूं। इस गांव के रास्तों से परिचित नहीं हूं, इसलिए साथ हो लिया हूं।

उस आदमी ने पूछा, तू इस आदमी को पहचानता है जिसको हम पकड़ कर ले जा रहे हैं?

उसने कहा, कभी देखा नहीं।

जीसस ने कहा, देखा, अभी मुर्गे ने बांग नहीं दी और दो बार तू इनकार कर चुका!

उसने भीतर ही भीतर कसम खाई कि कसम खाता हूं अब, कसम तुम्हारी, कसम परमात्मा की, नहीं तीसरी बार इनकार करूंगा। मगर सुबह होने के पहले तीसरी बार भी इनकार करनी ही पड़ी। और बाकी तो भाग ही गए थे। यह एक गया भी था तो तीन बार इनकार कर दिया! जब जीसस को सूली लगी और उन्होंने पानी मांगा।...क्योंकि यहूदियों का जो सूली देने का ढंग था वह बहुत बेहूदा था, बहुत ही आदिम था। आदमी को हाथों में, पैरों में खीले ठोंक कर तख्ते पर जड़ देते थे। आदमी इतनी आसानी से नहीं मरता, उसके गले में फांसी भी नहीं लगाते थे, तो किसी को छह घंटे लगते मरने में, किसी को बारह घंटे लगते, किसी को अठारह घंटे लगते, किसी को चौबीस घंटे, किसी को अड़तालीस घंटे। कभी-कभी तो यूं होता कि आदमी को मरने में तीन दिन लग जाते, क्योंकि खून धीरे-धीरे बहता, बहता--हाथ से, पैर से, बहते-बहते आदमी क्षीण होता और मरता।

जीसस को प्यास लगी और उन्होंने कहा, मुझे प्यास लगी है, कोई मुझे पानी पिला दो।

वह एक शिष्य मौजूद था। उसकी इतनी भी हिम्मत नहीं हो सकी कि जीसस को पानी पिला दे। वह भीड़ में चुपचाप ही खड़ा रहा।

जिंदा गुरु के साथ होना खतरनाक मामला है--बहुत खतरनाक सौदा है।

और वे जो ग्यारह भाग गए थे और यह बारहवां साथ था, ये ही बारह जीसस के गणधर हुए। इन्हीं बारह को अवसर मिला ईसाइयत को पैदा करने का। अब तुम समझ लो कि ईसाइयत शुरू से ही झूठ हो गई।

आज करोड़ों लोग ईसाई हैं। आज ईसाई होना बड़ी सुविधा की बात है। इसमें कुछ अड़चन नहीं है। इसमें कुछ उपद्रव नहीं है। आज कितने लोग ईसा के सामने आंसू बहाते हैं बैठ कर--तस्वीर के सामने। आज कितने घरों में सूली पर लटके हुए ईसा की तस्वीर या मूर्ति है! कितने लोग चर्चों में जाते हैं! आज रविवार का दिन है, सारी दुनिया में चर्च



चलगा।

इसलिए तो लोग मुर्दों की पूजा करते हैं। जीसस मर जाते हैं, तब करोड़ों लोग ईसाई हो जाते हैं। जीसस जब ज़िंदा थे, तो सौ-पचास आदमी भी जीसस के साथ नहीं थे। जीसस को जिस दिन सूली लगी, उस दिन उनके शिष्य भी भाग गए थे। क्या खाक शिष्य रहे होंगे!

जिस रात जीसस पकड़े गए, जब दुश्मन उन्हें ले चले, तो उनका एक शिष्य पीछे हो लिया। जीसस ने यूँ कहा जैसे हवा में बोल रहे हों, जैसे आकाश से बात कर रहे हों। कहा कि लौट जा! क्योंकि सुबह होने के पहले, इसके पहले कि मुर्गा बांग दे, तू तीन बार मुझे इनकार करेगा। निश्चित ही शिष्य समझ गया। और लोग तो जरा हैरान हुए! लेकिन लोग तो समझते ही थे कि यह आदमी पागल है। यह क्या कह रहा है, किससे कह रहा है--मुर्गा बांग देगा उसके पहले तीन बार तू मुझे इनकार करेगा! लेकिन शिष्य समझ गया। उसने मन ही मन में कहा--इतनी भी हिम्मत नहीं थी कि जोर से कहता "कभी नहीं," क्योंकि तभी पकड़ लिया जाता--मन ही मन में कहा कि कभी नहीं। लेकिन जीसस ने कहा, मैं कहता हूँ, तू तीन बार इनकार करेगा मुर्गे के बोलने के पहले।

और यही हुआ। थोड़ी ही देर बाद, जो दुश्मनों की भीड़ जीसस को पकड़ कर ले जा रही थी--रात थी, अंधेरी थी, मशालें जला रखी थीं--उन्होंने देखा कि एक अजनबी सा आदमी साथ में है, जो उनका परिचित नहीं है, जो उनका साथी तो निश्चित नहीं है। यह कौन है? उन्होंने पूछा उससे कि तुम कौन हो? क्या तुम जीसस के साथी हो?

उसने कहा कि नहीं। कौन जीसस? मैं तो पहचानता भी नहीं। मैं तो बाहर से आया हुआ एक यात्री हूँ। मुझे भी शहर की तरफ जाना है, मशालों की रोशनी देख कर साथ हो लिया हूँ।

जीसस हंसे और उन्होंने कहा, देखा, अभी मुर्गे ने बांग नहीं दी है। चौंका शिष्य कि एक दफे तो इनकार कर दिया, मगर अब नहीं करूँगा। जीसस ने कहा, तू देख तो। तू तीन बार इनकार करेगा।

और ऐसा हुआ बार-बार। फिर थोड़ी देर बाद किसी दूसरे ने पूछा कि तू है कौन? तेरा ढंग संदिग्ध मालूम पड़ता है। क्योंकि वह छिपा-छिपा सा, चोर-चोर सा मालूम हो रहा था। अपने को बचाने की कोशिश में लगा था। रोशनी में चेहरा न आ जाए, ऐसा-ऐसा चल रहा था, अंधेरे-अंधेरे में दब कर। तू है कौन?

उसने कहा, मैं एक अजनबी हूँ। बाहर के गांव से आया हुआ हूँ। इस गांव के रास्तों से परिचित नहीं हूँ, इसलिए साथ हो लिया हूँ।



पागल था!

उस महिला ने बहुत चौंक कर पिकासो को देखा। उसने कहा, आप होश में हैं? तस्वीर कहीं चुंबन का उत्तर दे सकती है?

पिकासो ने कहा, तो फिर वह मैं नहीं था। मुझे चूमो, और तब तुम भेद पाओगी। वह सिर्फ कागज ही था, भ्रांति थी। अगर तस्वीर ने उत्तर न दिया, तेरी जैसी प्यारी स्त्री के चुंबन का कोई उत्तर न मिला, तस्वीर कुछ बोली भी न, धन्यवाद भी न दिया, तुझे गले से भी न लगाया, वह झूठी थी। वह मैं नहीं था, इतना मैं तुझसे कहता हूं।

पिकासो ठीक कह रहा है।

कृष्ण चैतन्य, तुम कृष्ण की तस्वीर से बंधे थे इतने दिन तक। यहां आकर तुमने कृष्ण के यथार्थ को पहचाना है, जाना है। अब क्यों तस्वीर तुम्हें बांधेगी? लेकिन प्रश्न उठना स्वाभाविक है।

तुम पूछते हो: "यह क्या है भगवान? संकोच लगता है उस छवि के पास जाते, आंखें मिलाते भी, कि जिसे मैंने वर्षों पूजा, जिसकी अर्चना की!" संकोच इसीलिए लगता है। यह सोच कर, यह विचार कर कि मैं भी कैसा पागल था! मैं क्या कर रहा था! मैं कैसे बचकानेपन में खोया था! मैं कैसी नासमझी कर रहा था!

लेकिन तुम सौभाग्यशाली हो, समय रहते जाग गए। बहुत हैं अभागे जो यूं ही मर जाएंगे, यूं ही तस्वीरों में अटके मर जाएंगे।

शास्त्रों में जो अटका है, वह तस्वीरों में अटका है। मूर्तियों में जो अटका है, वह झूठों में अटका है। सत्य के खोजी को जीवंत गुरु खोजना होता है, उसके सिवाय कोई उपाय न कभी था, न है, न होगा।

और जीवंत गुरु के साथ जुड़ना निश्चित ही साहस का काम है--दुस्साहस का काम है। क्योंकि जीवित गुरु के साथ जुड़ने का अर्थ है: अहंकार की मृत्यु। जो मरने को राजी है, वही शिष्य हो सकता है। जो अपने को बचाए, वह शिष्य नहीं हो सकता। मूर्ति में यही तो सुविधा है--तुम जब चाहो कृष्ण को लिटा दो, जब चाहो बिठा दो, जब चाहो भोग लगा दो, जब चाहो घंटी बजाओ, पूजा करो--जो तुम्हें करना हो करो--जब पट खोलने हों मंदिर के, खोल दो; जब बंद करने हों, बंद कर दो। कृष्ण न हुए, तुम्हारे खिलौने हैं।

जीवित सदगुरु के साथ तो तुम ऐसा न कर सकोगे। जीवित सदगुरु पर तो तुम्हारा कोई वश न चलेगा। जीवित सदगुरु के साथ तो मामला उलटा ही हो जाएगा--उसका वश तुम पर चलेगा, उसका जादू तुम पर चलेगा।



संकोच होता है।

उस संकोच में सिर्फ एक बात की घोषणा है कि तुम्हें अपनी ही नासमझी याद आती है। उस संकोच का कृष्ण से कोई संबंध नहीं है। वर्षों तक तुमने जो नासमझी की, कैसे कर सके इतनी नासमझी--यही याद आता है। यह याद आकर पीड़ा होती है, शर्म से सिर झुक जाता है। लेकिन कृष्ण पर कल्पना करने की जरूरत न रही; वास्तविक से तुम्हारा संबंध होना शुरू हो गया है।

इसलिए तुम कह रहे हो आज कि 'मैं तरंगित हुआ; मैं रोया; मैं हंसा।' यही तो तुम चाहते थे। जो तुम चाहते थे, वह हो गया है। अब क्यों तुम व्यर्थ के सहारे खोजोगे! कृष्ण तुम्हें मिल गए। तुम्हें मैंने नाम ही 'कृष्ण चैतन्य' इसीलिए दिया था। यही देख कर दिया था कि कृष्ण से तुम्हारा गहरा लगाव है। लेकिन झूठे कृष्ण को तो छोड़ना पड़ेगा। वह तुम्हारी कल्पना थी। और तुम जब कल्पना छोड़ दोगे, तो सत्य का साक्षात् हो सकता है। सच्चे कृष्ण में तो क्राइस्ट भी समाए हुए हैं, बुद्ध भी, महावीर भी, जीसस भी--जिन्होंने भी जाना है सत्य को, वे सभी समाए हुए हैं। कृष्ण शब्द बड़ा प्यारा है। कृष्ण का अर्थ होता है: जो आकृष्ट कर ले, जो खींच ले। जादू, कृष्ण का अर्थ होता है। उस जादू में तुम आ गए। किसी ने तुम्हें खींच लिया। उस गुरुत्वाकर्षण में तुम हो अब। अब तस्वीरों का क्या करोगे? जब मालिक मिल जाए तो तस्वीरों का क्या करना है? सब तस्वीरें फीकी पड़ जाती हैं। सब तस्वीरें झूठी हो जाती हैं।

एक महिला ने प्रसिद्ध चित्रकार पिकासो से कहा, कल तुम्हारी एक तस्वीर, तुम्हारी एक फोटो एक घर में टंगी देखी। बड़ी प्यारी थी। किसी बड़े महत्वपूर्ण छविकार ने, फोटोग्राफर ने उतारी होगी। मुझे तो इतनी प्यारी लगी कि मैं उसे बिना चूमे न रह सकी।

पिकासो ने कहा, फिर क्या हुआ? तस्वीर ने तुम्हें चुंबन का उत्तर दिया या नहीं?

उस महिला ने बहुत चौंक कर पिकासो को देखा। उसने कहा, आप होश में हैं? तस्वीर कहीं चुंबन का उत्तर दे सकती है?

पिकासो ने कहा, तो फिर वह मैं नहीं था। मुझे चूमो, और तब तुम भेद पाओगी। वह सिर्फ कागज ही था, भ्रान्ति थी। अगर तस्वीर ने उत्तर न दिया, तेरी जैसी प्यारी स्त्री के चुंबन का कोई उत्तर न मिला, तस्वीर कुछ बोली भी न, धन्यवाद भी न दिया, तुझे गले से भी न लगाया, वह झूठी थी। वह मैं नहीं था, इतना मैं तुझसे कहता हूं।

पिकासो ठीक कह रहा है।



ऐसे ही सपने में तुम खो गए थे। मीरा ने तुम्हें प्रभावित किया। और स्वभावतः, मीरा ने प्रभावित किया तो कृष्ण तुम्हारे इष्टदेव हो गए। अब यह दूर कोयल की आवाज सुनते हो! ऐसी आवाज तुम भी कर सकते हो, कुहू-कुहू करने में कोई कठिनाई तो नहीं। मगर वह होगी नकल। तुम्हारे प्राणों में कुछ भी न होगा, बस कंठ में ही होगी बात, ऊपर-ऊपर होगी। जीवन नहीं होगा। सत्य नहीं होगा। यथार्थ नहीं होगा। तुम दोहरा दोगे। और यह भी हो सकता है कि तुम कोयल से भी बाजी मार लो, क्योंकि नकलची नकल का अभ्यास कर सकता है, गहन अभ्यास कर सकता है। लेकिन अंतिम परिणामों में तो तुम हारोगे, बुरी तरह हारोगे, क्योंकि तुम्हारे हाथ में कुछ भी न होगा।

कृष्ण की मूर्ति पर तुमने अपनी सारी कल्पनाओं का प्रक्षेपण कर दिया। कृष्ण की मूर्ति तो केवल एक सहारा बन गई, एक खूंटी बन गई, जिस पर तुम कल्पनाओं और भावनाओं को टांगते चले गए। मेरे पास तुम आए तो कृष्ण भूल गए। इसलिए भूल गए कि जो तुम चाहते थे सदा से घटना, वह घटने लगा। अब क्यों कोई कल्पना करे! जब वस्तुतः जलधार मिल गई, तो क्यों कोई कल्पना और सपना देखे जल का! भूखे आदमी ही रात भोजन के सपने देखते हैं; जिनके पेट भरे हैं, वे नहीं। भिखमंगे ही सपने देखते हैं सम्राट होने के, सम्राट नहीं। यहां तो वस्तुतः पुलक पैदा होने लगी। तुम्हारे भीतर की कोयल जाग उठी। अब तुम्हें यहां कोई काल्पनिक कृष्ण के सहारे नहीं जीना है। यहां वस्तुतः जिसे तुम खोजते थे उसकी मौजूदगी है, उस ऊर्जा में तुम जी रहे हो, वह ऊर्जा तुम पर बरस रही है। मैं तुम्हें कल्पना नहीं सिखाता, मैं तुम्हें ध्यान सिखाता हूं। और ध्यान सीखने का अर्थ ही होता है: कल्पनाओं से मुक्त हो जाना; मन से ही मुक्त हो जाना। फिर कैसी कल्पना, कैसी स्मृति, कैसा विचार! इसलिए सब गया--तुम्हारी कल्पना गई, तुम्हारी भावना गई, तुम्हारी पूजा गई, तुम्हारी अर्चना गई। और स्वभावतः अब उस खूंटी को देख कर तुम्हें शर्म आती होगी कि इस खूंटी के सहारे तुमने कितना अपने को धोखा दिया! इसलिए आज कृष्ण की छवि को देखते भी तुम्हें संकोच होता है। आंखें मिलाते भी तुम्हें संकोच होता है।

उस संकोच में सिर्फ एक बात की घोषणा है कि तुम्हें अपनी ही नासमझी याद आती है। उस संकोच का कृष्ण से कोई संबंध नहीं है। वर्षों तक तुमने जो नासमझी की, कैसे कर सके इतनी नासमझी--यही याद आता है। यह याद आकर पीड़ा होती है शर्म से सिर द्रक्त जाता है। लेकिन



ओशो का हिन्दी साहित्य

Rahul Kumar Ojha · 1d · 🌐

पहला प्रश्न: भगवान!

मीरा मेरी प्रेरणा-स्रोत रही है और कृष्ण मेरे इष्टदेव। शांत क्षणों में मैंने भी मीरा जैसे भक्ति-भाव की कल्पना तथा चाह की है और उसी के अनुरूप कुछ प्रयास भी किया। मगर प्राणों में उतनी पुलक नहीं उठी कि मैं नाच सकूँ। फिर मैं आपके संपर्क में आया; आपका शिष्य हुआ। मैं तरंगित हुआ; मैं रोया; मैं हंसा। मगर कृष्ण से अब कुछ लगाव नहीं रहा। अब तो उस छवि के पास आते और आंखें मिलाते भी संकोच लगता है, जिसे मैंने वर्षों पूजा, जिसकी अर्चना की। यह क्या है भगवान?

कृष्ण चैतन्य!

कल्पना और सत्य में बड़ा भेद है। मीरा के लिए कृष्ण कल्पना नहीं हैं, कृष्ण बाहर भी नहीं हैं। मीरा के लिए कृष्ण उसके अंतर्तम में विराजमान हैं। वह जिस कृष्ण की बात कर रही है, कृष्ण की मूर्ति में तुम उस कृष्ण को नहीं पाओगे। उस कृष्ण का कोई रूप नहीं है, कोई आकार नहीं है। तुमने कल्पना की, वहीं चूक हो गई, वहीं भेद पड़ गया।

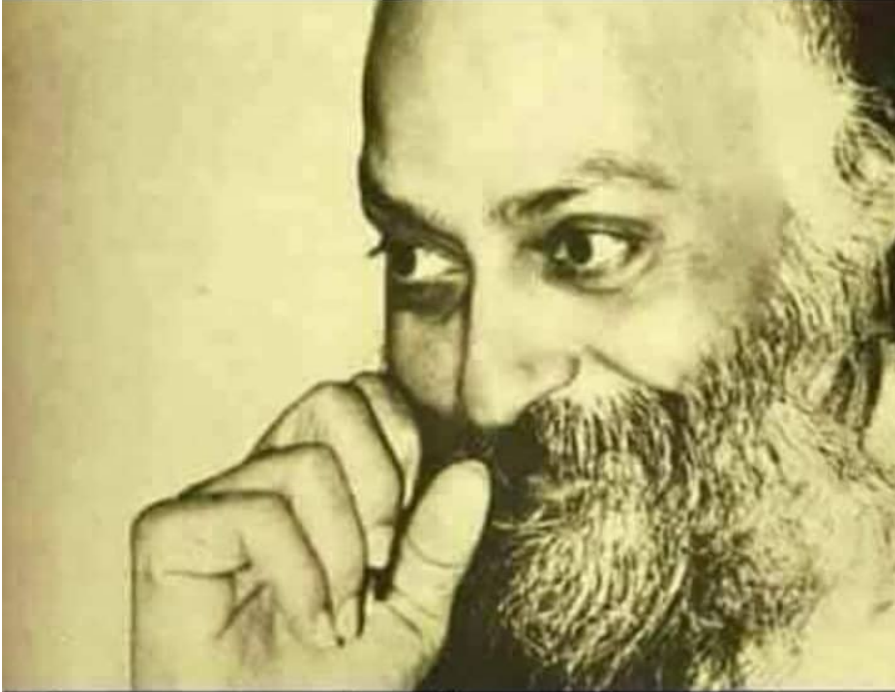
मीरा के लिए कृष्ण एक आंतरिक सत्य हैं और तुम्हारे लिए केवल कल्पना की बात। कल्पना से कैसे तुम तरंगित होते, कैसे नाच उठता, कैसे पुलक जगती? यूँ समझो कि जैसे भोजन की कोई कल्पना करे, उससे कैसे पेट भरे? प्यास लगी हो और पानी की कोई कल्पना करे, उससे कैसे तृप्ति हो? पानी चाहिए।

लेकिन यह तुम्हारी ही भ्रांति नहीं थी, यह करोड़ों-करोड़ों लोगों की भ्रांति है। कल्पना सस्ती होती है, सत्य मंहगा--सत्य बहुत मंहगा--प्राणों से दाम चुकाने पड़ते हैं। कल्पना के लिए तो कुछ करना ही नहीं होता, जब चाहो तब कर लो, मन की मौज है।

मीरा ने सब गंवाया। कल्पना के लिए कोई कुछ भी नहीं गंवा सकता। लेकिन मीरा को पढ़ोगे, उसके शब्द तुम्हें प्रभावित कर सकते हैं। उन शब्दों में रस है। उन शब्दों में अनुगूंज है मीरा की वीणा की, मीरा की पायल की झंकार, लेकिन उन शब्दों से तुम सत्य तक न जा सकोगे। उन शब्दों को तुम प्रेरणा-स्रोत बना लोगे, तो सपनों में खो जाओगे।

ऐसे ही सपने में तुम खो गए थे। मीरा ने तुम्हें प्रभावित किया। और स्वभावतः, मीरा ने प्रभावित किया तो कृष्ण तुम्हारे इष्टदेव हो गए।

अब गत २२ दिसम्बर की आत्माएं गूँजने लगे। तेरी आत्माएं गूँज भी लगी



यदि चाहते हो कि जीवन में आनंद ही आनंद हो जाए,
कि कोई भी चोट चोट न रहे,
कि कोई पत्थर भी मारे तो फूल की वर्षा हो,
कि कोई जहर भी पिलाए तो अमृत हो जाए
—तो उसका एक ही रास्ता है:
अपेक्षाओं को छोड़ दो, निरपेक्ष होकर जीओ।
और निरपेक्षता तुम्हारे हाथ में है,
कोई दूसरा तुम्हें दे न सकेगा





"ज़िंदगी के 4 कड़वे सच"

- (1). आप कभी किसी को, संतुष्ट नहीं कर पाओगे।
- (2). आपकी जिम्मेदारी, कभी खत्म नहीं होगी।
- (3). दूसरों के लिए कितना भी जी लो,
कोई तुम्हारी कद्र नहीं करेगा।
- (4). आप चाह के भी किसी की ज़िंदगी नहीं बदल
सकते। क्योंकि उसे उसके कर्मों का फल मिल रहा है।
इसलिए चिंता छोड़ो अपने लिए थोड़ा जी लो !



देता।

प्रसेनजित जब आया, तो उसने चारों तरफ नजर साली। वहां तो हजारों भिक्षु थे। वह पहचान भी न पाया। और वह पहचान भी न पाता। क्योंकि अंगुलिमाल ठीक बुद्ध के पास बैठा था। उसने कहा कि मैंने सुना है कि अंगुलिमाल ने दीक्षा ली और संन्यासी हुआ। भरोसा तो नहीं आता कि यह आदमी और संन्यासी होगा। मैं उसके दर्शन करना चाहता हूं। वह है कहां? बुद्ध ने कहा, तुम उसे अब पहचान न पाओगे। फिर भी प्रसेनजित ने कहा कि मैं उसे जानना चाहता हूं। उसे पता ही नहीं कि अंगुलिमाल बगल में बैठा सुन रहा है। बुद्ध ने कहा, अगर तुम जानना ही चाहते हो, तो यह जो मेरे निकट बैठा हुआ भिक्षु है, यह अंगुलिमाल है। ऐसा नाम सुनते ही प्रसेनजित के हाथ पैर कंप गए। इतने पास! झपट पड़े, गर्दन काट दे, क्या पता। इस आदमी का कोई भरोसा नहीं। कथा है कि प्रसेनजित के हाथ पैर कंप गए। पसीना आ गया। और उसने कहा कि यही वह आदमी है? पर बुद्ध ने कहा कि घबड़ाओ मत। अब इसने अपने ब्राह्मणत्व को पुनः उपलब्ध कर लिया है। वह सपना टूट गया। दूसरे दिन सारे नगर में खबर फैल गई। अंगुलिमाल भिक्षा के लिए गांव में गया तो लोगों ने द्वार दरवाजे बंद कर लिए। भयभीत लोग अपने छतों पर चढ़ गए। और लोगों ने पत्थर मारने शुरू किए छतों से अंगुलिमाल को। अंगुलिमाल ढेर होकर राह पर गिर पड़ा--सब तरफ से लहलुहान। कथा है कि बुद्ध आए और उन्होंने अंगुलिमाल को कहा, अंगुलिमाल, तूने सिद्ध कर दिया की तू ब्राह्मण है। तेरे मन में क्या भाव उठा, जब लोग तुझे पत्थर मार रहे थे?

अंगुलिमाल ने कहा, जब से तुमने कहा कि जो तूने किया वह सब सपना है, तब से दूसरे भी जो करते हैं, वह भी सब सपना है।

जिसे तुमने जीवन समझा है, जब तुम सपना समझने लगोगे। तभी तुम्हें उसका पता चलेगा जो सत्य है और अभी सपना हो गया। दृष्टि के बदलने की बात है।

ओशो, कहै कबीर दीवाना(प्रवचन-5)



है।

बुद्ध ने उसे दीक्षा दे दी। सम्राट को खबर मिली। प्रसेनजित सम्राट था उस राज्य का, जहां बुद्ध ठहरे थे उन दिनों। वह भी थक गया था इस हत्यारे से। इस हत्यारे का नाम था अंगुलिमाल...अंगुलिमाल उसका नाम था, क्योंकि वह आदमियों को मारता और उनकी उंगलियों की माला पहनता। एक आदमी मारता, तो उसकी उंगली अपनी माला में डाल देता। उसने एक हजार आदमियों को मारने का व्रत लिया था। जब बुद्ध ने उसे दीक्षा दी, तो केवल एक उंगली की कमी थी। नौ सौ निन्यानबे उंगलियां उसकी माला में थीं। प्रसेनजित भी थक गया था। कोई बस नहीं आता था इस आदमी पर। फौजें थक गई थीं। सैनिक जाने से डरते थे उस इलाके में, जहां खबर मिल जाती कि अंगुलिमाल आ गया। प्रसेनजित को खबर मिली कि अंगुलिमाल दीक्षित हुआ। बुद्ध का भिक्षु हो गया। संन्यासी हो गया है। तो वह देखने आया इस खतरनाक आदमी को, कि यह आदमी किस तरह का है। उसकी मां तक डरती थी उसके पास जाने में। क्योंकि उसका कोई भरोसा नहीं था। वह उसको भी काट देता।

प्रसेनजित जब आया, तो उसने चारों तरफ नजर सली। वहां तो हजारों भिक्षु थे। वह पहचान भी न पाया। और वह पहचान भी न पाता। क्योंकि अंगुलिमाल ठीक बुद्ध के पास बैठा था। उसने कहा कि मैंने सुना है कि अंगुलिमाल ने दीक्षा ली और संन्यासी हुआ। भरोसा तो नहीं आता कि यह आदमी और संन्यासी होगा। मैं उसके दर्शन करना चाहता हूं। वह है कहां? बुद्ध ने कहा, तुम उसे अब पहचान न पाओगे। फिर भी प्रसेनजित ने कहा कि मैं उसे जानना चाहता हूं। उसे पता ही नहीं कि अंगुलिमाल बगल में बैठा सुन रहा है। बुद्ध ने कहा, अगर तुम जानना ही चाहते हो, तो यह जो मेरे निकट बैठा हुआ भिक्षु है, यह अंगुलिमाल है। ऐसा नाम सुनते ही प्रसेनजित के हाथ पैर कंप गए। इतने पास! झपट पड़े, गर्दन काट दे, क्या पता। इस आदमी का कोई भरोसा नहीं। कथा है कि प्रसेनजित के हाथ पैर कंप गए। पसीना आ गया। और उसने कहा कि यही वह आदमी है? पर बुद्ध ने कहा कि घबड़ाओ मत। अब इसने अपने ब्राह्मणत्व को पुनः उपलब्ध कर लिया है। वह सपना टूट गया। दूसरे दिन सारे नगर में खबर फैल गई। अंगुलिमाल भिक्षा के लिए गांव में गया तो लोगों ने द्वार दरवाजे बंद कर लिए। भयभीत लोग अपने छतों पर चढ़ गए। और लोगों ने पत्थर मारने शुरू किए छतों से अंगुलिमाल को। अंगुलिमाल ढेर होकर राह पर गिर पड़ा--सब तरफ से लहलुहान।

**रजनीशपुरम**

Munabai Makvana · 2h · 🌐



बुद्ध ने एक हत्यारे को संन्यास की दीक्षा दी थी। शिष्य राजी न थे क्योंकि हत्यारा भयंकर था। उसने हजारों लोग मार डाले थे। उसका एक ही रास था--लोगों को मारना। और बुद्ध ने जब उसे दीक्षा दी तो बुद्ध के निकटतम शिष्यों को भी लगा कि बुद्ध जरा गलती कर रहे हैं। यह आदमी ठीक नहीं है। इससे ज्यादा शैतान पाना मुश्किल है। तो आनंद ने बुद्ध को कहा कि रुकें। इस आदमी को थोड़े दिन परिचित होने दें। जल्दी न करें। यह आदमी भयंकर हत्यारा है। इसका नाम सुन कर सम्राट भी कंप जाते हैं। बुद्ध ने कहा कि लेकिन मैं जानता हूं कि यह ब्राह्मण है। हत्यारे होने से कोई फर्क नहीं पड़ता। वह भीतर का ब्रह्म थोड़े ही स्पर्शित होता है। वह तो सदा शुद्ध है। इसने क्या किया, वह तो सपना है। यह क्या है, वह सत्य है।

तुमसे भी मैं यही कहता हूं। तुमने क्या किया, वह सपना है। तुमने क्या सोचा वह तो सपने में भी सपना है। तुम्हारा ब्रह्मतत्त्व रत्ती भर कलुषित नहीं होता। उसके कलुषित होने का उपाय नहीं है। उसका कुंवारापन भ्रष्ट नहीं होता। क्योंकि कुंवारापन कोई बाह्य घटना नहीं है। कुंवारापन उसका स्वरूप है। कितने ही तुमने पाप किए हों--अनगिनत।

बुद्ध ठीक कहते हैं, कि यह ब्राह्मण है। और बुद्ध ने ब्राह्मण की क्या परिभाषा की है? तुम सभी ब्राह्मण हो। बुद्ध ने परिभाषा की है कि जिसके भीतर ब्राह्मण है वह ब्राह्मण है। पौधे, पशु, पक्षी सभी ब्राह्मण हैं।

परमात्मा में शूद्र पैदा ही कैसे हो सकता? और अगर परमात्मा में शूद्र पैदा होता हो, तो परमात्मा में शूद्र होना चाहिए। क्योंकि कारण के बिना कैसे फल लगेंगे? शैतान सपना है, ब्रह्म अस्तित्व है। एक भ्रांति की रेखा है।

बुद्ध ने उसे दीक्षा दे दी। सम्राट को खबर मिली। प्रसेनजित सम्राट था उस राज्य का, जहां बुद्ध ठहरे थे उन दिनों। वह भी थक गया था इस हत्यारे से। इस हत्यारे का नाम था अंगुलिमाल...अंगुलिमाल उसका नाम था, क्योंकि वह आदमियों को मारता और उनकी उंगलियों की माला पहनता। एक आदमी मारता, तो उसकी उंगली अपनी माला में डाल देता। उसने एक हजार आदमियों को मारने का व्रत लिया था। जब बुद्ध ने उसे दीक्षा दी, तो केवल एक उंगली की कमी थी। नौ सौ निन्यानबे



वास्तविक जिन्होंने धर्म को जाना हैं, वे तो
चिल्ला-चिल्लाकर कहते हैं कि तुम ब्रह्म हो।
स्वयं ब्रह्म हो। तत्त्वमसि।
वे चिल्ला कर कहते हैं कि आत्मा ही परमात्मा हैं।

परमात्मा तक पहुंचने की एक ही सीढ़ी है, वह
आप स्वयं हैं। न तो किसी मंदिर में जाने से
उसकी श्रद्धा पैदा होगी? न किसी मस्जिद में
जाने से पैदा होगी। उसका मंदिर, उसकी
मस्जिद, उसका गुरुद्वारा आप हैं। वह आपके
भीतर छिपा है। आप जैसे—जैसे अपने भीतर
उतरेंगे, वैसे—वैसे उसका स्वाद, उसका रस,
उसका अनुभव आने लगेगा। और उस अनुभव
के पीछे जो श्रद्धा जन्मती है, वही श्रद्धा है।
लेकिन नकली सिक्कों से जो राजी हो गया,
वह भीतर कभी जाता नहीं।

📖 गीता दर्शन, अध्याय -13, प्रवचन-144, ओशो 📖

OSHO



क्रांतिबीज

मैं तो वो चला देखना तुम कि बीज बीज न रह जाए

ओशो



विसर्जन की कला सीखो ।
डूबने की कला सीखो ।
और कहीं और किसी चीज में नहीं डूबना है ,
अपने में डूबना है ।

ओशो

झरत दसहं दिस मोती



तो दमन के मैं पक्ष में नहीं हूँ; वृत्तियों के ज्ञान के पक्ष में हूँ। जीवन के मैं विरोध में नहीं हूँ; जीवन के समग्र स्वीकार के पक्ष में हूँ। अब तक जो धर्म जमीन पर प्रचलित रहे हैं और जो बातें और शिक्षाएँ लोगों को कही गई हैं, वे सब लाइफ निगेटिव हैं, उन सबसे जीवन का निषेध होता है। जीवन का निषेध जो धर्म करते हैं वे धर्म कभी मनुष्य को सुखी न कर सकेंगे और आनंदित न कर सकेंगे। चाहिए जीवन का स्वीकार, लाइफ अफर्मेशन; चाहिए समग्र जीवन का पूर्ण स्वीकार। जब जीवन पूर्ण स्वीकृत होता है और हम उस जीवन के प्रति जागते हैं, ज्ञान से भरते हैं, तो परिवर्तन शुरू हो जाता है। एक दीया जलाएं और अपने भीतर ले जाएं। ध्यान के दीये को जलाएं और अपने भीतर ले जाएं और खोजें वहां।

बुद्ध ने एक बात कही है, उसे कह कर मैं अपनी चर्चा पूरी करूंगा।

बुद्ध ने कहा है, जिस घर में अंधेरा होता है उसमें चोर आते हैं। जिस घर में पहरेदार नहीं होता है उसमें चोर आते हैं। लेकिन जिस घर में दीया जलता होता है उसमें चोर आने में डरते हैं। और जिस घर के द्वार पर पहरेदार बैठा होता है उसमें तो चोर कभी नहीं आते। बुद्ध ने कहा, ऐसा ही मनुष्य का चित्त भी है। जिस चित्त में बोध का दीया जलता है, उस चित्त में वे वृत्तियाँ नहीं आती जो घातक हैं। और जिस चित्त पर सजगता का, जागरूकता का, अवेयरनेस का पहरेदार बैठा होता है, उस चित्त में तो कोई भी बुराई, कोई भी बुराई प्रवेश करने में असमर्थ हो जाती है।

मन को बनाएं ऐसा मंदिर कि जहां ध्यान का दीया जलता हो, जहां जागरूकता का पहरेदार बैठा हो। ध्यान का दीया और जागरूकता का पहरा हो चित्त पर, तो यही सामान्य सा दिखता जीवन अमृत जीवन में परिवर्तित हो जाता है। प्रत्येक व्यक्ति के भीतर तो परमात्मा छिपा है, लेकिन हम जागेंगे तो ही उसे पा सकेंगे।

इन तीन दिनों में जो भी मैंने आपसे कहा है, एक शब्द में उसे कह दूँ: वह है जागरूकता, जागरूकता, समग्र रूप से जीवन के प्रति जागरूकता। जो जागता है वह जीवन को उपलब्ध हो जाता है 🙏

**अपो दीपो भव**

34m · 🌐



🙏 जीवन को पूरे मन से स्वीकार करें 🙏

जो दमन कर लेता है चीजों का, जीवन भर कंधे पर उठानी पड़ती हैं वे चीजें जिनका दमन कर लेता है। सप्रेशन या दमन मार्ग नहीं है जीवन के विकास का। जीवन में कुछ भी दमन करने जैसा नहीं है। फिर क्या? तो क्या हम हो जाएं पशु? जैसा मेरे मित्र ने पूछा है कि फिर तो हम हो जाएं उच्छृंखल?

नहीं, वह मैं नहीं कह रहा हूं। जीवन में जो भी वृत्तियां हैं, वेग हैं, जो भी इच्छाएं हैं, वासनाएं हैं, कामनाएं हैं, उनके प्रति जागना है, उनको देखना है, पहचानना है, समझना है। उनकी अंडरस्टैंडिंग, उनके बाबत हमारी जितनी गहरी समझ होगी, वे समझ के अनुपात में ही परिवर्तित होती चली जाती हैं। किसी भी वृत्ति को देखना शुरू करें, वह वृत्ति परिवर्तित होने लगेगी। और बड़े रहस्यों का रहस्य यह है कि जिस वृत्ति से आप घबड़ाते हैं और जिस वृत्ति को आप लाना चाहते हैं, उस वृत्ति का ठीक से जागने पर उसी दिशा में परिवर्तन होना शुरू हो जाता है। देखें, प्रयोग करें, ध्यान करें अपनी वृत्तियों पर। जिस वृत्ति को भी परिवर्तित करना हो उस वृत्ति से लड़ें नहीं, पहली बात। उसके शत्रु न बनें, उसके मित्र बनें, उसके प्रति जागें और देखें।

जीवन एक सहज स्वीकार है। जीवन को पूरे मन से स्वीकार करें, जीवन की निंदा न करें। जीवन को अंगीकार करें पूरे हृदय से, पूरे द्वार खोल कर। और फिर जीवन में जो कुछ भी है, उसे समझें, समझने की कोशिश करें, पहचानने की कोशिश करें। उस वृत्ति के सारे रूप को देखें। और हैरान हो जाएंगे! जैसे ही उसे देखेंगे, जानेंगे, पहचानेंगे, उसमें परिवर्तन शुरू हो जाता है। उसमें एक अभूतपूर्व परिवर्तन शुरू हो जाता है। हमने देखा नहीं है, पहचाना नहीं है, इसलिए हम दमन करते हैं। और दमन, दमन सुसंस्कृत नहीं करता मनुष्य को, बल्कि और विकृत करता है।

तो दमन के मैं पक्ष में नहीं हूं; वृत्तियों के ज्ञान के पक्ष में हूं। जीवन के मैं विरोध में नहीं हूं; जीवन के समग्र स्वीकार के पक्ष में हूं। अब तक जो

एक वृद्ध ऋषि से किसी ने पूछा : " संसार की वस्तुओं में सबसे बड़ी वस्तु क्या है ? "

ऋषि ने कहा : " आकाश। क्योंकि जो भी है , आकाश में है और स्वयं आकाश किसी में नहीं है। "

उसने पूछा : " और श्रेष्ठतम ? "

ऋषि ने कहा : " शील। क्योंकि शील पर सब कुछ न्यौछावर है , लेकिन शील किसी के लिए भी नहीं खोया जा सकता है । "

उसने पूछा : " और सबसे गतिवान ? "

ऋषि ने कहा : " विचार। "

उसने पूछा : " और सबसे सरल ? "

ऋषि ने कहा : " उपदेश। "

उसने पूछा : " और सबसे कठिन ? "

ऋषि ने कहा : " आत्मज्ञान। "



निश्चय ही स्वयं को जानना सर्वाधिक कठिन प्रतीत होता है , क्योंकि उसे जानने के लिए शेष सब जानना छोड़ना पड़ता है । ज्ञान से शून्य हुए बिना स्वयं का ज्ञान नहीं हो सकता है । अज्ञान आत्मज्ञान में बाधा है । ज्ञान भी आत्मज्ञान में बाधा है । लेकिन एक ऐसी अवस्था भी है , जब न ज्ञान है , न अज्ञान है । उस अंतराल में ही स्वयं का ज्ञान आविर्भूत होता है । मैं उस अवस्था को ही समाधि कहता हूं । ओशो

facebook



=====

देवगीत, इसमें जरा भी स्वार्थ नहीं है, कि मैं थोड़ी देर और यहां रहूं। यह चाहत बिल्कुल स्वाभाविक है, क्योंकि तुम्हारी यात्रा अभी पूरी नहीं हुई। तुम आंतरिक मार्ग में प्रविष्ट हो चुके और अच्छी तरह से आगे बढ़ रहे हो, लेकिन देखभाल करने के लिए तुम्हें अभी माली की जरूरत शेष है।

मेरे जहाज के कप्तान के बारे में चिंतित मत हो, क्योंकि वह मेरा नौकर नहीं, बल्कि मेरा शिष्य भी है। वह खुद चाहता है कि मैं यहां थोड़ी देर और ठहरूं। कोई कठिनाई नहीं है।

अगर तुम्हें मेरी जरूरत है तो वह जरूरत पूरी होने तक मैं यहां रहूंगा। और चाहे मैं चला भी जाऊं, अगर तुम्हारा प्रेम बहुत गहरा है, तो मैं तुम्हारे लिए फिर भी मौजूद रहूंगा। जब भी तुम अपनी आँखें बंद करोगे, अपने हृदय के भीतर मुझे धड़कता हुआ पाओगे।

मैं बीज बो चुका हूं। अब केवल वसंत आने की बात है... और ऋतु हमेशा आती ही है! बस, खुले रहो, उपलब्ध रहो। मैं तुम्हारी सहायता करने के लिए यहां हूं। यदि मैं देह में नहीं रहूं, तब भी मैं तुम्हारी मदद कर सकूंगा। वास्तव में, देह-मुक्त होकर मैं अधिक मदद कर सकूंगा। तब मेरी चेतना सब तरफ फैल जाएगी। जिन्होंने मुझे प्रेम किया है, वे मेरे हिस्से बन जाएंगे। उन्होंने पहले ही पिघलना और मुझमें घुलना -मिलना शुरू कर दिया है।

तुम्हारे लिए अब एक ही प्रश्न महत्वपूर्ण है, कि तुम्हारे मिटने और विलीन होने की प्रक्रिया में बाधा न पड़े।

मैं शरीर में रहूं या नहीं, तुम कल का इंतजार मत करो।

"आज" ही वह दिन है।

"यह क्षण" ही वह क्षण है।

और यह मेरा वादा है: मैं यथासंभव लंबे समय तक इस किनारे पर रहने की कोशिश करूंगा। और जब मेरा जहाज चला जाएगा; उसके बाद भी, जब तुम्हारे आँसू मुझे पुकारेंगे या तुम्हारी हँसी मुझे बुलाएगी, मैं तुम्हारे साथ होऊंगा। जब भी तुम नाचोगे-गाओगे, मेरी छाया को अपने आसपास उपस्थित पाओगे।

-ओशो, 'दि रिबेलियस स्पिरिट', प्रवचन-1



रजनीशपुरम

Munabai Makvana · 2h · 🧑🏻‍🤝‍🧑🏻

प्रश्न: प्यारे भगवान, पिछले वर्ष मुझे कुछ महीनों के लिए आपसे दूर दुनिया में रहना पड़ा। तब अहसास हुआ कि समय और स्थान से परे, आप और आपकी शिक्षा मेरे जिंदगी की अभिन्न अंग बन चुकी है। कुछ रहस्यमय ढंग से आपका जीवन मेरा जीवन, तथा मेरा जीवन आपका जीवन हो गया है।

आपके सान्निध्य में होना अत्यंत आनंदपूर्ण है। जब आप हमें छोड़कर जाने की बात कहते हैं, तो मेरी अश्रुधार बहने लगती है। यद्यपि मैं जानता हूं कि आपने अपना कार्य परिपूर्ण कर लिया है। शारीरिक विदाई के बाद भी आपका संदेश जगत में जीवंत रहेगा।

मेरा कोई सवाल नहीं है। सिर्फ अहोभाव अर्पित करना चाहता हूं, कि आपने हमें जगाने के लिए कितना अथक श्रम किया है!

पुनश्च: कृपया अपनी जीवन-नौका के कप्तान से कहिए कि थोड़ा समय और रुक जाए। जहां इतने साल रुका, वहां कुछ वक्त और सही... क्या फर्क पड़ जाएगा?

पुनश्च-पुनश्च: लीजिए, अब सवाल पैदा हो ही गया:- "क्या आपकी लम्बी उम्र की चाहत भी मेरा स्वार्थ है?"

=====

देवगीत, इसमें जरा भी स्वार्थ नहीं है, कि मैं थोड़ी देर और यहां रहूं। यह चाहत बिल्कुल स्वाभाविक है, क्योंकि तुम्हारी यात्रा अभी पूरी नहीं हुई। तुम आंतरिक मार्ग में प्रविष्ट हो चुके और अच्छी तरह से आगे बढ़ रहे हो, लेकिन देखभाल करने के लिए तुम्हें अभी माली की जरूरत शेष है।

मेरे जहाज के कप्तान के बारे में चिंतित मत हो, क्योंकि वह मेरा नौकर नहीं, बल्कि मेरा शिष्य भी है। वह खुद चाहता है कि मैं यहां थोड़ी देर और ठहरूं। कोई कठिनाई नहीं है।

अगर तुम्हें मेरी जरूरत है तो वह जरूरत पूरी होने तक मैं यहां रहूंगा। और चाहे मैं चला भी जाऊं, अगर तुम्हारा प्रेम बहुत गहरा है, तो मैं तुम्हारे लिए फिर भी मौजूद रहूंगा। जब भी तुम अपनी आँखें बंद करोगे, अपने हृदय के भीतर मुझे धड़कता हुआ पाओगे।

वासना ऊर्जा है,
शुद्ध ऊर्जा है, संपदा है।
कहां लगाओगे इस पर सब
कुछ निर्भर करेगा।
यही वासना धन में लग जाएगी
तो धन-कुबेर हो जाओगे।
यही वासना पद के पीछे पड़
जाएगी तो किसी देश के
राष्ट्रपति हो जाओगे।
यही वासना परमात्मा की
दिशा में लग जाएगी तो
प्रार्थना हो जाएगी।

नाम सुमिर मन बाँवरे osho



बड़ी गहरी चोट की मगर उस चोट में यशोधरा उलझ गई, तीसरी बात उसने की, राहुल को सामने किया और कहा कि यह तेरे पिता है, यह देख यह जो भिखारी की तरह खड़े हैं, हाथ में भिक्षा पात्र लिए, यही तेरे पिता है, यह तुझे छोड़ के भाग गए थे, जब तू एक ही दिन का था, अभी पैदा ही हुआ था, अब ये लौटे हैं फिर पता नहीं कब मिलना हो या ना हो, इनसे तू अपनी वसियत माँग ले तेरे लिए क्या इनके पास देने को है वह माँग ले यह बड़ी गहरी चोट थी बुद्ध के पास देने को था क्या? यशोधरा प्रतिशोध ले रही थी १२ वर्षों का लेकिन उसने कभी सोचा भी ना था कि यह घटना यूं रुख ले लेगी ये बात यूं बदल जाएगी भगवान दास आर्य ने भी पूछते वक्त नहीं सोचा होगा कि बात यूं रुख ले लेगी बुद्ध ने तत्क्षण अपना भिक्षा पात्र राहुल को दे दिया और कहा कि बेटे मेरे पास कुछ और देने को नहीं लेकिन जो मैंने पाया है वह तुझे दूंगा तू संन्यस्त हो जा १२ वर्ष के बेटे को संन्यस्त कर दिया यशोधरा की आंखों से झरझर आंसू गिरने लगे, उसने कहा, यह आप क्या करते हैं? पर बुद्ध ने कहा, जो मेरी संपदा है, वही तो दे सकता हूँ, समाधि मेरी संपदा है, उसको बांटने का ढंग, सन्यास है और यशोधरा जो बीत गई बात, उसे बिसार्थ है आया ही इसलिए हूँ कि तुझे भी ले जाऊँ, अब राहुल तो गया, तू भी चल जिस संपदा का मैं मालिक हुआ हूँ, उसकी तू भी मालिक हो जा और सच में ही यशोधरा ने सिद्ध किया कि वह छत्रानी थी, तत्क्षण पैरों पर झुक गई और उसने कहा, मुझे दीक्षा दे, और दीक्षा लेकर भिक्षुओं में, सन्यासियों में यूं खो गई कि फिर उसका कोई उल्लेख नहीं आता, उल्लेख ही नहीं आता, कभी उसने सन्यासियों में इस तरह की अस्मिता प्रकट नहीं की कि मैं बुद्ध की पत्नी हूँ कि मैं विशिष्ट हूँ कि मैं खास हूँ वो वो यूं खो गई कि बौद्ध शास्त्रों में इस घटना के बाद उसका फिर कोई उल्लेख नहीं आता कैसे जी, कैसे मरी, कब तक जी, कब मरी, कुछ पता नहीं चलता, वह सारे सन्यासियों की भीड़ में चुपचाप एक हो गई, यूं लीन हो गई, यूं डूब गई, इसको आना कहते हैं भगवान दास आर्य तुम कहते हो हाथ पसारे दुआ माँग हाथ पसारो और देखो मैं क्या देता हूँ वही दे सकता हूँ जो मेरे पास है जो मैंने पाया वही दे सकता हूँ और यह कुछ ऐसा है कि जितना दो उतना बढ़ता है दुआ माँगो खाली नहीं जा सकोगे कहते हो तुम हाथ पसारे दुआ माँगते अब मेरी आँखें नम है, झूठी बातें ना कहो, अगर आंखें नम हो जाएं तो फिर इस महफिल से उठने की कहां गुंजाएश? फिर इस मै कदे को छोड़कर जाने का कहां सवाल? कहते हो, अब तक ना की दया मुझ पर, बस इतना सा गम है दया के सागर से अपनी ले खाली प्याली साथ चला, जब जब आया द्वार तिहारे, बस खाली हाथ चला, किस खाली प्याली की बात कर रहे हो, खाली ही प्याली हो तो मैं भर ना दूँ? प्याली तो तुम्हारी भरी हुई है और प्याली हजार शर्तें रखती है, इस तरह भरो तो ही भरूंगी, मेरे अनुकूल, मेरे अनुसार और तब मैं मजबूर हूँ मैं तुम्हारे अनुसार ना तो तुम्हें कुछ दे सकता हूँ, ना तुम्हारे अनुसार चल सकता हूँ।

**Osho Vaani** • 🔒

20 Jan • 🌐



बुद्ध के घर वापसी के बाद | बुद्ध की पत्नी की रहस्यमयी साधना | ओशो वाणी |

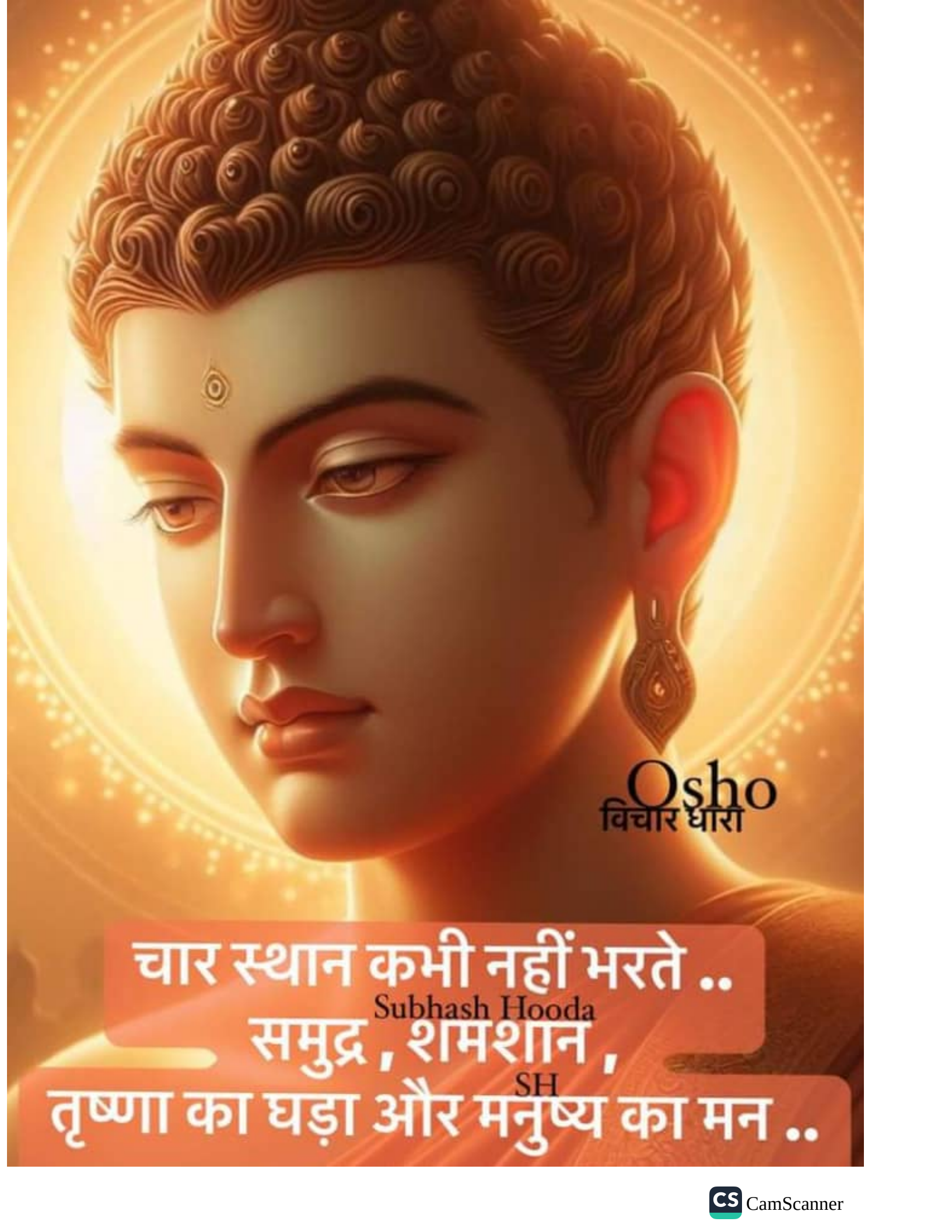
प्रतिलिपि;

गौतम बुद्ध ज्ञान को उपलब्ध होने के बाद घर वापस लौटे, १२ साल बाद वापस लौटे, जिस दिन घर छोड़ा था, उनका बच्चा, उनका बेटा एक ही दिन का था, राहुल एक ही दिन का था, जब आए तो वह १२ वर्ष का हो चुका था और बुद्ध की पत्नी यशोधरा बहुत नाराज थी, स्वभावता और उसने एक बहुत महत्वपूर्ण सवाल पूछा, उसने पूछा कि मैं इतना ही जानना चाहती हूँ, क्या तुम्हें मेरा इतना भी भरोसा ना था कि मुझसे कह देते कि मैं जा रहा हूँ, क्या तुम सोचते हो मैं तुम्हें रोकती, मैं भी क्षत्रानी हूँ, अगर हम युद्ध के मैदान पर तिलक और टीका लगा के तुम्हें भेज सकते हैं तो सत्य की खोज पर नहीं भेज सकते? तुमने मेरा अपमान किया बुरा अपमान किया जाके किया अपमान ऐसा नहीं तुमने पूछा क्यों नहीं तुम कह तो देते कि मैं जा रहा हूँ एक मौका तो मुझे देते देख तो लेते कि मैं रोती हूँ चिल्लाती हूँ रुकावट डालती हूँ कहते हैं बुद्ध से बहुत लोगों ने बहुत तरह के प्रश्न पूछे होंगे, मगर जिंदगी में एक मौका था जब वह चुप रह गए, जवाब ना दे पाए और यशोधरा ने एक के बाद एक तीर चलाए और यशोधरा ने कहा कि मैं तुमसे दूसरी यह बात पूछती हूँ कि जो तुमने जंगल में जाकर पाया, क्या तुम छाती पर हाथ रखकर कह सकते हो कि वह यही नहीं मिल सकता था? यह भी बुद्ध कैसे कहे कि यही नहीं मिल सकता था क्योंकि सत्य तो सभी जगह है, जंगल में मिल सकता है तो बाजार में मिल सकता है, यह और बात है कि बाजार में जो है वह सोचता हो कि नहीं मिल सकता, मगर मिल जाने के बाद तो कोई कैसे कहेगा कि बाजार में नहीं मिल सकता, वह तो सब जगह है, फिर आंखें झुक गई और तीसरी बात उसने बड़ी गहरी चोट की मगर उस चोट में यशोधरा उलझ गई, तीसरी बात उसने की, राहुल को सामने किया और कहा कि यह तेरे पिता है, यह देख यह जो भिखारी की तरह खड़े हैं, हाथ में भिक्षा पात्र लिए, यही तेरे पिता है, यह तुझे छोड़ के भाग गए थे, जब तू एक ही दिन का था, अभी पैदा ही हुआ था, अब ये लौटे हैं फिर पता नहीं कब मिलना हो या ना हो, इनसे तू अपनी वसियत माँग ले तेरे लिए क्या इनके पास देने को है वह माँग ले यह बड़ी गहरी चोट थी बुद्ध के पास देने को था क्या? यशोधरा प्रतिशोध ले रही थी १२ वर्षों का लेकिन उसने कभी सोचा भी ना था कि यह घटना यूँ रुख ले लेगी ये बात यूँ बदल जाएगी भगवान दास आर्य ने भी पूछते वक्त नहीं सोचा होगा कि बात यूँ रुख ले लेगी बुद्ध ने तत्क्षण अपना भिक्षा पात्र राहुल को दे दिया और कहा कि बेटे मेरे पास कल और देने को नहीं लेकिन जो मैंने पाया है वह तबो दंगा त



मैं तुमसे यह कहता हूं : कोई चुनाव ही मत करो। तुम बस सजग और बोधपूर्ण रहो कि यही जीवन का ढंग है कि रात और दिन आते हैं, चले जाते हैं; दुख और सुख आते हैं, चले जाते हैं—और तुम मात्र साक्षी हो। न तुम्हें सुख को पकड़ना है और न तुम्हें दुख से बचना है, भागना है। तुम्हें अपने में रहना है—केंद्रित, स्थिर, अकंप। यही आनंद है।

ओशो **Osho**



Osho
विचार धारा

चार स्थान कभी नहीं भरते ..

Subhash Hooda

समुद्र, शमशान,

SH

तृष्णा का घड़ा और मनुष्य का मन ..

इतिहास कहता है कल सुख था
विज्ञान कहता है कल सुख होगा
ध्यान कहता है सुख अभी है
ओशो कहते हैं :-
हर पल ध्यान में जीना ही धर्म
का मूल रहस्य है...!!

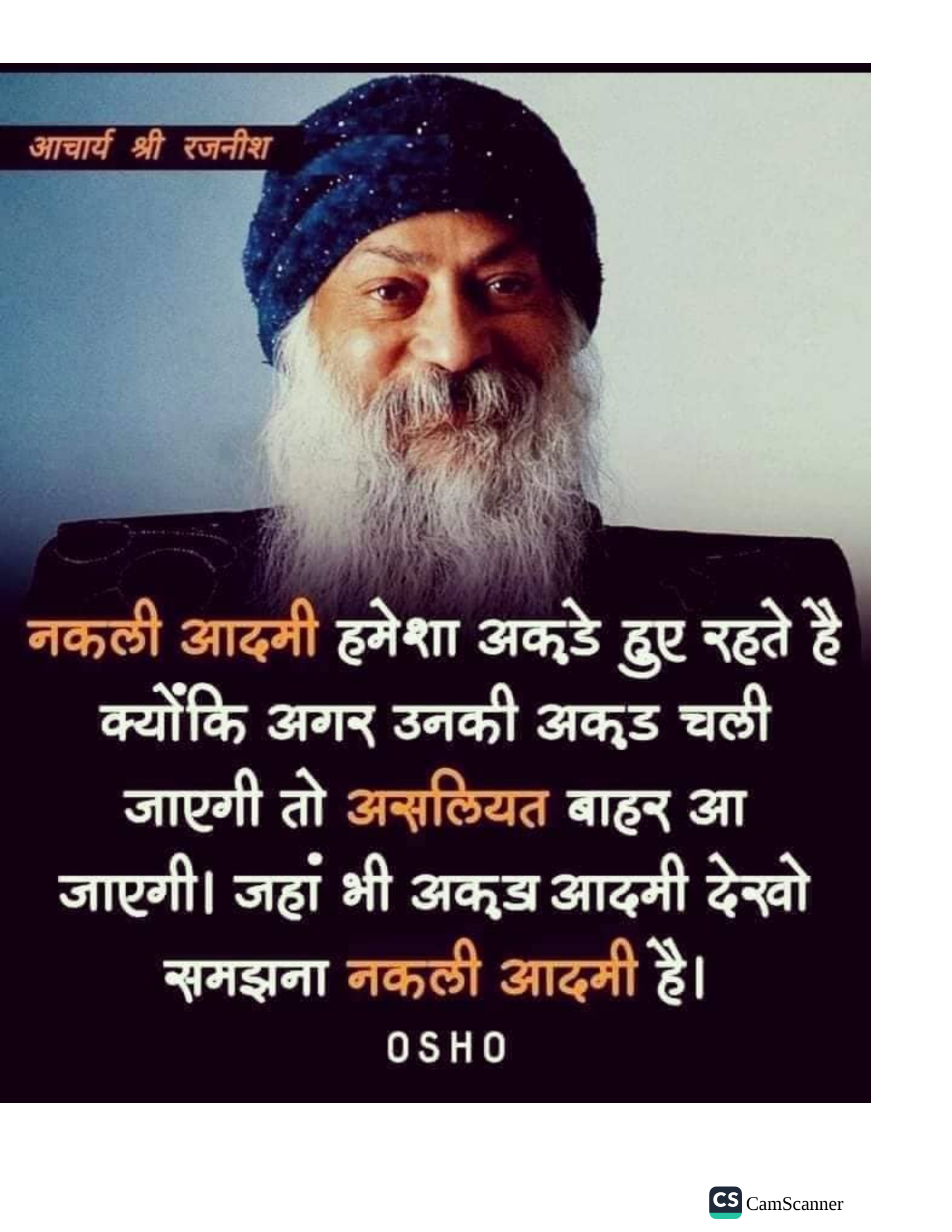




कबीर कहते हैं,
न तो मैं नाक बंद करता, न आंख बंद करता,
न उलटी-सीधी सांस लेता,
न प्राणायाम करता, न उलटा सिर पर खड़ा होता,
न शीर्षासन करता; कुछ भी नहीं करता;
सिर्फ होश को सम्हालकर रखता हूं।
सिर्फ सुरति को बनाए रखता हूं। बस,
सुरित का दीया भीतर जलता रहता है।
और जीवन पवित्र हो जाता है।
ओशो कहे कबीर दीवाना-प्रवचन-16

दिल्य मनुष्य का लक्ष्य

इं सानियत इसलिए खत्म हो रही है कि हमने दिल और दिमाग को अलग कर दिया है या यूं कहें कि सोच से भावनाओं को अलग कर दिया है. दिमाग दिल पर हावी हो गया है. दिल और दिमाग की स्थिति को भावनात्मक संतुलन की स्थिति भी नहीं कही जा सकती, क्योंकि संतुलित व्यक्तित्व की हमेशा ही जीत होती है, जबकि असंतुलन हमेशा असफलता का ही कारण बनता है. हम अपने आंतरिक और बाह्य व्यक्तित्व को अलग-अलग नहीं बांट सकते. दुनिया को एक नयी सोच, एक नया नजरिया अपनाने की जरूरत है- एक ऐसी सोच, जो वैज्ञानिक और आध्यात्मिक हो. इसे मैं क्रांति कहता हूं. वास्तव में दुनिया इसी क्रांति के इंतजार में है, जिसमें धर्म और विज्ञान का भेद खत्म हो जाए और धर्म में विज्ञान, विज्ञान में धर्म नजर आए यानि दोनों एक नजर आए, जिसमें भौतिकवादी और अध्यात्मवादी एक दूसरे पर लांछन न लगाएं, बल्कि एक दूसरे के सहयोगी हों. ऐसा इसलिए, क्योंकि यही जीवन का भी सार है. आप भौतिकवादी होने के साथ संतुलित रूप से आध्यात्मिक भी हो सकते हैं. मैं समाज को तकनीक और विज्ञान दोनों ही प्रकार से उन्नत होते हुए इससे मिली हर प्रकार की सुख-सुविधाओं के साथ आगे बढ़ते हुए देखना चाहता हूं, लेकिन मैं उतना ही ज्यादा समाज में आध्यात्मिक जागरूकता भी देखना चाहता हूं, ताकि वे विज्ञान की हर देन का भरपूर आनंद ले सकें. मैं हर किसी को भगवान बुद्ध की तरह बनते देखना चाहता हूं, लेकिन उतना ही मैं यह भी चाहता हूं कि दुनिया में जितना संभव हो, सुख-सुविधाएं बढ़ें और ये ज्यादा से ज्यादा खूबसूरत दिखें. हमें एक सेतु का निर्माण करना होगा. मानवता के भविष्य के लिए नयी सोच और नये मानव के साथ एक नयी दुनिया के निर्माण के लिए हमें जो करना है, वह यही कि पुरानी सभी सोच को छोड़ दें. चाहे वे आध्यात्मिक हों या भौतिक. सभी बैर भूल जाएं. इस प्रकार हम एक ऐसा यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाएं, जिसमें अपने बाह्य रूप में भौतिकवादी होने के साथ आत्मिक रूप में हम आध्यात्मिक भी हों. हमें इन दोनों की जोड़ना है, इनके बीच एक सेतु का निर्माण करना है.

A portrait of Acharya Shri Rajnesh, a spiritual leader with a long white beard and a blue turban. He is looking directly at the camera with a slight smile. The background is a plain, light-colored wall.

आचार्य श्री रजनीश

नकली आदमी हमेशा अकूडे हुए रहते है
क्योंकि अगर उनकी अकूड चली
जाएगी तो असलियत बाहर आ
जाएगी। जहां भी अकूड आदमी देखो
समझना नकली आदमी है।

OSHO

"प्रतिष्ठा तो वही खोजते हैं , जिन्हें आनंद न मिला हो । प्रतिष्ठा का अर्थ है कि हमें भीतर तो कुछ नहीं मिला , तो चलो बाहर के लोग ही कुछ प्रतिष्ठा दे दें , उससे ही शायद ऐसा लगे कि कुछ पा लिया है । प्रतिष्ठा का अर्थ है, दूसरे हमें थोड़ा भर दें , हम तो खाली हैं ।

दूसरे कहें ,
आप सुंदर ;
दूसरे कहें ,
आप शुभ ;
दूसरे कहें ,
आप शिव ;
दूसरे कहें ,
आप साधु -
दूसरे कह दें ;



ओशो दर्शन समूह

हम तो भीतर खाली हैं ।

अगर दूसरे न कहेंगे , तो हमारे भीतर कुछ भी नहीं है । प्रतिष्ठा का अर्थ है , उधार , कोई कह दे।" - ओशो

मनुष्य
बगैर मुहूर्त के
जन्म लेता है और
बगैर मुहूर्त के
उसकी मृत्यु हो
जाती है
लेकिन सारी उम्र
वो शुभ मुहूर्त के पीछे
भागता रहता है. **ओशो**

इस जगत में हमारे लिए वही सत्य सार्थक होता है,
जिसे पकड़ने की, जिसे ग्रहण करने की, जिसे
स्वीकार कर लेने की, भोग लेने की रिसेप्टिविटी,
ग्राहकता हममें पैदा हो जाती है।

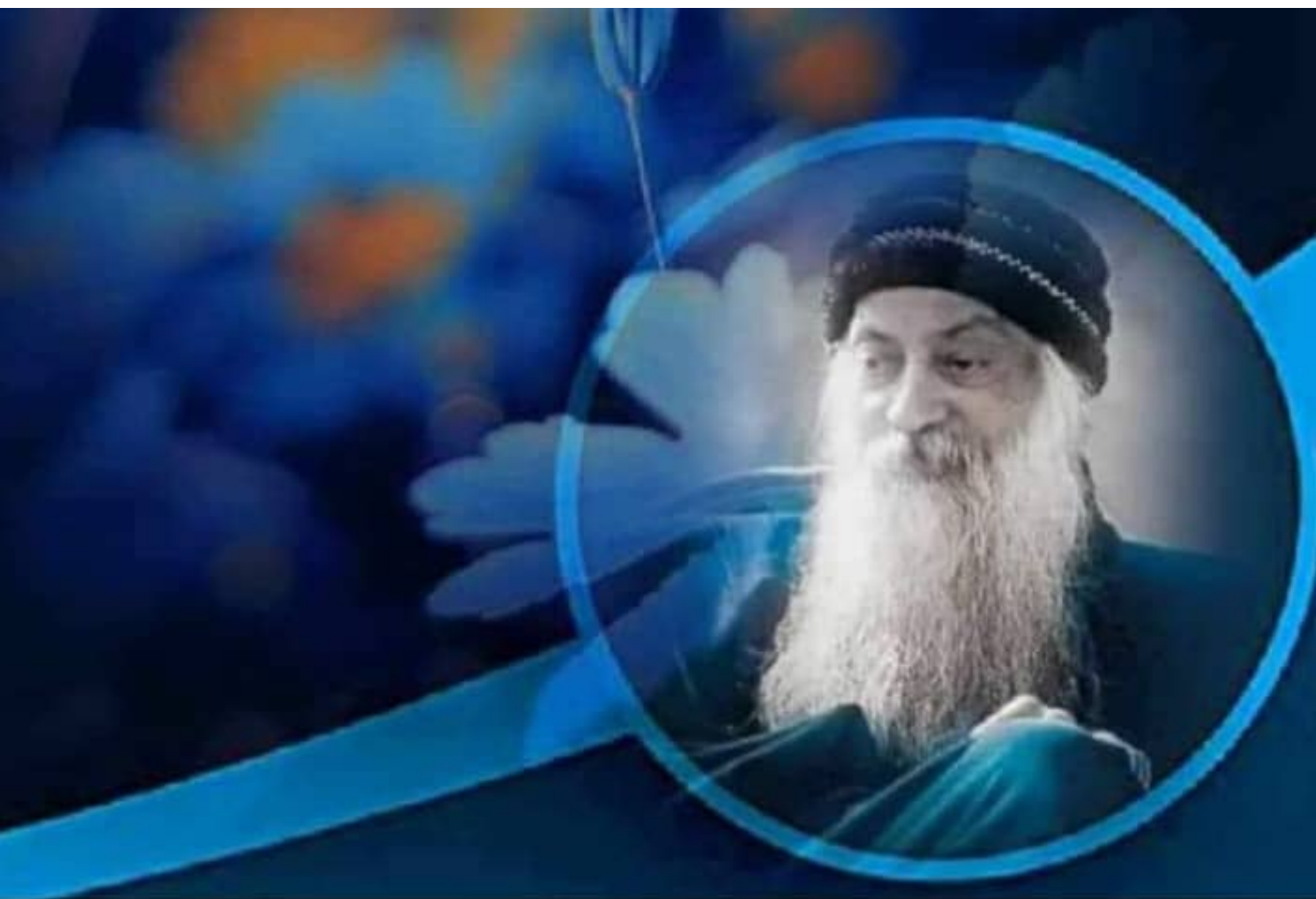
निश्चित ही हमारे भीतर कुछ और भी केंद्र है जो निष्क्रिय
पड़ा है—जिसे कभी कोई कृष्ण जान लेता है और
नाचता है, और कभी कोई जीसस जान लेता है और सूली
पर लटक कर भी कह पाता है लोगों से कि माफ कर देना
इन्हें, क्योंकि इन्हें पता नहीं कि ये क्या कर रहे हैं। निश्चित
ही कोई महावीर पहचान लेता है, और किसी बुद्ध के
भीतर वह फूल खिल जाता है। कोई केंद्र है हमारे भीतर
—कोई आंख, कोई कान—जो बंद पड़ा है। मैं तो
इसीलिए आया हूं कि वह जो बंद पड़ा हुआ केंद्र है, कैसे
सक्रिय हो जाए।

ओशो

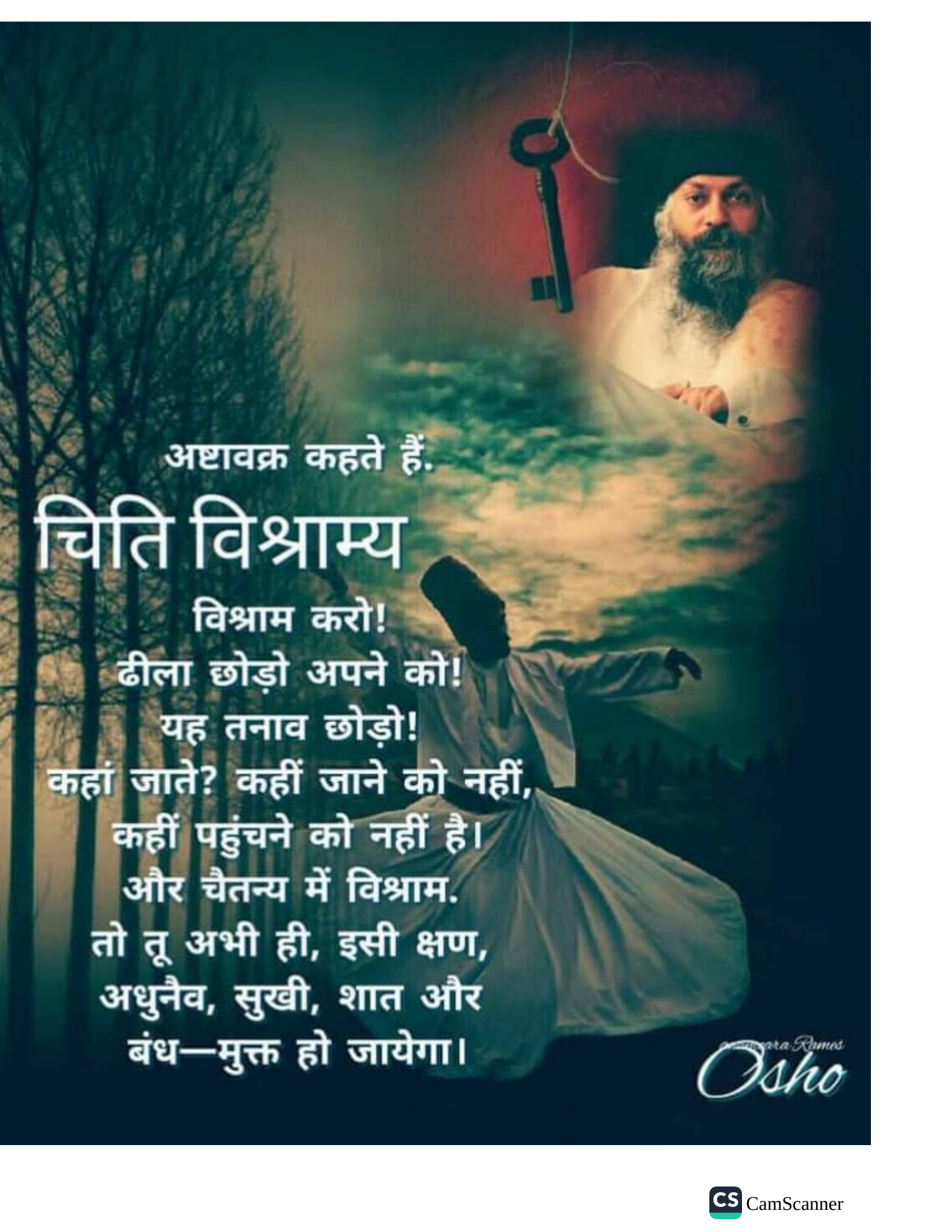
जिन खोजा तिन पाइयां

ओशो निर्वाण

समाप्त



इस जगत में जो तुम्हारे चारों तरफ हो रहा है, उसे होते
रहने देना है, वह अपने से उठेगा और गिर जाएगा। उसके
उठने के नियम हैं, उसके गिरने के नियम हैं, तुम व्यर्थ बीच
में मत आना। तुम चुपचाप दूर ही रह जाना।
~ओशो, महावीर वाणी



अष्टावक्र कहते हैं.

चिति विश्राम्य

विश्राम करो!

ढीला छोड़ो अपने को!

यह तनाव छोड़ो!

कहां जाते? कहीं जाने को नहीं,

कहीं पहुंचने को नहीं है।

और चैतन्य में विश्राम.

तो तू अभी ही, इसी क्षण,

अधुनैव, सुखी, शांत और

बंध—मुक्त हो जायेगा।

by Ramon
Osho



जीना 'सरल' है,प्यार करना सरल है
हारना और जीतना भी सरल है
तो फिर 'कठिन' क्या है .. ?
'सरल' होना बहुत 'कठिन' है..



संसार की चिंता मत करो।

क्योंकि, स्वयं की चिंताए ही क्या कम हैं ?

और दूसरों के संबंध में मत सोचो।

क्योंकि, अभी स्वयं के संबंध में ही सोचना कहाँ पूरा हुआ
हैं ? धर्म का क्या होगा ? यह सवाल असली नहीं हैं।

स्वयं का क्या हो रहा हैं! यही सवाल असली हैं।

और ऐसी बातें मत पूछो जिनसे तुम्हारी साधना का कोई
संबंध नहीं हैं।

क्योंकि ऐसी बातों का कोई अंत ही नहीं हैं, जब कि तुम्हारा
अंत निश्चित हैं। और इसके पहले की तुम्हारा अंत हो, उसे
जान लेना जरूरी हैं जिसका कोई अंत नहीं हैं.

ओशो

मैं भीतर के प्रेम की बात कर रहा हूँ। मेरी भी मजबूरी है।
शब्द तो मुझे वे ही उपयोग करने पड़ते हैं जो तुम भी उपयोग
करते हो तो मुश्किल खड़ी होती है। क्योंकि तुमने अपने अर्थ दे
रखे हैं। मैं जिस प्रेम की बात कर रहा हूँ वह कुछ और है। मीरा ने
किया, कबीर ने किया, नानक ने किया, जगजीवन ने किया। और
जिन्होंने यह प्रेम किया उन सबने यही कहा कि वहाँ हार नहीं है,
वहाँ जीत ही जीत है। वहाँ दुख नहीं है, वहाँ आनंद की पर्त पर
पर्त खुलती चली जाती है। और अगर तुम इस प्रेम को न जान
पाए तो जानना, जिंदगी व्यर्थ गई। ओशो अहोभाव



न ते सङ्गोऽस्ति केनापि किं शुद्धस्त्यक्तुमिच्छसि
।

संघातविलयं कुर्वन्नेवमेव लयं ब्रज ॥१॥

अष्टावक्र जी कहते हैं कि हे शिष्य! यदि तू निस्संग
है, निर्लिप्त है, अतः स्वयं शुद्ध-प्रबुद्ध और मुक्त है,
तब तेरे लिए ग्राह्य और त्याज्य कुछ भी नहीं है ।

('मैं देह हूँ' या 'मेरा यह देह है') इस द्वन्द्वात्मक भाव
से तू स्वयं अलग है, तो सब प्रकार के संघात से
जड़ वस्तुओं के संपर्क को त्यागकर अपने स्वरूप
में स्थित हो मोक्ष प्राप्त कर ॥१॥

जल्दी न करें।

एक घंटा तय कर लें स्वधर्म की खोज के लिए।
आपको पता नहीं, लेकिन आपकी अंतरात्मा को पता है
कि क्या है आपका स्वधर्म। आंख बंद करें। मौन हो जाएं।
चुप बैठकर सुनें। मौन, सिर्फ भीतर ध्यान को करके,
सुनने की कोशिश करें कि भीतर कोई बोलता है!
कोई आवाज!

anamcara Ramer

बहुत-सी आवाजें सुनाई पड़ेंगी।
पहचानने में कठिनाई न होगी कि ये बाहर की आवाजें हैं।
मित्रों के शब्द याद आएंगे, शत्रुओं के शब्द; दुकान,
बाजार, मंदिर, शास्त्र—सब शब्द याद आएंगे।
पहचान सकेंगे भलीभांति, बाहर के सुने हुए हैं। छोड़ दें।
उन पर ध्यान न दे। और भीतर! और प्रतीक्षा करते रहें।

अगर तीन महीने कोई सिर्फ एक घंटा
चुप बैठकर प्रतीक्षा कर सके धैर्य से,
तो उसे भीतर की आवाज का पता
चलना शुरू हो जाएगा। और एक बार
भीतर का स्वर पकड़ लिया जाए,
तो आपको फिर जिंदगी में
किसी से सलाह
लेने की जरूरत न पड़ेगी।

जब भी जरूरत हो, आंख बंद करें
और भीतर से सलाह ले लें;
○ पूछ लें भीतर से कि क्या करना है।
और स्वधर्म की यात्रा पर आप चल पड़ेंगे।

क्योंकि
भीतर से स्वधर्म की ही आवाज आती है।
भीतर से कभी
परधर्म की आवाज नहीं आती।
परधर्म की आवाज
सदा बाहर से आती है।

आचार्य श्री रजनीश

गीता दर्शन-अ.4

अंतर्वाणी-विद्या (अध्याय ४~प्र.१२(प्र.40))

तृष्णा के लिए
एक क्षण से ज्यादा चाहिए।
फैलाव के लिए, विस्तार के लिए
भविष्य चाहिए। और
भविष्य के फैलाव के लिए अतीत में जड़ें
और स्मृति चाहिए।
अगर अतीत भी नहीं,
भविष्य भी नहीं, यही क्षण है,
तो समय गिर गया
और वासना भी गिर गई।

इसलिए ज्ञानी
क्षण में जीना शुरू कर देता है,
अभी और यहीं।
और जैसे ही कोई
अभी और यहीं जीता है,
समय के बाहर हो
जाता है।

क्षण जो है,
समय के बाहर होने का
द्वार है।

आचार्य श्री रजनीश Osho
गीता दर्शन अ.8.प्र.7/95 सृष्टि और प्रलय का वर्तुल



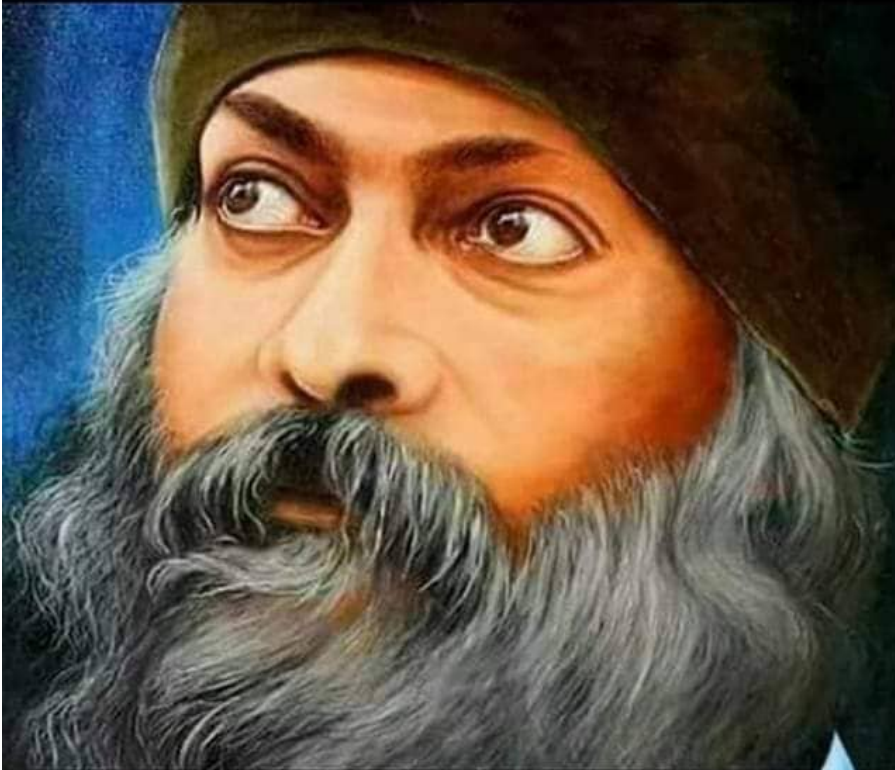
आचार्य श्री रजनीश चंद्रमोहन
मरौ है जोगी मरौ

गोरख कहते हैं कि मैं तुम्हें यह कह देना चाहता हूं तुम्हारा गुरु भी तुम्हारे भीतर छिपा है और तुम्हारा शिष्य भी। मगर यात्रा शिष्य से शुरू करनी पड़ेगी। जो अपने शिष्य को भी नहीं पहचान पाया वह अपने गुरु को कैसे पहचान पायेगा? गुरु तो सभी बनना चाहेंगे। कौन गुरु नहीं बनना चाहता लेकिन शिष्य बनने की क्षमता बहुत थोड़े-से लोगों की होती है। और जिनकी शिष्य बनने की क्षमता होती है वे ही एक दिन गुरु बन पाते हैं। शिष्य बनना अहंकार के विपरीत पड़ता है। गुरु तो कोई भी बनना चाहता है।

अहंभाव

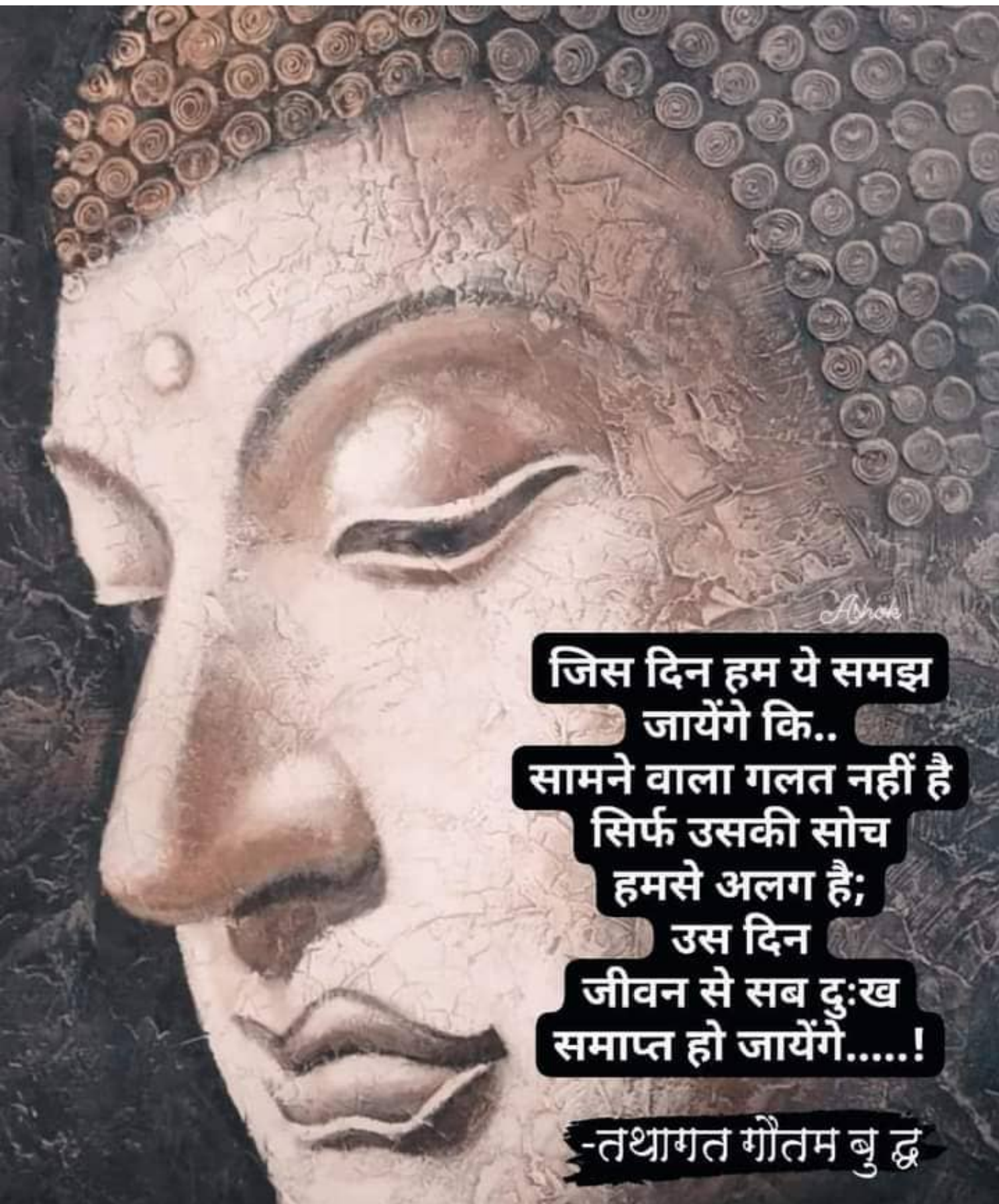


कितने तरह के क्रियाकांडों में लोग लगे हैं।
आचरण साध रहे हैं; ऐसा करना, वैसा करना,
यह खाना, वह खाना, यह छोड़ना। कोई नमक
छोड़े बैठा है, कोई घी छोड़े बैठा है। किसी ने
कुछ, किसी ने कुछ। इतनी छोटी-छोटी बातें
तुम जो कर रहे हो, इनसे क्या सार है? यह देह
जिसमें घी जाता है, जल जाएगी; फिर चाहे घी
डालो और चाहे न डालो। यह देह जिसमें नमक
जाता है, मिट्टी में मिल जाएगी; फिर नमक डालो
कि न डालो। तुम्हारे आचरण देह से भीतर जाते
नहीं। और जाना है देह के भीतर। पाना है देह के
भीतर। खोजना है उसे जो देहातीत है। आचरण
तो देह का ही होता है। स्नान कर लिया, रामनाम
चदरिया ओढ़ ली। बैठ गए, उपवास कर लिया
एक दिन। कभी घी छोड़ दिया, कभी नमक
छोड़ दिया। माला भी डाल ली तो कुछ होगा
नहीं; जब तक कि तुम उसकी माला के मनके
न बन जाओ। और क्या हुआ अगर तिलक भी
लगा लिया! ये सब बाहर के प्रतीक हैं, इन पर
रुक मत जाना।



पुनर्जन्म :

शरीर तो एक बार जो मिला , वह मिट्टी में गिर जाता है । लेकिन उसके भीतर चित - अनुभवों का जो संग्रह है -- वह नई छलांग ले लेता है , वह नया जन्म लेता है। इस बात को समझना। शरीर का नया जन्म हो ही नहीं सकता , क्योंकि मिट्टी है , गिरा सो गिरा। और आत्मा का नया जन्म हो ही नहीं सकता , क्योंकि आत्मा शाश्वत है ; न उसका कोई जन्म है , न मृत्यु है। फिर जन्म किसका होता है? दोनों के बीच में जो मन है , उसका ही जन्म होता है। यह जो पुनर्जन्म का सिद्धांत है , मन के संबंध में लागू होता है , आत्मा के संबंध में लागू नहीं होता। **ओशो** (Dr Sohan Lal Narang)



जिस दिन हम ये समझ
जायेंगे कि..

सामने वाला गलत नहीं है
सिर्फ उसकी सोच
हमसे अलग है;

उस दिन
जीवन से सब दुःख
समाप्त हो जायेंगे.....!

-तथागत गौतम बुद्ध

कंचन कंचन ही सदा , कांच कांच सो कांच।
दरिया झूठ सो झूठ है , सांच सांच सो सांच॥
सत्य शाश्वत है , सनातन है , समयातीत है । जो बदलता
है वह स्वप्न है । जो नहीं बदलता वही सत्य है। परिवर्तित
होते संसार के साथ जो अपने मोह को लगाता है , सिवाय
दुख के और कुछ भी नहीं पता है । यह अपरिहार्य है।
इस बात को ठीक से पहचान लेना जीवन में क्रांति
बन जाती है ; जैसे ही तुम्हें यह बात दिखाई पड़ गई
कि जो भी बदल रहा है उसके साथ मोह को बंधना
दुख पैदा करने का आयोजन है ; उसके साथ अपने
को जोड़ना नर्क में पड़ना है । नर्क कहीं और नहीं -
यहीं हैं । स्वर्ग भी कहीं और नहीं - यहीं है । जब भी तुम
शाश्वत से अपने को जोड़ लेते हो , स्वर्ग की सुगंध
फैल जाती है । और जब भी तुम अशाश्वत से अपने
को जोड़ लेते हो , नर्क की अग्नि में सड़ने लगते हो। स्वर्ग
और नर्क तुम्हारी दृष्टि की बात है , बस नजर - नजर
की बात है । ओशो संकलन:DrSohan Lal Narang



हरिजन तो वह है जिसने यह जाना कि मेरे में मेरा कुछ भी नहीं है, सब कुछ परमात्मा का है। *ब्राह्मण या हरिजन समानार्थी शब्द हैं, पर्यायवाची हैं*। लेकिन प्रत्येक व्यक्ति शूद्र की तरह पैदा होता है। शूद्र अर्थात् जो शरीर से बंधा है। शूद्र अर्थात् जो जानता है कि मैं शरीर ही हूँ। शूद्र अर्थात् जिसे अपने भीतर चैतन्य का अभी कोई अनुभव नहीं हुआ है, जिसने अपने भीतर अमृत के दर्शन नहीं किए हैं। और ब्राह्मण वह जिसने जाना कि मैं शरीर नहीं हूँ, मन भी नहीं हूँ— मन और शरीर से पार चैतन्य हूँ। जिसे साक्षी का अनुभव हुआ है वह ब्राह्मण है। लेकिन रैदास के संबंध में ये कहानियां झूठी हैं, ऐसा मैं स्पष्ट कहना चाहता हूँ। अब तक किसी ने ऐसा कहा नहीं कि ये कहानियां झूठी हैं। ये झूठी होनी ही चाहिए। इनके सब अंग झूठे हैं। पहले तो वे ठाकुरजी झूठे जो चमार से संबंधित होने के कारण किसी बनिए का सीधा स्वीकार न करें। *वे ठाकुरजी शूद्रों से भी गए—बीते। वे ठाकुरजी नहीं*, चमार। फिर रामानंद क्रोधित हों... और क्रोधित हों तो ठाकुरजी पर हों, गरीब ब्रह्मचारी का क्या कसूर? रामानंद क्रोधित हो ही नहीं सकते। *और रामानंद जैसा व्यक्ति अभिशाप दे— असंभव, बिल्कुल असंभव! फिर रैदास जैसा बच्चा मां का दूध इसलिए न पीए क्योंकि वह चमार है*। दूध भी कहीं चमार और ब्राह्मण हुआ है! मां भी कहीं चमार और ब्राह्मण हुई है! मां सिर्फ मां होती है, दूध सिर्फ दूध होता है। अगर तुम्हें भरोसा न हो तो एक चमार स्त्री का दूध और एक ब्राह्मण स्त्री का दूध लेकर चले जाना डाक्टर के पास और कहना कि बता दो, कौन चमार का है और कौन ब्राह्मण का। करवा लेना विश्लेषण, निदान। दुनिया की कोई ताकत सिद्ध नहीं कर सकेगी कि यह ब्राह्मण का दूध है और यह चमार का दूध है। दूध भी कहीं ब्राह्मण और चमार का होता है! हड्डी—मांस—मज्जा कहीं ब्राह्मण और चमार की होती है! और जब हड्डी—मांस—मज्जा चमार की नहीं होती तो आत्मा कैसे चमार की हो जाएगी?

और बड़े आश्चर्य की बात है। तुम दूध पी लेते हो भैंस का और कभी नहीं सोचते कि भैंस का दूध पी रहे हैं, कहीं भैंस न हो जाएं!

मुल्ला नसरुद्दीन का छोटा बेटा एकदम भागा हुआ बैठकखाने में आया और बोला मम्मी—मम्मी— और मोहल्ले की दस—पांच स्त्रियां बैठी गपशप कर रही थीं— कि पप्पा ने अभी— अभी मेरी आया की किस्सी ली। और आया घबड़ा रही थी। तो बोले, घबड़ा मत, मेरी मोटी भैंस तो

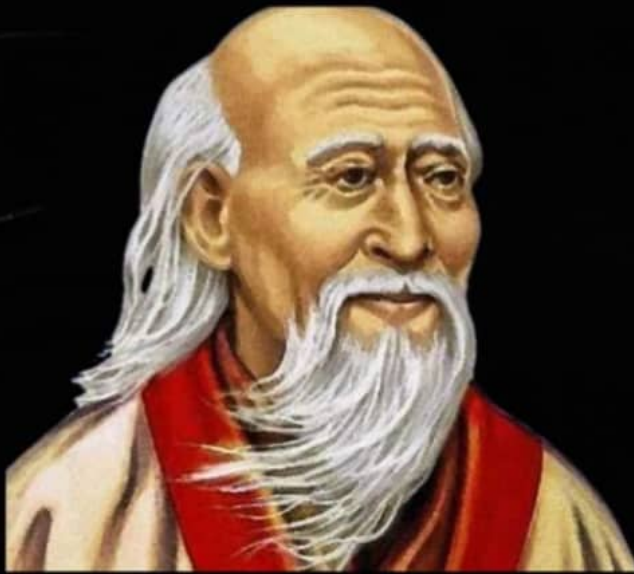


दूसरों को निपुण बनाना शक्ति है; अपने आप को निपुण बनाना सच्ची शक्ति है। "

लाओ त्ज़ू 🍀

.... See more

⚙️ • Rate this translation



**"Mastering others is strength;
mastering yourself is true
power."**

Lao Tzu

THE 5 MINUTE STOIC

👍❤️ 17K

127 comments • 2.2K shares



Like



Comment



Send



Share



रुपहली यादें उस दौर की

Suggested for you · 4d · 🌐

रसोई में व्यस्त लता दीदी की एक दुर्लभ तस्वीर 🍀



ओशो का हिन्दी साहित्य



Sulaxna Dixit Rawat · 19h · 🌐

असली सवाल अब यह है कि हम भी उससे कैसे लग जाएं जैसे वह हमसे लगा है बेशर्त: कहता नहीं कि तुम अच्छे हो तो ही तुम्हारे भीतर श्वास लूंगा; साधु हो तो हृदय धड़केगा; असाधु तो बंद; कानून के खिलाफ गए, दाएं चले, बाएं नहीं चले सड़क पर, अब श्वास न चलेगी। अल्लाह अगर ऐसा कंजूस होता कि सिर्फ साधुओं में धड़कता, असाधुओं में न धड़कता तो संसार बड़ा बेरौनक हो जाता; तो राम ही राम होते, रावण दिखाई न पड़ते। और तुम सोच सकते हो, राम ही राम हों तो कैसी बेरौनक हो जाए दुनिया! लिए अपना-अपना धनुष खड़े हैं; मारने तक को कोई नहीं जिसको बाण मारें! राम-कथा आगे बढ़ती नहीं!

परमात्मा राम में भी श्वास ले रहा है, रावण में भी; और जरा भी पक्षपात नहीं है, दोनों में लगा हुआ है। परमात्मा बेशर्त, बिना शुभ-अशुभ का विचार किए, तुम्हारी योग्यता-अयोग्यता का बिना विचार किए, तुम्हारे साथ है। तुम उसके साथ नहीं हो। सागर तो तुम्हारे साथ है; तुम उससे लड़ रहे हो!

ओशो

मेरे हिसाब में जब भी तुम किसी पराए के सहारे
पर चल पड़ते हो, तभी अपने को चुकने लगते हो।
जब भी कभी तुम किसी और इशारा पकड़ लेते हो,
तभी तुम अपने को खोने लगते हो।
और धीरे-धीरे एक भीड़ तुम्हें हर दिशा में
खींचने लगती है। तुम्हारे चीथड़े हो जाते हैं,
तुम्हारी जिंदगी कभी फूल नहीं बन पाती।

तुम अपने गीत गाओ।

न तुम दूसरे के हृदय की धड़कन से धड़क सकते हो,
न दूसरे की सांसों से सांसें ले सकते हो।
तो फिर क्यों दूसरों के जीवन से जीवन लेना?

मैं प्रत्येक व्यक्ति को
उसका व्यक्तित्व देना
चाहता हूं।



ओशो
कोपलें फिर फूट जाई (प्रवचन-09)

अपना ढंग
बदलो ! अपने
आसपास
जीवन को सुंदर
बनाओ ! सभी
को यह महसूस
होने दो कि
तुम्हारे साथ
होना एक
उपहार है

* ओशो *





आदमी का हृदय.....!
ना किसी पद से भर सकता है,
ना प्रतिष्ठा से, ना किसी स्त्री से..!
ना धन से, क्यों.....!
क्योंकि हृदय सिर्फ
परमात्मा का प्रेम भरने के लिए है।
ओशो

Dp



दो।

एस धम्मो सनंतनो

Bhagwaan shree Rajnessh



RAJNEESH KE PRANAM

Personal blog

Call now

2

1 comment

Like

Comment

Send

Share

**Rajneesh ke pranam**

35m · 🌐

बंद करो रोना-चिल्लाना



बंद करो रोना—चिल्लाना! शिकायत छोड़ो! यहां कोई भी नहीं है जिससे शिकायत हो सके। यहां कोई नहीं है जिसको दोष दिया जा सके। तुम्हारे अतिरिक्त और कोई उत्तरदायी नहीं है। जिम्मा लो! जागो! और अपने जीवन का सूत्र अपने हाथ में सम्हालो! थोड़ी— थोड़ी रोशनी बढ़ने लगेगी। आज जो बूंद—बूंद की तरह होगी, कल सागर हो जाता है। संदेह छोड़ो अपने पर। हटाओ व्यर्थ संदेह के जाल को। क्योंकि संदेह से भरे तुम कुछ भी न कर पाओगे तुम कुंछं भी न हो पाओगे। बहुत लोग सिर्फ जीते हैं, कुछ हो नहीं पाते। जीते हैं और मरते हैं; उनके भीतर कुछ परम जीवन की झलक नहीं आ पाती। आ सकती थी। मगर कोई जबर्दस्ती नहीं ला सकता है। तुम ही ला सकते हो, बस तुम ही ला सकते हो।

इसलिए समय खराब मत करो—न किसी की शिकायत में, न किसी को दोष देने में, न उत्तरदायित्व टालने में, सारी शक्ति को एक बात पर संलग्न करो, एक सूत्र पर कि तुम जागने लगे! कुछ भी करो, एक बात ध्यान रखो कि जागकर करेंगे। हजार बार हारोगे, कोई फिकर नहीं; एक हजार एकवीं बार जीत जाओगे। चट्टान भी टूट जाती है। और यह चट्टान तो केवल तुम्हारी ही आदतों की है। ज्योति की धार जरा इस पर बहने दो।

एस धम्मो सनंतनो

Bhagwaan shree Rajnessh

**Sanjeev Mishra** • Follow

20h • 🌐

दुनियां क्या कहेगी

*एक साधू किसी नदी के पनघट पर गया और पानी पीकर पत्थर पर सिर रखकर सो गया, पनघट पर पनिहारिन आती-जाती रहती हैं तो तीन-चार पनिहारिनें पानी के लिए आईं तो एक पनिहारिन ने कहा "आहा! साधु हो गया, फिर भी तकिए का मोह नहीं गया... पत्थर का ही सही, लेकिन रखा तो है।" *

*पनिहारिन की बात साधु ने सुन ली... उसने तुरंत पत्थर फेंक दिया... दूसरी बोली, "साधु हुआ, लेकिन खीज नहीं गई.. अभी रोष नहीं गया, तकिया फेंक दिया।" तब साधु सोचने लगा, अब वह क्या करें? तब तीसरी पनिहारिन बोली, "बाबा! यह तो पनघट है, *

*यहां तो हमारी जैसी पनिहारिनें आती ही रहेंगी, बोलती ही रहेंगी, उनके कहने पर तुम बार-बार परिवर्तन करोगे तो साधना कब करोगे?" लेकिन एक चौथी पनिहारिन ने बहुत ही सुन्दर और एक बड़ी अद्भुत बात कह दी "साधु, क्षमा करना, लेकिन हमको लगता है, तूने सब कुछ छोड़ा लेकिन अपना चित्त नहीं छोड़ा है, अभी तक वहीं का वहीं बने हुए है। दुनिया पाखण्डी कहे तो कहे, तू जैसा भी हो, हरिनाम लेते रहो।" सच तो यही है, दुनिया का तो काम ही है कहना *

*आप ऊपर देखकर चलोगे तो कहेंगे... "अभिमानी हो गए।" नीचे देखकर चलोगे तो कहेंगे... "बस किसी के सामने देखते ही नहीं।" आंखे बंद कर दोगे तो कहेंगे कि... "ध्यान का नाटक कर रहा है।" चारों ओर देखोगे तो कहेंगे कि... "निगाह का ठिकाना नहीं।" निगाह घूमती ही रहती है।" और परेशान होकर आंख फोड़ लोगे तो यही दुनिया कहेगी कि... "किया हुआ भोगना ही पड़ता है।" ईश्वर को राजी करना आसान है, लेकिन संसार को राजी करना असंभव है, दुनिया क्या कहेगी उस पर ध्यान दोगे तो आप अपना ध्यान नहीं लगा पाओगे *



[← Reels ▾](#)

34K

जनम पर बाटी मिठाई मरण पर बनाई खीर
दोनो ही ना खा पावे चाहे राजा हो या फकीर ।



56



3.3K

[qatil_quotes_](#)

दो पल का है बस ये सफर ... more



Send

🎵 [qatil_quotes_](#) · Original audio [@qatil_quotes_](#)



@sahityasathi

गुणवान पूजनीय हैं।



ब्राह्मण मत पूजिए जो होवे गुणहीन,
पूजिए चरण चंडाल के जो होने गुण प्रवीन ।

भावार्थ -:

किसी को सिर्फ इसलिए नहीं पूजना चाहिए की
पूजनीय पद पर है। यदि व्यक्ति में पद के योग्य
गुण नहीं हैं तो उसे नहीं पूजना चाहिए। जो पद पर
नहीं हैं और गुणवान हैं तो वह पूजनीय हैं।



64K



798

- संत रविदास



1.7K

🎵 Use audio



sahityasathi

संत शिरोमणी श्री रविदास जी की जयंती पर उन्हें न... more



Send

🎵 kesh Chaurasia · Enchant

🔥 OLD FILM^ by _gho





अक्सर तुम नैतिक आदमी को धार्मिक आदमी समझ लेते हो और बड़ी भूल में पड़ जाते हो। नैतिक आदमी सज्जन है, संत नहीं। सज्जन का अर्थ है जो ठीक ठीक है, वही करता है। संत का अर्थ है जिसे अब ठीक और गलत कुछ भी न रहा; जो होता है, वही होने देता है। अब कुछ करता नहीं। सज्जन तो कर्ता है, संत अकर्ता है। अक्सर सज्जन को ही संत समझने की भूल हो जाती है। इसलिए तुम सज्जनों को महात्मा कहने लगते हो। महात्मा बड़ी और बात है।

Osho

अहंकारग्रहान्मुक्तः स्वरूपमुपपद्यते।
चंद्रवत्विमलः पूर्ण सदानन्दः स्वयंप्रभः॥11॥
क्रियानाशाद्भवेच्चिन्तानाशो तस्माद्वासनाक्षयः।
वासनाऽपक्षयोमोक्षः स जीवन्मुक्तिरिष्यते॥ 12॥
सर्वत्र सर्वतः सर्व ब्रह्ममात्रावलोकनम्।
सद्भावभावनादाढ्याद्वासनालक्ष्यमनुते ॥ 13॥
प्रमादो ब्रह्मनिष्ठायां न कर्तव्यः कदाचन।
प्रमादो मृत्युरित्याहुर्विद्यायां ब्रह्मवादिनः॥ 14॥
यथाऽपकृष्टं शैवालं क्षणमात्र न तिष्ठति।
आवृणोति तथा माया प्राज्ञां वाऽपि परांगमुखम्॥ 15॥

अहंकार को पकड़ने से मुक्त हुआ मनुष्य ही आत्म-
स्वरूप को प्राप्त करता है, और फिर चंद्रमा जैसा निर्मल
होकर, सदा आनंदरूप और स्वयं-प्रकाश बनता है।
क्रिया का नाश होने से चिंता का नाश होता है, और
चिंता का नाश होने से वासना का नाश होता है।
वासना-नाश ही मोक्ष है, और यही जीवन्मुक्ति कहलाती
है।
सर्वत्र, सब तरफ, सबको केवल ब्रह्मरूप देखना--ऐसी
सदभावना दृढ़ होने से वासना का नाश होता है।
ब्रह्मनिष्ठा में कभी प्रमाद न करना, क्योंकि यही मृत्यु है,
ऐसा ब्रह्मवादी कहते हैं।
जिस प्रकार शैवाल को पानी से कुछ हटा भी दिया जाए
तो भी वह पानी को बिना ढंके नहीं रहता, इसी प्रकार
समझदार व्यक्ति भी ब्रह्मनिष्ठा से थोड़ा भी विमुख हो
जाए तो माया फिर उसे लिप्त कर देती है।

इस सूत्र में बहुत सी मूल्यवान बातें कही गई हैं।
मूल्यवान ही नहीं, मौलिक भी।



सुनो लोगों की प्रार्थनाएं मंदिरों में
जाकर वे क्या मांग रहे हैं;
और तुम पाओगे कि वे मंदिर में भी
संसार मांग रहे हैं।
किसी के बेटे की शादी नहीं हुई है;
किसी के बेटे को नौकरी नहीं मिली है;
किसी के घर में कलह है।
मंदिर में भी तुम संसार को ही
मांगने जाते हो।
तुम्हारा मंदिर सुपर मार्केट होगा।
वह बड़ी दुकान होगा,
जहां ये चीजें भी बिकती हैं जहां
सभी कुछ बिकता है।
लेकिन तुम्हें अभी मंदिर की
कोई पहचान नहीं।
इसलिये तुम्हारे मंदिरों में जो पुजारी बैठे हैं
वे दुकानदार हैं;
क्योंकि वहां जो लोग आते हैं,
वे संसार के ही ग्राहक हैं।।



...

तीन बातों की मैंने चर्चा की—

सम्यक आहार की, सम्यक व्यायाम की, सम्यक निद्रा की।

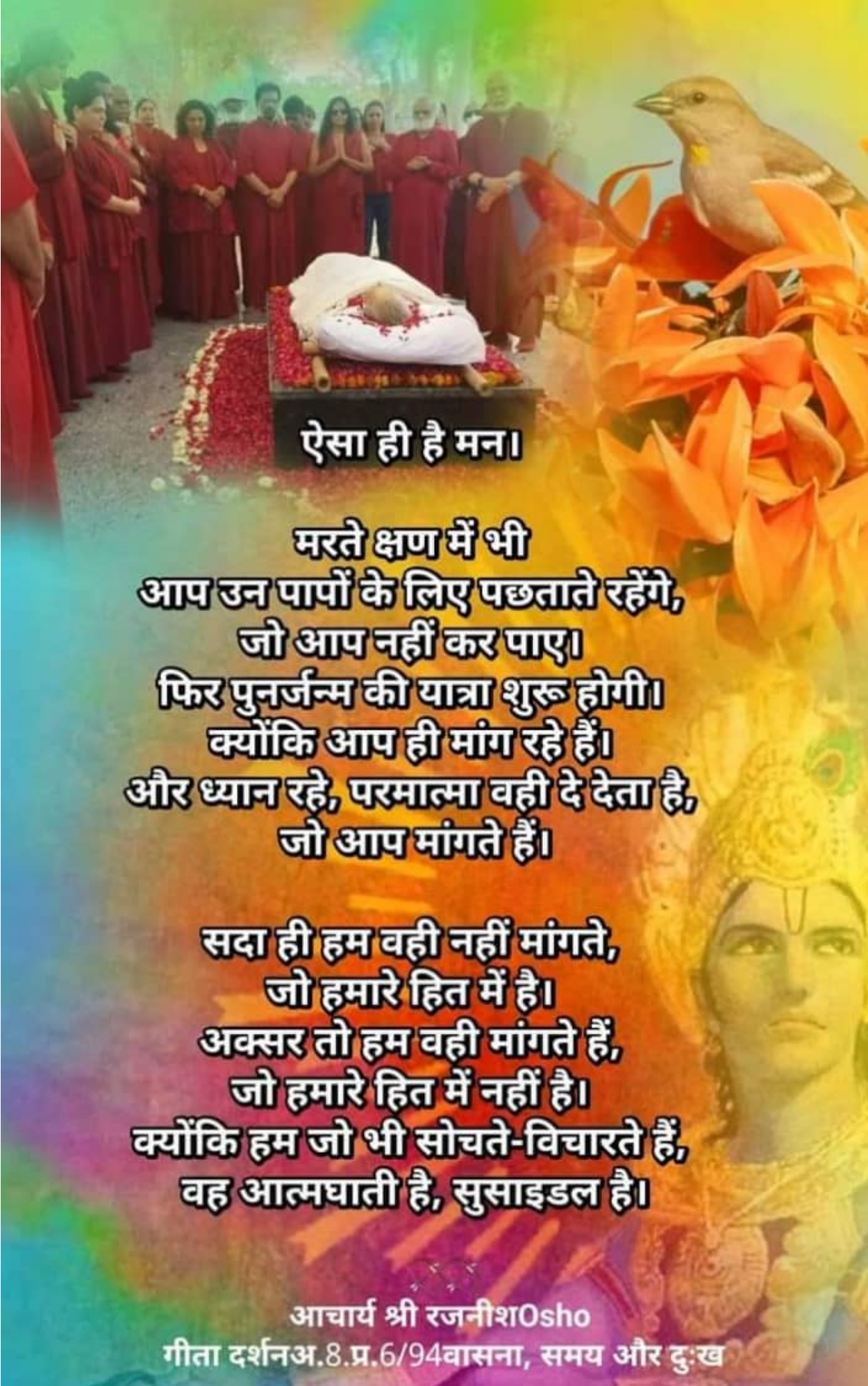
वे तीनों ही शरीर से संबंधित हैं। शरीर एक भूमिका है साधक की लेकिन अकेली भूमिका नहीं है। उसके और भीतर प्रवेश करें, तो उसका एक भाव जगत भी है। और भीतर प्रवेश करें, उसका एक विचार जगत भी है।

शरीर के तल पर तीन बातें कहीं ऐसी ही तीन बातें भाव के तल पर और ऐसी ही तीन बातें विचार के तल पर और आपको मुझे कहनी हैं। अभी रात्रि में, मैं भाव के तल पर कौन सी तीन बातें हैं जो भूमिका बनेंगी उनकी थोड़ी चर्चा कर लूं और फिर ध्यान के लिए हम बैठेंगे।

सबसे पहले तो हमारे बाहर जो जगत है उसके प्रति एक भाव। उसके बाद हमारे कर्मों का जो जगत है उसके प्रति एक भाव। और सबसे अंत में हमारी संवेदनाओं का जो जगत है उसके प्रति एक भाव। हमारे बाहर तीन जगत हमें घेरे हुए हैं। एक तो वस्तुओं और व्यक्तियों का जगत है, जो हमसे चारों तरफ फैला हुआ है। उसके बाद हम जो कर्म करते हैं उनकी एक पर्त है, उनका एक जगत है, वह हमें घेरे हुए है। उसके बाद जो सुख-दुख की संवेदनाएं हमें छूती हैं, स्पर्श करती हैं, उनका एक जगत है, वह हमें अंत में घेरे हुए है। ऐसी तीन पर्तें हमें घेरे हुए हैं। इन तीनों पर्तों के लिए तीन भावनाएं ध्यान के लिए सहयोगी हैं।...

-ओशो,

समाधि कमल, प्रवचन - 5



ऐसा ही है मन।

मरते क्षण में भी
आप उन पापों के लिए पछताते रहेंगे,
जो आप नहीं कर पाए।
फिर पुनर्जन्म की यात्रा शुरू होगी।
क्योंकि आप ही मांग रहे हैं।
और ध्यान रहे, परमात्मा वही दे देता है,
जो आप मांगते हैं।

सदा ही हम वही नहीं मांगते,
जो हमारे हित में है।
अक्सर तो हम वही मांगते हैं,
जो हमारे हित में नहीं है।
क्योंकि हम जो भी सोचते-विचारते हैं,
वह आत्मघाती है, सुसाइडल है।

आचार्य श्री रजनीशOsho
गीता दर्शन अ.8.प्र.6/94 वासना, समय और दुःख

लाओत्से कहता है,
ईश्वर होता है तब जब मनुष्य में ईश्वर को
अनुभव करने की क्षमता होती है।
उसी मात्रा में ईश्वर प्रकट होता है
जिस मात्रा में मनुष्य का हृदय
उसे अनुभव करने में सक्षम होता है।



ईश्वर की उपस्थिति मनुष्य के
अनुभव करने की क्षमता पर निर्भर है।
ईश्वर है या नहीं, यह मूल्यवान नहीं है;
उसे अनुभव करने का द्वार खुला है या नहीं,
यही मूल्यवान है।

#-ताओ उपनिषद-प्र-74, ओशो



Like



Comment



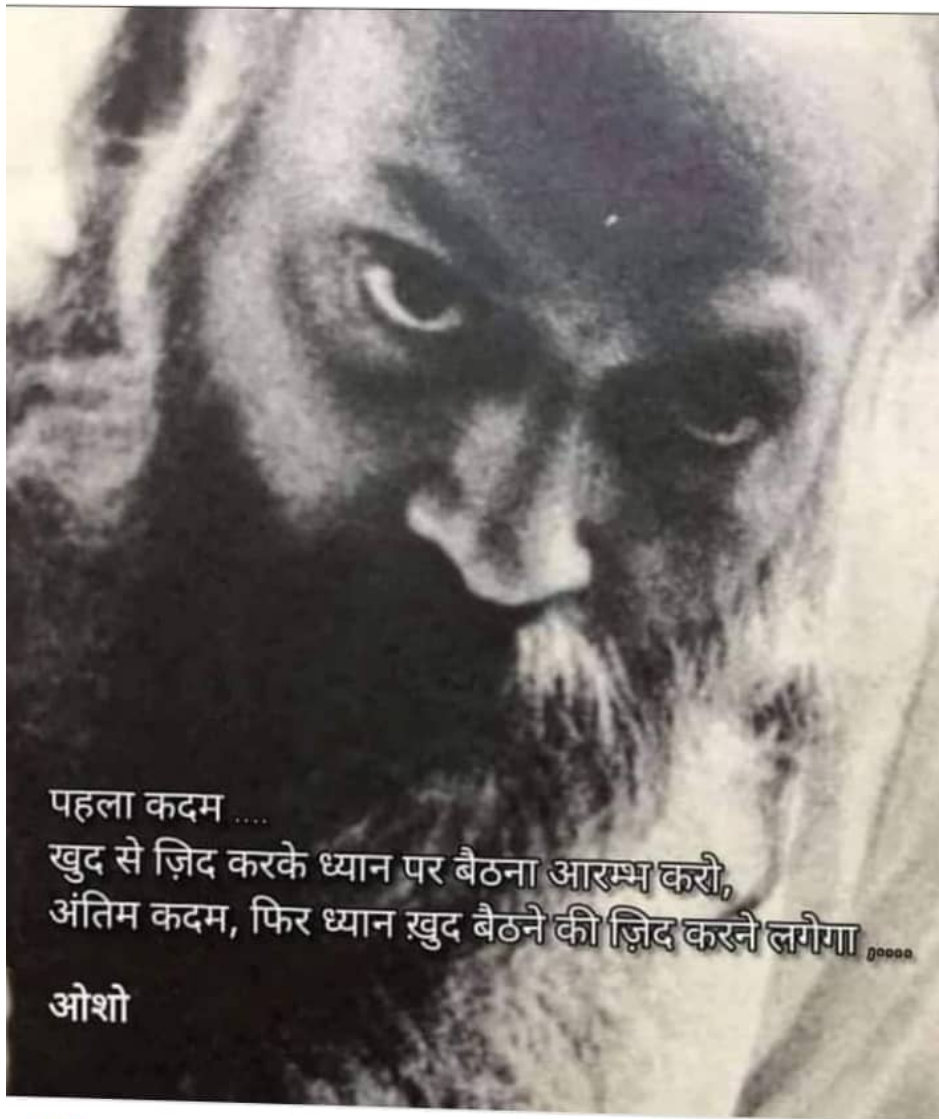
Send



Share

**osho जीवन मृत्यु**

Meera Sharma · 10h · 🌐



28

8 comments · 4 shares



Like



Comment



Send



Share

**Kriya Yogis**

Positive Vibes Quotes · 1d · 🌐



15 सेकंड के लिए लाल डॉट को रेट्रो।



ओशो का हिन्दी साहित्य

Rahul Kumar Ojha · 3h · 🌐



बोध कथा

जापान में एक सचमुच महान बुद्ध, होतेई की सुंदर कहानी है। जापान में उन्हें लाफिंग बुद्धा कहा जाता है, क्योंकि जैसे ही उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ तो उन्होंने हंसना शुरू कर दिया।

लोगों ने उससे पूछा, "तुम क्यों हंस रहे हो?"

उन्होंने कहा, "क्योंकि मैं प्रबुद्ध हो गया हूँ!"

"लेकिन," उन्होंने कहा, "हम आत्मज्ञान और हँसी के बीच कोई संबंध नहीं देख सकते हैं। हंसने की क्या बात है?"

होतेई ने कहा, "मैं इसलिए हंस रहा हूँ क्योंकि मैं उस चीज की तलाश कर रहा था जो पहले से ही मेरे अंदर थी। मैं खोज रहा था खोजी को; इसे खोजना असंभव था। आप साधक को कहां खोज सकते हैं? आप ज्ञाता को कैसे जान सकते हैं? यह ऐसा था जैसे कोई कुत्ता अपनी ही पूँछ का पीछा कर रहा हो या आप अपनी ही छाया का पीछा कर रहे हों; आप इसे पकड़ नहीं सकते।

यह कितना हास्यास्पद था, पूरा प्रयास कितना बेतुका था! इसीलिए मैं हंस रहा हूँ: मैं हमेशा से एक बुद्ध रहा हूँ! अब यह बड़ा अजीब लगता है कि लाखों जन्मों तक मैं बेहोश रहा। यह अविश्वसनीय लगता है कि मैं अपने आप को कैसे खोता चला गया। अब जब मुझे पता चला है तो मेरे अंदर बड़ी हंसी उठ रही है।"

और ऐसा कहा जाता है कि वह अपनी मृत्यु तक हंसते रहे; यह दुनिया के लिए उनका एकमात्र संदेश था।

~ओशो



415

39 comments

**आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]**

सुरजीत सिंह रिबॉर्न · 1d ·

हमारा मन अति सूक्ष्म है, पर है बड़ा शक्तिशाली। आपने बहुतों से सुना होगा कि -

"अगर हमने अपने मन को वश (काबू) में कर लिया तो मानो सारी दुनिया को वश (काबू) में कर लिया।"

चलिए बड़े ही सिम्पल उदाहरण से समझते हैं:

जैसे एक घर होता, घर में उससे छोटा कमरा होता है, कमरे से छोटा उसका दरवाजा होता है, दरवाजे से छोटी उसकी कुंडी होती है, कुंडी से भी छोटा ताला होता है और ताले से छोटी चाबी होती है।

छोटी सी चाँबी से ताला लगाते ही सारे घर का कब्जा हमारी जेब में होता है। इसी प्रकार छोटे से मन को कब्जे में करते ही सारा संसार हमारे कब्जे में आ जाता है। मजे की बात देखिए- चाँबी को एक ओर घुमाया तो ताला बंद हो जाता है और दूसरी ओर घुमाने से खुल जाता है। इसी प्रकार मन की चाँबी को परमात्मा की तरफ घुमाने से हम संसार से खुल जाते हैं और परमात्मा से बंध जाते हैं।

हमारा मन हमेशा ही अनुकूलता चाहता है, इसे जरा प्रतिकूलता बर्दाश्त नहीं ..ये हमेशा ही सुख चैन ढूँढ़ता है। मन की तुलना हाथी से की जा सकती है। हाथी को कितना भी नहला - धुला कर आप खड़ा करो, लेकिन वो फिर अपनी सूंड से मिट्टी-धूल अपने ऊपर डाल लेता है। ऐसे ही हमारे ऊपर भी जमाने की मिट्टी धूल रोज-रोज गिरती - रहती है।



शरीर में भभूत लपेट कर नाच उठते हैं, तो समस्त भौतिक गुणों-अवगुणों से मुक्त दिखते हैं। यही शिवत्व है।

शिव जब अपने कंधे पर देवी सती का शव ले कर नाच रहे थे, तब वे मोह के चरम पर थे। वे शिव थे, फिर भी शव के मोह में बंध गए थे। मोह बड़ा प्रबल होता है, किसी को नहीं छोड़ता। सामान्य जन भी विपरीत परिस्थितियों में, या अपनों की मृत्यु के समय यूँ ही शव के मोह में तड़पते हैं। शिव शिव थे, वे रुके तो उसी प्रिय पत्नी की चिता भष्म से होली खेल कर युगों युगों के लिए वैरागी हो गए। मोह के चरम पर ही वैराग्य उभरता है न। पर मनुष्य इस मोह से नहीं निकल पाता, वह एक मोह से छूटता है तो दूसरे के फंदे में फंस जाता है। शायद यही मोह मनुष्य को शिवत्व प्राप्त नहीं होने देता।

कहते हैं काशी शिव के त्रिशूल पर टिकी है। शिव की अपनी नगरी है काशी, कैलाश के बाद उन्हें सबसे अधिक काशी ही प्रिय है। शायद इसी कारण काशी एक अलग प्रकार की वैरागी ठसक के साथ जीती है।

मणिकर्णिकाघाट, हरिश्चंद्रघाट, युगों युगों से गङ्गा के इस पावन तट पर मुक्ति की आशा ले कर देश विदेश से आने वाले लोग वस्तुतः शिव की अखण्ड ज्योति में समाहित होने ही आते हैं।

होली आ रही है। फागुन में काशी का कण कण फ़ाग गाता है - "खेले मशाने में होली दिगम्बर खेले मशाने में होली" सच यही है कि शिव के साथ साथ हर जीव संसार के इस महाश्मशान में होली ही खेल रहा है। तबतक, तबतक उस मणिकर्णिका की ज्योति में समाहित नहीं हो जाता। संसार शमशान ही तो है।

हर हर महादेव 🚩🙏



आध्यात्मिक कहानियां 🌳

Shaifali Agarwal · 1d · 🌐🌐

मान्यता है कि काशी की मणिकर्णिका घाट पर भगवान शिव ने देवी सती के शव की दाहक्रिया की थी। तबसे वह महाशमशान है, जहाँ चिता की अग्नि कभी नहीं बुझती।

एक चिता के बुझने से पूर्व ही दूसरी चिता में आग लगा दी जाती है। वह मृत्यु की लौ है जो कभी नहीं बुझती, जीवन की हर ज्योति अंततः उसी लौ में समाहित हो जाती है। शिव संहार के देवता हैं न, तो इसीलिए मणिकर्णिका की ज्योति शिव की ज्योति जैसी ही है, जिसमें अंततः सभी को समाहित हो ही जाना है। इसी मणिकर्णिका के महाशमशान में शिव होली खेलते हैं।

शमशान में होली खेलने का अर्थ समझते हैं ? मनुष्य सबसे अधिक मृत्यु से भयभीत होता है। उसके हर भय का अंतिम कारण अपनी या अपनों की मृत्यु ही होती है। शमशान में होली खेलने का अर्थ है उस भय से मुक्ति पा लेना।

शिव किसी शरीर मात्र का नाम नहीं है, शिव वैराग्य की उस चरम अवस्था का नाम है जब व्यक्ति मृत्यु की पीड़ा, भय या अवसाद से मुक्त हो जाता है। शिव होने का अर्थ है वैराग्य की उस ऊँचाई पर पहुँच जाना जब किसी की मृत्यु कष्ट न दे, बल्कि उसे भी जीवन का एक आवश्यक हिस्सा मान कर उसे पर्व की तरह खुशी खुशी मनाया जाय। शिव जब शरीर में भभूत लपेट कर नाच उठते हैं, तो समस्त भौतिक गुणों-अवगुणों से मुक्त दिखते हैं। यही शिवत्व है।

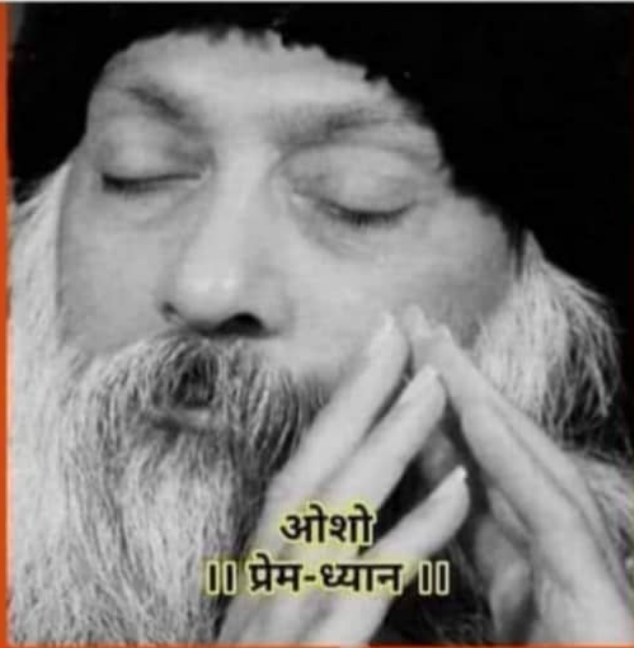
शिव जब अपने कंधे पर देवी सती का शव ले कर नाच रहे थे, तब वे मोह के चरम पर थे। वे शिव थे, फिर भी शव के मोह में बंध गए थे। मोह बड़ा प्रबल होता है, किसी को नहीं छोड़ता। सामान्य जन भी विपरीत परिस्थितियों में, या अपनों की मृत्यु के समय यूँ ही शव के मोह में तड़पते हैं। शिव शिव थे, वे रुके तो उसी प्रिय पत्नी की चिता भष्म से होली खेल कर युगों युगों के लिए वैरागी हो गए। मोह के चरम पर ही वैराग्य उभरता है न। पर मनुष्य इस मोह से नहीं निकल पाता, वह एक मोह से छूटता है तो दूसरे के फंदे में फंस जाता है। शायद यही मोह



स्त्री भी पुरुष हो सकती है। और तुम्हारे "तथाकथित" पुरुष भी पुरुष हो सकते हैं। स्त्री और पुरुष से इसका कुछ लेना देना नहीं है। स्त्री का देह का परकोटा भिन्न है। यह परकोटे की बात है। घर यूं बनाओ या यूं बनाओ। घर का स्थापत्य भिन्न हो सकता है। द्वार-दरवाजे भिन्न हो सकते हैं। घर के भीतर के रंग-रौनक भिन्न हो सकती है। घर के भीतर की साज-सजावट भिन्न हो सकती है।

मगर घर के भीतर रहने वाला जो मालिक है, वह एक ही है। वह न तो स्त्री है, न पुरुष तुम्हारे अर्थों में। स्त्री और पुरुष दोनों के भीतर जो बसा हुआ चैतन्य है, वही वस्तुतः पुरुष है।

🍀❤️🍀 ओशो 🍀❤️🍀



सब तैरना ही
सिखाते है
डुबना
तो ख़द सीखना पडता है

**रजनाशपुरम**

Munabai Makvana · 1d · 🌐

🌹 पुरूष शब्द का अर्थ क्या है? 🌹

पुरूष शब्द का अर्थ ठीक से समझ ले। पुरूष का अर्थ यह मत समझ लेना कि जो नारी नहीं है। इस सुत्र को लिखने वाला होगा कोई पंडित, होगा कोई थोथी, व्यर्थ की बौद्धिक बातों से भरा हुआ आदमी। पुरूष का अर्थ ठीक उस शब्द में छिपा है। पुर का अर्थ होता है: नगर। नागपुर, कानपुर, उदयपुर, जयपुर। पुर का अर्थ होता है नगर। और पुरूष का अर्थ होता है: नगर के भीतर जो बसा है। शरीर है नगर, सच मैं ही नगर है। विज्ञान की दृष्टि में भी नगर है। वैज्ञानिक कहते हैं: एक शरीर में सात अरब जीवाणु होते हैं।

अभी तो पूरी पृथ्वी की भी इतनी संख्या नहीं; अभी तो चार अरब को पर कर गई है। लेकिन एक-एक शरीर में सात अरब जीवाणु हैं। सात अरब जीवित चेतनाओं का यह नगर है। और उसके बीच में तुम बसे हो। मूर्च्छित हो, इसलिए पता नहीं। होश में आ जाओ तो पता चले। तुम देह नहीं हो, मन नहीं हो, भाव नहीं हो।

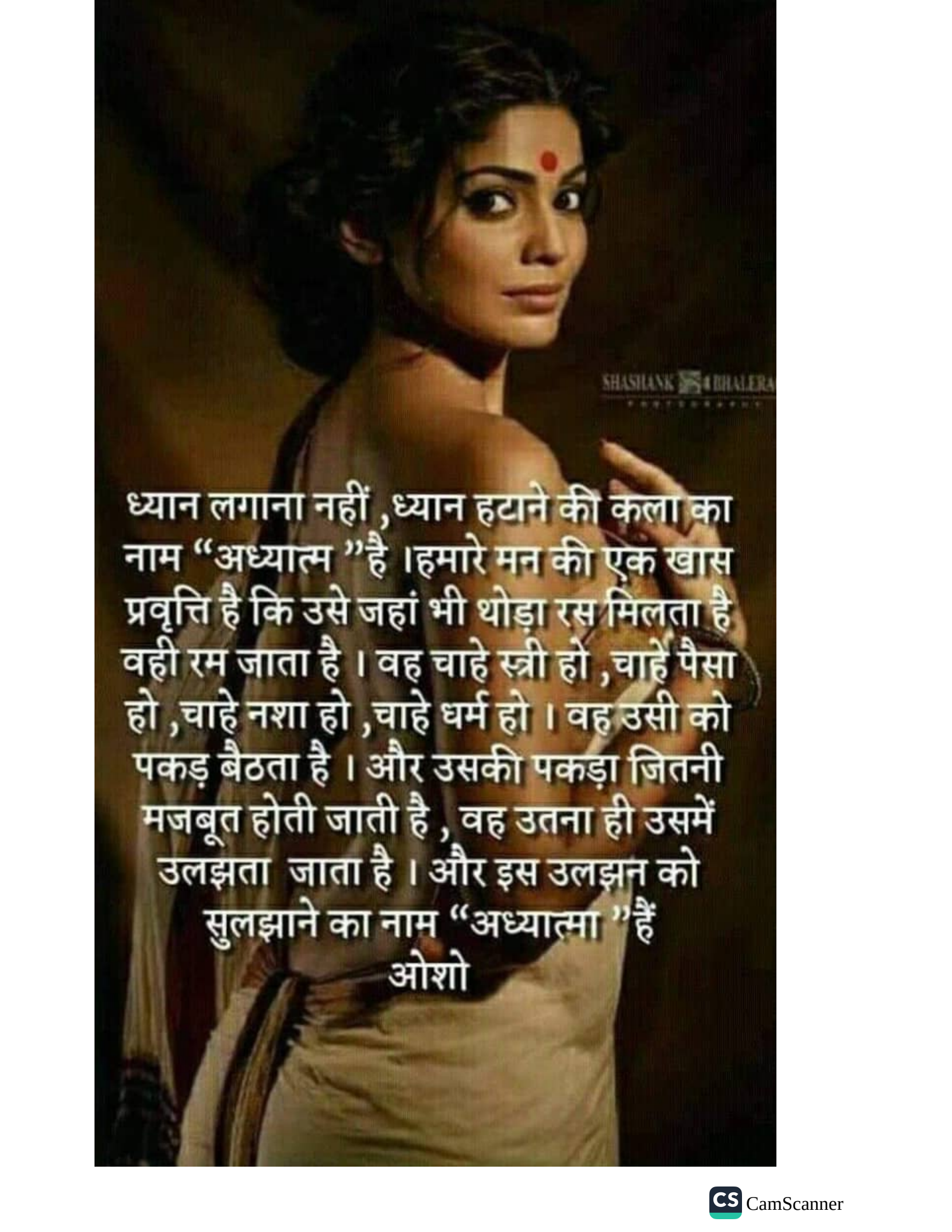
देह का परकोटा बाहरी परकोटा है तुम्हारे नगर का, जैसे बड़ी दीवाल होती है, पुराने नगरों के चारों और—किले की दीवले। फिर मन का परकोटा है—और एक दीवाल।

और फिर भावनाओं का परकोटा सबसे अंतरंग है—और एक दीवाल। और इन तीन दीवालों के पीछे तुम हो चौथे। जिसको जानने वालों ने तुरिया कहा है। तुरीय का अर्थ होता है। चौथा। और जब तुम चौथे को पहचान लोगे; तुरीय को पहचान लोगे, इतने जाग जाओगे कि जान लोगे—न मैं देह हूं, न मैं मन हूं, न मैं हृदय हूं। मैं तो केवल चैतन्य हूं। सिर्फ बुद्धत्व हूं—उस क्षण तुम पुरूष हुए।

स्त्री भी पुरूष हो सकती है। और तुम्हारे “तथाकथित” पुरूष भी पुरूष हो सकते हैं। स्त्री और पुरूष से इसका कुछ लेना देना नहीं है। स्त्री का देह का परकोटा भिन्न है। यह परकोटे की बात है। घर यूं बनाओ या यूं बनाओ। घर का स्थापत्य भिन्न हो सकता है। द्वार-दरवाजे भिन्न हो सकते हैं।

दिखाई पड़ गया कि
जो भी चीज बनती है, वह मिटती है।
और जो बनाने वाला है,
वही मिटाने वाला भी है।
और मिटने और बनने में
हमने विरोध नहीं देखा,
एक ही प्रक्रिया के दो हिस्से देखे।
सुबह और सांझ में
हमने विरोध नहीं देखा।
सुबह जिसे उगते देखा,
सांझ उसे डूबते देखा।
वही सूरज सांझ को डूबता है,
जो सुबह उगा था।

आचार्य श्री रजनीशOsho
गीता दर्शन अ.8. प्र.7/95 सृष्टि और प्रलय का वर्तुल



SHASHANK & BHALLERA
PHOTOGRAPHY

ध्यान लगाना नहीं , ध्यान हटाने की कला का नाम “अध्यात्म ” है । हमारे मन की एक खास प्रवृत्ति है कि उसे जहां भी थोड़ा रस मिलता है वही रम जाता है । वह चाहे स्त्री हो , चाहे पैसा हो , चाहे नशा हो , चाहे धर्म हो । वह उसी को पकड़ बैठता है । और उसकी पकड़ा जितनी मजबूत होती जाती है , वह उतना ही उसमें उलझता जाता है । और इस उलझन को सुलझाने का नाम “अध्यात्मा ” हैं
ओशो



OshO

संन्यासी वही है, जो कहता है:
न मुझे सत्कार चाहिये न सम्मान चाहिये,
न मुझे अपमान की चिंता है।

मैं तो जैसा हूं, वैसा ही जीऊंगा।
तुम सम्मान दो तो ठीक,
तुम अपमान दो तो ठीक;
वह तुम्हारा प्रश्न है,
तुम्हारी समस्या है,
मेरा उससे कुछ लेना-देना नहीं।

जीवतो यस्य कैवल्यं विदेहोऽपि स केवलः।
 समाधिनिष्ठतामेत्य निर्विकल्पो भवानघ॥ 16॥
 अज्ञानहृदयग्रन्थेर्निः शेषविलयस्तदा।
 समाधिनाऽविकल्पेन यदाऽद्वैतात्मदर्शनम्॥ 17॥
 अत्रात्मत्वं दृढीकुर्वन्नहमादिषु संत्यजन्।
 उदासीनतया तेषु तिष्ठेद्वटपटादिवत्॥ 18॥
 ब्रह्मादिस्तम्ब पर्यन्तं मृषामात्रा उपाधयः।
 ततः पूर्ण स्वात्मनं पश्येदेकात्मना स्थितम्॥ 19॥
 स्वयं ब्रह्मा स्वयं विष्णुः स्वयमिन्द्रः स्वयम् शिवः।
 स्वयं विश्वमिदं सर्वं स्वस्मादन्यन्न किञ्चन्॥ 20॥

जिसको जीवित-अवस्था में ही कैवल्य (ब्रह्मनिष्ठा)
 प्राप्ति हो गई है, वह देहरहित होने पर भी ब्रह्म रूप ही
 रहेगा। इसलिए हे निर्दोष! समाधिनिष्ठ होकर विकल्पों से
 शून्य बन।

जिस समय निर्विकल्प समाधि द्वारा आत्मा का दर्शन
 होता है, उसी समय हृदय की अज्ञानरूप गांठ का पूर्णतः
 नाश होता है।

आत्मा के ऊपर ही आत्म-भाव को दृढ़ करके अहंकार
 आदि के ऊपर वाले आत्म-भाव का त्याग करना। घड़ा,
 वस्त्र आदि पदार्थों से जिस प्रकार उदासीन भाव से रहा
 जाता है, उसी प्रकार अहंकार आदि की तरफ से भी
 उदासीन भाव से रहना।

ब्रह्मा से लेकर खंभ तक की सब उपाधियां झूठी हैं,
 इसलिए एक स्वरूप में रहने वाले अपने पूर्ण आत्मा का
 ही सर्वत्र दर्शन करना।

स्वयं ही ब्रह्मा, स्वयं विष्णु, स्वयं इंद्र, स्वयं शिव, स्वयं
 जगत और स्वयं ही सब कुछ है, स्वयं से भिन्न कुछ भी
 नहीं है।

जीवन में जो भी पाने योग्य है, वह जीवन में ही पाया जा





अहोभाव

सब तुम्हारी दृष्टि पर निर्भर है, जीवन
वही हो जाता है जो तुम्हारे देखने
कि दृष्टि होती है।

ओशो

करम गत टारे नाहीं टरे

मीराबाई

करम गत टारे नाहीं टरे करम गत टारे नाहीं टरे
सतबादी हरिचंद से राजा सो तो नीच घर नीर भरे
पाँच पाडु अरु कुन्ती द्रोपती हाड़ हिमालय गरे
जज्ञ किया बलि लेन इंद्रासन सो पाताल धरे
'मीरा' के प्रभू गिरिधर-नागर बिष से अमृत करे

और खोजिए





तलाश कीजिए



मेरे गिरिधर-गोपाल दूसरो न कोई

मीराबाई

मेरे गिरिधर-गोपाल दूसरो न कोई
मेरे गिरिधर-गोपाल दूसरो न कोई

जा के सिर मोर-मुकुट मेरो पति सोई
तात मात भ्रात बंधु अपना नहिं कोई

छाँड़ दई कुल की कान क्या करिहै कोई
संतन ढिंग बैठी बैठी लोक लाज खोई

चुनरी के किए टूक टूक ओढ़ लीन्ह लोई
मोती मूंगे उतार बन माला पोई

अँसुवन जल सींच सींच प्रेम बेल बोई
अब तो बेल फैल गई आनंद फल होई

दूध की मथनिया बड़े प्रेम से बिलोई
माखन जब काढ़ि लियो छाछ पिए कोई

आई मैं भक्ति काज जगत देख मोही
दासी मीग गिरिधर प्रभू तारो ब मोही





🔍 तलाश कीजिए



सूफी/संत संत वाणी सूफी क़व्वाली सूफी कलाम

हे री मैं तो प्रेम दिवानी मेरा दर्द न जाने कोय

मीराबाई

हे री मैं तो प्रेम दिवानी मेरा दर्द न जाने कोय
हे री मैं तो प्रेम दिवानी मेरा दर्द न जाने कोय

सूली ऊपर सेज हमारी किस बिध सोना होय
गगन मँडल पए सेज पिया की किस बिध मिलना होय

घायल की गत घायल जानै की जिन लाई होय
जौहरी की गत जौहरी जानै की जिन जौहर होय

दर्द की मारी बन बन डोलूँ बेद मिल्या नहिं कोय
'मीरा' की प्रभू पीर मिटैगी जब बेद सँवलिया होय

अगला शबद

जोगिया तू कब रे मिलेगो आई



मीराबाई



जोगिया तू कब रे मिलेगो आई

मीराबाई

जोगिया तू कब रे मिलेगो आई
जोगिया तू कब रे मिलेगो आई
तेरे ही करन जोग लियो है घर घर अलख जगाई
दिवस न भूख रैन नहिं निद्रा तुझ बिन कुछ न सुहाई
'मीरा' के प्रभू गिरिधर-नागर मिल कर तपत बुझाई

अगला शब्द

करम गत टारे नाहीं टरे

मीराबाई



पिछला शब्द



हे री मैं तो प्रेम दिवानी मेरा दर्द न जाने कोय

मीराबाई





बताऊंगा नहीं। और अगर मैं ही तोड़ दूंगा, तो तब कस भरसा करू कि तू नहीं बताएगा!

तो जो प्रकट हो जाए, वह अप्रकट नाम मात्र को था, जस्ट फार दि नेम्स सेक। बीज नाम मात्र को अप्रकट है। इतनी तो तैयारी दिखा रहा है प्रकट होने की। ऐसा आतुर है। नाम मात्र को अव्यक्त है।

तो अभी जिस अव्यक्त की बात कही, कृष्ण कहते हैं, अर्जुन, वह अव्यक्त माना है। लेकिन नाम मात्र को, क्योंकि व्यक्त हो जाता है। माना कि अदृश्य है, लेकिन दृश्य हो जाता है।

तो जिस अदृश्य में दृश्य छिपा हो, वह बहुत अदृश्य हो नहीं सकता। हमें दिखाई न पड़ता हो, यह और बात है। हमारी आंखें कमजोर होंगी, हमारी आंखें न पकड़ पाती होंगी, लेकिन वह बिलकुल अव्यक्त नहीं कहा जा सकता। इन दोनों के पार, इस अव्यक्त के भी पार, बियांड दिस अनमैनिफेस्ट, वह ब्रह्म है। वह अव्यक्त से भी अति परे। बियांड दि बियांड, अव्यक्त से भी अति परे। उसके भी पार, पार के भी पार, अतिक्रमण का भी अतिक्रमण करता हुआ वह ब्रह्म है, जो सनातन अव्यक्त है। जो सनातन अव्यक्त है, इटरनली अनमैनिफेस्ट। यह तो टेम्पररी अनमैनिफेस्ट है, अस्थायी रूप से अव्यक्त है, फिर व्यक्त हो जाता है, फिर अव्यक्त हो जाता है।

लेकिन एक ऐसा अव्यक्त भाव भी है, एक ऐसा अव्यक्त अस्तित्व भी है, एक ऐसा अव्यक्त होना भी है, जो कभी व्यक्त न हुआ है, न होगा, न हो सकता है। वह अव्यक्त के भी परे है। वही ईश्वर, वही ब्रह्म, वही परमात्मा, वही मोक्ष—या जो भी नाम हम देना चाहें, दें—वही पूर्ण ब्रह्म परमात्मा सब भूतों के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता है। क्यों? क्योंकि उसका कभी कोई सृजन नहीं हुआ, वह नष्ट नहीं हो सकता। उसकी कभी सुबह नहीं हुई, उसकी सांझ नहीं हो सकती। उसकी कभी सृष्टि नहीं हुई, तो उसकी कभी प्रलय नहीं हो सकती है।

अगर तू जानना ही चाहता है अमृत को और अगर तू जानना ही चाहता है कि कैसे मैं लोगों की मृत्यु से बचूं और कैसे मैं मृत्यु से बचूं, विनाश से बचूं, तो अर्जुन से कृष्ण ने कहा, तू उसे जान ले, जो अव्यक्त के भी पार है।



आचार्य श्री रजनीशOsho

गीता दर्शन अ.8.प्र.7/95

सृष्टि और प्रलय का वर्तुल 7



ओशो का हिन्दी साहित्य

Rahul Kumar Ojha · 2h · 🌐



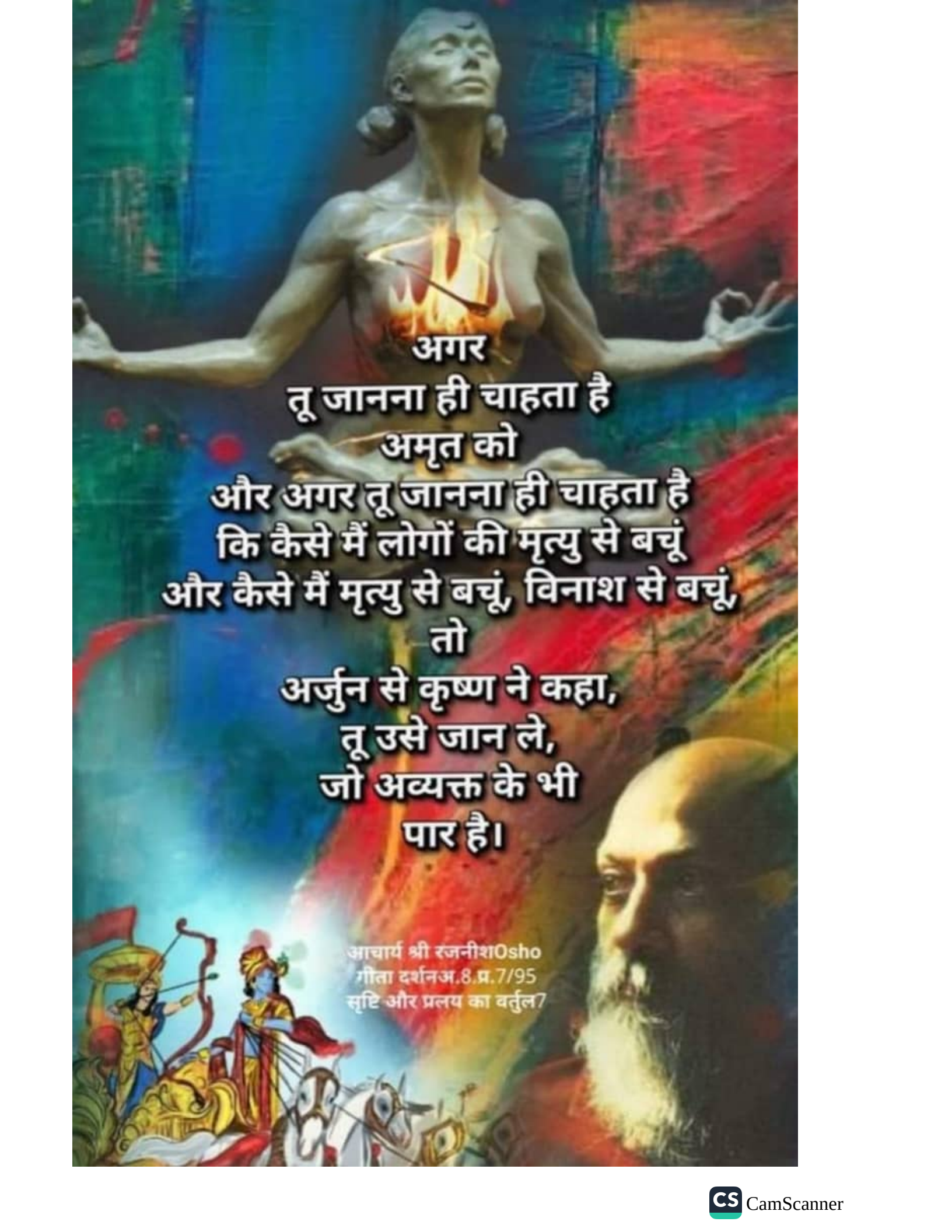
एक सूफी फकीर हुआ है, बायजीद। एक धनपति उसके पीछे पड़ा है। रोज उसके पैर दाबता है और कहता है, राज बता दो। टेल मी दि सीक्रेट। तुम्हारे जीवन का राज बता दो। बायजीद उससे कहता है, जो राज है, अगर वह बता दिया जाए, तो राज कैसे रहेगा? सीक्रेट का मतलब ही यह है कि जिसे मैं तुझे बताऊंगा नहीं। जिसे मैंने कभी किसी को नहीं बताया। तभी तो वह राज है, अन्यथा फिर राज कैसे रहेगा? लेकिन वह आदमी मानता ही नहीं। वर्ष बीतने को आ गया। वह है कि रोज पैर दबाए जाता है। वह कहता है बायजीद को कि बता दो राज। तो बायजीद ने एक दिन कहा कि तो ठीक है, आज बताए देता हूं, लेकिन एक शर्त रहेगी। क्या तुम मेरे राज को राज रखोगे? किसी को बताओगे नहीं? विल यू मेनटेन दि सीक्रेट ऐज सीक्रेट? कसम खाओ कि क्या तुम राज को राज रखोगे और किसी को बताओगे नहीं।

उस आदमी ने कहा, कसम परमात्मा की कि राज को राज रखूंगा और किसी को बताऊंगा नहीं। बायजीद ने कहा, शाबाश, अगर तू अपनी कसम रख सकता है, तो मैं भी अपनी कसम रखूंगा और राज को बताऊंगा नहीं। और अगर मैं ही तोड़ दूंगा, तो तेरा कैसे भरोसा करूं कि तू नहीं बताएगा!

तो जो प्रकट हो जाए, वह अप्रकट नाम मात्र को था, जस्ट फार दि नेम्स सेक। बीज नाम मात्र को अप्रकट है। इतनी तो तैयारी दिखा रहा है प्रकट होने की। ऐसा आतुर है। नाम मात्र को अव्यक्त है।

तो अभी जिस अव्यक्त की बात कही, कृष्ण कहते हैं, अर्जुन, वह अव्यक्त माना है। लेकिन नाम मात्र को, क्योंकि व्यक्त हो जाता है। माना कि अदृश्य है, लेकिन दृश्य हो जाता है।

तो जिस अदृश्य में दृश्य छिपा हो, वह बहुत अदृश्य हो नहीं सकता। हमें दिखाई न पड़ता हो, यह और बात है। हमारी आंखें कमजोर होंगी, हमारी आंखें न पकड़ पाती होंगी, लेकिन वह बिल्कुल अव्यक्त नहीं कहा जा सकता। इन दोनों के पार, इस अव्यक्त के भी पार, बियांड दिस अनमैनिफेस्ट, वह ब्रह्म है। वह अव्यक्त से भी अति परे। बियांड दि बियांड, अव्यक्त से भी अति परे। उसके भी पार, पार के भी पार, अतिक्रमण का भी अतिक्रमण करता हुआ वह ब्रह्म है, जो सनातन अव्यक्त है। जो सनातन अव्यक्त है, इटरनली अनमैनिफेस्ट। यह तो

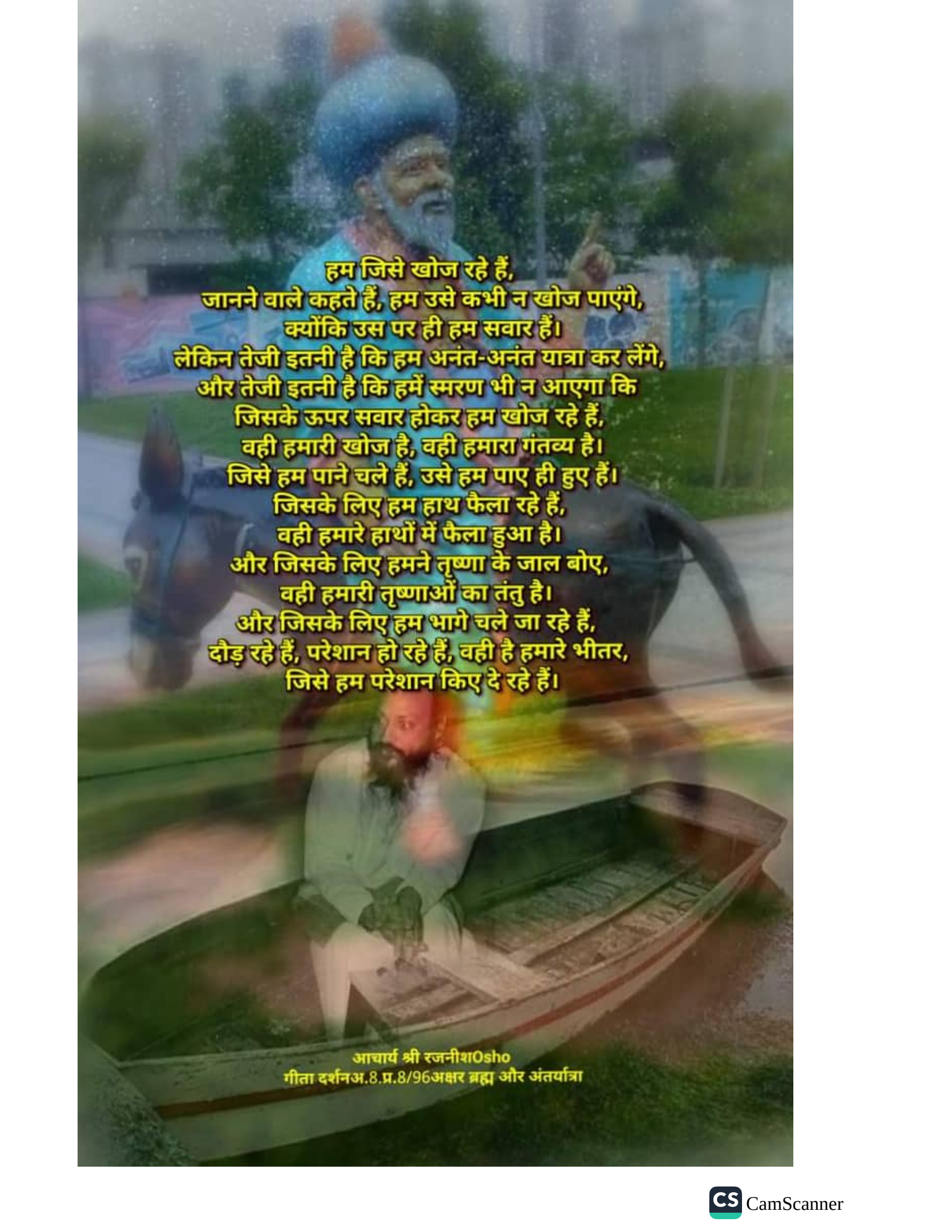


अगर
तू जानना ही चाहता है
अमृत को
और अगर तू जानना ही चाहता है
कि कैसे मैं लोगों की मृत्यु से बचूं
और कैसे मैं मृत्यु से बचूं, विनाश से बचूं,
तो
अर्जुन से कृष्ण ने कहा,
तू उसे जान ले,
जो अव्यक्त के भी
पार है।

आचार्य श्री रजनीश Osho
गीता दर्शन अ.8.प्र.7/95
सृष्टि और प्रलय का वर्तुल?

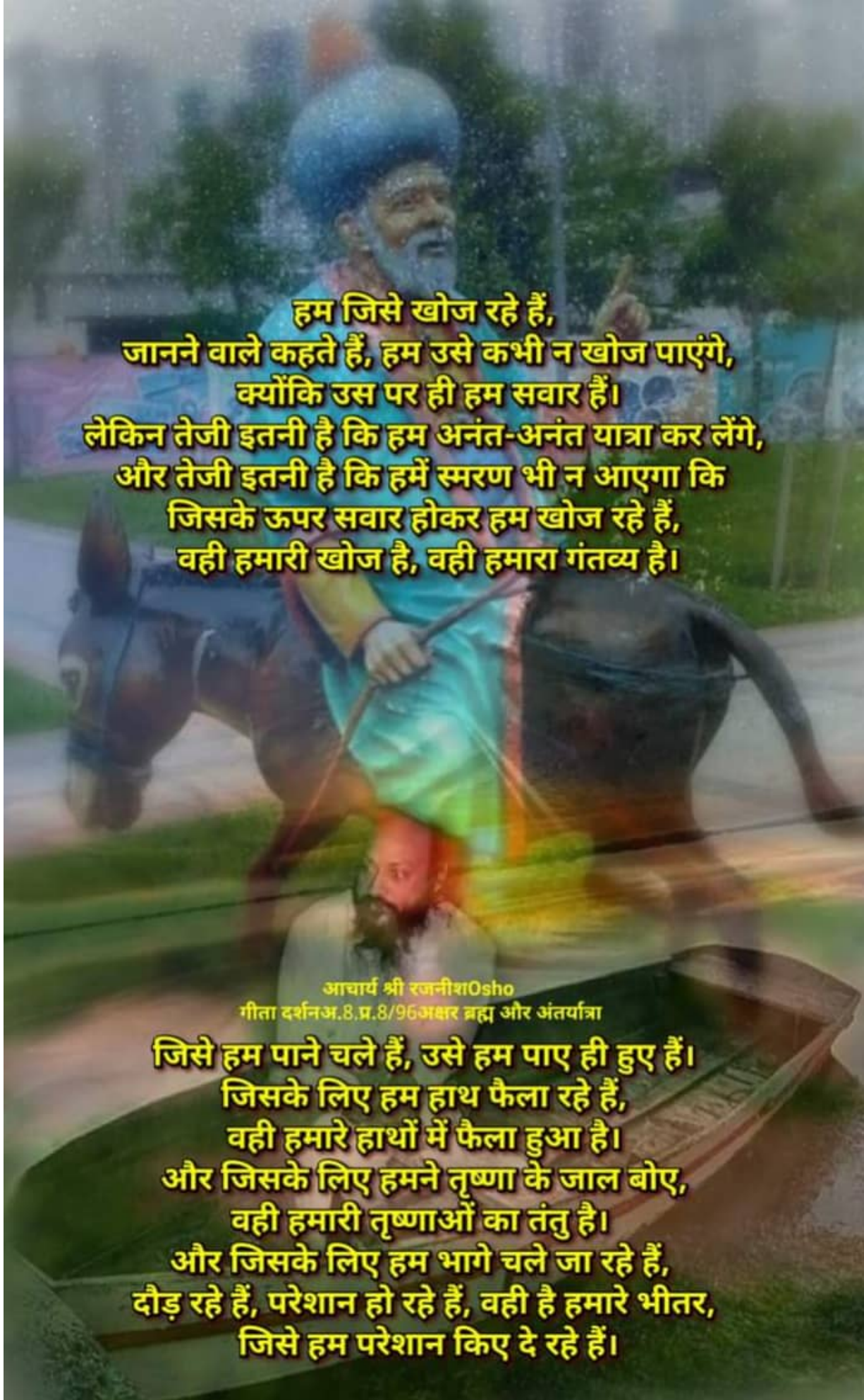
OSHO

ओशो
अध्यात्म उपनिषद्



हम जिसे खोज रहे हैं,
जानने वाले कहते हैं, हम उसे कभी न खोज पाएंगे,
क्योंकि उस पर ही हम सवार हैं।
लेकिन तेजी इतनी है कि हम अनंत-अनंत यात्रा कर लेंगे,
और तेजी इतनी है कि हमें स्मरण भी न आएगा कि
जिसके ऊपर सवार होकर हम खोज रहे हैं,
वही हमारी खोज है, वही हमारा गंतव्य है।
जिसे हम पाने चले हैं, उसे हम पाए ही हुए हैं।
जिसके लिए हम हाथ फैला रहे हैं,
वही हमारे हाथों में फैला हुआ है।
और जिसके लिए हमने तृष्णा के जाल बोए,
वही हमारी तृष्णाओं का तंतु है।
और जिसके लिए हम भागे चले जा रहे हैं,
दौड़ रहे हैं, परेशान हो रहे हैं, वही है हमारे भीतर,
जिसे हम परेशान किए दे रहे हैं।

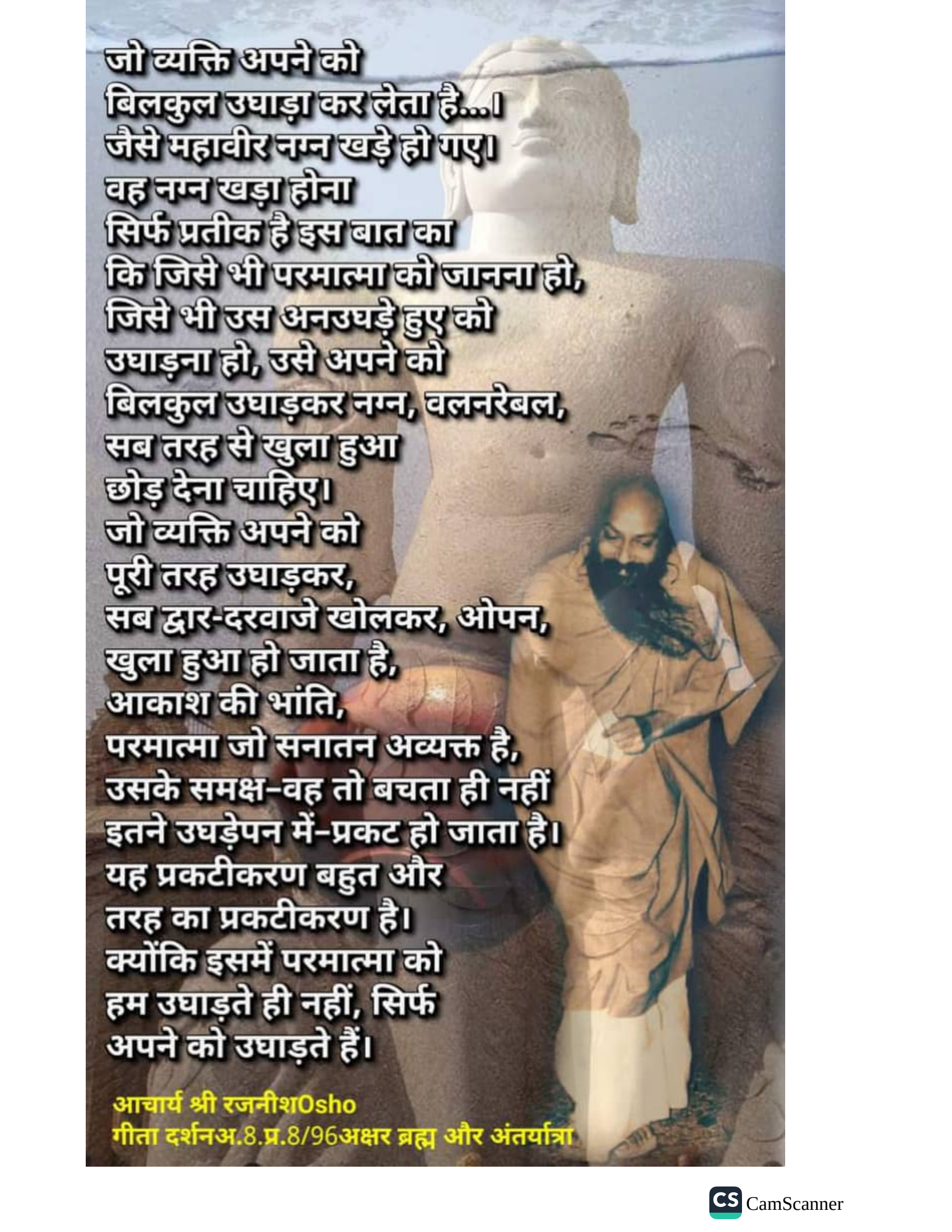
आचार्य श्री रजनीश Osho
गीता दर्शन अ.8.प्र.8/96 अक्षर ब्रह्म और अंतर्यात्रा



हम जिसे खोज रहे हैं,
जानने वाले कहते हैं, हम उसे कभी न खोज पाएंगे,
क्योंकि उस पर ही हम सवार हैं।
लेकिन तेजी इतनी है कि हम अनंत-अनंत यात्रा कर लेंगे,
और तेजी इतनी है कि हमें स्मरण भी न आएगा कि
जिसके ऊपर सवार होकर हम खोज रहे हैं,
वही हमारी खोज है, वही हमारा गंतव्य है।

आचार्य श्री रजनीश Osho
गीता दर्शन अ.8.प्र.8/96 अक्षर ब्रह्म और अंतर्यात्रा

जिसे हम पाने चले हैं, उसे हम पाए ही हुए हैं।
जिसके लिए हम हाथ फैला रहे हैं,
वही हमारे हाथों में फैला हुआ है।
और जिसके लिए हमने तृष्णा के जाल बोए,
वही हमारी तृष्णाओं का तंतु है।
और जिसके लिए हम भागे चले जा रहे हैं,
दौड़ रहे हैं, परेशान हो रहे हैं, वही है हमारे भीतर,
जिसे हम परेशान किए दे रहे हैं।



जो व्यक्ति अपने को
बिलकुल उघाड़ा कर लेता है...।
जैसे महावीर नग्न खड़े हो गए।
वह नग्न खड़ा होना
सिर्फ प्रतीक है इस बात का
कि जिसे भी परमात्मा को जानना हो,
जिसे भी उस अनउघड़े हुए को
उघाड़ना हो, उसे अपने को
बिलकुल उघाड़कर नग्न, वलनरेबल,
सब तरह से खुला हुआ
छोड़ देना चाहिए।
जो व्यक्ति अपने को
पूरी तरह उघाड़कर,
सब द्वार-दरवाजे खोलकर, ओपन,
खुला हुआ हो जाता है,
आकाश की भांति,
परमात्मा जो सनातन अव्यक्त है,
उसके समक्ष-वह तो बचता ही नहीं
इतने उघड़ेपन में-प्रकट हो जाता है।
यह प्रकटीकरण बहुत और
तरह का प्रकटीकरण है।
क्योंकि इसमें परमात्मा को
हम उघाड़ते ही नहीं, सिर्फ
अपने को उघाड़ते हैं।

आचार्य श्री रजनीशOsho

गीता दर्शन अ.8.प्र.8/96 अक्षर ब्रह्म और अंतर्वात्रा

सत्य के साथ तो थोड़े-से ही लोग खड़े होते हैं,
क्योंकि सत्य के साथ खड़े होने की
कीमत चुकानी पड़ती है।
पहले तो सत्य यूँ सस्ता मिलता नहीं,
बाजार में बिकता नहीं,
मंदिरों और मस्जिदों में मिलता नहीं।
अपने भीतर तलाशना होता है;
न बाइबिल में, न कुरान में, न वेद में।
अपने भीतर तराशना होता है।
और वह खोज बड़ी एकांत है
और बड़ी अकेली है और बड़ी दुर्गम है।
इस दुनिया में सबसे कठिन जगह है अपने भीतर जाना,
क्योंकि न कोई संगी होता, न कोई साथी होता।
जैसे-जैसे भीतर जाते हो वैसे-वैसे अकेले होते जाते हो।
और एक ऐसी घड़ी आती है
जब अकेला होना भी नहीं बचता;
जब शून्य ही रह जाता है, तुम भी खो जाते हो।
पहले संगी-साथी खोते हैं,
फिर विचार खोते हैं, फिर भावनाएं खोती हैं।
और एक ऐसा अपूर्व क्षण आता है,
जिसको कहो कि मृत्यु जैसा,
कि स्वयं की सत्ता भी खो जाती है,
अत्ता भी खो जाती है, आत्मा भी खो जाती है।
तुम यह भी नहीं कह सकते कि मैं हूँ।
और जिस घड़ी वहां कोई भी नहीं है,
उस घड़ी सत्य का आविर्भाव होता है।

☆ सांच सांच सो सांच, प्रवचन~१, ओशो ☆

[See all >](#)**अहोभाव**

12h · 🌐



सुई खोई घर मे है उसे मोहल्ले मे ढूँढ़ने का कोई फायदा नहीं

थोड़ा अंधी दौड़ से अलग होके थोड़ा रुक के थोड़ा कहीं शांत जगह बैठ कर इस अंधी दौड़ पर गौर से गौर करें तो शायद आपको अहसास हो कि जो पाना है वो मेरे ही अंदर है बाहर बस पाने का भ्रम है,, किसी ने नहीं पाया आजतक बाहर।

स्वयं को जानने की शर्त ही यह है कि जब तक आप हो, तब तक आप स्वयं को जान न सकोगे। आप बाधा हो। वह जो अहंकार है कि मैं हूँ, वही रुकावट है। वह मिटेगा, तो स्वयं का जानना हो जाएगा। स्वयं का मिटना ही स्वयं का ज्ञान है। और उसके साथ ही काटा खो जाता है। बुद्ध को ज्ञान हुआ, तो उन्होंने पहला उदघोष किया कि अब मुझे दुख में कोई भी डाल न सकेगा। अब मुझे दुख में डालने का कोई उपाय न रहा। तो कथा है कि ब्रह्मा ने उनको पूछा कि आप ऐसा क्यों कहते हैं? तो बुद्ध ने कहा, चूंकि अब मैं हूँ ही नहीं। मुझे दुःख में डालने का कोई उपाय नहीं, क्योंकि अब मैं हूँ ही नहीं। जब तक मैं था, तब तक मुझे दुख में डाला जा सकता था। बुद्ध शून्य की भाषा पसंद करते हैं। अगर आपको पूर्ण की भाषा पसंद हो, तो समझें पूर्ण की तरफ से। शून्य की भाषा पसंद हो, तो शून्य की तरफ से। लेकिन सिर्फ भाषा में मत खोए रहें, कुछ करें। या तो बूंद को मिटाएं सागर में या सागर को बुलाएं बूंद में। जब तक यह महामिलन न हो, तब तक दुख बना ही रहता है।

ओशो

सागर में गिर गई। जब होश आया, तब पाया कि बात उलटी हुई है: सागर बूंद में गिर गया है। तो कबीर ने कहा है कि पहले तो सोचे थे कि कुछ न कुछ बता ही देंगे लौट कर। वह भी कठिन मालूम पड़ा था। बूंद जब

Copy Share Select all Web search

हेरत-हेरत हे सखी, रह्या कबीर हिराई।

बुंद समानी समुंद में, सो कत हेरी जाई।।

वह जो गिर गई बूंद समुद्र में, अब उसे कैसे बाहर निकालें? ताकि वह खबर दे सके कि क्या हुआ। यह तो कठिन था ही। लेकिन कबीर ने बाद में दूसरी पंक्तियां लिखीं और पहली पंक्तियों को रद्द कर दिया। और कहा कि भूल हो गई जल्दी में। अनुभव नया था, ठीक से समझ न पाए क्या हुआ; आदत पुरानी थी, उसकी वजह से उलटा दिखाई पड़ गया। दूसरी पंक्तियां लिखीं:

हेरत-हेरत हे सखी, रह्या कबीर हिराई।

समुंद समाना बुंद में, सो कत हेरी जाई।।

वह समुद्र जो है, वह बूंद में समा गया है। को तो किसी तरह खोज भी लेते समुद्र में गिर गई थी तो। यह उलटा हो गया है: समुद्र पूरा का पूरा आकर बूंद में गिर गया है। अब इस बूंद को हम खोजने भी जाएं तो कहां जाएं! इस बूंद का अब कोई पता नहीं चल सकता। तो समाधि के क्षण में जो जाना गया है, संसार में जो हमने जाना है, उसको पकड़ने के सारे उपकरण व्यर्थ हो जाते हैं। हम ही व्यर्थ हो जाते हैं। हमारा होना ही बिखर जाता है। और कोई बड़ा होना, जिसकी कोई सीमा नहीं, हम पर टूट पड़ता है--आकस्मिक। मर जाते हैं हम। समाधि महामृत्यु है, मृत्यु से बड़ी। क्योंकि मृत्यु में तो



हेरत-हेरत हे सखी, रह्या कबीर हिराई। बुंद समानी समुंद में,...
Tap to see search results

हेरत-हेरत हे सखी,...

दोहा

जब मैं था तब हरि नहीं

सकता, लौटाया नहीं जा सकता--ऐसे ही शरीर तो एक यंत्र-व्यवस्था है, उसमें जो हो गया, वह जब तक पूरा न हो जाए, तब तक अपने लक्ष्य पर न पहुंच जाए, और शब्द जब तक आकाश के अंतिम छोर को न छू ले, तब तक विनाश को उपलब्ध नहीं होता।

तो शरीर तो झेलेगा ही। और एक बात इस संदर्भ में कह देनी उचित है। खयाल में आ गया होगा आपको भी कि यह बात थोड़ी अजीब सी है कि रामकृष्ण को भी कैंसर! रमण को भी कैंसर! इतनी बुरी बीमारियां? बुद्ध की मृत्यु हुई जहरीले भोजन से विषाक्त हो जाने से रक्त के। महावीर की मृत्यु हुई भयंकर पेचिस हो जाने से; छह महीने तक पेट की असह्य पीड़ा से, जिसका कोई इलाज न हो सका। तो खयाल में उठना शुरू होता है कि इतनी महान, शुद्धतम आत्माओं को ऐसी जघन्य बीमारियां पकड़ लेती हैं! क्या होगा कारण? हमें पकड़ें, अज्ञानी-जन को पकड़ें, पापी-जन को पकड़ें--समझ में आता है कि फल है, भोगते हैं अपना। महावीर को, बुद्ध को, रमण को या रामकृष्ण को ऐसा हो, तो चिंतना आती है मन में कि क्या बात है?

उसका कारण है। जो व्यक्ति जीवन्मुक्त हो जाता है, उसके जीवन की आगे की यात्रा तो समाप्त हो गई, यही जन्म आखिरी है। आपकी तो आगे की लंबी यात्रा है। समय बहुत है आपके पास। आप सारे दुख रत्ती-रत्ती करके झेल लेंगे। समय बहुत है आपके पास। बुद्ध, महावीर या रमण के पास समय बिल्कुल नहीं है। दस, बीस, पच्चीस, तीस साल का वक्त है। आपके पास जन्मों-जन्मों का भी हो सकता है। इस छोटे से समय में सारे कर्म, सारे संस्कार इकट्ठे, संगृहीत होकर फल दे जाते हैं।

इसलिए दोहरी घटनाएं घटती हैं। महावीर को एक तरफ तीर्थंकर का सम्मान मिलता है, वह भी सारे सुखों का



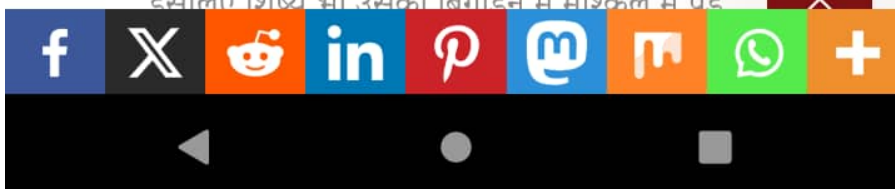
भा नहा सकता।

तो बुद्ध का धर्म भारत में टिक नहीं सका। और जब भारत में नहीं टिक सका तो कहां टिक सकता था! लेकिन दूसरे मुल्कों में टिका। टिका कब? टिका जब, जब बुद्ध के अनुयायियों ने वे सारी ट्रिक्स, वह सारा गोरखधंधा सीख लिया जो ब्राह्मणों को सदा से ज्ञात था, तब टिका।

आप जान कर हैरान होंगे कि बुद्ध क्षत्रिय हैं, लेकिन उनके सब बड़े शिष्य ब्राह्मण हैं; और उन्होंने टिकाया। लेकिन भारत में तो बात बुद्ध बिगाड़ गए थे, भारत में तो बुद्ध कह गए थे, इसलिए शिष्य भी उस पर जबरदस्ती दूसरी बातें नहीं थोप सकते थे। इसलिए भारत में तो नहीं टिका, लंका में टिका, बर्मा में टिका, जापान में टिका, चीन में टिका, तिब्बत में टिका, श्याम में, कोरिया में--सारे एशिया में टिक गया, भारत में नहीं टिका। क्योंकि भारत ने बुद्ध से आमने-सामने बात कर ली थी और बुद्ध ने कहा था कुछ पाने को नहीं है। इसलिए भारत में फिर से पाने का लोभ जगाना मुश्किल था। भारत के बाहर जगा दिया। इसलिए भारत के बाहर जो बुद्ध-धर्म है, वह हिंदू धर्म का रूपांतर है। वह बुद्ध की वाणी नहीं है। वह वास्तविक नहीं है, इसलिए टिका। वास्तविक था तो बिलकुल नहीं टिका।

आप जानते हैं, महावीर क्षत्रिय थे, लेकिन महावीर के ग्यारह गणधर सब ब्राह्मण हैं, उन्होंने टिकाया। महावीर की हैसियत की बात नहीं थी टिकाने की। क्षत्रिय को पता नहीं है; यह धंधा ही नहीं उसका; वह तलवार वगैरह चलाना जानता होगा। यह शास्त्र की दुनिया, यह शब्द का जो खेल है, उसका उसे कोई पता नहीं है। तो ग्यारह के ग्यारह महावीर के जो बड़े शिष्य हैं, गणधर हैं, उन्होंने टिकाया।

और सुविधा बन गई। क्योंकि बुद्ध तो बोले खुद, इसलिए शिष्य भी उसको बिगाड़ने में मुश्किल में पड़



ह, काइ ईश्वर नही ह।

बुद्ध के पास जब पहली दफा सारिपुत्त गया, तो वह तो ब्राह्मण का बेटा था; ज्ञानी था, जानकार था; उसने बुद्ध से कहा कि अगर कुछ भी नहीं है, शून्य ही शून्य है, तब तो फिर हमें संसार को बचाने की कोशिश करनी चाहिए, कम से कम कुछ तो है। और आप अजीब बात कर रहे हैं! सब छीनना चाहते हैं और देने का कोई भी वायदा नहीं है, तो कौन आएगा? तो वह ब्राह्मण का बेटा था, उसने कहा, आएगा कौन? सब छुड़वाना चाहते हैं! सब, कहते हैं, छोड़ दो। और पाने की जब हम पूछते हैं, तो आप कहते हैं, पाने को कुछ है नहीं। तो छोड़ेगा कोई किसलिए? छोड़ता तो आदमी पाने के मोह में है।

बुद्ध ने कहा, लेकिन जो पाने के मोह में छोड़ता है, वह छोड़ता ही नहीं।

त्याग का मतलब क्या है? त्याग अगर इसलिए है कि कुछ मिलेगा, तो यह सौदा हुआ, त्याग कहां है? एक आदमी महल छोड़ देता है कि स्वर्ग में महल मिल जाएगा; यह सौदा है। एक आदमी पुण्य करता है कि सुख मिलेगा; यह सौदा है। एक आदमी सेवा करता है, धर्म करता है, दान करता है, इस आशा में कि इसके प्रतिकार में कुछ मिलेगा किसी लोक में, किसी जन्म में; यह सौदा है। इसमें कहां त्याग है?

बुद्ध ने कहा, त्याग तो तभी है, जब कोई छोड़ता है और पाने की कोई आशा नहीं रखता। पर सारिपुत्त ने कहा कि होगा यह त्याग, लेकिन फिर आप त्यागी कहीं पा न सकेंगे। त्यागी मिलेगा कहां?

हम सब सौदेबाज हैं। हम अगर ईश्वर के साथ भी संबंध जोड़ते हैं तो वह व्यवसाय का है। अज्ञानी कुछ और कर भी नहीं सकता।

तो बुद्ध का धर्म भारत में टिक नहीं सका। और जब भारत में नहीं टिक सका तो कहां टिक सकता था!

लेकिन दूसरे मुलकों में टिका। टिका कब? टिका जब



कह दिया।

क्या कहा बुद्ध ने, आपको पता है?

बुद्ध के पास कोई आता कि मुझे आत्मा को पाना है।

बुद्ध कहते, आत्मा है ही नहीं, पाओगे क्या खाक!

वह आदमी गया! उसने कहा कि यह क्या हो गया?

आत्मा तो है! यहां तक भी समझ लेते कि शरीर नहीं है,

आप कह रहे हैं आत्मा भी नहीं है!

बुद्ध के पास कोई आता और पूछता कि मोक्ष में आनंद तो बहुत होगा न?

बुद्ध कहते, कैसा मोक्ष? कैसा आनंद? शून्य रह जाता है;

न कोई आनंद, न कोई मोक्ष। क्योंकि जहां तक आनंद

का पता चलेगा, वहां तक दुख रहेगा। रहेगा ही; क्योंकि

पता विपरीत का चलता है। तो बुद्ध कहते, वहां कोई

आनंद वगैरह नहीं है। तो वह जो आदमी आया था लोभ

की थोड़ी सी आशा बांध कर, उसको बिलकुल तोड़

दिया दरवाजे पर ही। वह भीतर ही नहीं जाता। वह

कहता, जब आनंद भी नहीं बचेगा तो यह क्षणभंगुर सुख

भी क्या बुरा है!

शाश्वत सुख है नहीं, क्षणभंगुर सुख है। ज्ञानियों ने सदा

उसके क्षणभंगुर सुख को तुड़वाया था शाश्वत सुख के

लोभ में। बुद्ध ने कहा, कोई शाश्वत सुख वगैरह है नहीं।

सुख है ही नहीं। न क्षणभंगुर कोई सुख है, न शाश्वत

कोई सुख है, तुम धोखे में हो। तो उस आदमी ने कहा

कि क्षमा करिए; जो अभी पास है, उसको ही संभालें।

हाथ की आधी रोटी स्वर्ग की पूरी रोटी से बेहतर है। और

आप कहते हो, न कोई स्वर्ग है, न कोई पूरी रोटी है, तो

आधी रोटी हम क्यों छोड़ें?

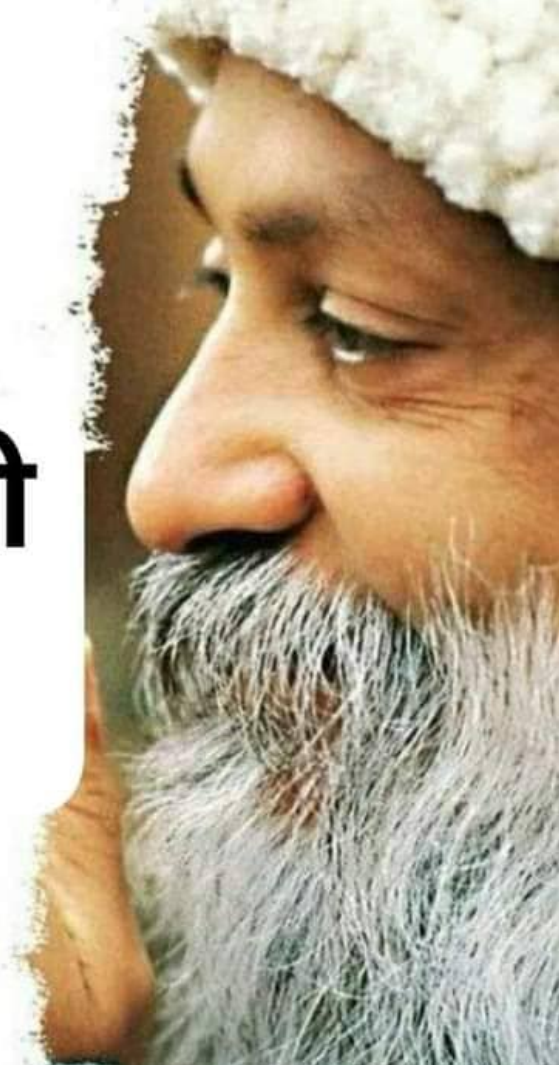
बुद्ध से लोग पूछने जाते हैं कि ईश्वर मिलेगा? बुद्ध कहते

हैं, कोई ईश्वर नहीं है।

बुद्ध के पास जब पहली दफा सारिपुत्त गया, तो वह तो

ब्राह्मण का बेटा था; ज्ञानी था, जानकार था; उसने बुद्ध

अस्तित्व ही
परमात्मा
हैं



मुश्किल से यह मौका मिलता
आदमी होने का, मनुष्य होने का।
यह छोटा सा अवसर है,
जन्मों-जन्मों के लिए फिर खो
सकता है। पशु-पक्षी परमात्मा की याद
नहीं कर सकते हैं। पौधे-पत्थर परमात्मा की
याद नहीं कर सकते हैं।
सिर्फ मनुष्य उस चौराहे पर खड़ा होता है,
जहां से अगर वह चाहे,
तो परमात्मा की तरह उठ जाए; और
चाहे तो फिर प्रकृति में खो जाए।
प्रकृति और परमात्मा का
चौराहा है मनुष्य।



🌸 कन थोरे कांकर घने ओशो 🌸



जिस व्यक्ति ने भी कभी उसे पुकारा
है, पुकार खाली नहीं गई है।
और जब भी किसी व्यक्ति के जीवन
में परमात्मा का आगमन होता है
तो गीतों की झड़ी लग जाती है।
उस व्यक्ति की श्वास - श्वास गीत बन
जाती है।

सकता, लौटाया नहीं जा सकता--ऐसे ही शरीर तो एक यंत्र-व्यवस्था है, उसमें जो हो गया, वह जब तक पूरा न हो जाए, तब तक अपने लक्ष्य पर न पहुंच जाए, और शब्द जब तक आकाश के अंतिम छोर को न छू ले, तब तक विनाश को उपलब्ध नहीं होता।

तो शरीर तो झेलेगा ही। और एक बात इस संदर्भ में कह देनी उचित है। खयाल में आ गया होगा आपको भी कि यह बात थोड़ी अजीब सी है कि रामकृष्ण को भी कैंसर! रमण को भी कैंसर! इतनी बुरी बीमारियां? बुद्ध की मृत्यु हुई जहरीले भोजन से विषाक्त हो जाने से रक्त के। महावीर की मृत्यु हुई भयंकर पेचिस हो जाने से; छह महीने तक पेट की असह्य पीड़ा से, जिसका कोई इलाज न हो सका। तो खयाल में उठना शुरू होता है कि इतनी महान, शुद्धतम आत्माओं को ऐसी जघन्य बीमारियां पकड़ लेती हैं! क्या होगा कारण? हमें पकड़ें, अज्ञानी-जन को पकड़ें, पापी-जन को पकड़ें--समझ में आता है कि फल है, भोगते हैं अपना। महावीर को, बुद्ध को, रमण को या रामकृष्ण को ऐसा हो, तो चिंतना आती है मन में कि क्या बात है?

उसका कारण है। जो व्यक्ति जीवन्मुक्त हो जाता है, उसके जीवन की आगे की यात्रा तो समाप्त हो गई, यही जन्म आखिरी है। आपकी तो आगे की लंबी यात्रा है। समय बहुत है आपके पास। आप सारे दुख रत्ती-रत्ती करके झेल लेंगे। समय बहुत है आपके पास। बुद्ध, महावीर या रमण के पास समय बिल्कुल नहीं है। दस, बीस, पच्चीस, तीस साल का वक्त है। आपके पास जन्मों-जन्मों का भी हो सकता है। इस छोटे से समय में सारे कर्म, सारे संस्कार इकट्ठे, संगृहीत होकर फल दे जाते हैं।

इसलिए दोहरी घटनाएं घटती हैं। महावीर को एक तरफ तीर्थंकर का सम्मान मिलता है, वह भी सारे सुखों का





खयाल करना मनुष्य का मन ऐसा है: जो मिलता है उसकी हम चिंता नहीं लेते; जो नहीं मिला, या जो खो गया, उसकी फिकर में लगे रहते हैं। एक पैसा तुम्हारा गिर जाए तो दिन भर याद आती रहती है।

ह दिन भर मांगा भी, मिला भी बहुत; ऐसा कभी न मिला था—लेकिन इसमें उसे कुछ रस न था; उसे बार—बार वही सुबह की घटना याद आती। अपने हाथ से एक दाना देना पड़ा! एक तो अवसर मिला था कि मांग लेता, वह भी गया; उलटा अपने पास से भी कुछ गया!

उदास लौटा। सांझ जब आया पत्नी तो बहुत आनंदित हुई: इतनी झोली उसकी कभी न भरी थी; लबालब भरी थी। पत्नी तो बहुत आनंदित हुई, आह्लादित हुई। उसने कहा: धन्यभागी हैं हम, आज तो हमें खूब मिला! उसने कहा: छोड़ तुझे क्या पता कि आज कितना हमने गंवाया है! एक तो सब कुछ मांग लेता सम्राट से, वह गया। उसने सारी कथा कही। और पास का एक दाना भी गया।

उदास मन उसने झोली उंडेली और दोनों चकित खड़े रह गए। उन चावल के दानों में एक दाना सोने का हो गया था। तब वह छाती पीट कर रोने लगा। दिन भर तो रोया था उस दाने के लिए; अब छाती पीट कर रोने लगा कि यह तो बड़ी भूल हो गई: अगर मैंने सारे ही दाने सम्राट की झोली में डाल दिए होते, तो सारे ही दाने सोने के हो गए होते।

यह कविता प्रीतिपूर्ण है और बड़ी सूचक। जितना हम देते हैं, उतना ही सोना हो जाता है। जितना हम रोक लेते हैं, उतना ही मिट्टी हो जाता है। जो जितना रोकेगा उतना मिट्टी में जाएगा। जो जितना देगा उतना स्वर्णमय होता जाएगा। जो सब दे देता है, उसका सभी स्वर्णमय हो जाता है।

सब देते ही क्रांति घटित होती है। उसके पहले क्रांति घटित ही नहीं होती। जरा सा भी बचाया तो उतना तुम्हारा परमात्मा पर संदेह है।

बचाने का मतलब क्या होता है? बचाने का मतलब होता है: क्या भरोसा, कल देगा कि नहीं देगा! बचाने का मतलब होता है: होशियारी से काम लो, पता नहीं परमात्मा है भी या नहीं!



धूल उड़ाता हुआ रथ उसके पास ही आकर खड़ा हो गया। सम्राट रथ से नीचे उतरा, तब तो भिखारी किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। समझ भी न पाया कि अब क्या करूं! भूल ही गया कि झोली फैलाऊं। एक क्षण को ठिठक गया। और इसके पहले कि कुछ करता; सम्राट ने अपनी झोली उसके सामने फैला दी। और सम्राट ने कहा: क्षमा करना, ज्योतिषियों ने कहा है कि आज मैं सुबह—सुबह निकलूं रथ पर और जो पहला आदमी मिल जाए, उससे भीख मांगूं, तो इस राज्य पर आने वाला एक संकट टल सकता है, नहीं तो यह राज्य महासंकट में पड़ेगा। तुम ही पहले आदमी हो। मैं जानता हूं कि तुम भिखारी हो; तुम्हारी झोली सब कह रही है। तुमने सदा मांगा है, दिया कभी भी नहीं—यह भी मुझे पता है। देना तुम्हें बहुत कठिन पड़ेगा, लेकिन आज यह करना ही होगा। क्योंकि यह प्रश्न पूरे साम्राज्य का है। इनकार मत कर देना; कुछ भी दे देना, जो भी देना हो दे देना। एक चावल का दाना दोगे तो भी चलेगा।

भिखारी अपनी झोली में हाथ डालता है। कभी उसने दिया तो था ही नहीं। देने की तो कोई आदत ही न थी। देने का संस्कार ही न था। मांगा! मांगा! मांगा! जन्मों—जन्मों का भिखारी था। मुट्ठी बांधता है और खोल लेता है। बांधता है और खोल लेता है। हिम्मत नहीं पड़ती। सम्राट कहता है कि अवसर चूका जाता है। यही तो मुहूर्त है; तुम इनकार तो न कर दोगे? देखो इनकार मत कर देना।

तब उसने बहुत हिम्मत करके एक चावल का दाना निकाला और सम्राट की झोली में डाल दिया। सम्राट चढ़ा रथ पर, स्वर्ण—रथ धूल उड़ाता हुआ चला गया। भिखारी धूल में दबा खड़ा रहा और सोचने लगा: यह भी खूब रही! सम्राट से कभी तो मिलना हुआ, मांगने का सौभाग्य था, वह भी गया। उसकी तो छोड़ो कि कुछ मिला नहीं, अपने पास का भी एक दाना गया।

उस दिन उसे दिन में बहुत दान मिला, लेकिन वह एक दाना खटकता रहा—दिन भर!

खयाल करना मनुष्य का मन ऐसा है: जो मिलता है उसकी हम चिंता नहीं लेते; जो नहीं मिला, या जो खो गया, उसकी फिकर में लगे रहते हैं। एक पैसा तुम्हारा गिर जाए तो दिन भर याद आती रहती है।

**"Osho Universal"**

Atul Solanki · 1h · 🌐

**रवींद्रनाथ की एक छोटी सी कविता है। 🌹 🌹**

🌹 🌹 एक भिखारी सुबह अपने घर से निकला भीख मांगने। पूर्णिमा का दिन था। कोई धर्मोत्सव था और उसे बड़ी आशा थी: आज बहुत मिलेगा।

जैसा भिखारी करते हैं, अपने घर से जब चलने लगा तो झोली में उसने थोड़े से चावल के दाने डाल लिए थे। जब भिखारी मांगने जाता है तो अपनी थाली में थोड़े से पैसे खुद ही डाल लेता है। उससे देने वाले को सुविधा होती है। नहीं तो देने वाले को ऐसा लगता है कि इसको किसी ने तो दिया नहीं तो मैं ही पहला नासमझ इसके चक्कर में पड़ रहा हूँ। कोई और लोग दे चुके हैं, थाली में पैसे पड़े हैं, तो फिर इनकार करने में कठिनाई होती है, क्योंकि कुछ और लोग दया कर चुके; इतना कठोर तो मैं नहीं हूँ कि एकदम इनकार ही कर दूँ। तो सभी भिखारी इतनी होशियारी रखते हैं। वह उनके धंधे का नियम है; कुछ न कुछ लेकर चलते हैं घर से; अपना ही लेकर चलते हैं।

तो झोली में उसने थोड़े से चावल के दाने डाल लिए हैं। झोली बिल्कुल खाली हो तो कोई डालने को भी राजी नहीं होता; थोड़ी भरी हो तो कोई डालने को भी राजी होता है। आदमी भिखारी को थोड़े ही देते हैं—अपनी प्रतिष्ठा के लिए देते हैं; अपने अहंकार के लिए देते हैं।

जैसे ही भिखारी राह पर आया है, वह तो चकित हो गया। उसने देखा कि सम्राट का रथ आ रहा है। सम्राट के द्वार से ही लौटा दिया जाता था, महल के भीतर, महल में तो प्रवेश का मौका ही नहीं था। सम्राट के सामने झोली फैलाने का तो सौभाग्य कभी नहीं मिला था। सोचा: आज धन्यभाग! आज तो भर जाऊंगा। अब शायद भीख मांगने की जरूरत भी न होगी। सम्राट चला आ रहा है; द्वार पर जाने की जरूरत नहीं है; मेरे ही द्वार पर जैसे आ गया है।

धूल उड़ाता हुआ रथ उसके पास ही आकर खड़ा हो गया। सम्राट रथ से नीचे उतरा, तब तो भिखारी किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। समझ भी न पाया

**The Gurdjieff Group of Toronto**

1h · 🌐

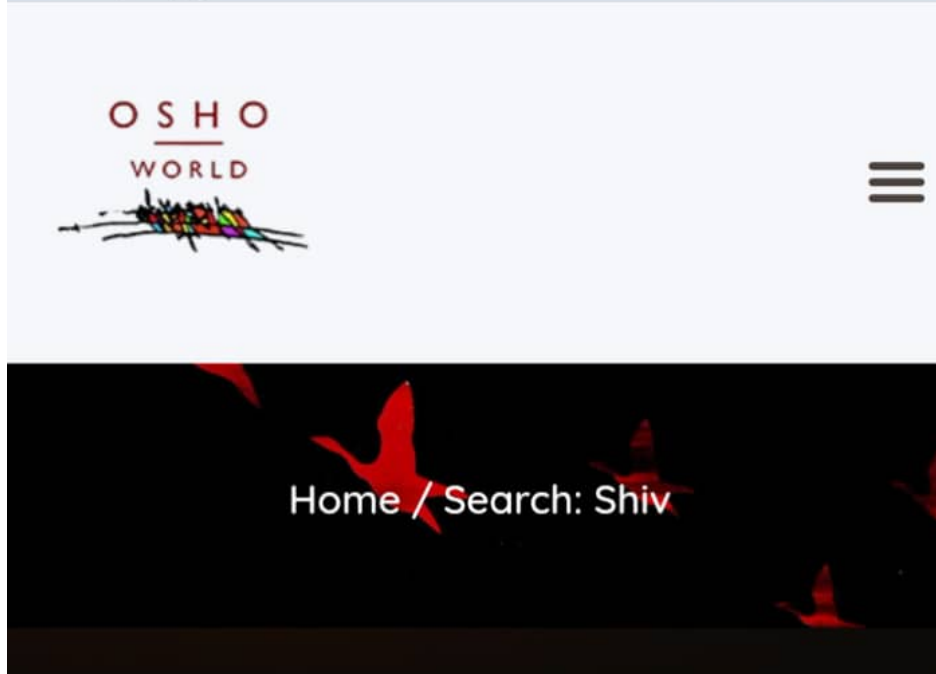
YOU MUST EDUCATE YOUR BODY WITH YOUR HEAD

Questioner: Is it possible in actual conditions to avoid a too inharmonic development of the body in regard to the general development?

Gurdjieff: For the physical development, there exist no seasons. Not political seasons. It is always necessary. You must educate your body with your head, consciously. It is very simple. Never allow it to do what it wants. You make it do everything contrary to that which it loves. It likes sugar, you do not give it any. One must inure it to struggle, you are always right when you resist your body. It is simple. Everything contrary; it is so that God created your body and your intellect. It is a very simple thing. For this it is not necessary to read. The program is very simple. Under all conditions, in all political situations, man must educate his body to be submissive to him. Your personality can educate your body. He in which the body is strong and has the initiative over him, this one is null. He who has his body enslaved is intelligent. You understand what is meant by intelligent? Intelligent means he who directs his body. If the body directs, you are a nullity, a peasant—if you direct your body you are intelligent. Thus, choose what you want. Intelligent or peasant? If you want to be a peasant, let your body direct you. If you want to be intelligent, let your consciousness direct your body. The more you want to direct your body, the more it opposes you. And in resisting you, the more strength it gives you.

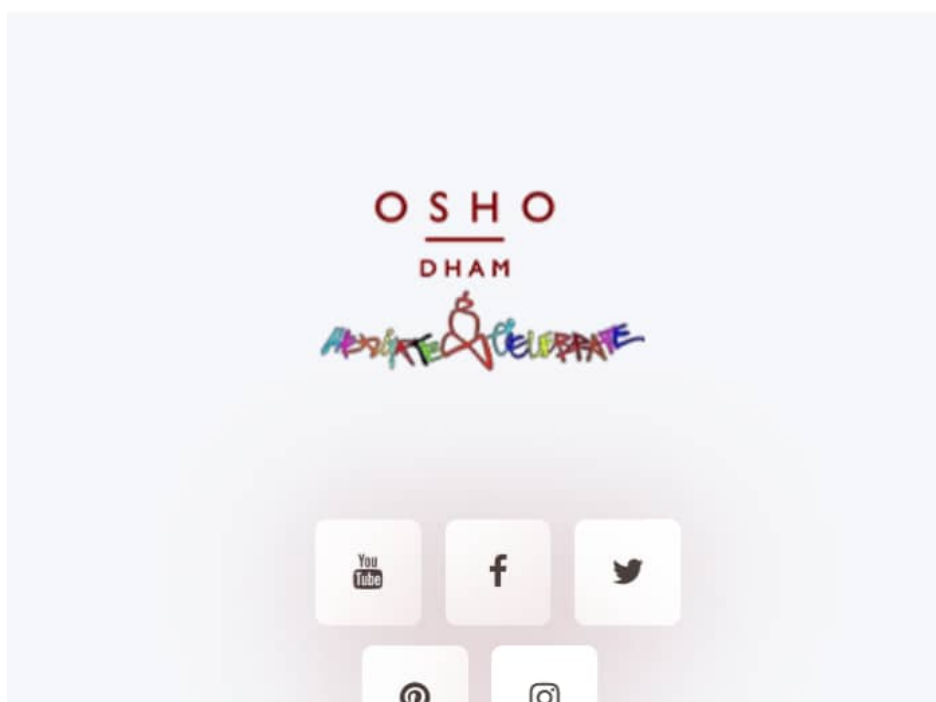
~ George Gurdjieff "Paris/Wartime Meetings"

See translation



146-Shiv Sutra 01-10

FEBRUARY 8, 2021



और तुम दो ढंग से जी सकते हो: भविष्य के सहारे या वर्तमान में।
वर्तमान में जो जीता है वह संन्यस्त है। वही है भक्त। वही है धार्मिक।
भविष्य में जो जीता है वह संसारी है। वही है अज्ञानी। वही है
भटका..स्वप्न में, तंद्रा में, निद्रा में, बेहोशी में।

फरीद के इन आखिरी वचनों को ध्यान से समझने की कोशिश करो।

सरवर पंखी हेकड़ो, फाहीवाल पचास।

..कि सरोवर में पक्षी तो एक है और फंसाने के जाल पचास।

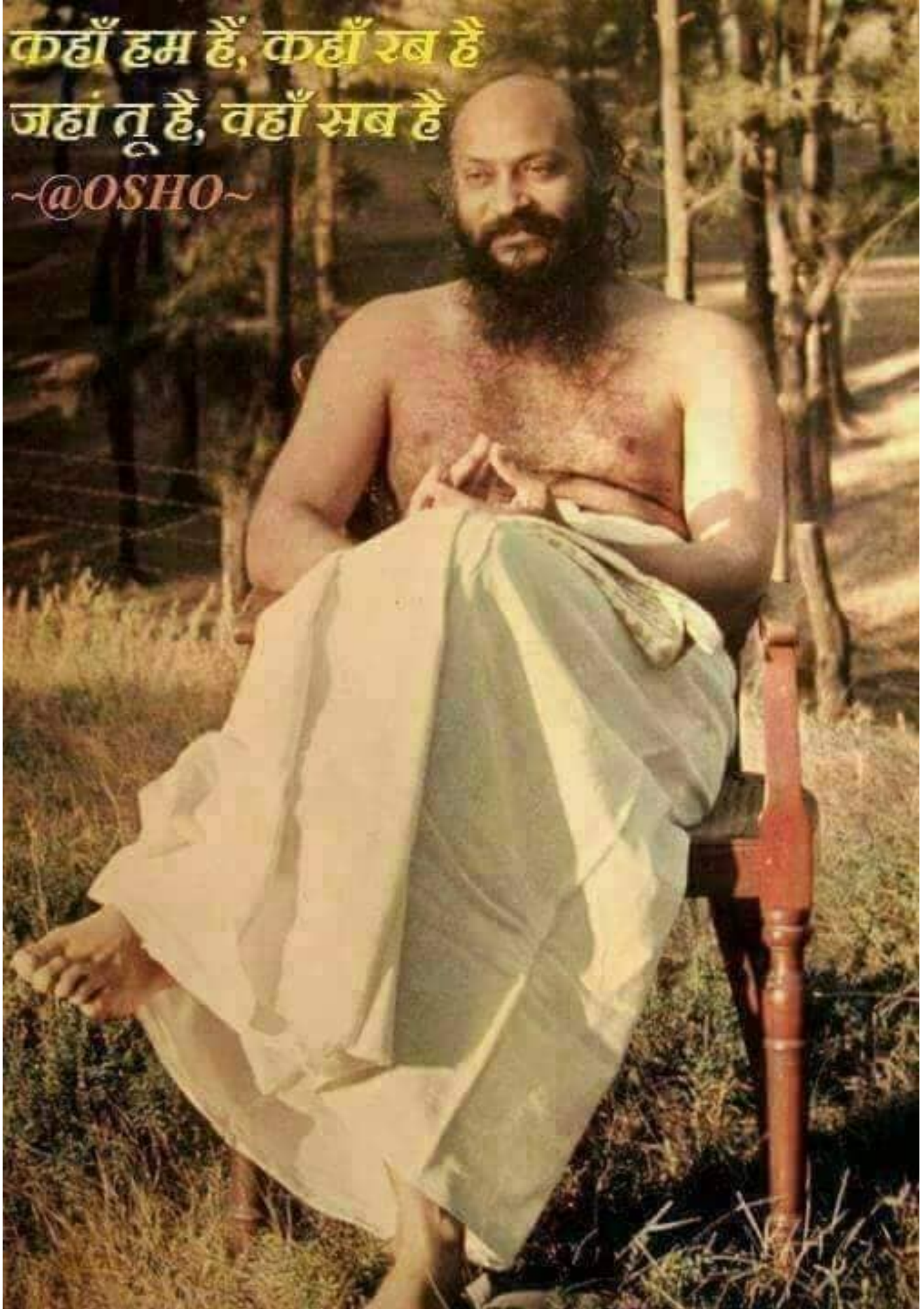
सरवर पंखी हेकड़ो, ...

अकेला है पक्षी और जाल हैं पचास फंसाने के। बचना मुश्किल मालूम होता है। बचना करीब-करीब असंभव मालूम होता है।

थोड़ा सोचो। कितने जाल हैं! धन का जाल है। पद का जाल है। यश का जाल है। कितने जाल हैं..वासनाओं के, आसक्तियों के, लोभ के, क्रोध के, मोह के! कितने जाल हैं..शरीर के, मन के! चारों तरफ फंसाने के उपाय हैं। और पक्षी है अकेला, और जाल है पचास। एक से बचो, दूसरे में उलझना हो जाता है। इधर बच नहीं पाते खाई से कि कुएं में गिरना हो जाता है। इसलिए जो बहुत सजग है वही बच पाएगा। बच वही पाएगा जो एक जाल से नहीं बच रहा, बल्कि जो जाल के रहस्य को समझ गया, उससे बच रहा है। एक जाल से बचने में कोई कठिनाई नहीं है, तुम बच सकते हो।

ओशो

कहाँ हम हैं, कहाँ सब है
जहाँ तू है, वहाँ सब है
~@OSHO~



नहीं आएगी।

इससे भी गहरा एक स्रोत है, जो अनंत स्रोत है। वह तभी उपलब्ध होता है, जब दोनों स्रोत चुक जाते हैं, और आप डरते नहीं, और प्रसन्नतापूर्वक और भी आगे श्रम करते चले जाते हैं। तब एक घड़ी आती है कि तीसरा स्रोत फूटता है, जो कि कास्मिक है, जो कि जागतिक है। वह आपका नहीं है; कहना चाहिए कि आपके नीचे छिपा हुआ जो चैतन्य का सागर है, उसका है। जिस दिन वह टूट पड़ता है, उस दिन फिर चुकने का कोई उपाय नहीं। उस दिन फिर आप शाश्वत जीवन के मालिक हो गए।

इधर मैं देखता हूं, ध्यान में लोग आते हैं, तो वे मुझे कहते हैं कि थक जाता है शरीर। मैं उनसे कहता हूं, फिकर मत करो, तुम चलते जाओ। एक ही खयाल रखना कि प्रसन्नता से, उदासी से नहीं। जल्दी ही दूसरी पर्त टूट जाएगी, वह जल्दी टूट जाती है। अगर दूसरी पर्त टूट जाती है, तब वे ध्यान के बाद थकान अनुभव नहीं करते, ताजगी अनुभव करते हैं। जब यह दूसरी पर्त भी थका डालेंगे आप तब एक और तीसरी पर्त टूटेगी। उसके बाद आपके पास शाश्वत ऊर्जा है, उसके बाद अनंत जीवन आपका है, उसके बाद आप वहां आ गए, जहां कोई चीज कभी नहीं चुकती। प्रसन्नता का सहारा लेकर चलेंगे, तो ही इतने गहरे उतर पाएंगे। उदास हो गए, तो आप वापिस लौट जाएंगे।

इसलिए बहुत गहरे में आप इसको पकड़ लें कि धर्म की साधना आपका आह्लाद हो, आनंद हो। आनंद अंत में नहीं, पहले चरण पर भी हो। आखीर में मिलेगा, ऐसा नहीं है, आज भी हो। उत्सवपूर्वक नाचते, गाते, प्रसन्न उस तरफ बढ़ें तो शरीर को आप जीत लेंगे। क्योंकि शरीर की जो बुनियादी तरकीब है, उसके विपरीत आपने एंटीडोट, विपरीत औषधि तैयार कर ली। शरीर उदास करके आपको पराजित कर देता है। प्रसन्न रहकर आप शरीर के मालिक हो सकते हैं~ओशो

~ समाधि के सप्त द्वार ~

और शरीर अदभुत वाहन है। उसका उपयोग किया जा सकता है।

दूसरी बात खयाल रखनी जरूरी है कि इस नियंत्रण के प्रयोग में उदासी न पकड़ ले; चित्त प्रसन्न रहे। क्योंकि शरीर की जो सबसे गहरी तरकीब है, वह आपको उदास करके पराजित करने की है। अगर आप भूखे हैं और उपवास किया है तो आपका मन उदास हो जाएगा। अगर उपवासा आदमी उदास है, तो समझना कि उपवास व्यर्थ हो गया। इससे बेहतर था, वह भोजन कर लेता और प्रसन्न रहता। अगर उपवासा आदमी उदास है, तो समझना बात व्यर्थ हो गई, बात खतम हो गई। क्योंकि उदासी शरीर की तरकीब है आपसे बदला लेने की। और शरीर आपको थका डालेगा। और उदासी कितने दिन तक झेलिएगा?

इसलिए जब शरीर पर नियंत्रण करना हो, तो दूसरा सूत्र खयाल रखना कि शरीर उदासी की लहरें भेजेगा; शरीर सब तरफ से आपको उदास करने की कोशिश करेगा। आप उदास मत होना, आप प्रसन्न रहना। अगर आप प्रसन्नता कायम रख सकें, तो अदभुत अनुभव होते हैं। आपको पता नहीं है, इसलिए बड़ी अड़चनें होती हैं। शरीर के भीतर शक्ति के तीन तल हैं। एक तल तो रोज मर रहा है काम के लिए, वह बहुत छोटा-सा है। रोज जो आपको काम करने पड़ते हैं -उठना- बैठना, चलना, दफ्तर जाना, वह सब काम के लिए, एक छोटा सा स्रोत आपके शरीर के ऊपर है। यह जल्दी थक जाता है, चुक जाता है। क्योंकि इसकी पूंजी बहुत कम है।

समझें ऐसा कि आप दिन भर के थके-मांदे लौटे हैं। और आप कहते हैं कि बिलकुल पड़ जाऊं और सो जाऊं। अब एक शब्द भी बोलने की इच्छा नहीं है, हाथ भी हिलाने की इच्छा नहीं है, बस सो जाना चाहता हूं। तभी अचानक घर में आग लग जाए; आपकी सब उदासी खो जाती है, थकान खो जाती है। आप एकदम सचेत हो जाते हैं, शक्ति का स्रोत दौड़ पड़ता है। यह शक्ति कहां से आई- यह आपमें नहीं थी अभी तक? यह दूसरा स्रोत है शरीर का, इमरजेन्सी का। तात्कालिक जरूरत जब आ जाए, तो शरीर में नया स्रोत काम शुरू कर देता है; शक्ति दौड़ जाती है। अब आप रात भर आग बुझाने में लग सकते हैं और थकान नहीं आएगी।

इससे भी गहरा एक स्रोत है, जो अनंत स्रोत है। वह तभी उपलब्ध होता है, जब दोनों स्रोत चुक जाते हैं, और आप डरते नहीं, और प्रसन्नतापूर्वक और भी आगे श्रम करते चले जाते हैं। तब एक घड़ी आती है कि तीसरा स्रोत फूटता है, जो कि कास्मिक है, जो कि जागतिक है। वह आपका नहीं है; कहना चाहिए कि आपके नीचे छिपा हुआ जो चैतन्य का सागर है उसका है। जिस दिन वह टट पड़ता है उस दिन



अहोभाव

1d · 🌐



अहोभाव

. दूसरे तट को जानेवाले ओ साहसी यात्री, प्रसन्न रह। कामदेव की कानाफूसी पर कान मत दे। और अनंत आकाश में जो लुभानेवाली शक्तियां हैं, जो दुष्टभाव वाली आत्माएं हैं, जो द्वेषी लहामयी हैं, उनसे दूर ही रह।'

पहली बात, शरीर को मालिकियत से उतारें। इसका मतलब यह नहीं कि शरीर के दुश्मन हो जाएं, उसको नष्ट कर डालें। इसका मतलब यह है कि उसे, जहां वह होना चाहिए-सेवक-वहां उसे बिठा दें। वह वहीं ही योग्य है, और वहां उसकी बड़ी उपयोगिता है। और एक बार आप उसके मालिक हो जाएं, तो शरीर से आप वह काम ले सकते हैं, जिसके बिना आत्मा की कोई यात्रा नहीं हो सकती। शरीर फिर अदभुत यंत्र है।

अभी तक जगत में मनुष्य के शरीर जैसा अदभुत यंत्र कोई भी नहीं है। बहुत सूक्ष्म, बहुत विराट, सब उसमें समाहित है। और उसमें अनंत शक्तियां प्रसुप्त हैं, जो सब जाग जाएं, तो आपके जीवन में अनंत द्वार खुल जाते हैं। आप स्वयं एक छोटे-मोटे विश्व हैं। लेकिन वह मालिक हो शरीर, तो आप सिर्फ गुलाम हैं। और हालत ऐसी है, जैसे बैलगाड़ी आगे हो और बैल पीछे बंधे हों, तो कहीं कोई जाना नहीं होता। आप बहुत तड़पते हैं, चिल्लाते हैं, कि कहीं जाना जरूरी है, यात्रा करनी जरूरी है, मंजिल पर पहुंचना चाहिए, समय नष्ट हो रहा है। पर काम आप ऐसा कर रहे हैं कि समय नष्ट होगा ही। बैल पीछे बंधे हैं, गाड़ी आगे बंधी है; धक्का-मुक्की में गाड़ी उलटी टूटती है, बैल परेशान होते हैं, कहीं कोई यात्रा नहीं होती है।

आत्मा पीछे बंधी है शरीर के, तो यात्रा नहीं हो सकती है। आत्मा आगे होनी चाहिए, शरीर पीछे होना चाहिए, तो फिर बड़ी यात्रा हो सकती है। और शरीर अदभुत वाहन है। उसका उपयोग किया जा सकता है।

दूसरी बात खयाल रखनी जरूरी है कि इस नियंत्रण के प्रयोग में उदासी न पकड़ ले; चित्त प्रसन्न रहे। क्योंकि शरीर की जो सबसे गहरी तरकीब है, वह आपको उदास करके पराजित करने की है। अगर आप भूखे हैं और उपवास किया है तो आपका मन उदास हो जाएगा। अगर उपवासा आदमी उदास है, तो समझना कि उपवास व्यर्थ हो गया। इससे बेहतर था, वह भोजन कर लेता और प्रसन्न रहता। अगर उपवासा आदमी उदास है तो समझना बात व्यर्थ हो गई बात खतम हो गई।

**अध्यात्मिक ज्ञान, अनुभव एवम आत्म दर्शन**

Noratan Puri Goswami · 6h · 🌐



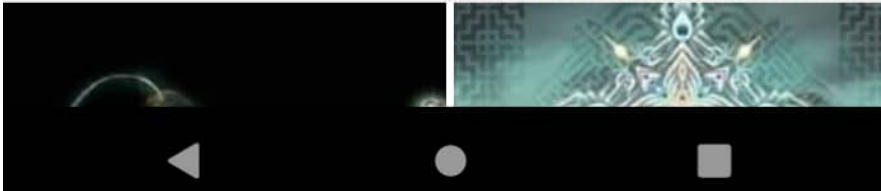
मूलाधार में पडे विकार को
मणिपुर मे जो भष्म करें।
अनहद में वो प्रीत करे
शुद्ध विशुद्धि में होई जाय।
ईडा पीडा जाग्रत करके
जो कैलाश पर जाय।
परमानन्द में शिवरात्रि मनाये
जन्म मरण मिट जाय।।
शिव व शक्ति का मिलन होवे
रंग विरंग होई जाय।
पाप ताप संताप मिटत है सारे
आत्म शिवोऽहम् शिवोऽहम् हो जाय।

हे सनातन के वंशजों तुम्हारा परिचय केवल शिव है।
मन बुद्धि चित अहंकार रूपी अंतःकरण से बाहर तुम्हारा अस्तित्व
केवल शिव है।
इस नश्वर अस्तित्व से परे,
इस नश्वर सृष्टि से परे,
इस नश्वर ज्ञान विज्ञान से परे,
तुम्हारा अस्तित्व केवल शिव है।
तुम्हारे भीतर के कैलाश शिखर पर ही शिव है।
तुम्हारा रोम रोम शिव है।
तुम स्वयं शिव से अभिन्न जानो वही पूर्ण परब्रह्म है।
तुम्हें प्रकाशित करने वाले हैं।
ऐसे शिव को तुम अंदर प्रकट करो।

शिव शक्ति के मिलन पर्व महाशिवरात्रि की सभी को आत्मिक बधाइयां



🙏🌹 शिवोऽहम् शिवोऽहम् 🌹🙏



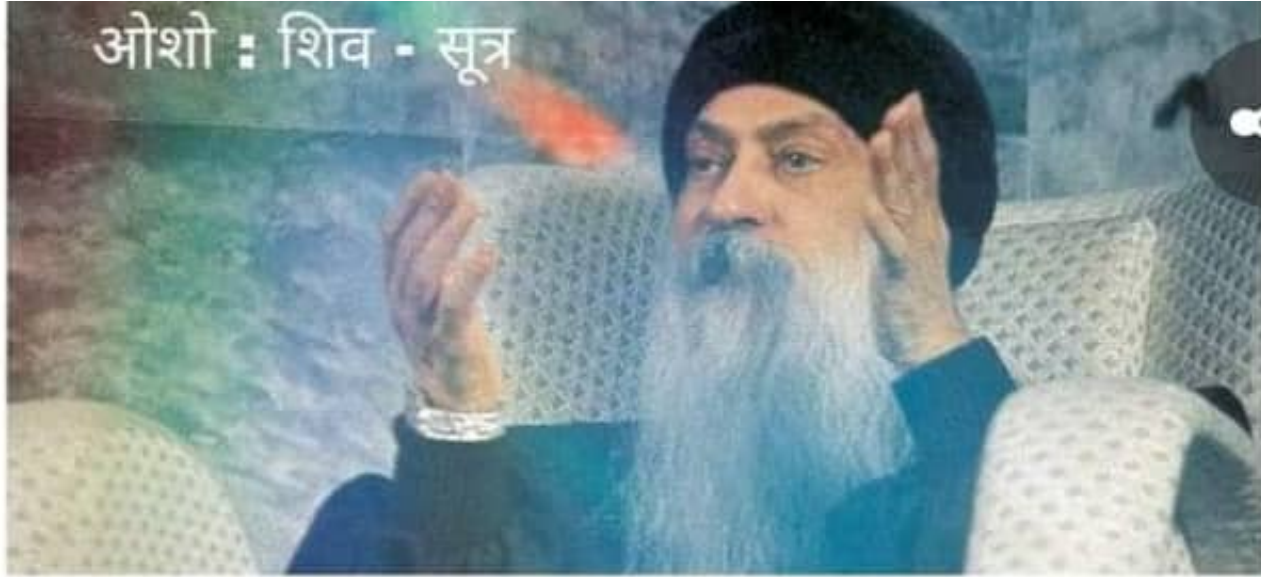
शंकर भगवान न विवाह किया, बच्चे पैदा किये, आप देख!

उनके जीवन की अन्य घटनायें भी आपके जीवन की घटनाओं की तरह ही थीं ! जैसे आपका समय गुजरता है, वैसे ही उनका समय भी गुजरता था, प्रेम- गुस्सा-दया-युद्ध सभी वैसे ही था जैसा आदमी में होता है!...हां ! कुछ जरूर

ऐसा था, जो आदमी होते हुए भी आदमी से अधिक था, उनकी ऊर्जा परमात्मा से होकर संसार में आती थी, आदमी की ऊर्जा संसार से ऊपर नहीं उठ पाती !...जिसकी ऊर्जा परमात्मा से होकर आती है, वह व्यक्ति आदमी की शक्ल में भगवान होता है, वह परमात्मा में डूबता है, तो नाचता है,

शंकर का नटराज और तांडव नृत्य इसी डूबकी की अभिव्यक्ति है, उनके नृत्य में परमात्मा नाचता था, मूर्तियों में उनके नृत्य को देख कर लगता है, वे स्वयं परमात्मा में डूबे हैं, हाथ-पैर तो निमित्त इधर-उधर हो रहे हैं। ... ब्रह्मा-

विष्णु-महेश ये तीनों प्रमुख देव आंख बंद करके उसी परमात्मा का ध्यान करते थे, जिसने ये दुनियां बनाई, आप और हम बनाये। कृष्ण भी गीता के 18 वें अध्याय के 62 वें श्लोक में अर्जुन से उसी परमात्मा की शरण में जाने की कहते हैं। -अचिंत्य



शिव कहते हैं : जिस दिन भी तुमने आध्यात्मिक जीवन की चेष्टा शुरू की ; तुम परमात्मा के साथ एक होने लगे । तुम्हारी चेष्टा की पहली किरण और तुमने सूरज की तरफ यात्रा शुरू कर दी । पहला खयाल तुम्हारे भीतर मुक्त होने का , और ज्यादा दूर नहीं है मंजिल ; क्योंकि पहला कदम करीब - करीब आधी यात्रा है

परिवर्तन तभी
घटित होता है जब
आप अपनी ऊर्जा
पूरी तरह लगा देते
हैं। तब तुम संसार
की ओर पीठ
करके और ईश्वर
की ओर मुख
करके खड़े हो
जाओ। इस
अनुभव का एक
क्षण और आप
फिर कभी पहले
जैसे नहीं रहते।
इसकी एक
झलक ही आपके
जीवन को उस
यात्रा पर ले जाने
के लिए काफी है।

शिव सूत्र ओशो



जो भी चीज़ तुम्हारे मन में घूम रही है,
जो कुछ भी तुम्हारी चेतना का विषय है,
वहीं नशा है
वास्तविक ' होश ' का अर्थ होता है,
मन का खाली हो जाना ।



● शिव जैसा ध्यानी नहीं है (-ओशो-)

ध्यानी हो तो शिव जैसा हो । क्या अर्थ है ?
ध्यान का अर्थ होता है : न विचार... वासना...
न स्मृति... न कल्पना ? ध्यान का अर्थ होता है :
भीतर सिर्फ होना मात्र । इसीलिए शिव को मृत्यु
का , विध्वंस का , विनाश का देवता कहा है ।
क्योंकि ध्यान विध्वंस है-विध्वंस है मन का । मन
ही संसार है । मन ही सृजन है । मन ही सृष्टि है ।
मन गया कि प्रलय हो गयी । ऐसा मत सोचो कि
किसी दिन प्रलय होती है । ऐसा मत सोचो कि
एक दिन आयेगा जब प्रलय हो जायेगी और सब
विध्वंस हो जायेगा । नहीं , जो भी ध्यान में उतरता
है , उसकी प्रलय हो जाती है । जो भी ध्यान में
उतरता है , उसके भीतर शिव का पदार्पण हो
जाता है । ध्यान है मृत्यु- मन की मृत्यु , 'मैं' की
मृत्यु , विचार का अंत । शुद्ध चैतन्य रह जाये-
दर्पण जैसा खाली ! कोई प्रतिबिम्ब न बने....!!*

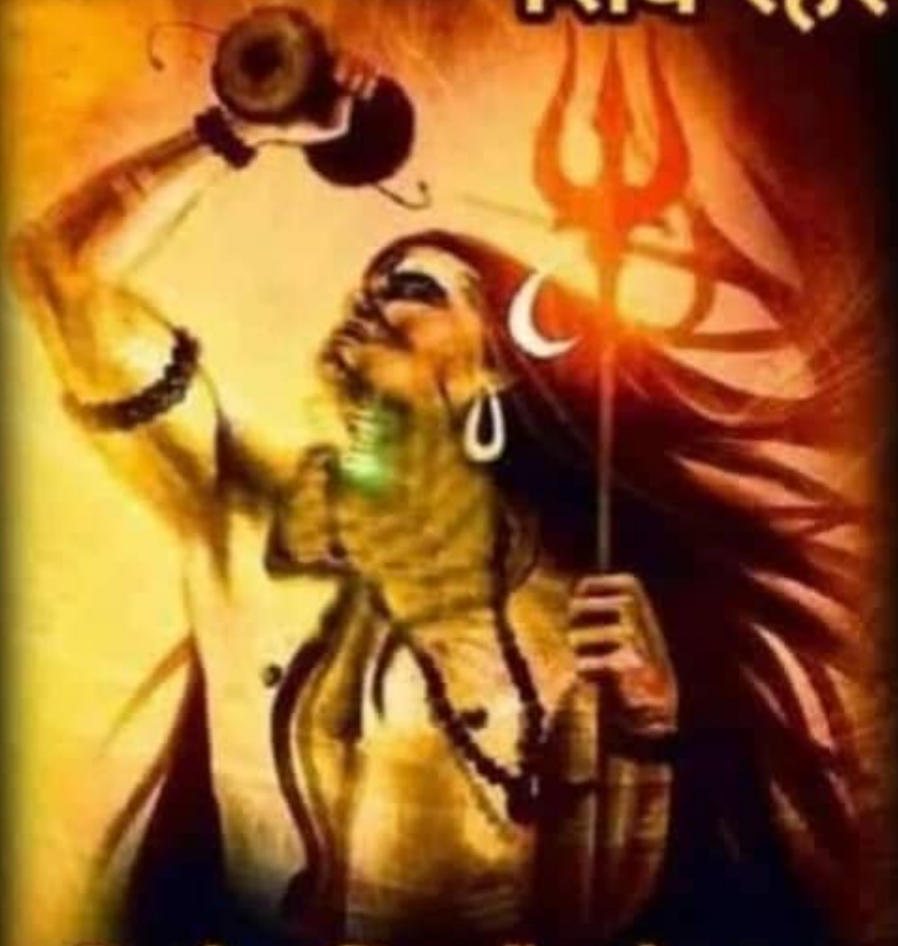
बिना ईश्वर की भक्ति के
इंसान 8400000
योनियों में चला जाता है
वही आत्मा वही प्रेम लेकिन
शरीर बदल जाते हैं





तुम चाहे लाख दिये
और
मोमबत्तीया जलाओ इनसे
तुम्हारे
जीवन में रोशनी होने वाली नहीं।
असली दिवाली तो उस दिन
ही समझना जिस दिन तुम्हारे
भीतर का दिया जले।
सद्गुरु ओशो

शिव रहस्य



शिव के व्यक्तित्व में हमने समस्त शक्तियों को स्थापित किया है। अमृत है उनका जीवन। मृत्युंजय हैं वह, लेकिन जहर उनके कंठ में है। इसलिए नीलकंठ हम उनको कहते हैं। उनके कंठ में जहर भरा हुआ है। जहर पी गए हैं। मृत्युंजय हैं, अमृत उनकी अवस्था है, मर वह सकते नहीं है, शाश्वत हैं और जहर पी गए हैं। शाश्वत जो है, वही जहर पी सकता है।

ओशो

कैवल्य उपनिषद् - ७



शिव शंभू

शिव के साथ एक शब्द जुड़ता है । शिव शंभू । शंभू का ओरिजिनल शब्द है स्वयंभू । अर्थात जो स्वयं प्रकट हुआ है । उसको उत्पन्न करने वाला कोई मात-पिता नहीं है । वे गर्भ से जन्म नहीं लेते। जन्म मृत्यु , पाप पुण्य से परे हैं । वह अवतरित होते हैं और हम आत्माओं के द्वारा सृष्टि परिवर्तन का कार्य कराते हैं ।

M.I



भजन गंगा

गुणागार ससार पार नताऽहम्॥

जो राख को तन पर, है रमाते, उसके दीवाने*,
जो, विष को भी है, पी जाते हम, उसके दीवाने ।
जो कैलाश के, राजा कहलाते, उसके दीवाने*,
जो शमशानों में, डेरा लगाते, उसके दीवाने ।
ओ तेरी, माया ना जाने,,, बाबा*,,,
हम हैं, तेरे दीवाने रे बाबा,
तेरे दीवाने रे भोले, तेरे दीवाने,,,
हम दीवाने, महादेव के, हम दीवाने xll -॥

जो बेल पत्र से, खुश हो जाते, उसके दीवाने*,
जो, दीन दुखियों के, दुःख को मिटाते, उसके दीवाने ।
जो मन चाहा वर, दे है जाते, उसके दीवाने*,
जो औघड़ दानी, है कहलाते, उसके दीवाने ।
ओ तेरी, माया ना जाने,,, बाबा*,,,
हम हैं, तेरे दीवाने रे बाबा,
तेरे दीवाने रे भोले, तेरे दीवाने,,,
हम दीवाने, महादेव के, हम दीवाने xll -॥

अपलोडर- अनिलरामूर्तिभोपाल

श्रेणी : शिव भजन

download bhajan lyrics (275 downloads)





भजन गंगा

हम दीवाने, महादेव के, हम दीवाने xll -॥
ओ तेरी, माया ना जाने,,, बाबा,,,
हम हैं, तेरे दीवाने रे बाबा,
तेरे दीवाने रे भोले, तेरे दीवाने,,,
हम दीवाने, महादेव के, हम दीवाने xll -॥

जो गंगा को सर से, है बहाते, उसके दीवाने*,
जो, नाग को है गले सजाते, उसके दीवाने ।
जो, मस्ती में डमरू, है बजाते, उसके दीवाने*,
जो, तांडव भयंकर, है मचाते, उसके दीवाने ।
ओ तेरी, माया ना जाने,,, बाबा,,,
हम हैं, तेरे दीवाने रे बाबा,
तेरे दीवाने रे भोले, तेरे दीवाने,,,
हम दीवाने, महादेव के, हम दीवाने xll -॥

नमामी शमीशान निर्वाण रूपं।
विभुं व्यापकं ब्रह्मवेद स्वरूपम्॥

निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं।
चिदाकाश माकाश वासं भजेऽहम्॥

निराकारम ओमकार मूलं तुरीयं।
गिराज्ञान गोतीत मीशं गिरीशम्।

करालं महाकाल कालं कृपालं।
गुणागार संसार पारं नतोऽहम्॥





V K Nagendra

Today, 8:52 am



ShareChat
@thakur...

मैत्री महाशिवरात्रि

**08
मार्च**



ज़िद पार्वती की थी, शिव ने स्वीकार की,
पार्वती ने तपस्या की, शिव ने प्रतीक्षा की,,

दूरी, तप, पीड़ा, अश्रु, शत्रु, कोई इनका प्रेम ना मिटा सका,,

फ़िर सारा ब्रह्माण्ड साक्षी बना,

अनंत प्रेम की अनंत गाथा का मिलन कुछ यूँ हुआ,

संसार का सबसे पहला प्रेम विवाह शिव पार्वती का हुआ..!! ❤️

महाशिवरात्रि

की हार्दिक शुभकामनाएँ...!!

Reply



CamScanner

अहंकार को मृत्यु का डर है।

**अगर ध्यान में फूल लगे तो
अहंकार मरा।**

**अगर ध्यान की ज्योति जली
तो अहंकार का दीया बुझा।**

ये दोनों चीज एक साथ घटित नहीं हो सकतीं।
इनका कोई सह-अस्तित्व नहीं है।

या अहंकार या ध्यान।

और ध्यान तुम्हारे भीतर है
और अहंकार का विस्तार यह सारे जगत में है।

अहंकार के बड़े प्रलोभन हैं।

ध्यान का प्रलोभन भी क्या?

अहंकार बड़े आश्वासन देता है,
पूरे कभी नहीं करता, कर सकता नहीं।

अहंकार बिलकुल नपुंसक है।



~ओशो :

**जीवन को जीयो,
जीवन का आनंद लो,
क्योंकि
यही परमात्मा है।**

skS

एक आदमी ने चिल्लाकर पूछा कि मंसूर,
यह तुम क्या कर रहे हो? वजू पानी से की जाती है!

मंसूर ने कहा, पानी की वजू भी कोई वजू है!
प्रार्थना करने जिन्हें जाना है, उन्हें अपने खून से
ही अपने को शुद्ध करना पड़ता है।
और तुमने मुझे मौका दिया, तुम्हारा मैं अनुगृहीत हूँ,
शुक्रगुजार हूँ कि तुमने मुझे खून से,
अपने ही खून से वजू करने की सुविधा जुटा दी।

और मरते वक्त जब सारे लोगों ने उससे चिल्लाकर पूछा कि मंसूर,
तुम नाराज भी नहीं हो, और तुम्हारी आंखें अभी भी प्रेम से भरी हैं
और तुम्हारे होंठों से अभी भी प्रेम की वर्षा हो रही है!

बात क्या है?

तो मंसूर ने कहा, ताकि तुम जान सको कि
तुमने जो किया, वह भूल भरा था; और तुमने
जिस आदमी को मारा, वह आदमी वही नहीं था,
जैसा तुमने उसे समझा था।



आचार्य भी रजनीश ०५१०
मीता दर्शन अ. प्र. दक्षिणायण के जटिल भटकाव

अहं ब्रह्मास्मि का अनुवाद है, अनलहक, मैं ब्रह्म हूं।

**बड़ा मुश्किल है तय करना कि यह फकीर मंसूर,
शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को पहुंचकर कह रहा है
या अमावस की अंधेरी रात में पहुंचकर कह रहा है।
कौन तय करे? कैसे तय करे? जो मंसूर को प्रेम करते हैं,
वे कहते हैं कि यह पूर्णिमा की घोषणा है। और
जो मंसूर के विरोधी थे, उन्होंने कहा, यह अमावस की घोषणा है।
अमावस की घोषणा मानकर मुसलमानों ने मंसूर की हत्या कर दी।**

**लेकिन वह घोषणा अमावस की न थी।
और जिन्होंने हत्या की, उनसे भूल हो गई।
क्योंकि अगर वह अमावस की घोषणा होती,
तो मरते वक्त पता चल जाता।
क्योंकि मरते वक्त सब कुछ पता चल जाता है।
अंतिम क्षण में, काल-क्षण में मंसूर ने जाहिर कर दिया कि
जिन्होंने सूली दी, वे भूल में थे।**



अमावस की
स्थिति में पहुंचा हुआ
व्यक्ति भी कह सकता है,
अहं ब्रह्मास्मि।
लेकिन उसका मतलब
बिलकुल भिन्न होता है।
वह भी कहता है,
मैं ब्रह्म हूं।
लेकिन उसका मतलब
यह होता है,
अब और कोई ब्रह्म नहीं,
मैं ही ब्रह्म हूं!

आचार्य श्री राजनीश (१००)

आध्याय आठवाँ का सारांश

पूर्णिमा की रात्रि को पहुंचा हुआ व्यक्ति कहता है,

अहं ब्रह्मास्मि!

क्योंकि वह कहता है, जो कुछ भी है, सभी ब्रह्म है।

मैं भी ब्रह्म हूं, क्योंकि सभी कुछ ब्रह्म है।

उसके इस अहं ब्रह्मास्मि में, उसके इस अहं में,
उसके इस मैं में, मैं बिलकुल नहीं है और सब समा गया है।
कहें, उसका यह अहं पूर्णरूपेण अहं-शून्य है, ईगोलेस ईगो
शब्द भर मैं है, लेकिन उसमें मैं-पन जरा भी नहीं है। क्योंकि
वह पूरे ब्रह्म के साथ अपने को एक अनुभव करता है।

जैसे बूंद सागर में गिर जाए और कहे कि मैं सागर हूं।

लेकिन गिरते ही बूंद तो खो जाती है।

और अब मैं सागर हूं, इसका मतलब ही यह होता है

कि अब सागर ही है, और मैं नहीं हूं।

एक ही अर्थ होता है।

‘ANA’ L HAQ

**अहं ब्रह्मास्मि का अनुवाद है,
अनलहक, मैं ब्रह्म हूं।**

आचार्य श्री रत्ननीश OSHO

गीता दर्शन अ. ८ प्र. १०/११ दक्षिणायन के जटिल भटकाव

**ओशो का हिन्दी साहित्य**

Rahul Kumar Ojha · 16h · 🌐



🌹 रास्ता तो लंबा है। लेकिन इतना भी लंबा नहीं कि पूरा न हो सके।
मंजिल कठिन तो है, मगर असंभव नहीं।

साधना तो करनी होगी, साध्य है। दुरूह है, दुर्गम है, असाध्य नहीं! फिर तुम जैसा चल आए हो, जितना चल आए हो, उससे आशा बंधती है कि आगे भी रास्ते ठीक मिलते जाएंगे।

मुझ पर मत छोड़ो! मुझ पर छोड़ने में खतरा है। छोड़ा मुझ पर कि तुम बस बैठ जाओगे।

यही तो इस पूरे देश का दुर्भाग्य है। इसने छोड़ दिया सब, मान लिया कि भगवान की इच्छा होगी तो सब हो जाएगा। भगवान की इच्छा से निश्चित सब हो सकता है, मगर पहले तुम्हें अपनी पूरी इच्छा को श्रम में संलग्न कर देना होगा। तुम जब अपनी इच्छा को पूरा का पूरा श्रम में संलग्न कर देते हो, उसी क्षण भगवान की ऊर्जा तुम्हें मिलनी शुरू होती है, उसके पहले नहीं।

तुम अपना पूरा श्रम ध्यान में लगा दो। मैं तो साथ खड़ा ही हूं! और परमात्मा भी तुम्हारे साथ खड़ा है। सारा अस्तित्व तुम्हारे साथ है। जब भी कोई व्यक्ति ध्यान की दिशा में उतरता है, सारा अस्तित्व आनंदमग्न हो उसे सहयोग देता है, क्योंकि कोई भूला-भटका घर आ रहा है। कोई दूर निकल गया वापस लौट रहा है। कोई बीज फूट रहा है, अंकुरित हो रहा है, पल्लवित हो रहा है। आकाश उसे छाया देता है, सूरज उसे गर्मी देता है, बादल उसे पानी देते हैं। भूमि उसे प्राण देती है। यह सारा अस्तित्व उसके लिए सहयोगी हो जाता है।

हां, अस्तित्व के विपरीत चलना हो तो तुम अकेले रह जाते हो। अहंकार की यात्रा अकेले की यात्रा है। ध्यान की यात्रा में सारा अस्तित्व सहयोगी है। मगर अस्तित्व पर ही मत छोड़ देना। तुम्हें तो श्रम करना ही है। अस्तित्व सहयोग देगा।

🌹 ओशो 🌹

"राम दुवारे जो मरे - 8"

नरक शाश्वत नहीं है, लेकिन
नरक की प्रतीति सभी को
शाश्वत जैसी मालूम पड़ती है।
और स्वर्ग भी क्षणिक नहीं,
लेकिन स्वर्ग की प्रतीति सभी को
क्षणिक जैसी मालूम पड़ती है।

क्योंकि
सुख समय को छोटा कर देता है,
दुख समय को लंबा कर देता है।
और नर्क का अर्थ है,
परम दुख,
तो समय बहुत लंबा हो जाएगा,
ओर-छोर दिखाई नहीं पड़ेंगे।
और स्वर्ग का अर्थ है,
परम सुख,
समय बिलकुल सिकुड़ जाएगा
और क्षण में स्वर्ग
बीत जाएगा।

आचार्य श्री रजनीश OSHO

गीता दर्शन अ. १. प्र. १०/११ दक्षिणायन के जटिल भटकाव

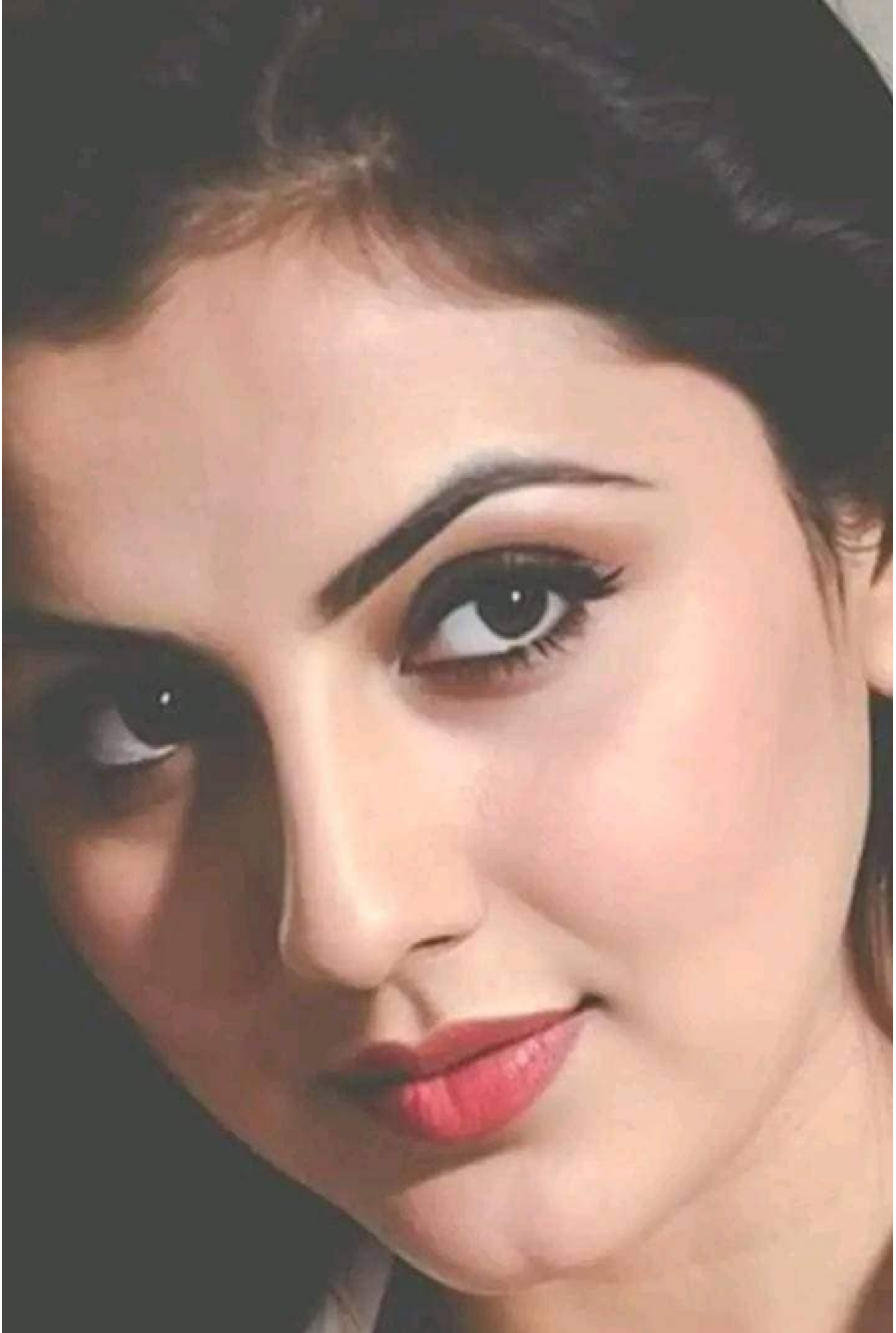


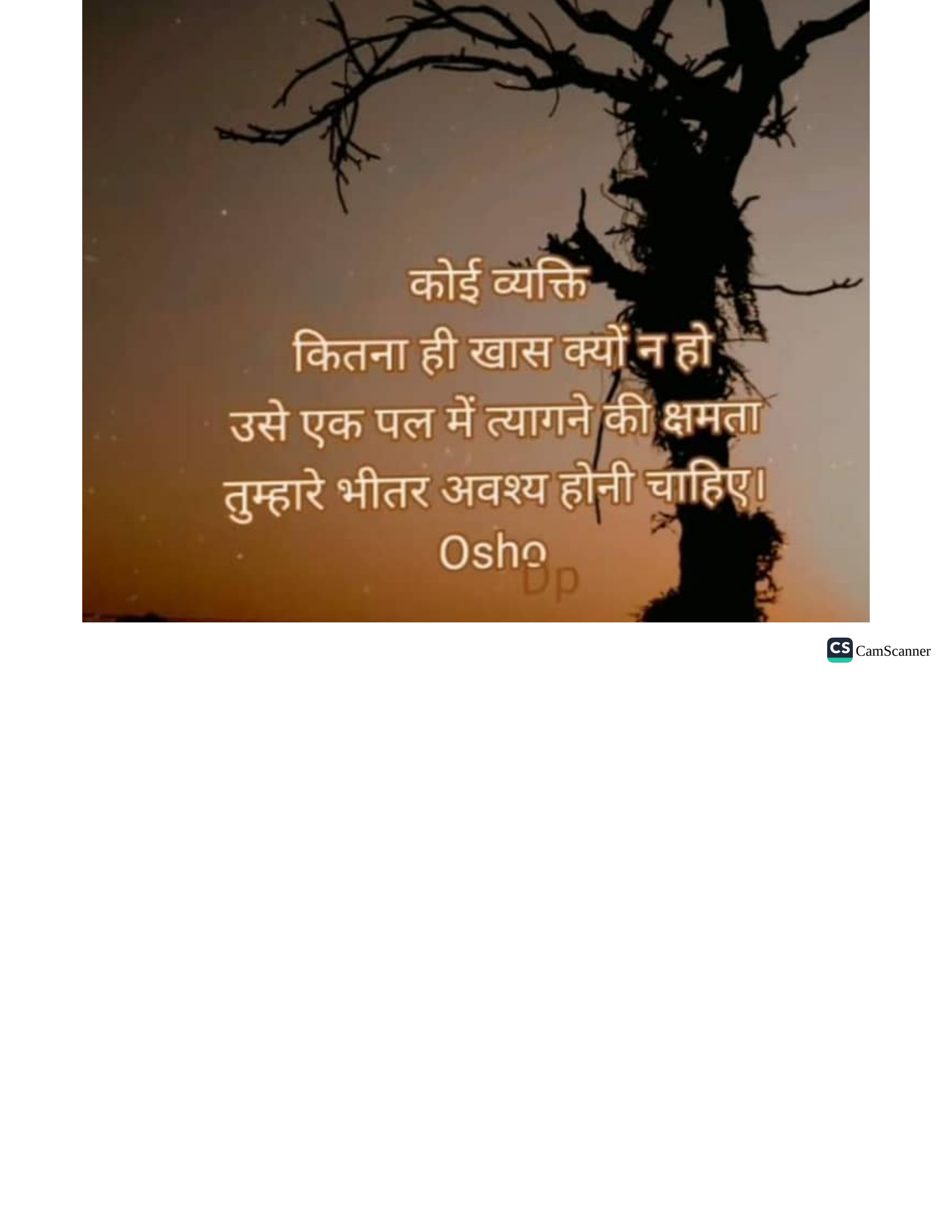


शिवतुल्य जो हो गया है, वह जप नहीं करेगा।
जप की कोई जरूरत नहीं; क्योंकि वह जो भी
करेगा, वही जप होगा।

- ओशो (शिव-सुत्र)

@osho.vichar





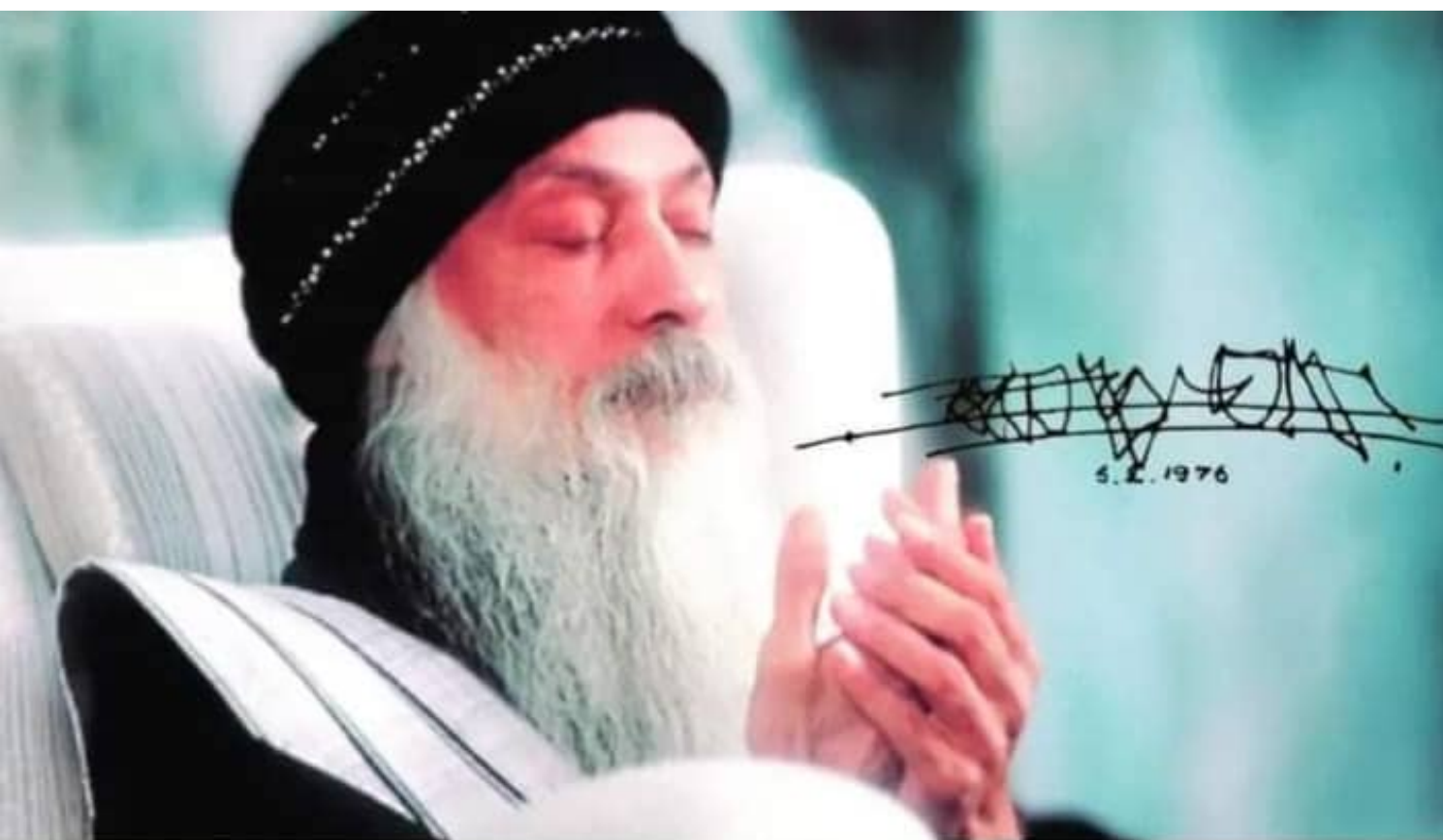
कोई व्यक्ति
कितना ही खास क्यों न हो
उसे एक पल में त्यागने की क्षमता
तुम्हारे भीतर अवश्य होनी चाहिए।
Osho

आप हैरान होंगे कि हिंदुओं के सब तीर्थ नदी के किनारे हैं और जैनों के सब तीर्थ पहाड़ों पर हैं. जैन की सारी चेष्टा यह है कि भीतर सब सूख जाए, आर्द्रता रहे हीनहीं. जैन मुनि ने स्नान भी बंद कर दिया, उसके कारण हैं पंच महाभूतों में उनकी कुंजी है-अग्नि. सब तरफ से भीतर अग्नि को जगाना है. ऊपर से पानी डाला तो उस अग्नि को जगाने में बाधा पड़ेगी. इसलिए सूखेपहाड़ पर जहां हरियाली नहीं, पानी नहीं, जहां सब तप्त है, जैन साधक वहां खड़ा है. दुनिया में सिर्फ जैनों को छोड़कर उपवास में पानी लेने की मनाही कोई नहीं करेगा सिर्फ जैन हैं, जो उपवास में पानी का भी निषेध करेंगे. गृहस्थ के लिए भी कहेंगे कमसेकम रात का पानी त्याग कर दो. लोग यही समझते हैं कि रात्रि में कोई कीड़ा मकोड़ा न मिल जाए, पर उससे कोई लेनादेना नहीं असलमें अग्रितत्वकी कुंजी के लिए तैयारी है. बड़ेमजे की बात है पानी कम लिया जाए तो ब्रह्मचर्य के लिए सहायता मिलती है. क्योंकि वीर्य सूखना शुरू हो जाता है-ओशो

संत रविदास लिखते हैं,



जीवन चारि दिवस का मेला रे !
बांभन झूठा, वेद भी झूठा, झूठा ब्रह्म अकेला रे !
मंदिर भीतर मूर्ति बैठी, पूजति बाहर चेला रे !
लड्डू भोग चढ़ावति जनता, मूर्ति के ढिंग केला रे !
पत्थर मूर्ति कछु न खाती, खाते बांभन चेला रे !
जनता लूटती बांभन सारे, प्रभु जी देति न धेला रे !



शिव ब्रह्मचारी नहीं थे. और एक व्यक्ति जो ब्रह्मचारी नहीं था उसने ध्यान की सभी तकनीकों की खोज की।
निहितार्थ क्या है? तात्पर्य यह है कि ब्रह्मचर्य का ध्यान से कोई लेना-देना नहीं है - वास्तव में तथाकथित ब्रह्मचारी संतों और भिक्षुओं ने मानव ज्ञान, मानव बुद्धिमत्ता, सौंदर्य, समृद्धि, संगीत, नृत्य में कोई योगदान नहीं दिया है।



Like



Comment



Send

**Osho Amrit !!!**

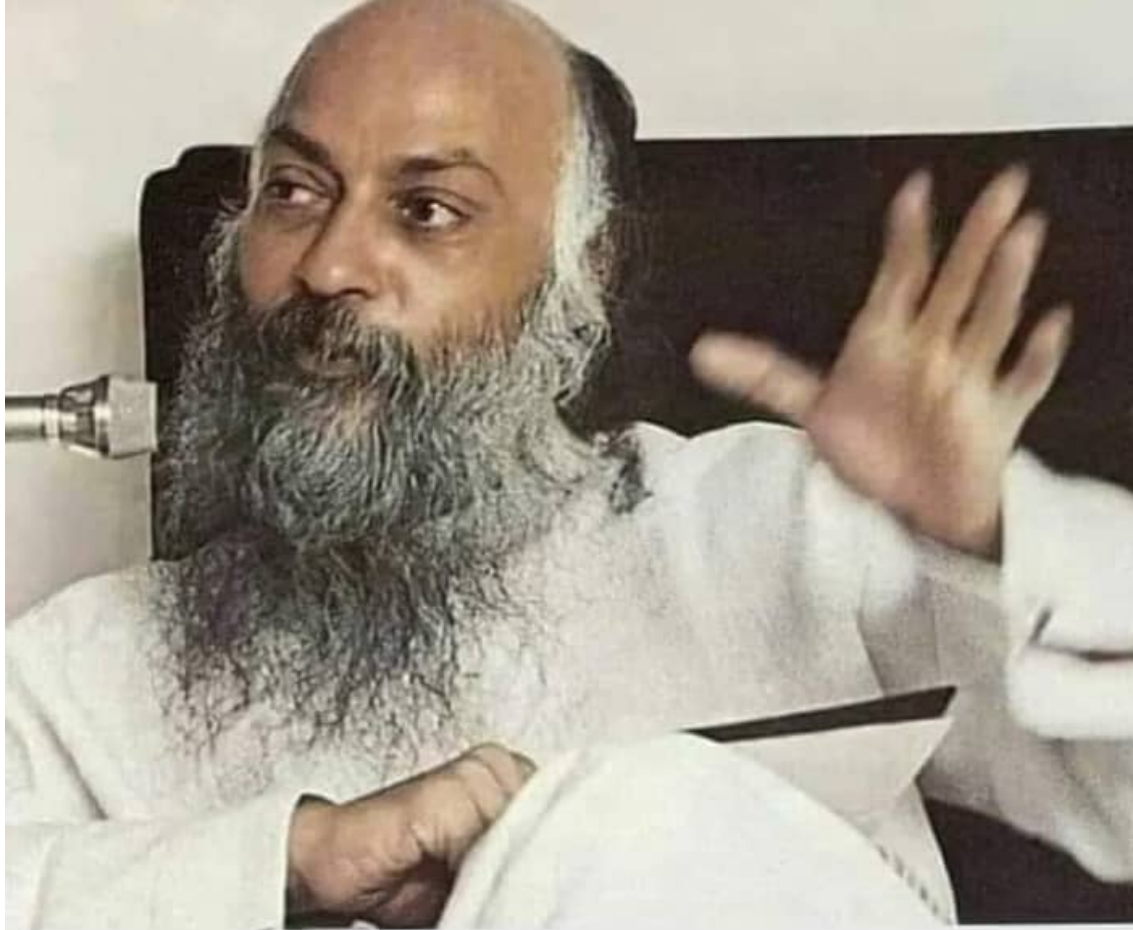
Vinod Kumar · 1d · 🌐



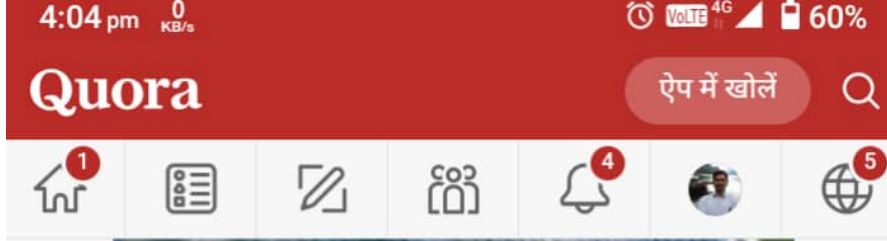
'मंगल कामना'

बुद्ध अपने भिक्षुओं से कहते थे कि तुम चौबीस घण्टे,
राह पर कोई दिखे उसकी मंगल की कामना करना।
वृक्ष भी मिल जाए तो उसकी मंगल की कामना करके
उसके पास से गुजरना।
पहाड़ भी दिख जाए तो मंगल की कामना करके
उसके निकट से गुजरना।
राहगीर दिख जाए अनजान, तो उसके पास से मंगल
की कामना करके राह से गुजरना।
एक भिक्षु ने पूछा, इससे क्या फायदा?
बुद्ध ने कहा, इसके दो फायदे हैं।
पहला तो यह कि तुम्हें गाली देने का अवसर न मिलेगा।
तुम्हें बुरा खयाल करने का अवसर न मिलेगा।
तुम्हारी शक्ति नियोजित हो जाएगी मंगल की दिशा में।
और दूसरा फायदा यह कि जब तुम किसी के लिये मंगल
की कामना करते हो तो तुम उसके भीतर भी रिजोनेंस,
प्रतिध्वनि पैदा करते हो।
वह भी तुम्हारे लिए मंगल की कामना से भर जाता है।

ओशो



जीव दया पर महावीर का इतना
जोर है। वह सिर्फ अहिंसा के
कारण नहीं। उसके कारण बहुत
गहरे आध्यात्मिक हैं। वह जो
तुम्हारे पास चलता हुआ कीड़ा
है, वह तुम ही हो। कभी तुम भी
वही थे। कभी तुम भी वैसे ही
सरक रहे थे, एक छिपकली की
तरह, एक चींटी की तरह, एक
बिच्छू की तरह तुम्हारा जीवन
था। आज तुम भूल गये हो, तुम
आगे निकल आये हो। लेकिन
जो आगे निकल जाये और पीछे
वालों को भूल जाये, उस आदमी
के भीतर कोई करुणा, कोई
प्रेम, कोई मनुष्यत्व नहीं है।
ओशो



ओशो भारत और विदेशों में काफी विवादित रहे थे क्योंकि वो किसी भी विषय पर और किसी भी इंसान के बारे में अपने विचार रखने से कतराते नहीं थे। कई लोग उनके विचारों से सहमत नहीं थे और अक्सर उनका विरोध होता रहता था।

ओशो के 10 सिद्धांत, जिन्हें ओशो खुद भी फॉलो करते थे।

1. जीवन यहीं है और अभी है।
2. जीवन को होश में लीजो।
3. उनके अनुसार जब तक भीतर से आवाज ना आए तब तक किसी के आदेश का पालन मत करो।
4. स्वयं के अलावा दूसरा कोई ईश्वर अस्तित्व नहीं रखता।
5. प्रेम ही प्रार्थना का नाम है।
6. सत्य की खोज बहार नहीं अपने भीतर करो।
7. शून्य हो जाना ही सत्य का मार्ग है।
8. प्रत्येक क्षण मरो ताकि हर दूसरा क्षण नया जीवन जी सको।
9. तैरो नहीं बह जाओ।
10. जो है यहीं है, उसे ढूँढने की जरूरत नहीं है, रूको और देखो।

फोटो: पिन्ट्रेस्ट

21.7 हजार बार देखा गया · 181 अपवोट देखें · 7 शेयर देखे गए

3 में से 1 जवाब



विज्ञापन





लाओत्से कहता है.!! कि
"जब भी कोई चीज़!
पूर्णता के निकट पहुंच
जाती है, तो चुप हो जाती
है.!!!

ओशो



शिव का यह सूत्र कहता है : ध्यान बीज है।
इसलिए ध्यान से शुरू करना पड़ेगा।
अभी तो होश—बेहोश, जागते—सोते, मन ही
तुम्हें पकड़े हुए है। रात सपने चलते हैं, दिन
विचार चलते हैं। उठते—बैठते मन का ऊहापोह
चलता रहता है। और बड़े आश्चर्य की बात तो
यह है कि सार उसमें कुछ भी नहीं। कितना ही
यह ऊहापोह चले, मन से कुछ मिलता नहीं।
क्या तुमने पाया है? इतने दिन सोचकर कहाँ
तुम पहुंचे हो? इसे भी तो सोचो। इस तरफ भी
ध्यान दो कि इतनी यात्रा करने के बाद कौन
सी मंजिल मिली है।
सोच—सोचकर क्या पाया?

Osho

 Reels ▾

रावण ब्राह्मण होकर भी
असुर बन गया और शबरी
दलित होकर भी देवी !
आपकी नियति सिर्फ
आपके कर्मों से तय होती
है, जन्म और जाति से
नहीं !!



9.2K



385



3.1K



Nirmal Murmu

Follow

रावण ब्राह्मण होकर भी/ #motivation #viral #reels

वह गोल्डन मीन, स्वर्ण सेतु को उपलब्ध हो जाता है।

यह तीसरा सूत्र भी वहीं है। और आप भी अपने-अपने सूत्र खोज सकते हैं। कोई कठिनाई नहीं है। एक ही नियम है कि दो विपरीत के बीच ठहर जाना, तटस्थ हो जाना। सम्मान-अपमान, ठहर जाओ—मुक्ति। दुख-सुख, रूक जाओ—प्रभु में प्रवेश। मित्र-शत्रु, ठहर जाओ—सच्चिदानंद में गति।

कहीं से भी दो विपरीत को खोज लेना और दो के बीच में तटस्थ हो जाना। न इस तरफ झुकना, न उस तरफ। समस्त योग का सार इतना ही है। दो के बीच में जो ठहर जाता, वह जो दो के बाहर है, उसको उपलब्ध हो जाता है। द्वैत में जो तटस्थ हो जाता, अद्वैत में गति कर जाता है। द्वैत में ठहरी हुई चेतना अद्वैत में प्रतिष्ठित हो जाती है। द्वैत में भटकती चेतना, अद्वैत में च्युत हो जाती है~ओशो



पार्वती पूछ रहीं है शिव से, शांत कैसे हो जाऊँ?

आनंद को कैसे उपलब्ध हो जाऊँ?

अमृत कैसे मिलेगा?

ओशो अहोभाव



अहोभाव

17h · 🌐

...



अहोभाव

. एक अब्दुत ग्रंथ है भारत मैं। और मैं समझता हूं, उस ग्रंथ से अब्दुत ग्रंथ पृथ्वी पर दूसरा नहीं है। उस ग्रंथ का नाम है, विज्ञान भैरव तंत्र। छोटी सी किताब है। इससे छोटी किताब भी दुनियां में खोजनी मुश्किल है। कुछ एक सौ बारह सूत्र है। हर सूत्र में एक ही बात है। पहले सूत्र में जो बात कह दी है, वहीं एक सौ बारह बार दोहराई गई है—एक ही बात, और हर दो सूत्र में एक विधि हो जाती है।

पार्वती पूछ रही है शिव से, शांत कैसे हो जाऊँ? आनंद को कैसे उपलब्ध हो जाऊँ? अमृत कैसे मिलेगा? और दो-दो पंक्तियों में शिव उत्तर देते है। दो पंक्तियों में वे कहते है, बाहर जाती है श्वास, भीतर जाती है श्वास। दोनों के बीच में ठहर जा, अमृत को उपलब्ध हो जाएगी। एक सूत्र पूरा हुआ। बाहर जाती है श्वास, भीतर आती है श्वास, दोनों के बीच ठहरकर देख ले, अमृत को उपलब्ध हो जाएगा।

पार्वती कहती है। समझ में नहीं आया। कुछ और कहें। शिव दो-दो में कहते चले जाते है। हर बार पार्वती कहती है। नहीं समझ में आया। कुछ और कहें। फिर दो पंक्तियां। और हर पंक्ति का एक ही मतलब है, दो के बीच ठहर जा। हर पंक्ति का एक ही अर्थ है, दो के बीच ठहर जा। बाहर जाती श्वास, अंदर जाती श्वास। जन्म और मृत्यु, यह रहा जन्म यह रही मृत्यु। दोनों के बीच ठहर जा। पार्वती कहती है, समझ में कुछ आता नहीं। कुछ और कहे। एक सौ बारह बार। पर एक ही बात दो विरोधों के बीच में ठहर जा। प्रतिकार-आसक्ति— विरक्ति, ठहर जा-अमृत की उपलब्धि। दो के बीच दो विपरीत के बीच जो ठहर जाए वह गोल्डन मीन, स्वर्ण सेतु को उपलब्ध हो जाता है।

यह तीसरा सूत्र भी वहीं है। और आप भी अपने-अपने सूत्र खोज सकते है। कोई कठिनाई नहीं है। एक ही नियम है कि दो विपरीत के बीच ठहर जाना, तटस्थ हो जाना। सम्मान-अपमान, ठहर जाओ— मुक्ति। दुख-सुख, रूक जाओ—प्रभु में प्रवेश। मित्र-शत्रु, ठहर जाओ— सच्चिदानंद में गति।

कहीं से भी दो विपरीत को खोज लेना ओर दो के बीच में तटस्थ हो जाना। न इस तरफ झुकना, न उस तरफ। समस्त योग का सार इतना ही है। दो के बीच में जो ठहर जाता, वह जो दो के बाहर है, उसको उपलब्ध हो जाता है। द्वैत में जो तटस्थ हो जाता, अद्वैत में गति कर जाता है। द्वैत



ओशो

बहुत लोग मेरे पैर छू लेते हैं, उसी वक्त मेरा मन होता है मैं भी उनके पैर छूऊं, क्योंकि इसके सिवाय कोई और उत्तर नहीं हो सकता है। लेकिन इतने-इतने लोगों के अलग-अलग पैर छूना कठिन होगा, शायद वे मुझे छूने भी न दें, इसलिए मैं इकट्ठे सबके पैर छू लेता हूं। सबके पैरों में मेरे प्रणाम स्वीकार करें। सबके भीतर जो परमात्मा बैठा है, वही किसी दिन जागे, इसकी कामना करता हूं।

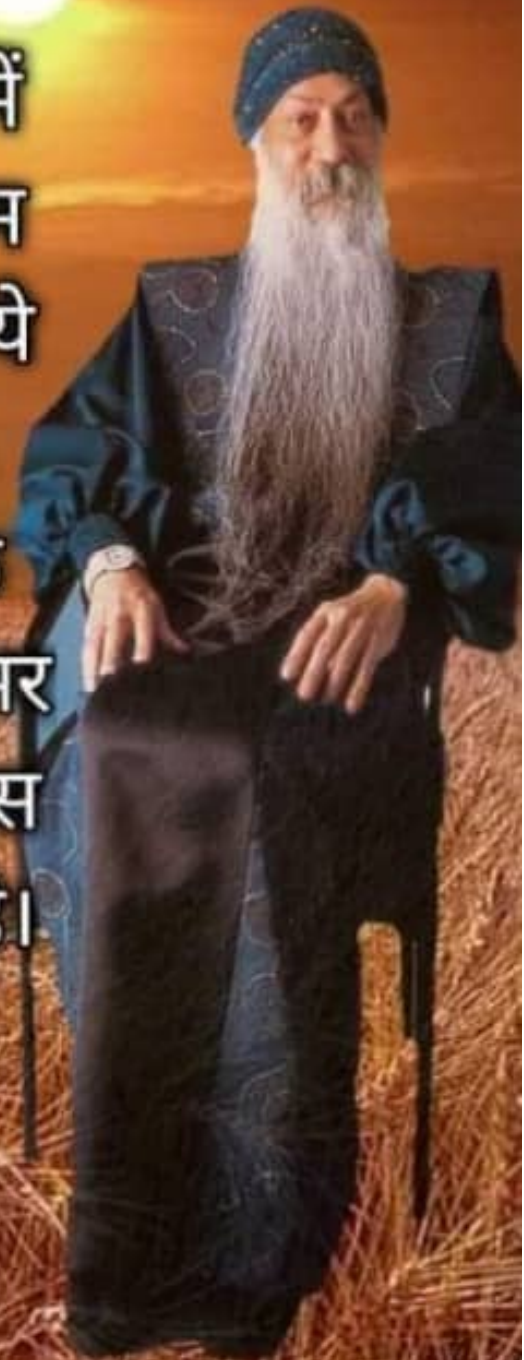
जब तक करुणा का भाव तुममें
न आए, सोचना भी मत कि तुम
सही तरीके से जिये या तुम जिये
भी। करुणा ही खिलावट है।

और जब करुणा किसी व्यक्ति
पर उतराती है, लाखों के घाव भर
जाते हैं। जो कोई भी उसके पास
आता है, भला-चंगा हो जाता है।

करुणा चिकित्सकीय है।

प्रेम को प्रार्थना बनाओ

❤️ ओशो ❤️



अक्सर तो
ऐसा होता है कि
जो लोग अपने को कष्ट देते हैं,
वे कष्ट देने में रस पाते हैं-सैडिस्ट हैं।

Marquis de Sade

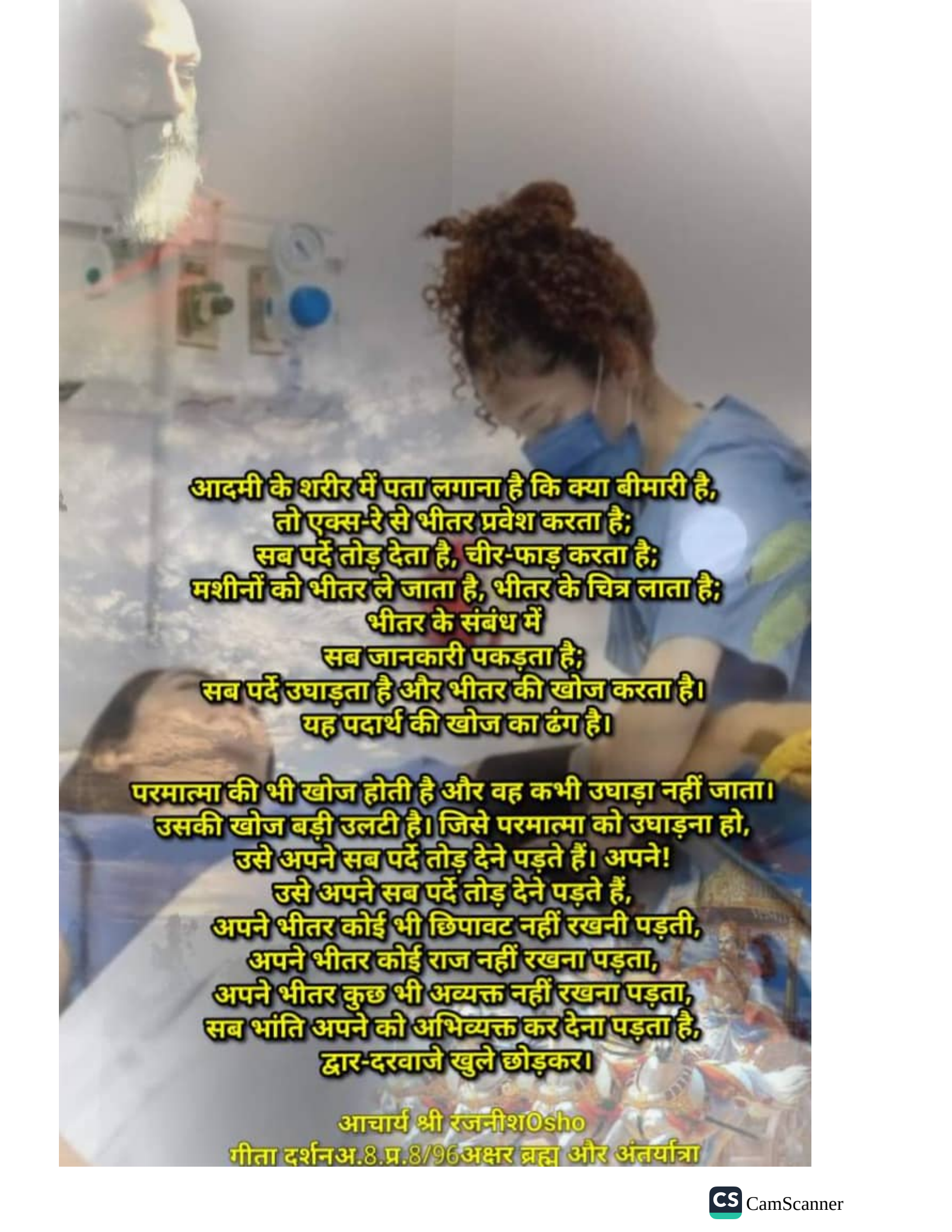
JUSTINE, 🤔😂😄

OU
LES MALHEURS DE LA VERTU

अपने को सताने में या दूसरे को सताने में।
या सैडिस्ट हैं या मैसोचिस्ट हैं।
जो लोग तप को बहुत आदर देते हैं,
वे अक्सर मैसोचिस्ट होते हैं,
खुद को सताने में रस पाते हैं।

ये विकृतियां हैं।
अध्यात्म में भी ये विकृतियां
खूब प्रवेश कर जाती हैं।

आचार्य श्री रजनीश OSHO
गीतादर्शन अ. 1 प्र. 11/99 तत्वज्ञ-कर्मकांड के पार



आदमी के शरीर में पता लगाना है कि क्या बीमारी है,
तो एक्स-रे से भीतर प्रवेश करता है;
सब पर्दे तोड़ देता है, चीर-फाड़ करता है;
मशीनों को भीतर ले जाता है, भीतर के चित्र लाता है;
भीतर के संबंध में
सब जानकारी पकड़ता है;
सब पर्दे उघाड़ता है और भीतर की खोज करता है।
यह पदार्थ की खोज का ढंग है।

परमात्मा की भी खोज होती है और वह कभी उघाड़ा नहीं जाता।
उसकी खोज बड़ी उलटी है। जिसे परमात्मा को उघाड़ना हो,
उसे अपने सब पर्दे तोड़ देने पड़ते हैं। अपने!
उसे अपने सब पर्दे तोड़ देने पड़ते हैं,
अपने भीतर कोई भी छिपावट नहीं रखनी पड़ती,
अपने भीतर कोई राज नहीं रखना पड़ता,
अपने भीतर कुछ भी अव्यक्त नहीं रखना पड़ता,
सब भांति अपने को अभिव्यक्त कर देना पड़ता है,
द्वार-दरवाजे खुले छोड़कर।

आचार्य श्री रजनीशOsho
गीता दर्शन अ.8.प्र.8/96 अक्षर ब्रह्म और अंतर्धात्रा



ओशो कहते हैं न पाने का सुख हो, न खोने का दुख,
यही अवस्था संन्यास की अवस्था है। अहोभाव

तुम साचत ही कि तुम्हारे दुखा के लिए दूसर जिम्मेवार हैं। स्वाभाविक ही, यदि दूसरों से दुख आता है, तो आनंद भी दूसरों से आएगा। लेकिन तब तुम क्या कर रहे हो? तुम्हारा क्या काम है? तुम्हारे होने का मतलब क्या है--मात्र इसलिए कि कुछ लोग तुम्हें दुखी करें और कुछ लोग तुम्हें आनंदित करें, तुम्हें बचाएं? क्या तुम मात्र कठपुतली हो? सभी डोरें दूसरों के हाथ में हैं। तुम अपने मनुष्य होने के प्रति सम्मान से नहीं भरे हो, तुम स्वयं का सम्मान नहीं करते हो। तुम्हारा अपने होने के प्रति कोई प्रेम नहीं है, तुम्हारी अपनी स्वतंत्रता के प्रति कोई प्रेम नहीं है।

ओशो



कुछ तुमसे भगवान मांगता नहीं।
और तुम सब चढ़ाते हो। कभी
आरती उतारते, कभी फूल
चढ़ाते, कभी बकरे काटते, कभी
गाएं काटते--आदमी भी काटे हैं
तुमने--तुम और सभी चढ़ा आते
हो 'अपने' को छोड़ कर।



खुद का सम्मान करो, खुद से प्यार करो,
क्योंकि तुम्हारे जैसा कोई व्यक्ति कभी
भी नहीं हुआ और फिर कभी नहीं
होगा।।

— ओशो



पत्थर " पुजने" से, कुछ ना मिले..

"पुस्तक " पढ़नें से मिले "ग्यान "

"मंदिर"जाने से अगर "भगवान "

मीले तो "पुजारी "

आपसे क्युं मांगे "दान"..!

संत कबीर

Wb creation

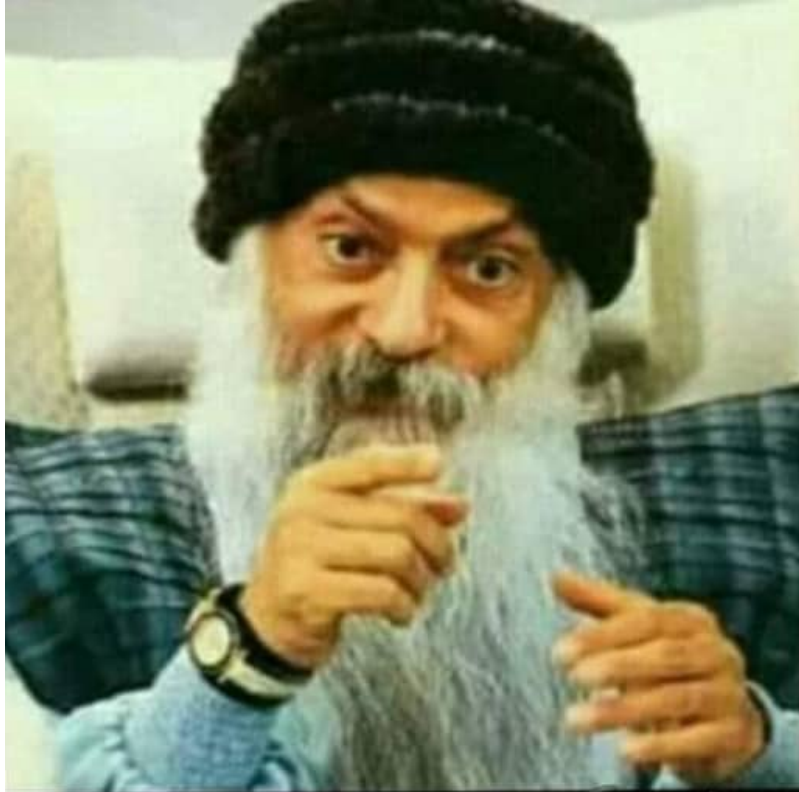


यदि मनुष्य की चेतना में ठीक-ठीक खोजा जाए तो मोक्ष का ही स्वर बजता है, वह हर तरफ से मुक्ति चाहता है। इसलिए जहां भी बंधन बनने लगते हैं, वही बेचैनी हो जाती है।

ओशो अहोभाव
भज गोविन्दम मूढमते,
(प्रवचन-9)



किसी के कहने से यदि
" अच्छा " या " बुरा "
होने लगे तो ये संसार या तो
" स्वर्ग " बन जाये या पूरी
तरह से " नर्क " इसलिए ये
ध्यान मत दो की कौन
क्या कहता है , बस वो करो
जो " अच्छा " है
और " सच्चा " है ।



Saideep

द्ध ने महल का त्याग

या शांति की तलाश

और

म शांति का त्याग क

हे हैं महल की तलाश

में...!

.....ओशो.....

ओशो



Raj Malhotra

तुम्हारे हृदय में जो उठती है बात,
तुम्हारे जानने के पहले भी परमात्मा
तक पहुंच जाती है। क्योंकि तुम अपने
हृदय से बहुत दूर हो, परमात्मा तुम्हारे
हृदय में विराजमान है। प्रार्थना को
चिल्ला-चिल्लाकर करने की कोई बात
नहीं। कहने की बात ही नहीं है कुछ।
कहने को क्या है? परमात्मा के सामने
सिर झुकाकर बैठ जाना है। असहाय
होकर, प्यासे होकर, उसके हाथों में
अपने को छोड़ देना है.



रोम में एक अद्भुत
फकीर हुआ! और वो
ये कह कर चुप हो गया
कि:- "मेरे यार जब हर
जगह तूं ही तूं है! तो फिर
क्या बोलना!"
और वो 25 बरस तक
मौन रहा....

ओशो

मेरे पास सिखाने को कोई दर्शन नहीं,
बल्कि मेरे पास अस्तित्व ही है प्रत्यक्ष
दिखा देने को। यहां तुम्हें कोई सिद्धांत
नहीं सिखाया जा रहा है। यहां तुम्हें कोई
धर्म —सिद्धांत नहीं दिया जा रहा है।

ओशो



www.OshoFragrance.org



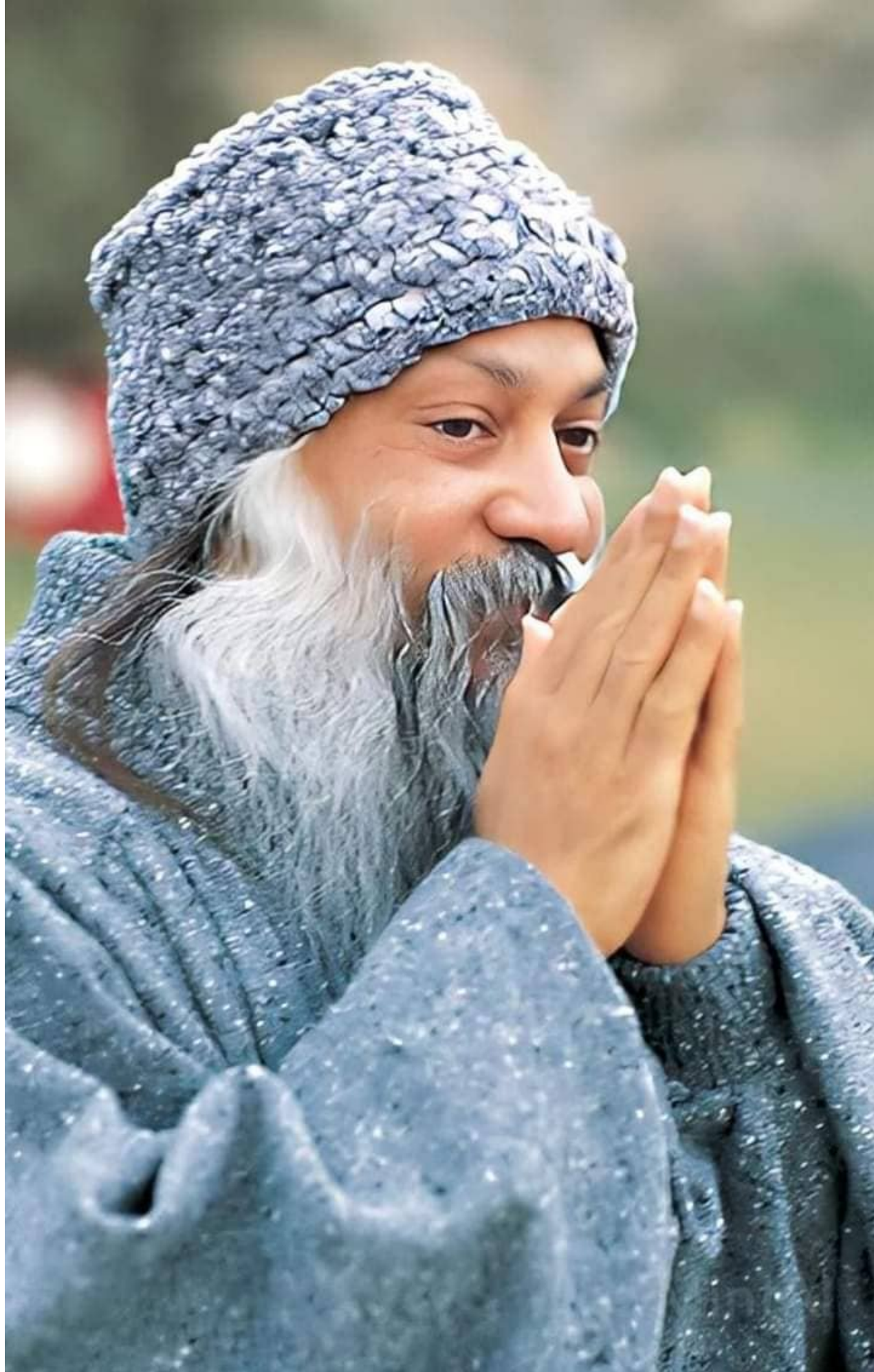
अहंभाव

जिस दिन उसकी कृपा मिलनी शुरू होती है
उसी दिन तुम शक्तिशाली हो जाते हो। लेकिन
ध्यान रखना, वह शक्ति तुम्हारी नहीं है। अगर
तुम्हें यह अकड आ गयी कि वह शक्ति तुम्हारी
है, तो मिली हुई कृपा भी खो जाती है। क्योंकि
अंत तक सुक्ष्म अहंकार पीछा करता है।

ओशो
एक ओंकार सतनाम

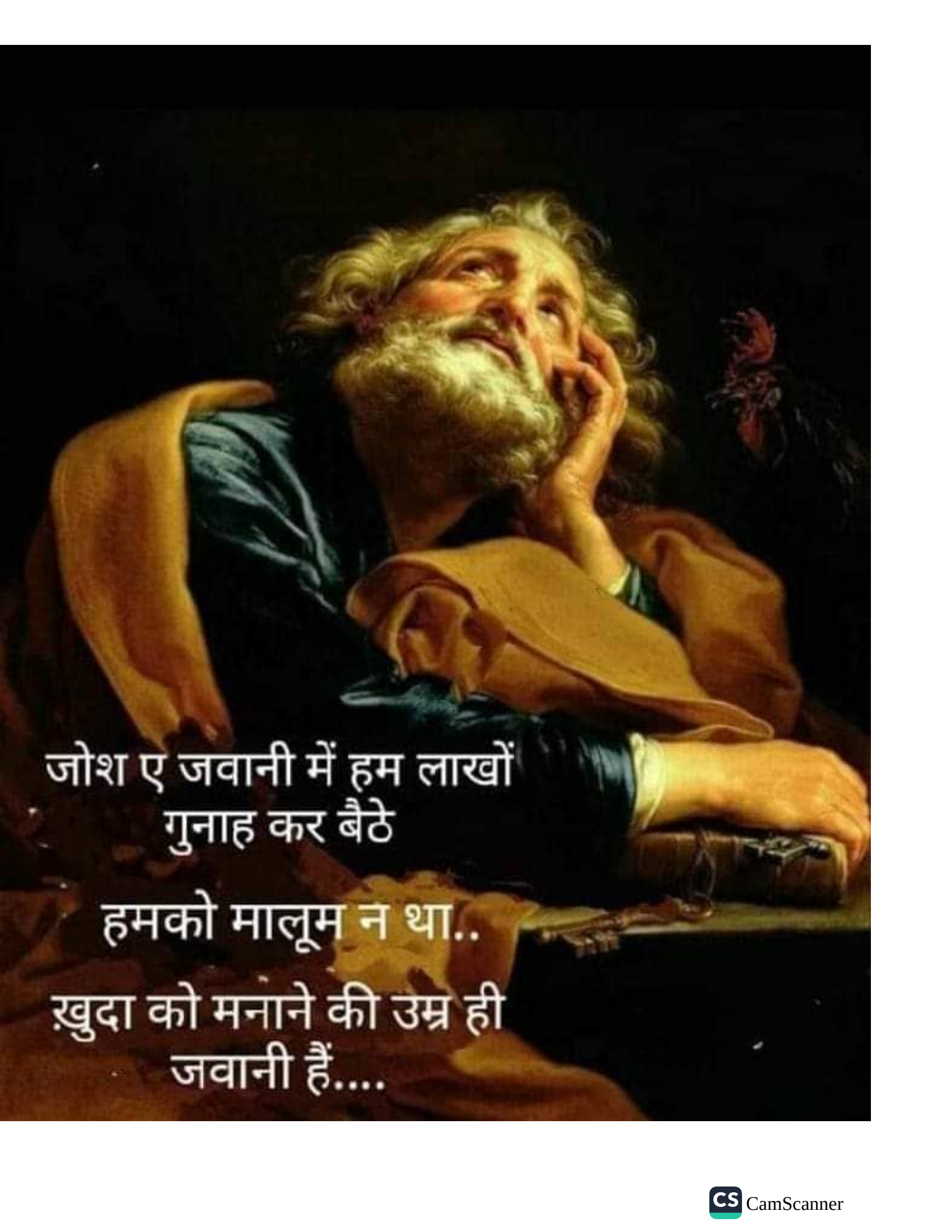


पूजा करने का
कोई सिद्धांत नहीं है,
परमात्मा हर उस दिल की सुनता है,
जो की पवित्र, निर्दोष
और ईमानदार है..!





प्रत्येक व्यक्ति अपने चारों ओर
आशाओं का, इच्छाओं का
एक जाल बुनता है। अगर
आशाएं टूटती हैं, जाल टूटता
है, इच्छाएं पूरी नहीं होतीं, तो
वह समझता है कि परमात्मा
नाखुश है, भाग्य साथ नहीं दे
रहा है। लेकिन वह यह कभी
नहीं सोचता कि मैंने जो जाल
बुना है, वह जाल गलत है।



जोश ए जवानी में हम लाखों
गुनाह कर बैठे

हमको मालूम न था..

खुदा को मनाने की उम्र ही
जवानी हैं....

RBI to transfer Rs 77,124 crore as dividend to govt



— BUSINESS

Rupee slumps to all-time low of 77.50 as high inflation triggers rate hike fears



The 19 issue offices are located at Thiruvananthapuram (Bakery Junction), Ahmedabad, Bengaluru, Belapur, Bhopal, Bhubaneswar, Chandigarh, Chennai, Guwahati, Hyderabad, Jaipur, Jammu, Kanpur, Kolkata, Lucknow, Mumbai, Nagpur, New Delhi and Patna.

The RBI last month informed that 93 percent of these notes in circulation had returned to the banking system. The Rs 2000 denomination banknote was introduced in November 2016 following the demonetization of Rs 500 and Rs 1000 banknotes. However, the RBI stopped printing the Rs 2000 note during the 2018–19 period.

The comments posted here/below/in the given space are not on behalf of Onmanorama. The person posting the comment will be in sole ownership of its responsibility. According to the central government's IT rules, obscene or



एक झेन फकीर था नान इन...

उसके पास एक आदमी मिलने आया...

वह बड़े क्रोध में था। घर में कुछ झगड़ा हो गया होगा पत्नी से। क्रोध में चला आया। आकर जोर से दरवाजा खोला। इतने जोर से कि दरवाजा दीवाल से टकराया। और क्रोध में ही जूते उतारकर रख दिए...

भीतर गया। नान इन को झुककर नमस्कार किया। नान इन ने कहा कि तेरा झुकना, तेरा नमस्कार स्वीकार नहीं है। तू पहले जाकर दरवाजे से क्षमा मांग। और जूते पर सिर रख; अपने जूते पर सिर रख और क्षमा मांग...

उस आदमी ने कहा आप क्या बात कर रहे हैं! दरवाजे में कोई जान है, जो क्षमा मांगूं! जूते में कोई जान है, जो क्षमा मांग...

नान इन ने कहा : जब इतना समझदार था, तो जूते पर क्रोध क्यों प्रगट किया? जूते में कोई जान है, जो क्रोध प्रगट करो! तो दरवाजे को इतने जोर से धक्का क्यों दिया? दरवाजा कोई तेरी पत्नी है? तू जा। जब क्रोध करने के लिए तूने जान मान ली दरवाजे में और जूते में, तो क्षमा मांगने में अब क्यों कंजूसी करता है?

उस आदमी को बात तो दिखायी पड़ गयी। वह गया, उसने दरवाजे से क्षमा मणी। उसने जूते पर सिर रखा। और उस आदमी ने कहा कि इतनी शांति मुझे कभी नहीं मिली थी। जब मैंने अपने जूते पर सिर रखा, मुझे एक बात का दर्शन हुआ कि मामला तो मेरा ही है।
लोग बिलकुल अप्रौढ़ हैं...

बच्चों की भांति हैं

तुम दुख के कारण नहीं देखते। दुख के कारण, सदा तुम्हारे भीतर हैं। दुख बाहर से नहीं आता। और नर्क पाताल में नहीं है। नर्क तुम्हारे ही अचेतन मन में है। वही है पाताल। और स्वर्ग कहीं आकाश में नहीं है। तुम अपने अचेतन मन को साफ कर लो कूड़े करकट से, वहीं स्वर्ग निर्मित हो जाता है। स्वर्ग और नर्क तुम्हारी ही भावदशाएं हैं। और तुम ही निर्माता हो। तुम ही मालिक हो।

पुजारी कभी भगवान से नहीं मांगते वो
हमेशा भक्तों से मांगते हैं क्योंकि वह जानते
हैं पत्थर की मूर्ति मुझे कुछ नहीं दे सकती!!

~ओशो 400

🎵 Use audio



anmol.oshovani

sho_ 🌸 Like share Follow Karo ❤️ ... more



Bibas Music · Ayaan 2.

🔗 OLD FILM^ by _gho



676



Send





ओशो

अहो भाव
पद घुँघरू बांध

जरा खयाल करो! तुमसे पहले अरबों—अरबों लोग इस पृथ्वी पर हो चुके हैं। तुम्हारे जैसे ही सपने देखने वाले लोग। तुम्हारे जैसा ही धन इकट्ठा करने वाले लोग। तुम्हारे जैसे ही पद—लोलुप, पदाकांक्षी, धन—लोलुप, धनाकांक्षी! वे सब अब कहां हैं? उनका नाम भी तो पता नहीं। वे कहां खो गए? हो सकता है, जिस धूल पर तुम चल कर आए हो उस धूल में पड़े हों। तुम जिस जगह बैठे हो, हो सकता है, वहीं उनकी लाश गड़ी हो, वहीं उनकी हड्डियां गल गई हों। कभी वे भी अकड़ कर चलते थे जैसा अकड़ कर तुम चलते हो। कभी किसी का जरा सा धक्का लग गया था तो नाराज हो गए थे, तलवारें खिंच गई थीं। आज धूल में पड़े हैं और कोई भी उनको पैरों से रौंदे चला जा रहा है। न नाराज हो सकते हैं, न तलवारें खींच सकते हैं।

हमेशा याद रखें -
जीभ कभी नहीं
फिसलती है।

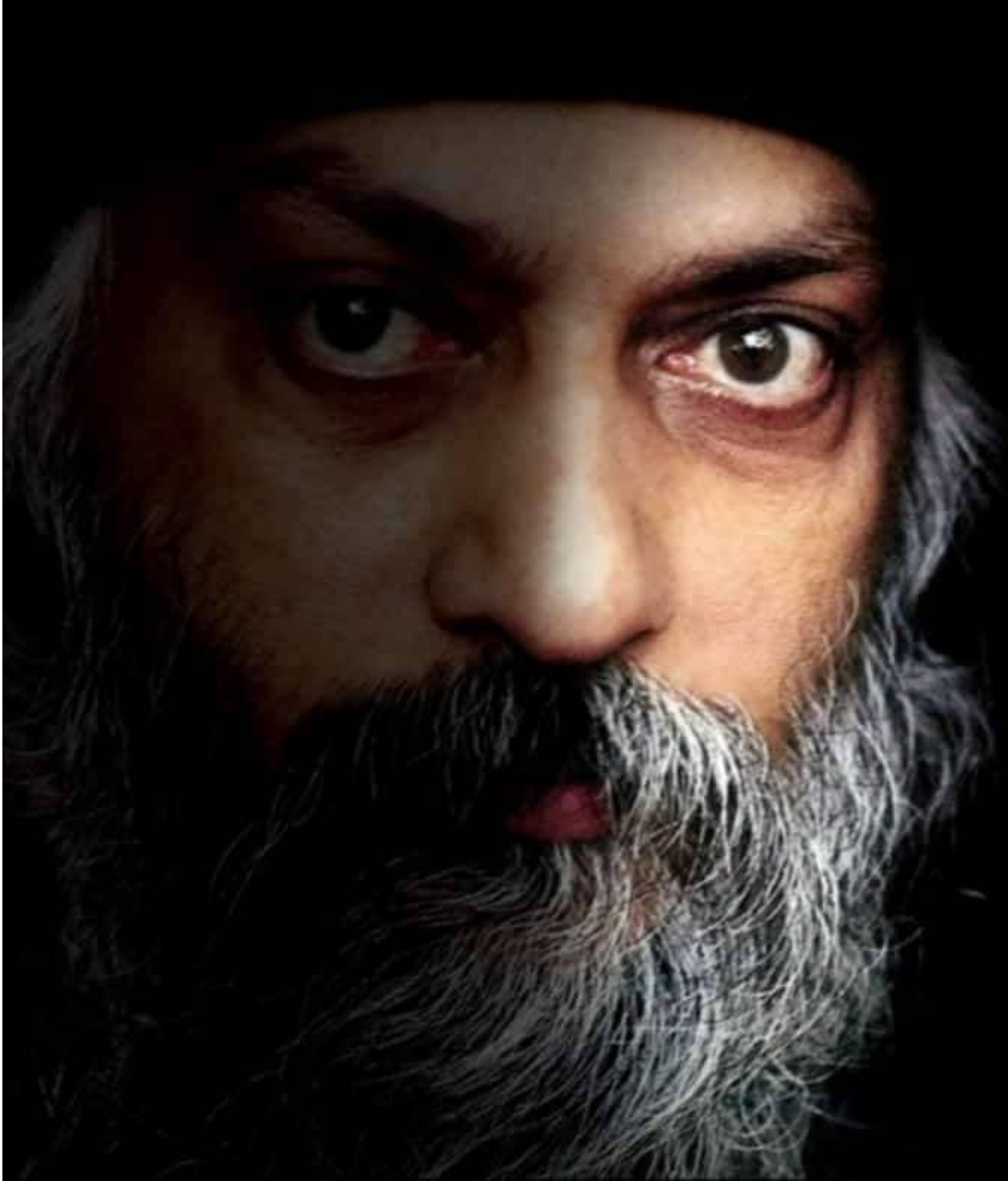
दिमाग में जो चल रहा
है वह हमेशा जीभ पर

आता है।

- ओशो

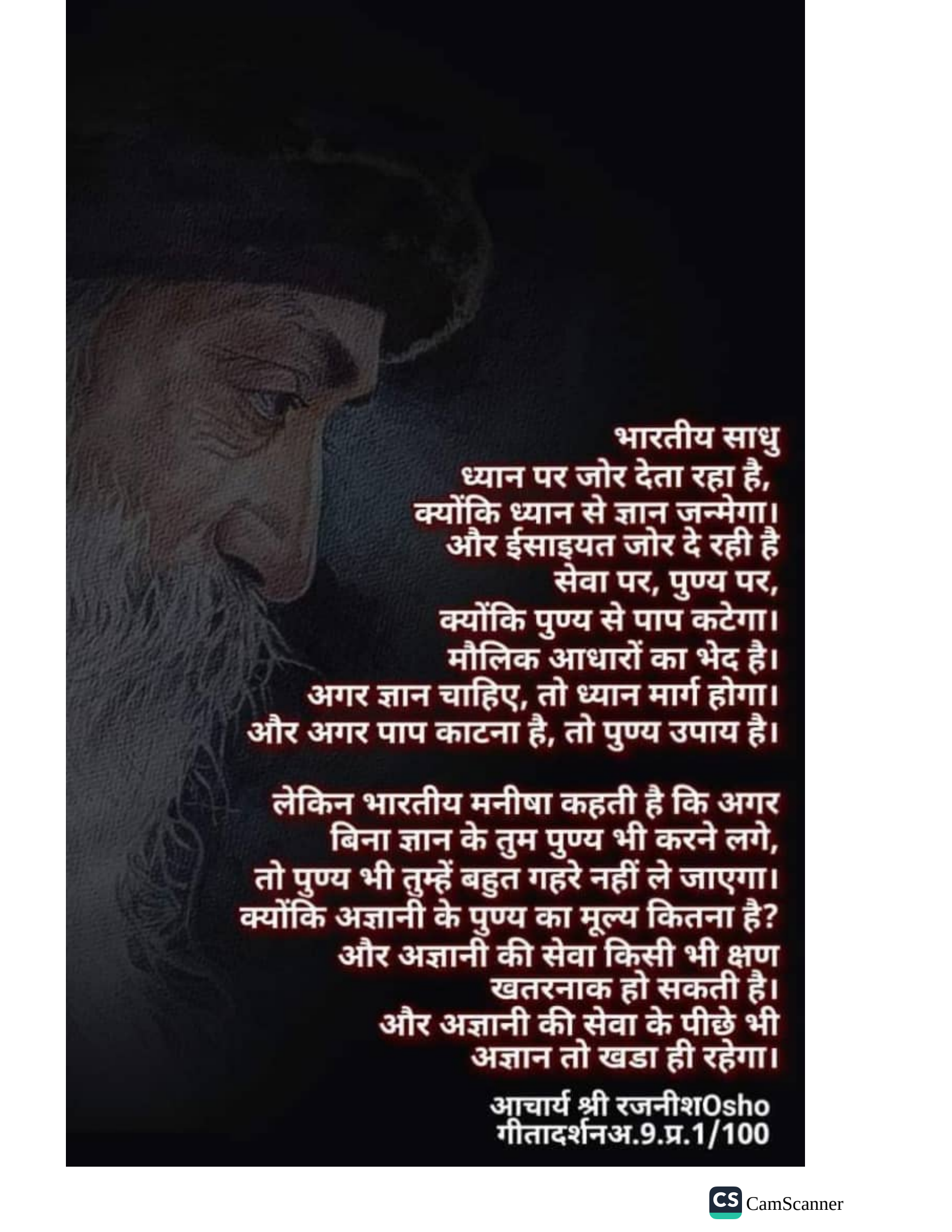


ओशो



ईश्वर को धोखा मत दो।
तुम बिना आदमी को प्यार किये उसे प्यार नहीं कर सकते।
जिस आदमी को पानी की बूंद से घृणा है...
उसे सागर से प्यार होगा ही कैसे ?
ईश्वर-प्रेम की पहली शर्त है मानव से प्रेम
अपने प्रत्येक पड़ौसी से अपने जैसा प्रेम।

~Osho~ Ananta



भारतीय साधु
ध्यान पर जोर देता रहा है,
क्योंकि ध्यान से ज्ञान जन्मेगा।
और ईसाइयत जोर दे रही है
सेवा पर, पुण्य पर,
क्योंकि पुण्य से पाप कटेगा।
मौलिक आधारों का भेद है।
अगर ज्ञान चाहिए, तो ध्यान मार्ग होगा।
और अगर पाप काटना है, तो पुण्य उपाय है।

लेकिन भारतीय मनीषा कहती है कि अगर
बिना ज्ञान के तुम पुण्य भी करने लगे,
तो पुण्य भी तुम्हें बहुत गहरे नहीं ले जाएगा।
क्योंकि अज्ञानी के पुण्य का मूल्य कितना है?
और अज्ञानी की सेवा किसी भी क्षण
खतरनाक हो सकती है।
और अज्ञानी की सेवा के पीछे भी
अज्ञान तो खड़ा ही रहेगा।

आचार्य श्री रजनीशOsho
गीतादर्शनअ.9.प्र.1/100

भीतर तो भेदा नहीं,
बाहर कथै अनेक।
जो पाई भीतर लखि परै,
भीतर बाहर एक॥

'परमात्मा' एक है, वह सबके हृदय में निवास करता है, पर अगर बाहर देखें तो लोगों ने परमात्मा के कई स्वरूप बनाए हुए हैं, जब अपने अंदर परमात्मा के दर्शन हो जाते हैं, तब यह समझ में आता है कि सबके अंदर और बाहर केवल एक ही परमात्मा है, बाकी तो सब मन का भ्रम है।

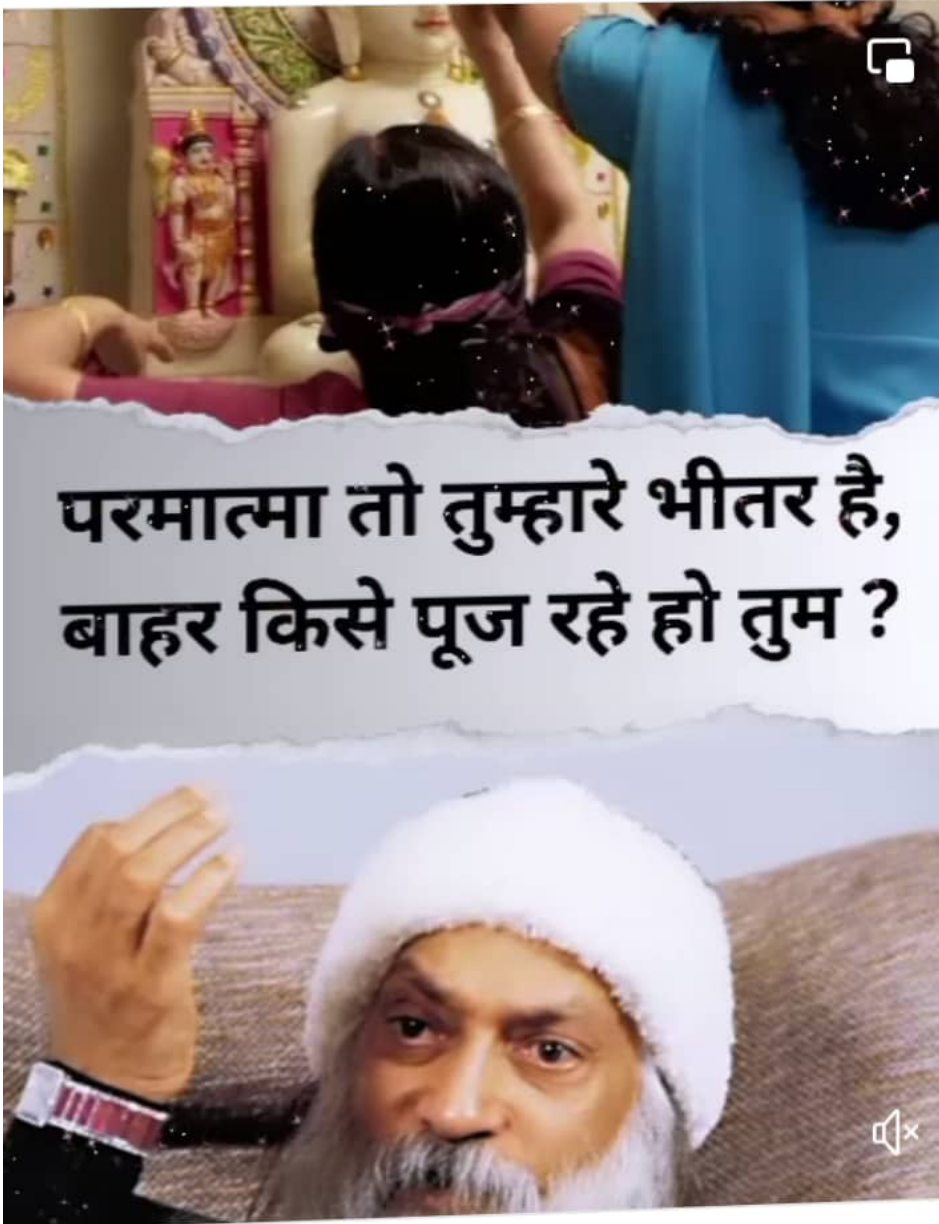
facebook



You won't see this post in your News Feed.

**Osho Ludhiana Meditation Society**

Suggested for you · 31 Jan · 🌐



👍 Indramani Yadav and 2.3K others 15 comments • 325 shares



Like



Comment



Send



Share

OCEANIC SEEKERS



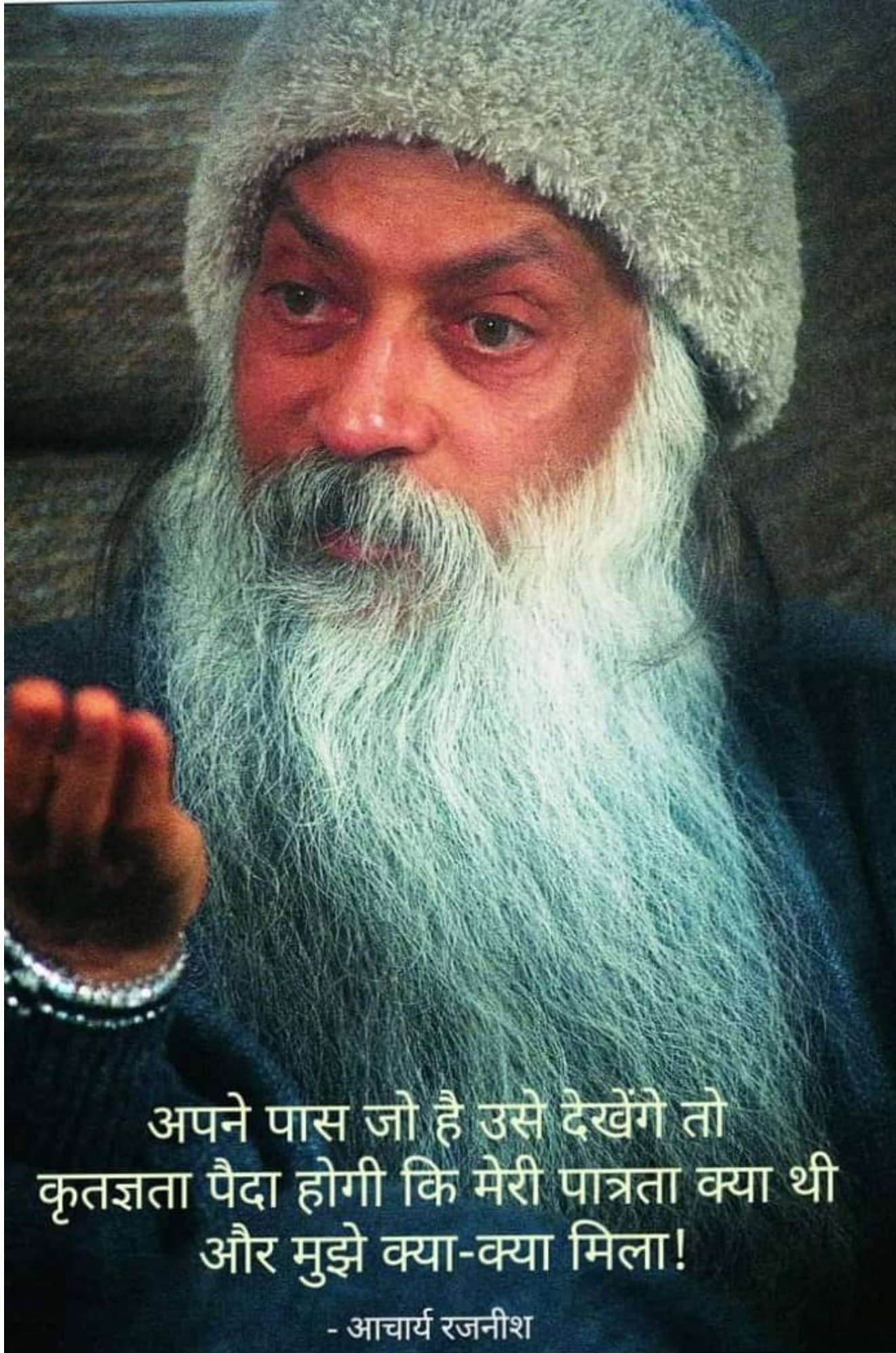


Prem ! Prabhu Osho...

कोई विधि नहीं है शांत होने की, शांत होना
जीवन-दृष्टि है। कोई मैथड नहीं होता कि
भगवान का नाम जप लिया और शांत हो
गए। अशांति को स्वीकार कर लें, दुख को
स्वीकार कर लें, मृत्यु को स्वीकार कर लें,
फिर आपकी कोई मृत्यु नहीं है।

जिसे हम स्वीकार कर लेते हैं, उसके हम पार हो जाते हैं।

ओशो ध्यान योग



अपने पास जो है उसे देखेंगे तो
कृतज्ञता पैदा होगी कि मेरी पात्रता क्या थी
और मुझे क्या-क्या मिला!

- आचार्य रजनीश



हम जिसके लिए लड़ते हैं,
अंततः वही हम हो जाते हैं।

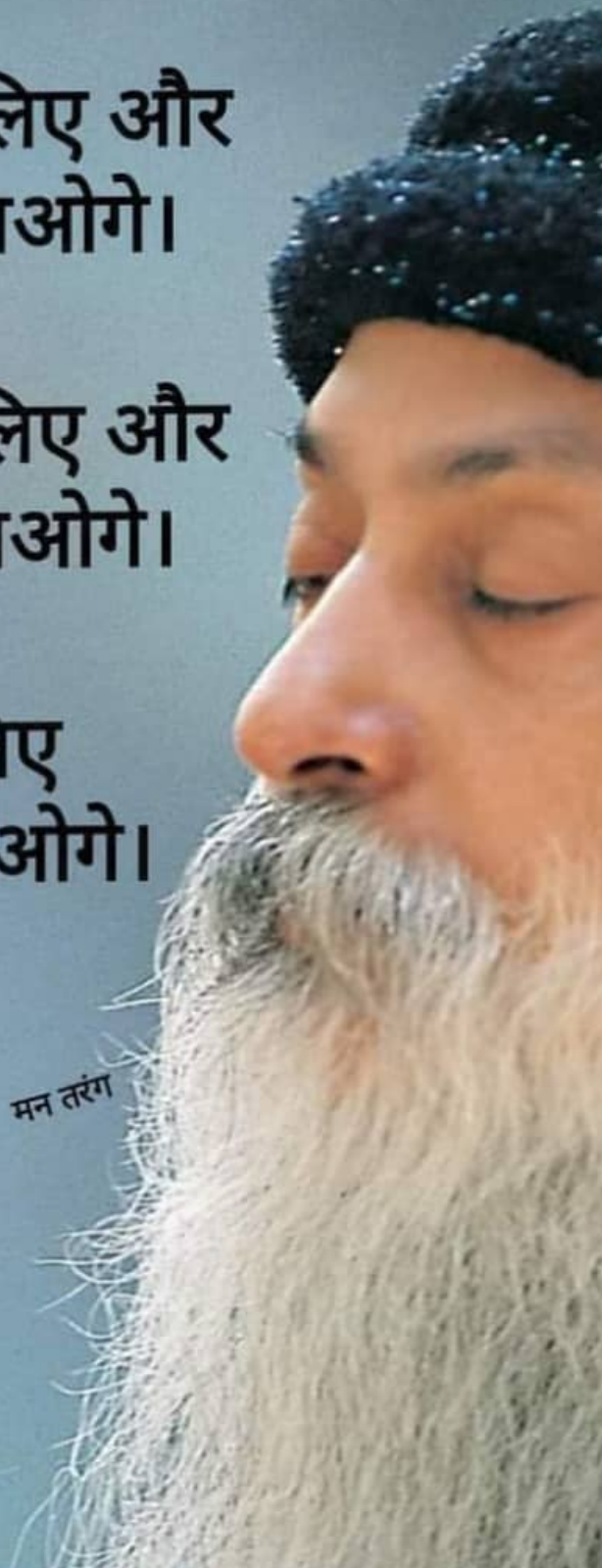
लड़ो सुंदर के लिए और
तुम सुंदर हो जाओगे।

लड़ो सत्य के लिए और
तुम सत्य हो जाओगे।

लड़ो श्रेष्ठ के लिए
तुम श्रेष्ठ हो जाओगे।

ओशो

मन तरंग





प्रत्येक व्यक्ति अपने चारों ओर
आशाओं का, इच्छाओं का
एक जाल बुनता है। अगर
आशाएं टूटती हैं, जाल टूटता
है, इच्छाएं पूरी नहीं होतीं, तो
वह समझता है कि परमात्मा
नाखुश है, भाग्य साथ नहीं दे
रहा है। लेकिन वह यह कभी
नहीं सोचता कि मैंने जो जाल
बुना है, वह जाल गलत है।

ध्यान रहे,
वासनाओं के लिए भविष्य चाहिए,
जीवन के लिए भविष्य की
कोई भी जरूरत नहीं।
जीवन के लिए यही क्षण काफी है।
अभी मैं जीवित हूँ पूरा।
आप पूरे जीवित हैं।
जीने के लिए कल की क्या जरूरत है?
लेकिन वासना के लिए
कल की जरूरत है,
क्योंकि वासनाएं बड़ी हैं;
आज कैसे पूरी होंगी?
कल चाहिए।
वासनाएं भविष्य निर्मित करती हैं।

~ agni pr... +91 90440 23625

Video



बहुत ही बढ़िया

8:08 PM

NSS बहुत अच्छी तरह चल रहा है
coverage भी बहुत अच्छा है। पहली बार
इस तरह से हो रहा है 🙌🙌🙌

8:09 PM

अग्नि संजीव और सपना को बहुत बधाई

8:09 PM

Class: VIII-D

	Monday	Tuesday	Wednesday	Thursday	Friday	Saturday
1st	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI
2nd	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI
3rd	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI
4th	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI
5th	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI
6th	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI
7th	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI
8th	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI	SHRUTI



Upps Ranju Mam2

Today, 8:35 am



R.T. | 2024.03.15 12:58

Reply





UPC Hindi Sapna Singh

Today, 9:12 am



Reply





UPC Hindi Sapna Singh

Today, 9:12 am



Reply



कलम बोलती है



संगति बहुतों की नहीं
सिर्फ़ इतनों की हो
जो आपको खिलते हुए
देखने में खुद भी खिल जाएँ।

Reply

समय पाय फल होत है, समय पाय झरि जाय।

सदा रहे नहिं एक सी, का रहीम पछिताए॥

रहीम



**खुद को खुद ही खुश
रखें.... ये जिम्मेदारी
किसी और को ना दें...!!!**

सुप्रभात



UPC Office himanshu Singh 2

Today, 10:42 am



व्यवहार वह दर्पण हैं
जिसमें अंहकार
और संस्कार की
झलक दिख जाती हैं..!

Reply





स्त्री परमात्मा की सबसे
सुंदर रचना है।

Ashok
अगर आप स्त्री का
सम्मान करते हो तो

समझ At. K.

लो आप परमात्मा की
इबादत में हो।

!! ओशो !!

आइए 'पक्षियों' से कुछ सीखें

★ रात को कुछ नहीं खाते ।

★ रात को घूमते नहीं ।

★ अपने बच्चे को सही समय पर सिखाते हैं ।

★ टूंस-टूंस के कभी नहीं खाते । आपने कितने भी दाने डाले हों, थोड़ा खा के उड़ जाएंगे, साथ कुछ नहीं ले जाते ।



★ रात होते ही सो जाएंगे, सुबह जल्दी जाग जाएंगे, गाते-चहकते उठेंगे ।

★ अपने शरीर से खूब काम लेते हैं । रात के सिवा आराम नहीं करते । उनकी तरह परिश्रम करने से हृदय, किडनी, लिवर के रोग नहीं होते ।

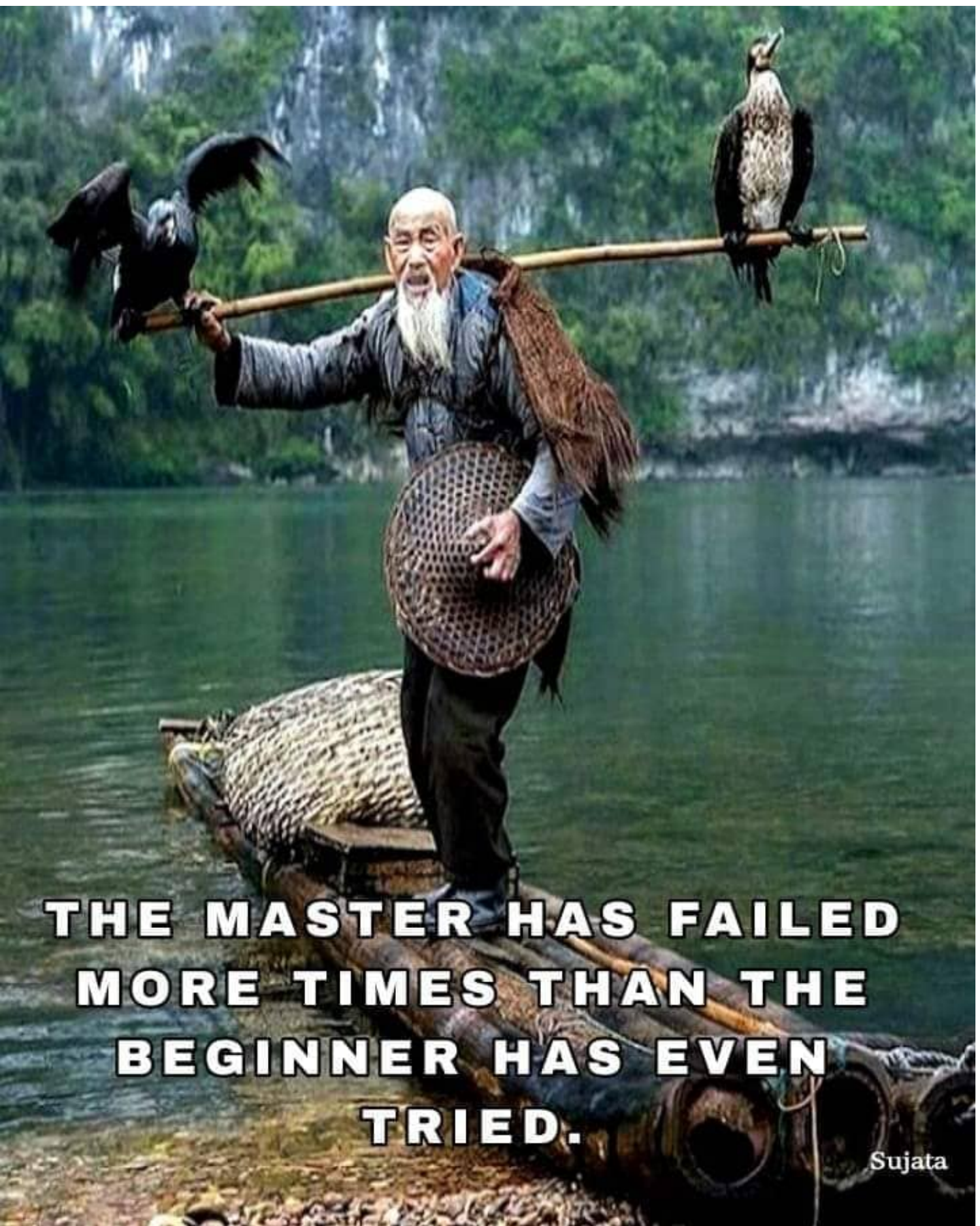
★ अपना आहार कभी नहीं बदलते ।

★ बीमारी आई तो खाना छोड़ देंगे, तभी खाएंगे जब वे ठीक हो जाएंगे ।

★ अपने बच्चे को भरपूर प्यार देंगे ।

★ प्रकृति से उतना ही लेते हैं, जितनी जरूरत है ।





**THE MASTER HAS FAILED
MORE TIMES THAN THE
BEGINNER HAS EVEN
TRIED.**

Sujata

हिंदुओं के मंदिर हैं, मुसलमानों के मंदिर हैं; जैनों के मंदिर हैं, बौद्धों के मंदिर हैं; ब्राह्मणों के मंदिर हैं, शूद्रों के मंदिर हैं; लेकिन मनुष्य का कोई मंदिर नहीं। अब तक जमीन पर आदमी ऐसा मंदिर नहीं बना पाया जो सबका हो। और जो मंदिर सबका नहीं है वह परमात्मा का कैसे हो सकेगा?



ओशो
अपने माहिं टटोल

**कभी, कभी नहीं आता।
जो है अभी और यही है।**

अहोभाव



अंधकार से भरी रात्रि में प्रकाश की एक किरण का होना भी सौभाग्य है। क्योंकि जो उसका अनुसरण करते हैं, वे प्रकाश के स्रोत तक पहुंच जाते हैं।

मनुष्य के भीतर जो जीवन है वह अमृतत्व की किरण है-जो बोध है, वह बुद्धत्व की बूंद है--और जो आनंद है, वह सच्चिदानंद की झलक है।



ओशो

AKD



बुद्धिमान आदमीं यहां पर केवल तंबू लगाता है

और तुमने यहां पत्थरों के महल बना रखे हैं।

किस घड़ी, कब और कहाँ इस बंजारे का बुलावा

आ जाए और निकल पड़े यात्रा पर...

ये कोई नहीं जानता ।

OSHO





OshO
- Be' AwArE -

संन्यासी वही है, जो कहता है:
न मुझे सत्कार चाहिये न सम्मान चाहिये,
न मुझे अपमान की चिंता है।

मैं तो जैसा हूं, वैसा ही जीऊंगा।
तुम सम्मान दो तो ठीक,
तुम अपमान दो तो ठीक;
वह तुम्हारा प्रश्न है,
तुम्हारी समस्या है,
मेरा उससे कुछ लेना-देना नहीं।





Like



Comment



Send



Share

**Osho Janaki dhyana kendra**

1d · 🌐

बिना गुरु के राम नहीं मिलेगा। क्योंकि याद ही कोई न दिलाएगा, कोई इशारा ही न करेगा--अज्ञात की ओर; कोई तुम्हारा हाथ न पकड़ेगा, अनजान में न ले चलेगा, तो राम नहीं मिलेगा। यद्यपि गुरु मुक्ति नहीं देता है।

गुरु तो केवल राम की याद दिला देता है। फिर राम की याद करते-करते एक दिन राम अवतरित होता है; तुम्हारे भीतर जागता है और तुम रोशन हो जाते हो, तुम प्रकाशित हो जाते हो। मुक्ति फलती है।

.....

एक जहाज पर ऐसा हुआ। एक स्त्री गिर पड़ी। सारे यात्री डेक पर इकट्ठे हो गए। और स्त्री डूब रही है और स्त्री चिल्ला रही है, लेकिन किसी की हिम्मत नहीं पड़ रही कि कोई कूद जाए।

एक बूढ़े धनी ने कहा कि लाख रुपये दूंगा, कोई भी कूद जाए और बचा ले। तभी लोगों ने देखा कि एकदम से मुल्ला नसरुद्दीन कूदा; स्त्री को बचा कर बाहर लाया। जब ऊपर आया, तो लोग फूलमालाएं उसके गले में डाले और उस बूढ़े ने लाख रुपये का चेक दिया। मुल्ला ने कहा: चेक रख एक तरफ। पहले यह बताओ, मुझे धक्का किसने दिया?

वह कुछ अपने से नहीं कूदा था। किसी ने धक्का दे दिया था। वह देख रहा था झुक कर।

एक दफा धक्का लग जाए...। गुरु धक्का ही दे सकता है। एक दफा धक्का लग जाए, पहुंच जाओगे। फिर तो कशिश अपना काम खुद कर लेगी।

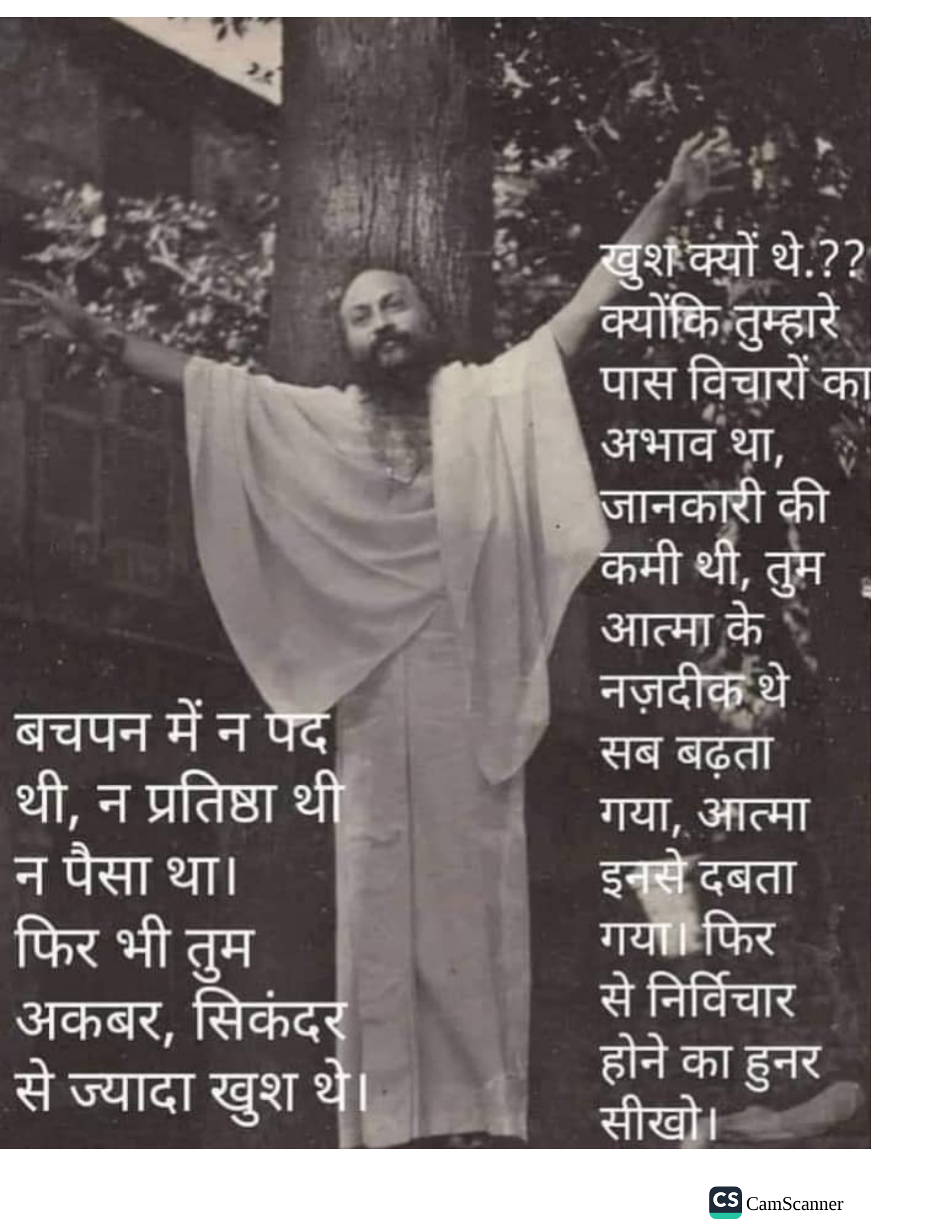
ओशो... "कहे कबीर मैं पूरा पाया-17"



लाओत्से बड़ी अनूठी बात
बोलता है! लाओत्से
कहता है;- सूचनाओं को
छोड़ो! ज्ञान को छोड़ो,
और फिर.. बुद्धीमता को
भी छोड़ दो..

असल में जिसको हम
पकड़ और छोड़ सकते हैं!
वो ज्ञान नहीं है,
उसके बाद जो बचेगा, वो
तुम्हारा स्वभाव है!
जिसको लाओत्से ने
"ताओ कहा है,
महावीर ने! आत्मा कहा.,
और बुद्ध ने शून्य कहा है!

ओशो



बचपन में न पद
थी, न प्रतिष्ठा थी
न पैसा था।
फिर भी तुम
अकबर, सिकंदर
से ज्यादा खुश थे।

खुश क्यों थे.??
क्योंकि तुम्हारे
पास विचारों का
अभाव था,
जानकारी की
कमी थी, तुम
आत्मा के
नज़दीक थे
सब बढ़ता
गया, आत्मा
इनसे दबता
गया। फिर
से निर्विचार
होने का हुनर
सीखो।

इससे पहले कि मौत तुम्हारे द्वार पर

दस्तक दे,,

तुम जरा विचार कर लो।

इस जगत में कुछ भी
ऐसा है जिससे तृप्ति हो
जाएगी ?

कोई जल ऐसा है जिससे
तृप्ति हो जाएगी ?

तुम कितने तो घाटों का
पानी पी चुके, कहीं तो
तृप्ति नहीं हुई।

जहां से लौटे, प्यास को
वापस लेकर लौटे।

जहां से लौटे, और उदास
होकर लौटे।

इस जगत में वह पानी है
ही नहीं जिससे तृप्ति हो
जाए।

तुम्हारे चित्त में चातक
कब पैदा होगा ?

स्वाति के जल की
आकांक्षा कब जगेगी ?
तुम परमात्मा को
कब पुकारोगे ?

~ ओशो ~



Create story

Yogini Amrita
NathSwami Antar Rajat
Rajat

Hist



ओशो का हिन्दी साहित्य

Rahul Kumar Ojha · 2h · 🌐

चैतन्य महाप्रभु आइंस्टीन जैसी बुद्धि के आदमी थे। बंगाल में कोई मुकाबला न था उनकी प्रतिभा का। उनके तर्क के सामने कोई टिकता न था। उनसे जूझने की हिम्मत किसी की न थी। उनके शिक्षक भी उनसे भयभीत होते थे। दूर-दूर तक खबर पहुंच गई थी कि उनकी बुद्धि का कोई मुकाबला नहीं है। और फिर जब यह चैतन्य इस बुद्धि को छोड़कर और झांझ-मजीरा लेकर रास्तों पर नाचने लगा, तो फिर चैतन्य महाप्रभु का मुकाबला भी नहीं है—इस नृत्य, और इस गीत, और इस प्रार्थना, और इस भाव, और इस भक्ति का। न होने का कारण है। नाचे बहुत लोग हैं। गीत बहुत लोगों ने गाए हैं। प्रार्थना बहुत लोगों ने की है। भाव बहुत लोगों ने किया है, लेकिन चैतन्य की सीमा को छूना मुश्किल है। क्योंकि चैतन्य का एक और अनुभव भी है, वे बुद्धि के आखिरी शिखर से उतरकर लौटे हैं। उन्होंने ऊंचाइयां देखी हैं। उनकी नीचाइयों में भी ऊंचाई छिपी रहेंगी तो इस युग के लिए यह ध्यान में रख लेना जरूरी है कि यह युग एक शिखर अनुभव के करीब पहुंच रहा है, जहां बुद्धि व्यर्थ हो जाएगी। और जब बुद्धि व्यर्थ होती है, तो जीवन के लिए एक ही आयाम खुला रह जाता है, वह है भाव का, वह है हृदय का, वह है प्रेम का, वह है भक्ति का। आदमी अब पुराने अर्थों में भावपूर्ण नहीं हो सकता। अब तो नए अर्थों में भावपूर्ण होगा। पुराना आदमी सरलता से भावपूर्ण था। उसकी भावना में सरलता थी, गहराई नहीं थी। नया आदमी जब भावपूर्ण होता है, आज का आदमी जब भावपूर्ण होता है, तो उसके भाव में सरलता नहीं होती, गहराई होती है। और गहराई बड़ी कीमत की चीज है। इसे हम ऐसा समझें, एक छोटा बच्चा है। छोटा बच्चा सरल होता है, लेकिन गहरा नहीं होता। गहरा हो नहीं सकता। क्योंकि गहराई तो अनुभव से आती है।

ओशो

चाणक्य से पुछा..

"ज़हर क्या है" ..?

चाणक्य ने बहुत सुन्दर
जबाब दिया !!



"हर वो चीज़ जो ज़िन्दगी में
आवश्यकता से अधिक होती
है वही ज़हर है !!

फ़िर चाहे वो ताक़त हो, धन
हो, भूख हो, लालच हो,
अभिमान हो, आलस हो,
महत्वकाँक्षा हो, प्रेम हो या
घृणा..

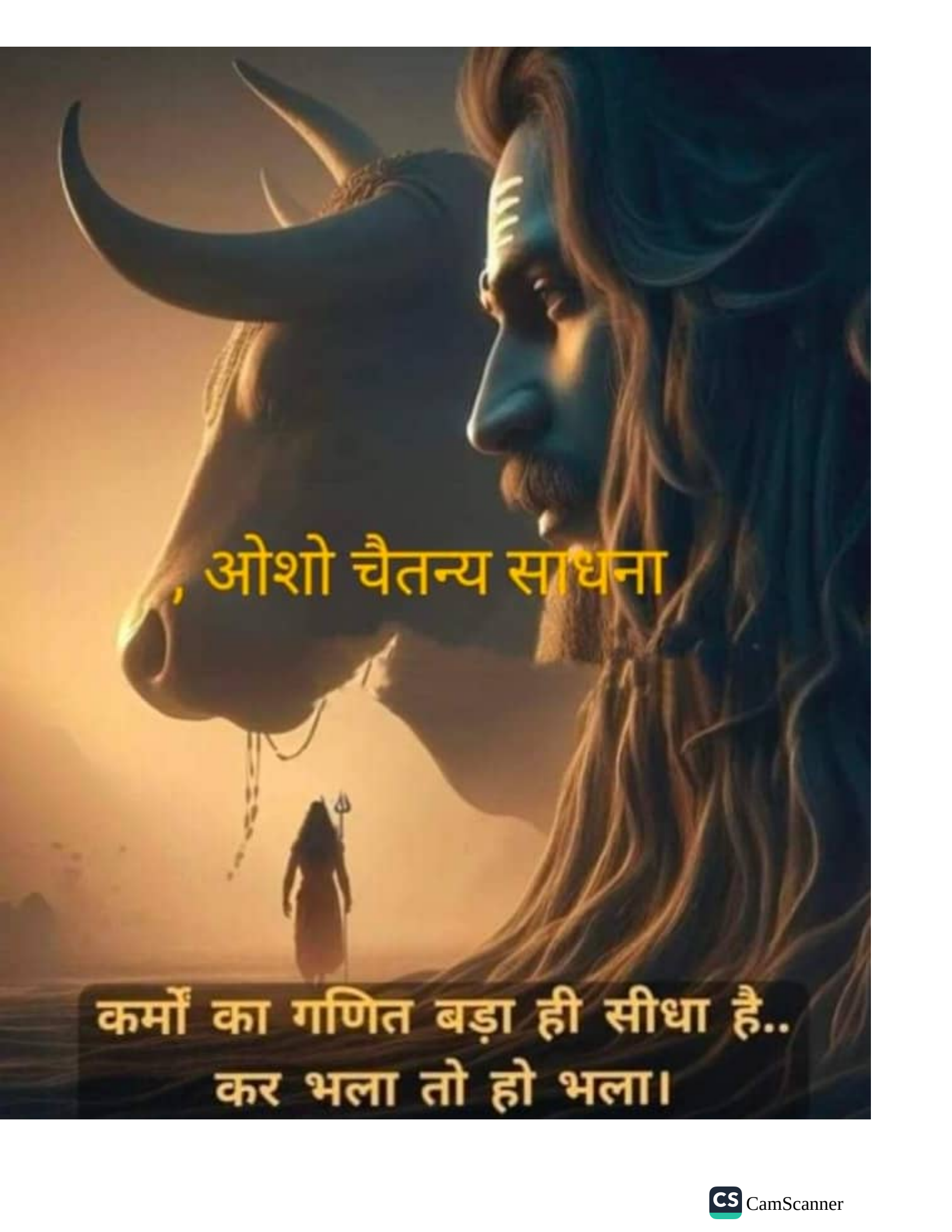
आवश्यकता से अधिक
"ज़हर" ही है...

**यदि आप
खुद अपनी
संगत का
आनंद नहीं
लेते हो,
तो फिर
कोई और
आपसे आनंद
कैसे हो
सकता है।**

मेरा बस
तुम्हें इतना ही
कहना है

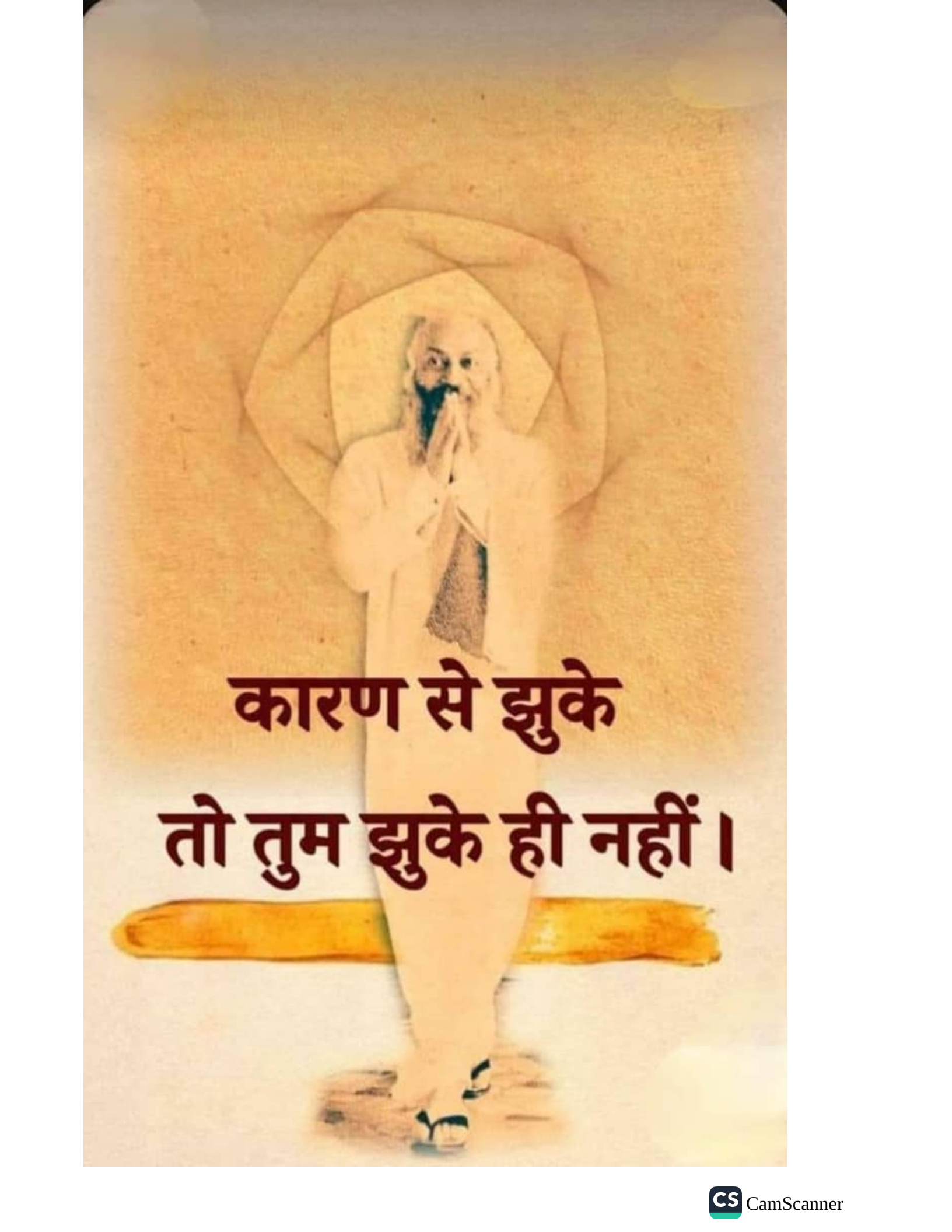
**हम अपने से
भागकर कहीं भी
नहीं जा सकते हैं।
हम सबसे भाग सकते हैं,
अपने से नहीं
भाग सकते
हैं।**





, ओशो चैतन्य साधना

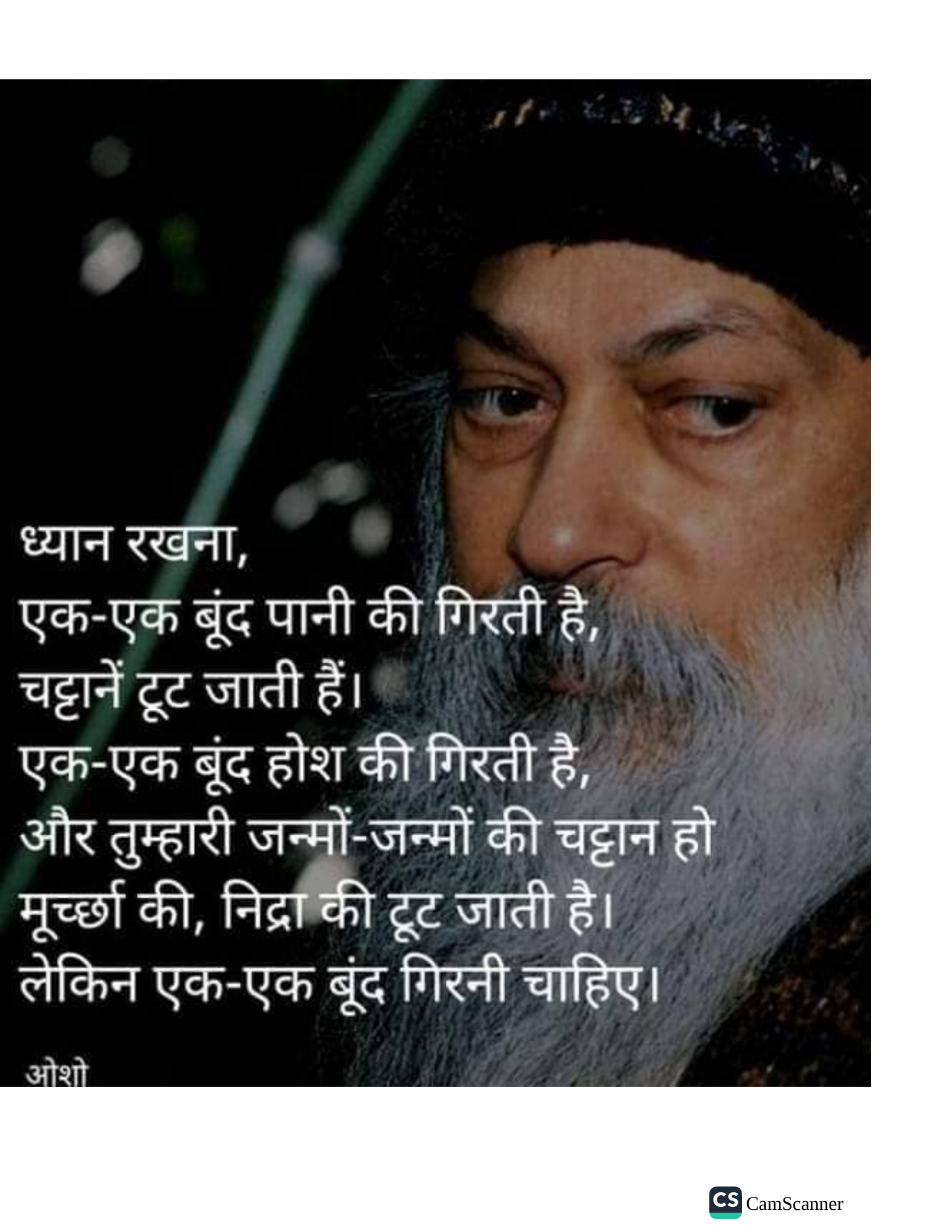
कर्मों का गणित बड़ा ही सीधा है..
कर भला तो हो भला।



**कारण से झुके
तो तुम झुके ही नहीं ।**



आधा जीवन दूसरों को आकर्षित करने
में खो जाता है बाकी आधा हिस्सा दूसरों
के कारण हुई चिंताओं से गुजरने में खो
जाता है यह नाटक छोड़ो आप काफी
खेल चके हैं । रूमी



ध्यान रखना,
एक-एक बूंद पानी की गिरती है,
चट्टानें टूट जाती हैं।
एक-एक बूंद होश की गिरती है,
और तुम्हारी जन्मों-जन्मों की चट्टान हो
मूर्च्छा की, निद्रा की टूट जाती है।
लेकिन एक-एक बूंद गिरनी चाहिए।

ओशो

OSHO

उतना ही कहो जितना तुमने अपने
अनुभवों से जाना हो,
उससे ही कहो जिसने पूछा हो और
उतना ही कहो जितना पूछा हो।

सूफा कहाना ह,

जुन्नैद नाम का अलमस्त फकीर-मंसूर का गुरु था जुन्नैद-बगदाद के बाहर ठहरा हुआ था। और एक सांझ उसने देखा कि जब रास्ता सो गया और गांव नींद में खो गया तो एक काली छाया, बड़ी विकराल, झोपड़े के पास से गुजरी-बगदाद में प्रवेश करने के लिए।

जुन्नैद ने आवाज दी, ठहर, तू कौन है? उस काली छाया ने कहा, तुमसे क्या छिपाना! फकीरों से क्या छिपाना! और छिपाओ तो भी तो फकीरों से छिपेगा नहीं। मैं मौत हूं।

जुन्नैद ने पूछा, किसे मारना है?

मौत ने कहा, नाम-पते बताने बैठूंगी तो सुबह हो जाएगी। कम से कम पांच सौ व्यक्ति मारे जाने हैं। सुना तो होगा ही तुमने कि गांव में प्लेग फैली है!

फकीर ने कहा, जैसी प्रभु की मर्जी। जा, तू अपना काम कर।

लेकिन आठ दिन के भीतर कोई पांच हजार आदमी मर गए। तो जुन्नैद थोड़ा नाराज हुआ कि मुझसे झूठ बोलने की क्या जरूरत थी।

और जब आठवें दिन मौत वापस लौट रही थी, वही समय था, जुन्नैद ने फिर आवाज दी कि बेईमान, मुझसे झूठ बोलने की क्या जरूरत थी? अरे मुझे तो जैसे पांच सौ वैसे पांच हजार। मुझे तो जैसा जीवन वैसी मृत्यु। तू क्यों झूठ बोली? कहे थे पांच सौ और मारे पांच हजार!

मौत ने कहा, क्षमा करें। मैंने तो पांच सौ ही मारे, शेष घबराहट में मर गए। अपने आप मर गए। दूसरों को मरते देख कर मर गए।

मेरा उसमें कुछ हाथ नहीं है। लेकिन जब मर गए तो मुझे ले जाना पड़ा। उलटे मुझे ढोना पड़ा।

ओशो, सहज आसिकी नाहीं-८



दुनिया में
बहुत कम
लोग हैं,
जो अनुभव से
सीखते हैं।
अनुभव से
जो सीख ले,
वही समझदार है

कनफ्यूशियस की फिर भी समझ में न आया। किसी नैतिक चिंतक की समझ में न आएगा यह सूत्र। क्योंकि नैतिक चिंतक ऐसा मानता है कि बुराई और भलाई विपरीत चीजें हैं; बुराई को काट दो, तो भलाई बच रहेगी।

लाओत्से ऐसा मानता है कि बुराई और भलाई एक ही चीज के दो पहलू हैं। तुम एक को न काट पाओगे। अगर फेंको तो दोनों को फेंक दो; बचाओगे तो दोनों बच जाएंगी।

अगर तुमने चाहा कि भलाई बच जाए, तो बुराई पीछे से मौजूद रहेगी। क्योंकि भलाई बुराई के बिना बच नहीं सकती। और तुमने चाहा कि हम ईमानदार को आदर दें, तो तुम तभी दे पाओगे, जब बेईमान मौजूद रहें।

यह बहुत समझने जैसी बात है। सच में ही अगर कोई बेईमान न रह जाए, तो ईमानदार का कोई आदर होगा? कोई चोर न रह जाए, तो साधु की कोई प्रतिष्ठा होगी? इसका अर्थ यह हुआ कि अगर साधु को प्रतिष्ठित रहना हो, तो चोर को बनाए ही रखना पड़ेगा।

और जीवन के रहस्यों में एक यही है कि साधु निरंतर चोर के खिलाफ बोल रहा है, लेकिन उसे पता नहीं है कि चोर की वजह से ही वह पहचाना जाता है। चोर की वजह से ही वह है। असाधु नहीं, तो साधु खो जाएगा। साधु का अस्तित्व असाधु के आस-पास ही हो सकता है, उसके बीच में ही हो सकता है।

लाओत्से कहता है, धर्म तो तब था दुनिया में, जब साधु का पता ही नहीं चलता था। लाओत्से की बात बहुत गहरी है।

ओशो, ताओ उपनिषद-५

Punjabhai Bharadiya

14h · 🌐

लाओत्से के पास कथा है कि कनफ्यूशियस मिलने गया था।

कनफ्यूशियस, इस पृथ्वी पर जो नैतिक विचारक हुए हैं, उनमें श्रेष्ठतम है। नैतिक विचारक, धार्मिक नहीं! कनफ्यूशियस कोई धार्मिक विचारक नहीं है, नैतिक विचारक, मॉरल थिंकर।

कनफ्यूशियस उन लोगों में से है, जिन्होंने सिर्फ, मनुष्य कैसे अच्छा हो, इस संबंध में गहनतम चिंतन और विचार किया है।

स्वभावतः, कनफ्यूशियस लाओत्से से मिलने गया, यह सुन कर कि लाओत्से बहुत बड़ा धार्मिक व्यक्ति है, तो मैं लाओत्से से प्रार्थना करूं कि तुम भी लोगों को समझाओ कि

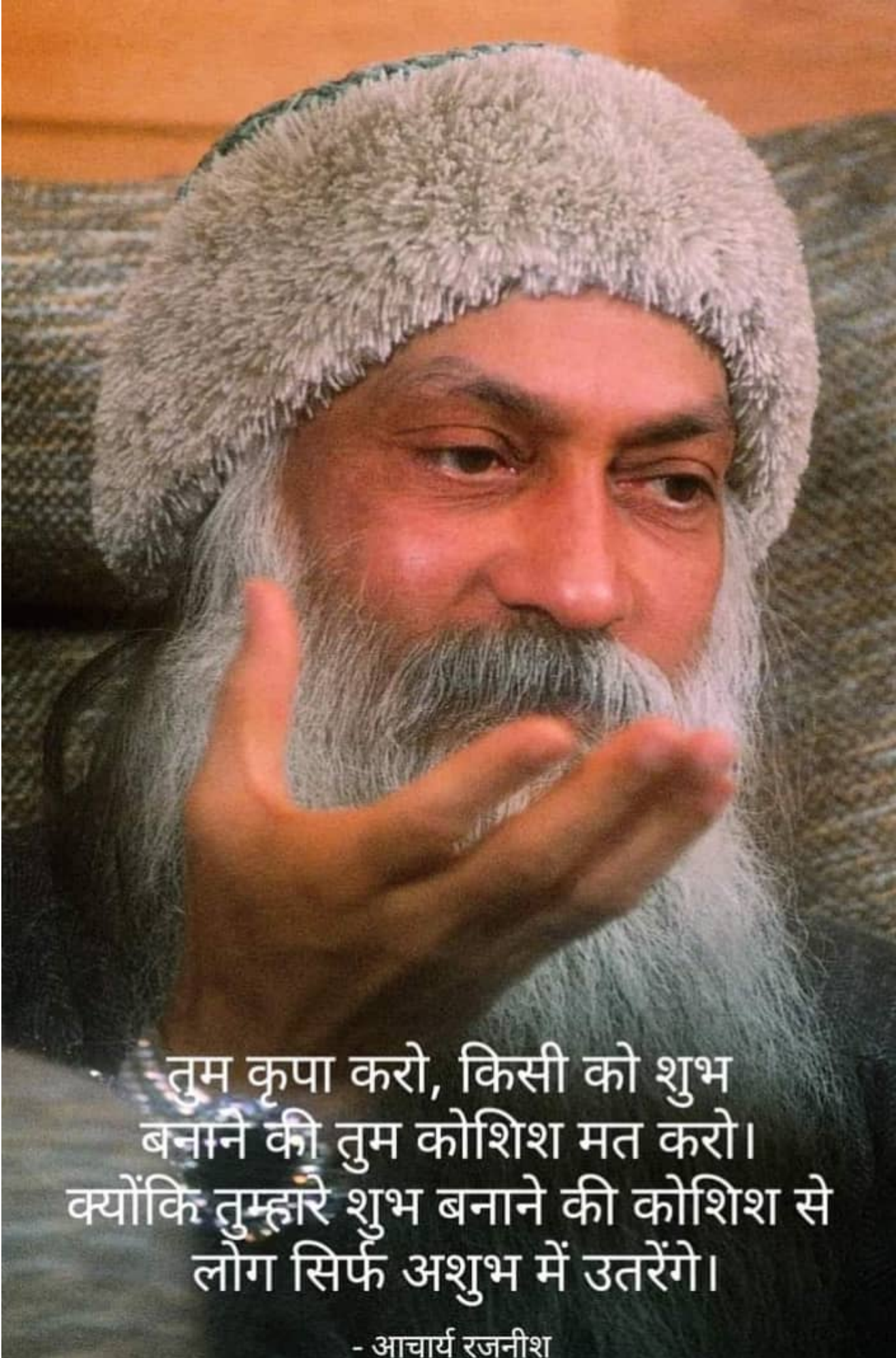
वे अच्छे कैसे हो जाएं, ईमानदार कैसे हो जाएं, चोरी क्यों न करें, कैसे चोरी से बचें, कैसे अचोर बनें, कैसे क्रोध छोड़ें, कैसे क्षमावान बनें, हिंसा कैसे मिटे, अहिंसा कैसे आए, तुम भी लोगों को समझाओ।

तो कनफ्यूशियस लाओत्से से मिलने गया।

लाओत्से अपने झोपड़े के बाहर बैठा है। कनफ्यूशियस ने कहा, लोगों को समझाओ कि वे अच्छे कैसे हो जाएं। लाओत्से ने कहा, जब तक बुराई न हो, तब तक लोग अच्छे कैसे हो सकेंगे? बुराई होगी तो ही लोग अच्छे हो सकेंगे। तो मैं तो यह समझाता हूं कि बुराई कैसे न हो, अच्छे की मैं फिक्र नहीं करता हूं। मैं तो वह स्थिति चाहता हूं, जहां अच्छे का भी पता नहीं चलता है कि कौन अच्छा है।

कनफ्यूशियस की समझ में कुछ भी न पड़ा। कनफ्यूशियस ने कहा, लोग बेईमान हैं, उन्हें ईमानदारी समझानी है। लाओत्से ने कहा कि जिस दिन से तुमने ईमानदारी की बात की, उसी दिन से बेईमानी प्रगाढ़ हो गई है। मैं वह दिन चाहता हूं जहां लोग ईमानदारी की बात ही नहीं करते।

कनफ्यूशियस की फिर भी समझ में न आया। किसी नैतिक चिंतक

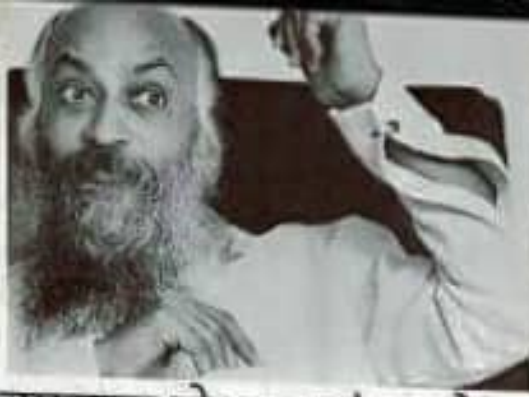


तुम कृपा करो, किसी को शुभ
बनाने की तुम कोशिश मत करो।
क्योंकि तुम्हारे शुभ बनाने की कोशिश से
लोग सिर्फ अशुभ में उतरेंगे।

- आचार्य रजनीश

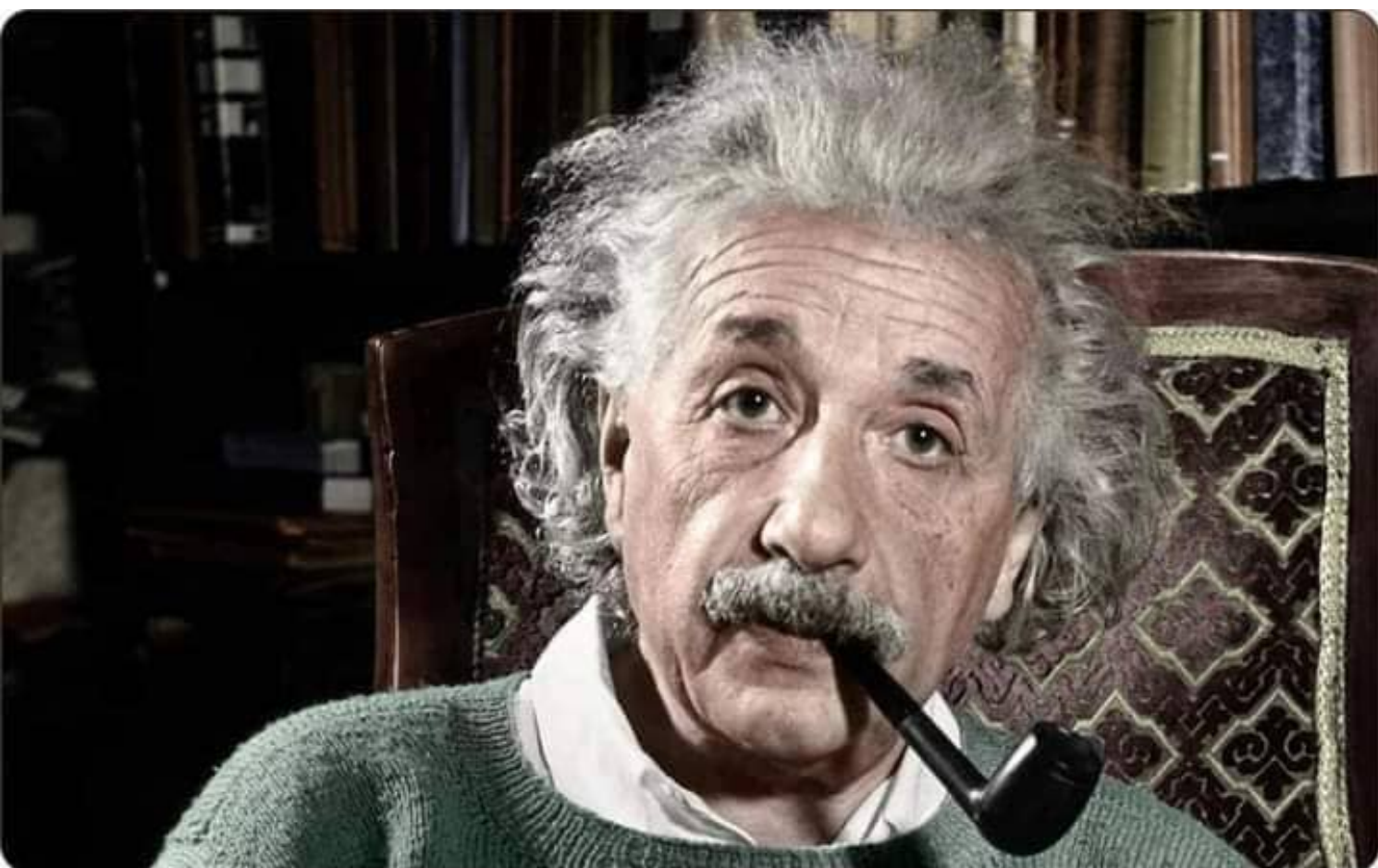
न कोई साधना की,
न कोई सिद्धि,
न कोई जप।
तुम आ गए अचानक,
जला दिया सब कूड़ा
—करकट।
कर दिया मुझे कुंदन।
कर दिया मुझे शुद्ध।
तो अब तो
विनती भी क्या करूं!
अब तुमसे मांग क्या?
तुम तो
बिन मांगे दे देते हो।।

anand OSHO Rames



मैं बहुत चमत्कृत हो जाता हूं यह देखकर कि लोग जाकर मंदिरों में झुक जाते हैं, जो आकाश को तारों से भरा देखकर नहीं झुकते। इनका मंदिर में झुकना झूठा होगा, निश्चित झूठा होगा। यह सच नहीं हो सकता। इसमें हार्दिकता नहीं हो सकती। आदमी की बनाई हुई मूर्ति में इन्हें क्या दिखाई पड़ सकता है? अगर परमात्मा की बनाई हुई मूर्तियों में इन्हें कुछ भी दिखाई नहीं पड़ रहा है। इतने अंधे! ये संगमरमर की एक बनी प्रतिमा के सामने झुकते हैं, उसमें हृदय होगा? आदतवश झुक जाते होंगे। बचपन से झुकाए गए होंगे इसलिए झुक जाते होंगे मां—बाप ने कहा होगा, झुको, इसलिए झुक जाते होंगे, भय के कारण झुक जाते होंगे; डर के कारण—कि कहीं नरक न हो, कहीं दंड न मिले। या लोभ के कारण झुक जाते होंगे कि झुकने से स्वर्ग मिलेगा, पुरस्कार मिलेंगे। कि क्या बिगड़ता है, थोड़ी खुशामद कर ली। परमात्मा को भी राजी रखना उचित है। फिर जो करना है करते रहो लेकिन उसे भी राजी रखते रहो।

Osho



आइंस्टीन ने मरने से पहले
अपने मित्रों को कहा;-कि
"आज तक मैंने जो भी
जाना है, उससे मेरे अज्ञान
का ही पता चला है,
और जो भी शेष रह गया!
वो इतना अधिक है..
जिसकी कल्पना भी नहीं
की जा सकती.!! ओशो

यदि तुम संन्यासी हो
तो लॉकेट को अपने हाथ में लेना
और तीन बार श्वास को बाहर छोड़ना। भीतर
मत लेना। तीन बार श्वास को जोर से बाहर
छोड़ना और शरीर को श्वास लेने देना, तुम मत
लेना। सिर्फ तीन बार श्वास को बाहर छोड़ना,
मुझे स्मरण करना, और प्रारंभ करना; और मैं
वहां होऊंगा ।

✦ ओशो ✦
केनोउपनिषद#17
(हरेक क्षण को उत्सव बनाओ)

परमात्मा का क्या अर्थ है?
कोई व्यक्ति नहीं;
यह जो समग्र का विस्तार है,
यह जो विराट फैला हुआ
है सब दिशाओं में; इसी का,
इसी टोटलिटि का,
इसी का नाम परमात्मा है।

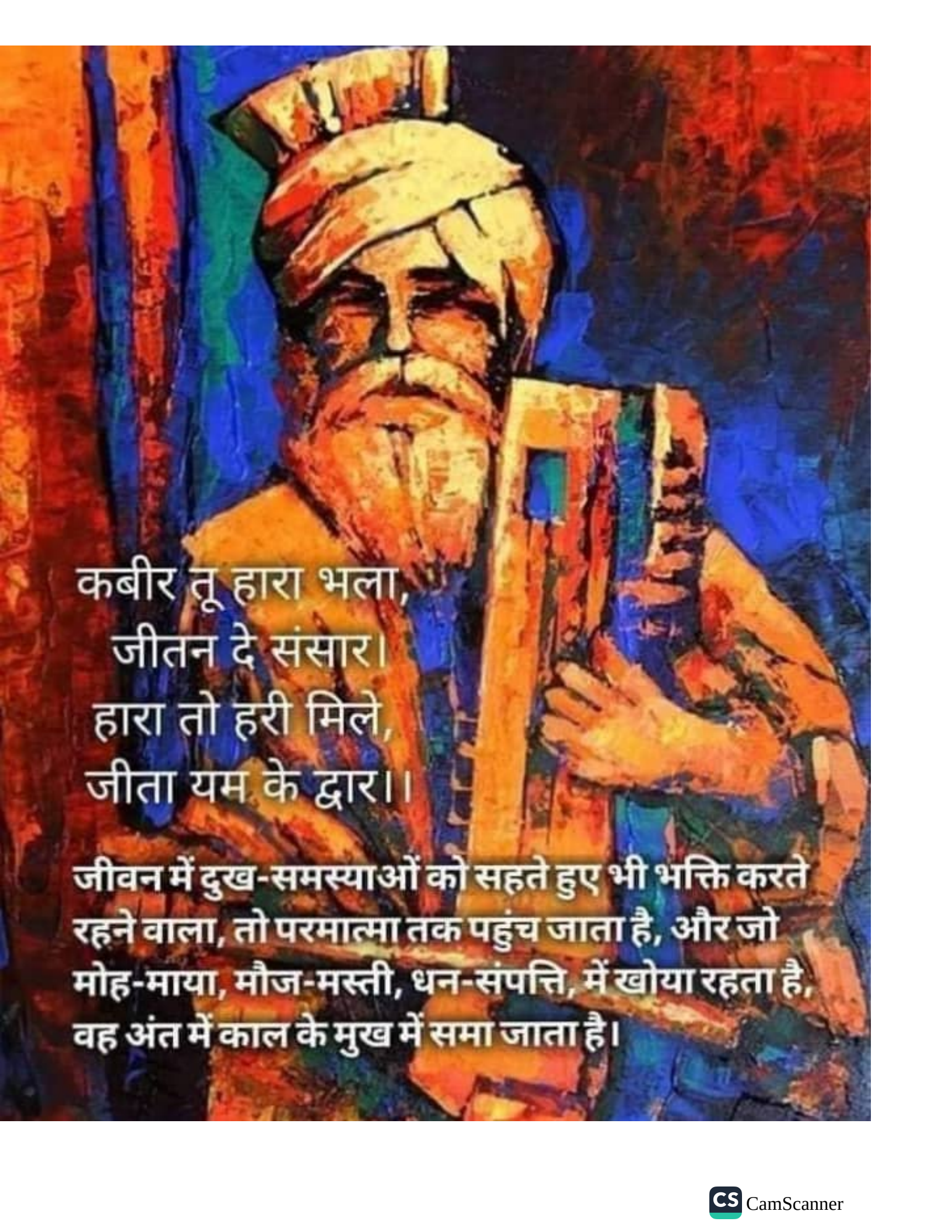
ओशो।

बिन बाती बिन तेल - (झेन कथा) प्रवचन - 7



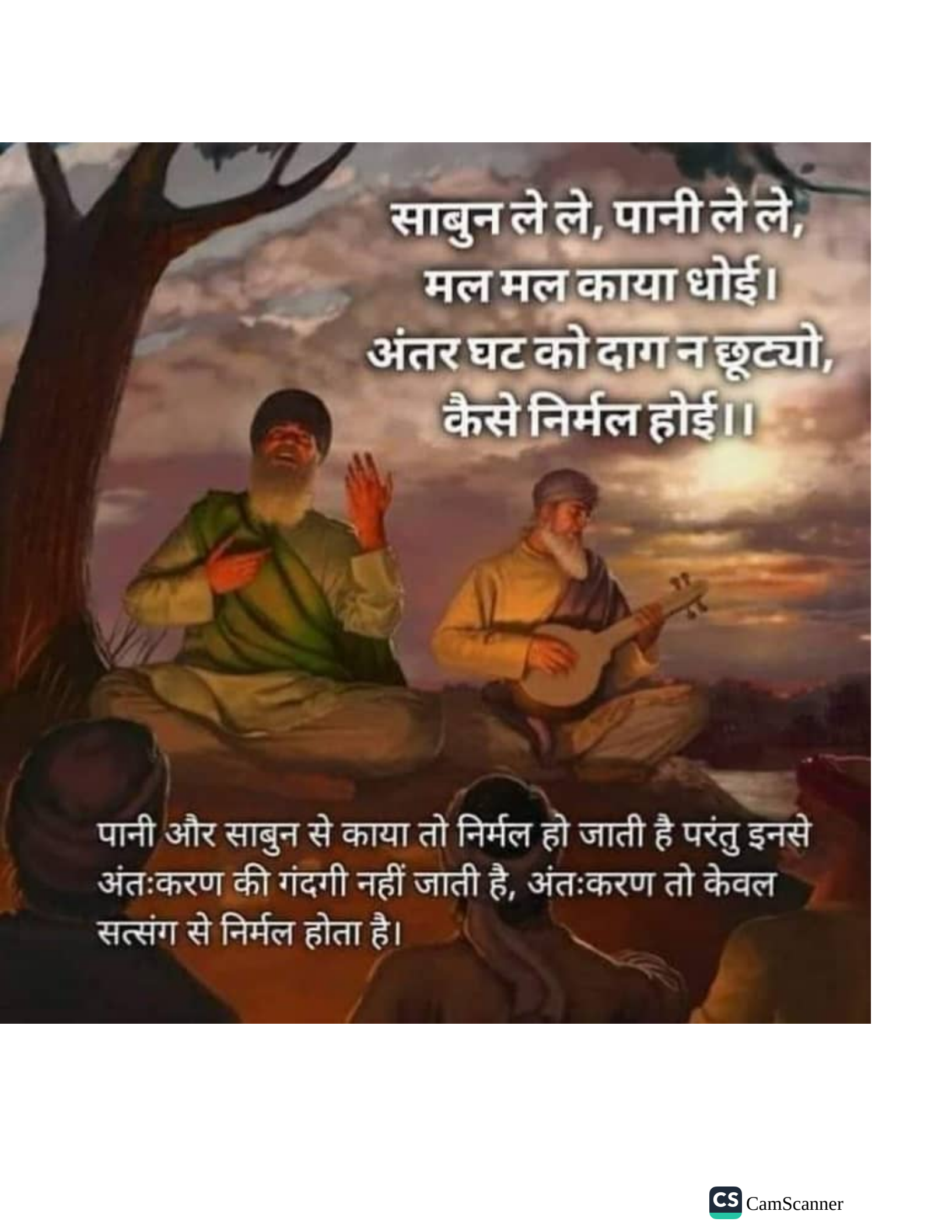
जैसे जन्म एक दिन अचानक घटता है, वैसे ही मृत्यु भी एक दिन अचानक घटती है। फिर इन दोनों के बीच में जीवन भर तुम कर्ता होने के पागलपन में लगे रहते हो। जब जीवन की असली घटनाओं, जन्म और मृत्यु पर, तुम्हारा कोई बस नहीं- तो थोड़ा तो जागो और समझो की इन दोनों के बीच में जो जीवन है उसमें घटती घटनाओं पर तुम्हारा कैसे बस हो सकता है ?





कबीर तू हारा भला,
जीतन दे संसार।
हारा तो हरी मिले,
जीता यम के द्वार।।

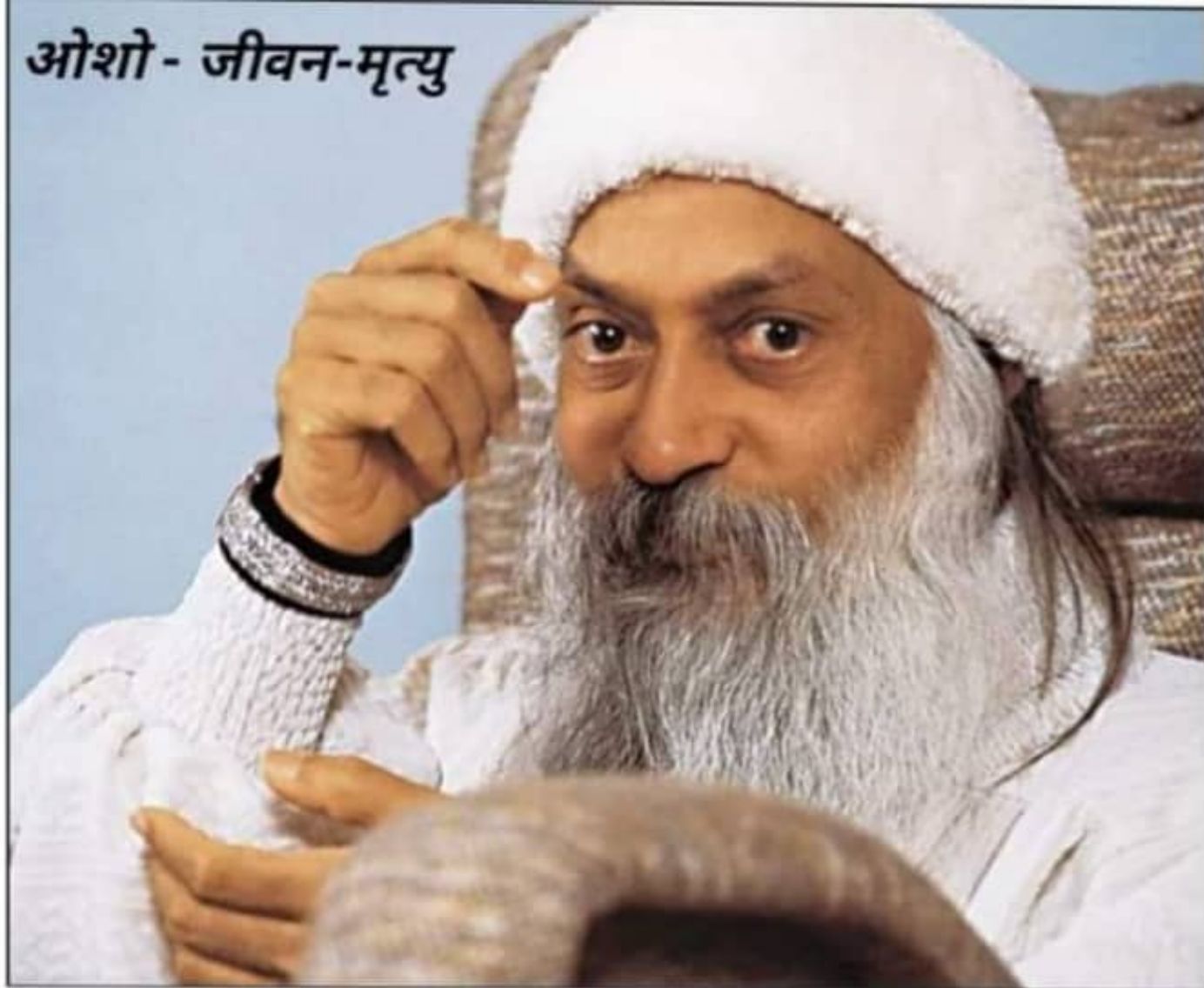
जीवन में दुख-समस्याओं को सहते हुए भी भक्ति करते रहने वाला, तो परमात्मा तक पहुंच जाता है, और जो मोह-माया, मौज-मस्ती, धन-संपत्ति, में खोया रहता है, वह अंत में काल के मुख में समा जाता है।



साबुन ले ले, पानी ले ले,
मल मल काया धोई।
अंतर घट को दाग न छूट्यो,
कैसे निर्मल होई॥

पानी और साबुन से काया तो निर्मल हो जाती है परंतु इनसे
अंतःकरण की गंदगी नहीं जाती है, अंतःकरण तो केवल
सत्संग से निर्मल होता है।

ओशो - जीवन-मृत्यु



अजीब बात है, स्वर्ग में हर कोई जाना चाहता हैं पर मरना कोई नहीं चाहता। ओर तो ओर स्वर्ग के सपने दिखाने वाले भी मरना नहीं चाहते। अगर स्वर्ग इतना सुंदर हैं तो लोग धरती पर समय क्यों बरबाद करते हैं।?



आपसे बड़ी एक शक्ति है जो
आपकी मदद के बिना
आपकी देखभाल करना
जानती है। आपको बस
इतना करना है कि इसके
सामने समर्पण करना है।
अपने विचारों को, अपने मन
को, अपने अहंकार को
समर्पित कर दो। यह
आपका ख्याल रखेगी। यह
आपकी कल्पना से भी
बेहतर देखभाल करेगी।



#hradaymaruchegujarati

इस संसार का नियम यही हैं
कि जो उदय हुआ हैं, वह
अस्त होगा। जो विकसित हुआ
हैं वह मुरझा जाएगा। जो चिना
गया हैं वह गिर पड़ेगा और
जो आया हैं वह जाएगा।

—संत कबीर

**Shashi Shubhangee**

6h · 🌐

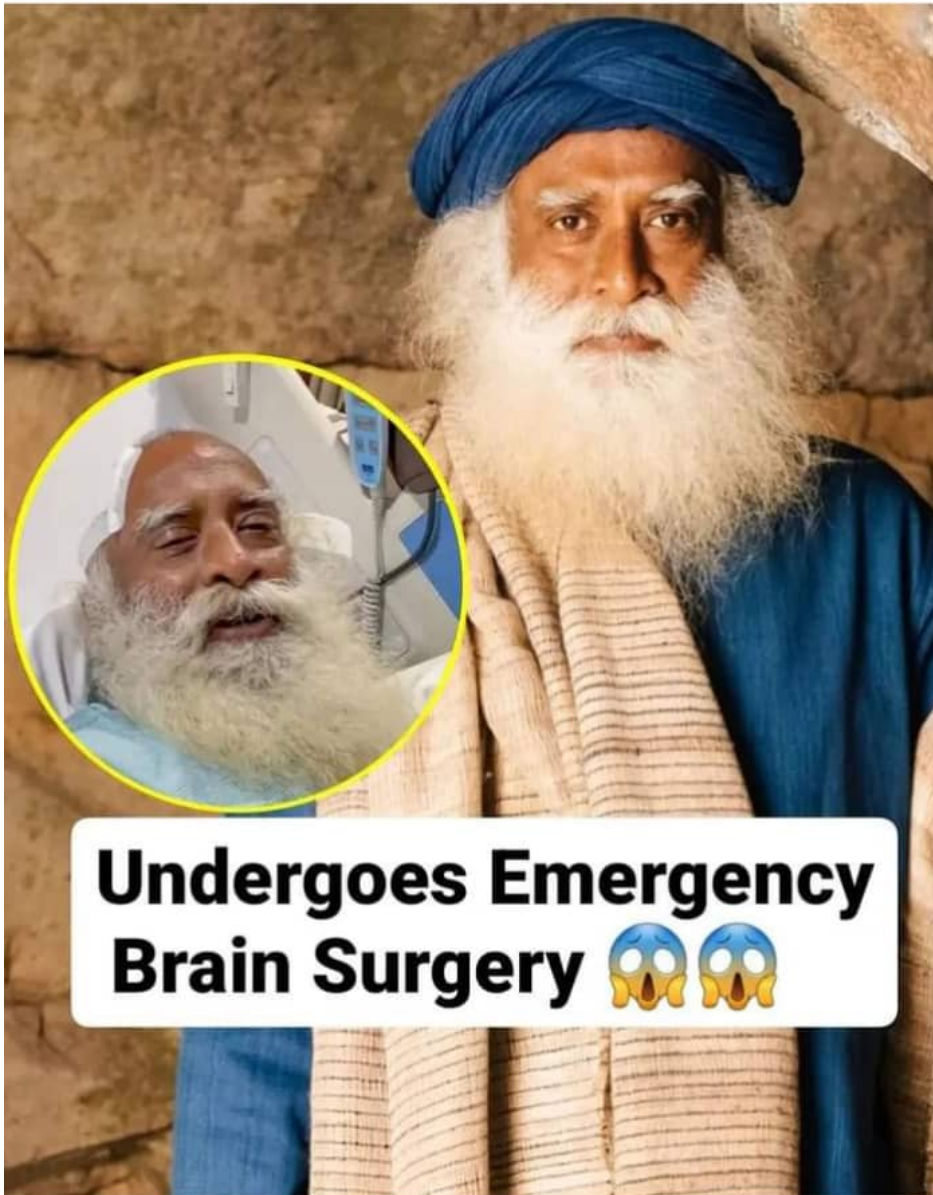


आप कितना भी life style change कर लो , कितना भी खान पान सही रख लो , आंतों की ,पेट की सफाई कर लो, कितना भी जिम, योगा कर लो , कितने भी आध्यात्मिक बन जाओ ,आप कर्मों की मार से बच नहीं सकते ।

कर्म इस शरीर को भुगतने ही होंगे ।

कुछ मंद अक्ल लोग परमहंस रामकृष्ण,विवेकानंद,ओशो , रमण आदि के लिए भी कहते हैं कि उनका आहार ठीक नहीं था, नहीं तो लंबे चल सकते थे , नितांत मूर्खतापूर्ण बात ।

संचित , प्रारब्ध कर्मों का हिसाब तो देना ही होगा चाहे आप सन्यासी हो या संसारी।



सबको अपनी-अपनी पड़ी है।
सत्य से किसी को लेना-देना नहीं है।
और सत्य एक है—न गहोई, न विशोई।
और वह सत्य एक तुम्हारे भीतर छिपा है
न वेद में है, न कुरान में है, न बाइबिल में है।

ध्यान से उस सत्य को खोजो।

ध्यान का अर्थ है:

शांत होओ, मौन होओ, भीतर जागो!

तुम भी संबुद्ध हो सकोगे।

जरा सा श्रम चाहिए!

जरा सा रुख परिवर्तन चाहिए।

🔥 । संबोधि दिवस पर संदेश । 🔥

आचार्य श्री रजनीश



सनातन का मतलब पुराना नहीं होता।

सनातन का मतलब होता है
कि जिसका नये और पुराने का कोई अर्थ ही नहीं है,
जो सदा है। पुराने का मतलब है जो कभी था।
नये का मतलब है जो कभी नहीं था।
सनातन का मतलब है जो सदा है।

न नया है, न पुराना है।
धर्म सनातन है। सनातन धर्म जैसी कोई चीज नहीं है।

ध्यान रखना। धर्म सनातन है,
सनातन धर्म जैसी कोई चीज नहीं है।
क्योंकि सनातन धर्म का मतलब होगा
कि कुछ सामयिक धर्म भी है।
सनातन धर्म का मतलब होगा
कि कुछ क्षणिक धर्म भी है।
सनातन धर्म का मतलब होगा
कि कुछ असनतान धर्म भी हैं।
नहीं, सनातन धर्म जैसी
कोई चीज नहीं है।

धर्म सनातन है।
धर्म का होना ही सनातन है।
वह इटरनल है, वह सदा है।





Posts

**"Osho Universal"**

Lyly Lozin · 2d · 🌐



21 मार्च 1953 को 21 साल की उम्र में

ओशो आत्मज्ञान बने ❤️

"जिस दिन मैं प्रबुद्ध हो गया"

बस उस दिन का मतलब है जिस दिन मुझे एहसास हुआ कि

हासिल करने के लिए कुछ भी नहीं है,

वहाँ जाने के लिए कहीं नहीं है,

करने को कुछ भी नहीं है।

हम पहले से ही दिव्य हैं और हम पहले से ही परिपूर्ण हैं - जैसे हम हैं।

कोई सुधार की जरूरत नहीं है,

कोई सुधार नहीं।

भगवान कभी किसी को अपूर्ण नहीं बनाता है।

यहां तक कि अगर आप एक अपूर्ण आदमी से मिलते हैं,

आप देखेंगे कि उसकी अपूर्णता पूर्ण है।

भगवान कभी भी कोई अपूर्ण चीज नहीं बनाता है।

❤️🌹🙏 ओशो ❤️

⚙️ • Rate this translation



Rules

Write a public comment...



प्रत्येक घटना कुछ न कुछ सिखाती है!

आंखे खुली हो, तो पूरा जीवन ही विद्यालय है।
और जिसे सीखने की भुख है, वह प्रत्येक व्यक्ति
और प्रत्येक घटना से सीख लेता है। और स्मरण
रहे कि जो इस भांति नहीं सीखता है, वह जीवन
में कुछ भी नहीं सीख पाता।

- मैं कौन हूँ-- के कुछ अंश, ओशो



संसार तुम्हें नहीं पकड़ता,
तुमने ही संसार को पकड़ा है।
मकान टूट जाता है तो तुम रोते हों,
लेकिन जब तुम चले जाओगे तो
मकान से एक भी आंसू नहीं गिरेगा
मकान को कुछ फर्क नहीं पड़ता।
-ओशो



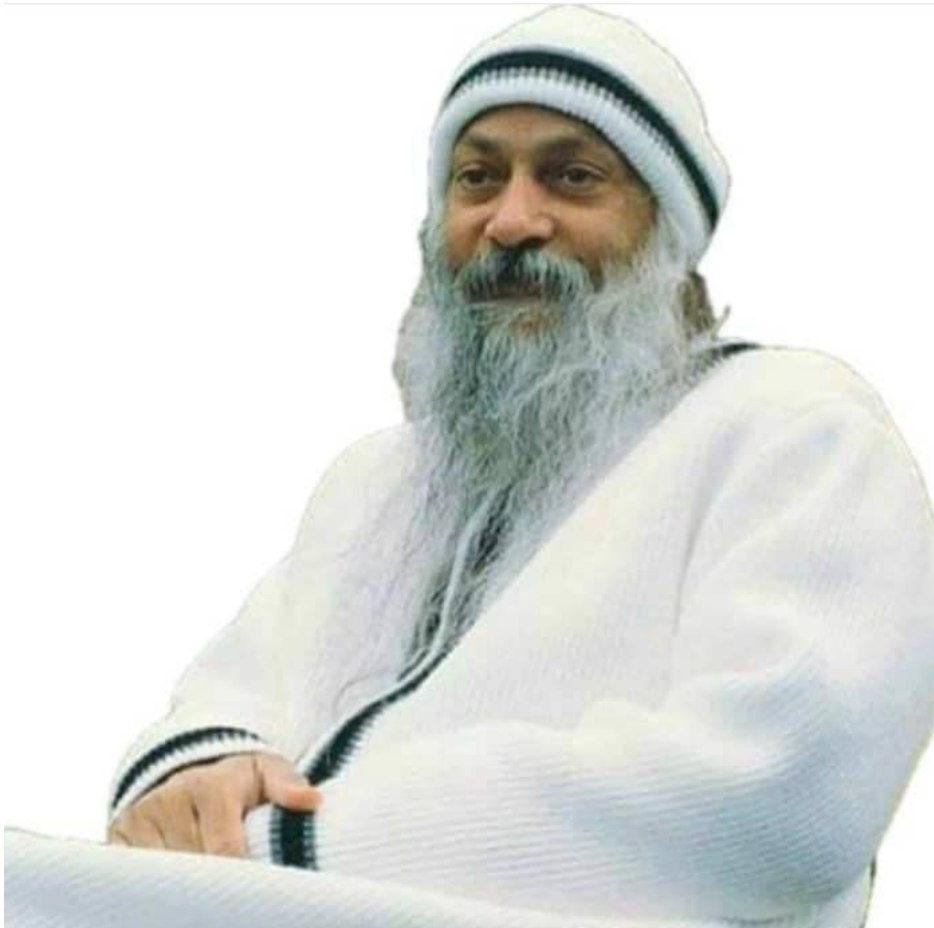
मेरे पास आकर बहुत लोग कहते हैं कि 'आपके आश्रम में बहुत संगीत, नृत्य...। लेकिन ऐसा हम किसी और आश्रम में नहीं देखते!'

उनको 'शब्द' का कुछ पता नहीं है, जो ऐसा पूछते हैं।
तो जिन आश्रमों में संगीत नहीं है, नृत्य नहीं है, उन आश्रमों में शब्द की साधना नहीं हो रही। उन आश्रमों में लोग उदास बैठे हैं, उत्सव नहीं हो रहा।

परमात्मा से बहुत दूर है आंख। कान बहुत करीब है।

शब्द की साधना का अर्थ होता है: तुम निःशब्द हो जाओ। तुम्हारे चित्त की तरंगें शून्य हो जाएं। एक ऐसी घड़ी आ जाए, जहां तुम तो हो, लेकिन एक भी शब्द भीतर नहीं।

ओशो... "कहे कबीर मैं पूरा पाया-13"



**Osho Janaki Dhyana Kendra**

7h · 🌐



आंख के संबंध में नियम है कि किसी व्यक्ति को एक सीमा से बाहर मत देखना। रास्ते पर तुम जा रहे हो, तो एक सेकेंड, दो सेकेंड के लिए तुम किसी को भी देखो, कोई अड़चन नहीं है।

वैज्ञानिक कहते हैं: तीन सेकेंड आखिरी सीमा है। तीन सेकेंड से ज्यादा देखा कि तुम दूसरे व्यक्ति के जीवन में हस्तक्षेप कर रहे हो। उतने दूर तक सभ्यता है। इसलिए स्त्रियों ने आंख झुकाने की कला सीख ली थी। वह लज्जा का लक्षण हो गया था।

आंख में आक्रमण हो सकता है, इसलिए स्त्रियां आंख झुकाने लगी थीं। न होगी आंख उठी, न किसी पर आक्रमण होगा। इसलिए तुम जब अपराध से भरे होते हो, तो आंख झुका लेते हो। वह तुम्हारी दीनता की खबर देती है।

अकड़ा हुआ आदमी आंख नहीं झुकाता; अकड़ कर देखता है; घूर कर देखता है। वह उसके अहंकार की, दर्प की घोषणा है। विज्ञान की सारी खोज आंख के माध्यम से हुई, इसलिए विज्ञान आक्रमक है और हिंसक है। इसलिए विज्ञान का अंतिम परिणाम युद्ध है।

धर्म की सारी खोज कान से हुई।...अनाहत नाद को सुनना...। साधो, सब्द साधना कीजै।

परमात्मा को देखना कम है, परमात्मा को सुनना ज्यादा है। परमात्मा को पाने का ढंग वही होगा, जो संगीत को गुनने का होता है; जो संगीत में डूबने का होता है।

मेरे पास आकर बहुत लोग कहते हैं कि 'आपके आश्रम में बहुत संगीत, नृत्य...। लेकिन ऐसा हम किसी और आश्रम में नहीं देखते!'

उनको 'शब्द' का कुछ पता नहीं है, जो ऐसा पूछते हैं। तो जिन आश्रमों में संगीत नहीं है, नृत्य नहीं है, उन आश्रमों में शब्द की साधना नहीं हो रही। उन आश्रमों में लोग उदास बैठे हैं, उत्सव नहीं हो रहा।



EkKadamSafaltakiOrr



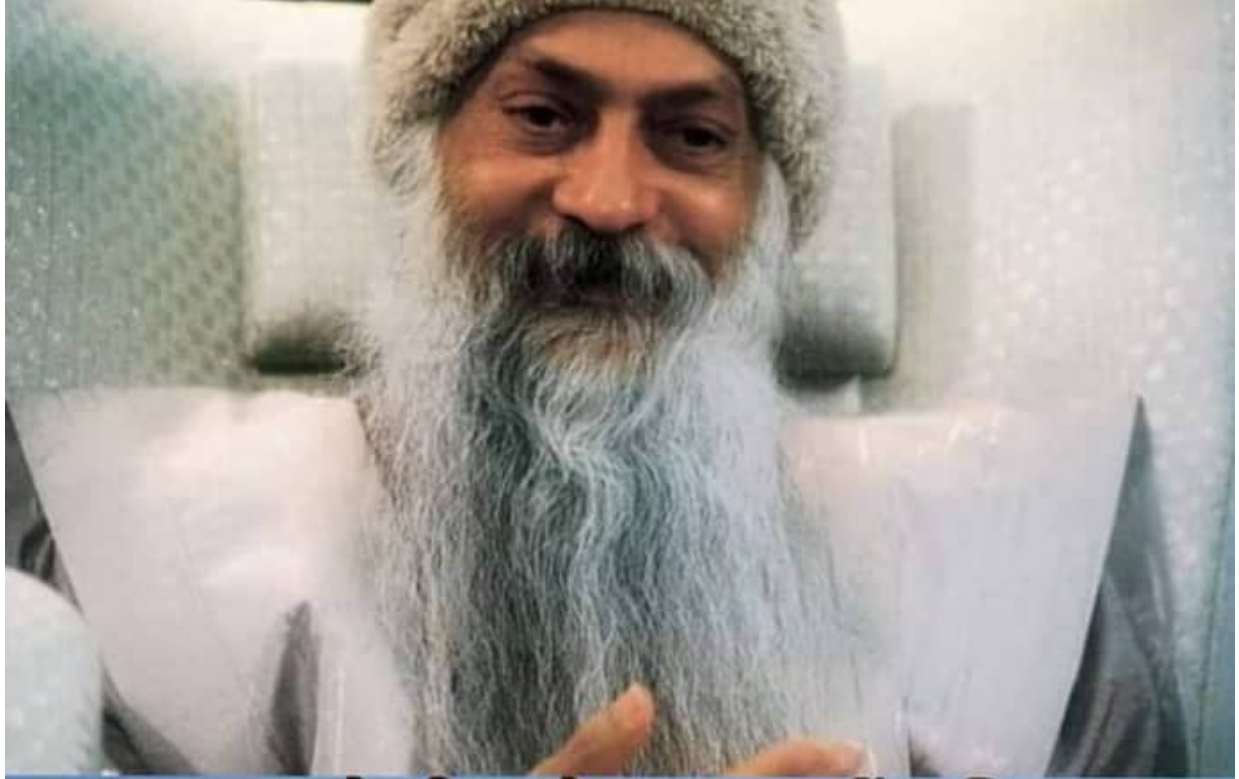
आपका तनाव व्यर्थ है

जन्म देते ही माता पिता बच्चे के लिए जीवन भर की योजना बनाते हैं की उसे कभी तकलीफ ना हो। जरा सोचिए जिसने दुनिया बनाई है उसने तुम्हारे लिए कितनी योजनाएं बनाई होगी। बेवजह तनाव में मत रहिए। सब पहले से तय है। इसे स्वीकार करने वाला ही संत है..!



ब्राह्मन से गदहा भला, आन देब ते कुत्ता ।
मुलना से मुर्गा भला, सहर जगाबे सुत्ता ।।

अर्थ : संत कबीरदास जी कहते हैं कि
ब्राम्हण से गधा अच्छा है जो परिश्रम से घास चरता है ।
पथर के देवता से कुत्ता अच्छा है जो घर का पहरा
देकर रक्षा करता है । एक मौलवी से मुर्गा अच्छा है
जो सोये शहर को जगाता है ।



**जब तक हमारे भीतर ऐसा शून्य हमें न मिल जाए,
जहां कुछ भी नहीं है, तब तक हम उस जीवन के
परम रहस्य में प्रवेश न कर पाएंगे।**

- आचार्य रजनीश

सत्य बहुत खतरनाक है
उनसे सावधान रहना क्योंकि जिसके भी
जीवन के भ्रम टूट जाते हैं
उसका जीना मुश्किल हो जाता है

यह भी अहंकार है कि मैं दूसरों के दुख
मिटाऊंगा। मैं कौन हूं? अगर परमात्मा नहीं
मिटा पा रहा है तो मैं कैसे मिटाऊंगा?
कितने अवतार, कितने तीर्थकर, कितने पैगंबर
आये और गये; अगर नहीं मिटा पाये हैं आदमी
का दुख तो मैं कैसे मिटाऊंगा? छोड़ो यह
पागलपन। छोड़ो ये व्यर्थ की बातें। कोई
किसी का दुख नहीं मिटा सकता लेकिन प्रत्येक
व्यक्ति अपना दुख जरूर मिटा सकता है। जो हो
सकता है वही कर लो पहले, फिर जो नहीं हो
सकता है वह भी होना शुरू हो जाता है। संभव
को समझालो, असंभव भी समझालता है।

बड़ मज को बात है—देखना हां तो कम से कम आंख खोलनी पड़ती है, कान खुले ही हुए हैं। देखना हो तो कम से कम आंख खोलने की क्रिया करनी पड़ती है, सुनना हो तो कान खोलने की क्रिया भी नहीं करनी पड़ती। वे खुले ही हुए हैं। इसलिए देखने में तो थोड़ा सा कर्ता का भाव आ भी जाए, सुनने में कर्ता के भाव का कोई उपाय ही नहीं है। कोई दूसरा बोल रहा है, तुम खाली बैठे हो। तुम बिलकुल निष्क्रिय हो। तुम पैसिव हो। तुम अक्रिया में हो। इसलिए देखने से भी वह महिमा उपलब्ध नहीं होती जो सुनने से उपलब्ध होती है।

इसलिए श्रवण पर इतना जोर दिया है। महावीर कहते हैं, 'सम्यक श्रवण'। बुद्ध कहते हैं, 'सम्यक' श्रवण। नानक अदभुत महिमा का वर्णन कर रहे हैं। सुन लो; वहां कोई कर्ता नहीं है। वहां कोई है नहीं सुनने के क्षण में। अगर तुम चुप हो तो कौन है भीतर? सुनने के क्षण में सन्नाटा है। एक आवाज गूंजती है, गुजर जाती है। कोई भी नहीं है भीतर। विचार आया कि तुम आए। जब विचार नहीं होता, तुम भी नहीं होते। *अहंकार विचारों के जोड़ का नाम है। श्रवण अर्थात् निरअहंकार दशा!!

*

कहते हैं नानक, 'श्रवण से ही योग की युक्ति और शरीर के भेद ज्ञात होते हैं।'

यह बड़ा महत्वपूर्ण सूत्र है।

सुणिए जोग जुगति तनि भेद। सुणिए सासत सिमृति वेद॥

नानक भगता सदा विगासु। सुणिए दुख पाप का नासु॥

ओशो

**Naye Bharat ke Khoj**

6h · 🌐

...

***सम्यक श्रवण***

यह वृक्ष खड़ा है सामने, तुम पचास साल से पानी दिए हो इस वृक्ष को; क्या तुम सोचते हो पचास साल लगेंगे पानी वापस निकालने में, तब यह वृक्ष मरेगा? जड़ को आज काट दो, यह आज मरना शुरू हो जाएगा। पत्ते एक-एक तोड़ने में शायद पचास साल लगें, फिर भी वृक्ष न टूटे! क्योंकि पुराने पत्ते टूटेंगे, नए आ जाएंगे। और अब तो वृक्ष इतना बड़ा हो गया है कि तुम्हें पानी देने की जरूरत भी नहीं। अब तो वह जमीन से अपना पानी ले लेता है।

नहीं, पत्ते अगर काटे तो यह वृक्ष कभी टूटने वाला नहीं। सच तो यह है कि पत्ते तुम एक काटोगे, दो आ जाएंगे। वही तो कलम की सारी कला है। इधर काटो उधर नए आए। अगर तुम पाप काटोगे, नए पाप आ जाएंगे। जड़ पकड़ो! जड़ क्या है? कर्म पत्ते हैं।

कर्ता का भाव जड़ है। अगर तुम कर्ता-भाव को काट दो, इसी वक्त वृक्ष सूख गया।

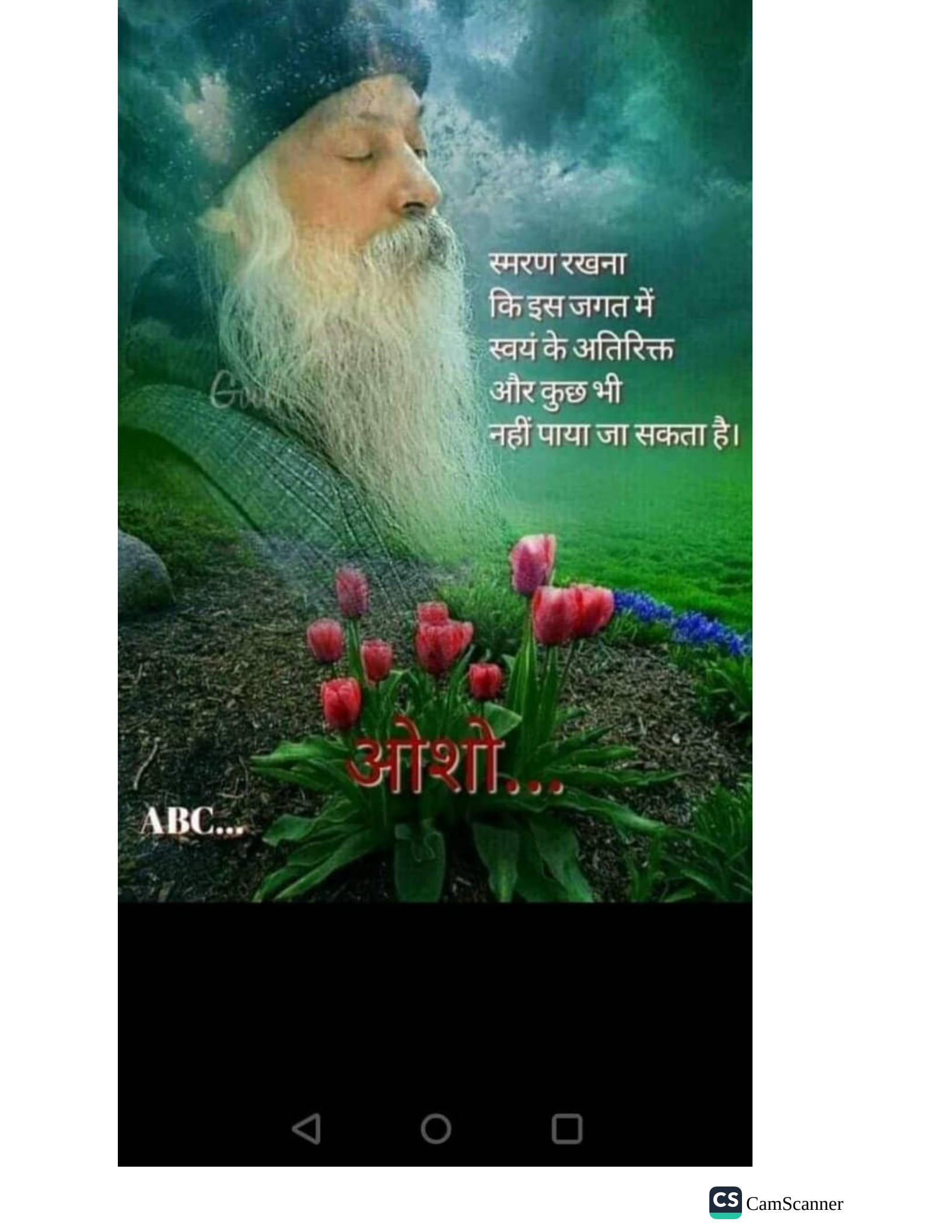
सारा स्रोत तुम्हारे कर्ता-भाव से आ रहा था कि मैं कर रहा हूँ।

कर्ता-भाव को तोड़ने की कला साक्षी है।

साक्षी यानी श्रवण।

इसलिए नानक ऐसी अनूठी महिमा गा रहे हैं। वे कह रहे हैं कि तुम चुप हो कर सुन लो। क्योंकि सुनने के क्षण में तुम कर्ता नहीं रहोगे। सुनना पैसिव, अकर्ता का भाव है। सुनने में तुम्हें कुछ भी तो नहीं करना पड़ता, तुम सिर्फ बैठे हो। सुनना कोई क्रिया थोड़े ही है! तुम्हें कुछ करना थोड़े ही पड़ता है!

बड़े मजे की बात है—देखना हो तो कम से कम आंख खोलनी पड़ती है, कान खुले ही हुए हैं। देखना हो तो कम से कम आंख खोलने की क्रिया करनी पड़ती है, सुनना हो तो कान खोलने की क्रिया भी नहीं करनी पड़ती। वे खुले ही हुए हैं। इसलिए देखने में तो थोड़ा सा कर्ता का भाव आ भी जाए, सुनने में कर्ता के भाव का कोई उपाय ही नहीं है। कोई दूसरा बोल रहा है, तुम खाली बैठे हो। तुम बिल्कुल निष्क्रिय हो। तुम पैसिव हो। तुम अक्रिया में हो। इसलिए देखने से भी वह महिमा उपलब्ध नहीं होती जो सनने से उपलब्ध होती है।



स्मरण रखना
कि इस जगत में
स्वयं के अतिरिक्त
और कुछ भी
नहीं पाया जा सकता है।

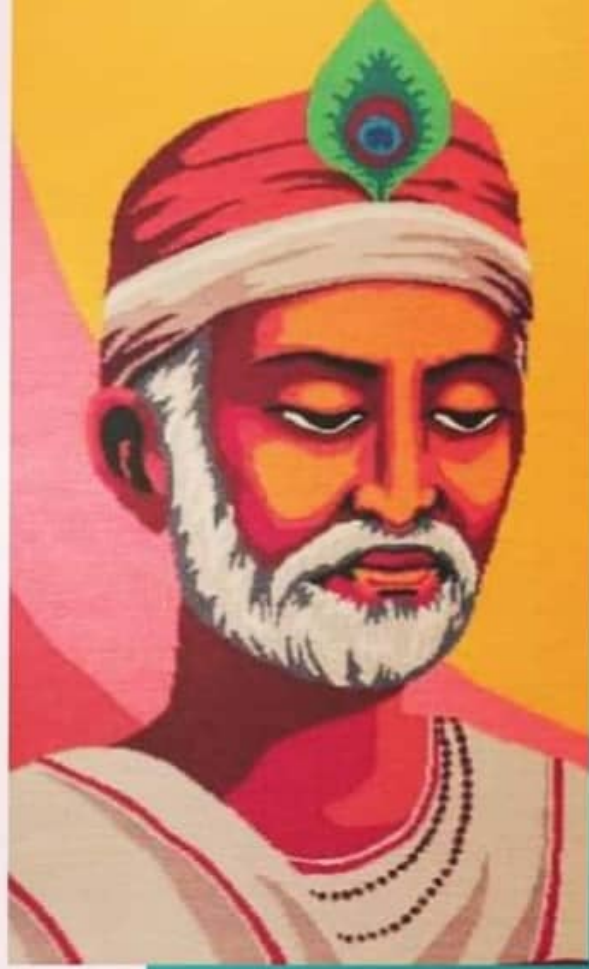
ओशो...

ABC...



मन मैला
तन उजला
बगुला कपटी अंग।

तासों तो
कौआ भला
तन मन एकही रंग॥



मेरे पास लोग आ जाते हैं। वे कहते हैं कि भाव तो उठा है, लेकिन बड़े संदेह भी हैं। मैं उनसे कहता हूँ, भाव भी है संदेह भी है; अब तुम किसके साथ जाने की सोचते हो? निर्णय तो तुम्हें करना पड़ेगा। क्या तुम सोचते हो, उस दिन तुम जाओगे जिस दिन कोई संदेह न होगा? तब तो तुम कभी जा ही न सकोगे। संदेह भी है तुम्हारे भीतर, भाव भी है तुम्हारे भीतर, दोनों ही द्वार खुले हैं। संदेह भी है तुम्हारे भीतर, श्रद्धा भी है तुम्हारे भीतर, दोनों ही द्वार खुले हैं। संदेह भी है तुम्हारे भीतर, श्रद्धा भी है तुम्हारे भीतर, भाव भी है तुम्हारे भीतर, दोनों ही द्वार खुले हैं। संदेह भी है तुम्हारे भीतर श्रद्धा भी है तुम्हारे भीतर, भाव भी है तुम्हारे भीतर, दोनों ही द्वार खुले हैं। हिरण्यकश्यप, प्रहलाद दोनों ने पुकारा है - किसकी सुनोगे? कारण क्या है कि तुम संदेह की ही सुन लेते हो बार-बार? क्योंकि संदेह बलशाली मालूम होता है। सारा समाज, संसार साथ मालूम होता है। श्रद्धा निर्बल करती मालूम होती है- अकेले जाना होगा।

संदेह के राजपथ हैं; वहां भीड़ साथ है। श्रद्धा की पगडंडियां हैं; वहां तुम एकदम अकेले हो जाते हो, एकाकी। वही एकाकी हो जाना संन्यास है। अकेले होने का साहस ही श्रद्धा में ले जा सकता है।

हिरण्यकश्यप बलशाली है- वही उसकी निर्बलता सिद्ध हुई। प्रहलाद बिलकुल निर्बल है- वही उसका बल सिद्ध हुआ। लेकिन वह चलता रहा। उसका गीत न रुका, उसका भजन न रुका। बाप के विपरीत भी चलता रहा! संदेह श्रद्धा का पिता है, शत्रु नहीं है। संदेह से ही श्रद्धा जन्मती है। और संदेह हजार चेष्टा करेगा कि श्रद्धा जन्मे न, क्योंकि श्रद्धा अगर जन्मी तो संदेह को खोना पड़ेगा, मिटना पड़ेगा। तो संदेह लड़ेगा आखिरी दम तक। उसी लड़ाई में वह विध्वंस करता है।

अब यह भी समझ लेना जरूरी है कि संदेह की क्षमता सिर्फ विध्वंस की है, सृजन की नहीं है। संदेह मिटा सकता है, बना नहीं सकता। संदेह के पास सृजनात्मक ऊर्जा नहीं है। वह कह सकता है, नहीं; लेकिन हां, हां उसके प्राणों में उठती ही नहीं। और बिना हां के जगत में कुछ निर्मित नहीं होता। सारा सृजन हां से है, सारा विध्वंस नहीं से है। तो नहीं हिंसात्मक है, हां अहिंसात्मक है। संदेह कहे चले जाता है, नहीं; मिटाने के उपाय सुझा देता है। कहता है, "यह छोटा-सा बालक श्रद्धा का गिरा दो पहाड़ से! समाप्त करे यह झंझट बीच की! डुबा दो पानी में! आग में जला दो! मगर ध्यान रखना, जब भी सृजन और विध्वंस का संघर्ष होगा, विध्वंस हारेगा, सृजन जीतेगा~ओशो

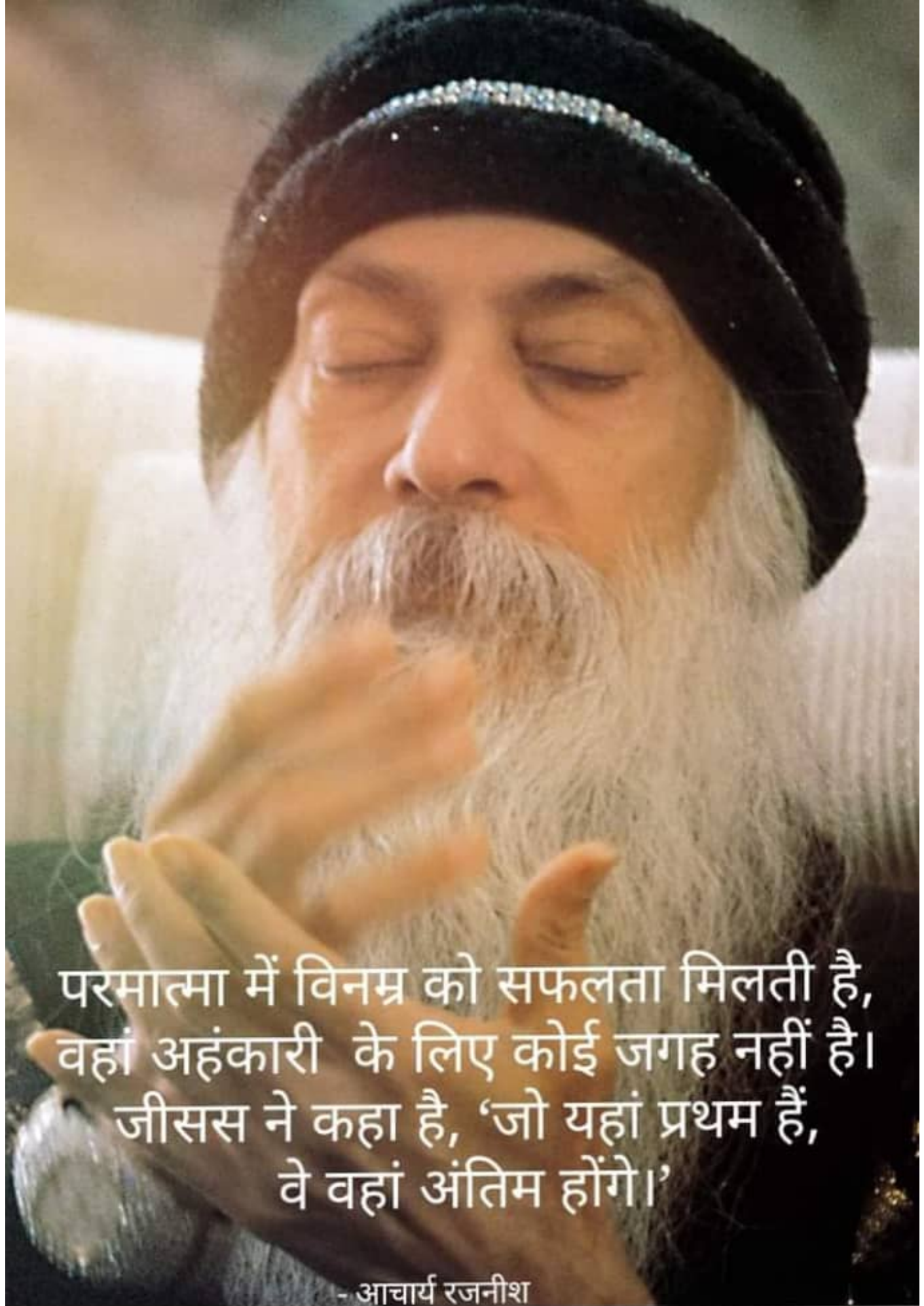
चोट से महासाम्राज्य गिर जाते हैं।

क्या बल है निर्बल का? निर्बल के बल राम! कुछ एक शक्ति है, जो व्यक्ति की नहीं है, परमात्मा की है। वही तो भक्त का अर्थ है। भक्त का अर्थ है: जिसने कहा, "मैं नहीं हूँ, तू है!" भक्त ने कहा, "अब जले तो तू जलेगा; मरे तो तू मरेगा; हारे तो तू हारेगा; जीते तो तू जीतेगा। हम बीच से हटे जाते हैं। भक्त का इतना ही अर्थ है कि भक्त बांस की पोंगरी की भांति हो गया; भगवान से कहता है, "गाना हो गा लो, न गना हो न गाओ- गीत तुम्हारे हैं! मैं सिर्फ बांस की पोंगरी हूँ। तुम गाओगे तो बांसुरी जैसा मालूम होऊंगा; तुम न गाओगे तो बांस की पोंगरी रह जाऊंगा। गीत तुम्हारे हैं, मेरा कुछ भी नहीं। हां, अगर गीत में कोई बाधा पड़े, सुर भंग हो, तो मेरी भूल समझ लेना- बांस की पोंगरी कहीं इरछी-तिरछी है; जो मिला था उसे ठीक-ठीक बाहर न ला पाई; जो पाया था उसे अभिव्यक्त न कर पाई। भूल अगर हो जाए तो मेरी समझ लेना। लेकिन अगर कुछ और हो, सब तुम्हारा है।"

भक्त का इतना ही अर्थ है। नास्तिकता में ही आस्तिक पैदा होगा। तुम सभी नास्तिक हो। हिरण्यकश्यप बाहर नहीं है, न ही प्रहलाद बाहर है। हिरण्यकश्यप और प्रहलाद दो नहीं हैं- प्रत्येक व्यक्ति के भीतर घटनेवाली दो घटनाएं हैं। जब तक तुम्हारे मन में संदेह है- हिरण्यकश्यप है- तब तक तुम्हारे भीतर उठते श्रद्धा के अंकुरों को तुम पहाड़ों से गिराओगे, पत्थरों से दबाओगे, पानी में डुबाओगे, आग में जलाओगे- लेकिन तुम जला न पाओगे। उनको जलाने की कोशिश में तुम्हारे ही हाथ जल जाएंगे।

कितनी बार नहीं तुम्हारे मन में श्रद्धा का भाव उठता है, संदेह झपटकर पकड़ लेता है। कितनी बार नहीं तुम किनारे-किनारे आ जाते हो छलांग लगाने के, संदेह पैर में जंजीर बनकर रोक लेता है, क्या कर रहे हो! कुछ घर-द्वार की सोचो! कुछ परिवारा की सोचो! कुछ धन, प्रतिष्ठा, पद की सोचो! कुछ संसार की सोचो! क्या कर रहे हो? पैर रुक जाते हैं। सोचते हो, कल कर लेंगे, इतनी जल्दी क्या है! क्रांति कितनी बार तुम्हारे भीतर नहीं उन्मेष लेती है! कितनी बार नहीं तुम्हारे भीतर क्रांति का झंझावात आता है- और तुम बार-बार संदेह का साथ पकड़कर रुक जाते हो! यह तुम अपने भीतर खोजो। यह कथा कुछ पुराण में खोजने की नहीं है। यह तुम्हारे प्राण में खोजने की है। यह पुराण तुम्हारे प्राणों में लिखा हुआ है।

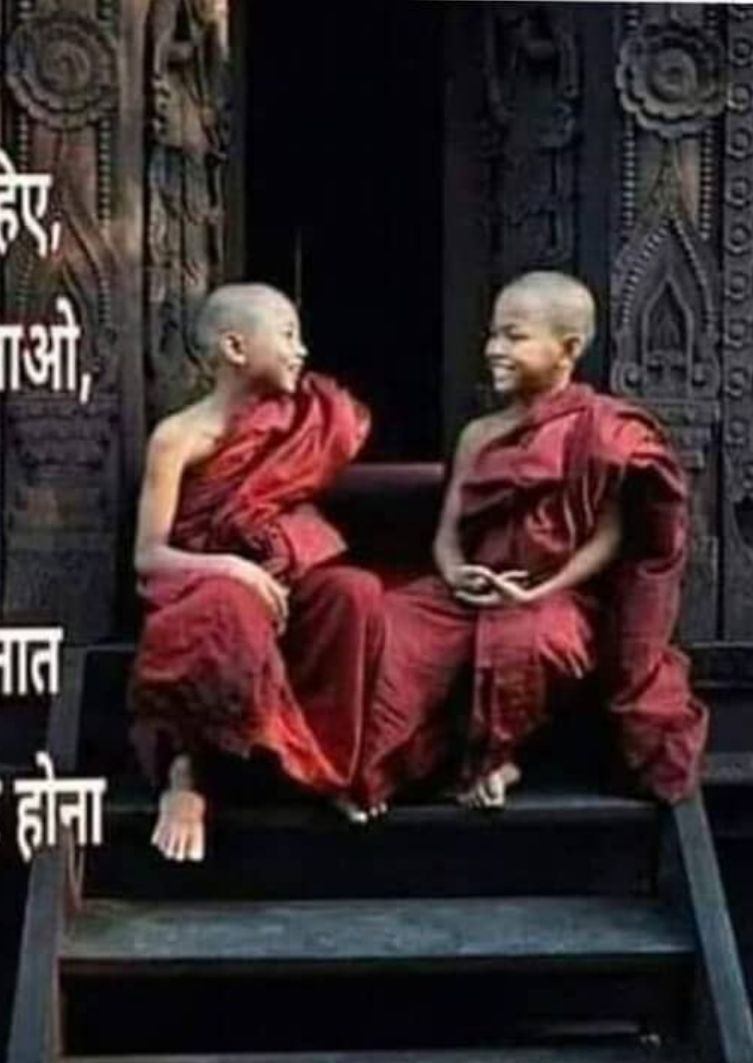
मेरे पास लोग आ जाते हैं। वे कहते हैं कि भाव तो उठा है, लेकिन बड़े संदेह भी हैं। मैं उनसे कहता हूँ, भाव भी है संदेह भी है; अब तुम क्रिया के माध्यम से भाव को जमाने दो? निर्माण तो तब ही होगा। तब



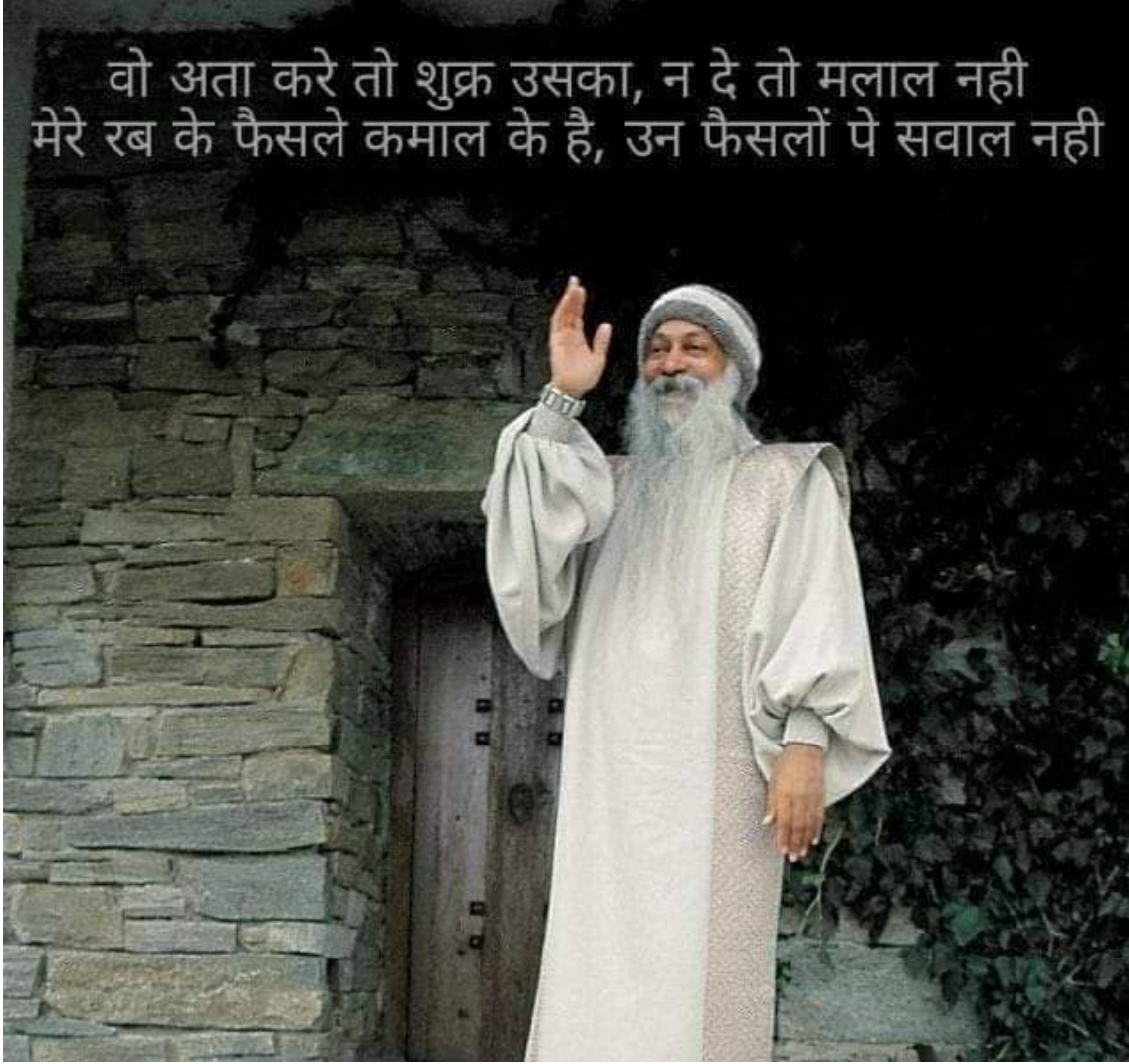
परमात्मा में विनम्र को सफलता मिलती है,
वहां अहंकारी के लिए कोई जगह नहीं है।
जीसस ने कहा है, 'जो यहां प्रथम हैं,
वे वहां अंतिम होंगे।'

- आचार्य रजनीश

मुट्ठी भर ही चाहिए,
तो सिकंदर हो जाओ,
और
अगर पूरी क़ायनात
चाहिए, तो कबीर होना
होगा..



वो अता करे तो शुक्र उसका, न दे तो मलाल नहीं
मेरे रब के फैसले कमाल के है, उन फैसलों पे सवाल नहीं



और जिंदगी के शुरू में सभी को वही भूल होती है,
जो उस लोमड़ी को हुई थी।
जब जिंदगी शुरू होती है, तो हर आदमी सोचता है कि मैं!
मेरे जैसा कोई भी नहीं। सारी जमीन भी छोटी पड़ेगी।
और जब जिंदगी अंत होने के करीब आती है,
तो पता चलता है, कि अब तो कुछ भी नहीं रहा,
छाया सिकुड़ गई है!

हम छाया को देखकर जीते हैं,
इसलिए हम छाया को बढ़ाते रहते हैं,
बड़ा करने की कोशिश में लगे रहते हैं।
मेरे का अर्थ है, मैं की छाया,
शैडो आफ दि ईगो। "मैं" तो झूठा है।
-ओशो



26

7 comments • 5 shares

Like

Comment

Send

Share



ओशो का हिन्दी साहित्य

Rahul Kumar Ojha · 15h ·



मैंने सुना है-

एक दिन सुबह-सुबह एक लोमड़ी शिकार के लिए निकली है।

चली है शिकार को। देखा है कि उसकी बड़ी लंबी छाया बनती है।

सूरज निकल रहा है पीछे, बड़ी लंबी छाया है!

उस लोमड़ी ने अपनी छाया देखी और सोचा,

आज तो एक ऊंट शिकार को मिल जाए, तभी काम चलेगा!

स्वभावतः, इतनी बड़ी छाया बनती है,

तो लोमड़ी छोटी नहीं हो सकती!

लोमड़ी के तर्क में कहीं कोई गलती नहीं है। गणित ठीक है।

इतनी बड़ी छाया बन रही है, कि एक ऊंट मिले शिकार में,

तो ही काम चल सकेगा, लोमड़ी ने सोचा।

दिनभर खोजते दोपहर हो गई है। शिकार मिला नहीं।

सूरज सिर पर आ गया है। लोमड़ी भूखी है।

नीचे की तरफ देखा, छाया बड़ी छोटी बनती है, न के बराबर।

उसने कहा, क्या हुआ? क्या भूख में मैं इतनी सिकुड़ गई?

अब तो एक चींटी भी मिल जाए, तो शायद काम चल जाए!

लोमड़ी का तर्क ठीक है।

हम अपनी छाया से ही सोचते हैं कि हम कितने बड़े हैं।

छाया को नाप लेते हैं, सोच लेते हैं कि इतने बड़े हैं।

अगर छाया बड़ी है मेरे की-मेरा मकान बड़ा है, तो मैं बड़ा;

और अगर मेरा मकान छोटा है, तो मैं छोटा।

मेरे धन का ढेर बड़ा है, तो मैं बड़ा;

और मेरे धन का ढेर छोटा है, तो मैं छोटा।

मुझे नमस्कार करने वाले लोग ज्यादा हैं, तो मैं बड़ा;

और मुझे नमस्कार करने वाले लोग थोड़े हैं, तो मैं छोटा! छाया!

और जिंदगी के शुरू में सभी को वही भूल होती है,

जो उस लोमड़ी को हुई थी।

जब जिंदगी शुरू होती है, तो हर आदमी सोचता है कि मैं!

मेरे जैसा कोई भी नहीं। सारी जमीन भी छोटी पड़ेगी।

और जब जिंदगी अंत होने के करीब आती है,



सांस खत्म हो जाये और तम्मना बाकी रहे...

वो है मृत्यु

सांस बाकी रहे और तम्मना खत्म हो जाये...

वो है मोक्ष

🙏🌸 आचार्य रजनीश 🌸🙏



भजन गंगा



मन की तरंग मार लो, बस हो गया भजन।
आदत बुरी संवार लो, बस हो गया भजन॥

आये हो तुम कहा से, जाओगे तुम कहाँ।
इतना ही विचार लो, बस हो गया भजन॥

कोई तुम्हे बुरा कहे, तुम सुन कर क्षमा करो।
वाणी का स्वर संभाल लो, बस हो गया भजन॥

नेकी सभी के साथ में बन जाए तो करो।
मत सर बंदी का हर लो, बस हो गया भजन॥

नजरो में तेरी दोष है, दुनिया निहारते।
समता का अंजन ढाल लो, बस हो गया भजन॥

यह महल माडिया ना तेरे साथ जायेगी।
सतगुरु की महिमा जान लो, बस हो गया भजन॥

अनमोल ब्रह्मानंद जो चाहिए सदा।
घट घट में राम निहार लो, बस हो गया भजन॥

श्रेणी : विविध भजन

[download bhajan lyrics](#) (2265 downloads)



तुम्हारी भाषा परमात्मा नहीं समझता।

तुम्हारी भाषा तुम्हारी भाषा है;

आदमी की ईजाद है।

परमात्मा तो मौन की भाषा समझता है।

मौन अस्तित्व की भाषा है।

हिंदी बोलो, तो हिंदुस्तानियों की भाषा है।

अरबी बोलो, तो अरबस्थानियों की भाषा है।

चीनी बोलो, तो चीनियों की भाषा है।

ये आदमियों की भाषाएं हैं; उनकी सीमाएं हैं।

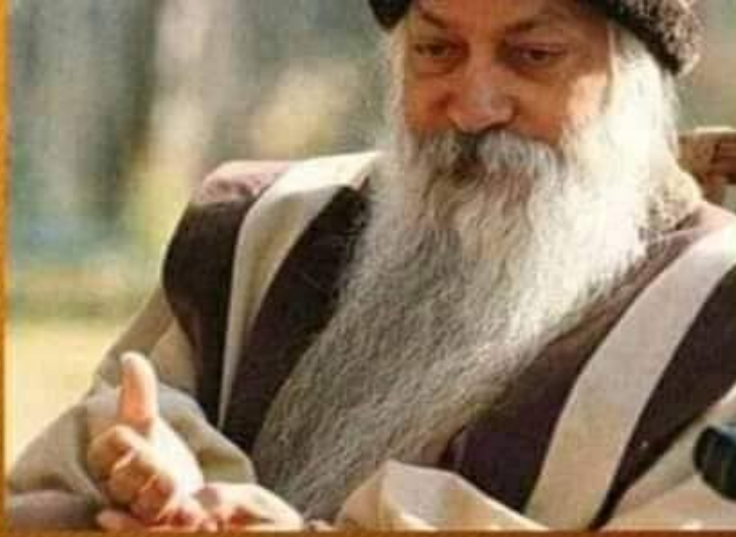
मौन अस्तित्व की भाषा है।

मौन की भाषा ही परमात्मा समझता है।



सबसे अमीर वह है, जो थोड़े में संतुष्ट हैं,
क्योंकि संतुष्टि प्रकृति की दौलत है।

• ओशो



अगर तीन महीने कोई सिर्फ एक घंटा चुप बैठकर प्रतीक्षा कर सके धैर्य से, तो उसे भीतर की आवाज का पता चलना शुरू हो जाएगा। और एक बार भीतर का स्वर पकड़ लिया जाए, तो आपको फिर जिंदगी में किसी से सलाह लेने की जरूरत न पड़ेगी।

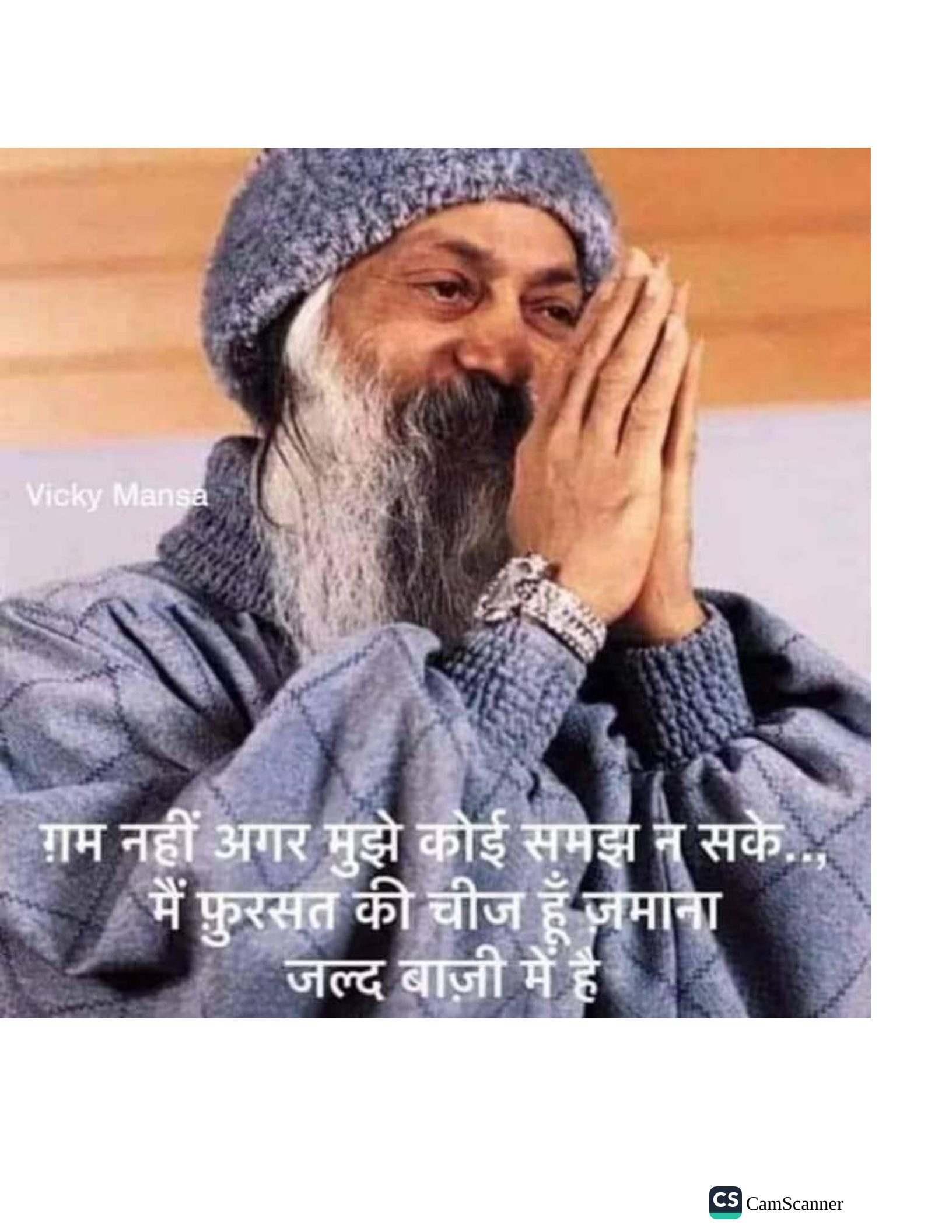
जब भी जरूरत हो, आंख बंद करें और भीतर से सलाह ले लें; पूछ लें भीतर से कि क्या करना है। और स्वधर्म की यात्रा पर आप चल पड़ेंगे। क्योंकि भीतर से स्वधर्म की ही आवाज आती है। भीतर से कभी परधर्म की आवाज नहीं आती। परधर्म की आवाज सदा बाहर से आती है।



जंगल की जड़ी बूटी सा हूँ मैं
किसी को ज़हर तो
किसी को दवा लगता हूँ मैं

परमात्मा को तो तब जाना
जाता है, जब तुम्हारी कोई
चाह नहीं बचती

ओशो
बिन बाती बिन तेल #5



Vicky Mansa

ग़म नहीं अगर मुझे कोई समझ न सके...
मैं फुरसत की चीज हूँ ज़माना
जल्द बाज़ी में है

जो शुभ की,
सौंदर्य की, सत्य की,
सब दिशाओं से
खोज करता रहता है।
जिसका चुनाव शुभ का है।
अशुभ दिखाई भी पड़े,
तो आंख बंद कर लेता है।
शुभ दिखाई न भी पड़े,
तो भी देखता है।
धीरे धीरे उसका सारा जगत
शुभ हो जाता है।

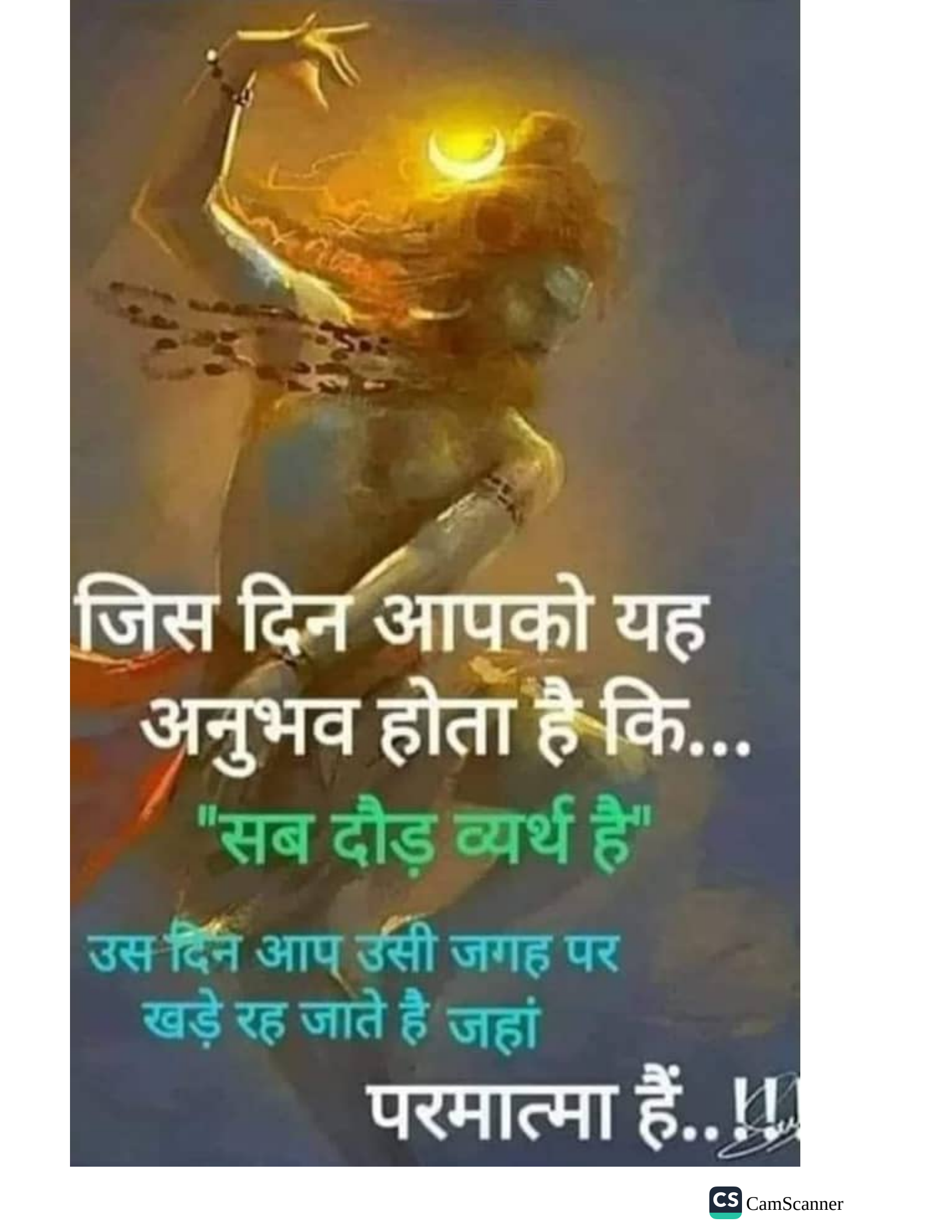


आचार्य श्री रजनीशOsho
गीतादर्शनअ.9.प्र.5/104॥ दैवी या आंसुरी धारा॥



परमात्मा को तो तब जाना
जाता है, जब तुम्हारी कोई
चाह नहीं बचती

ओशो
बिन बाती बिन तेल #5



जिस दिन आपको यह
अनुभव होता है कि...

"सब दौड़ व्यर्थ है"

उस दिन आप उसी जगह पर
खड़े रह जाते हैं जहां

परमात्मा हैं..!!

श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती (फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा)



पूरा नाम: चैतन्य महाप्रभु
अन्य नाम: विश्वम्भर मिश्र, श्रीकृष्ण चैतन्य चन्द्र, निमाई,
गौरांग, गौर हरि, गौर सुन्दर
जन्म: 18 फरवरी सन् 1486 (फाल्गुन शुक्ल
पूर्णिमा)
जन्म भूमि: नवद्वीप (नादिया), पश्चिम बंगाल
मृत्यु: सन् 1534
मृत्यु स्थान: पुरी, उड़ीसा
अभिभावक: जगन्नाथ मिश्र और शचि देवी
पति/पत्नी: लक्ष्मी देवी और विष्णुप्रिया
कर्म भूमि: वृन्दावन, मथुरा
नागरिकता: भारतीय

श्रीजी की चरण सेवा

परमात्मा कोई व्यक्ति नहीं है ।

पुनः-पुनः स्मरण रखना !

परमात्मा केवल आनंद की अनुभूति का नाम है ।

अमृत का साक्षात्कार है ।

चैतन्य की प्रतीति है ।

परमात्मा कोई व्यक्ति नहीं है ।

परमात्मा केवल शक्ति है , ऊर्जा है ।

और ऊर्जा का ही तो सारा खेल है ।

कहीं वही शक्ति हरी होकर वृक्ष हो गयी है , लाल होकर फूल हो

गयी है , कहीं वही शक्ति सूरज बनी है , कहीं वही शक्ति तारे ;

वही शक्ति तुम्हारे भीतर सुन रही है अभी ,

वही शक्ति मेरे भीतर बोल रही है अभी ।

नहीं उससे कुछ भिन्न है ! हम सब उसमें एक हैं , अभिन्न हैं ।



**** ओशो ****

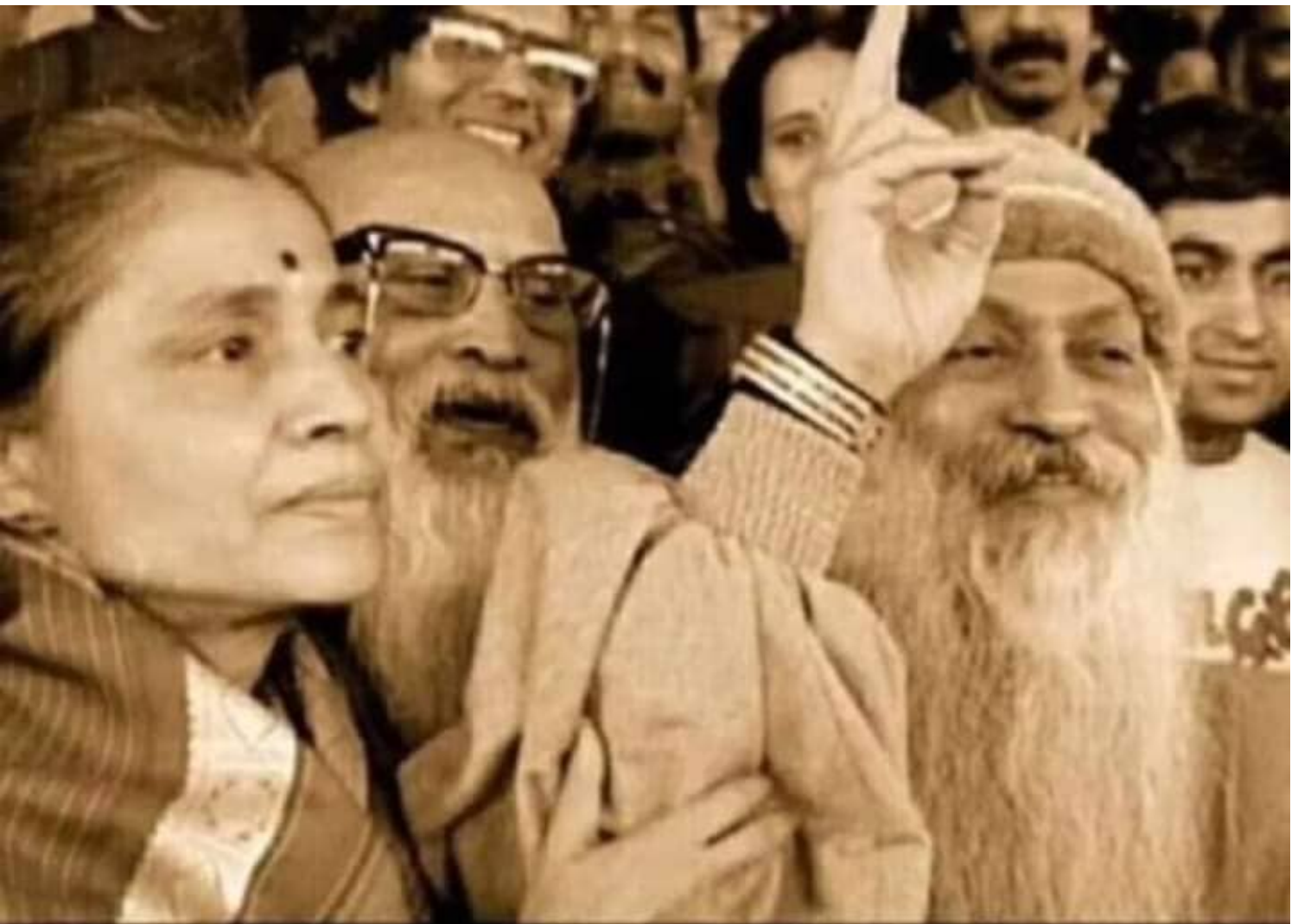
झरत दसहुं दिस मोती - पहला प्रवचन से संकलित अंश



आशीर्वाद मिलते हैं,
मांगे नहीं जा सकते।
आशीर्वाद पाने की पात्रता चाहिए
मांगने से उनका कोई संबंध नहीं है।
तुम जब तैयार होते हो,
तब आशीष बरस जाती है,
छीनी-झपटी नहीं जा सकती।

#-कहे कबीर दिवाना

~ओशो



मित्र और शत्रु स्वयं की ही परछाइयां हैं ;

" मैं प्रेम हूं " तो संसार भी मित्र
है ,

" मैं घृणा हूं " तो परमात्मा भी
शत्रु है ।



वासना खींचती है
प्रेम प्रतीक्षा करता है!!!

ओशो



अब टांग खींचने वालों को
कैसे समझाऊं के बाजू 
उपर वाले ने पकड़ रखी है



किसी विचार को इतना अपना मत मानना कि उसके लिए लड़ने को खड़े हो जाओ। अगर लोग विचार से अपना संबंध तोड़ लें तो दुनिया में सारे युद्ध बंद हो जायें। सारा युद्ध और उपद्रव, सारी हिंसा, विचार के साथ तादात्म्य के कारण है।

OSHO



कोई क्राइस्नस्ट है, कोई समाज वादी है, कोई जनसंघी है, कोई हिंदू है, कोई मुसलमान है, कोई जैन है-सब विचार के साथ तादात्म्य कर लिये हैं। तुम सिर्फ परमात्मा हो; न तुम हिंदू हो, न तुम जैन हो, न तुम बौद्ध हो, न मुसलमान हो। तुम्हारा शुद्ध होना शिवत्व है। (साधो, सहज समाधि भली!)



tion

फॉलो करें - गौतम बुद्ध विचार

तुम नहीं थे तब भी दुनिया थी
तुम चले जाओगे तब भी दुनिया रहेगी, तुम्हारे
रहने न रहने से पृथ्वी या लोगों को कोई फर्क
नही पड़ने वाला इसलिये चिंताओं से मुक्त होकर
वर्तमान समय में ढंग से जीना शुरू करो !

मैं ठीक

अपनी मस्ती से जीता हूं,

अपनी मौज से चलता हूं।

क्योंकि न मुझे फिकर है तुम्हारे आदर की,

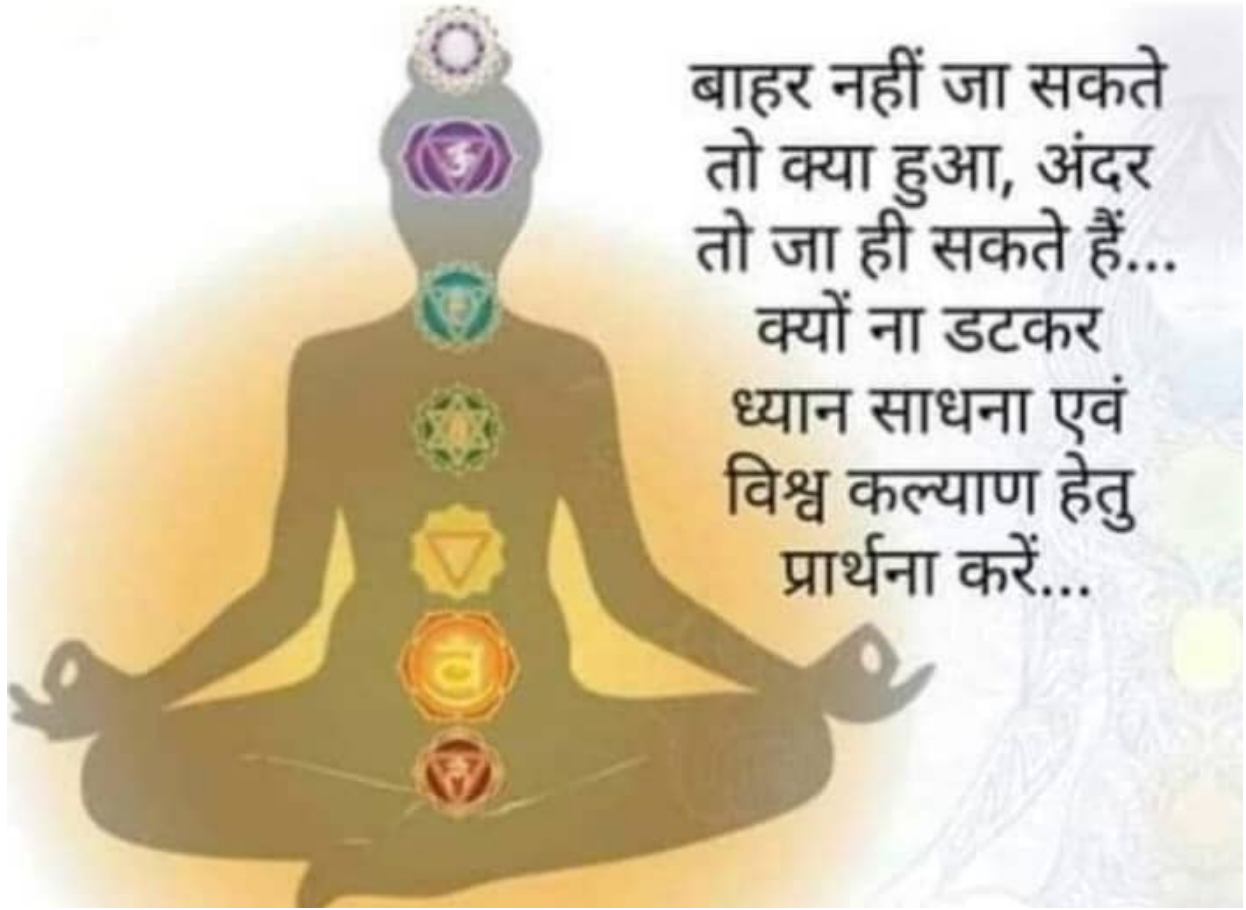
और न मुझे चिंता है तुम्हारे अनादर की।

सारी दुनिया मेरी प्रशंसा करे, तो मुझे फर्क नहीं पड़ता।

और सारी दुनिया मेरी निंदा करे, तो मुझे फर्क नहीं पड़ता।



Quarantine is an integral part of Meditation.





आध्यात्मिक कहानियां और सुविचार



Namita Mangal · 16m · 🌐

एक ऊंटनी और उसका बच्चा एक पेड़ के नीचे आराम कर रहे थे. बच्चे ने पूछा, "माँ, हम ऊँटों का ये कूबड़ क्यों निकला रहता है?" "बेटा हम लोग रेगिस्तान के जानवर हैं, ऐसी जगहों पर खाना-पानी कम होता है, इसलिए भगवान् ने हमें अधिक से अधिक फैट स्टोर करने के लिए ये कूबड़ दिया है... जब भी हमें खाना या पानी नहीं मिलता हम इसमें मौजूद फैट का इस्तेमाल कर खुद को जिंदा रख सकते हैं." ऊंटनी ने उत्तर दिया. बच्चा कुछ देर सोचता रहा फिर बोला, "अच्छा, हमारे पैर लम्बे और पंजे गोल क्यों हैं?" "इस तरह का आकार हम ऊँटों को रेत में आराम से लम्बी दूरी तय करने में मदद करता है, इसलिए." माँ ने समझाया. बच्चा फिर कुछ देर सोचता रहा और बोला, "अच्छा माँ ये बताओ कि हमारी पलकें इतनी घनी और लम्बी क्यों होती हैं?" "ताकि जब तेज हवाओं के कारण रेत उड़े तो वो हमारी आँखों के अन्दर ना जा सके." माँ मुस्कुराते हुए बोली. बच्चा थोड़ी देर चुप रहा फिर बोला, "अच्छा तो ये कूबड़ फैट स्टोर करने के लिए है... लम्बे पैर रेगिस्तान में तेजी से बिना थके चलने के लिए हैं... पलकें रेत से बचाने के लिए हैं... लेकिन तब हम इस चिड़ियाघर में क्या कर रहे हैं?" "दोस्तों, यही सवाल हमें खुद से पूछना चाहिए. ईश्वर ने हर एक इंसान को अपने आप में सम्पूर्ण बनाया है. हर व्यक्ति में इतना योग्यता है कि वह कुछ बड़ा... कुछ महान कर सकता है. लेकिन ज्यादातर लोग चिड़ियाघर का ऊंट बन जाते हैं... अपने अन्दर मौजूद अपार काबिलियत का प्रयोग ही नहीं करते... बेजुबान जानवर तो मजबूर है... लेकिन एक इंसान होने के नाते हमें मजबूर नहीं मजबूत बनाना चाहिए और अपने अन्दर के टैलेंट को पहचान कर अपनी बेस्ट लाइफ जीने की हर कोशिश करनी चाहिए.

सुप्रभातम् 🙏



Like



Comment



Send

**अनुभव के
अतिरिक्त इस जगत में
वैराग्य के पैदा होने का
कोई उपाय न कभी था,
न है, न होगा।**

Osho

अष्टावक्र: महागीता--(प्रवचन--40)

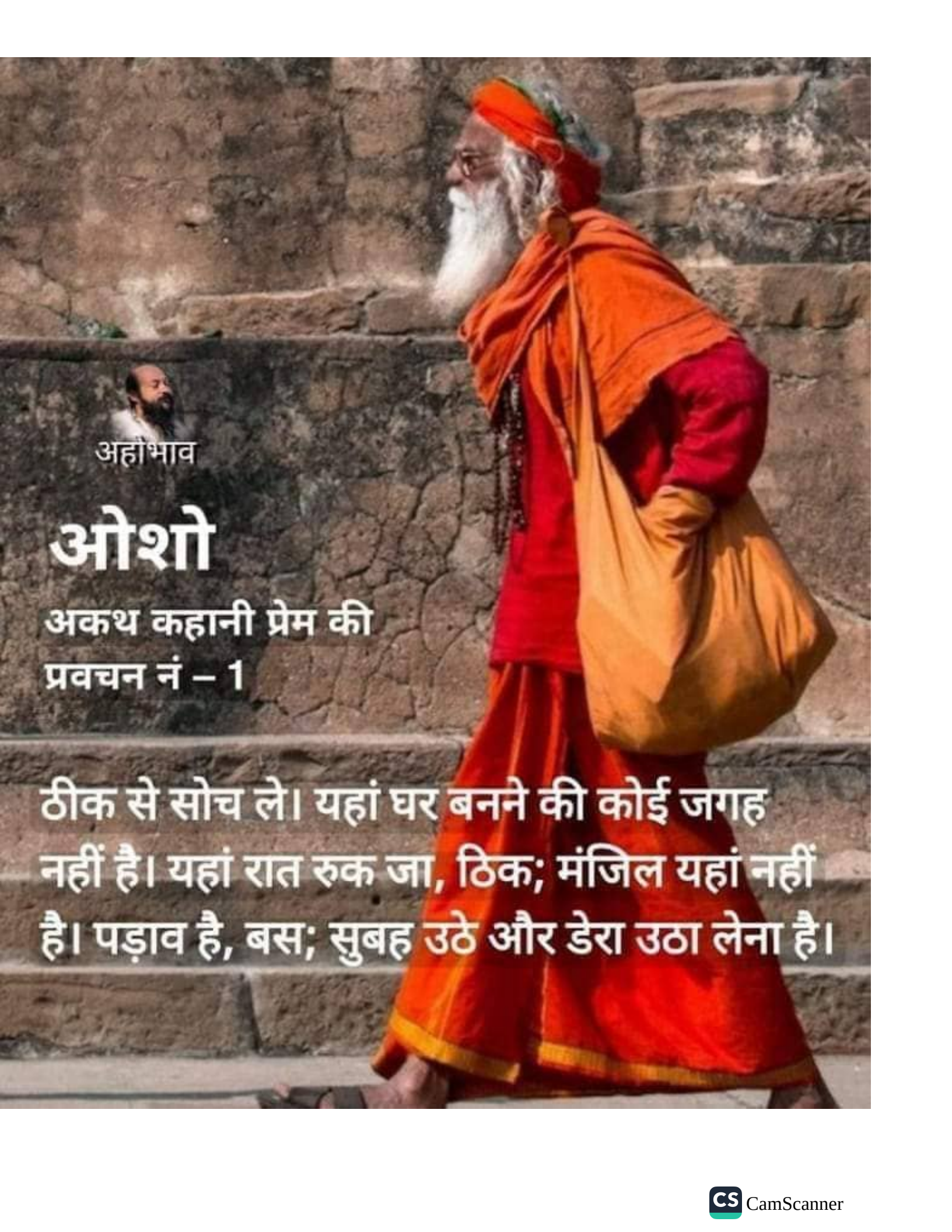
धर्म अर्थात् उत्सव — प्रवचन — दसवां



मेरा तो एक ही छोटा सा सूत्र है, छोटा सा संदेश है:
भीतर डुबकी मारो। जितने गहरे जा सको, जाओ-अपने में!
वहीं पाओगे जो पाने योग्य है। और उसे पाकर निश्चित ही
बांट सकोगे! पृथ्वी तुम्हारे हंसी के फूलों से भर सकती है।

ओशो अहोभाव

प्रीतम छबि नैनन बसी-11



अहोभाव

ओशो

अकथ कहानी प्रेम की
प्रवचन नं – 1

ठीक से सोच ले। यहां घर बनने की कोई जगह
नहीं है। यहां रात रुक जा, ठिक; मंजिल यहां नहीं
है। पड़ाव है, बस; सुबह उठे और डेरा उठा लेना है।

ये पिछले जन्मों के दुख नहीं है।

अभी जो कर रहे हो
उसी का परिणाम है।

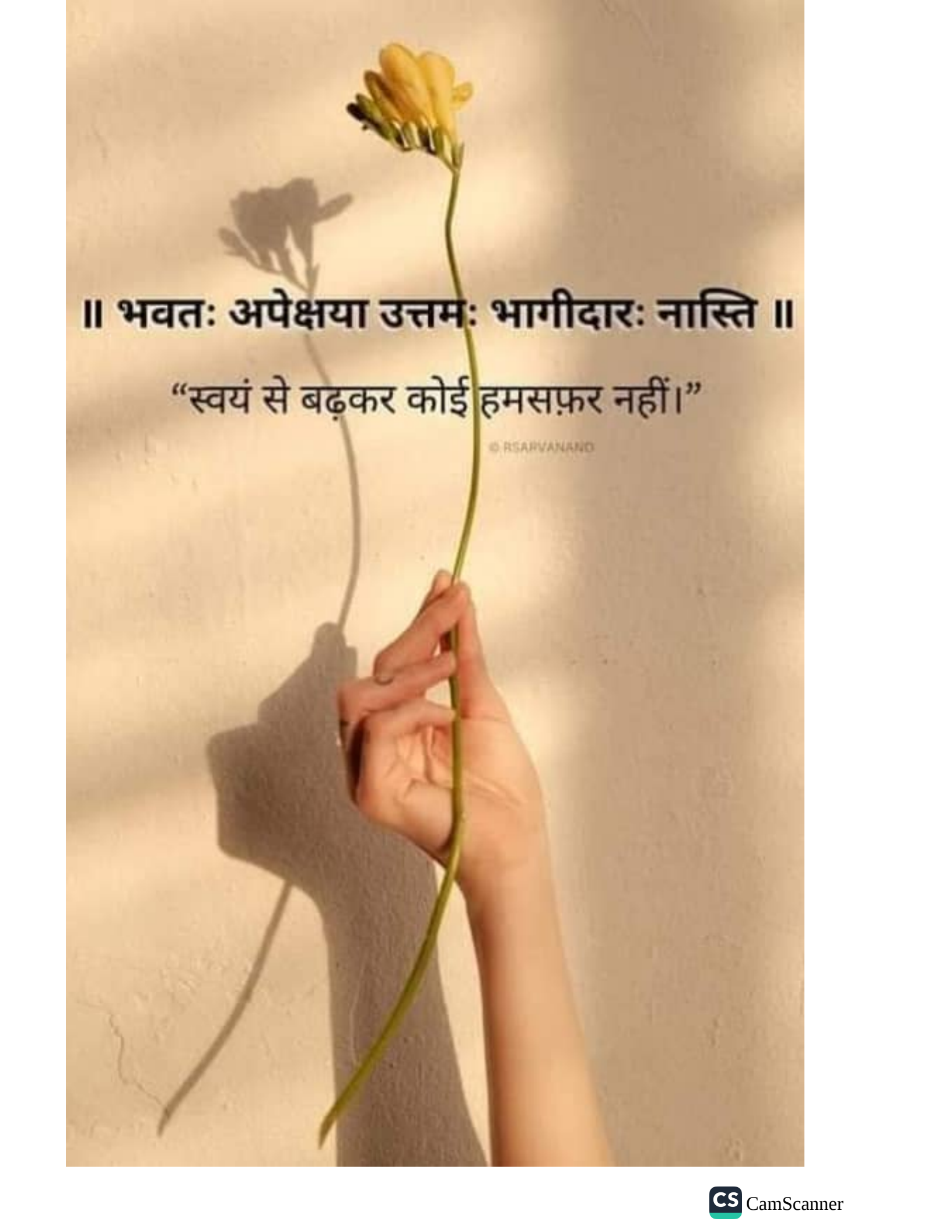
परमात्मा उधारी में भरोसा नहीं करता।

अभी आग में हाथ डालोगे
अभी जलेगा, अगले जन्म में नहीं।

और अभी किसी को
दुख दोगे तो अभी दुख पाओगे,
अगले जन्म में नहीं।

ओशो 🌹



A hand holding a yellow flower against a textured wall. The flower is yellow with green buds. The hand is holding the stem. There are shadows on the wall: a shadow of the flower and a shadow of the hand holding it.

॥ भवतः अपेक्षया उत्तमः भागीदारः नास्ति ॥

“स्वयं से बढ़कर कोई हमसफ़र नहीं।”

© RSARVAVAND

Q. U. R. A. N. I. G. A. Z. A. L.

जाने वाला कमियाँ देखता है !
निभाने वाला काबिलियत !



एकांत

Rahul Yadav · 9m · 🌐



अर्थ बड़े गहरे हैं ..ज़रा गौर फरमायें..
मैंने हर रोज जमाने को रंग बदलते देखा है..!
उम्र के साथ जिंदगी को ढंग बदलते देखा है..!!
वो जो चलते थे तो शेर के चलने का होता था गुमान..!
उनको भी पाँव उठाने के लिए सहारे को तरसते देखा है..!!
जिनकी नजरों की चमक देख सहम जाते थे लोग..!
उन्ही नजरों को बरसात की तरह बरसते देखा है..!!
जिनके हाथों के जरा से इशारे से पत्थर भी कांप उठते थे..!
उन्ही हाथों को पत्तों की तरह थर-थर काँपते देखा है..!!
जिन आवाज़ों से कभी बिजली के कड़कने का होता था भ्रम..!
उन होठों पर भी मजबूर चुप्पियों का ताला लगा देखा है..!!
ये जवानी ये ताकत ये दौलत सब कुदरत की इनायत है..!
इनके जाते ही इंसान को बेजान हुआ देखा है..!!
अपने आज पर इतना ना इतराना मेरे यारों..!
वक्त की धारा में अच्छे अच्छों को मजबूर होता देखा है..!!

👉 इसलिए 👉

हो सके तो किसी को खुश रखो दुःख देते हुए तो हजारों को देखा है..❤️

ओशो

साक्षी का अर्थ है, निर्णय नहीं। साक्षी का अर्थ है. मैंने फूल देखा तो बस देखता ही रहा-न मेरे मन में उठा कि सुंदर है, न मेरे मन में उठा कि असुंदर है; न मेरे मन में उठा कि गुलाब है, न मेरे मन में उठा कि चंपा है, न मेरे मन में उठा कि तोड़ लू न मेरे मन में उठा कि छोड़ दू- मन उठा ही नहीं; फूल रहा उधर, इधर रहा मैं बीच में कुछ उठा ही नहीं; बीच में कोई विचार की तले न रही; खाली हो गया, शून्य हो गया बीच में - उधर फूल, इधर मैं.. तो मैं फूल का साक्षी हुआ।

बुंद सागर में मिले
अहोभाव

D.R



Like



Comment



Send



Share



John Elia - Hindi

Nikhil Sharma · 2m ·



जिन पर लुटा चूका था मैं दुनिया की दौलतें....

उन वारिसों ने मुझको कफ़न नाप कर दिया....



2



Like



Comment



Send



Share



तुम्हें पाना मेरी मंज़िल नहीं
तुम्हें पूरी ज़िंदगी खुश देखना
मेरा ख़्वाब है

ओशो



लोगों या परिस्थितियों से परेशान न हों,
आपकी प्रतिक्रिया के बिना दोनों ही
शक्तिहीन हैं।

गीता ज्ञान (अध्याय 4). (श्लोक 37)

मेरी बात आज, सामान्य न हों ,
शायद, कई नियमों के पार भी न हों ।
पर यह मन हैं, जो कल्पनाओं का विस्तार करता हैं ,
और बुद्धि विवेकपूर्वक, सहीं का चुनाव करती हैं ।
किया हैं समर्थन एक विचार का, मेरी बुद्धि ने भी ,
जो प्रस्तुत कर रहीं उदाहरण के रूप में, सन्मुख इस श्लोक के ।

भगवान ने जितने भी राक्षसों का संहार किया ,
सुना मैंने, उन सबका उद्धार हुआ ।
कारण बहुत बतायें वेदों में ,
पर गीता से एक आधार, मुझे भी मिला ।

पहला यह कि, उन्होंने अपने स्वभाव को प्रभु से, कभी छुपाया नहीं ।
जो वो थे, प्रभु के सन्मुख दिखाया वहीं ।
और दूसरा, जो वक्त उनका अन्तिम क्षण बना ,
उस एक क्षण में, उन्हें ज्ञान हुआ ।
अपने पूरे जीवन के कर्मों को देखने से, या श्रीकृष्ण के सन्मुख होने से,
उनको उनके पापों ने मुक्त किया ।

ममता

श्रीकृष्ण ने यहां कहा हैं.....

"" क्योंकि हे अर्जुन! जैसे प्रज्वलित अग्नि ईंधनों को भस्ममय कर देता है, वैसे ही ज्ञानरूप अग्नि सम्पूर्ण कर्मों को भस्ममय कर देता है ।""



Like



Comment



Send



Share

**ओशो का हिन्दी साहित्य**

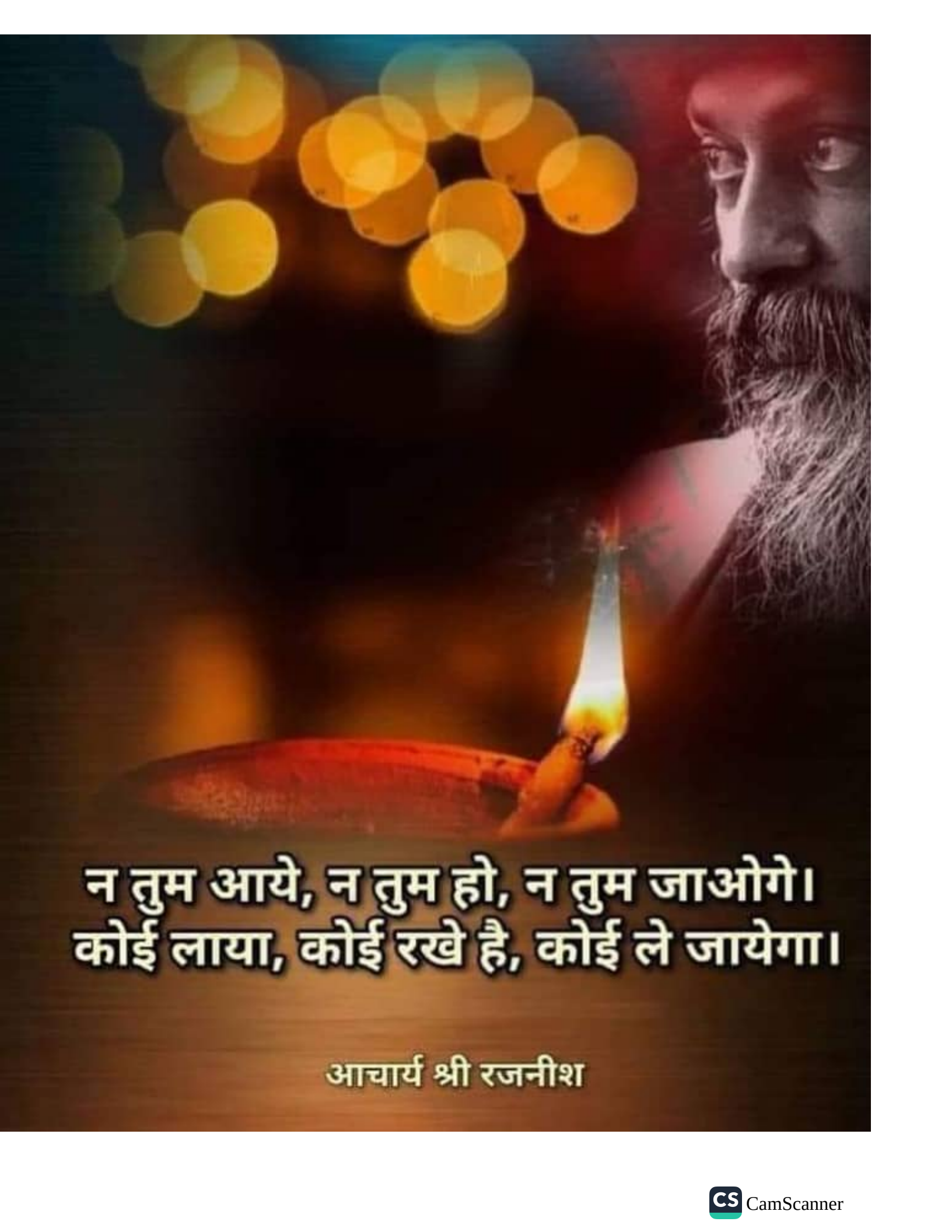
Sulaxna Dixit Rawat · 1d ·



यदि आप प्रकृति पर भरोसा कर सकते हैं, तो धीरे-धीरे आप शांत, शांत, खुश, आनंदित, जश्न मनाते हुए बन जाएंगे - क्योंकि प्रकृति जश्न मना रही है। प्रकृति एक उत्सव है. चारों ओर देखो. क्या आप कोई ऐसा फूल देख सकते हैं जो आपके संतों जैसा दिखता हो? क्या आप कोई इंद्रधनुष देख सकते हैं जो आपके संतों जैसा दिखता हो? या कोई बादल, पक्षी गायन, और नदी में प्रतिबिंबित प्रकाश, और तारे? दुनिया जश्न मना रही है. संसार दुःखी नहीं है। संसार एक गीत है, एक अत्यंत सुंदर गीत, और नृत्य जारी रहता है। इस नृत्य का हिस्सा बनें और अपने स्वभाव पर भरोसा रखें।

यदि आप अपनी प्रकृति पर भरोसा करते हैं, तो धीरे-धीरे आप ब्रह्मांडीय प्रकृति के करीब आ जायेंगे। यही एक मात्र मार्ग है। आप ब्रह्मांड का हिस्सा हैं. जब आप खुद पर भरोसा करते हैं, तो आपने अपने अंदर के ब्रह्मांड पर भरोसा कर लिया है। उसी से रास्ता जाता है. उस छोटे से धागे से आप लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं। अपने आप पर भरोसा रखते हुए, आपने भगवान पर भरोसा किया है जिसने आपको बनाया है। आपने स्वयं पर भरोसा न करके, उस ईश्वर पर अविश्वास किया है जिसने आपको बनाया है।

ओशो,



**न तुम आये, न तुम हो, न तुम जाओगे।
कोई लाया, कोई रखे है, कोई ले जायेगा।**

आचार्य श्री रजनीश

मै ही भारी पड़ा जमाने पर;
तीर फिर लग गया निशाने पर,....
कितनी नाराज़ है अँधेरी रात;
एक जुगनू के टिमटिमाने पर___'''



"कर्म



परिणाम"

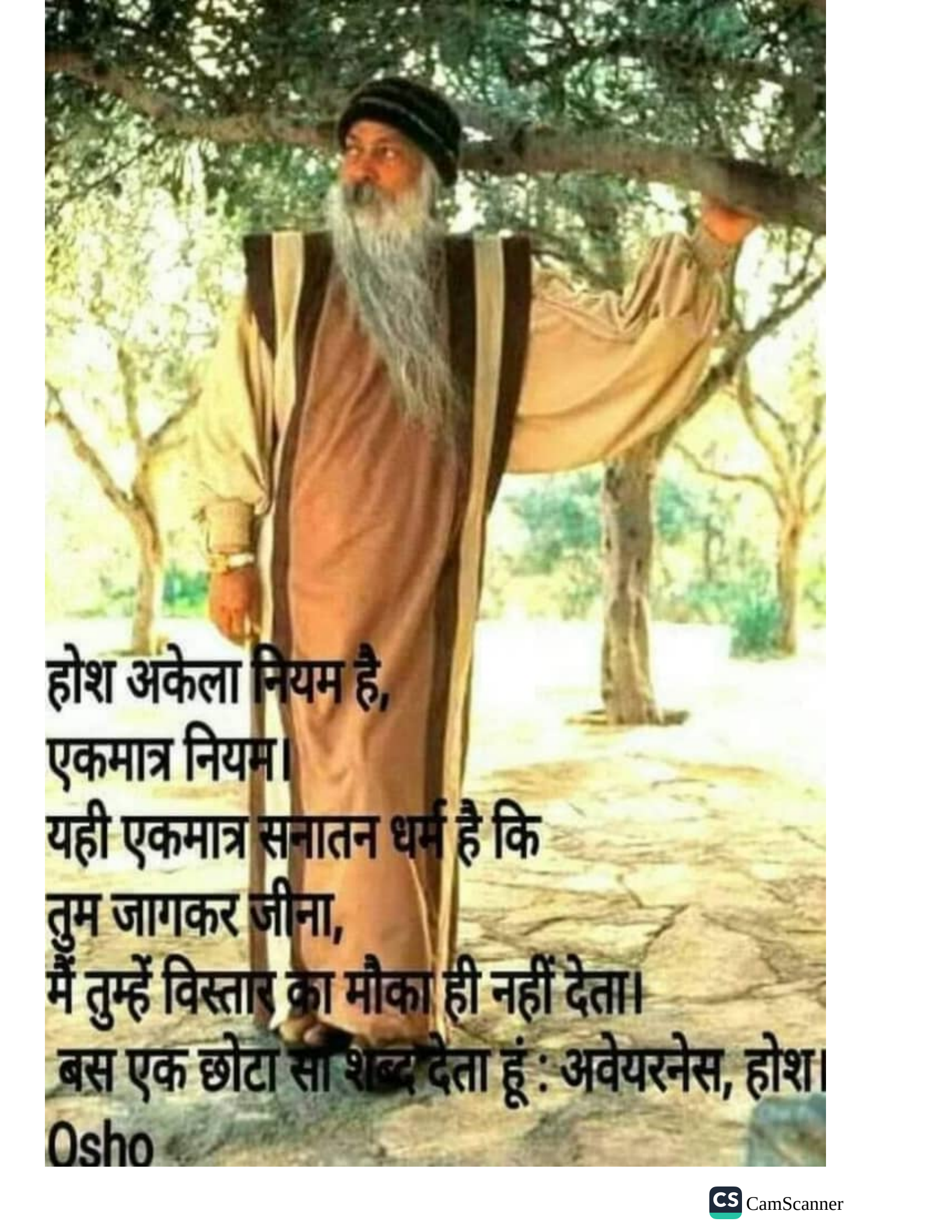
तुम्हारे मन में अगर किसी को भी दुख देने का
जरा सा भी भाव है,
तो तुम अपने लिए बीज बो रहे हो।
क्योंकि तुम्हारे मन में जो दुख देने का बीज है,
वह तुम्हारे ही मन की भूमि में गिरेगा
किसी दूसरे के मन की भूमि में नहीं गिर सकता।
बीज तो तुम्हारे भीतर है,
वृक्ष भी तुम्हारे भीतर ही होगा।
फल भी तुम्हीं भोगोगे.....!!

त्याग का अर्थ
छोड़ना नहीं है। त्याग का
अर्थ जाग कर देखना है कि
मेरा कुछ है ही नहीं,
छोड़ूँ कैसे ?

 osho universal - dhaval pamar



.. ओशो ..
अष्टावक्र : महागीता

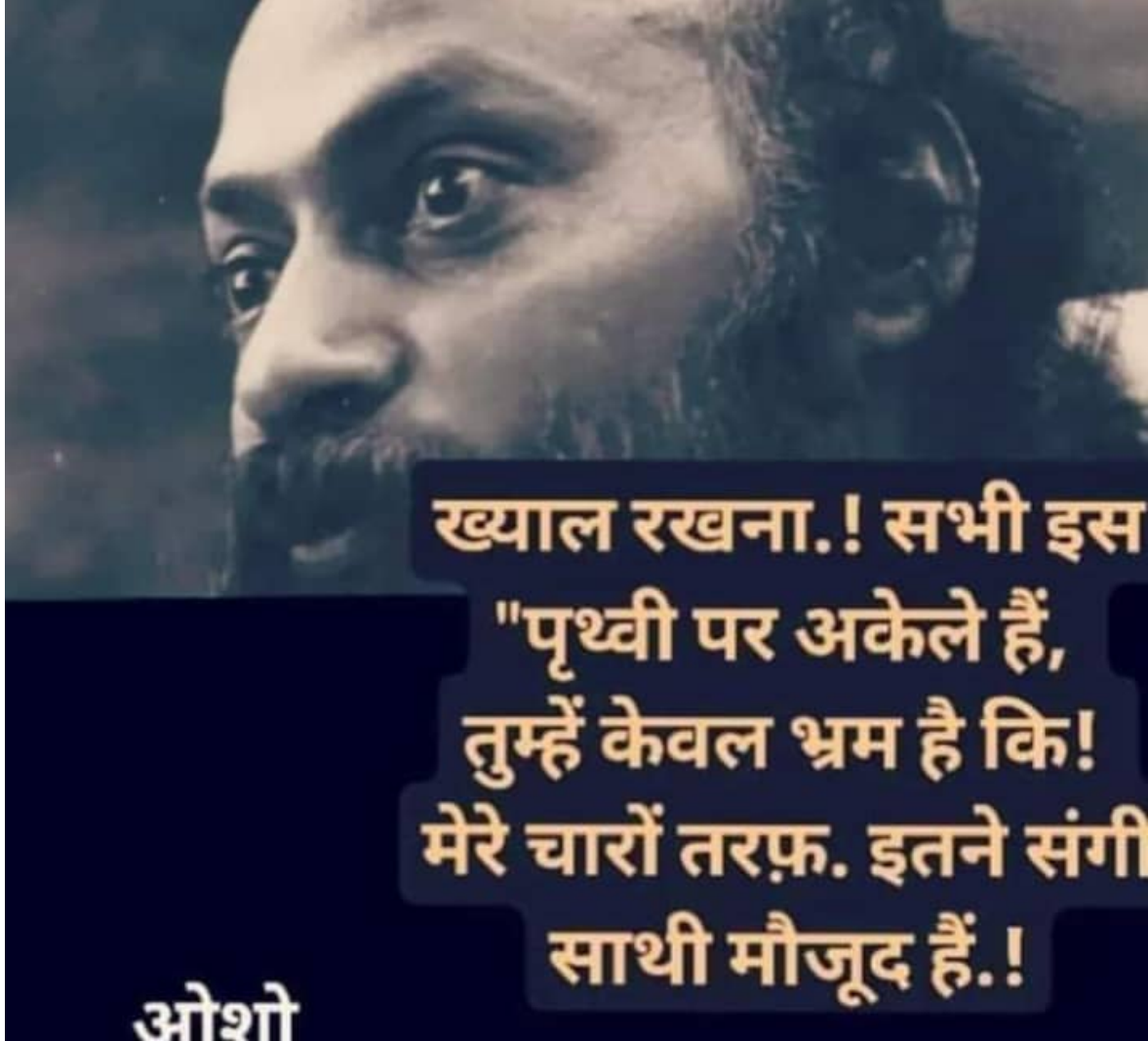


होश अकेला नियम है,
एकमात्र नियम।
यही एकमात्र सनातन धर्म है कि
तुम जागकर जीना,
मैं तुम्हें विस्तार का मौका ही नहीं देता।
बस एक छोटा सा शब्द देता हूँ : अवेयरनेस, होश।
Osho



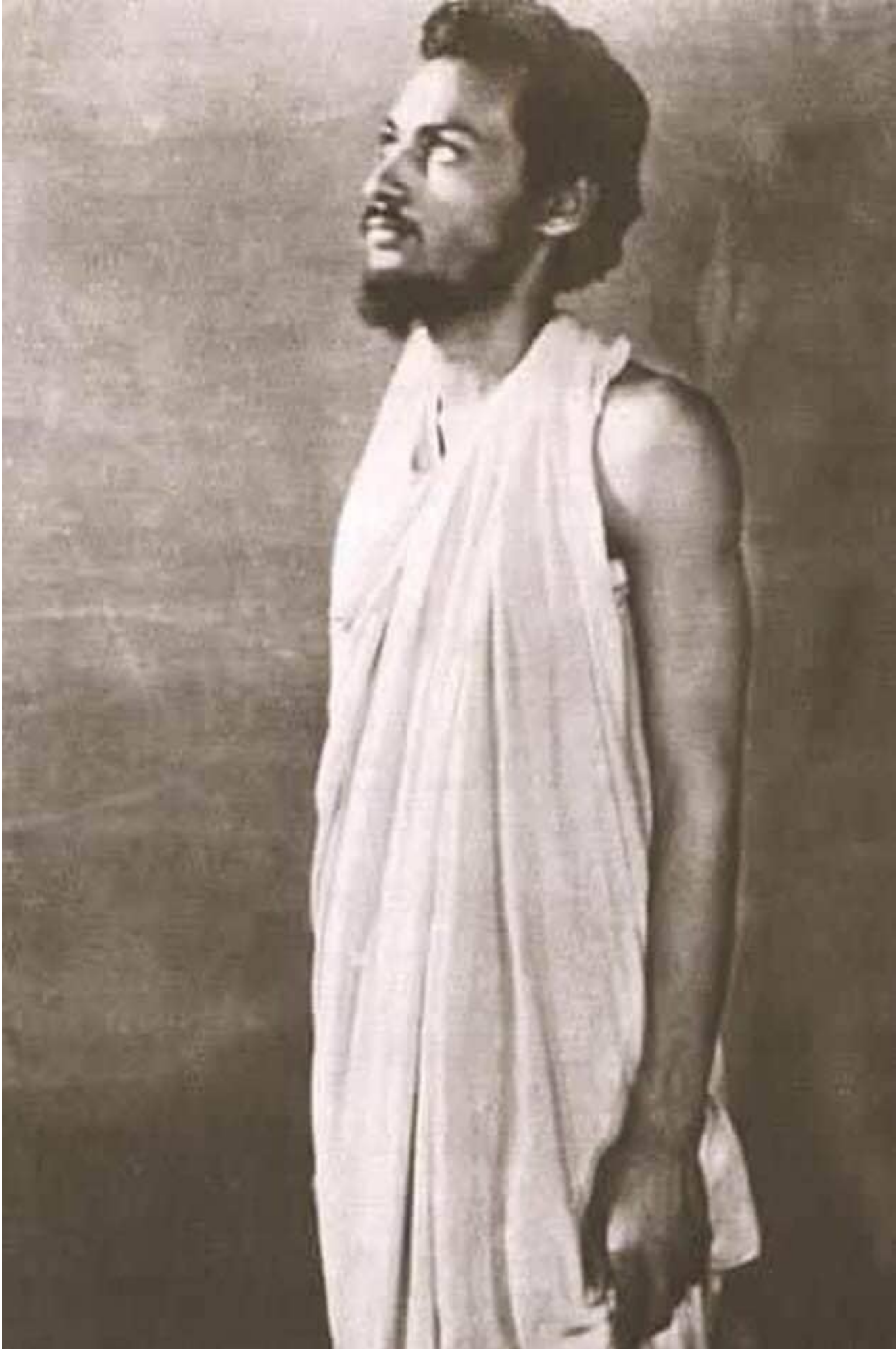


सत्य बड़ा महंगा सौदा है
जो खरीदता है फकीर हो
जाता है



ख्याल रखना.! सभी इस
"पृथ्वी पर अकेले हैं,
तुम्हें केवल भ्रम है कि!
मेरे चारों तरफ़. इतने संगी
साथी मौजूद हैं.!

ओशो





ध्यान रखो - जब तक तुम दूसरे को
प्रभावित करना चाहते हो ,
तब तक तुम अहंकार से ग्रस्त हो ।
आत्मा किसी को प्रभावित करना नहीं चाहती ।
दूसरे को प्रभावित करने में सार भी क्या है !
पानी पर बनायी हुई लकीरों जैसा है ।

मैं
तुम्हें स्वार्थी
बनाना चाहता हूँ।
यह स्वार्थ शब्द बड़ा प्यारा है।
गंदा हो गया।
गलत अर्थ लोगों ने दे दिए।
स्वार्थ का अर्थ होता है:
स्वयं का अर्थ।
अपने भीतर के अर्थ को जो जान ले,
स्व के बोध को जो जान ले,
वही स्वार्थी है।

मैं तुमसे कहता हूँ:
स्वार्थी बनो,
क्योंकि तुम्हारे स्वार्थी बनने में ही
परार्थ की संभावना है।

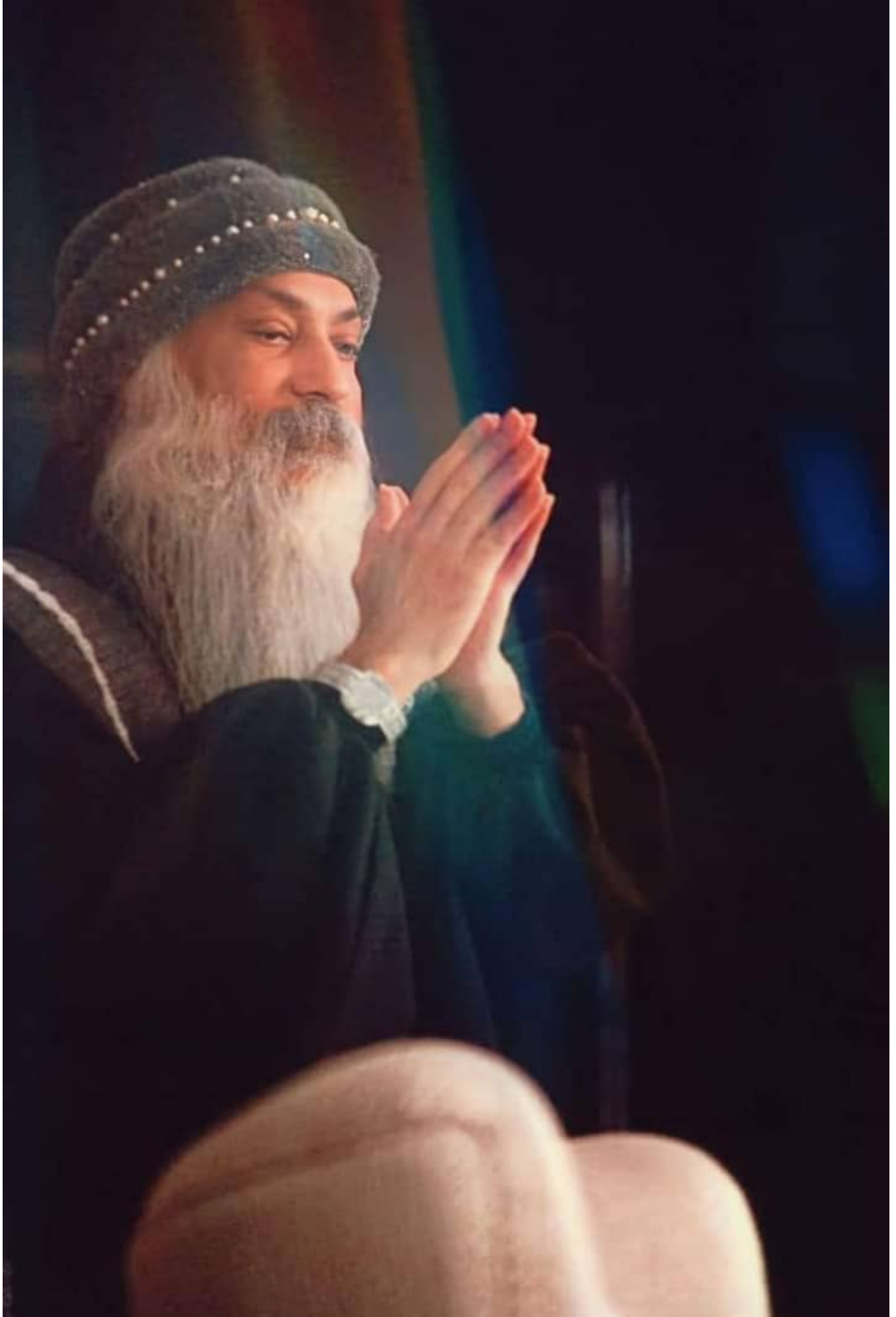


🔥 । संबोधि दिवस पर संदेश । 🔥
आचार्य श्री रजनीश



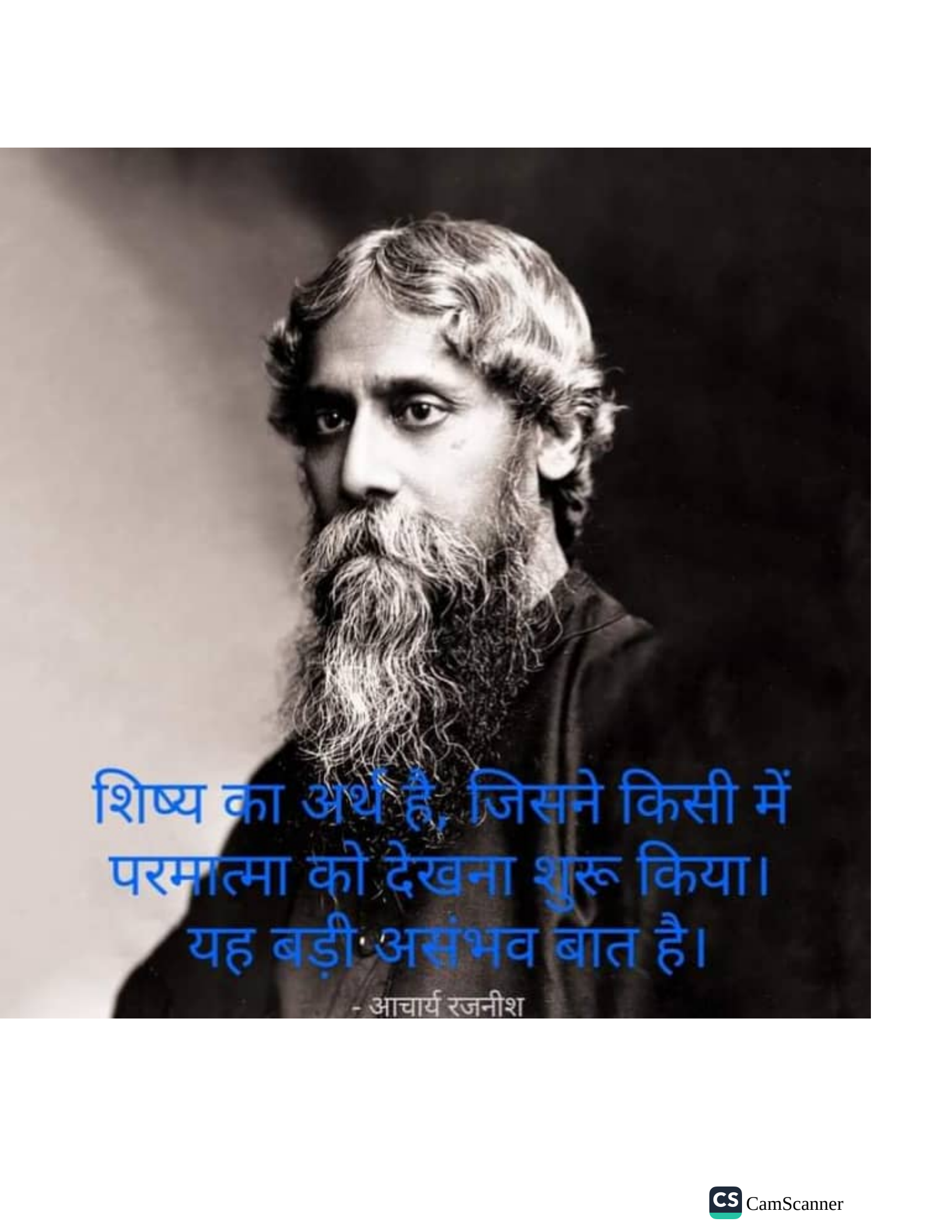
जिसको सर झुकाना आ गया उसके लिए सारा जगत परमात्मा हो जाता है, सारा जगत पर्दा हो जाता है। जिसे सर झुकाना न आया, वह लाख पूजा करे, लाख यज्ञ—हवन करें, उसके यज्ञ—हवन, उसकी पूजाएं, उसकी अकड़ को और अहंकार को और बढ़ाए चले जाते हैं, कम नहीं करते। ध्यान रखना, जो तुम्हें मिटाता हो, वह धर्म है। जो तुम्हें मजबूत करता हो वह अधर्म है। यह मेरी परिभाषा है।

📖 अथातो भक्ति जिज्ञासा, भाग -२, प्रवचन #७, ओशो 📖



महामृत्युंजय मंत्र का अर्थ

- 
- त्र्यंबकम् - तीन नेत्रोंवाले
यजामहे - जिनका हम हृदय से सम्मान
करते हैं और पूजते हैं
सुगंधिम - जो एक मीठी सुगंध के समान हैं
पुष्टिः - फलने फूलनेवाली स्थिति
वर्धनम् - जो पोषण करते हैं, बढ़ने की
शक्ति देते हैं
उर्वारुकम् - ककड़ी
इव - जैसे, इस तरह
बंधनात् - बंधनों से मुक्त करनेवाले
मृत्योः - मृत्यु से
मुक्षीय - हमें स्वतंत्र करें, मुक्ति दें
मा - न
अमृतात् - अमरता, मोक्ष



शिष्य का अर्थ है, जिसने किसी में
परमात्मा को देखना शुरू किया।
यह बड़ी असंभव बात है।

- आचार्य रजनीश



बुद्ध को ज्ञान हुआ तो पूछा किसी ने 'क्या मिला?'
तो बुद्ध ने कहा, 'मिला कुछ भी नहीं; जो मिला हुआ
था, उसकी स्मृति आ गई। जिसे कभी खोया ही नहीं,
उसे पहचान लिया।'

Osho

अहोभाव

Zorba The Buddha



Sanjeev Mishra • Follow

19h · 🌐

वैराग्य का अर्थ है, अब मुझे कुछ भी आकर्षित नहीं करता। वैराग्य का अर्थ है, अब ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसके लिए मैं कल जीना चाहूं। वैराग्य का अर्थ है, ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसके लिए मैं कल जीना चाहूं। ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे पाए बिना मेरा जीवन व्यर्थ है।

वैराग्य का अर्थ है, वस्तुओं के लिए नहीं, पर के लिए नहीं, दूसरे के लिए नहीं, अब मेरा आकर्षण अगर है, तो स्वयं के लिए है। अब मैं उसे जान लेना चाहता हूं, जो सुख पाना चाहता है। क्योंकि जिन-जिन से सुख पाना चाहा, उनसे तो दुख ही मिला। अब एक दिशा और बाकी रह गई कि मैं उसको ही खोज लूं, जो सुख पाना चाहता है। पता नहीं, वहां शायद सुख मिल जाए। मैंने बहुत खोजा, कहीं नहीं मिला; अब मैं उसे खोज लूं, जो खोजता था। उसे और पहचान लूं, उसे और देख लूं।

वैराग्य का अर्थ है, विषय से मुक्ति और स्वयं की तरफ यात्रा।

ओशो



Why do you depend on others?
You are confused and don't know what to do.
Somebody comes along and says,
'I know what to do, I will tell you what to do,' and
out of your confusion, misery and so on, you say,
'They know better than I do, I will follow them.'



अब पत्नी कुरूप है, तो यहां सुंदर और है क्या!

इस संसार में सभी तो कुरूप है। इस संसार में हर चीज तो सड़ जाती है। इस संसार में हर चीज तो कुरूप हो जाती है। सुंदरतम स्त्री भी एक दिन कुरूप हो जाती है। और जवान से जवान आदमी भी एक दिन मुर्झाता है और का हो जाता है। सुंदर से सुंदर देह भी तो एक दिन चिता पर चढ़ा देनी पड़ेगी। करोगे क्या! यहां सुंदर है क्या?

इस जगत की असारता को ठीक से पहचानो। इस जगत की व्यर्थता को ठीक से पहचानो। ताकि इसकी व्यर्थता को देखकर तुम भीतर की सीढ़ियां उतरने लगो।

सौंदर्य भीतर है, बाहर नहीं। सौंदर्य स्वयं में है। और जिस दिन तुम्हारे भीतर सौंदर्य उगेगा, उस दिन सब सुंदर हो जाता है। तुम जैसे, वैसी दुनिया हो जाती है। जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि।

तुम सुंदर हो जाओ। पत्नी को सुंदर करने की फिकर छोड़ो। तुम सुंदर हो जाओ। और तुम्हारे सुंदर होने का अर्थ, कोई प्रसाधन के साधनों से नहीं; ध्यान सुंदर करता है। ध्यान ही सत्यं शिवं सुंदरम् का द्वार बनता है।

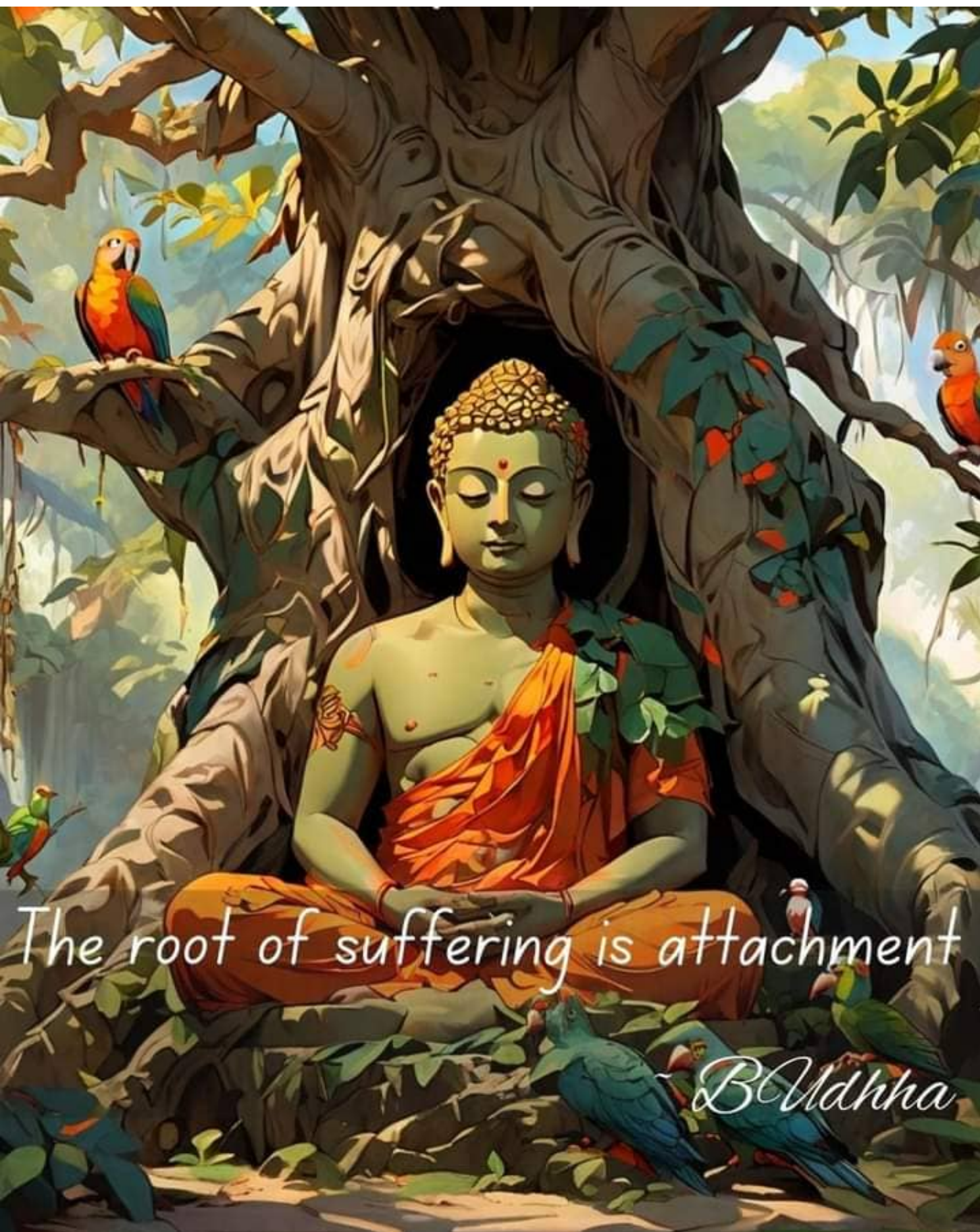




POSITIVE
INSPIRATION



ध्यान का अर्थ है सतर्कता, जागरूकता,
सचेतनता। आप जो भी करें, सचेतन रूप से
करें, यंत्रवत् नहीं।



The root of suffering is attachment

~ Buddha

जब तुम सबको स्वीकार कर
लेते हो तो तुम्हारे भीतर रूपांतरण
की प्रक्रिया शुरू होती है. तुम्हारे
भीतर की रसायन बदलती है .

क्रोध करुणा बन जाता है,
काम राम बन जाता है,

तुम्हारे भीतर
काँटे फूलों की
तरह खिलने
लगते हैं ।

ओशो



ओ
शो



सुन भई
साधो—
(प्रवचन-16)

परमात्मा तुम्हारे भीतर है। तुम परमात्मा
हो। तुम्हारा होना ही परमात्मा का होना
है। तुम परमात्मा का एक रूप हो। तुम
परमात्मा की एक लहर, एक तरंग हो।
तुम परमात्मा की एक भावदशा हो। तुम
परमात्मा का एक संगठन हो।
पिंड में ब्रह्मांड मौजूद है। आत्मा में
परमात्मा मौजूद है। व्यक्ति में समष्टि
मौजूद है।
होना—बीड़ंग, और करना—डुड़ंग: यह
फर्क बहुत नाजुक है।

Varanasi Ganga Aarti is a Soul Stirring Experience 🥺❤️





ध्यान रहे,
पुजारी परमात्मा से
जितने दूर रह जाते हैं,
उतना शायद ही कोई रह पाता हो।
क्योंकि पुजारी को प्रयोजन ही नहीं रह जाता।
उसका मतलब कुछ और है।
यह उसके लिए धंधा है।

उपासना आप उधार नहीं करवा सकते,
आपको ही करनी पड़ेगी।

HOPE

और ऐसी उपासना का कोई मूल्य नहीं है
कि मंदिर में तो परमात्मा के निकट होते हों
और मंदिर के बाहर निकलते ही
परमात्मा खो जाता हो।
ऐसी उपासना से क्या होगा?

अगर वह है, तो सब जगह है।
और अगर नहीं है, तो कहीं भी नहीं है;

मंदिर में भी नहीं है।
अगर नहीं है, तो सब मंदिर व्यर्थ हैं।
और अगर है, तो सारी पृथ्वी,
सारा जगत उसका
मंदिर है।

आचार्य श्री रजनीश Osho
गीतादर्शन अ.9.प्र.5/104॥ देवी या आंसुरी धारा॥

जो भी हो जीवन में उसको स्वीकार कर लेना और कहना- ऐसा जीवन का स्वभाव है। तुम धीरे-धीरे पाओगे तुम्हारी सब अशांति खो गई।

अशांत होने का मतलब ही यह होता है कि तुम स्वीकार नहीं करते। अशांत होने का मतलब यह होता है कि तुम कहते हो, कुछ इससे भिन्न हो सकता था। अशांत होने का मतलब है कि तुम कहते हो कि अभी कुछ दिन और जवान रह सकता था, कि इससे सुंदर स्त्री मिल सकती थी, कि इससे अच्छा लड़का हो सकता था, कि इससे बड़ा मकान हो सकता था, कि लोग इससे ज्यादा मेरा सम्मान करते। तुम यह मान कर चलते हो, इससे भिन्न हो सकता था; तो तुम्हारे जीवन में अशांति रहेगी।

तथाता का अर्थ है, जो हो गया वही हो सकता था। तुमने जो स्त्री चुनी है पत्नी के लिए, उसी स्त्री को तुम चुन सकते थे इसलिए चुनी है। यह कुछ अकारण नहीं हो गया। तुम जिस बच्चे को जन्म दे सकते थे उसको ही जन्म दिया है। वह कुछ अकारण आसमान से नहीं टपक गया। इसलिए अब रोज छाती मत पीटो, कि यह बुद्धू है, कि बेईमान है, कि चोर है।

तुमसे चोर पैदा हो सकता था, चोर पैदा हो गया। तुम्हें जो मिल सकता था वह मिल गया है। तुम्हें जो नहीं मिल सकता था वही नहीं मिला। तथाता का अर्थ है, अन्यथा की कोई आकांक्षा नहीं है। जैसा हो गया है उससे मैं राजी हूँ। क्योंकि अन्यथा हो ही नहीं सकता।

तब तुम कैसे अशांत होओगे? तब कैसा तनाव? तब तुम्हें ध्यान करने की क्या जरूरत?

बुद्ध ने कहा है, तथाता को तुम जो राजी हो गए, तो ध्यान व्यर्थ है।

क्या करोगे ध्यान करके! कैसी पूजा? कैसी प्रार्थना? क्या करना है?

सब अशांति से बचने के मार्ग हैं। लेकिन तथाता तो अशांति को जड़ से काट देती है, बचने का कोई सवाल ही नहीं है। तथाता परम-स्थिति है।

ओशो

[#oshohindispeech](#) [#oshohindiquotes](#)

[#oshointernational](#) [#oshomeditation](#) [#ओशो](#) [#oshozen](#)

[#meditation](#) [#oshoquotes](#) [#oshozentarot](#) [#oshohindi](#)



**OSHO Acharya Rajneesh Real
Mystic**



24m · 🌐

तथाता का अर्थ है। इस जगत में ऐसे रहना जैसे तुम अकेले हो। न कुछ झगड़ने को, न कुछ कलह करने को, न कोई द्वंद्व, न कोई संघर्ष। तथाता का अर्थ है, जैसी चीजें हो जाएँ वैसी स्वीकार कर लेना।

मैंने सुना है, एक झेन फकीर रिंझाई एक रास्ते से गुजर रहा था। एक आदमी आया और उसने जोर से लात उसकी पीठ में मारी। तो फकीर गिर गया, और वह आदमी तो भाग कर चला गया। फकीर के साथ एक मित्र और थे। रिंझाई उठा और जहाँ से बात टूट गई थी, वहीं से उसने फिर शुरू कर दी, वह फिर चलने लगा।

वह आदमी बहुत हैरान हुआ, जो साथ था। उसने कहा, "सुनिए, मैं तो भूल ही गया कि हम क्या बात कर रहे थे। और अब मैं उसमें उत्सुक भी नहीं हूँ। पहले मुझे यह बताइए, यह क्या हुआ? यह आदमी आपको लात मार कर गिरा गया, आपने कुछ कहा नहीं!"

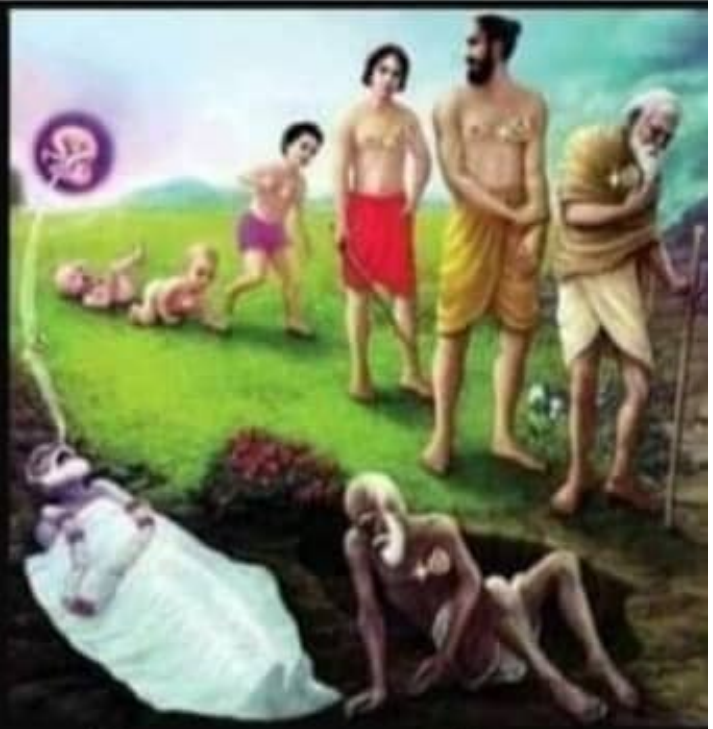
रिंझाई ने कहा, "यह उसकी समस्या है। इससे अपने को क्या लेना-देना?"

यह उसकी कुछ परेशानी है भीतरी, वह जाने! इतना पक्का है कि कोई लात मारेगा तो बूढ़ा आदमी हूँ, शरीर गिर जाएगा। ऐसा वस्तुओं का स्वभाव है। वह जवान था, मैं बूढ़ा हूँ। उसने लात मारी, मैं गिर गया। लात क्यों मारी यह वह सोचे, यह उसकी चिंता है। वह अपनी रात खराब करे। इससे मेरा कुछ लेना-देना नहीं। इतना मैं कहता हूँ कि शरीर कमजोर हो गया। शरीर कमजोर हो जाता है।"

ऐसी भाव-दशा का नाम तथाता है। इसलिए बुद्ध को 'तथागत' नाम दिया है। 'तथागत' का अर्थ है, जिसका पूरा जीवन तथाता हो गया। तुम कुछ भी कहो, वे कहेंगे हाँ। ऐसा वस्तुओं का स्वभाव है। और अन्यथा करने की कोई आकांक्षा नहीं है। जैसा है वैसा पूर्ण स्वीकृत। टोटल एक्सेप्टेंस तथाता है।

जो भी हो जीवन में उसको स्वीकार कर लेना और कहना- ऐसा जीवन का स्वभाव है। तुम धीरे-धीरे पाओगे तुम्हारी सब अशांति खो गई।

देह धरे का दंड है,
सब काहू को होय।
ज्ञानी भुगतै ज्ञान से,
मूरख भुगतै रोय।।'

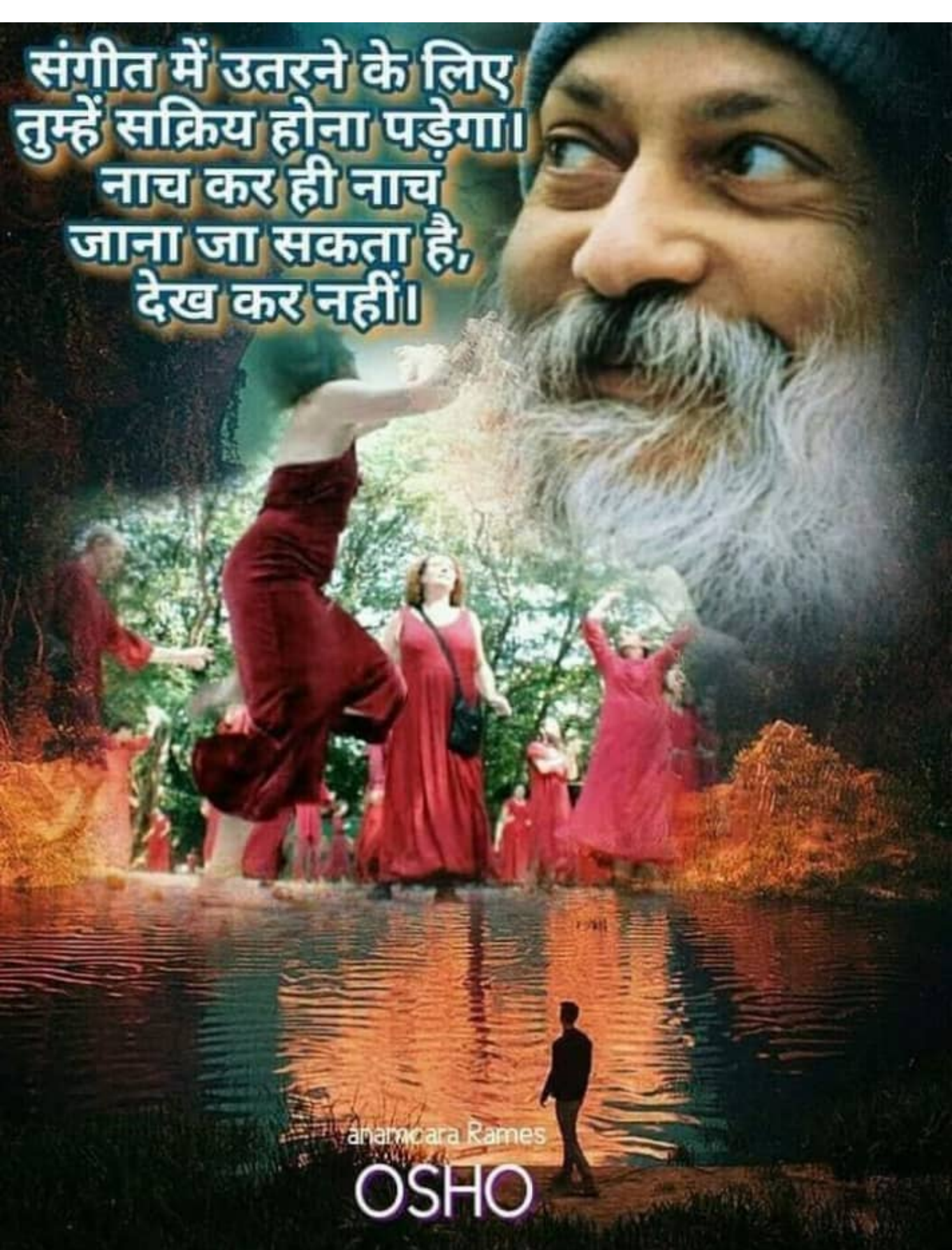


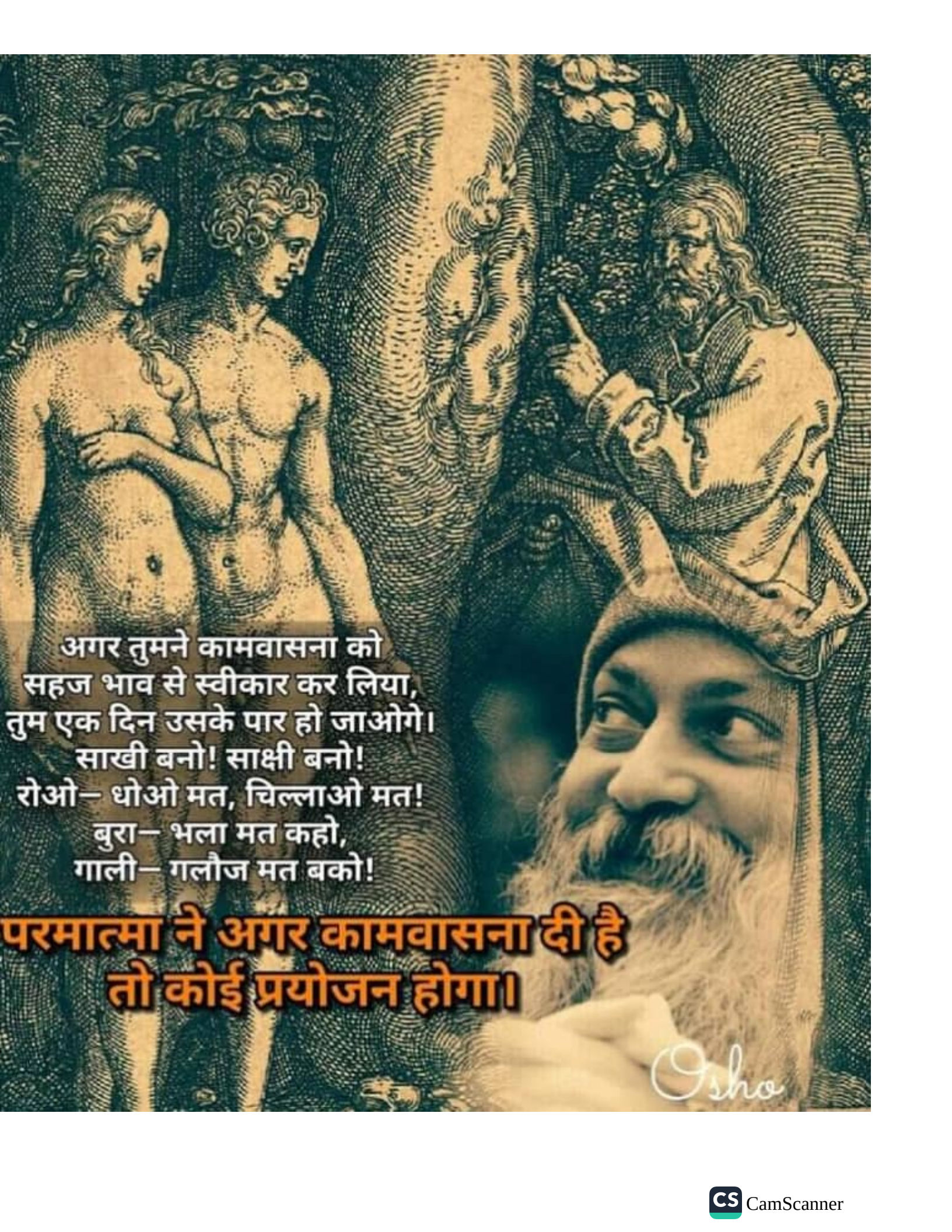
शरीर धारण करना सजा है क्योंकि शरीर बहुत नाजुक है, इसलिए इसमें रोग लगते हैं, चोट लग जाती है और अंग खराब हो जाते हैं, इसको सुरक्षित रखने के लिए खिलाना-पिलाना, नहलाना-धुलाना आदि पड़ता है परंतु फिर भी यह बूढ़ा हो जाता है, और अपने किए हुए कर्मों के अनुसार सुख-दुख भोगने पड़ते हैं। ज्ञानी व्यक्ति तो यह जानता है कि जो कुछ मेरे साथ हो रहा है, वह सब मेरे किए कर्मों का फल है, और मैं शरीर नहीं आत्मा हूं, इसलिए वह शांत बना रहता है जबकि अज्ञानी व्यक्ति को यह ज्ञान नहीं होता है इसलिए वह दुखी रहता है।

श्रेष्ठ पुरुष
वह है,
जिसका
मन ,
वासनाओं पर
इंद्रियों पर
वश
पा लेता



संगीत में उतरने के लिए
तुम्हें सक्रिय होना पड़ेगा।
नाच कर ही नाच
जाना जा सकता है,
देख कर नहीं।





अगर तुमने कामवासना को
सहज भाव से स्वीकार कर लिया,
तुम एक दिन उसके पार हो जाओगे।
साखी बनो! साक्षी बनो!
रोओ— धोओ मत, चिल्लाओ मत!
बुरा— भला मत कहो,
गाली— गलौज मत बको!

**परमात्मा ने अगर कामवासना दी है
तो कोई प्रयोजन होगा।**

Osho

तंत्र को दृष्टि बिल्कुल उलटी है।
तंत्र कहता है कि अगर स्त्री-पुरुष के बीच
आकर्षण है, तो इस आकर्षण को दिव्य बनाओ।
इससे भागो मत, इसको पवित्र करो।
अगर कामवासना इतनी गहरी है तो
इससे तुम भाग सकोगे भी नहीं।
तो इस गहरी कामवासना को ही
क्यों न परमात्मा से जुड़ने का मार्ग बनाओ।

THROUGH
ANTRA



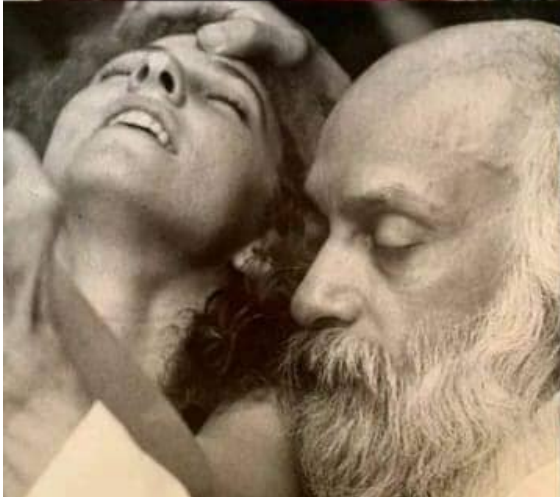
संभोग से समाधि की ओर-प्र.०६

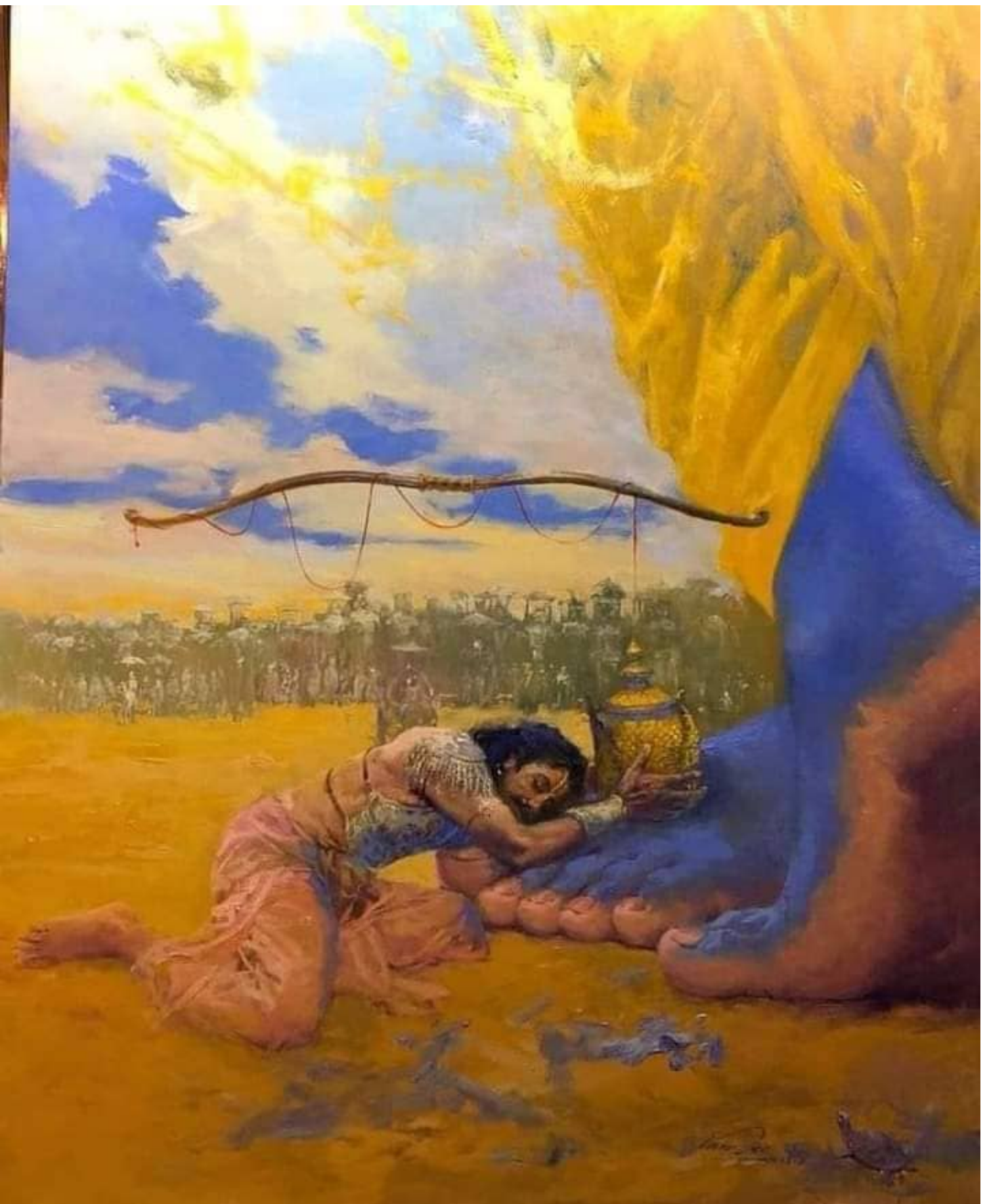
anamcara Ramesh

Isho

पहाड़ी पर बैठकर तप करना
सरल है, लेकिन परिवार में सब
के बीच रहकर धीरज बनाये
रखना कठिन है और यही तप
है।

ओशो





**Sanjeev Mishra**

1h · 🌐



कृष्ण एक और बात कहते हैं कि करोड़ लोग प्रयत्न करें, तो कभी एक मुझे उपलब्ध होता है।

इसका क्या अर्थ होगा? इसे भी ठीक से समझ लें।

जो लोग भी प्रभु की दिशा में यात्रा शुरू करते हैं, करोड़ में से एक ही समर्पण करता है। करोड़ में से एक यात्रा करता है। अगर करोड़ यात्रा करें, तो एक समर्पण करता है। बाकी लोग संकल्प करते हैं, समर्पण नहीं। बाकी लोग कहते हैं, हम प्रभु को पाकर रहेंगे। तू कहां है, हम खोजकर रहेंगे। हम अपनी पूरी ताकत लगाएंगे। जीवन लगा देंगे दांव पर, लेकिन तुझे पाकर रहेंगे।

कभी एक आदमी ऐसा होता है, जो कहता है कि मेरी क्या सामर्थ्य! मैं असहाय हूं। मेरी कोई शक्ति नहीं है। मैं तुझे कैसे खोज पाऊंगा! अगर तू ही मुझे खोज ले, तो शायद घटना घट जाए। मैं तुझे कैसे खोज पाऊंगा! मेरी शक्ति बड़ी छोटी है। एक छोटी-सी बूंद हूं। न मालूम किस रेगिस्तान में खो जाऊं! अगर सागर ही मुझ तक आ जाए, तो ठीक। अन्यथा मैं सागर को खोज पाऊं, इसकी कोई संभावना नहीं है।

जो लोग प्रभु की खोज पर निकलते हैं, वे भी अस्मिता को, अहंकार को लेकर निकलते हैं। वे कहते हैं, हम प्रभु को पाकर रहेंगे। साधना करेंगे। योग करेंगे। आसन करेंगे। ध्यान करेंगे। लेकिन पीछे वह मैं खड़ा रहेगा।। ओशो

गीता-दर्शन-भाग-३/अध्याय ७



facebook

**Swami Dev Sundar**

3h · 🌐

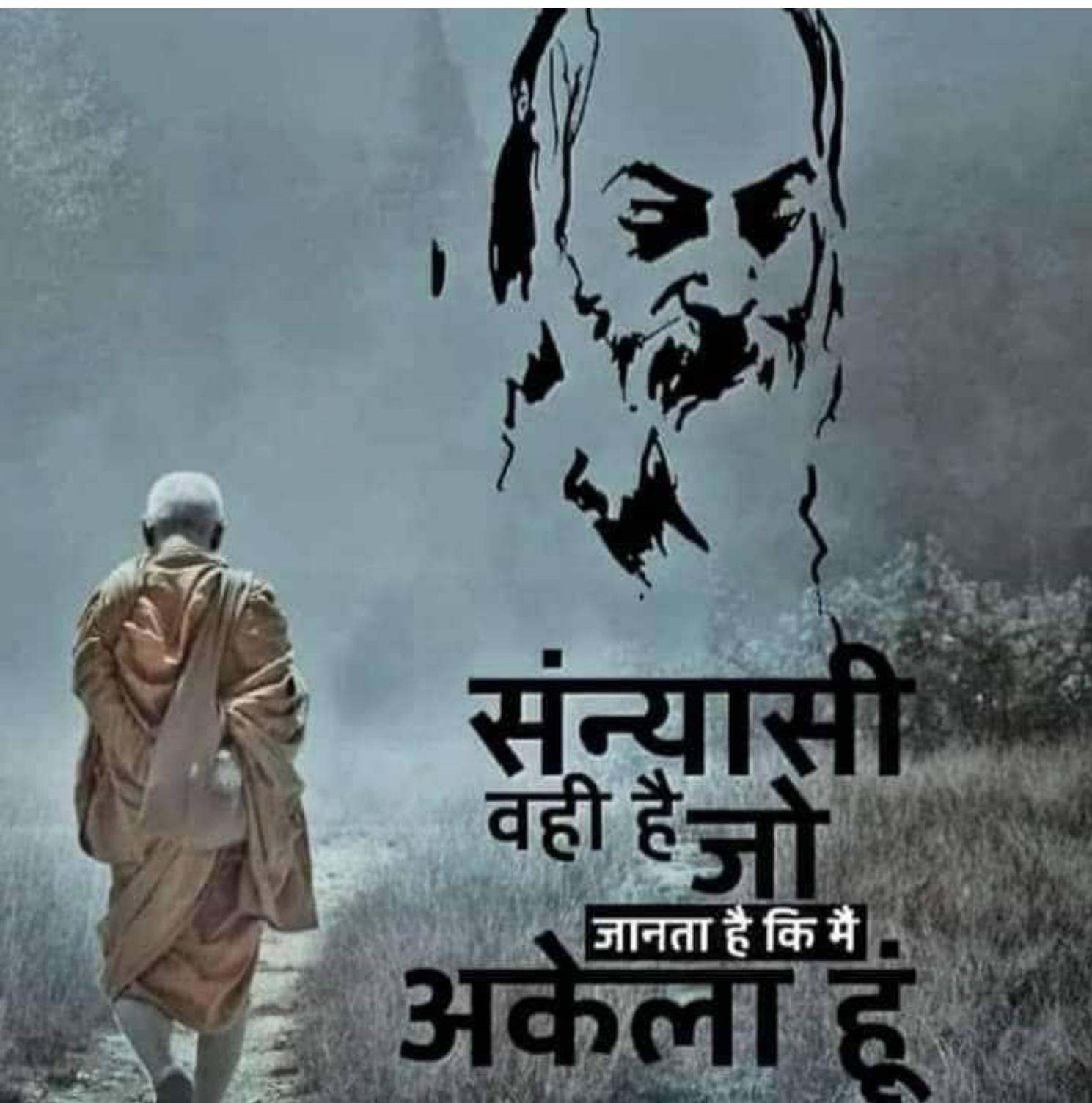
साथ ही ध्यान रहे, अब तक संन्यास सदा ही गुरु से बंधा रहा है। कोई गुरु दीक्षा देता है। संन्यास कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे कोई दे सके। संन्यास ऐसी चीज है जो लेनी पड़ती है, देता कोई भी नहीं। या कहना चाहिए कि परमात्मा के सिवाय और कौन दे सकता है संन्यास? अगर मेरे पास कोई आता है और कहता है कि मुझे दीक्षा दे दें, तो मैं कहता हूं, मैं कैसे दीक्षा दे सकता हूं, मैं सिर्फ गवाह हो सकता हूं, विटनेस हो सकता हूं।

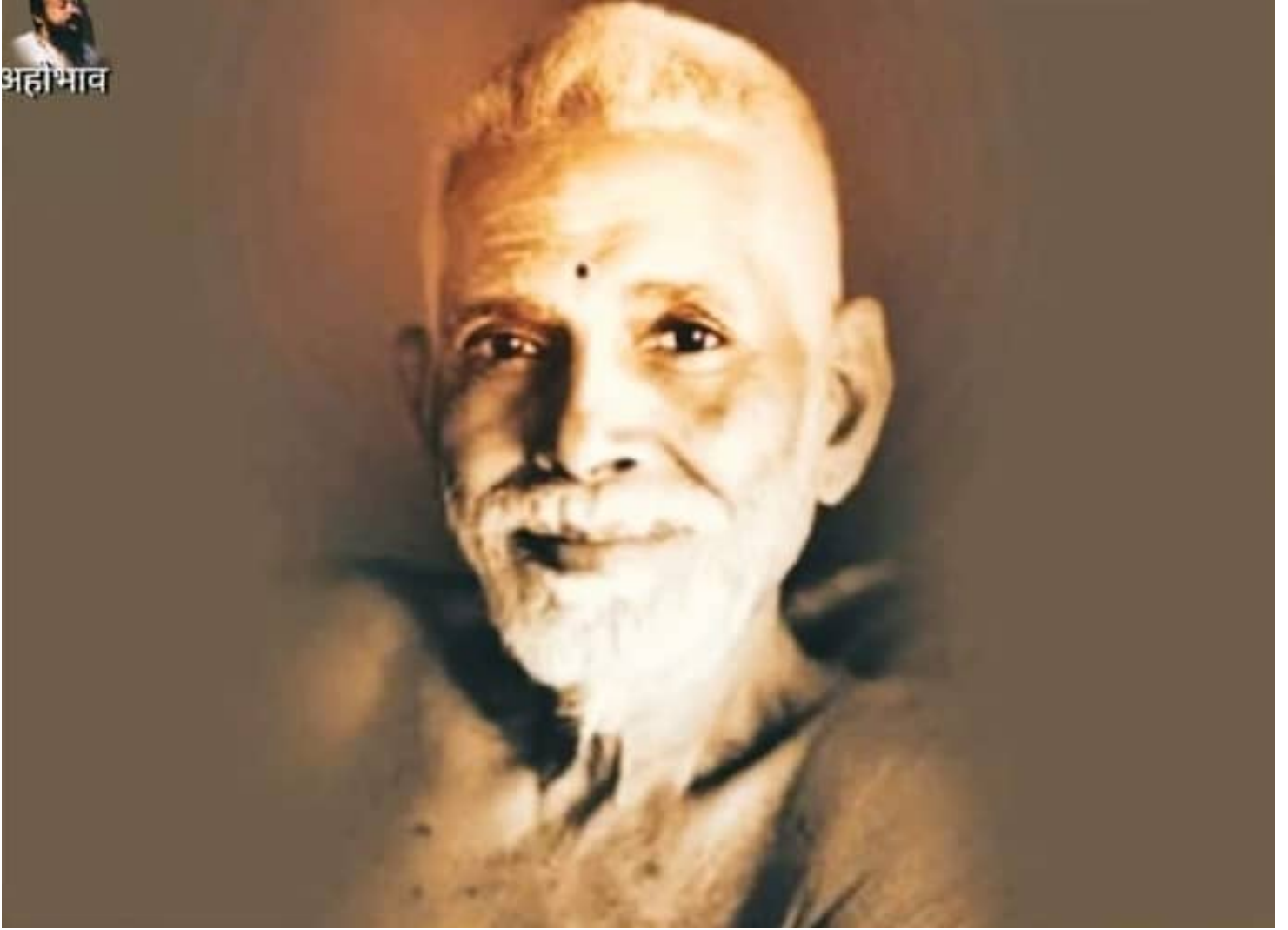
दीक्षा तो परमात्मा से ले लो, दीक्षा तो परम सत्ता से ले लो, मैं गवाह भर हो सकता हूं, एक विटनेस हो सकता हूं कि मैं मौजूद था, मेरे सामने यह घटना घटी। इससे ज्यादा कोई अर्थ नहीं होता। गुरु से बंधा हुआ संन्यास सांप्रदायिक हो ही जाएगा। गुरु से बंधा हुआ संन्यास मुक्ति नहीं ला सकता, बंधन ले जाएगा।

संन्यास उनका परमात्मा के बीच का संबंध होगा। इसके लिए कोई उत्सव नहीं किया जाएगा संन्यास देने के लिए, नहीं तो फिर छोड़ते वक्त भी उलटा उत्सव करना पड़ता है।”

ओशो

Krishna: The Man and His Philosophy, प्रवचन 22





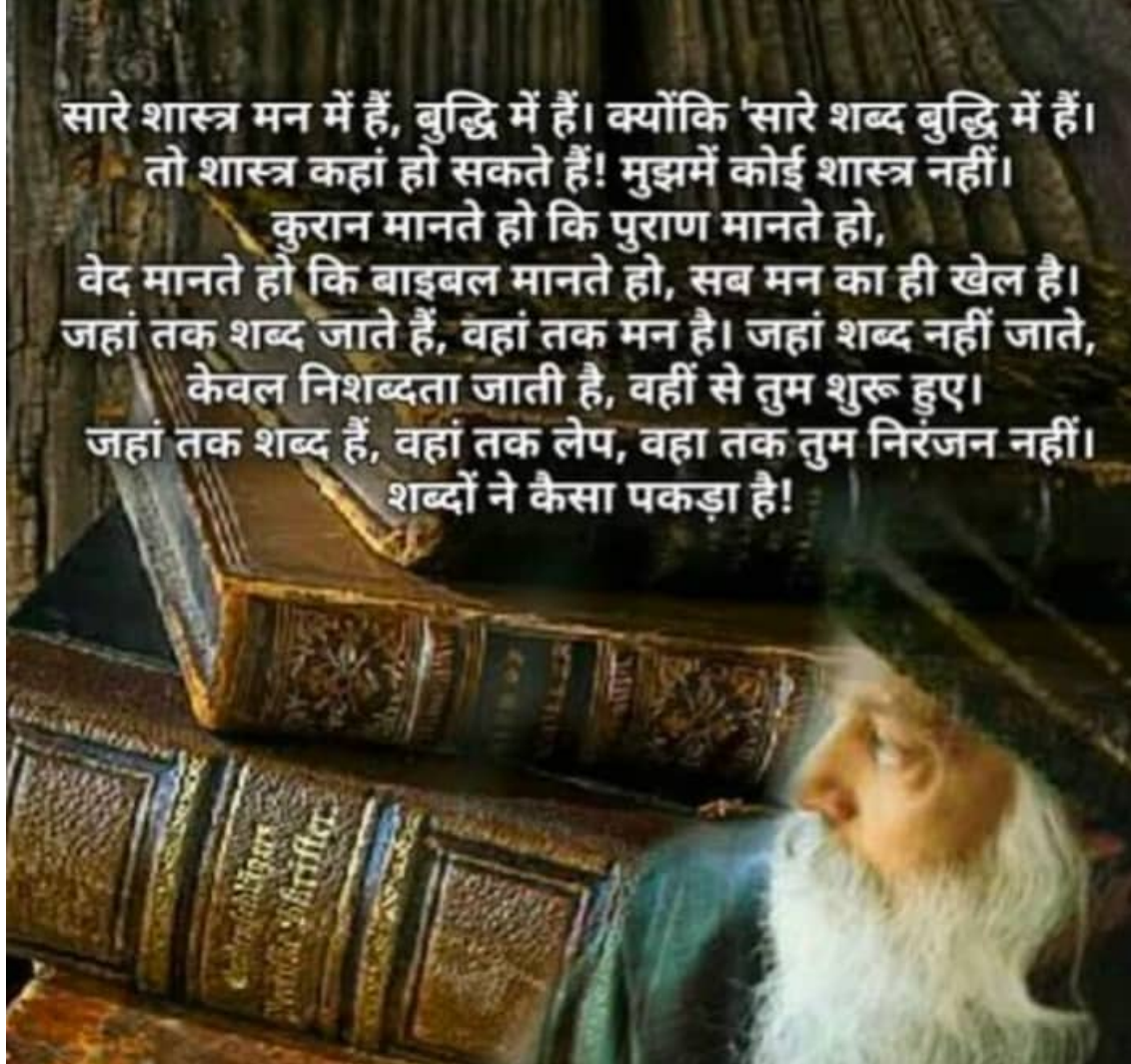


महर्षि रमण के आश्रम के पास के एक गाव में एक अध्यापक रहता था । प्रतिदिन के कौटुम्बिक कलह से वह त्रस्त हो गया था । आखिर उसने आत्महत्या करने की सोची, ताकि वह रोज-रोज की अशान्ति से मुक्त हो सके । किन्तु आत्महत्या का निर्णय लेना इतना आसान नहीं था ।

मनुष्य को अपने परिवार के भविष्य की ओर ध्यान देना होता है । ऐसे उहापोह में पड़ा वह व्यक्ति महर्षि रमण के आश्रम में पहुँचा और उसने उन्हें प्रणाम करके सारी बात बताकर आत्महत्या के बारे में उनकी राय जाननी चाही । महर्षि उस समय आश्रमवासियों के भोजन के लिए बड़ी सावधानी से पत्तलें बना रहे थे । वे चुपचाप उसकी बातें सुनने लगे । उस व्यक्ति ने सोचा कि शायद निर्णय लेने में स्वामीजी को विलम्ब हो रहा है । पत्तल बनाने में स्वामीजी के परिश्रम और तल्लीनता को देख उसे आश्चर्य हुआ । उसने आखिर पूछ ही लिया, "भगवन् ! आप इन पत्तलों को इतने परिश्रम और लगन से बना रहे हैं, लेकिन थोड़ी देर बाद भोजन के उपरान्त ये कूड़े में फेंक दिये जाएँगे ।"

महर्षि मुसकराते हुए बोले, "आप ठीक कहते हैं, लेकिन किसी वस्तु का पूरा उपयोग हो जाने के बाद उसे फेंकना बुरा नहीं । बुरा तो तब कहा जाएगा, जब उसका उपयोग किये बिना अच्छी अवस्था में ही कोई फेंक दे । आप तो सुविज्ञ हैं, मेरे कहने का आशय तो समझही गये होंगे ।" इन शब्दों से अध्यापक महोदय की समस्या का समाधान हो गया । इस परिस्थिती में भी उनमें जीने का उत्साह आ गया और उन्होंने आत्महत्या करण्याचा विचार त्याग दिया ।

सारे शास्त्र मन में हैं, बुद्धि में हैं। क्योंकि 'सारे शब्द बुद्धि में हैं।
तो शास्त्र कहाँ हो सकते हैं! मुझमें कोई शास्त्र नहीं।
कुरान मानते हो कि पुराण मानते हो,
वेद मानते हो कि बाइबल मानते हो, सब मन का ही खेल है।
जहाँ तक शब्द जाते हैं, वहाँ तक मन है। जहाँ शब्द नहीं जाते,
केवल निशब्दता जाती है, वहीं से तुम शुरू हुए।
जहाँ तक शब्द हैं, वहाँ तक लेप, वहाँ तक तुम निरंजन नहीं।
शब्दों ने कैसा पकड़ा है!



facebook



Like Reply



Write a comment...

**Anamcara Rames**

1h · 🌐

अंधकार महाशांति है।
और इसलिए हम अंधकार से डरते हैं,
क्योंकि हम कोई भी शांति नहीं चाहते।
जो भी शांति चाहेगा,
वह अंधकार से नहीं डरेगा,
अंधकार को प्रेम करने लगेगा।

जो जितनी ज्यादा अशांति से भरा होगा,
उतना अंधकार से डरेगा,
भयभीत होगा।

मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ,
जो अंधकार में सो भी नहीं सकते!
रात को प्रकाश जलाकर ही सोएंगे।
यह अशांति की आखिरी सीमा है।



आचार्य श्री रजनीशOsho
गीतादर्शनअ.9.प्र.7/106
॥ मैं ओंकार हूँ ॥

अंधकार महाशांति है।
और इसलिए हम अंधकार से डरते हैं,
क्योंकि हम कोई भी शांति नहीं चाहते।
जो भी शांति चाहेगा, वह अंधकार से नहीं डरेगा,
अंधकार को प्रेम करने लगेगा।
जो जितनी ज्यादा अशांति से भरा होगा,
उतना अंधकार से डरेगा, भयभीत होगा।



मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ,
जो अंधकार में सो भी नहीं सकते!
रात को प्रकाश जलाकर ही सोएंगे।
यह अशांति की आखिरी सीमा है।

**Sanjeev Mishra**

1d · 🌐



मैं तुमसे एक कहानी कहता हूँ एक बहुत सुंदर कहानी। इसे जितना संभव हो सके उतनी गहराई से सुनो। एक महिला और उसका छोटा सा बच्चा समुंद्र की लहरों पर अठखेलियां कर रहे थे, और पानी का बहाव काफी तेज था। उसने अपने पुत्र की बांह मजबूती से पकड़ रखी थी और वे प्रसन्नतापूर्वक जलक्रीड़ा में संलग्न थे, कि अचानक पानी की एक विशाल भयानक तरंग उनके सामने प्रकट हुई।

उन्होंने भयाक्रांत होकर उसको देखा, ज्वार की यह लहर उनके ठीक सामने ही ऊपर और ऊपर उठती चली गई, और उनके ऊपर छा गई। जब पानी वापस लौट गया तो वह छोटा बच्चा कहीं दिखाई नहीं पड़ा। शोकाकुल मां ने मेल्विन, मेल्विन तुम कहां हो? मेल्विन! चिल्लाते हुए पानी में हर तरफ उसको खोजा।

जब यह स्पष्ट हो गया कि बच्चा खो गया है, उसे पानी सागर में बहा ले गया है, तब पुत्र के वियोग में व्याकुल मां ने अपनी आंखें आकाश की ओर उठाई और प्रार्थना की, ओह, प्रिय और दयालु परम पिता, कृपया मुझ पर रहम कीजिए और मेरे प्यारे से बच्चे को वापस कर दीजिए।

आपसे मैं आपके प्रति शाश्वत आभार का वादा करती हूँ। मैं वादा करती हूँ कि मैं अपने पति को कभी धोखा नहीं दूंगी; मैं अपना आयकर जमा करने में कभी धोखा नहीं करूंगी; मैं अपनी सास के प्रति दयालु रहूंगी; मैं सारे व्यसन छोड़ दूंगी! सभी गलत शौक, बस केवल कृपा करके मेरे पुत्र को लौटा दीजिए।'

बस तभी पानी की एक और दीवार प्रकट हुई और उसके सिर पर गिर पड़ी। जब पानी वापस लौट गया तो उसने अपने छोटे से बेटे को वहां पर खड़ा हुआ देखा। उसने उसको अपनी छाती से लगाया, उसको चूमा और अपने से चिपटा लिया।

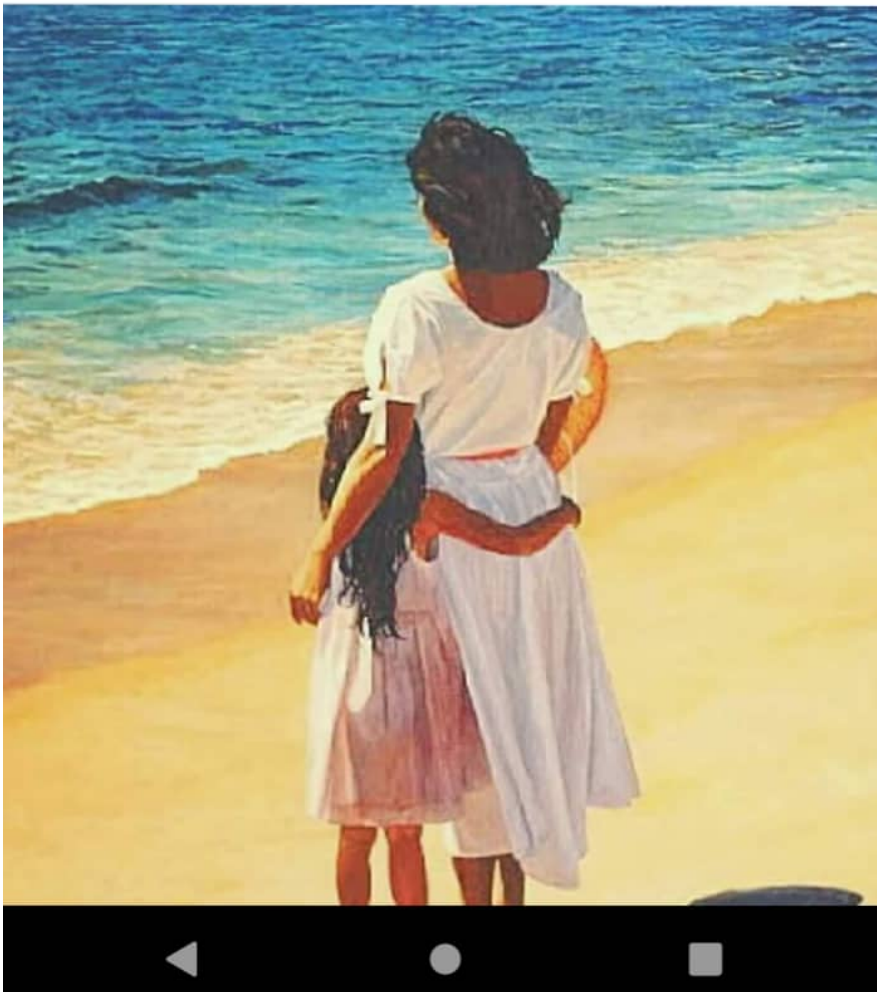
फिर उसने उसे एक क्षण को देखा और एक बार फिर अपनी निगाहें स्वर्ग की ओर उठा दीं। ऊपर की ओर देखते हुए उसने कहा, लेकिन उसने हैट लगा रखा था। मन यही है, बच्चा वापस आ गया है, लेकिन हैट खो गया है। अब वह इसलिए प्रसन्न नहीं है कि बेटा लौट आया है, बल्कि अप्रसन्न है कि हैट खो गया था—फिर शिकायत।

फिर उसने उसे एक क्षण को देखा और एक बार फिर अपनी निगाहें स्वर्ग की ओर उठा दीं। ऊपर की ओर देखते हुए उसने कहा, लेकिन उसने हैट लगा रखा था। मन यही है, बच्चा वापस आ गया है, लेकिन हैट खो गया है। अब वह इसलिए प्रसन्न नहीं है कि बेटा लौट आया है, बल्कि अप्रसन्न है कि हैट खो गया था—फिर शिकायत।

क्या तुमने कभी देखा है कि तुम्हारे मन के भीतर यही हो रहा है या नहीं? सदा ऐसा ही हो रहा है। जीवन तुमको जो कुछ भी देता है उसके लिए तुम धन्यवाद नहीं देते। तुम बार—बार हैट के बारे में शिकायत कर रहे हो। तुम लगातार उसी को देखते जाते हो जो नहीं हुआ है, उसको नहीं देखते जो हो चुका है। तुम सदैव देखते हो और इच्छा करते हो और अपेक्षा करते हो, लेकिन तुम कभी आभारी नहीं होते।

तुम्हारे लिए लाखों बातें घटित हो रही हैं, लेकिन तुम कभी आभारी नहीं होते। तुम सदैव चिड़चिड़ाहट और शिकायत से भरे रहते हो, और सदा ही तुम हताशा की अवस्था में रहते हो। -

ओशो



**Naye bharat ke khoj**

...



15m · 🌐

एक घटना कबीर के जीवन में है। एक बाजार से गुजरते हैं। एक बच्चा अपनी मां के साथ बाजार आया है। मां तो शाक-सब्जी खरीदने में लग गई और बच्चा एक बिल्ली के साथ खेलने में लग गया है। वह बिल्ली के साथ खेलने में इतना तल्लीन हो गया है कि भूल ही गया कि बाजार में हैं; भूल ही गया कि मां का साथ छूट गया है; भूल ही गया कि मां कहां गई।

कबीर बैठे उसे देख रहे हैं। वे भी बाजार आए हैं, अपना जो कुछ कपड़ा वगैरह बुनते हैं, बेचने। वे देख रहे हैं। उन्होंने देख लिया है कि मां भी साथ थी इसके और वे जानते हैं कि थोड़ी देर में उपद्रव होगा, क्योंकि मां तो बाजार में कहीं चली गई है और बच्चा बिल्ली के साथ तल्लीन हो गया है। अचानक बिल्ली न छलांग लगाई। वह एक घर में भाग गई। बच्चे को होश आया। उसने चारों तरफ देखा और जोर से आवाज दी मां को। चीख निकल गई। दो घंटे तक खेलता रहा, तब मां की बिल्कुल याद न थी..क्या तुम कहोगे?

कबीर अपने भक्तों से कहते: ऐसी ही प्रार्थना है, जब तुम्हें याद आती है और एक चीख निकल जाती है। कितने दिन खेलते रहे संसार में, इससे क्या फर्क पड़ता है? जब चीख निकल जाती है, तो प्रार्थना का जन्म हो जाता है।

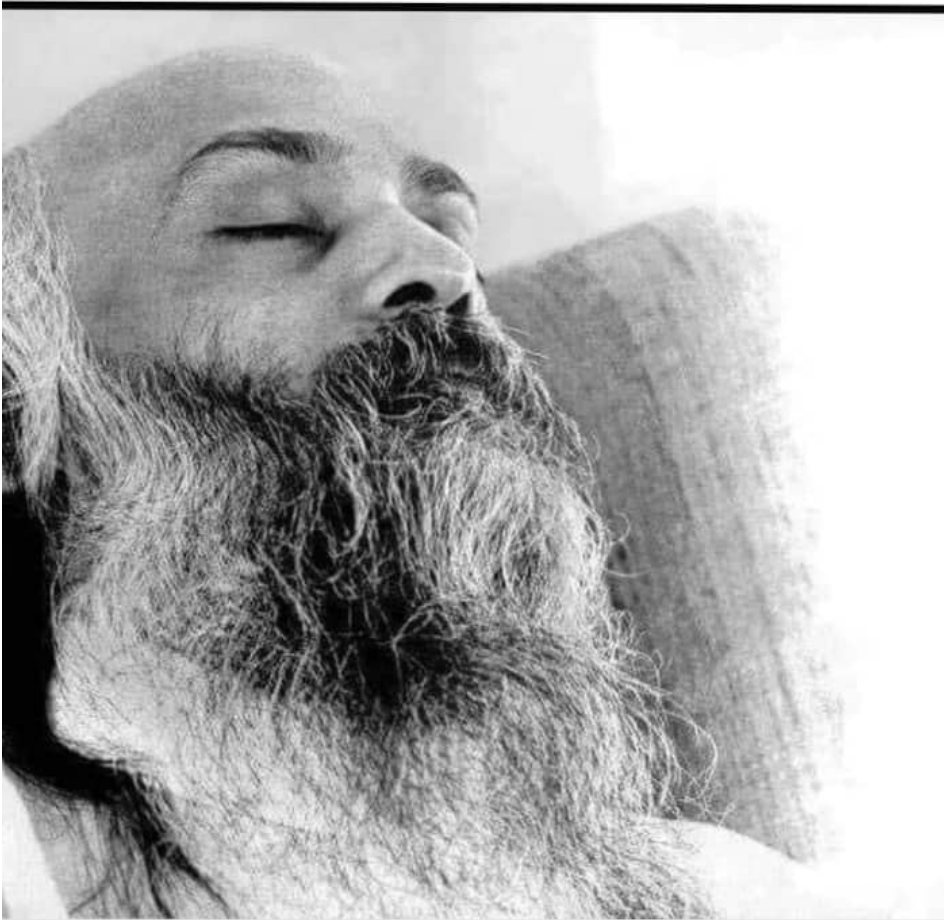
तब कबीर ने उस बच्चे का हाथ पकड़ा, उसकी मां को खोजने निकले। तब कोई सदगुरु मिल ही जाता है जब तुम्हारी चीख निकल जाती है। जिस दिन तुम्हारी चीख निकलेगी, तुम सदगुरु को कहीं करीब ही पाओगे..कोई फरीद, कोई कबीर, कोई नानक, तुम्हारा हाथ पकड़ लेगा और कहेगा कि हम उसे जानते हैं भलीभांति; हम उस घर तक पहुंच गए हैं, हम तुझे पहुंचा देते हैं।

प्रार्थना का अर्थ है: याद, कि अरे, मैं कितनी देर तक भूला रहा!
प्रार्थनाका अर्थ है: स्मृति, कि अरे, मैंने कितनी देर तक विस्मरण किया!
प्रार्थनाका अर्थ है: याद, कि अरे, क्या यह भी संभव है कि इतनी देर तक याद भूल गई थी! तब एक चीख निकल जाती है। तब आंखें आंसों से

प्रार्थना का अर्थ है: याद, कि अरे, मैं कितनी देर तक भूला रहा!
प्रार्थनाका अर्थ है: स्मृति, कि अरे, मैंने कितनी देर तक विस्मरण किया!
प्रार्थनाका अर्थ है: याद, कि अरे, क्या यह भी संभव है कि इतनी देर तक
याद भूल गई थी! तब एक चीख निकल जाती है। तब आंखें आंसुओं से
भर जाती हैं; हृदय एक नई अभीप्सा से! तब सारा संसार पड़ा रह जाता
है: रेत के घर-घुले हैं! फिर तो जब तक मां न मिल जाए, तब तक चैन
नहीं।

🌸 आचार्य रजनीश "ओशो" 🌸

अकथ कहानी प्रेम की



1



Like



Comment



Send



Share

People you may know

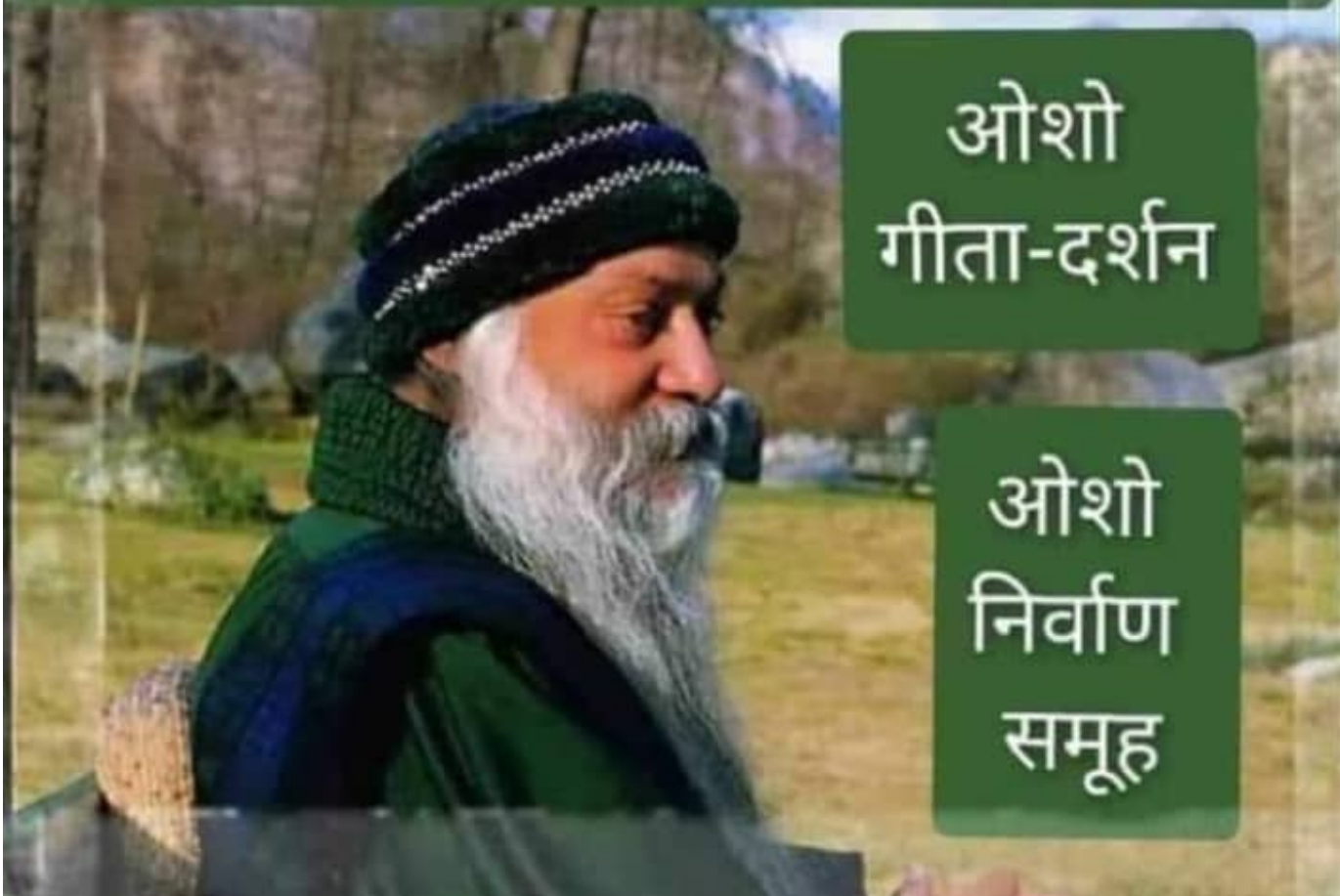




झुकता है वही फकीरों की तरह ,
फ़ितरत से जो ^{SH}बादशाह होता है ..
^{Subhash Hooda}

मरते क्षण में भी जो अधूरा रह जाता है,
उसी के कारण हमें दूसरे जन्म को स्वीकार
करना पड़ता है। मरते क्षण में जो पूरा करके
मर सकता है, उसका अगला जन्म नहीं
होगा। क्योंकि उसे मांग ही नहीं रह जाएगी।

जन्म का करिएगा क्या? उसका कोई
उपयोग नहीं है। समय की मांग बंद हो जाए,
तो अगला जन्म नहीं होता। लेकिन समय
की मांग तो बनी रहती है।



ओशो
गीता-दर्शन

ओशो
निर्वाण
समूह



"लोकक्षेम"

अण्ण दीपो भवः

कबीर कहते हैं:

न तो मैं नाक बंद करता,

न आंख बंद करता, न उलटी-सीधी सांस लेता

न प्राणायाम करता, न उलटा सिर पर खड़ा होता,

न शीर्षासन करता; कुछ भी नहीं करता;

सिर्फ होश को सम्हालकर रखता हूं.!

सिर्फ सुरति को बनाए रखता हूं। बस, सुरति का दीया

भीतर जलता रहता है। और जीवन पवित्र हो जाता है.!!

Osho - कहे कबीर दीवाना -

अभी गाँधी हमारे मुल्क में थे, गाँधी के साथ हजारों नकली गाँधी इस मुल्क में पैदा हो गए थे। उन्होंने मुल्क को डुबो दिया, उन नकली गांधियों ने मुल्क को डुबो दिया। गाँधी जैसी खादी पहनने लगे, गाँधी जैसा चरखा चलने लगे। उन्होंने डुबो दिया इस मुल्क को, जो नकली गाँधी पैदा ही गए थे, इस मुल्क के हत्यारे साबित हुए, मर्डरर्स साबित हुए। डुबो दिया इस मुल्क को, डुबोये जा रहे हैं रोज। डुबोयेंगे ही। क्योंकि नकली आदमी अन्दर से कुछ और होता है और बाहर कुछ और। असली आदमी जो भीतर होता है, वही बाहर भी।

असली आदमी बनना है तो किसी आदर्श को थोपने की कोशिश भूल कर भी मत करना। अन्यथा आप एक नकली आदमी बन जायेंगे और आपका जीवन तो गलत हो ही जायेगा, आपके जीवन की गलती दुसरो तक को नुकसान पहुंचायेगी। समाज तब एक धोखा हो जायेगा, एक प्रपंच हो जायेगा। पूरा समाज एक फ़ोड हो जायेगा। क्योंकि जब सब नकली आदमी होते हैं तो बड़ी मुश्किल होती है।

ओशो 🌹❤️🙏



👍❤️ 9

1 comment • 1 share

👍 Like

💬 Comment

📧 Send

➦ Share

**Sanjeev Mishra**

1h · 🌐



चार्ली चेपलिन का नाम तो सुना होगा। वह एक हंसोड़ अभिनेता था। उसकी पचासवीं वर्षगांठ बड़ी जोर शोर से मनाई गयी थी। और उस वर्षगांठ पर एक आयोजन किया गया सारे यूरोप और अमेरिका में। अभिनेताओं को निमंत्रित किया गया कि वे चार्ली चेपलिन का अभिनय करें। ऐसे सौ अभिनेता सारी दुनिया से चुने जायेंगे। प्रतियोगिता होगी नगरो- नगरो में। और फिर अंतिम प्रतियोगिता होगी। और उस अंतिम प्रतियोगिता में तीन व्यक्ति चुने जायेंगे जो चार्ली चेपलिन का अभिनय करने में सर्वाधिक कुशल होंगे। उन तीनों को पुरस्कार दिया जायेगा।

प्रतियोगिता हुई, हजारों अभिनेताओं ने भाग लिया, एक से एक अभिनेता, चार्ली चेपलिन बना, बनने की कोशिस की। चार्ली चेपलिन के मन में हुआ कि मैं भी किसी दुसरे के नाम से फार्म भरकर सम्मिलित क्यों न हो जाऊँ? मुझे तो प्रथम पुरस्कार मिल ही जाने वाला है, मैं खुद ही चार्ली चेपलिन हूँ, भला मेरा धोखा और कौन दे सकेगा। और जब बात भी खुल जाएगी, तो एक मजाक हो जाएगी। मैं तो हंसोड़ अभिनेता हूँ ही, लोग कहेंगे खूब मजाक की इस आदमी ने। वह एक छोटे से गाँव से फार्म भरकर सम्मिलित हो गया।

अंतिम प्रतियोगिता हुई, उसमें वह सम्मिलित था। सौ लोगो में वह भी एक था, किसी को पता नहीं, वहा तो सौ चार्ली चेपलिन एक से मालूम होते थे, एक सी मूँछ, एक सी चाल, एक सी ढाल, वे सब ही चार्ली चेपलिन थे। प्रतियोगिता हुई, पुरस्कार बंटे, मजाक भी खूब हुई, लेकिन चार्ली चेपलिन ने जो सोची थी वह मजाक नहीं हुई, मजाक उलटी हो गयी। चार्ली चेपलिन को दूसरा स्थान मिल गया। कोई और उसका ही पार्ट करने में नंबर एक आ गया। और जब पता चला दुनिया को तो, दुनिया हैरान रह गयी कि हद हो गयी यह बात तो। चार्ली चेपलिन खुद मौजूद था प्रतियोगिता में और उसे नंबर दो का पुरस्कार मिला।

तो हो सकता महावीर के अनुयायी महावीर को हरा दे, बिलकुल हरा सकते हैं क्योंकि अनुयायी एक नक़ल होता है, असल नहीं। लेकिन नकली आदमी हरा भी दे तो नकली आदमी, नकली आदमी ही रहेगा। उसके भीतर कोई आनंद, कोई विकास, कोई प्रफुल्लता, कोई पूर्णता उपलब्ध नहीं हो सकती।



Millionaires Stories

Accept your past without
regret, handle your present
with confidence, and face
your future without fear.



नवनीत विचार



Raj...

"लोग इतनी चिंता से भरे है"

जैसे वो 5 10 हजार साल जियेंगे, अगले पल का **ठिकाना** नहीं और तुम कहाँ सालों बाद की चिंता में डूबे हो। जिन खयाली **चिंताओं** में डूबे हो उनमें से 99% बातें कभी सच ही नहीं होंगी.!

तुम अकेले चलने की
हिम्मत भर तो करो
परमात्मा हजारों
सहारे देने को
तैयार है।

- ओशो



**तुम जो भी कर रहे हो उसका कोई
भी अत्यंतिक मूल्य नहीं है।**

**कितना ही धन कमाओ, कितनी ही पद-प्रतिष्ठा
मिले, मौत सभी कुछ साफ कर देती है।**

मौत सब मिटा देती है।

**तुम्हारे बनाए सब घर, ताश के पत्तों के घर सिद्ध
होते हैं।**

**और तुम्हारे द्वारा तैराई गई सभी नावें कागज की
नावें सिद्ध होती हैं।**

सब डूब जाता है।

**जिसे यह होश आना शुरू हो गया कि मौत है, उसी
के जीवन में धर्म की किरण उतरती है।**

मौत का स्मरण धर्म की प्राथमिक भूमिका है।

अगर मृत्यु न होती तो संसार में धर्म भी न होता।

मृत्यु है, इसलिए धर्म की संभावना है।

**और जब तक तुम मृत्यु को झुठलाओगे तब तक
तुम्हारे जीवन में धर्म की किरण न उतरेगी।**

ओशो



Like



Comment



Send



Share

**Osho janaki dhyana kendra**30m · 

शब्द ही गुरु है। वह जो तुम्हारे भीतर पड़ी है शांत ध्वनि, मौन प्रतीक्षा करती, वही गुरु है। वही सदगुरु है। बाहर का गुरु तो उसी की याद दिलाता है। बाहर का गुरु तो तुम्हें वहीं-वहीं फेंकता है वापस, तुम्हारे ही भीतर फेंकता है।

जो गुरु तुम्हें बाहर अटका ले, वह गुरु नहीं--दुश्मन है। जो गुरु तुम्हें तुम्हीं में फेंक दे, वही सच्चा गुरु है। जो कहे: मुझे छोड़ो और अपने भीतर जाओ। मुझे मत पकड़ो। मुझे पकड़ कर मत रुक जाना। क्योंकि मैं भी बाहर हूं। मुझसे तो इतना सीख लो कि कैसे भीतर जाया जाता है, फिर अपने भीतर चले जाओ।

फिर बिसारो सब। गुरु भी सम्मिलित है उस बिसारने में। संसार भी भूल जाए; गुरु भी भूल जाए; धर्म भी भूल जाए--सब भूल जाए; विस्मृति पूरी हो जाए। जब बाहर की विस्मृति पूरी हो जाती है, तो स्मरण आता है भीतर का।

ओशो... "कहे कबीर मैं पूरा पाया-13"

उसकी मस्ती ने ,मुझको जीना सीखा दिया,
एक बून्द में ही,पूरा समन्दर दिखा दिया.....
मैं टटोल रहा था,जिसे देर -ओ-हरम में,
बन्द आँख से उसने सारा मंजर दिखा दिया.....





बीत जाती है ज़िन्दगी ये ढूँढने में
कि ढूँढना क्या है
जबकि मालूम नहीं ये भी , कि जो मिला है ,
उसका करना क्या है

दृष्टि
दृश्य से
बंधी हो
तो
विचार है:
दृष्टि
दृश्य से
मुक्त हो,
द्रष्टा पर
आ जाए
तो
ध्यान है।
(ओशो)





आज जो भी जय माता दी
लिखे माता लक्ष्मी उसके
भंडारे धन - धान्य से भरे रखे।

चैत्र नवरात्रि (प्रतिपदा)	मंगलवार	9 अप्रैल 2024
चैत्र नवरात्रि (द्वितीय)	बुधवार	10 अप्रैल 2024
चैत्र नवरात्रि (तृतीया)	गुरुवार	11 अप्रैल 2024
चैत्र नवरात्रि (चतुर्थी)	शुक्रवार	12 अप्रैल 2024
चैत्र नवरात्रि (पंचमी)	शनिवार	13 अप्रैल 2024
चैत्र नवरात्रि (षष्ठी)	रविवार	14 अप्रैल 2024
चैत्र नवरात्रि (सप्तमी)	सोमवार	15 अप्रैल 2024
चैत्र नवरात्रि (अष्टमी)	मंगलवार	16 अप्रैल 2024
चैत्र नवरात्रि (नवमी)	बुधवार	17 अप्रैल 2024



Mike Payne

**Mike Payne**

5h · 🌐



English 🗣 Hindi

I am fortunate enough to be a nobody

Practicing zazen (sitting meditation) for almost 30 years
has brought me to this realisation

Zazen is enlightenment
Realising delusion
Seeing the illusion of nirvana within samsara

I hold no hope
I hold no desire
I hold no fear

This moment is all there is
I have thrown all my toys into the fire long ago

Birth and death are simply nothing
This life is without self-grasping without suffering

A silent emptiness pervades throughout space

Lakes and pools adorned with Lotuses and the beautiful
call of wild geese everything that is unowned throughout
space

Giving everything without any sense of loss
May everyone realise the way 💎 🙏

मैं काफी भाग्यशाली हूँ कि मैं कोई नहीं हूँ

लगभग 30 वर्षों से ज़ज़ेन (बैठे ध्यान) का अभ्यास करने से मुझे यह
एहसास हुआ है

Write a comment...

OSHO

स्वप्ना यह संसार

पलटू-वाणी पर प्रवचन



ओशो

चिंता ऐसी डाकिनी, काट कलेजा खाए
वैद बिचारा क्या करे, कहां तक दवा लगाए

कबीर दास



tentaran.com



ठोकरे खाकर भी ना संभले तो
मुसाफ़िर का नसीब।
वरना पत्थरों ने तो अपना फर्ज
निभा ही दिया था।

ओशो

Millionaire Mind and 839 others 11 comments • 150 shares



Like



Comment



Send



Share

**ओशो का हिन्दी साहित्य**

Sulaxna Dixit Rawat · 3h · 🌐

मैंने सुना, चीन में एक अदभुत झेन फकीर हुआ-हुईनेंग। निकल रहा है आश्रम में, बगीचे के पास से गुजर रहा है, और उसका एक शिष्य वृक्ष के नीचे बैठा बुद्ध-वचनों को कंठस्थ कर रहा है, रट रहा है। वह खड़े होकर सुनता है और उसे कहता है, सुन! खयाल रखना, कहीं ऐसा न हो कि शास्त्र तुझे गड़बड़ा दे, तू शास्त्र को गड़बड़ा देना!

अपूर्व वचन है कि तू शास्त्र को गड़बड़ा देना; कहीं ऐसा न हो कि शास्त्र तुझे गड़बड़ा दे। फिर तो झेन फकीरों ने इस पर काफी काम किया।

फिर तो दूसरे एक झेन फकीर ने अपने सारे शिष्यों को अपने मरते वक्त इकट्ठा किया और सारे शास्त्र इकट्ठे करके आग लगवा दी और कहा कि देखो यह मेरा आखिरी संदेश है। जब तक ऐसे ही तुम्हारे भीतर के सभी शास्त्र न जल जाएंगे तब तक तुम्हारे भीतर का शास्ता पैदा न होगा।

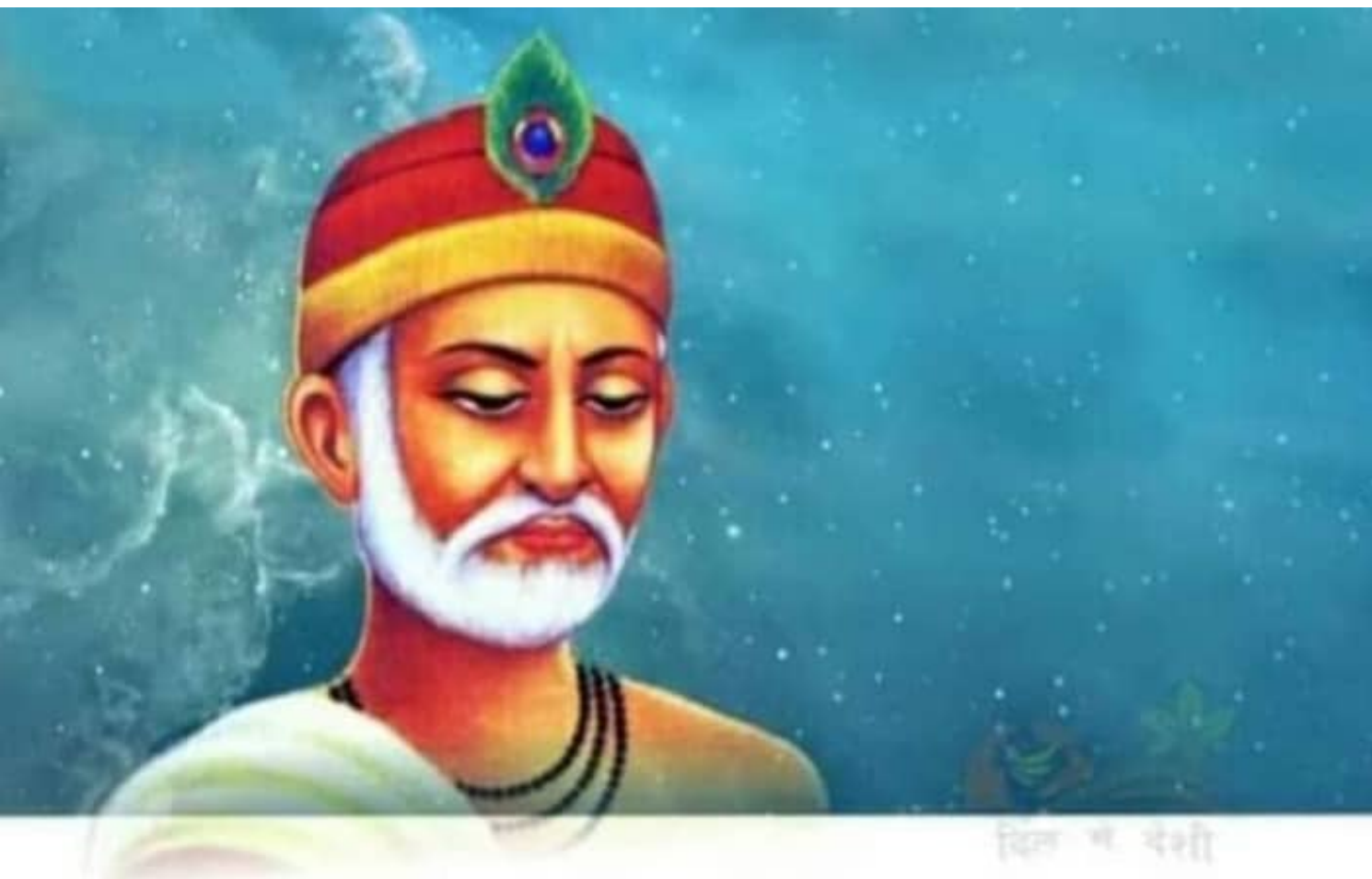
रंजी सास्तर ग्यान की, अंग रही लिपटाए

सतगुरु एकहि सब्द से, दीन्हीं तुरत उड़ाय

पर यह कैसे होता होगा? क्योंकि कितने ही तो लोग, कितने लोगों की बातें सुनते हैं, कुछ होता नहीं। एक ही शब्द से हो गया होगा?

प्रेम से सुना जाए तो एक शब्द भी काफी हो जाता है। प्रेम से न सुना जाए तो करोड़ों शब्द भी काफी नहीं होते। फिर समझदार को इशारा काफी होता है।

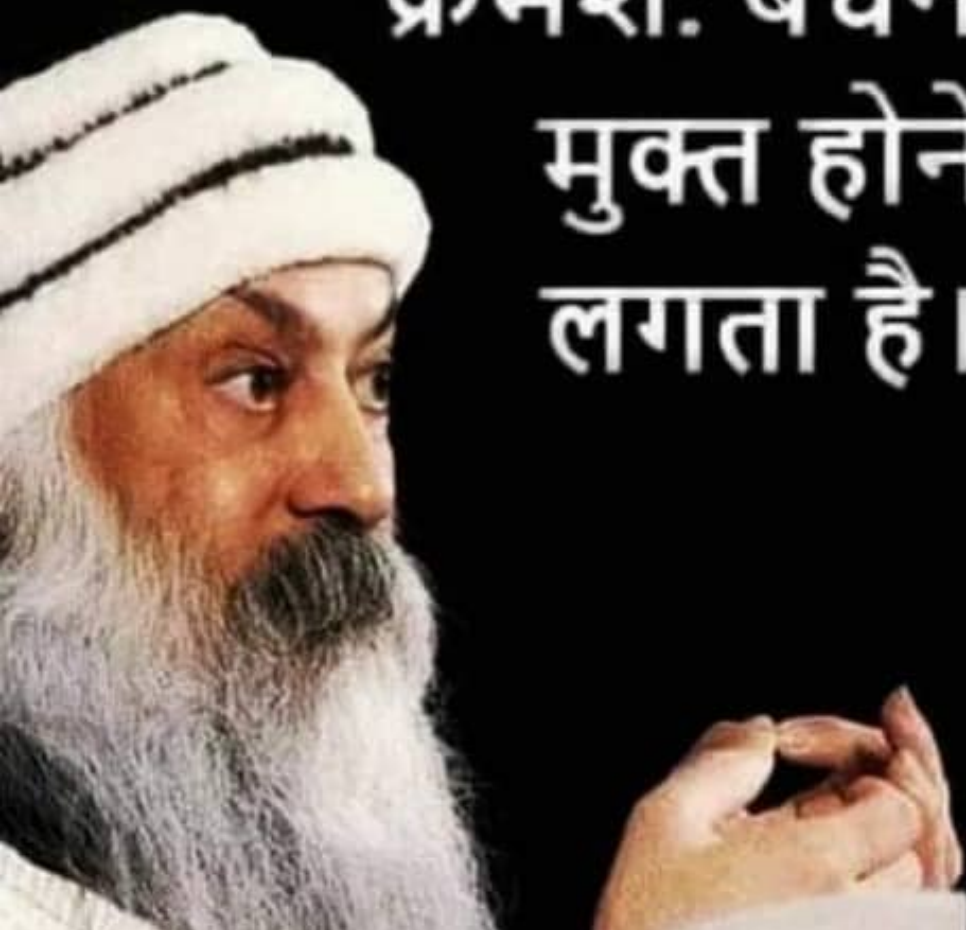
ओशो



माटी का एक नाग बनाके पुजे लोग लुगाया।
जिंदा नाग जब घर में निकले ले लाठी धमकाया।।
जिंदा बाप को कोई ना पुजे मरे बाद पुजवाया।
मुट्ठी भर चावल लेके कौवें को बाप बनाया।।

—संत कबीर

सुख आते हैं, चले जाते हैं।
दुख आते हैं, चले जाते हैं।
जो जगत के इस 'चले जाने'
के शाश्वत नियम को जान
लेता है, उसका जीवन
क्रमशः बंधनों से
मुक्त होने
लगता है।



ओशो
पथ के प्रदीप

तुम क्या चाहते हो,
अस्तित्व उसे वैसा पूरा नहीं करेगा।
अस्तित्व जो चाहता है,
तुम उससे राजी हो जाओ।
दुःखी होने का रास्ता है :
तुम अस्तित्व से मांग करो
कि ऐसा होना चाहिए।
और सुखी होने का रास्ता है
कि जैसा हो,
तुम अस्तित्व को
धन्यवाद दे सको
कि बड़ी कृपा है,
मैं शुक्रगुजार!
मैं आभारी,
मैं अनुगृहीत!

आचार्य श्री रजनीश
राम द्वारे जो मरे--(प्रवचन--08)
प्रभु, मुझ पर अनुकम्पा करे
दिनांक 18 नवम्बर 1979;
श्री रजनीश आश्रम, पूना।

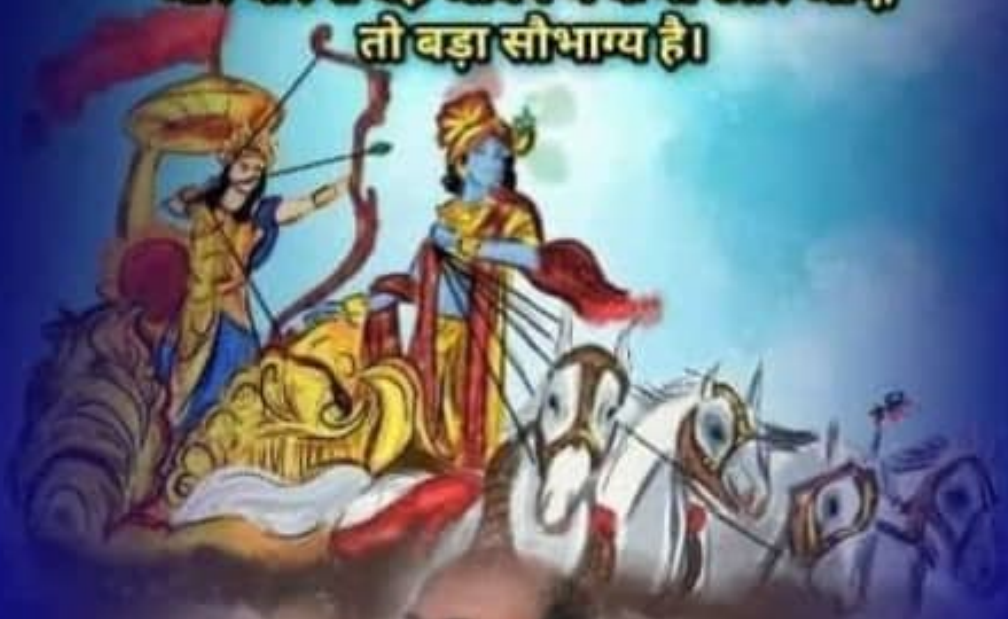
धन्यवाद

न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा।
इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते॥ 14॥

कर्मों के फल में मेरी स्पृहा नहीं है,
इसलिए मेरे को कर्म लिपायमान नहीं करते।
इस प्रकार जो मेरे को तत्व से जानता है,
वह भी कर्मों से नहीं बंधता है।

परमात्मा के लिए जगत एक खेल है।

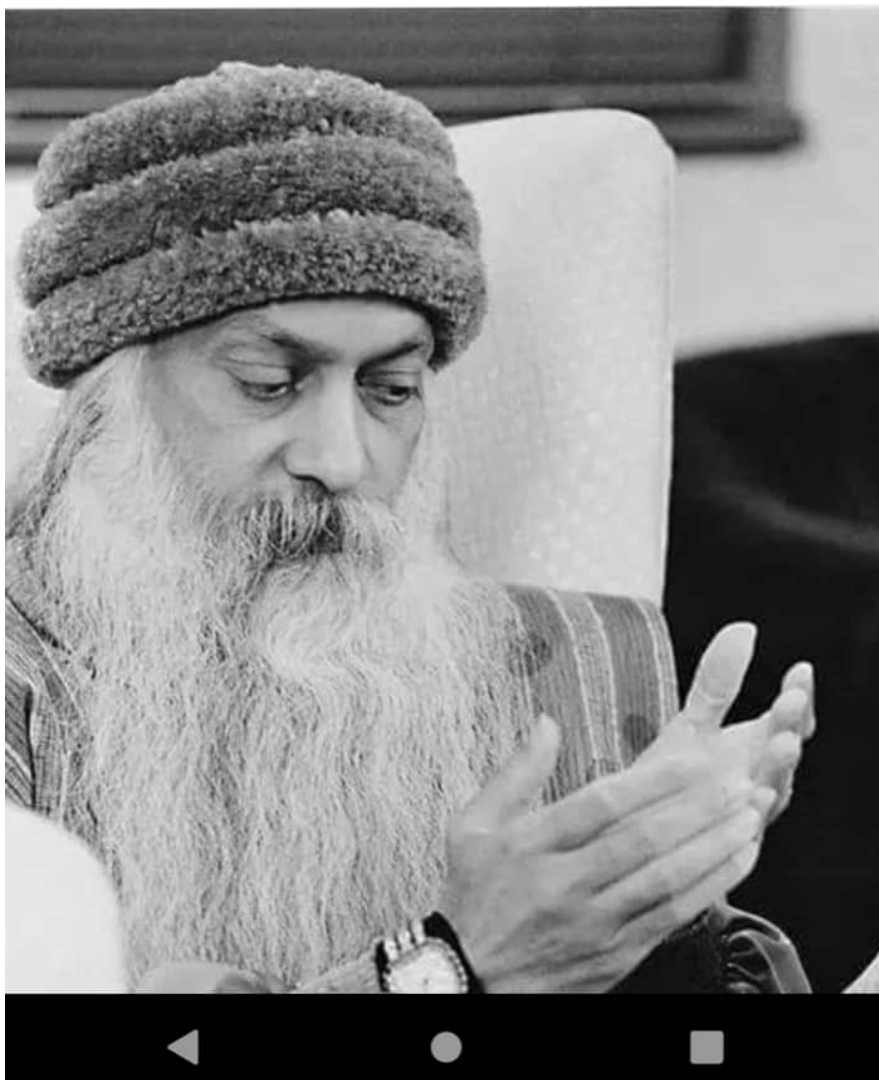
कई बार हमें जिताता भी है। बस, बच्चे की तरह।
कई बार हम उसकी छाती पर भी होते हैं; पर बच्चे की तरह।
भीतर उसके लिए कोई अहंकार नहीं है।
ऐसी निरहंकार स्थिति की घोषणा,
कृष्ण ने इस वचन में की है। उसे समझें।
और धीरे से वह जीवन में कभी उतर आए,
तो बड़ा सौभाग्य है।



आचार्य श्री रजनीश
गीता दर्शन-अ.4
जीवन एक लीला(प्र.33)

और एक आदमी मिल गया, जिसने वह पहाड़ी खरीद ली। जिससे खरीदा वह तो निश्चित हुआ कि झंझट मिटी। जितने दाम मिलने थे, उतने तो नहीं मिले, लेकिन जो मिले वे भी काफी थे। दिवाले से बचा। मगर उसको भी चिंता तो पकड़ने लगी मन में कि यह बेचारा अब मारा गया। जानबूझकर। मैं तो खैर अनजान में मरने गया था, अज्ञात में। यह जानबूझकर मर रहा है। उसको उस पर दया भी आने लगी। लेकिन चमत्कार हुआ। उस आदमी ने पहले खुदाई की—और सोने की कोलरेडो की सबसे बड़ी खदान मिली! बस एक फीट और, बस एक फीट की पर्त और रह गयी थी खोदने को। तुम सोच सकते हो पहले आदमी पर क्या गुजरी! वह पागल हो गया। दिवाला निकलता तो पागल नहीं होता, अब पागल हो गया। उसने छाती पीट ली। उसकी नींद खो गई। उसने कहा कि मारे गए, हद हो गई। अब उस पर असली दुःख का पहाड़ टूटा। सारी पहाड़ी सोने से भरी थी, बस एक फीट और खुदाई करनी थी।

और ऐसी ही जिंदगी है। पता नहीं तुम कब लौट जाओ
ओशो





ओशो का हिन्दी साहित्य

Sulaxna Dixit Rawat · 51m ·

ऐसा हुआ, कोलरेडो में सोने की खदानें खोजी गईं जब पहली दफा, तो सारी दुनिया कोलरेडो की तरफ चल पड़ी। सारे अमरीका में लोग पागल हो गए। लोगों ने दुकानें बेच दीं, कारखाने बेच दिए। जो पैसा था, लिया, भागे कोलरेडो। सारी ट्रेनें कोलरेडो जाने लगीं, भरने लगीं। लोग जमीनें खरीदने लगे। खेतों में सोना पड़ा था। जहां जमीन ले ली, जिसके पास जितनी जमीन हो गई, एक एकड़ का टुकड़ा मिल गया, तो भी पर्याप्त हो गया। सदा के लिए भर गए खजाने। कोलरेडो में सोना ही सोना था। एक आदमी के पास काफी संपदा थी। उसने सारी संपदा लेकर पूरी पहाड़ी खरीद ली। सब दांव पर लगा दिया। उसने सोचा कि जब एक—एक दो—दो एकड़ लोगों को धनी बना रही है, तो फिर छोटा काम क्या करना! उसने सब बेच दिया, कुछ बचाया नहीं। मगर चकित हुआ! पहाड़ी बिल्कुल खाली थी।

सोना था ही नहीं। खोद—खोद मर गया। उधार करोड़ों रुपए लेकर बड़े यंत्र लगाए। पहाड़ी की खुदाई करनी थी। मगर खुदाई चलती रही, कुछ हाथ न आया सो न आया। दिवाला सामने आ गया। उस आदमी ने विज्ञापन दिया अखबारों में कि किसी को भी खरीदनी हो तो यह पहाड़ी, मैं खुदाई के सामान, यंत्रों के साथ बेचता हूं। उसके मित्रों ने, साथियों ने कहा: "कौन खरीदेगा। सारा अमरीका तुम्हारे दुर्भाग्य का विचार कर रहा है। कौन खरीदेगा।" उसने कहा कि कोई न कोई खरीदनेवाला शायद मिल जाए। कोई मुझसे भी बड़ा पागल हो सकता है।

और एक आदमी मिल गया, जिसने वह पहाड़ी खरीद ली। जिससे खरीदा वह तो निश्चित हुआ कि इंड्रस्ट मिटी। जितने दाम मिलने थे, उतने तो नहीं मिले, लेकिन जो मिले वे भी काफी थे। दिवाले से बचा। मगर उसको भी चिंता तो पकड़ने लगी मन में कि यह बेचारा अब मारा गया। जानबूझकर। मैं तो खैर अनजान में मरने गया था, अज्ञात में। यह जानबूझकर मर रहा है। उसको उस पर दया भी आने लगी। लेकिन चमत्कार हुआ। उस आदमी ने पहले खुदाई की—और सोने की कोलरेडो की सबसे बड़ी खदान मिली! बस एक फीट और, बस एक फीट की पर्त और रह गयी थी खोदने को। तुम सोच सकते हो पहले आदमी पर क्या गुजरी! वह पागल हो गया। दिवाला निकलता तो पागल नहीं होता, अब पागल हो गया। उसने क्लान्नी पीट ली। उसकी नींट ग्लो गई। उसने क्लटा

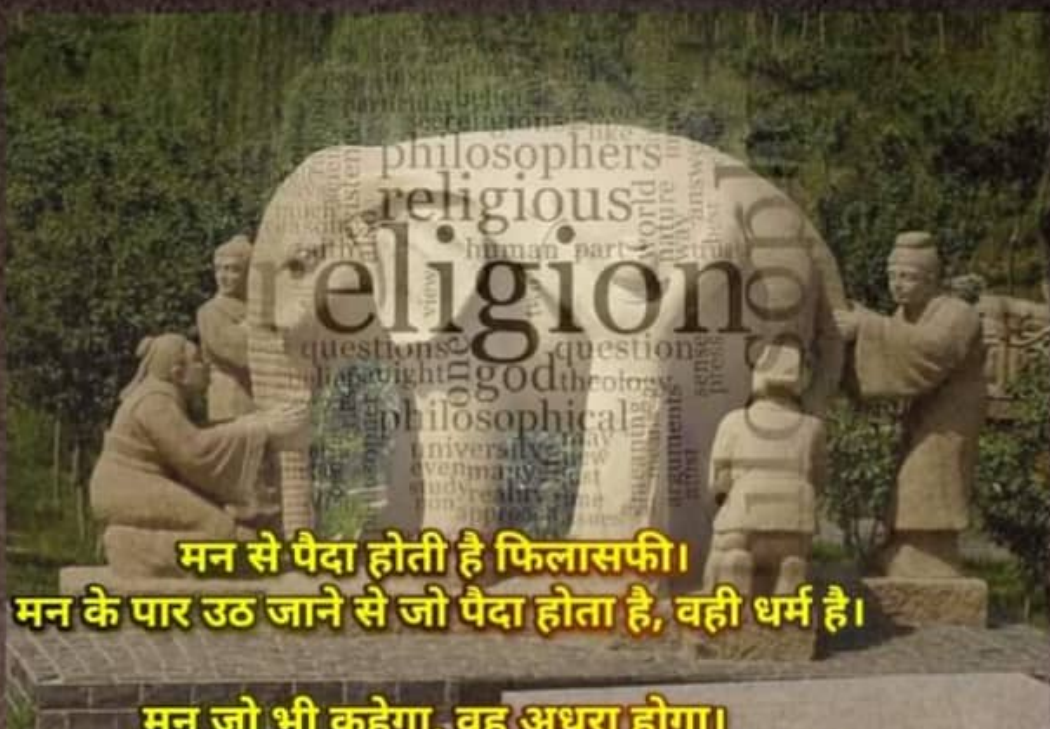
जिन लोगों को समाज को छोड़कर भागना पड़ा
-बुद्ध को या महावीर को या जीसस को या मोहम्मद को भी
एकांत में भाग जाना पड़ा-उसका कारण
अगर मौलिक आप समझना चाहें, तो
सिर्फ इतना ही है कि आप सब
इतने जमे हुए बर्फ की चट्टानें हैं कि
आपके बीच में पिघलना बहुत मुश्किल है!
पूरा टेंपरेचर नहीं है पिघलने का वहां।
सब जीरो डिग्री से नीचे जमे हुए हैं।
वहां अगर कोई पिघलना भी चाहे,
तो पिघलना मुश्किल है।
चारों तरफ जमाने वाले लोग मौजूद हैं।

इसलिए बुद्ध या महावीर को
समाज छोड़कर भागना पड़ता है।
समाज को छोड़कर भागने का
और कोई कारण नहीं है।
अकेले में जाना पड़ता है, ताकि
वहां कम से कम अपनी ही
ठंडक से लड़ना पड़े;
दूसरों की ठंडक से
तो न लड़ना पड़े।
अकेले,
एकांत में,
जहां चारों तरफ
कोई ठंडक न हो।



आचार्य श्री रजनीश Osho
गीतादर्शन अ.9.प्र.7/106॥ मैं ओंकार हूं ॥

अगर हम किसी कुएं में बाल्टी
डालें और उसमें पानी न हो तो
बाल्टी पानी बाहर नहीं ला
सकती।



**मन से पैदा होती है फिलासफी।
मन के पार उठ जाने से जो पैदा होता है, वही धर्म है।**

**मन जो भी कहेगा, वह अधूरा होगा।
इसलिए मेरा मन जो कहेगा और आपका मन जो कहेगा,
उसमें मेल होने का कोई भी उपाय नहीं है।
मन का कहना करीब-करीब वैसा ही है,
जैसा पंचतंत्र की एक पुरानी कथा
में हम सब जानते हैं, पांच अंधे एक हाथी को अनुभव करते हैं।
और वे जो भी कहते हैं, वह सभी सच है।
जिस अंधे ने हाथी के पैर को छुआ है, उसने कहा,
किसी महल के सुदृढ़ स्तंभों की भांति है हाथी।
और जिसने हाथी के कानों को छुआ, उसने कहा
कि जैसे स्त्रिया अनाज को साफ करती हैं सूप में,
वैसे सूप की भांति है हाथी!**

**गलत दोनों ने नहीं कहा, गलत पांचों ने नहीं कहा;
और पांच हजार अंधे भी इकट्ठे हो जाते,
तो कोई भी गलत न कहता।
वे सभी ठीक कहते।**

**भूल उनके कहने में नहीं थी,
भूल उनके विस्तार में थी।**

**आचार्य श्री रजनीश Osho
गीतादर्शन अ.9.प्र.8/107॥ जीवन के एकाग्र का बोध अ—मन में॥**

वाह रे इंसान

लाश को हाथ लगाता है तो नहाता है।
पर बेजवान जीव को मार के खाता है।
छोड़ देते हैं भोजन जिसमें एक बाल है।
फिर क्यों खाते हो अंडा
जिसमें एक मां का लाल है।

एक पत्थर सिर्फ एक बार मंदिर जाता है
और भगवान बन जाता है।
इंसान हर रोज मंदिर जाता है फिर
भी पत्थर बन जाता है।

एक औरत बेटे को जन्म देने के लिए
अपनी सुन्दरता त्याग देती है।
और वही बेटा एक सुन्दर बीवी के लिए
अपनी मां को त्याग देता है।

जीवन में हर जगह हम जीत चाहते हैं।
सिर्फ फूल वाले की दुकान ऐसी है।
जहां हम कहते हैं कि हार चाहिए
क्योंकि हम भगवान से जीत नहीं सकते।

👍 3

3 comments • 1 share

👍 Like

💬 Comment

💬 Send

➦ Share

**Sanjeev Mishra**

...



8h · 🌐

जो ठीक लगे वो ही देना प्रभु
हमारा क्या है हम तो कुछ भी मांग लेते है....



👍❤️ 86

11 comments • 4 shares

👍 Like

💬 Comment

💬 Send

➦ Share

**Shiksha Tales**

...



6h · 🌐





अगर कोई स्त्री कीर्ति को उपलब्ध हो जाए, तो पुरुष की कोई भी जरूरत नहीं है। स्त्री के शरीर से ही मोक्ष उपलब्ध हो जाएगा। लेकिन कीर्ति की प्रक्रिया बिलकुल और होगी।

कीर्ति की प्रक्रिया का अर्थ है कि स्त्री के मन में जितनी तीव्रता से मातृत्व का भाव गहन हो जाए। उसकी साधना मां की साधना होगी। वह पूरे जगत की मां हो जाए। उसके मन में एक ही भाव तरंगित होता रहे, मां होने का। स्त्री होने का भाव छूट जाए, पत्नी होने का भाव छूट जाए, सिर्फ मां होने का भाव गहन होता चला जाए। जिस दिन स्त्री के भीतर मां होने की धारणा इतनी गहन हो जाए कि अगर कोई पुरुष भी उसके पास आकर उसके हृदय में लग जाए, तो भी उसे अपने बेटे का ही स्मरण हो। वह उसके सिर पर वैसा ही हाथ रख सके, जैसे बेटा उसके पास आ गया हो। उसके भीतर न कोई भय पैदा हो, न कोई चिंता पैदा हो, न कोई घबड़ाहट पैदा हो; वह उसको बेटे की तरह छाती से लगा ले।

और यह अदभुत बात है कि अगर कोई भी स्त्री किसी पुरुष को बेटे की तरह छाती से लगा ले, पुरुष की वासना तत्क्षण वहीं क्षीण हो जाएगी। वहीं, उसी वक्त क्षीण हो जाएगी। क्योंकि स्त्री का जो आमंत्रण रूप है, वह अगर खो जाए, तो पुरुष तत्काल पाएगा कि वह शांत हो गया है।

इस गुण का नाम कीर्ति है। और जब यह गुण विकसित होता है, तो स्त्री पर भी एक तेज आता है। उस पर भी एक अनूठा सौंदर्य आता है। उस सौंदर्य का कोई संबंध शरीर के सौंदर्य से नहीं है।

कुरूप से कुरूप स्त्री में भी अगर कीर्ति फलित हो जाए, तो उसकी सारी शारीरिक कुरूपता के भीतर से सौंदर्य की आभा फूटने लगती है। उसकी कुरूपता को लोग देख ही न पाएंगे, उसके भीतर का सौंदर्य इतना हावी हो जाएगा। और सुंदरतम स्त्री को भी, अगर कीर्ति न हो, तो उसकी सुंदरता ऊपर चमड़ी पर होती है। और थोड़ी ही देर में भीतर की कुरूपता दिखाई पड़नी शुरू हो जाती है।

#ओशो



S Beauti Singh Rajput 😊

22 minutes ago



Osho 🍁

जीवन में सिर्फ उन लोगों को चुनो...
जो आपके मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छे हों 🍁



27K



85

True

Reply



870 people like this



Like

Preview

2,864 people like



Like

[See all >](#)**Sanjeev Mishra**

2d · 🌐

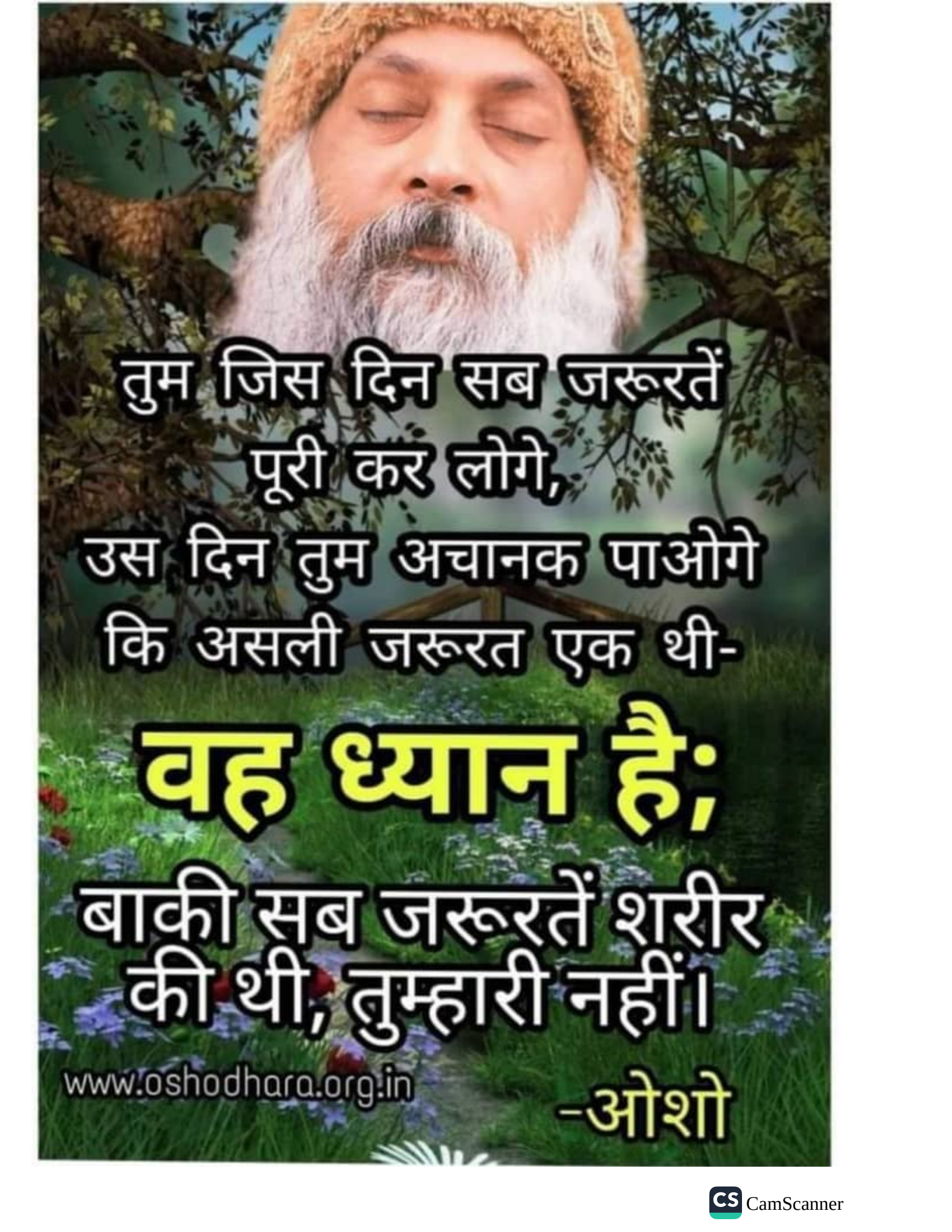


वैराग्य का अर्थ है, अब मुझे कुछ भी आकर्षित नहीं करता। वैराग्य का अर्थ है, अब ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसके लिए मैं कल जीना चाहूं। वैराग्य का अर्थ है, ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसके लिए मैं कल जीना चाहूं। ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे पाए बिना मेरा जीवन व्यर्थ है।

वैराग्य का अर्थ है, वस्तुओं के लिए नहीं, पर के लिए नहीं, दूसरे के लिए नहीं, अब मेरा आकर्षण अगर है, तो स्वयं के लिए है। अब मैं उसे जान लेना चाहता हूं, जो सुख पाना चाहता है। क्योंकि जिन-जिन से सुख पाना चाहा, उनसे तो दुख ही मिला। अब एक दिशा और बाकी रह गई कि मैं उसको ही खोज लूं, जो सुख पाना चाहता है। पता नहीं, वहां शायद सुख मिल जाए। मैंने बहुत खोजा, कहीं नहीं मिला; अब मैं उसे खोज लूं, जो खोजता था। उसे और पहचान लूं, उसे और देख लूं।

वैराग्य का अर्थ है, विषय से मुक्ति और स्वयं की तरफ यात्रा।

ओशो



तुम जिस दिन सब जरूरतें
पूरी कर लोगे,
उस दिन तुम अचानक पाओगे
कि असली जरूरत एक थी-

वह ध्यान है;
बाकी सब जरूरतें शरीर
की थी, तुम्हारी नहीं।

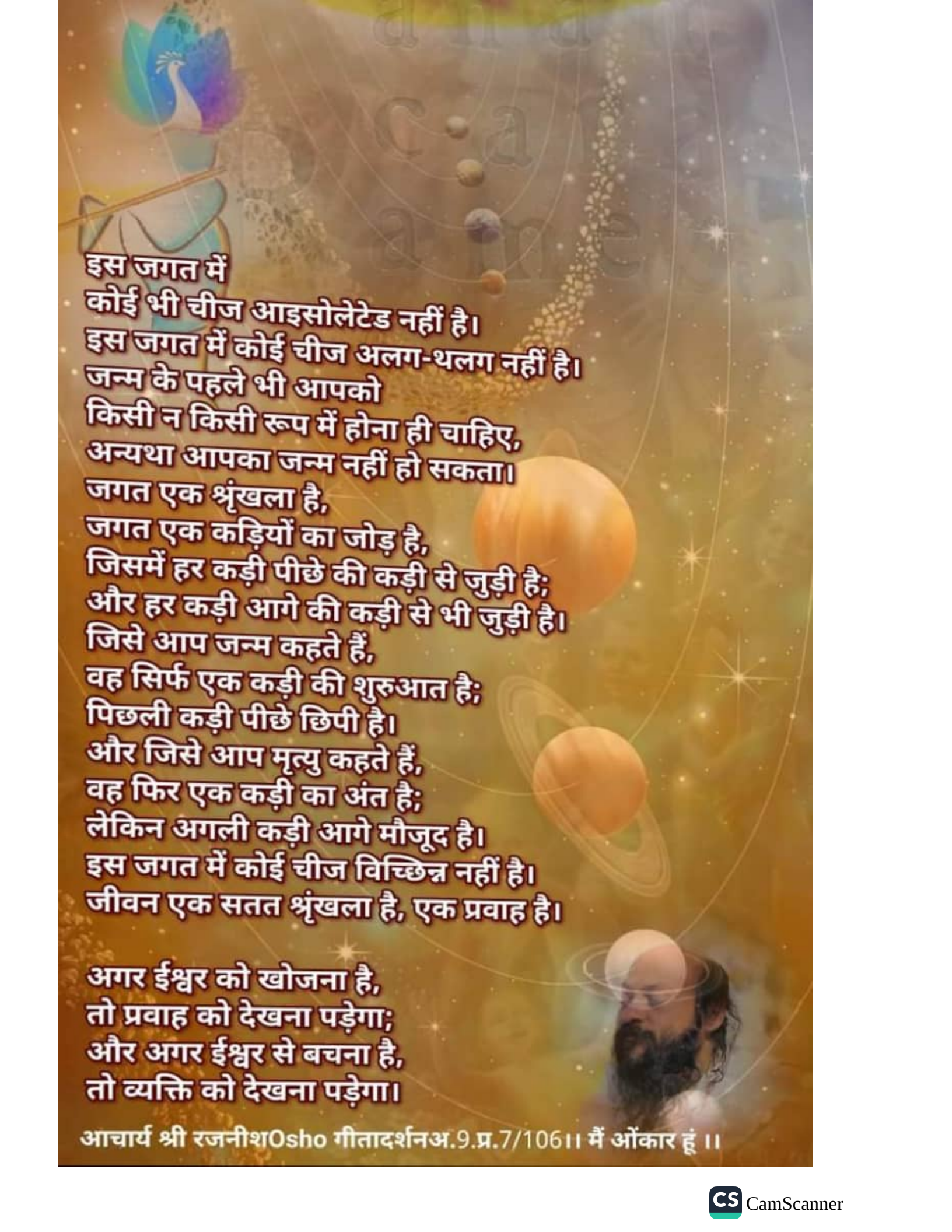
www.oshodhara.org.in

-ओशो

एक बार हम सत्य की झलक पा लें, तो फिर असत्य है ही नहीं। एक बार हम परमात्मा को झांक लें, तो परमात्मा के अतिरिक्त फिर कुछ है ही नहीं। लेकिन वह झांकना तब हो पाए जब हमारे भीतर सब शांत और मौन हो। फिर इसके बाद तो कोई सवाल नहीं, फिर तो विचार भी उसके हैं, वृत्तियां भी उसकी हैं, वासनाएं भी उसकी हैं—फिर तो सब उसका है। लेकिन प्राथमिक चरण में उसे झांकने और पहचानने के लिए सब का रुक जाना जरूरी है।

ओशो
जिन खोजा तिन पाइयां

ओशो निर्वाण
समूह



इस जगत में
कोई भी चीज आइसोलेटेड नहीं है।
इस जगत में कोई चीज अलग-थलग नहीं है।
जन्म के पहले भी आपको
किसी न किसी रूप में होना ही चाहिए,
अन्यथा आपका जन्म नहीं हो सकता।
जगत एक श्रृंखला है,
जगत एक कड़ियों का जोड़ है,
जिसमें हर कड़ी पीछे की कड़ी से जुड़ी है;
और हर कड़ी आगे की कड़ी से भी जुड़ी है।
जिसे आप जन्म कहते हैं,
वह सिर्फ एक कड़ी की शुरुआत है;
पिछली कड़ी पीछे छिपी है।
और जिसे आप मृत्यु कहते हैं,
वह फिर एक कड़ी का अंत है;
लेकिन अगली कड़ी आगे मौजूद है।
इस जगत में कोई चीज विच्छिन्न नहीं है।
जीवन एक सतत श्रृंखला है, एक प्रवाह है।

अगर ईश्वर को खोजना है,
तो प्रवाह को देखना पड़ेगा;
और अगर ईश्वर से बचना है,
तो व्यक्ति को देखना पड़ेगा।

आचार्य श्री रजनीश Osho गीतादर्शन अ.9.प्र.7/106॥ मैं ओंकार हूं ॥

जिंदगी इतनी बड़ी चीज है जो हमें मिली है। जिंदगी इतनी असंभव चीज है जो हमें मिली है। कोई दो अरब सूरज हैं, और उन सूरजों की अरबों पृथ्वियां हैं। और जीवन इस छोटी सी पृथ्वी पर ही है। यह बहुत ही आश्चर्यजनक है। और इस पृथ्वी पर भी जो करोड़ों जीव हैं उनमें से बोधपूर्ण जीवन अकेले मनुष्य के पास है। यह इतनी बड़ी घटना है : जीवन का होना और चेतना का होना। लेकिन हम कहते हैं जीवन में बड़ी समस्याएँ हैं, बड़े संकट हैं। लेकिन यह नहीं देखते कि जीवन का यह उपहार कैसा मुफ्त मिला है।

जीवन रोज कई-कई ढंगों से हमारे सामने जीवन की अनिश्चितता और मृत्यु की निश्चितता को प्रकट किए चला जाता है ताकि हम जीवन के मूल्य को अनुभव कर सकें। यदि यह हम समझ सकें तो जो भी क्षण हमारे हाथों में है वह धन्यवाद के अतिरिक्त और क्या हो सकता है? -- क्योंकि जहां मृत्यु एकमात्र निश्चितता है वहां तुम जीवित हो! इस धन्यवाद को अपने गीतों में प्रकट करो, अपने नृत्य में प्रकट करो, अपने उत्सव में प्रकट करो।

इसीलिये तो मैं कहता हूँ कि उत्सव तुम्हारी जीवन शैली हो। जीवन में कोई भी क्षण आये वह तुम्हें उत्सव में ही पाए। यदि ऐसा तुम कर सको तो तुमने खोल लिए जीवन के सारे रहस्य। फिर मृत्यु भी मृत्यु नहीं रह जाती।

ओशो

डेंग डेंग डोको डेंग



**Sanjeev Mishra**

3d · 🌐



अब उत्सव को टाला नहीं जा सकता...
(एक सूफी कहानी)

मैंने एक सूफी फ़कीर के विषय में सुना है जो किसी राजा के यहां सलाहकार था। फ़कीर राजा के बहुत करीब था और उसकी हर बात सुनता था। इससे दूसरे दरबारी उससे ईर्ष्या करने लगे थे। एक बार उन्होंने राजा को फ़कीर के खिलाफ करने की एक योजना बनाई और मिलकर राजा के पास पहुंचे। उन्होंने राजा से कहा कि वह फ़कीर आपके इतना नजदीक होने के कारण बहुत अहंकारी हो गया है, इतना कि वह कहता फिरता है कि राजा तो मूर्ख है और कुछ भी नहीं जानता, यदि मैं न होता तो राज्य तो कभी का डूब चुका होता। राजा यह सब सुनकर आगबबूला हो गया। राजा ने उसे मृत्युदंड दिए जाने की घोषणा कर दी और अपने दूत को फ़कीर के घर उसे यह फरमान सुनाने के लिए भेज दिया।

उस दिन फ़कीर का जन्मदिन था। उसके मित्र उसका जन्मदिन मनाने के लिए इकट्ठा हुए थे। दूत ने आकर फ़कीर से कहा, "मेरे लिए बहुत कठिन है आपसे यह कह पाना, लेकिन राजा की आज्ञा है तो मुझे आपको बताना ही पड़ेगा कि उन्होंने आज शाम छह बजे आपको फांसी दिए जाने की घोषणा की है। तो छह बजे तक तैयार रहें। "

सब मित्र इकट्ठा थे, उत्सव मनाया जा रहा था, स्वादिष्ट से स्वादिष्ट भोजन तैयार किया गया था, सब नाच-गा रहे थे। इस संदेश ने पूरा वातावरण बदल दिया। नाच-गाना अचानक रुक गया, चारों ओर उदासी छा गयी। फ़कीर ने अपने मित्रों से कहा, "तुम रुक क्यों गए? अब तो मेरे जीवन का अंतिम अध्याय आ गया, अब हम अपने उत्सव को टाल नहीं सकते। अब हम ऐसा नहीं कह सकते कि उत्सव को कल पूरा कर लेंगे। हमें अपने गीत को आज ही गाना होगा, अपने नृत्य को आज ही नाचना होगा। हमारे हाथों में समय होता तो आज निराश हो लेते और कल उत्सव मना लेते, लेकिन अब हमारे पास समय नहीं है कि हम निराश हो सकें, अब तो उत्सव को पूरा करना ही होगा। आओ नाचे, आओ गायें।"

वह फ़कीर ऐसे नाचने लगा जैसे उसे पंख उग आये हों। वह नाच रहा

कुदरत के दो रास्ते

एक बच्चा दोपहर में नंगे पैर फूल बेच रहा था। लोग मोलभाव कर रहे थे। एक सज्जन ने उसके पैर देखे; बहुत दुःख हुआ। वह भागकर गया, पास ही की एक दुकान से बूट लेकर के आया और कहा-बेटा! बूट पहन ले। लड़के ने फटाफट बूट पहने, बड़ा खुश हुआ और उस आदमी का हाथ पकड़ के कहने लगा-आप भगवान हो। वह आदमी घबराकर बोला-नहीं...नहीं...बेटा! मैं भगवान नहीं। फिर लड़का बोला-जरूर आप भगवान के दोस्त होंगे, क्योंकि मैंने कल रात ही भगवान को अरदास की थी कि भगवानजी, मेरे पैर बहुत जलते हैं। मुझे बूट लेकर के दो। वह आदमी आंखों में पानी लिये मुस्कराता हुआ चला गया, पर वो जान गया था कि भगवान का दोस्त बनना ज्यादा मुश्किल नहीं है। कुदरत ने दो रास्ते बनाए हैं-

■ देकर जाओ या

■ छोड़कर जाओ

साथ लेकर के जाने की कोई व्यवस्था नहीं।

OSHO SUTRA

अकेला होना नियति है

अकेला होना नियति है

कोई दूसरे को थोड़े ही प्रेम करता है,
लोग अपने को ही प्रेम करते हैं।
पति पत्नी को इसलिए प्रेम करता है
कि पति अपने को प्रेम करता है
और पत्नी सुख देती है, सुविधा देती है।
यहां हम सब एक-दूसरे का
उपयोग कर रहे हैं।
कोई तुम्हारे लिए यहां नहीं जी रहा है।
तुम बिलकुल अकेले हो।
यहां कोई संगी नहीं, कोई साथी नहीं,
मौत तो सब संगी-साथी छीन लेगी।
मौत ही जब तुम्हें अकेला कर देगी
तो फिर जीवन के संग-साथ का
कितना मूल्य है!

‘ओशो’

Osho

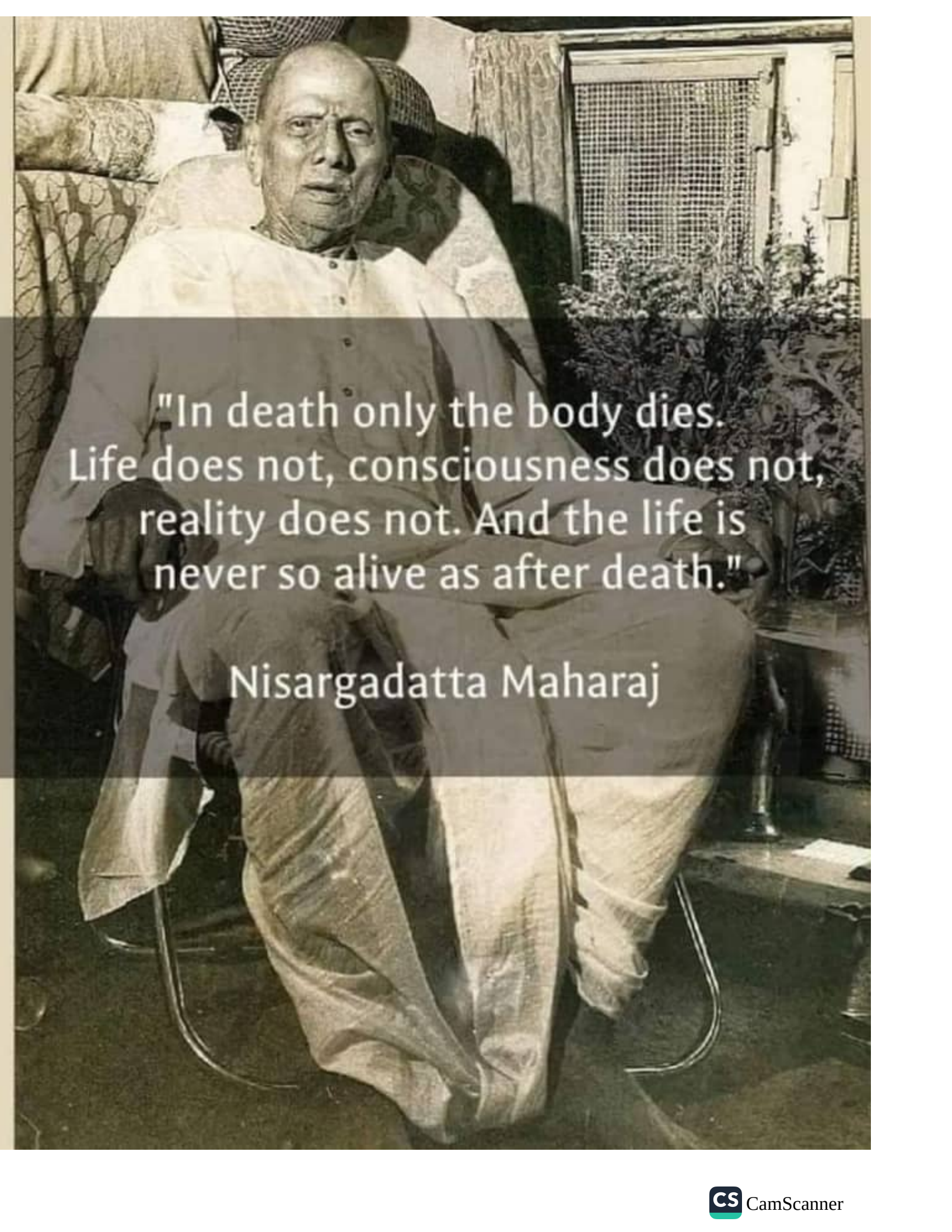
आचार्य श्री रजनीश



उपासना का अर्थ है,
परमात्मा का सतत स्मरण बना रहे,
ऐसी कोई भी क्रिया, उसका स्मरण न खोए,
ए कांस्टेंट रिमेंबरिंग। कोई भी क्रिया,
परमात्मा के स्मरण को सतत बनाए रखे,
तो उपासना है।

और कृष्ण कहते हैं
फिर वह कुछ भी हो,
यज्ञ हो, कि श्रौत-कर्म हो,
कि अग्नि हो,
कि हवनरूप क्रिया हो,
कि मंत्र हो, कि तंत्र हो, कुछ भी हो,
मैं तुझे भीतर मिलूंगा।
कहीं से भी तू आ,
तू मेरे पास
पहुंच जाएगा।

आचार्य श्री रजनीश Osho
गीतादर्शन अ.9.प्र.6/105॥ ज्ञान, भक्ति, कर्म॥

A photograph of Nisargadatta Maharaj, an elderly man with a shaved head and a serene expression, sitting in a patterned armchair. He is wearing a light-colored, button-down shirt and a dhoti. The background shows a window with a metal grille and some foliage. A semi-transparent dark grey box is overlaid on the image, containing the text.

"In death only the body dies.
Life does not, consciousness does not,
reality does not. And the life is
never so alive as after death."

Nisargadatta Maharaj

दुनिया में दो तरह के शास्त्र हैं।
एक तो वे शास्त्र हैं, जो उन लोगों ने कहे हैं,
जिन्होंने मन को मिटाकर पूर्ण को जाना।
और एक वे शास्त्र हैं, जो उन लोगों ने कहे हैं,
जिन्होंने मन को व्यवस्थित करके, शिक्षित करके,
अध्ययन से, विचार से, मनन से, चिंतन से, तर्क से,
अनुभव से मन को विकसित किया और फिर
जगत के संबंध में दृष्टि को लिपिबद्ध किया।

फिलासफी और रिलिजन, धर्म और दर्शन में यही फर्क है।

धर्म उन लोगों के वक्तव्य हैं, जिन्होंने मन को मिटाकर जाना,
जिन्होंने मन के प्रिज्म को तोड़ डाला
और अस्तित्व की किरण को सीधा देखा-अविभाज्य,
बिना बंटा हुआ, अखंड।
और दर्शन, फिलासफी उन लोगों के वक्तव्य हैं,
जिन्होंने मन को खूब विकसित किया, ट्रेन किया,
प्रशिक्षित किया, समझाया, सिखाया,
पढ़ाया, और फिर जगत के संबंध में
एक दृष्टि निर्मित की।

आचार्य श्री रजनीशOsho
गीतादर्शन अ.9.प्र.8/107॥ जीवन के एक्य का बोध मन में॥

facebook



See all >

**Anamcara Rames**

1d · 🌐

ईश्वर से हमारा अर्थ है, अस्तित्व का जो सार है। इसलिए ईश्वर हमारे लिए व्यक्ति नहीं है। वह कहीं आकाश में सात आसमानों के ऊपर बैठा हुआ सिंहासन पर कोई व्यक्ति नहीं है, जो राज-काज चला रहा है। इतनी बचकानी हमारी धारणा नहीं है। यह बच्चों का ईश्वर है। इससे और गहरे ईश्वर को बच्चे नहीं समझ सकते। लेकिन हमारे लिए ईश्वर का अर्थ है, जिसमें सभी कुछ धारा हुआ है--सभी कुछ; जन्म भी और मृत्यु भी; और सृजन भी और प्रलय भी।

तो इसका साधक के लिए क्या अर्थ होगा?

साधक के लिए अर्थ होगा कि जब भी आप किसी चीज को देखें, तो उसकी शाखाओं पर कम, उसकी जड़ों पर ज्यादा ध्यान दें। और जब भी किसी चीज को आप देखें, तो जो प्रकट है, उस पर कम; और जो अप्रकट है, उस पर ज्यादा ध्यान दें। जो दिखाई पड़ रहा है, उस पर कम; और जिसके कारण दिखाई पड़ रहा है, उसकी खोज करें। मछली को देखें, तो सागर की याद करें। और वृक्ष को देखें, तो जड़ों का स्मरण आ जाए। सदा ही उसकी खोज करते रहें, जो नीचे छिपा है और सभी को सम्हाले हुए है।

तो कृष्ण कहते हैं, मैं धाता हूं। और अगर कोई धर्म की खोज करता रहे, तो मुझ तक पहुंच जाता है।



आचार्य श्री रजनीशOsho

गीतादर्शनअ.9.प्र.7/106

॥ मैं ओंकार हूं ॥

ईश्वर से हमारा अर्थ है,
अस्तित्व का जो सार है।

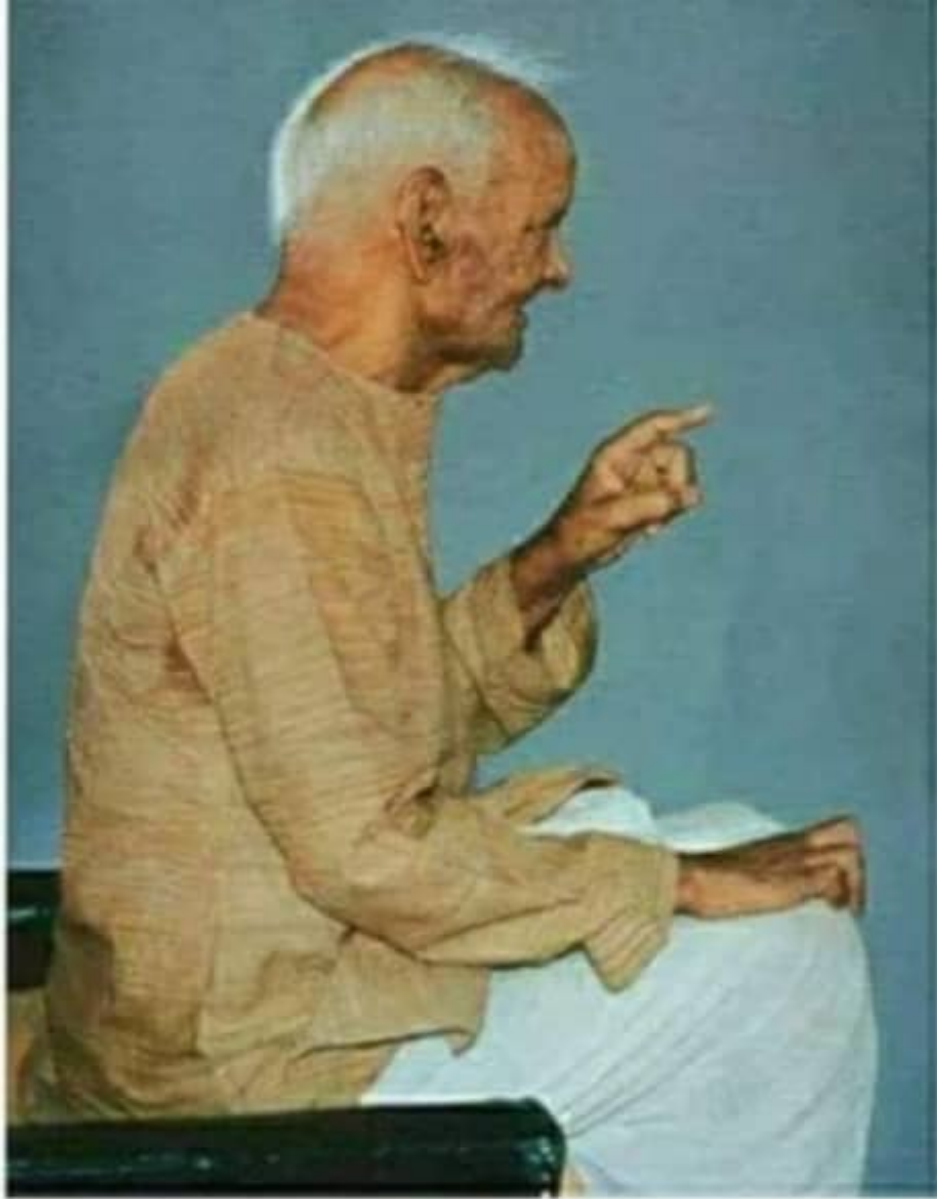
इसलिए ईश्वर हमारे लिए व्यक्ति नहीं है।
वह कहीं आकाश में सात आसमानों के ऊपर बैठा हुआ सिंहासन पर
कोई व्यक्ति नहीं है, जो राज-काज चला रहा है।
इतनी बचकानी हमारी धारणा नहीं है, यह बच्चों का ईश्वर है।
इससे और गहरे ईश्वर को बच्चे नहीं समझ सकते। लेकिन

हमारे लिए ईश्वर का अर्थ है, जिसमें सभी कुछ धारा हुआ है
--सभी कुछ; जन्म भी और मृत्यु भी; और सृजन भी और प्रलय भी।
तो इसका साधक के लिए क्या अर्थ होगा?
साधक के लिए अर्थ होगा कि जब भी आप किसी चीज को देखें,
तो उसकी शाखाओं पर कम, उसकी जड़ों पर ज्यादा ध्यान दें।
और जब भी किसी चीज को आप देखें, तो जो प्रकट है, उस पर कम;
और जो अप्रकट है, उस पर ज्यादा ध्यान दें।
जो दिखाई पड़ रहा है, उस पर कम; और
जिसके कारण दिखाई पड़ रहा है, उसकी खोज करें।
मछली को देखें, तो सागर की याद करें।
और वृक्ष को देखें, तो जड़ों का स्मरण आ जाए।
सदा ही उसकी खोज करते रहें, जो नीचे छिपा है
और सभी को समहाले हुए है।
तो कृष्ण कहते हैं, मैं धाता हूं।
और अगर कोई धर्म की खोज करता रहे,
तो मुझ तक पहुंच जाता है।

आचार्य श्री रजनीश Osho
गीतादर्शन अ.9.प्र.7/106॥ मैं ओंकार हूं ॥



ओढ़ कर चादर मिट्टी की बेनिशां हो जायेंगे।
आयेगा एक दिन हम भी दास्ताँ हो जायेंगे।।

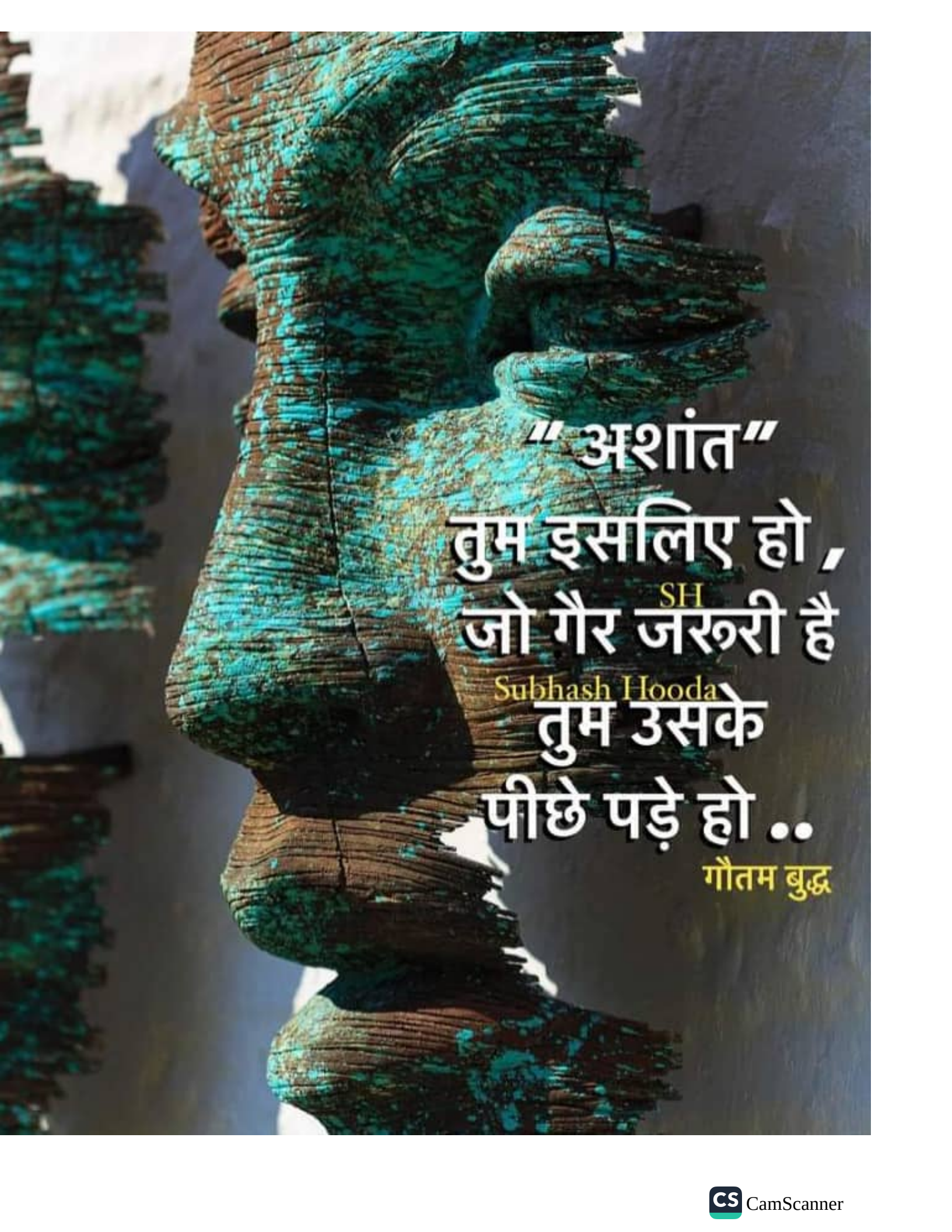


पूजा कोई जादू नहीं विज्ञान है , इस मार्ग
पर चलने वाले को अपना चिंतन , चरित्र
और व्यवहार उच्च कोटि का बनाना
पड़ता है..!!

पं० श्री राम शर्मा आचार्य



तुम ईश्वर को
कहीं आकाश में बैठा!
मुकुट लगाएं,
या गले में सांप डालें मत
समझ लेना!
यह संपूर्ण अस्तित्व ही
ईश्वर है, जो तुम्हारे भीतर
भी विराजमान है!
उसे अगर पहचान लो
तो तुम ही ईश्वर हो!
~ओशो



“अशांत”
तुम इसलिए हो,
जो गैर जरूरी है
SH
Subhash Hooda
तुम उसके
पीछे पड़े हो ..

गौतम बुद्ध



Like



Send

**Sanjeev Mishra**

18h · 🌐



साधो ये मुरदों का गांव
पीर मरे पैगम्बर मरिहैं
मरि हैं जिन्दा जोगी
राजा मरिहैं परजा मरिहै
मरिहैं बैद और रोगी
नाम अनाम अनंत रहत है
दूजा तत्व न होइ
कहत कबीर सुनो भाई साधो
भटक मरो ना कोई

- कबीर





अगर नदी को तैरकर पार करना है, और अनजाने या गलती में अगर भेड़ की पुंछ पकड़ ली तो भेड़ अपने साथ तुम्हें भी ले डूबेगी। भेड़ प्रतीक है भीड़ का, भीड़ की चाल भेड़चाल।

पण्डित, पुरोहित भी भेड़ हैं, तुम्हारी तरह ही अंधे। ना तुम्हें होश है ना उनको। तुम्हारा शोषण ही उनका धर्म है, और उन्हीं को तुम पकड़े हुए हो जोर से। दोनों अंधे। नानक कहते हैं, अँधा अँधा ठेलिया दोनों कूप पड़त। अंधे अंधों को ठेल रहें हैं, अंधे अंधों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। दोनों कुएं में गिरेंगे ही। कब तक और कहाँ तक बचेंगे? मगर कतारें लगी हुई हैं। सब एक दूसरे को पकड़े हैं बेहोश, आँखें बन्द कर, ये सोचकर के इतनी भीड़ खड़ी है कतार में जरूर कुछ ना कुछ तो बात होगी। ओशो

आस्तित्व से
संबंध जोड़ो।
मंदिरों से,
मस्जिदों से संबंध तोड़ो
वृक्षों से,
फूलों से,
चांद-तारों से
संबंध जोड़ो।
क्योंकि वे
जीवंत परमात्मा है।
तुम मुर्दा मूर्तियों की
पूजा में संलग्न हो।

ओशो

अभी झरत, बिगसत कंवल

" गालिब "

ने

यह

कह कर

" तोड़ "

दी तस्बीह

(माला)...

गिनकर " क्यों "

नाम लू उसका

जो बेहिसाब देता है ।



8

1 comment • 3 shares



Like



Comment



Send



Share



Sanjeev Mishra

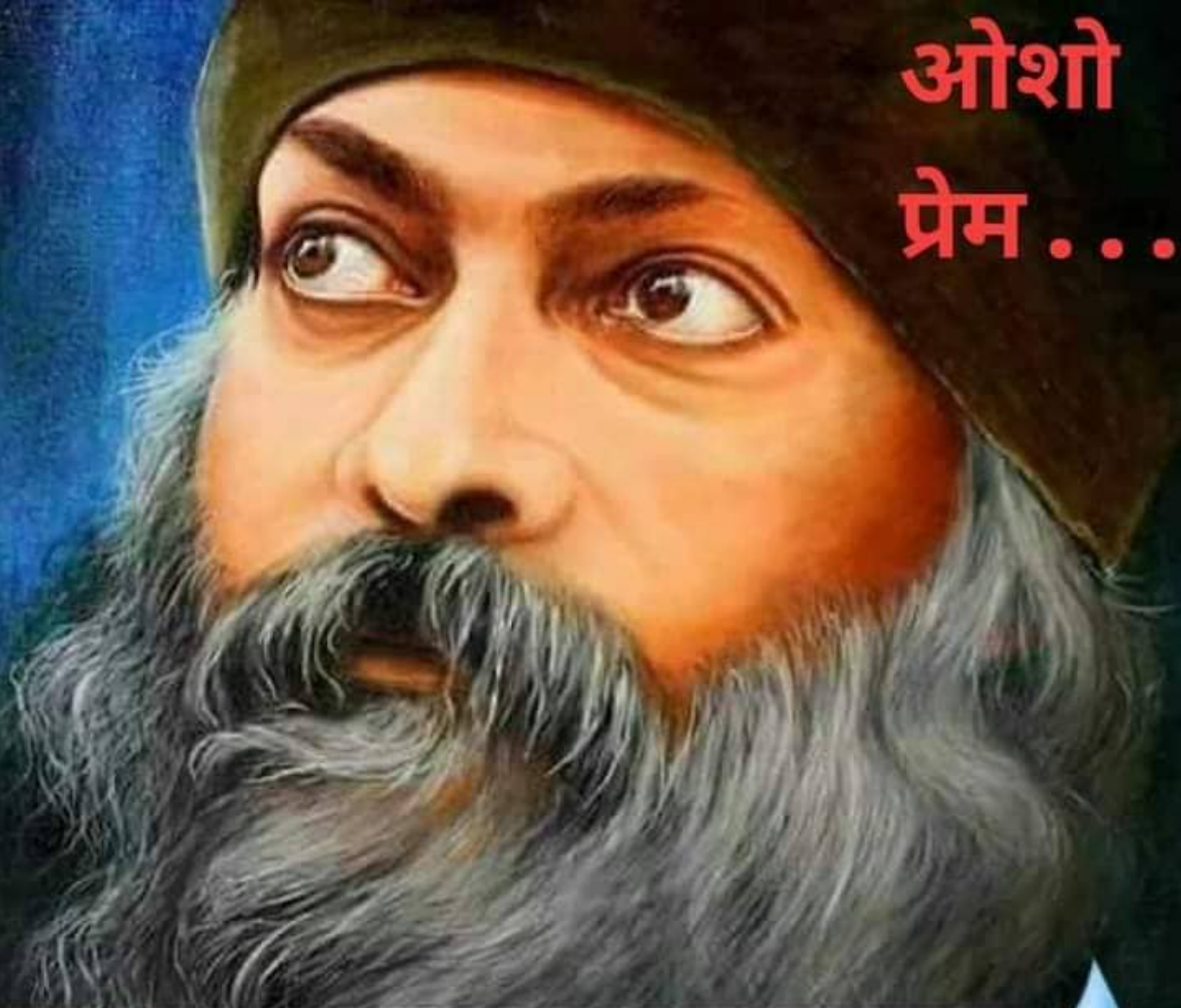
18h · 🌐



मन मस्त हुआ तब क्यों बोलै।
हीरा पायो गाँठ गाँठियायो, बार-बार वाको क्यों खोलै।
हलकी थी तब चढी तराजू, पूरी भई तब क्यों तोलै।
सुरत कलाली भई मतवाली, मधवा पी गई बिन तोलै।
हंसा पायो मानसरोवर, ताल तलैया क्यों डोलै।
तेरा साहब है घर माँहीं बाहर नैना क्यों खोलै।
कहै 'कबीर सुनो भई साधो, साहब मिल गए तिल ओलै॥

- कबीर





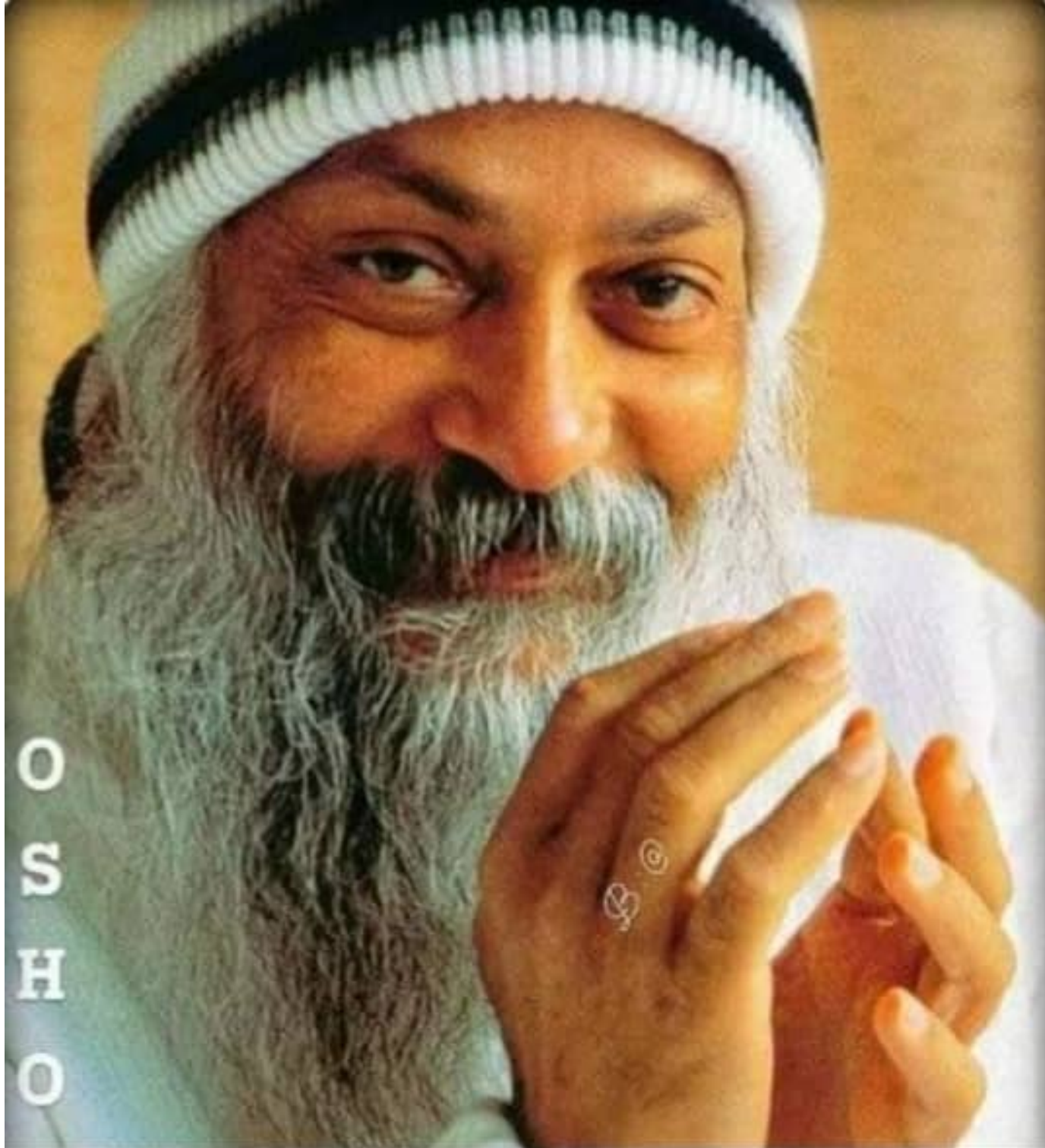
ओशो
प्रेम...

पुनर्जन्म :

शरीर तो एक बार जो मिला , वह मिट्टी में गिर जाता है ।
लेकिन उसके भीतर चित - अनुभवों का जो संग्रह है --
वह नई छलांग ले लेता है , वह नया जन्म लेता है।

इस बात को समझना। शरीर का नया जन्म हो ही नहीं
सकता , क्योंकि मिट्टी है , गिरा सो गिरा। और आत्मा का
नया जन्म हो ही नहीं सकता , क्योंकि आत्मा शाश्वत है ;
न उसका कोई जन्म है , न मृत्यु है।

फिर जन्म किसका होता है? दोनों के बीच में जो मन है ,
उसका ही जन्म होता है । यह जो पुनर्जन्म का सिद्धांत
है , मन के संबंध में लागू होता है , आत्मा के संबंध में
लागू नहीं होता। ओशो (Dr Sohan Lal Narang)



शुभ मुहुरत का इंतजार कभी ना
करे हम जो आज जिंदा है उसे
बडा शुभ दीन क्या हो सकता है

फक नहा पड़ता 😞

 271

152 comments

 Like Comment Send**ओशो - जीवन-मृत्यु**

...

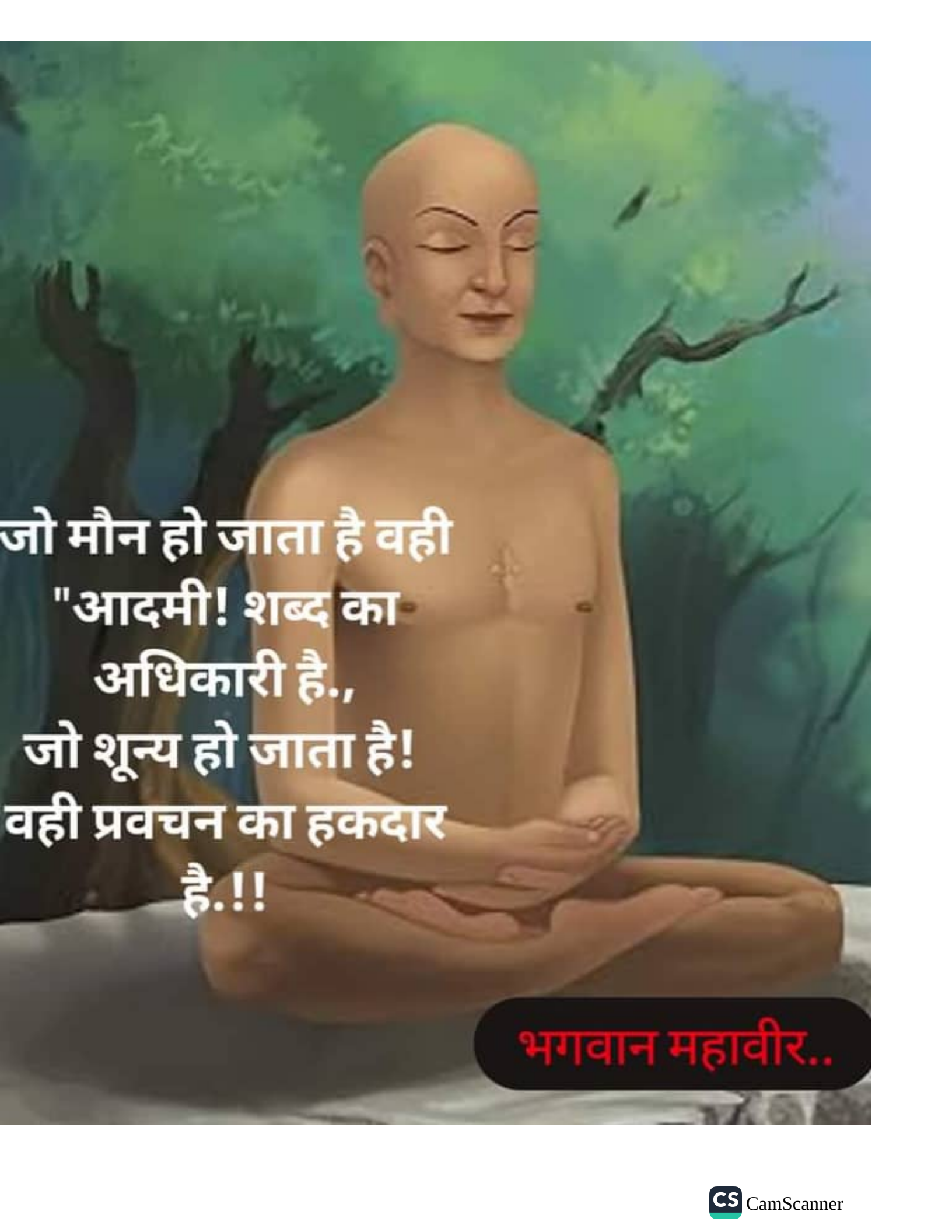


दिनेश कौशिक · 3d · 🌐

महावीर ने अपनी साधना के दौरान एक ही बात सदा ध्यान रखी! कि जब तक मैं पूरा मौन नहीं हो जाता, तब तक शब्द पर मेरा कोई अधिकार नहीं है!

यह बड़ा उल्टा दिखाई पड़ेगा! जो मौन हो जाता है, वही शब्द का अधिकारी है; जो शून्य हो जाता है, वही प्रवचन का हकदार है। जो भीतर शब्दों से भरा है, वह जो भी बोल रहा है, वह बोलना वमन है, उल्टी है। वह इतना भरा है कि उसे निकालने की उसे जरूरत है! आप सिर्फ एक पात्र हैं, जिसमें वह वमन कर देता है। लेकिन आपकी जरूरत का सवाल नहीं है कि आपको क्या चाहिए, असली जरूरत बोलनेवाले की है कि उसे क्या अपने से निकालना है.!!

ओशो.. 🍁

A painting of Lord Mahavir, a Jain deity, depicted in a meditative posture (Padmasana) with his eyes closed and hands in a mudra. He is bald and has a serene expression. The background shows a lush green forest with trees and a clear sky. The text is overlaid on the left side of the image.

जो मौन हो जाता है वही
"आदमी! शब्द का
अधिकारी है.,
जो शून्य हो जाता है!
वही प्रवचन का हकदार
है.!!

भगवान महावीर..

राम राम सब कोई कहे,
ठग ठाकुर और चोर।
जिस राम से मीरा ध्रुव प्रहलाद तरे,
वह राम कोई और।

राम-राम तो साधु ही नहीं साहूकार, ठग, चोर आदि सभी कहते हैं
लेकिन केवल राम-राम कहने से मुक्ति मिलने वाली नहीं है। जिस
राम की बात संतों ने अपनी वाणी में कही है और जिसके द्वारा
ध्रुव, प्रहलाद और मीरा को परमपद प्राप्त हुआ वह 'आत्माराम'
है, वह सबके हृदय में ही रहता है और केवल संत कृपा से उसे
अनभव किया जा सकता है।



78

9 comments • 29 shares



Like



Comment



Send



Share

**ओशो का हिन्दी साहित्य**

Ram Murti Chopra · 3h · 🌐

बुद्ध कहते हैं जीवन दुख है , इसे जो जान ले वही आनंद को उपलब्ध होता है ..और जो समझे कि जीवन सुख है , वह सिर्फ दुख को उपलब्ध होता है...ठीक है यह गणित बुद्ध का , बहुत ही गहरा है...

बुद्ध या लाओत्से कहते हैं कि जो जीवन को सुख समझ कर चलेगा वह दुख पाएगा क्योंकि जीवन दुख है...अगर मैं कांटे को फूल मान कर चलूंगा तो कांटा चुभेगा और दुख पाऊंगा क्योंकि काँटा है फूल नहीं है...लेकिन अगर मैं कांटे को काँटा ही मान कर चलू तो फिर काँटा मुझे दुख नहीं दे सकता...काँटा दुख देने की तरकीब करता है , फूल जैसा दिखाई पड़ता है तब दुख दे पाता है...

बुद्ध कहते हैं जीवन दुख है , इसे जान लो फिर तुमसे तुम्हारे सुख को कोई छीन न सकेगा...और तुमने जीवन को सुख जाना कि तुम दुख में पड़ोगे क्योंकि तुमने भ्रान्ति का सिलसिला शुरू किया ...

ताओ उपनिषद...ओशो



5

1 comment



Like



Comment



Send



Share

**Suggested Pages for you**

Suggested Pages for you

"लाखों लोग पैदा होते हैं, अपना जीवन-काल जीते हैं, और मर जाते हैं, लेकिन यह जाने बिना कि वे क्यों पैदा हुए थे, बिना यह जाने कि उन्हें जीवन का मौका क्यों दिया गया था। यह जाने बिना कि वे कौन हैं, वे कहां से आते हैं और कहां जा रहे हैं, उनकी नियति क्या है। इस तरह का अर्थहीनता का जीवन अधिक से अधिक एक प्रकार से सब्जी तरकारी बन कर जीने जैसा है: बिना किसी चेतना के, बिना किसी जागरूकता के... बिना कभी तुम्हारे अस्तित्व के पीछे छिपी भव्यता को जाने"

ओशो

*Inside Scoop
from the*





हालांकि माना जाता है कि मृत्यु के 05 घंटे तक आंखें काम करती हैं। अगर आंखों का दान करना हो तो इसी समय तक हो जाना चाहिए अन्यथा धीरे धीरे कॉर्निया धुंधला होने लगता है और फिर ये काम करना बंद कर देती हैं. (news18)



अगली गैलरी



असल में कैसी है पाकिस्तान की रेड लाइट 'हीरामंडी', जिस पर भंसाली ने बनाई मूवी

अगली गैलरी

Taboola Feed





हमारी पलकें केंद्रीय तंत्रिका तंत्र द्वारा नियंत्रित होती हैं। तंत्रिका तंत्र हमारे मस्तिष्क को संकेत देता है जो हमारे शरीर को हमारी आंखें बंद रखने के लिए कहता है। जब हम जीवित होते हैं तो यह प्रणाली आमतौर पर काफी अच्छी तरह से काम करती है। इसी वजह से जब आंखों को तेज धूप लगती है या हम सोने वाले होते हैं तो आंखें बंद कर लेते हैं। लेकिन मृत्यु की स्थिति में केंद्रीय तंत्रिका तंत्र काम करना बंद कर देता है इसी वजह से आंखों पर उसका कंट्रोल खत्म हो जाता है और पलकें खुल जाती हैं। (news18)





Osho the ultimate guru 🕯️

उस दिन आदमी आंख बंद करता
है

और समझ जाता है कि सारी दौड़ व्यर्थ है।



11



2



Send

★ Send a gift



Osho_the_ultimate_g...



Follow

मैं कौन हूँ। 😞 ... more



Add a comment...



ओशो सूत्र

“यह तुम्हारा निर्णय है।

सदा ध्यानरहे,

यहां जो भी घट रहा है वह तुम्हारा निर्णय है।

अगर तुम संन्यासी हो तो यह तुम्हारा निर्णय है।

अगर तुम संन्यास छोड़ते हो

तो यह तुम्हारा निर्णय है।

अगर तुम फिर से लेना चाहते हो

तो भी वह निर्णय

तुम्हारा ही होगा।

मैं सब कुछ

तुम पर छोड़ता

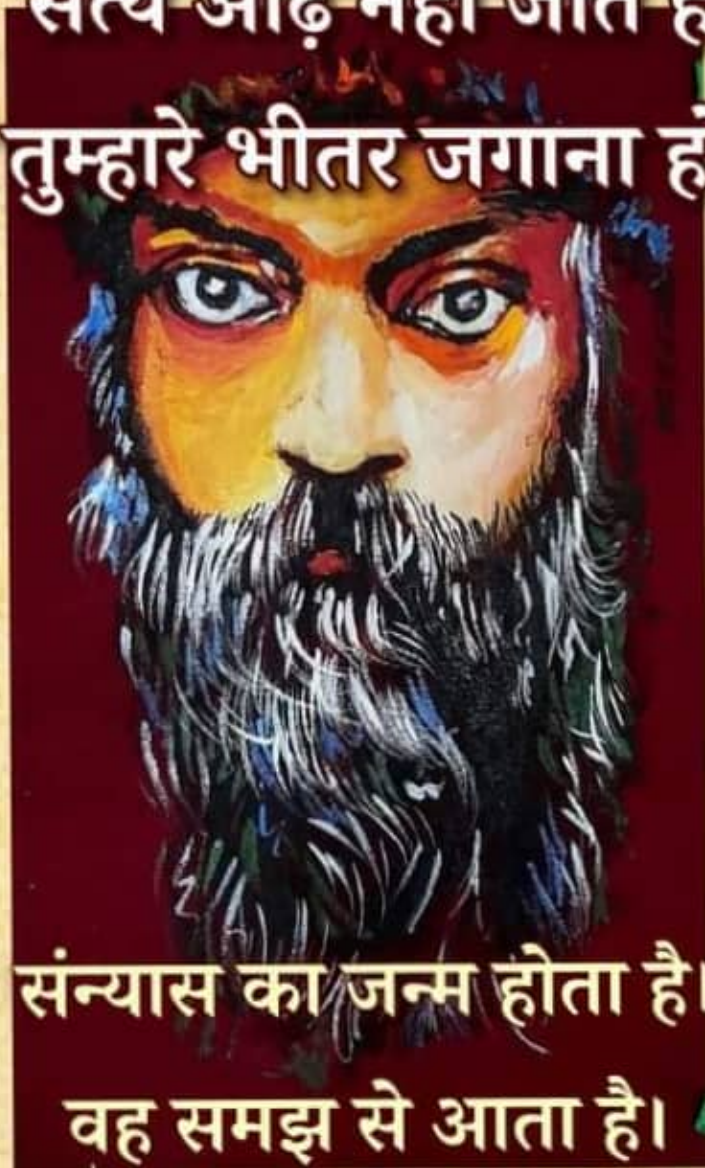
हूँ।”

आचार्य श्री रजनीश

ओशो सूत्र

सत्य ओढ़े नहीं जाते हैं।

उन्हें तुम्हारे भीतर जगाना होता है।



संन्यास का जन्म होता है।

वह समझ से आता है।

उस समझ से हम परिवर्तित होते जाते हैं।

संन्यास का अर्थ है:

यह बोध कि मैं शरीर ही नहीं हूँ, आत्मा हूँ।

आचार्य श्री रजनीश

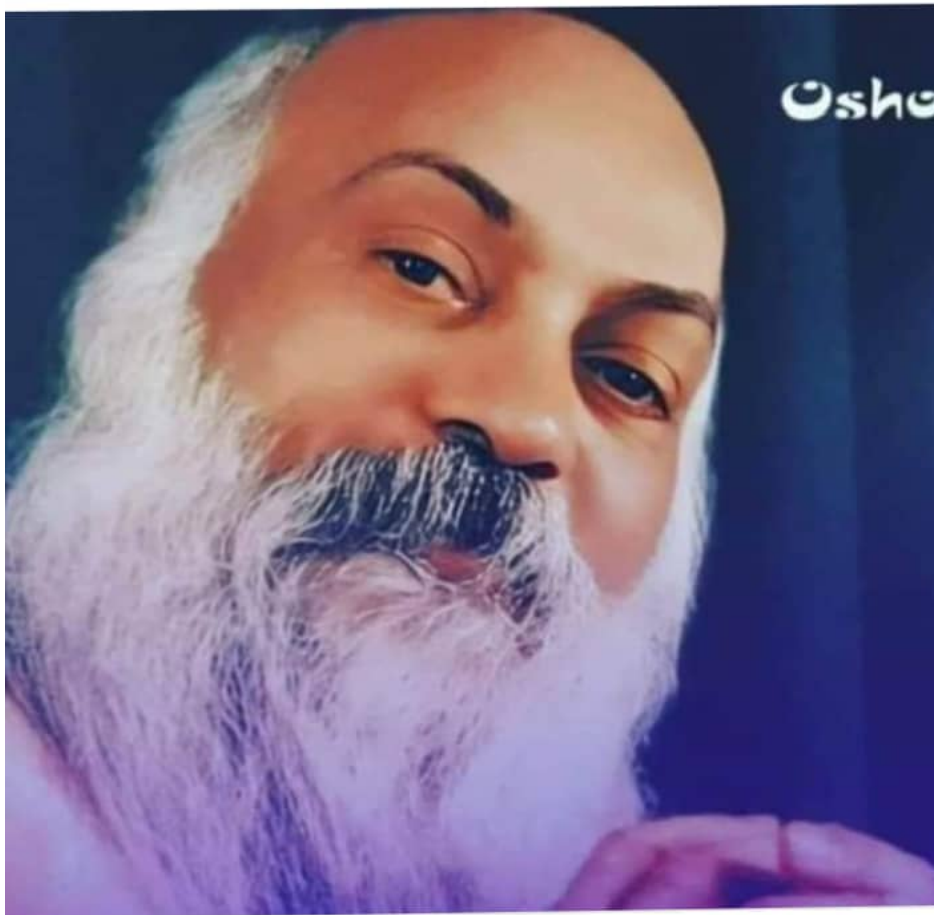


संन्यास की परिभाषा
“अपना जीवन समग्रता से जीना
और जिसकी परम और एकमात्र शर्त है:
सजगता, ध्यान।”

आचार्य श्री रजनीश

लेकिन आदमी बेईमान है। तीर्थों में खोजने इसलिए नहीं जाता कि तीर्थों में परमात्मा मिलता है। तीर्थों में खोजने इसलिए जाता है कि यह भी परमात्मा से बचने की अंतिम व्यवस्था है, आखिरी चालाकी—कि खोज तो रहे हैं भाई, और क्या करें! इतना श्रम उठा रहे हैं, नहीं मिलता तो भाग्य में नहीं होगा; नहीं मिलता तो शायद होगा ही नहीं; नहीं मिलता तो शायद मिलना ही नहीं चाहता है। लेकिन अपनी तरफ से तो हमने सब दांव पर लगा दिया है, घर छोड़ दिया, द्वार छोड़ दिया, खोजने निकल पड़े हैं। यह आखिरी तरकीब है। कभी तुम धन खोजते थे, उस कारण परमात्मा को न पा सके। कभी पद खोजते थे, उस कारण परमात्मा को न पा सके। अब तुम परमात्मा को ही खोज रहे हो और उस कारण परमात्मा को न पा सकोगे, क्योंकि खोजने वाला चित्त वासनाग्रस्त है। और जहां वासना है वहां प्रार्थना नहीं है। और जब तक तुम्हारे मन में तनाव है कुछ पाने का, तब तक तुम पा न सकोगे। जब तक दौड़ोगे, चूकोगे। रुको और पा लो।

ओशो
काहे होत अधीर
प्रवचन 1





ओशो का हिन्दी साहित्य

Rahul Kumar Ojha · 22h ·



मैंने सुना है, एक अंधे आदमी की आंख का ऑपरेशन हो रहा था। उसने डाक्टर से पूछा कि क्या आंख के ऑपरेशन के बाद मैं पढ़ना—लिखना कर सकूंगा? डाक्टर ने कहा, निश्चित। जाली है तुम्हारी आंख पर, कट जाएगी जाली, निकल जाएगी जाली, जरूर पढ़—लिख सकोगे। वह आदमी बड़ी खुशी से बोला कि हे प्रभु, तेरा बड़ा धन्यवाद है! डाक्टर ने कहा, इसमें धन्यवाद प्रभु को देने की कोई जरूरत नहीं, यह तो स्वाभाविक है, आंख से जाली कट गई कि पढ़ना—लिखना आसान हो जाएगा। उस अंधे ने कहा, लेकिन बात यह है कि पढ़ना—लिखना मैं जानता नहीं। जब मेरी आंख ठीक थी तब भी मैं पढ़—लिख नहीं सकता था। तो यह चमत्कार ही है कि अब तुम जाली काट दोगे और मुझे पढ़ना—लिखना आ जाएगा। इससे बड़ा और चमत्कार क्या हो सकता है! अगर पढ़ना—लिखना नहीं आता तो आंख की जाली कटने से भी नहीं आ जाएगा।

यहां तुम्हें परमात्मा नहीं दिखाई पड़ता; जंगल में भी आंख तो यही होगी, तुम तो यही होओगे—ठीक यही, जरा सा भी तो भेद न होगा। परिस्थिति बदल जाएगी, मनःस्थिति तो न बदल जाएगी। तुम यहां नहीं देख पाते उसे, वहां कैसे देख पाओगे? इन वृक्षों में नहीं दिखाई पड़ता, जंगल के वृक्षों में कैसे दिखाई पड़ेगा? लोगों में नहीं दिखाई पड़ता, पत्थर—पहाड़ों में कैसे दिखाई पड़ेगा?

लेकिन आदमी बेईमान है। तीर्थों में खोजने इसलिए नहीं जाता कि तीर्थों में परमात्मा मिलता है। तीर्थों में खोजने इसलिए जाता है कि यह भी परमात्मा से बचने की अंतिम व्यवस्था है, आखिरी चालाकी—कि खोज तो रहे हैं भाई, और क्या करें! इतना श्रम उठा रहे हैं, नहीं मिलता तो भाग्य में नहीं होगा; नहीं मिलता तो शायद होगा ही नहीं; नहीं मिलता तो शायद मिलना ही नहीं चाहता है। लेकिन अपनी तरफ से तो हमने सब दांव पर लगा दिया है, घर छोड़ दिया, द्वार छोड़ दिया, खोजने निकल पड़े हैं। यह आखिरी तरकीब है। कभी तुम धन खोजते थे, उस कारण परमात्मा को न पा सके। कभी पद खोजते थे, उस कारण परमात्मा को न पा सके। अब तुम परमात्मा को ही खोज रहे हो और उस कारण परमात्मा को न पा सकोगे, क्योंकि खोजने वाला चित्त वासनाग्रस्त है। और जहां वासना है वहां प्रार्थना नहीं है। और जब तक तुम्हारे मन में तनाव है कुछ पाने का, तब तक तुम पा न सकोगे। जब तक दौड़ोगे, चकोगे। रुको और पा लो।

रहिमन चुप हो बैठिये, देखि दिनन के फेर।
जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहैं देर॥

रहीम

कभी तुमने सोचा एकांत में बैठ कर, कि तुम्हारी पत्नी का चेहरा कैसा है? आंख बंद करके सोचो, पत्नी का चेहरा अपनी आंख में न ला सकोगे। तुमने उसे इतना देखा है, कि तुमने देखना ही बंद कर दिया। उसका चेहरा भी उभरता नहीं, साफ नहीं होता, रूपरेखा कैसी है! तुमने कई सालों से उसे देखा ही नहीं है। वर्षों पहले तुम उसे घर ले आये थे, तब शायद एकाध बार देखा होगा शुरू में; फिर तुमने देखा ही नहीं है। तुम भूल ही गये हो। सड़क से निकलने वाली नई अपरिचित स्त्री का चेहरा शायद तुम्हें याद भी रह जाये, लेकिन पत्नी का भूल जाता है, पति का भूल जाता है, मित्र का भूल जाता है!

जिस चीज के साथ तुम धीरे-धीरे रम जाते हो, उसकी चोट पड़नी बंद हो जाती है। जीवन बहुतों के लिये समस्या ही नहीं है। वे चकित होते हैं दूसरों को जीवन का समाधान खोजते हुए देखकर। वे हैरान होते हैं। उनकी नजरों में ये खोजनेवाले पागल हैं, दीवाने हैं। इनके दिमाग में कुछ खराबी हो गई है; अन्यथा दुनिया सब ठीक है।

“समस्या कहां है?” वेश्या ने पूछा।

वेश्या भी विदा कर दी गई। क्योंकि जिसके लिए समस्या ही नहीं है, उसे समाधान की यात्रा पर कैसे भेजा जा सकता है?

चौथी स्त्री के सामने भी वही सवाल फकीर ने रखा। उस स्त्री ने सवाल सुना, आंखें बंद कीं, आंखें खोलीं और कहा, “मुझे कुछ पता नहीं। मैं निपट अज्ञानी हूं।”

वह चौथी स्त्री स्वीकार कर ली गई।

ज्ञान के मार्ग पर वही सकता है, जो अज्ञान को स्वीकार ले।

स्वाभाविक है यह बात। क्योंकि अगर तुम्हारे पास उत्तर है ही, तो फिर किसी उत्तर की कोई जरूरत न रही। उत्तर है ही, इसका अर्थ है तुम स्वयं ही अपने गुरु हो; किसी गुरु का कोई सवाल न रहा। गुरु की खोज वही कर पाता है, जिसके पास कोई उत्तर नहीं है।

कहे कबीर दीवाना, प्रवचन-♣

संकलन-रामजी 🙏🌹🌹

👍 Raikz Osho



Like



Comment



Send



Share



ओशो - जीवन-मृत्यु



नहीं रहीं। जिंदगी रोज नये ढांचे लेती है, नये रूप, नये रंग!

गंगा रोज नये किनारे को छूती है, पुराने किनारे छूट गए। और तुम पुराने नक्शे लिये घूम रहे हो। तुम्हारा गंगा से मिलन नहीं होता। क्योंकि गंगा नई होती जा रही है, तुम्हारे पास पुराने नक्शे हैं। गंगा ने जिन जमीनों पर बहना छोड़ दिया, तुम वहां के नक्शे लिये हो। और गंगा जहां बह रही है अभी, इस क्षण, वहां तुम्हारे नक्शे की वजह से तुम नहीं पहुंच पाते। कभी-कभी बिना नक्शे का आदमी भी पहुंच जाये, पर पुराने नक्शों को लेकर चलने वाला कभी नहीं पहुंच सकता। उसके लिये तो भारी अड़चन है।

वह दूसरी स्त्री विदा कर दी गई। तीसरी स्त्री बुलाई गई, वह एक वेश्या थी। और जब फकीर ने उसे समस्या बताई कि समस्या यह है, कि पचास आदमी हैं, तुम हो, नाव डूब गई, एकांत निर्जन द्वीप होगा, तुम अकेली स्त्री होओगी। समस्या कठिन है; तुम क्या करोगी?

वह वेश्या हंसने लगी। उसने कहा, मेरी समझ में आता है कि नाव है, पचास आदमी हैं, एक स्त्री मैं हूं। फिर नाव डूब गई है, पचास आदमी और मैं किनारे लग गये, निर्जन द्वीप है, समझ में आता; लेकिन समस्या क्या है? वेश्या के लिये समस्या हो ही नहीं सकती! इसमें समस्या कहाँ है, यह मेरी समझ में नहीं आता। और जब समस्या ही न हो, तो समाधान का सवाल ही नहीं उठता।

बहुत से लोग हैं तीसरे वर्ग में, जो कहते हैं समस्या कहाँ है? परमात्मा है कहाँ, जिसको तुम खोज रहे हो? ध्यान होता कहाँ है, जिसकी तुम तलाश कर रहे हो? प्रार्थना, पूजा बकवास है। मोक्ष, निर्वाण सपने हैं। समस्या है कहाँ? तुम क्यों व्यर्थ पालथी मार कर बैठे हो? क्यों लगा रखा है यह सिद्धासन? किसके लिए आंख बंद किये बैठे हो? कोई आनेवाला नहीं है। कहाँ जा रहे हो [#मंदिर_मस्जिदों](#) में? वहाँ कोई भी नहीं है। सब पुरोहितों का जाल है। शास्त्रों को पढ़ रहे हो? सब कुशल लोगों की उक्तियाँ हैं। चालाकों का खेल है। मत पड़ो उलझन में; समस्या कोई है ही नहीं। इसलिए समाधान की चिंता मत करो। किस गुरु के पास जा रहे हो, किसलिए जा रहे हो? प्रश्न ही नहीं है, पूछना क्या है?

तीसरे वर्ग के लोग भी हैं। वे इतने दिन तक समस्या में रह लिए हैं, कि समस्या दिखाई पड़नी ही बंद हो गई। जब तुम बहुत किसी चीज के आदी हो जाते हो, तो तुम्हारी आंखें धुंधली हो जाती हैं। फिर वह तुम्हें दिखाई नहीं पड़ती। अगर तुम्हारे घर के सामने ही कोई वृक्ष लगा हो, तो वह तुम्हें दिखाई पड़ना बंद हो जाता है। तुम उसे रोज देखते हो, वह दिखाई पड़ना बंद हो जाता है।

लेकिन अनुभव की एक खराबी है, कि जितने अनुभवी लोग होते हैं, उनके पास नया समाधान कभी नहीं होता। छोटे बच्चे से तो नया समाधान मिल भी जाये, बूढ़े से नया समाधान नहीं मिल सकता। उसका अनुभव मजबूत हो चुका होता है। वह अपने अनुभव को ही दोहराये चला जाता है। वह कहता है, मैं जानता हूं, जीया हूं, बहुत अनुभव किये हैं; यह उसका सारा निचोड़ है। उसका मस्तिष्क पुराना, जरा-जीर्ण हो जाता है, बासा हो जाता है।

यह स्त्री बासी हो चुकी थी। इसके उत्तर खंडहर हो चुके थे। इसको यह बोध भी न रहा था, कि हर पल जीवन नई समस्या खड़ी करता है। और हर पल चेतना को नया समाधान खोजना पड़ता है। इसलिए बंधे हुए समाधान, लकीरें, और लकीरों पर चलनेवाले फकीर काम के नहीं हैं। रूढ़िबद्ध उत्तर काम नहीं देंगे। यहां तो सजगता चाहिये। सजगता ही उत्तर हो सकती है। वह स्त्री भी अस्वीकार दी गई।

तुममें से बहुतों के उत्तर बंधे हुए हैं। कोई हिंदू घर में पैदा हुआ है, कोई मुसलमान घर में पैदा हुआ है, कोई जैन घर में पैदा हुआ है। तुम्हारे पास बंधे हुए उत्तर हैं। जैन का एक उत्तर है, मुसलमान का एक उत्तर है, हिंदू का एक। तुम उन बंधे उत्तरों को खोजे जा रहे हो!

महावीर को विदा हुए पच्चीस सौ साल हो गये। पच्चीस सौ सालों में सारी समस्याएं बदल गई, संसार बदल गया, आदमी के होने का ढंग बदल गया, आदमी की चेतना बदल गई। तुम पुराना उत्तर पीटे चले जा रहे हो! तुम यह भूल ही गये हो, कि अब वह समस्या ही नहीं है, जिसके लिये तुम्हारे पास समाधान है। समस्या समाधान में कोई तालमेल नहीं रहा।

वेद बड़े प्राचीन हैं। हिंदू अघाते नहीं यह घोषणा करते, कि हमारी किताब सबसे ज्यादा पुरानी है। लेकिन जितनी पुरानी किताब उतनी ही व्यर्थ! पुरानी किताब का मतलब ही यह है, कि अब वह दुनिया ही नहीं रही, जब किताब लिखी गई थी। अब वे प्रश्न नहीं रहे, अब वे उलझनें नहीं रहीं। जिंदगी रोज नये ढांचे लेती है, नये रूप, नये रंग!

गंगा रोज नये किनारे को छूती है, पुराने किनारे छूट गए। और तुम पुराने नक्शे लिये घूम रहे हो। तुम्हारा गंगा से मिलन नहीं होता। क्योंकि गंगा नई होती जा रही है, तुम्हारे पास पुराने नक्शे हैं। गंगा ने जिन जमीनों पर बहना छोड़ दिया, तुम वहां के नक्शे लिये हो। और गंगा जहां बह रही है अभी, इस क्षण, वहां तुम्हारे नक्शे की वजह से तुम नहीं पहुंच पाते। कभी-कभी बिना नक्शे का आदमी भी पहुंच जाये, पर पुराने नक्शों को लेकर चलने वाला कभी नहीं पहुंच सकता। उसके लिये तो भारी अड़चन

आओगे।

और अगर एक बार आत्मघात समस्या का समाधान मालूम हो गया तो तुम हर बार यही करोगे। तुम्हारे मन में भी अनेक बार किसी समस्या को जूझते समय जब उलझन दिखाई पड़ती है और रास्ता नहीं मिलता, तो मन होता है, मर ही जाओ। आत्महत्या ही कर लो। यह तुम्हारे जन्मों-जन्मों का निचोड़ है। पर इससे कुछ हल नहीं होता। समस्या अपनी जगह खड़ी रहती है।

दूसरी स्त्री बुलाई गई। वह दूसरी स्त्री विवाहित थी, उसका पति था। यही सवाल उससे भी पूछा गया, कि पचास व्यक्ति हैं, तू है; नाव डूब गई है सागर में, पचास व्यक्ति और तू एक निर्जन द्वीप लग गये हैं। तू अपनी रक्षा कैसे करेगी?

उस स्त्री ने कहा, इसमें बड़ी कठिनाई क्या है? उन पचास में जो सबसे शक्तिशाली पुरुष होगा, मैं उससे विवाह कर लूंगी। वह एक, बाकी उनचास से मेरी रक्षा करेगा।

यह उसका बंधा हुआ अनुभव है। लेकिन उसे पता नहीं, कि परिस्थिति बिलकुल भिन्न है। उसके देश में यह होता रहा होगा, कि उसने विवाह कर लिया और एक व्यक्ति ने बाकी से रक्षा की। लेकिन एक व्यक्ति बाकी से रक्षा नहीं कर सकता। एक व्यक्ति कितना ही शक्तिशाली हो, पचास से ज्यादा शक्तिशाली थोड़े ही होगा। रक्षा असल में एक पति थोड़े ही करता है स्त्री की! जो पचास की पत्नियां हैं, वह उन पचास को सीमा के बाहर नहीं जाने देतीं।

इसलिए वह जो उसका अनुभव है, इस नई परिस्थिति में काम न आयेगा। वह एक आदमी मार डाला जायेगा, वह कितना ही शक्तिशाली हो। उसका कोई अर्थ नहीं है। पचास के सामने वह कैसे टिकेगा?

पुराना अनुभव हम नई परिस्थिति में भी खींच लेते हैं। हम पुराने अनुभव के आधार पर ही चलते जाते हैं, बिना यह देखे कि परिस्थिति बदल गई है और यह उत्तर कारगर न होगा।

फकीर ने उस स्त्री को विदा कर दिया और उससे कहा, कि तुझे अभी बहुत सीखना पड़ेगा, इसके पहले कि तू स्वीकृत हो सके। तूने एक बात नहीं सीखी है अभी, कि परिस्थिति के बदलने पर समस्या ऊपर से चाहे पुरानी दिखाई पड़े, भीतर से नई हो जाती है। और नया समाधान चाहिये।

लेकिन अनुभव की एक खराबी है, कि जितने अनुभवी लोग होते हैं, उनके पास नया समाधान कभी नहीं होता। छोटे बच्चे से तो नया समाधान मिल भी जाये, बूढ़े से नया समाधान नहीं मिल सकता। उसका अनभव मजबूत हो चका होता है। वह अपने अनभव को ही दोहराये


ओशो दर्शन

Satish Purohit · 9m ·



मैंने सुना है, एक #सूफी फकीर के आश्रम में प्रविष्ट होने के लिये चार #स्त्रियां पहुंचीं। उनकी बड़ी जिद थी, बड़ा आग्रह था। ऐसे सूफी उन्हें टालता रहा, लेकिन एक सीमा आई कि टालना भी असंभव हो गया। सूफी को दया आने लगी, क्योंकि वे द्वार पर बैठी ही रहीं—भूखी और प्यासी; और उनकी प्रार्थना जारी रही कि उन्हें प्रवेश चाहिए। उनकी खोज प्रामाणिक मालूम हुई तो सूफी झुका। और उसने उन चारों की परीक्षा ली। उसने पहली स्त्री को बुलाया और उससे पूछा, “एक सवाल है। तुम्हारे जवाब पर निर्भर करेगा कि तुम आश्रम में प्रवेश पा सकोगी या नहीं। इसलिए बहुत सोच कर जवाब देना।”

सवाल सीधा-साफ था। उसने कहा कि एक नाव डूब गई है; उसमें तुम भी थीं और पचास थे। पचास पुरुष और तुम एक निर्जन द्वीप पर लग गये हो। तुम उन पचास पुरुषों से अपनी रक्षा कैसे करोगी? यह समस्या है।

एक स्त्री और पचास पुरुष और निर्जन एकांत! वह स्त्री कुंवारी थी। अभी उसका विवाह भी न हुआ था। अभी उसने पुरुष को जाना भी न था। वह घबड़ा गई। और उसने कहा, कि अगर ऐसा होगा तो मैं किनारे लगूंगी ही नहीं; मैं तैरती रहूंगी। मैं और समुद्र में गहरे चली जाऊंगी। मैं मर जाऊंगी, लेकिन इस द्वीप पर कदम न रखूंगी।

फकीर हंसा, उसने उस स्त्री को विदा दे दी और कहा, कि मर जाना समस्या का समाधान नहीं है। नहीं तो आत्मघात सभी समस्याओं का समाधान हो जाता

यह पहला वर्ग है, जो आत्मघात को समस्या को समाधान मानता है। तुम चकित होओगे, कि तुममें से अधिक लोग इसी वर्ग में हैं। हर बार जीवन में वही समस्याएं हैं, वही उलझने हैं, और हर बार तुम्हारा जो हल है, वह यह है कि किसी तरह जी लेना और मर जाना। फिर तुम पैदा हो जाते हो।

इस संसार में मरने से तो कुछ हल होता ही नहीं। फिर तुम पैदा हो जाते हो, फिर वही उलझन, फिर वही रूप, फिर वही झंझट, फिर वही संसार; यह पुनरुक्ति चलती रहती है। यह चाक घूमता रहता है। तुम्हारे मरने से कुछ हल न होगा। तुम्हारे बदलने से हल हो सकता है। मरने से हल नहीं हो सकता। मर कर भी तुम, तुम ही रहोगे। फिर तुम लौट आओगे।

पत्थर पर यदि बहुत पानी एकदम से डाल दिया जाए तो पत्थर केवल भीगेगा..., । फिर पानी बह जाएगा और पत्थर सूख जाएगा।

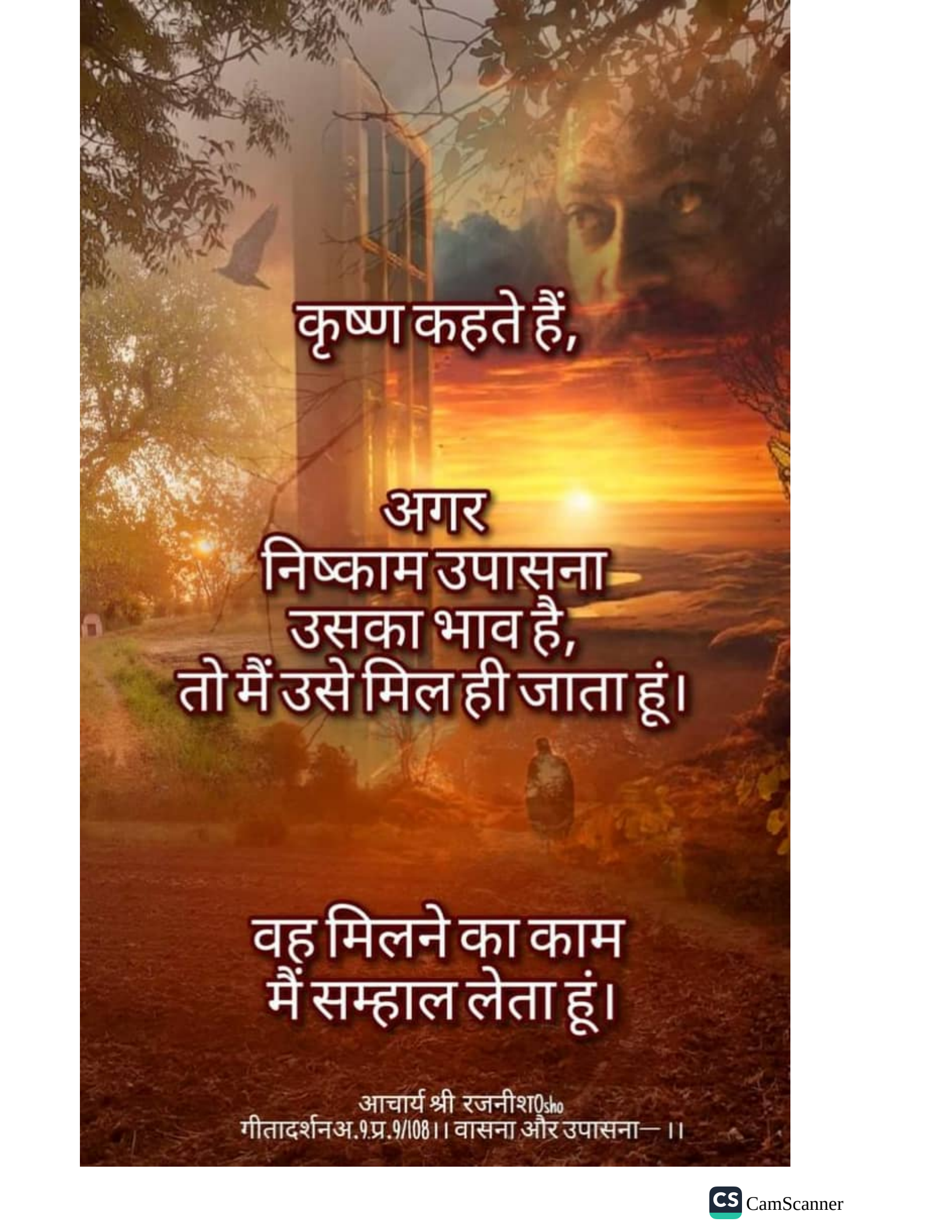
किन्तु वह पानी यदि बूंद-बूंद पत्थर पर एक ही जगह पर गिरता रहेगा, तो पत्थर में छेद होगा और कुछ दिनों बाद पत्थर टूट भी जाएगा।

इसी प्रकार निश्चित स्थान पर नाम स्मरण की साधना की जाएगी तो उसका परिणाम अधिक होता है ।

चक्की में दो पाटे होते हैं। उनमें यदि एक स्थिर रहकर, दूसरा घूमता रहे तो अनाज पिस जाता है और आटा बाहर आ जाता है। यदि दोनों पाटे एक साथ घूमते रहेंगे तो अनाज नहीं पैसेगा और परिश्रम व्यर्थ होगा।

इसी प्रकार मनुष्य में भी दो पाटे हैं - एक मन और दूसरा शरीर। उसमें मन स्थिर पाटा है और शरीर घूमने वाला पाटा है। अपने मन को भगवान के प्रति स्थिर किया जाए और शरीर से गृहस्थी के कार्य किए जाएं।

!!!...सत्संग से वैराग्य, वैराग्य से विवेक, विवेक से स्थिर तत्त्वज्ञान और तत्त्वज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती है...!!!

The background of the image is a spiritual landscape. It features a sunset with a bright sun low on the horizon, casting a warm orange glow. A bird is seen in flight in the upper left. In the foreground, a person is standing on a path, looking towards the sunset. The overall mood is serene and contemplative.

कृष्ण कहते हैं,
अगर
निष्काम उपासना
उसका भाव है,
तो मैं उसे मिल ही जाता हूं।

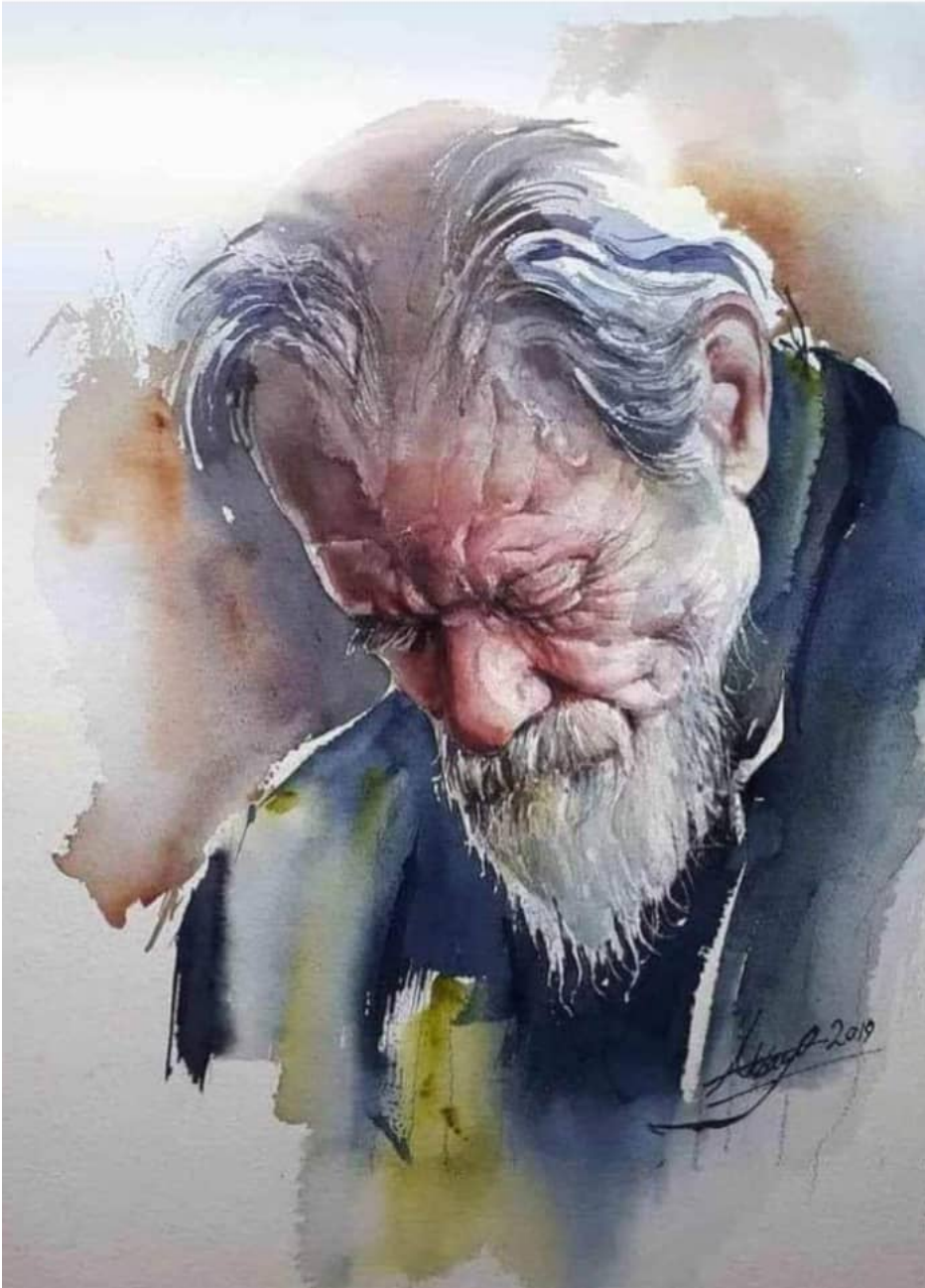
वह मिलने का काम
मैं सम्हाल लेता हूं।

आचार्य श्री रजनीश^{0sho}
गीतादर्शन अ. १ प्र. १/१०८ ।। वासना और उपासना — ।।

बूढ़े वृक्ष सुंदर हो जाते हैं। बूढ़े सिंह में और ही सौंदर्य होता है, जो जवान में नहीं होता। जवान में एक उत्तेजना होती है, जल्दबाजी होती है, अधैर्य होता है, वासना होती है। बूढ़े में सब शांत हो गया होता है। लेकिन आदमी कुरूप हो जाता है। क्योंकि आदमी थक जाता है। वृक्ष परमात्मा के खिलाफ नहीं लड़ रहे हैं। उन्होंने पाल खोल रखे हैं। जहां उसकी हवा ले जाए, वे वहीं जाने को राजी हैं। तुम उसके खिलाफ लड़ रहे हो।

आदमी अकेला उसके खिलाफ लड़ता है। इसलिए थकता है, टूटता है, जराजीर्ण होता है। अगर जीवन एक संघर्ष है तो यह होगा ही।

ओशो 🌹🌹



**Sanjeev Mishra**

22m · 🌐



संसार की पूरी दौड़ के बाद आदमी के चेहरे को देखो, सिवाय थकान के तुम वहां कुछ भी न पाओगे। मरने के पहले ही लोग मर गए होते हैं। बिलकुल थक गए होते हैं। विश्राम की तलाश होती है कि किसी तरह विश्राम कर लें। क्यों इतने थक जाते हो!

आदमी बूढ़ा होता है, कुरूप हो जाता है। तुमने जंगल के जानवरों को देखा? बूढ़े होते हैं, लेकिन कुरूप नहीं होते। बुढ़ापे में भी वही सौंदर्य होता है। तुमने बूढ़े वृक्षों को देखा है? हजार साल पुराना वृक्ष! मृत्यु करीब आ रही है, लेकिन सौंदर्य में रत्तीभर कमी नहीं होती। और बढ़ गया होता है। उसके नीचे अब हजारों लोग छाया में बैठ सकते हैं। सौंदर्य में कोई फर्क नहीं पड़ता। सौंदर्य और गहन हो गया होता है।

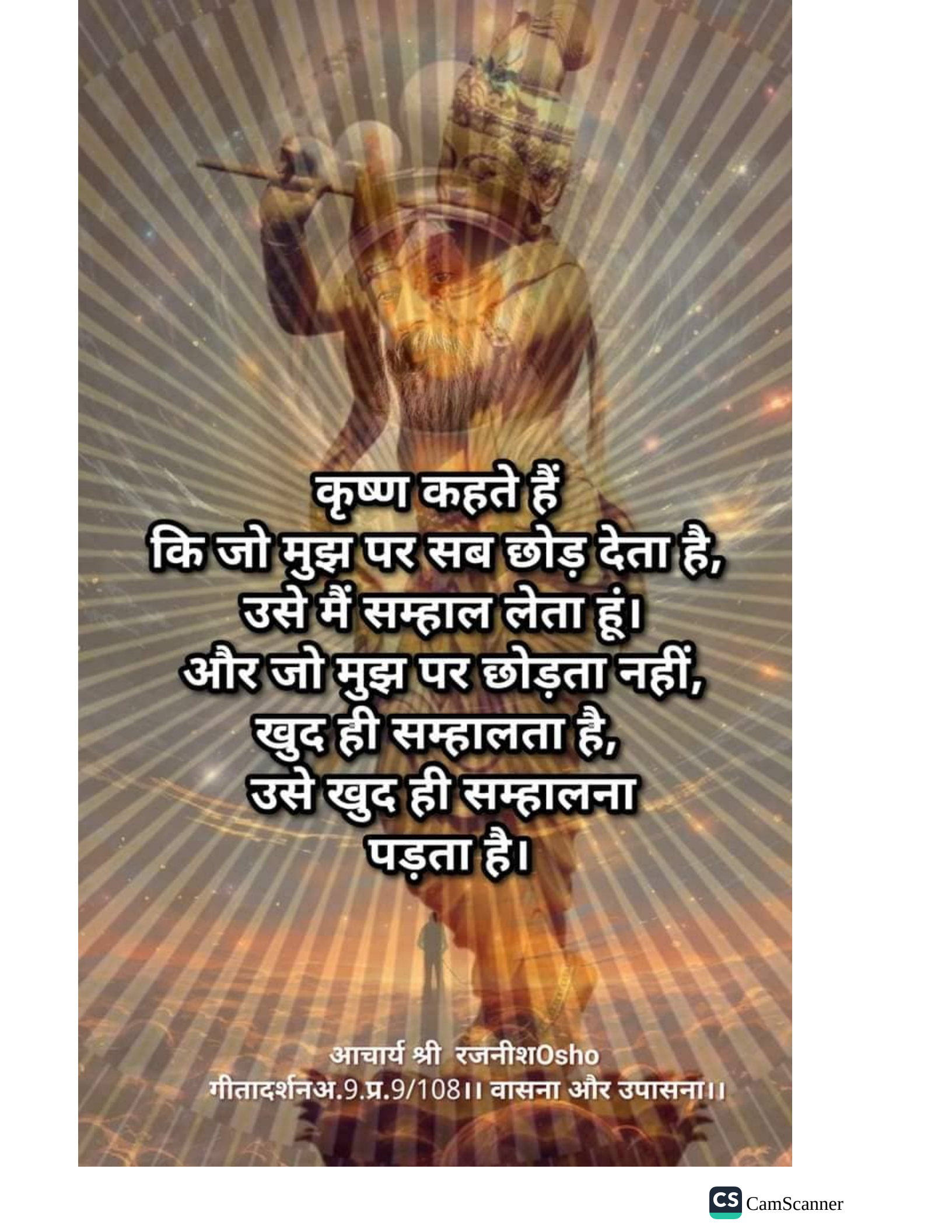
बूढ़े वृक्ष के पास बैठने का मजा ही और है। वह जवान वृक्ष के पास बैठने से नहीं मिलेगा। अभी जवान को कोई अनुभव नहीं है। बूढ़े वृक्ष ने न मालूम कितने मौसम देखे। कितनी वर्षाएं, कितनी सर्दियां, कितनी धूप, कितने लोग ठहरे और गए, कितना संसार बहा, कितनी हवाएं गुजरीं, कितने बादल गुजरे, कितने सूरज आए और गए, कितने चांदों से मिलन हुआ, कितनी अंधेरी रातें--वह सब लिखा है। वह सब उसमें भरा है। बूढ़े वृक्ष के पास बैठना इतिहास के पास बैठना है। बड़ी गहरी परंपरा उसमें से बही है।

बौद्धों ने, जिस वृक्ष के नीचे बुद्ध को ज्ञान हुआ, उसे बचाने की अब तक कोशिश की है। वह इसीलिए कि उसके नीचे एक परम घटना घटी है। वह वृक्ष उस अनुभव से अभी आपूरित है। वह वृक्ष अभी भी उस स्पंदन से स्पंदित है। वह जो महोत्सव उसके नीचे हुआ था, वह जो बुद्ध परम ज्ञान को उपलब्ध हुए थे, वह जो प्रकाश बुद्ध में जला था, उस प्रकाश की कुछ किरणें अभी भी उसे याद हैं। और अगर तुम बोधिवृक्ष के पास शांत होकर बैठ जाओ, तो तुम अचानक पाओगे ऐसी शांति, जो तुम्हें कहीं भी न मिली थी। क्योंकि तुम अकेले ही शांत नहीं हो रहे हो। उस वृक्ष ने एक अपरिसीम शांति जानी है। वह अपने अनुभव में तुम्हें भागीदार बनाएगा।



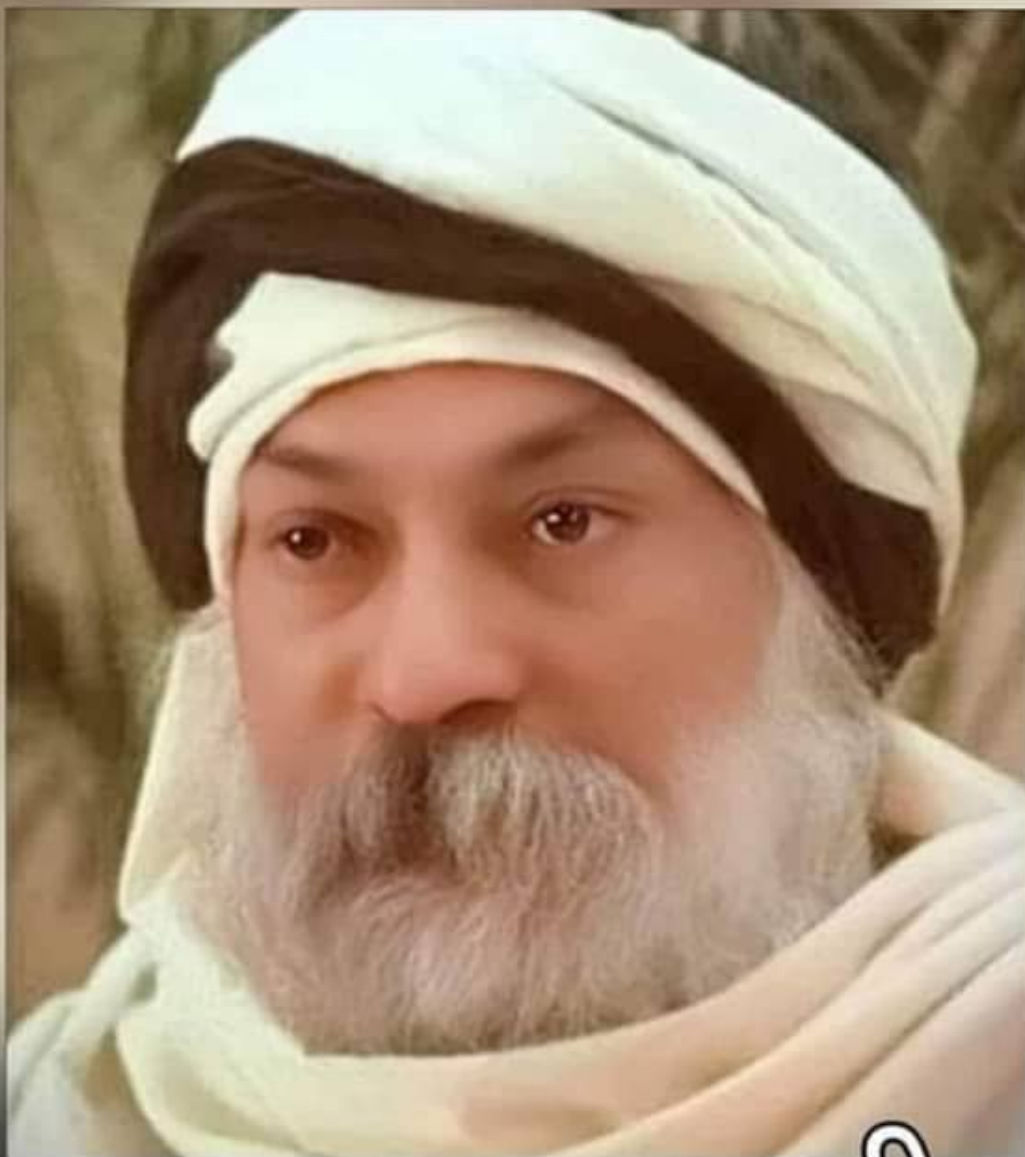
तुम इस दुनिया में रहते नहीं हो
बल्कि यहाँ से गुज़र रहे हो ।





**कृष्ण कहते हैं
कि जो मुझ पर सब छोड़ देता है,
उसे मैं सहाल लेता हूं।
और जो मुझ पर छोड़ता नहीं,
खुद ही सहालता है,
उसे खुद ही सहालना
पड़ता है।**

आचार्य श्री रजनीशOsho
गीतादर्शन अ.9.प्र.9/108॥ वासना और उपासना॥



फिक्र खा गया सभी को
फिक्र जगत का पीर,
जो खा गया फिक्र को
उसका नाम फकीर,,,

जिस दिन किसी व्यक्ति की मूर्च्छा टूट जाती है: न कुछ सुंदर है न कुछ असुंदर है। बस वैसा ही है जैसा है। कुछ कहने का अर्थ ही नहीं होता। ये वृक्ष वृक्ष हैं। आदमी आदमी हैं। स्त्रियां स्त्रियां हैं। पत्थर पत्थर हैं। नदियां नदियां हैं। जो जैसा है वैसा है। तुम्हारी कोई धारणा नहीं बनती।

जागा हुआ आदमी गुजर जाता है, उसकी कोई धारणा नहीं होती। उसे सब जैसा होना चाहिए वैसा है। चूंकि उसके भीतर कोई आकांक्षा नहीं है कि यह मुझे मिले और ऐसी भी कोई आकांक्षा नहीं है कि मिल जाए तो मेरा दुर्भाग्य होगा, इसलिए कोई धारणा सिर नहीं उठाती। उसके भीतर कोई सपना नहीं पैदा होता। जिस दिन जो है वैसा ही तुम्हें दिखाई पड़ने लगे, उस दिन जानना कि जागरण हुआ है।

ओशो... "अजहं चेत गंवार -21"





Osho Janaki Dhyana Kendra

10h · 🌐



आदमी मूर्च्छा में 'जो नहीं है' वैसा देखने लगता है। इसे उलटा करके समझो। इसको कसौटी समझो मूर्च्छित होने की: अगर तुम्हें जो नहीं है, वैसा दिखाई पड़ता हो तो समझो कि तुम मूर्च्छित हो। रात तुम्हें सपना दिखाई पड़ता है, यह सबूत है कि तुम मूर्च्छित हो। बुद्धपुरुषों को सपना नहीं दिखाई पड़ता। और जिसको रात सपना दिखाई पड़ता है, दिन में वह कोई दूसरा थोड़े ही हो जाएगा। है तो वही का वही। भीतर तो सपने बहते ही रहेंगे। दिन में भी तुम्हें कुछ का कुछ दिखाई पड़ता है।

एक राह से तुम गुजरते हो, एक मकान तुम्हें दिखाई पड़ता है बहुत सुंदर, मन होता है खरीद लें, अपना हो। मगर यह मकान इतना सुंदर है, या कि तुम्हारी तृष्णा के कारण दिखाई पड़ रहा है? जिस दिन तुम्हारे भीतर तृष्णा न रहेगी उस दिन यह मकान इतना सुंदर दिखाई पड़ेगा? इसी मकान के पास से बुद्ध गुजरेंगे, उनकी नजर जाएगी इस मकान पर? यह मकान में सौंदर्य है, या तुम्हारी तृष्णा इस मकान को सुंदर बना रही है?

एक स्त्री तुम्हें सुंदर दिखाई पड़ती है। इस स्त्री में सौंदर्य है, या तुम्हारी वासना तुम्हें सौंदर्य दिखा रही है? बुद्ध गुजरेंगे तो उन्हें तो सौंदर्य दिखाई नहीं पड़ेगा।

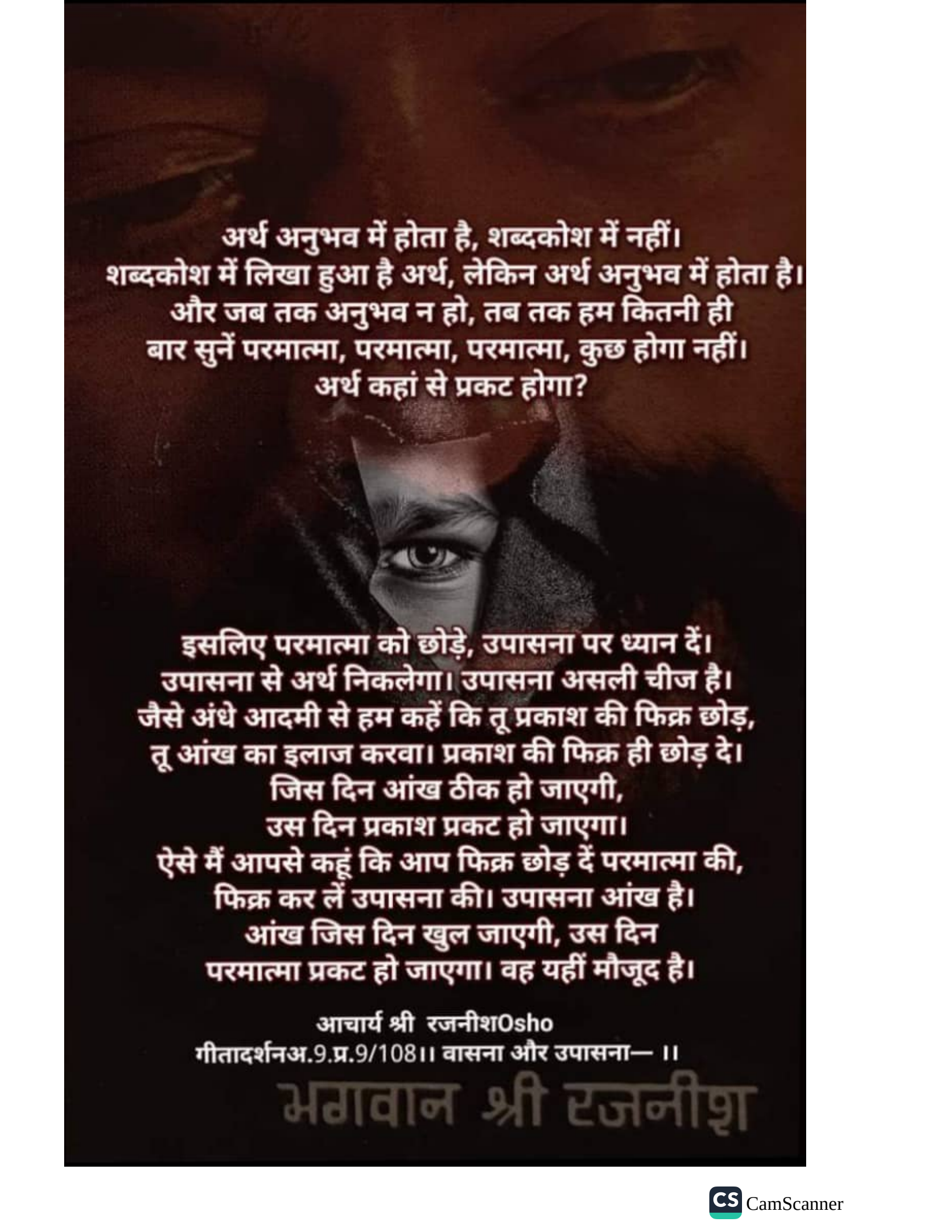
तुम्हें जब किसी आदमी में कुरूपता दिखाई पड़ती है, तो कुरूपता वहां है, या यह भी तुम्हारा प्रक्षेपण है? एक आदमी बैठा है राह के किनारे, कोढ़ी, शरीर गला हुआ, बदबू निकल रही है। तुम नाक बंद करके दूसरी तरफ मुंह फेर कर एकदम तेजी से निकल जाते हो--इतना कुरूप आदमी! लेकिन यह आदमी कुरूप है, या यह भी तुम्हारा प्रक्षेपण है? यह तुम्हारा भय है। तुम डरते हो कि कहीं किसी दिन ऐसी मेरी हालत न हो जाए। उसी भय के कारण तुम भाग रहे हो।

जो तुम चाहते हो मुझे मिले, वह सुंदर दिखाई पड़ता है। और जो तुम चाहते हो कभी मुझे न मिले, कभी ऐसा न हो मुझे, वह तुम्हें कुरूप दिखाई पड़ने लगता है। कुरूप और सौंदर्य वस्तुओं में नहीं होते--तुम्हारी तृष्णाओं में, तुम्हारी धारणाओं में, तुम्हारे भयों में, तुम्हारी कामनाओं में छिपे होते हैं।

निम्न निम्न निम्नी व्यक्ति की मूर्च्छा टट जाती है: न कुछ सुंदर है न कुछ

॥ अंतः अस्ति प्रारंभः ॥

लगाव ही पीड़ा है , करुणा ही क्रूरता है , और अंत ही प्रारंभ



अर्थ अनुभव में होता है, शब्दकोश में नहीं।
शब्दकोश में लिखा हुआ है अर्थ, लेकिन अर्थ अनुभव में होता है।
और जब तक अनुभव न हो, तब तक हम कितनी ही
बार सुनें परमात्मा, परमात्मा, परमात्मा, कुछ होगा नहीं।
अर्थ कहाँ से प्रकट होगा?

इसलिए परमात्मा को छोड़े, उपासना पर ध्यान दें।
उपासना से अर्थ निकलेगा। उपासना असली चीज है।
जैसे अंधे आदमी से हम कहें कि तू प्रकाश की फिक्र छोड़,
तू आंख का इलाज करवा। प्रकाश की फिक्र ही छोड़ दे।
जिस दिन आंख ठीक हो जाएगी,
उस दिन प्रकाश प्रकट हो जाएगा।
ऐसे मैं आपसे कहूँ कि आप फिक्र छोड़ दें परमात्मा की,
फिक्र कर लें उपासना की। उपासना आंख है।
आंख जिस दिन खुल जाएगी, उस दिन
परमात्मा प्रकट हो जाएगा। वह यहीं मौजूद है।

आचार्य श्री रजनीशOsho
गीतादर्शनअ.9.प्र.9/108॥ वासना और उपासना— ॥

भगवान श्री रजनीश

भुजीथा जिन्होंने छोड़ा उन्होंने भोगा, संसार में भी धन छोड़ो तो ही भोग सकते हो, यहां छोड़ना ही भोगने का सूत्र है, मगर ध्यान रखना, जो धन इकट्ठा करने लगता है वो खुद ही धन जैसा जड़ हो जाता है, जो पद की आकांक्षा में रहता है, उसका अहंकार घना होता चला जाता है, तुम जो चाहोगे वही हो जाओगे, अब ये उगसेन नगर सृष्टि का पुत्र था, सबसे बड़े धनी का पुत्र था, राजग्रह बिहार की सबसे धनी नगरी थी और सबसे धनी नगरी के सबसे बड़े धनी का बेटा था, लेकिन एक नट कन्या एक मदारी की लड़की के प्रेम में पड़ गया तो मदारी हो गए, ये छोटी छोटी कहानिया बड़ी सूचक है, बड़ी मनोवैज्ञानिक है, इनको तुम ऐसी ही पढ़लोगे तो इनका मज़ा इनका स्वाद तुम्हें नहीं आएगा इनमें धीरे धीरे उतरना तुम ज़रा गौर करना तुमने जिससे दोस्ती की है आखिर में तुमने पाया नहीं की तुम उसी जैसे हो गये दोस्ती की तो बात छोड़ो किसीसे दुस्मानी भी अगर करली तो भी उस जैसे हो जेयोगे क्यूकी उसी का चिंतन करोगे उसिका हिसाब रखोगे वो कैसी छाले चल रहा है वैसी छाले तुम चलोगे उससे कैसे रक्षा करनी, इसका विचार करते रहोगे, सदा उसका विचार करते करते तुम भी उस जैसे हो जाओगे, दुश्मन भी एक जैसे हो जाते हैं, क्योंकि दुश्मनी भी एक ढंग की दोस्ती है, नट कन्या के खेल को देखकर उसपे मोहित हो, उससे विवाह कर, नटों के साथ हो लिया, सुसंस्कृत परिवार का बेटा, ऐसे गांव गांव घूमने वाले सड़क छाप मदारियों के साथ हो गया, मोह गिराता है, मोह उठा भी सकता है, अगर बुद्ध जैसे व्यक्ति से मोह हो जाये तो तुम्हारी आँखें आकाश की तरफ़ उठने लगी तुमने ज़मीन पर सरकना बंद कर दिया बुद्ध को देखने के लिए ऊपर देखना पड़ेगा चाँद तारो की तरफ़ देखना पड़ेगा जब मंसूर को सूली हुई वो खिलखिला कर हंसने लगा और किसने भीड़ में से पूछा कि मंसूर तुम्हारे हंसने का कारण क्यूकी तुम मर रहे हो उच्चे खम्बे पर उसे सूली लगायी जा रही थी मंसूर ने कहा कि मैं इसलिए खुश हूँ की एक लाख आदमी मुझे देखने इक्खत्ते हुए है और एक लाख आदमियों की आँखें पहली डफ़े थोड़ी ऊपर उठी क्यूकी मुझे देखने के लिए इस उच्चे खम्बे की तरफ़ देखना पद रहा है यही क्या कम है की तुम्हारे आँखें ज़मीन में गड़ी गड़ी रही है सदा आज चलो मेरे बहाने ऊपर उठी और हो सकता मुझे देखकर तुम्हें परमात्मा की थोड़ी याद आए और मेरे आनंद को देखके तुम्हें याद आए की परमात्मा जिसके साथ हो जाता है, वो मरने में भी खुश है और परमात्मा जिसके साथ नहीं वो जीवन में भी खुश नहीं।


Naye bharat ke khoj

4m · 🌐



परमात्मा जिसके साथ हो वो मरने में भी खुश है। परमात्मा जिसके साथ नहीं वो जीवन में भी खुश नहीं। ओशो वाणी।

प्रतिलिपि;

दो फकीर एक नदी के पास आकर रुके, उनमें एक फकीर सदा कहता था कि धन में कुछ सार नहीं, धन बिल्कुल बेकार है, और कभी धन पास नहीं रखता था और दूसरा फकीर कहता था, वक्त पर जरूरत पड़ सकती, कभी बीमारी है, कभी झंझट है, कभी अड़चन है, कभी यात्रा है, कभी भोजन की जरूरत है, थोड़ा साथ रखना चाहिए, धन काम का है, दोनों नदी के किनारे आके रुके, सांझ होने के करीब है, और उस पार जाना जरूरी है, और जो माझी है वह कहता है कि एक रुपए से कम नहीं लूंगा क्योंकि मैं थका मादा हूं और ये मेरी आखिरी आखिरी बार जा रहा हूं फिर दोबारा आऊंगा नहीं दिन भर हो गया मेहनत करते जिस फकीर के पास रुपए थे उसने एक रुपया दिया वो दोनों फकीर नाव पार कर लिए जब नाव से उतरे तो जिसके पास रुपया था उसने कहा अब कहो अब अपने विवाद को निर्णय करलो, अगर आज ये रुपए मेरे पास ना होता, तो हम उसी तरफ रह गये होते वहाँ जंगली जानवरों का भय है रात बचना मुश्किल था नदी पार उतर गये तो अब बच जायेगी अब धर्मशाला पहुँच जायेगी गाँव आ गया अब निश्चित होके रात सो लेंगे तुम क्या कहते हो? वो फकीर हँसने लगा उसने कहा हम धन के कारण नहीं उतरे तुम धन दे सके उसको एक रुपया दे सके इस कारण उतरे रुपया होने से नहीं उतरे क्यूँकी होने से क्या होता अगर तुम देने को राज़ी ना होते उतर सके देने के कारण विवाद फिर अपनी जगह खड़ा हो गया, धनी तो अक्सर धन को भोग नहीं पाता है, क्योंकि धन भोगना हो तो धन को भी देना पड़ता है, उपनिषदों में परम वचन है, तेन त्यक्तेन भुजीथा जिन्होंने छोड़ा उन्होंने भोगा, संसार में भी धन छोड़ो तो ही भोग सकते हो, यहां छोड़ना ही भोगने का सूत्र है, मगर ध्यान रखना, जो धन इकट्ठा करने लगता है वो खुद ही धन जैसा जड़ हो जाता है, जो पद की आकांक्षा में रहता है, उसका अहंकार घना होता चला जाता है, तुम जो चाहोगे वही हो जाओगे, अब ये उगसेन नगर सृष्टि का पुत्र था, सबसे बड़े धनी का पुत्र था, राजग्रह बिहार की सबसे धनी नगरी थी और सबसे धनी नगरी के सबसे बड़े धनी का बेटा था, लेकिन एक नट कन्या एक

एकांत के तीन रूप हैं ..

१. अकेलापन :- अपना तो पता ही नहीं दूसरे की याद है , यह नकारात्मक है ..
२. एकांत :- अपनी याद है दूसरे को भूल गया , ये ध्यान की अवस्था है ..
३. कैवल्य :- स्वयं को भी भूल गया और दूसरे को भी भूल गया , यह परम एकांत है , यानी समाधि की अवस्था है !



पहली अवस्था में ,
अशांति है ..
दूसरी अवस्था में
शांति है ..
तीसरी अवस्था में
परम आनंद है ..

पछतावा जो है, वह क्रोध की ट्रिक है।
पछतावा जो है, पश्चात्ताप जो है,
वह क्रोध की होशियारी है,
वह अहंकार की उस्तादी है,
चालाकी है।

जब आप क्रोध कर लेते हैं,
तो आपको लगता है,
उतना अच्छा आदमी नहीं हूं
जितना मैं अपने को समझता था।
पछतावा करके आप फिर समझते हैं कि
उतना ही अच्छा आदमी हूं
जितना अपने को समझता था।

अहंकार अपना पुराना लेबल फिर से पा लेता है;
वहीं पहुंच जाता है, जहां क्रोध के पहले था।

क्रोध के कारण एक गड्डे में पड़ गए थे,
क्रोध के कारण थोड़ी दीनता आ गई थी।
क्रोध के कारण मन को लगा कि उतना
अच्छा आदमी नहीं हूं, जितना दावा करता था।
पछतावा करके वापस अपनी जगह खड़ा हो गया,
उसी जगह, जहां क्रोध के पहले था।
अब आप फिर क्रोध कर सकते हैं,
क्योंकि उसी जगह से आपने क्रोध किया था।

मन एक पुनरुक्ति है। और
मन के आधार पर जीने वाला आदमी
अपने पूरे जीवन को एक पुनरुक्ति बना लेता है,
जस्ट ए रिपीटीशन, ए मैकेनिकल रिपीटीशन;
यंत्रवत घूमते चले जाते हैं।
इसका जो बड़े से बड़ा वर्तुल है, वह पूरा जीवन है।
सिर्फ भारत को इस बात का खयाल आ पाया।

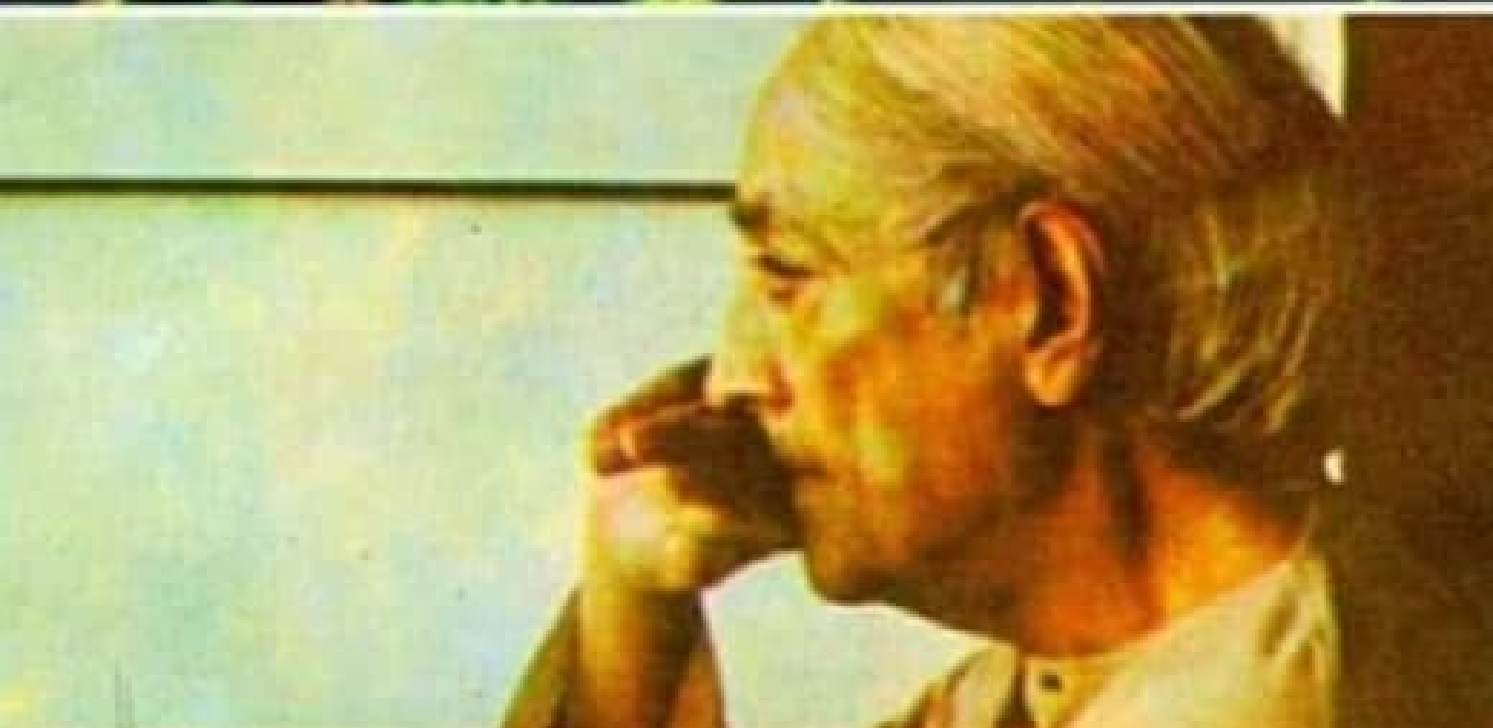
आचार्य श्री रजनीशOsho
गीतादर्शन अ.9.प्र.10/109 खोज की सम्यक दिशा

योग से अर्थ है,
वह परम प्रतीति,
अंतिम प्रतीति प्रभु-मिलन की,
पूर्ण के साथ एक होने की।
योग से अर्थ है,
व्यक्ति के मिटने की घटना परमात्म में,
वह मैं सम्हाल लेता हूँ।

और क्षेम से अर्थ है, जब तक वह घटना न घट जाए,
तो जो भी जरूरी है, वह भी मैं सम्हाल लेता हूँ।
क्षेम से अर्थ है, योग जब तक न घटे, तब तक जो भी जरूरी हो!
अगर शरीर की जरूरत हो, तो शरीर को सम्हाल लूंगा।
अगर भोजन की जरूरत है, तो भोजन को सम्हाल लूंगा।
अगर श्वास की जरूरत है, तो श्वास को सम्हाल लूंगा।
जब तक वह परम घटना नहीं घटती है, तब तक उसके
पहले जो-जो आवश्यक है, वह भी मैं सम्हाल लूंगा। उसका नाम है क्षेम।
और जब क्षेम के बाद वह परम घटना घट जाएगी, आखिरी,
वह भी मैं सम्हाल लूंगा।

कृष्ण यह कहते हैं कि एक बार तू अपनी मांग छोड़,
तो मैं सब सम्हालने को तैयार हूँ।

जरा अपनी जिंदगी के बारे में सोचिए? उस जिंदगी की ओर एक भरपूर नज़र देखिये जिसे आप अगले जन्म तक जारी रखना चाहते हैं... आपका जीवन है क्या? एक निरंतर संघर्ष, एक निरंतर संभ्रम... बस कभी कभी खुशी की कोई झलक दिख पाती है, नहीं तो वही बोरियत, दुख, डर, यंत्रणा, निराशा, कुंठा, जलन, महत्वाकांक्षा.. यही है सब जो आपकी जिंदगी है हकीकत में. बीमारियों से भरी, टुच्चेपन से भरी.. क्या यही है वह जिंदगी जिसे आप अगले जन्म तक ले जाना चाहते हैं... जे.कृष्णमूर्ति

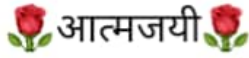


ओशो गीता-दर्शन

ओशो निर्वाण समूह



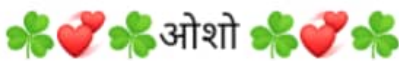
एक तो बाहर के अर्थों में कि हम अपनी किसी भी चीज के लिए अपने पर भी भरोसा नहीं कर सकते; हमारी वृत्तियां हमें जहां ले जाती हैं, हमें जाना पड़ता है; परवश, पराधीन। और एक इस अर्थों में कि हमें स्वयं का भी कोई पता नहीं है। इसलिए कृष्ण कहते हैं, आत्मजयी, आत्मा को जीत लिया है जिसने, उसमें परमात्मा सदा प्रतिष्ठित है।



आत्मजयी का अर्थ है, वह व्यक्ति, जो अपने भीतर पूरी आंखों से देख सकता है। वह जानता है कि वहां है; उसने देखा है कि वहां है; उसने पाया है कि वहां है। अब वह निर्भय है। अब उसकी छाती में छुरा भोंक दो, तो भी निर्भय है; क्योंकि वह जानता है, यह छुरा उसमें प्रवेश नहीं कर सकेगा, जिसे उसने जान लिया है। अब मौत उसके दरवाजे पर खड़ी हो जाए, तो आलिंगन कर लेगा; क्योंकि वह जानता है कि जिसे उसने अपने भीतर जाना है, उसको मौत छू पाए, इसका कोई उपाय नहीं है। अब आप उसको गालियां दें और अपमानित करें, तो वह हंसेगा, क्योंकि वह जानता है, तुम्हारी गालियां उस तक नहीं पहुंच सकतीं; तुम्हारे अपमान उस तक नहीं पहुंच सकते, जो वह है। अब वह विजयी हुआ, अब वह जिन हो गया।

एक तो बाहर के अर्थों में कि हम अपनी किसी भी चीज के लिए अपने पर भी भरोसा नहीं कर सकते; हमारी वृत्तियां हमें जहां ले जाती हैं, हमें जाना पड़ता है; परवश, पराधीन। और एक इस अर्थों में कि हमें स्वयं का भी कोई पता नहीं है। इसलिए कृष्ण कहते हैं, आत्मजयी, आत्मा को जीत लिया है जिसने, उसमें परमात्मा सदा प्रतिष्ठित है।

ज्ञान कहते हैं स्वयं को जान लेने को। विज्ञान कहते हैं पर को जान लेने को। विज्ञान का अर्थ है, दूसरे को जानने की जो व्यवस्था है। ज्ञान का अर्थ है, स्वयं को जान लेने की जो व्यवस्था है।



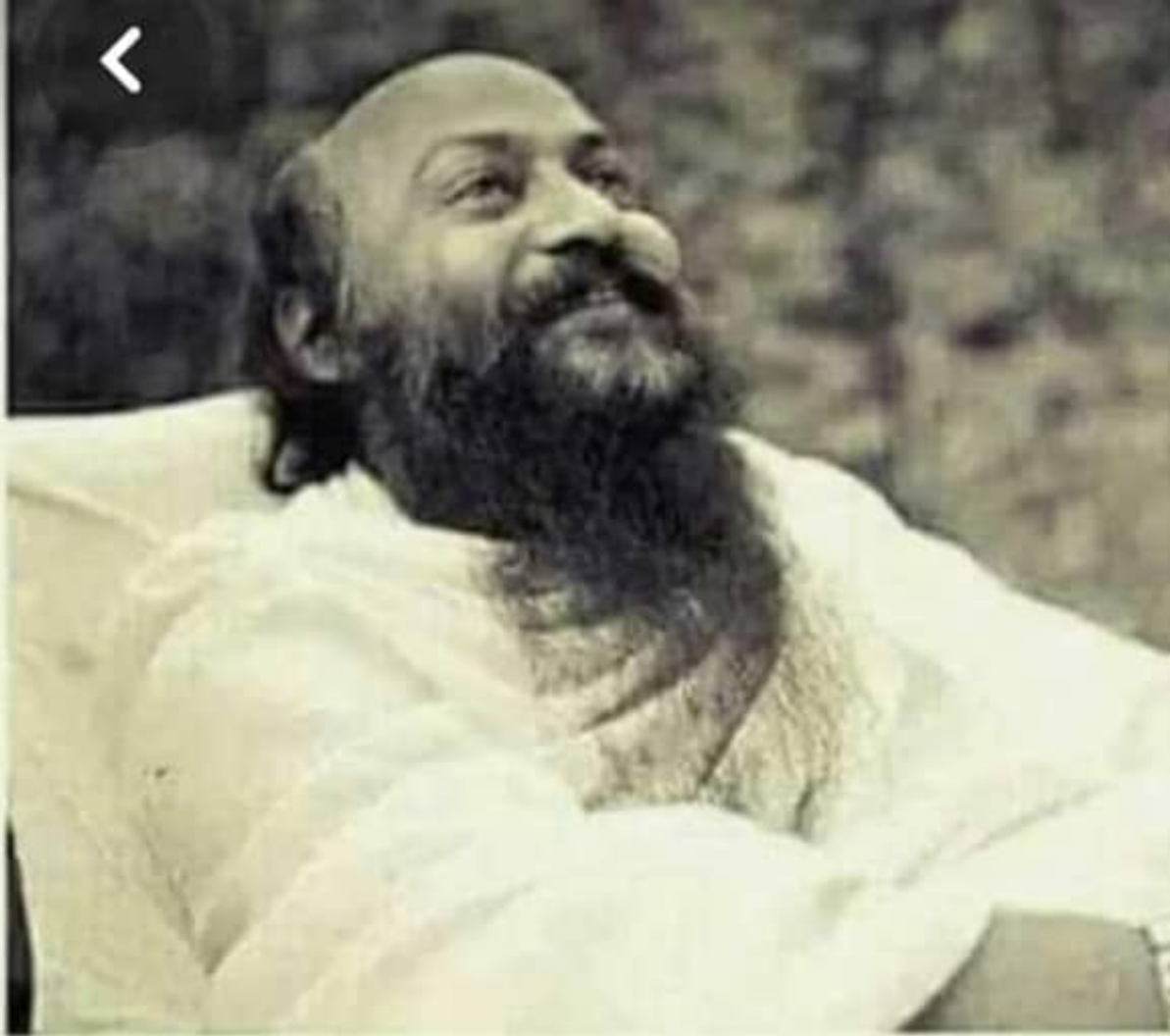
गीता-दर्शन – भाग 3

ज्ञान विजय है (अध्याय-6) प्रवचन—चौथा

आशा
गीता-दर्शन



पूछा जो मैंने एक दिन खुदा से,
अंदर मेरे ये कैसा शोर है,
हंसा मुझ पर फिर बोला,
चाहतें तेरी कुछ और थी,
पर तेरा रास्ता कुछ और है,
रूह को संभालना था तुझे,
पर सूरत सँवारने पर तेरा जोर है,
ओशो अहोभाव



बुद्ध के पास बैठोगे —उठोगे, तो उनका स्वाद लगेगा,
उनकी बूंदें तुम पर बरसेंगी, उनका स्पर्श तुम्हें होगा।
जो हवा उन्हें छुएगी, वही हवा तुम्हें भी छुएगी।
बुद्ध के पास उठोगे—बैठोगे, उनका रंग लगेगा,
उनका ढंग लगेगा।

बुद्ध के पास उठोगे —बैठोगे, तो बुद्धत्व संक्रामक है।
याद रखना, बीमारी ही थोड़े ही लगती है, स्वास्थ्य
भी लग जाता है। पागलपन ही थोड़े ही लगता है;
पागलों के साथ रहोगे, पागल हो जाओगे,
मुक्तों के साथ रहोगे तो मुक्त हो जाओगे—होने लगोगे

गंभीर मत होओ।

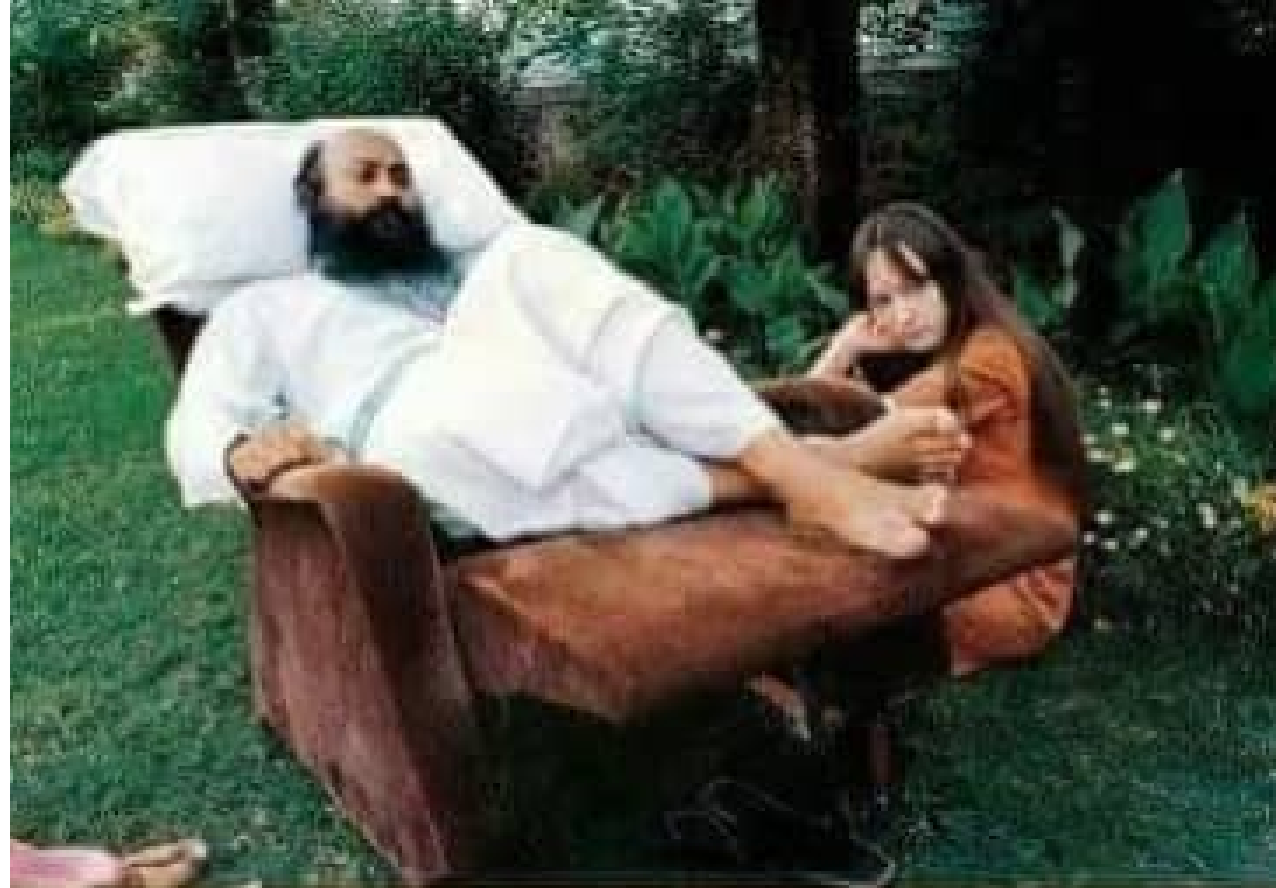
अपनी गपशप का आनंद लो,
जीवन की छोटी-छोटी चीजों का,
जीवन के छोटे-छोटे सुखों का आनंद लो।
यह सब तुम्हारे अंतस को समृद्ध करते हैं।

सुगम है मंदिर जाना; मन में जाना कठिन है।
लइसलिए सुगम को लोग चुन लेते है।
पर सुगम का सत्य से कोई सम्बन्ध नहीं है।
सुविधा से सत्य का कोई सम्बन्ध नहीं है।
इसलिए,
अधिक लोग पूजा करते है, प्रार्थना करते है।
पर बहुत थोड़े लोग ध्यान करते है।
पर जो ध्यान करते है,



मौन साधना का एक महत्वपूर्ण सूत्र ~~
किसी को भी बदलने में अपनी
उर्जा बरबाद मत करो ।
अपनी सारी उर्जा का उपयोग स्वयं
को रूपांतरित करने के लिये करो ।
तुम्हारा रूपान्तरण बहुत सारे
लोगों की मदद करेगा,
तुम्हारे तर्क किसी की
मदद नहीं कर सकते ।
इसलिए जितना हो सके ।
मौन रहो ..
मस्त रहो ...
स्वस्थ रहो ।।





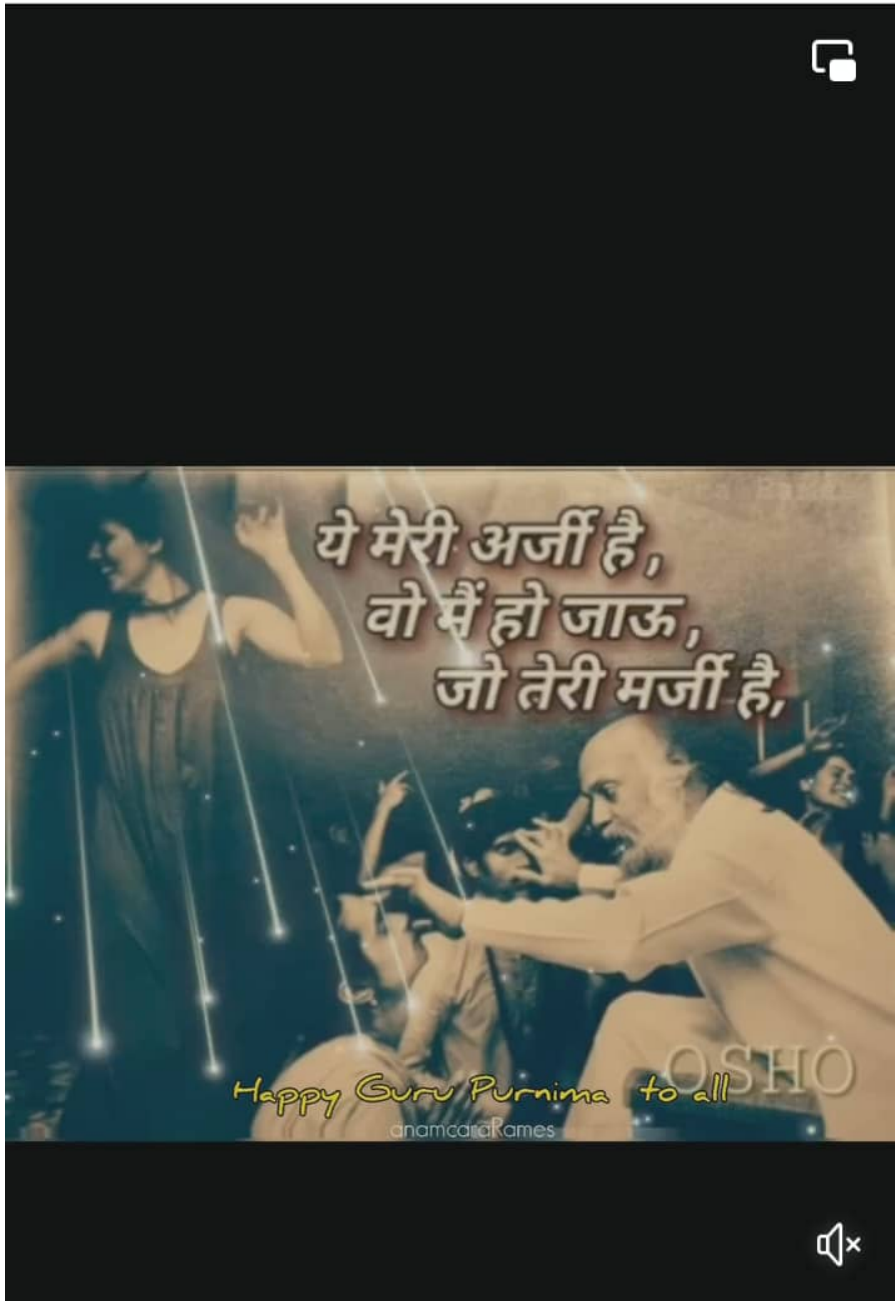
आदमी धन कमाता है इसलिए की आराम से जिएंगे फिर वर्षों खपा देता है उसे कमाने में, लक्ष्य था आराम से जिएंगे क्योंकि आराम से जीना है तो बिना धन के आराम दिखता ही नहीं है। पर सालों बाद जब धन कमा लेता है तो उसकी आदत पड़ चुकी होती है। अब आप उसको कहो की घर बैठो आराम से तो वो बैठ ही नहीं सकता। वह भूल चुका होता है की जो सीढ़ी चढ़ने के लिए पकड़ी थी, उसपे से एक दिन उतरने के लिए पकड़ी थी। किसी एक मुकाम पे पहुँच कर फिर चुपचाप एक दिन वहां से खिसक आना था क्योंकि जिसको पाकर उसे आराम करना था वो उसे मिल चुका था। पर दुर्भाग्य से लाखों में कोई एक इसे समझ पाता है।

**Anamcara Rames**

Reels · 18 Jun 2023 · 🌐



..... गुरु तू ही सहारा है।



618

19 comments · 1.4K shares · 184K plays



Like



Comment

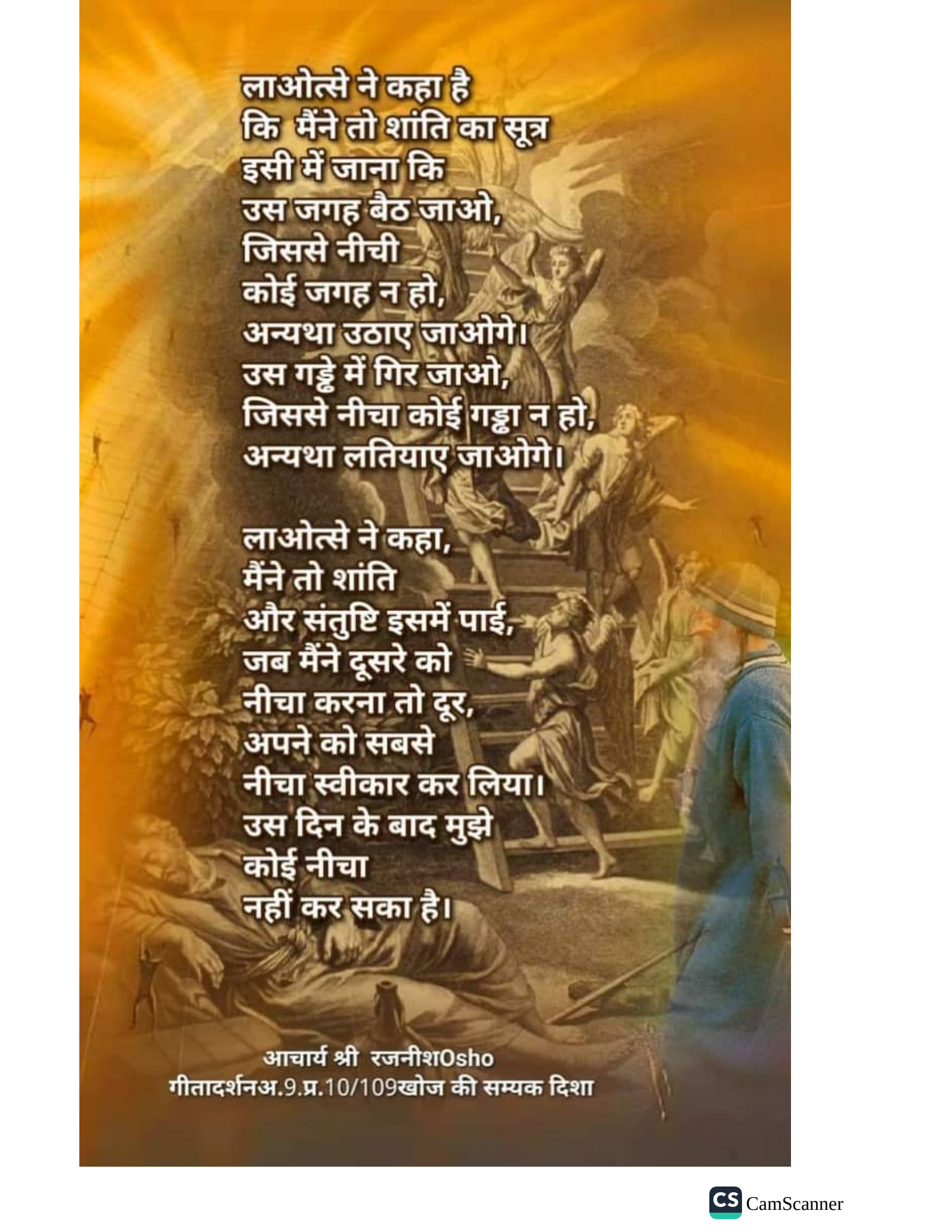


Send



Share

**Khatu Dham Daily Darshan** · [Follow](#)



लाओत्से ने कहा है
कि मैंने तो शांति का सूत्र
इसी में जाना कि
उस जगह बैठ जाओ,
जिससे नीची
कोई जगह न हो,
अन्यथा उठाए जाओगे।
उस गड्ढे में गिर जाओ,
जिससे नीचा कोई गड्ढा न हो,
अन्यथा लतियाए जाओगे।

लाओत्से ने कहा,
मैंने तो शांति
और संतुष्टि इसमें पाई,
जब मैंने दूसरे को
नीचा करना तो दूर,
अपने को सबसे
नीचा स्वीकार कर लिया।
उस दिन के बाद मुझे
कोई नीचा
नहीं कर सका है।

आचार्य श्री रजनीशOsho
गीतादर्शन अ.9.प्र.10/109 खोज की सम्यक दिशा

हुए है चारों तरफ से।

आदमी जैसा है, वह बिलकुल पागल है। और वह जो भी करता है, वह सब पागलपन से भरा है। अगर आदमी को बिलकुल उसके ही सहारे छोड़ दिया जाए, तो वह अपने को भी नष्ट कर ले सकता है। वह जो भी कर रहा है वह सब उपद्रव से ग्रस्त है। उसे कुछ पता ही नहीं कि क्या

कर रहा है, और क्या हो रहा है। यह बोधिसत्त्वों का दुर्ग, उसे बार-बार मार्ग पर ले आता है, बार-बार उसे भटकने से बचाता है, बार-बार अनेक उपाय करके दिशा और दृष्टि देने की कोशिश करता है। यह सूत्र कह रहा है कि जब तू सातवें द्वार को भी पार कर जाएगा, तब अपनी ही स्वेच्छा से तू भी इस महादुर्ग की एक ईंट बनना चाहेगा। अनेक गुरुओं की यातनाओं से निर्मित यह दुर्ग है। यह दुर्ग मनुष्य-जाति की रक्षा करता है।

तिब्बत में हर बुद्ध-पूर्णिमा को एक विशेष पर्वत पर पांच सौ बौद्ध लामा इकट्ठे होते हैं। हर वर्ष बुद्ध-पूर्णिमा की रात, आधी रात बुद्ध की वाणी सुनाई पड़ती है। यह बोधिसत्व-वाणी है। एक नियत योजना के अनुसार, एक नियत घड़ी में बुद्ध की वाणी उपलब्ध होती है। नियत लोग, निश्चित लोग, जो उस वाणी को सुन सकते हैं- क्योंकि वाणी अशरीरी है- वे ही केवल वहां इकट्ठे होते हैं। पांच सौ से ज्यादा लामा वहां कभी इकट्ठे नहीं होते हैं। जब एक लामा उनमें से मर जाता है, समाप्त हो जाता है, तभी एक नए लामा को प्रवेश मिलता है। स्थान गुप्त रखा जाता है; क्योंकि कोई भी गैर-व्यक्ति वहां पहुंच जाए, तो बाधा पड़ सकती है उस घटना में। बुद्ध मरते वक्त वह निश्चित कर गए हैं।

सद्गुरु अक्सर निश्चित कर जाते हैं कि उनके साथ, बाद में जब उनका शरीर न होगा, तो कैसे संबंध स्थापित किया जाए। यह संबंध स्थापित करने के निश्चित सूत्र हैं और उनके ही अनुसार चला जाए, तो संबंध स्थापित होते हैं। जो परंपराएं अपने गुरु से संबंध स्थापित करती रहती हैं, वे जीवित हैं!

ओशो

समाधि के सप्त द्वार

अध्याय 16



Naye bharat ke khoj

5m · 🌐



तिब्बत में एक शब्द है "तुलकू"। ब्लावट्स्की को भी तिब्बत में "तुलकू" ही कहा जाता है। "तुलकू" का अर्थ होता है ऐसा कोई व्यक्ति, जो किसी बोधिसत्व के प्रभाव में इतना समर्पित हो गया है कि बोधिसत्व उसके द्वारा काम कर सके। ब्लावट्स्की तुलकू बन सकी। स्त्री थी, इसलिए आसानी से बन सकी; समर्पित थी। जो लोग ब्लावट्स्की के पास रहते थे, वे लोग चकित होते थे। जब वह लिखने बैठती थी, तो आविष्ट होती थी, पजेस्ड होती थी। लिखते वक्त उसके चेहरे का रंग-रूप बदल जाता था। आंखें किसी और लोक में चढ़ जाती थीं। और जब वह लिखने बैठती थी तो कभी दस घंटे, कभी बारह घंटे लिखती ही चली जाती थी। पागल की तरह लिखती थी। कभी काटती नहीं थी, जो लिखा था उसको। यह कभी-कभी होता था। जब वह खुद लिखती थी, तब उसे बहुत मेहनत करनी पड़ती थी।

तो उसके संगी-साथी उससे पूछते थे, यह क्या होता है? तो वह कहती थी कि जब मैं "तुलकू" की हालत में होती हूं, तब मुझसे कोई लिखवाता है। थियोसाफी में उनको मास्टर्स कहा गया है। कोई सदगुरु लिखवाता है, मैं नहीं लिखती; मेरे हाथ किसी के हाथ बन जाते हैं; कोई मुझमें आविष्ट हो जाता है, और तब लिखना शुरू हो जाता है, तब मैं अपने वश में नहीं होती, मैं सिर्फ वाहन होती हूं। यह पुस्तक भी ऐसे ही वाहन की अवस्था में उपलब्ध हुई है।

कभी-कभी ऐसा होता था कि कुछ लिखा जाता था और उसके बाद महीनों तक वह अधूरा ही पड़ा रहता था। संगी-साथी ब्लावट्स्की के कहते कि वह पूरा कर डालो, जो अधूरा पड़ा है। वह कहती, कोई उपाय नहीं है पूरा करने का; क्योंकि मैं पूरा करूं, तो सब खतरा हो जाए; जब मैं फिर आविष्ट हो जाऊंगी, तब पूरा हो जाएगा। उसकी कुछ किताबें अधूरी ही छूट गई हैं, क्योंकि जब कोई बोधिसत्व चेतना उसे पकड़ ले, तभी लिखना हो सकता है।

ये जो बोधिसत्व हैं, ऐसी चेतनाएं जो परमद्वार पर खड़ी हैं; क्षीण होने के, विलीन होने के, शांत होने के, नष्ट हो जाने के द्वार पर खड़ी हैं-महामृत्यु अभी घटनेवाली है जिनके लिए, ये हजार तरह से काम करती हैं। किसी व्यक्ति में आविष्ट हो सकती हैं, किसी व्यक्ति को पता भी न चले, उसका उपयोग कर सकती हैं। इन सारी आत्माओं का तिब्बत में खयाल है, और खयाल सही है कि एक दुर्ग है, जो मनुष्य-जाति को घेरे

**कृष्ण कहते हैं,
जो मुझे उपलब्ध होता है,**

**वह पुनर्जन्म को
उपलब्ध नहीं होता,**

**क्योंकि
वह शाश्वतता के साथ
एक हो गया।**

आचार्य श्री रजनीशOsho
गीतादर्शन अ.9.प्र.10/109 खोज की सम्यक् दिशा



हम समझते हैं कि
बुद्धि के शुद्ध होने का अर्थ है,
शुद्ध विचार, अच्छे विचार, सात्विक विचार;
सद विचार हों तो बुद्धि शुद्ध हो जाती है।
लेकिन बुद्धि तब तक शुद्ध नहीं होती,
जब तक विचार हों,
चाहे वे सद विचार ही क्यों न हों।
जब विचार ही नहीं रह जाते,
तभी बुद्धि शुद्ध होती है।

梨

आचार्य श्री रजनीशOsho
गीतादर्शनअ.9.प्र.11/110
कर्ताभाव का अर्पण



जब कोई अपनी पत्नी के पास ऐसे जाए,
जैसे कोई मंदिर के पास जाता है;
जब कोई पत्नी अपने पति के पास ऐसे जाए,
जैसे सच में कोई परमात्मा के पास जाता है-
क्योंकि जब दो प्रेमी काम से निकट आते हैं,
जब वे संभोग से गुजरते हैं, तब सच में ही वे परमात्मा के मंदिर ही से
गुजरते हैं। वही परमात्मा काम कर रहा है, उनकी उस निकटता में।
वही परमात्मा की सृजन-शक्ति काम कर रही है।

ओशो



4



Like



Comment



Send



Share

**ओशो रहस्यदर्शी**

Kanhas Kajal Arora · 1h · 🌐



#oshoquotes🌿 *तुम्हारी प्यास ही परमात्मा के होने का प्रमाण है!

*🌿🌿 तुम जीवन को "हां" कहो, बेशर्त "हां" कहो।

और तुम पाओगे, दिल की लगी पूरी होती है,

निश्चित होती है। होने के ही लिए लगी है।

नहीं तो लगती ही न।

यह जो प्यास तुम्हारे भीतर है परमात्मा को पाने की, यह होती ही न,

अगर परमात्मा न होता।

तुमने जीवन में कभी देखा, ऐसी किसी चीज की प्यास देखी, जो न हो ?

प्यास लगती है तो पानी है; प्यास के पहले पानी है। भूख लगती है तो

भोजन है; भूख के पहले भोजन है। प्रेम उठता है तो प्रेयसी है, प्रेमी है;

प्रेम के पहले मौजूद है। इस जगत में जो भी तुम्हारे भीतर है प्यास,

उसको तृप्त करने का कहीं न कहीं उपाय है।

अगर परमात्मा की प्यास है तो प्रमाण हो गया कि परमात्मा भी कहीं है।

तुम्हारी प्यास प्रमाण है।

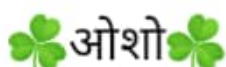
तुम प्यास पर भरोसा करो। प्यास को "हां" कहो।

आस्था रखो। और प्यास में सब भांति अपने को डुबा दो--इस भांति, कि

प्यास ही बचे और तुम न बचो।

तुम गये नहीं कि परमात्मा आया नहीं।

तुम्हारा जाना ही उसका आना है।



ओशो





जिसने स्वयं को जाना,
उसका संसार समाप्त हुआ।
और जिसने स्वयं को नहीं जाना,
उसका संसार कभी समाप्त नहीं होता।
संसार छोड़ने से तुम स्वयं को न जान सकोगे।
लेकिन स्वयं को जान लो तो संसार छूट गया।

🌹 अष्टावक्र महागीता, भाग-१, प्रवचन#७, ओशो 🌹



**जवानी की राख से
शमशान भरे पड़े हैं
और लोग कहते हैं
बुढ़ापे में भक्ति करेंगे**

कबीर साहेब जी



जिसने
आशा
न छोड़ी
वह
धार्मिक
नहीं हो
पाता।

anamcara Rames

OSHO



जब भी कोइ मरता मै उनके साथ मरघट जाता और मरघट पर जाकर दो हैरानी कि बाते मुझे हमेसा देखाइ पडती उधर आदमी जल रहा है और लोग बैठे संसार कि गपशप कर रहे है इनको याद भी नही आ रही कि यह मौत तुम्हारी भी मौत है यह घडी तो ध्यान कि थी यह तो बैठ कर सोचने कि थी यह तो विचार कि थी : ओशो

"मन लंका" "मन अवध"

"मन रावण" "मन राम"

"मन" के भीतर नित चले

"देवासुर संग्राम"

डिप्रेसन क्यो ???

श्रीकृष्ण से कितना कुछ छूटा..!

पहले माँ छूटी, फिर पिता छूटे..!

फिर जो नंद-यशोदा मिले, वे भी छूटे...

संगी-साथी छूटे.. राधा भी छूटी...

गोकुल छूटा, फिर मथुरा छूटी...

श्रीकृष्ण से जीवन भर, कुछ न कुछ
छूटता ही रहा..! नहीं छूटा तो देवत्व,
मुस्कान और सकारात्मकता...

श्रीकृष्ण दुःख नहीं, उत्सव के प्रतीक हैं...

सब कुछ छूटने पर भी, कैसे खुश रहा जा सकता

यह श्री कृष्ण से अच्छा कोई नहीं सीखा सकता

इसलिए हमेशा खश रहें, सदा मस्कराते रहे



संसार में जो भी पाना हो, दौड़ने से मिलता है। और अंतर्तम में जो भी पाना हो, वह रुकने से मिलता है। संसार में कुछ पाना हो, विचार करने से मिलता है; भीतर कुछ पाना हो, निर्विचार होने से मिलता है। क्योंकि भीतर पाना नहीं है, पाया ही हुआ है। विचारों के कारण पता नहीं चलता है--विचारों की भीड़ में शोरगुल में खो जाता है। निर्विचार होते ही तत्क्षण चकित होकर पाया जाता है कि हम किसको खोजते थे, क्यों खोजते थे? हम कहाँ-कहाँ भटके! और जिसे हम खोजते थे, वह खोजने वाले में छिपा बैठा है।
अरी मैं तो नाम रंग छुकी-7



Like



Comment



Send

**आध्यात्मिक मार्ग Aadhyatmik Marg**

Parshotam Rai · 3d · 🌐

कुछ लोगों को कुंडलिनी शक्ति पर शंका हो तो ये प्रयोग कर के देखे की सच मे कुंडलिनी होती है या नहीं

- 1) 10 मिनट पूरे विश्वास के साथ ॐ का उच्चारण करे। मूलाधार पर स्पंदन होने लगेगा।
- 2) आप अपने दोनो आँखों को हल्के हाथ से नाक के पास दबाइये 1 या 2 मिनट और पूरा ध्यान आज्ञा चक्र पर रखिये आपको कुंडलिनी का प्रकाश दिखाई देने लगेगा।
- 3) आंखों के किनारे मस्तक को दबाइये वहाँ दबाव पड़ते ही इड़ा और पिंगला नाडी बन्द हो जाती है और सुषुम्ना सक्रिय होने लगती है। इड़ा और पिंगला के बंद होते ही मूलाधार पर दबाव पड़ता है और बहुत अच्छी फीलिंग आने लगती है। एकदम रिलैक्स फील होता है। कुंडलिनी का ध्यान अगर कोई साधक न भी करता हो तो भी उसे जो आनन्द मिलता है वो मूलाधार के कारण ही मिलता है क्योंकि प्राण शक्ति मूलाधार में सोइ पड़ी है ध्यान करने से जब वो शक्ति सुषुम्ना के माध्यम से ऊपर उठने लगती है तो साधक को आनंद की अनुभूति होने लगती है।

भगवान या ध्यान से संबंधित कोई भी बात हो वो हमारे विश्वास पर निर्भर करता है इसलिए इन सब बातों के लिए विश्वास का होना बहुत जरूरी है।



58

11 comments · 7 shares



Like



Comment



Send



Share

**सत्य सनातन**

Reels · 3d · 🌐

जय श्री राम लिखना ना भूले इसी अग्नि कुंड में माता सीता जी की अग्नि परीक्षा हर्ड थी यहां हमेशा पानी से अग्नि निकलती रहती है...

एक बड़ी प्यारी घटना है—

रामकृष्ण की किसी ने तस्वीर उतारी। और जब तस्वीर बनकर आयी और रामकृष्ण के सामने रखी गयी तो रामकृष्ण उस तस्वीर को पैर पड़ने लगे। उन्हीं की तस्वीर थी! उसे सिर से लगाने लगे। जो उनके विरोधी थे उन्होंने तो कहा कि हम जानते हैं कि यह आदमी पागल है। अपनी तस्वीर कोई सिर से लगाता है! अपने पैर कोई छूता है! जो उनके शिष्य थे उनको भी जरा पीड़ा हुई कि यह हमारा गुरु क्या कर रहा है, लोग क्या कहेंगे? किसी शिष्य ने कहा कि परमहंस देव, आप यह क्या कर रहे हैं, होश में है? यह आपकी ही तस्वीर है, इसके आप पैर हैं! अपने पैर खुद छू रहे हैं! रामकृष्ण ने कहा, अरे भली याद दिलायी! मैं तो भूल ही गया था कि यह मेरी छू रहे तस्वीर है। क्योंकि अब तो उसकी ही तस्वीर सब तस्वीरों में हैं। मैं तो उसके ही चरण छू रहा था। मैं तो हूँ कहाँ? अब तो जो भी है, वही है। और फिर यह बड़ी परम समाधि अवस्था की तस्वीर है, मैं तो बड़ा तल्लीन हो गया था। यह तस्वीर किसी की भी हो, मगर है समाधि की, अनन्य भाव की, तन्मयी बुद्धि की; मैं तो उसी तन्मयी बुद्धि को नमस्कार करने लगा। ठीक कहते हैं रामकृष्ण।

अष्टावक्र ने कहा है कि जब कोई परम अनुभूति को उपलब्ध होता है तो बार—बार स्वयं को ही नमस्कार करता है।

क्यों स्वयं को नमस्कार करेगा? विक्षिप्तता है क्या यह? लेकिन स्वयं रहा नहीं है। अब तो सब जगह परमात्मा है अपने भीतर भी। इसलिए भक्त अपनी देह को भी बड़ा सम्मान करता है। और अगर तुम्हारी भक्ति के अंत में देह का सम्मान न आए, अपमान आ जाए, तो समझना कहीं भूल हो गयी, कहीं चुक हो गयी। भक्त तो अपनी देह को भी परमात्मा की ही देह मानता है। यह उसी का मंदिर है। इस देह को सताता नहीं। इसलिए भक्तों ने देह को सताया नहीं है। और जिन्होंने देह को सताया है, वे विक्षिप्त हैं, वे रुग्ण हैं, मनोरणे से ग्रस्त हैं।

जिसने सबके भीतर परमात्मा को देख लिया, क्या बस अपने भीतर नहीं देखेगा, और सबके भीतर देख लेगा? जिसने सबके भीतर देख लिया, उसने अपने भीतर भी देख लिया। वस्तुतः जिसने अपने भीतर देखा, उसी ने सबके भीतर देखा—पहले तो अपने भीतर ही देखना घटता है।

ओशो



Naye bharat ke khoj

1d · 🌐

...



बस

एक ही बात

लोगो को समझाना आवश्यक है

की सहजता से जीयो ! जब हंसी आये तो रोकना मत,

और आंसू आये तो उन्हें बह जाने देना! इस जगत में

सभी व्यवहार नकली हो गए है ! क्यों की झूठ में

तुम्हारी श्रद्धा है !

मैं

कहता हूँ

अभिनय छोडो,

सरल ही रहो, जैसे तुम हो ठीक वैसे ही! सहजता से

जो भी कृत्य जन्मे, उसे होने दो,

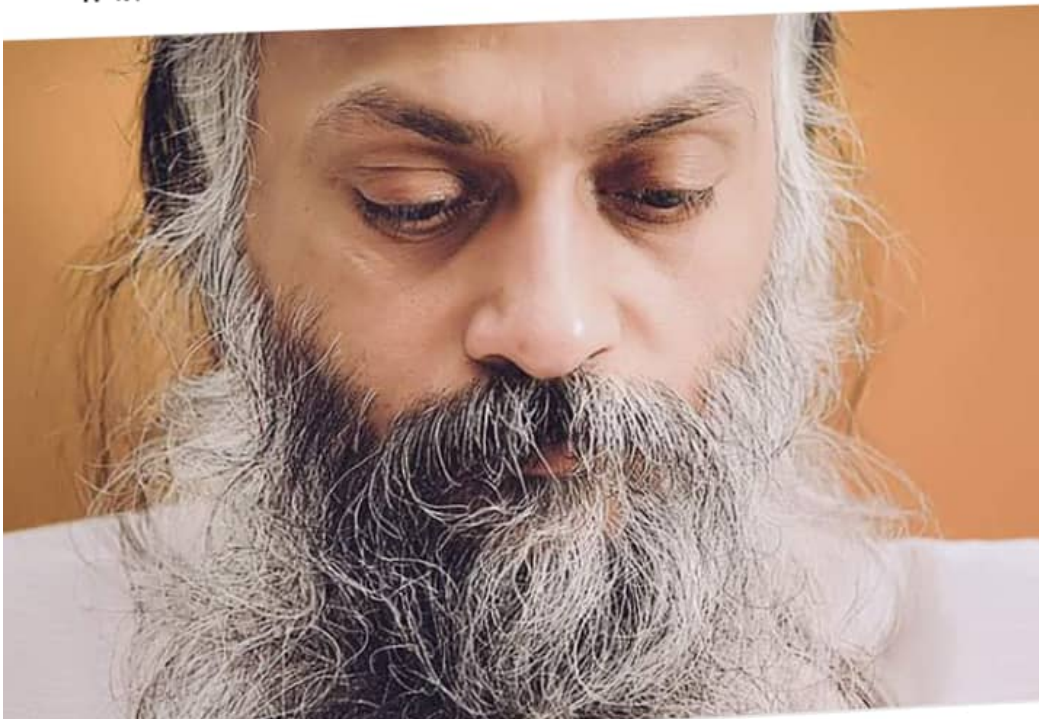
उसकी सुन्दरता का आनंद लो! तब एक अनूठा प्रसाद,

एक सौंदर्य होगा, स्वाभाविकता होगी, उसमे कुछ

सच्चाई और प्रमाणिकता होगी, नकल नहीं,

मिथ्या आचरण नहीं, और यह कितना सरल है!!!

ओशो



कहा, तू जरा भी चिंता मत कर। क्योंकि जहर मेरा अब कुछ भी न बिगाड़ सकेगा, क्योंकि मैं उसे जानता हूँ, जो अमृत है। तू जरा भी चिंता मत कर।

लेकिन फिर भी उस आदमी की चिंता तो हम समझ सकते हैं। बुद्ध ने उसे कहा कि तू धन्यभागी है। तुझे पता नहीं। तू खुश हो। तू सौभाग्यवान। क्योंकि कभी हजारों वर्षों में बुद्ध जैसा व्यक्ति पैदा होता है। दो ही व्यक्तियों को उसका सौभाग्य मिलता है, पहला भोजन कराने का अवसर उसकी मां को मिलता है और अंतिम भोजन कराने का अवसर तुझे मिला है। तू सौभाग्यशाली है; तू आनंदित हो। ऐसा फिर सैकड़ों-हजारों वर्षों में कभी कोई बुद्ध पैदा होगा और ऐसा अवसर फिर किसी को मिलेगा। उस आदमी को किसी तरह समझाकर-बुझाकर लौटा दिया।

बुद्ध के शिष्य कहने लगे, आप यह क्या बातें कह रहे हैं! यह आदमी हत्यारा है। बुद्ध ने कहा, भूलकर ऐसी बात मत कहना, अन्यथा उस आदमी को नाहक लोग परेशान करेंगे! तुम जाओ; गांव में डुंडी पीटकर खबर करो कि यह आदमी सौभाग्यशाली है, क्योंकि इसने बुद्ध को अंतिम भोजन का दान दिया है।

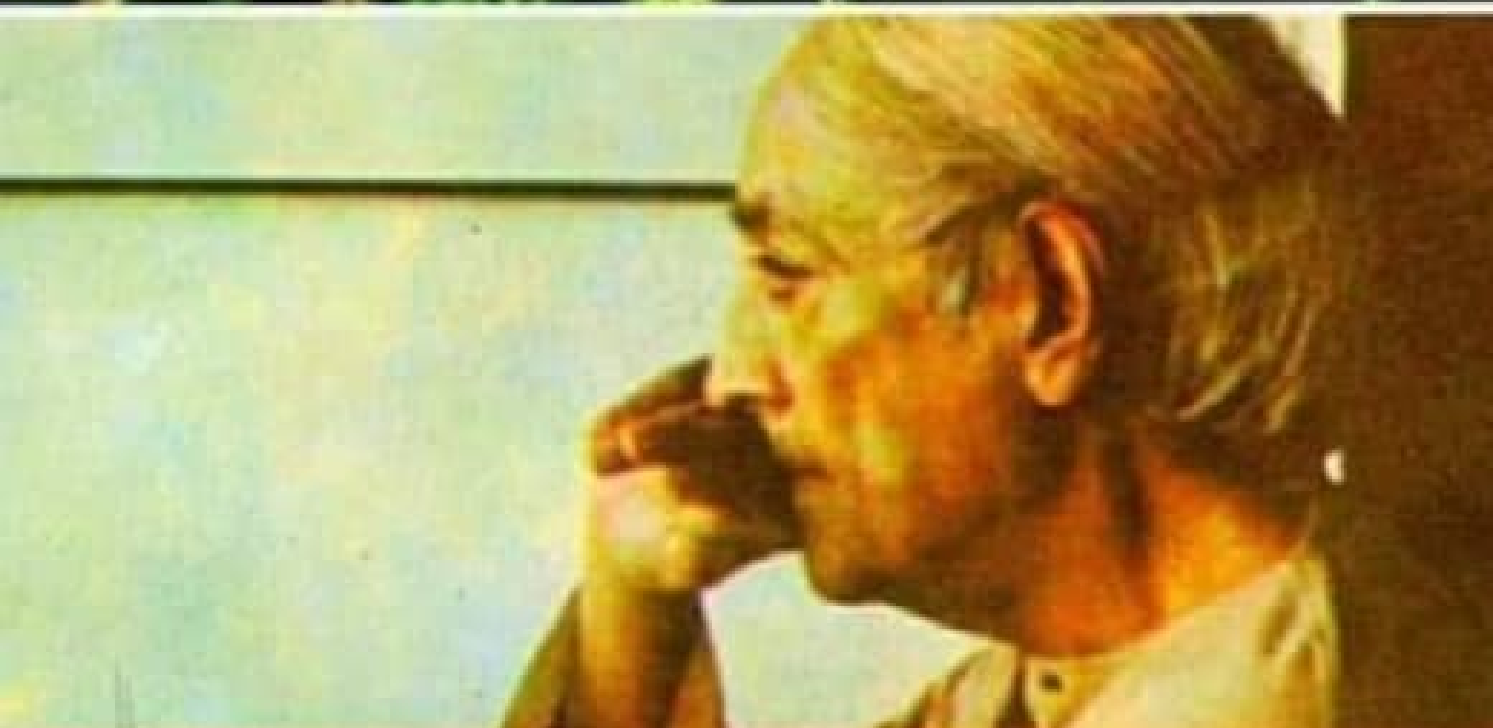
मरने के वक्त लोग उनसे कहते थे कि आप एक दफे भी तो रुक जाते! कह देते कि कड़वा है, तो हम पर यह वज्रपात न गिरता! लेकिन बुद्ध कहते थे कि यह वज्रपात रुकने वाला नहीं था। किस बहाने गिरेगा, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। और जहां तक मेरा संबंध है, मुझ पर कोई वज्रपात नहीं गिरा है, नहीं गिर सकता है। क्योंकि मैंने उसे जान लिया है, जिसकी कोई मृत्यु नहीं है।

यह अनुभव हो, तो फिर कोई कंपन जीवन के किसी भी दुख का नहीं होता है।

हमें तो सब चीजें हिला जाती हैं। हमारे पीछे तो कोई ऐसी चीज नहीं है, जिस पर हम बिना हिले खड़े हो जाएं। कोई ऐसा स्तंभ नहीं है, जिस पर हम बिना हिले खड़े हो जाएं।

ओशो, गीता-दर्शन, भाग-3(प्रव.-11)

जरा अपनी जिंदगी के बारे में सोचिए? उस जिंदगी की ओर एक भरपूर नज़र देखिये जिसे आप अगले जन्म तक जारी रखना चाहते हैं... आपका जीवन है क्या? एक निरंतर संघर्ष, एक निरंतर संभ्रम... बस कभी कभी खुशी की कोई झलक दिख पाती है, नहीं तो वही बोरियत, दुख, डर, यंत्रणा, निराशा, कुंठा, जलन, महत्वाकांक्षा.. यही है सब जो आपकी जिंदगी है हकीकत में. बीमारियों से भरी, टुच्चेपन से भरी.. क्या यही है वह जिंदगी जिसे आप अगले जन्म तक ले जाना चाहते हैं... जे.कृष्णमूर्ति



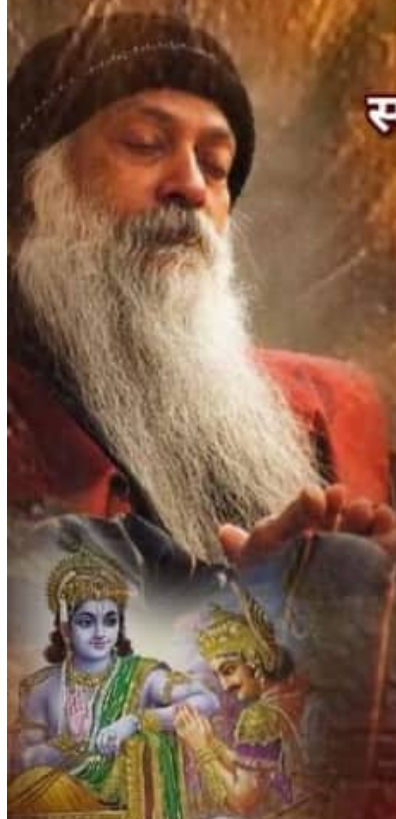
ध्यान तुम्हें तुम्हारे ठीक केंद्र पर
लाता है और तुम्हारा केंद्र सिर्फ
तुम्हारा ही केंद्र नहीं है
यह समूचे अस्तित्व का केंद्र है
सिर्फ परिधि पर हम अलग हैं
जैसे - जैसे हम केंद्र की तरफ
बढ़ने लगते हैं , हम एक हो जाते
हैं

ओशो

ईश्वर के संबंध में चुप होने से ही
उसका पता चलेगा।
मौन रह जाने से ही। कुछ मत कहो।
है और नहीं मैं उसे नहीं कहा जा सकता।
वह मेरी चुप्पी को समझ गया,
वह मेरे पैर छूकर गया है।
आनंद, तूने देखा!
वह पैर छूकर गया है।
पैर छूते वक्त तूने उसकी आंखें देखी थीं?
वे जैसे शांत झील की तरह हो गई थीं।
और वह आदमी जल्दी ही
प्रभु को पा लेगा।

अब ऐसे आदमी से
अगर आप जाकर पूछें,
तो उत्तर तक निश्चित नहीं है कि
वह क्या कहेगा!
स्पांटेनियस होगा, रिपिटीटिव नहीं होगा।
सहज होगा; पुनरुक्ति नहीं होगी।
वह वही कहेगा,
जो उस क्षण में उसकी पूरी
अंतरात्मा से निकलेगा।
वह वही करेगा उस क्षण में,
जो उसके पूरे प्राणों से
जन्म लेगा।

आचार्य श्री रजनीशOsho
गीतादर्शनअ.9.प्र.10/109
खोज की सम्यक दिशा



खाली होना सूत्र है ।

शून्य होना सूत्र है ।

शून्य होना साधना है ।

और जो शून्य है

वह पूर्ण होकर

विद्ध हो जाता है ।

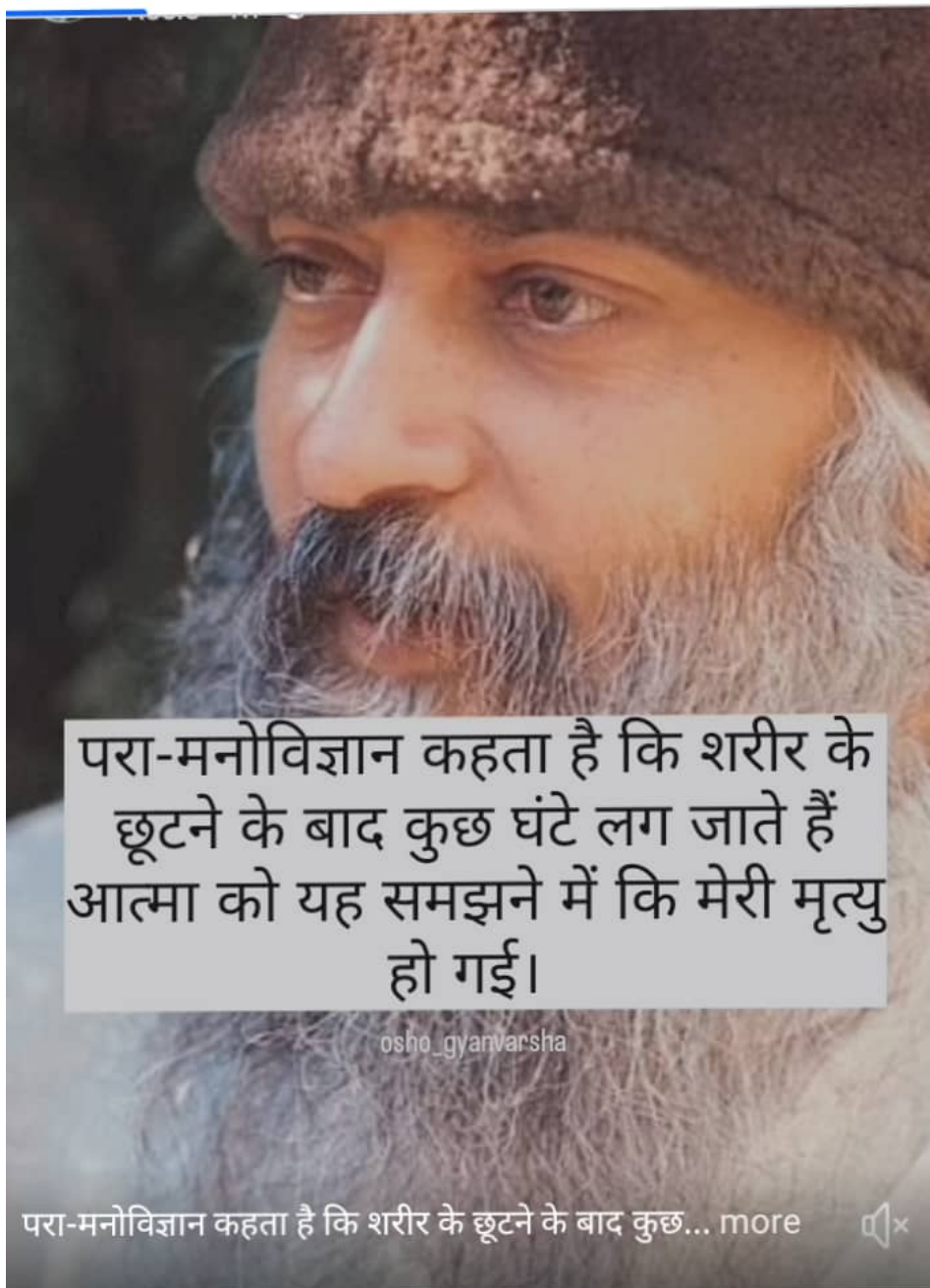
शून्य होना साधना है

पूर्णता सिद्ध है ।

ओशो अहोभाव

हंसा तो मोती चुने

facebook



परा-मनोविज्ञान कहता है कि शरीर के छूटने के बाद कुछ घंटे लग जाते हैं आत्मा को यह समझने में कि मेरी मृत्यु हो गई।

osho_gyanvarsha

परा-मनोविज्ञान कहता है कि शरीर के छूटने के बाद कुछ... more



26

2 comments • 5 shares



Like



Comment



Send



Share



रिश्तो की अहमियत

Madhu Sharma · 4h ·

दरवाजे घर के हों या दिल के



अहोभाव

1d · 🌐

...



अहोभाव

सत्य जब भी अवतरित होता है,
तब व्यक्ति के प्राणो पर अवतरित होता है।
सत्य भीड के उपर अवतरित नहीं होता।
सत्य को पकड़ने के लिए व्यक्ति का प्राण ही वीणा बनता है।
वही से झंकृत होता है सत्य । भीड के पास कोई सत्य नहीं है।
भीड के पास उधार बाते है जो कि असत्य हो गयी है।
भीड के पास किताबे है जो कि मर चुकी है।
भीड के पास महात्माओ, तीर्थकरो, अवतारो के नाम है,
जो सिर्फ नाम है, जिनके पीछे अब कुछ भी नहीं बचा, सब राख हो गया
है।
भीड के पास परम्पराए है, भीड के पास याददाश्ते है,
भीड के पास हजारो लाखो साल की आदते है।
लेकिन भीड के पास वह चित्त नहीं है, जो मुक्त होकर सत्य को जान
लेता है।
जब भी कोई उस चित्त को उपलब्ध करता है, तो अकेले मे,
व्यक्ति की तरह उस चित्त को उपलब्ध करना पडता है। ओशो





**You have three eyes.
Two to look... One to see.**

*Art by Annello Selis
musas from a mystics*

move



Add friend

Remove



A

See all >

**Anamcara Rames**

2d · 🌐

मेरी आंख खुल जाए, तो तू यहीं है। सिर्फ मैं आंख बंद किए बैठा हूं इसलिए तू दिखाई नहीं पड़ता है। भक्त यह नहीं कहता है कि तू आ। इतनी भी वासना नहीं है। इतना ही कि अपने को मिटा देता है। वासना के खोते ही मिट जाता है।

वासना ही हमारे अहंकार का आधार है। जब तक हम कुछ मागतें हैं, तभी तक मैं हूं। जब मैं कुछ भी नहीं मांगता, तो मेरे होने का कोई कारण नहीं रह जाता। मैं न होने के बराबर हो जाता हूं। एक खालीपन, एक शून्यता घटित हो जाती है। वही शून्यता उपासना है, वही शून्य परमात्मा की सन्निधि है।

यह जो व्यक्ति के भीतर वासना से छूटकर शून्य का निर्मित होना है, इस पर ध्यान दें। इस पर ध्यान दें, तो कोई कारण नहीं है, कोई कारण नहीं है कि जो हमारे लिए बड़े-बड़े शब्द मालूम पड़ते हैं, खाली और व्यर्थ, वे सार्थक और जीवंत न हो जाएं।

परमात्मा एक खाली शब्द है हमारे लिए। इस शब्द में हमारे लिए कुछ भी मालूम नहीं पड़ता कि क्या है।



आचार्य श्री रजनीशOsho

गीतादर्शनअ.9.प्र.9/108

॥ वासना और उपासना— ॥

विवेकानंद ने एक दिन रामकृष्ण को कहा कि 'परमहंस देव! आप एक शब्द तो कह दें परमात्मा को, जिससे आप इतने निकट से जुड़े हैं; कि हटाओ इस कंठ-अवरोध को। और कितना प्यारा था भोजन आपको! स्वाद में आप कितना रस लेते थे! और हम पीड़ित होते हैं कि आप भोजन कर नहीं पाते। पानी तक भीतर ले जाना मुश्किल है।'

तो रामकृष्ण कहते, 'एक दिन मैंने उससे कहा तो उसने कहा, इस कंठ से बहुत भोजन कर लिया, अब दूसरे कंठों से कर। अब मैं तुम्हारे कंठों से भोजन का रस ले रहा हूं। उसकी बड़ी कृपा है, उसने यह कंठ अवरुद्ध कर दिया। अब सभी कंठ मेरे हैं। अब जहां भी कोई स्वाद ले रहा है, मैं ही स्वाद ले रहा हूं। अब मैं तुमसे भोजन करूंगा।'

निश्चित ही रामकृष्ण ने परमात्मा को स्वाद की भांति जाना, और फिर सारी इंद्रियां में उसी में डूब गईं। कभी छह घंटे, कभी आठ घंटे, कभी छह दिन रामकृष्ण बेहोश पड़े रह जाते। वे स्वाद में लीन! बुद्ध ने परमात्मा को आंख से जाना होगा। आंख के लिए होश चाहिए, स्वाद के लिए लीनता चाहिए।

ओशो, बिन बाती बिन तेल (प्रवचन--18) 🙏🙏🙏



ओ शो वाणी

Seema Mangal · 2h ·



#रामकृष्ण घंटों तक बेहोश हो जाते थे। किसी ने इसकी ठीक से खोज नहीं की कि बात क्या थी? बुद्ध कभी बेहोश नहीं हुए रामकृष्ण जैसे। रामकृष्ण बेहोश हो जाते। रामकृष्ण के परमात्मा का अनुभव आंख का तो नहीं है। क्योंकि आंख खुली रहे, होश चाहिए। रामकृष्ण का अनुभव मोहम्मद का भी नहीं है। गंध का भी नहीं है। रामकृष्ण का अनुभव सूफियों के संगीत का भी नहीं है, मीरा के संगीत का भी नहीं है। कृष्ण की बांसुरी का भी नहीं।

यह मैं तुमसे पहली बार कहता हूं कि रामकृष्ण बेहोश हो जाते थे क्योंकि उनका अनुभव परमात्मा का, स्वाद का है। यह बात कभी कही नहीं गई है। इसलिए इसके लिए प्रमाण तुम कहीं भी नहीं खोज सकोगे। परमात्मा को चखा रामकृष्ण ने। वह स्वाद का अनुभव है। और स्वाद एकदम बेहोशी में ले जाएगा, क्योंकि स्वाद इतनी भीतरी इंद्रिय है! सभी इंद्रियां बाहर हैं स्वाद के मुकाबले--कान बाहर, नाक भी, आंख भी; स्वाद बहुत गहरे में है। और इसका कारण है। क्योंकि रामकृष्ण भोजन के बड़े प्रेमी थे, इसीलिए। चर्चा चलती ब्रह्मज्ञान की, बीच-बीच में उठकर चौके में शारदा को पूछ आते थे, 'क्या बन रहा है?' शारदा तक को संकोच लगता था, कि 'लोग क्या कहेंगे? तुम ब्रह्मचर्चा छोड़कर बीच में चौके में आते हो?' थाली लेकर शारदा आती तो रामकृष्ण बैठे नहीं रह जाते थे, एकदम खड़े हो जाते थे, थाली में झांकते, क्या है?

स्वाद से ब्रह्म को जाना था। भोजन उनके लिए ब्रह्म था। उपनिषदों ने जहां कहा है, अन्न ब्रह्म है। वह किसी ने स्वाद से जानकर कहा होगा, नहीं तो अन्न को कोई ब्रह्म कहेगा? सुनकर हमको भी थोड़ा बेहूदा लगता है। अन्न ब्रह्म! भोजन ब्रह्म! लेकिन किसी ने स्वाद से जाना होगा। और बड़े मजे की बात है कि रामकृष्ण इतने दीवाने थे भोजन के, और उनको जब बीमारी हुई तो कंठ का कैंसर हुआ। फिर यह आखिरी परीक्षा थी स्वाद की। होनी ही चाहिए। रामकृष्ण को ही हो सकती है। रामकृष्ण का कंठ अवरुद्ध हो गया। फिर आखिरी दिनों में वे भोजन नहीं कर पाते थे। कैंसर हो गया था।

विवेकानंद ने एक दिन रामकृष्ण को कहा कि 'परमहंस देव! आप एक शब्द तो कह दें परमात्मा को, जिससे आप इतने निकट से जुड़े हैं; कि

88

5 comments • 19 shares



Like



Comment



Send



Share

**John Elia - Hindi**

Ãhmad Writzs · 1h · 🌐

आज मै कोयला हूं तो छोड़ रही हो",
 कल तप कर हीरा बन गया तो खरीद पाओगी क्या?
 ————— 🙄❤️

तेरे प्यार मै मै सरे बाजार भी बिक जाऊं",
 ""शर्त यही है खरीदार बन कर आओगी क्या...! 🙄🔪🚬



17

40 comments



Like



Comment



Send



Share

**कबीर साहेब जी महाराज**

मेरे पास लोग आते हैं, वे कहते हैं, आप हमें परमात्मा दिखला दें तो हम मान लें। उन्होंने एक बात स्वीकार ही कर ली है कि उनके पास आंखें तो हैं ही; बस परमात्मा मौजूद हो जाए तो वे देख ही लेंगे। परमात्मा मौजूद ही है। परमात्मा कभी गैर—मौजूद नहीं होता। जो गैर— मौजूद हो जाए वह परमात्मा नहीं है। मौजूदगी ही उसकी है। सारा अस्तित्व उसका है। अस्तित्व और परमात्मा दो नहीं हैं।

इसलिए मैं तुम्हें फिर याद दिला दूँ मैंने कभी नहीं कहा कि संसार में परमात्मा छिपा है। मैं कह रहा हूँ यही कि संसार परमात्मा है। तुम्हारे लिए छिपा है, क्योंकि तुम्हारी आंख छिपी है, उँगोट में है।

अथातो भक्ति जिज्ञासा--भाग-2 (ओशो)

मगर प्रमाण को समझने की कला तुम्हें आती है? हम उतना ही समझ पाते हैं जितना हमारी समझने की पात्रता होती है। छोटा बच्चा है। अभी तुम उसके सामने कामशास्त्र की कीमती से कीमती किताब रख दो, तो भी रस उसे नहीं आएगा। तुम वात्स्यायन के कामसूत्र रख दो, वह सरका देगा। उसे अभी परियों की कहानियों में रस है। अभी भूत—प्रेतों की कहानियों में रस है। अभी तुम उसे कोहिनूर हीरा दे दो, वह एक तरफ कर देगा, और दो पैसे के खिलौने को, घुनघुने को बजाने लगेगा। क्या कोहिनूर कोहिनूर नहीं है। लेकिन बच्चे की समझ अभी खिलौने की समझ है। छोटे बच्चे के सामने तुम सौ रुपये का नोट करो और एक चमकता हुआ तांबे का पैसा, बच्चा तांबे के पैसे को चुन लेगा। सौ रुपये का नोट कागज है, उसका कोई मूल्य नहीं है उसके सामने। चमकदार सिक्का उसे लुभा लेगा। हम अपनी समझ के अनुकूल देख पाते हैं।

यदि तुम्हें परमात्मा नहीं दिखायी पड़ता, तो एक बात सुनिश्चित है कि तुम्हारे भीतर अभी परमात्मा को देखने की क्षमता और पात्रता नहीं है। उस पात्रता को जगाओ। लेकिन लोग उलटा काम करते हैं, वे कहते हैं—परमात्मा का प्रमाण चाहिए। लोग उल्टी बात पूछते हैं, वे कहते हैं—परमात्मा कहां हैं, हमें दिखला दें।

मेरे पास लोग आते हैं, वे कहते हैं, आप हमें परमात्मा दिखला दें तो हम मान लें। उन्होंने एक बात स्वीकार ही कर ली है कि उनके पास आंखें तो हैं ही; बस परमात्मा मौजूद हो जाए तो वे देख ही लेंगे। परमात्मा मौजूद ही है। परमात्मा कभी गैर—मौजूद नहीं होता। जो गैर—मौजूद हो जाए वह परमात्मा नहीं है। मौजूदगी ही उसकी है। सारा अस्तित्व उसका है। अस्तित्व और परमात्मा दो नहीं

तुम और पूछते हो प्रमाण क्या है! कहा नहीं है प्रमाण? प्रत्येक? प्रत्येक घटना पर, प्रत्येक वस्तु पर उसके हस्ताक्षर हैं। पढ़ना आना चाहिए। गीता सामने रखी है, गान चल रहा है लेकिन तुम्हें पढ़ना नहीं आता। तुम्हें गीत की समझ नहीं है। लेकिन समझ नहीं है, ऐसा मानना तुम्हारे अहंकार के विपरीत पड़ता है। तुम तो मानकर चलते हो समझ है, मैं आंखवाला हूं तब परमात्मा कहा है?

मैं तुम्हें याद दिलाना चाहता हूं—परमात्मा है, समझ नहीं है। इसलिए परमात्मा मत खोजो, समझ खोजो। निखारो अपने को। थोड़े ध्यान की दिशा में कदम उठाओ। प्रेम और ध्यान के दो पंख तुम्हारे ऊंग आएं, फिर परमात्मा का आकाश ही आकाश है। उड़ना तुम्हें आ जाए, आकाश सदा से है। कुछ करना है तुम्हारे भीतर, बाहर कुछ नहीं करना है।

रामकृष्ण से किसी ने पूछा, परमात्मा का प्रमाण क्या है? रामकृष्ण ने कहा—मैं हूं। मैं भी तुमसे कहता हूं—मैं हूं प्रमाण। और मैं तुमसे यह भी कहता हूं तुम भी हो प्रमाण। प्रमाण ही प्रमाण हैं। कण— कण पर प्रमाण हैं और क्षण— क्षण प्रमाण हैं।

मगर प्रमाण को समझने की कला तुम्हें आती है? हम उतना ही समझ पाते हैं जितना हमारी समझने की पात्रता होती है। छोटा बच्चा है। अभी तुम उसके सामने कामशास्त्र की कीमती से कीमती किताब रख दो, तो भी रस उसे नहीं आएगा। तुम वात्स्यायन के कामसूत्र रख दो, वह सरका देगा। उसे अभी परियों की कहानियों में रस है। अभी भत— पेटों की कहानियों में रस है। अभी तम उसे

यह रसीली सहर, यह भीगी फजा

यह धुंधलका, ये मस्त नजारे

मय में गला है डूबता महताब

रस में डूबे हैं मलगजे तारे

बेतुकल्लफ समा यह जंगल का

हूर देखे तो खुल्द को वारे

ये घने नख्त, ये हरे पौधे

जिनमें टाके हैं ओस ने तारे हाय,

ये सुख—सुख ढाक के फूल

ठंढे ठंढे दहकते अंगारे

मुस्कुराया वह तिफ्लके—मशरिक

जगमगाये वह दश्तोदरसारे

ली शुजाओं ने तन के अंगडाई

रेंगकर नूर के बहे धारे

किरनें चलकी, वह रंग—सा बसा

वह छूटे सुख जर्द फव्वारे

वह गुलों की धड़क उठी छाती

वह खुश—अल्हान बाग चहकारे

8:35 am KB/s VoLTE 4G 67%
मे समथे है। ये जो आंख है, सतह को छू सकती है। एक
और आंख है तुम्हारे जो गहराई में प्रवेश कर सकती है।
परमात्मा उस गहराई का नाम है। प्रेम की आंख खोलो।
भजन में उतरो। नाचो। आनंद में डूबो। परमात्मा की
तलाश में जाने की जरूरत नहीं, परमात्मा तुम्हारी तलाश
करता आएगा। पुकारो! प्रार्थना करो! तुम पूछते हो, प्राण
क्या है? क्या नहीं है जो प्रमाण नहीं है? हर चीज उसका
प्रमाण है। ये पक्षियों का गान, वृक्षों का सन्नाटा, ये सूरज
की नाचती किरणें, ये हरियाली, ये लोग, तुम—सब प्रमाण
हैं। इतना रहस्यपूर्ण जीवन है। और तुम पूछते हो—
परमात्मा कहां है।

प्रमाण क्या है?

इतना अनंत उत्सव चल रहा है और तुम पूछते हो—प्रमाण
क्या है?

यह रसीली सहर, यह भीगी फजा

यह धुंधलका, ये मस्त नजारे

मय में गला है डूबता महताब

रस में डूबे हैं मलगजे तारे

बेतुकल्लफ समा यह जंगल का

हूर देखे तो खुल्द को वारे

ये घने नख्त, ये हरे पौधे

जिनमें टाके हैं ओस ने तारे हाय,

~ ~ ~ ~ ~

**"Osho Universal"**

Khuman L Rathod · 9m · 🌐



पहला प्रश्न : आप कहते हैं संसार में ही परमात्मा छिपा है। इसका प्रमाण क्या है?

संसार में परमात्मा छिपा है, ऐसा मैंने कभी कहा नहीं। संसार परमात्मा है!

छिपे का तो अर्थ हुआ, संसार से कुछ भिन्न है, संसार से कुछ अलग है, संसार की ओट में है, संसार की आड़ में। कोई बाड़ ही नहीं फण। संसार ही परमात्मा है। सिर्फ तुम्हारी आंखें अंधी हैं। परमात्मा ही छिपा है, परमात्मा प्रकट है। सिर्फ तुम आंखें बंद किये हो। परमात्मा का नाद गूँज रहा है, लेकिन तुम बहरे हो। तुम्हारा हृदय धड़क नहीं रहा, इसलिए उसके छंद को तुम अनुभव नहीं कर पाते हो। सूरज निकला हो तो भी आंख बंद किये खड़े रहो, तो क्या कहोगे सूरज छिपा है? सिर्फ तुमने आंख अपनी छिपा रखी है, परमात्मा नहीं छिपा है। परमात्मा पर ओट नहीं सिर्फ तुम्हारी आंख पर ओट है। आंख पर पर्दा है, परमात्मा पर पर्दा नहीं है। आंख खोलो।

ये जो आंखें तुम्हारी हैं, ये केवल शूद्र को देख सकती हैं। एक और भी आंख है तुम्हारी भीतर, जो विराट को देखने में समर्थ है। ये जो आंखें हैं, सतह को छू सकती हैं। एक और आंख है तुम्हारे जो गहराई में प्रवेश कर सकती है। परमात्मा उस गहराई का नाम है। प्रेम की आंख खोलो। भजन में उतरो। नाचो। आनंद में डूबो। परमात्मा की तलाश में जाने की जरूरत नहीं, परमात्मा तुम्हारी तलाश करता आएगा। पुकारो! प्रार्थना करो! तुम पूछते हो, प्राण

ओशो.....♡

मेरे भीतर,

आपके

भीतर,

सबके

भीतर,

वह है

जिसकी

कोई

मृत्यु नहीं !!!



5

1 comment



Like



Comment



Send

**ओशो के विचार - O'sho friends**

Shivam Singh · 37m · 🌐

उत्तम वीर्य वही है जो कम से कम छः माह तक स्खलित न हुआ हो तथा ऋतुकाल और स्वर विज्ञान देखकर उसकी आहुति दी गई हो। पर यह आहुति के लिए अपनी पत्नी को ही चुना गया हो अन्यथा यह नरक का बीज है।

उत्तम भक्त संतान को जन्म देने के लिए गृहस्थ यह नियम अपनाये। और उन छः माह में संतान गोपाल स्तोत्र से केशव की आराधना करे या अभिलाषाष्टक से शिव जी की आराधना।

आजकल के माता पिता आधी घड़ी के सुख के लिए पत्नी को भोगते हैं उनको न तो ऋतुकाल से मतलब न ही स्वर विज्ञान से न ही छः माह के अखंड ब्रह्मचर्य से। बस उनको तो पत्नी को खिलाने पिलाने की कीमत रात को उससे संसर्ग का सुख लेकर बसूलना है।

शीर्षक- रेत व रज

रेत व रज शुक्र के दो भेद हैं। रेत पुरुषों में होता है जबकि रज स्त्रियों में होता है। रेत में तेज होता है जबकि रज में ज्योति होती है। रेत के कारण पुरुष तेजस्वी कहलाते हैं और रज के कारण स्त्री ज्योतिर्मय कहलाती हैं।

रेत वीर्य को कहते हैं और रज अंड को कहते हैं। रेत (वीर्य) और रज (अंड) के मिलन से उत्पत्ति होती है। रेत जलीय है और रज लोहित(लाल) है। स्त्री अग्नि है, उपस्थ समिधा है, योनि ज्वाला है, योनि के अंदर जो किया(संभोग) जाता है वह अंगार है आनंद ही अग्निकोण है और इसमें वीर्य को होमा जाता है।

वीर्य को होमने से उत्पत्ति होती है। जिस प्रकार उत्तम यज्ञकुंड में, उत्तम विधि से यज्ञ किया जाता है उसी प्रकार उत्तम योनि में, उत्तम वीर्य को होमा जाता है। गर्भधान संस्कार हेतु तप करना ही उत्तम योनि व उत्तम वीर्य बनने की प्रक्रिया है।

Shivam singh

लेकिन एक बात आपसे पूछती हूं, सजा जो देनी हो दे दें, एक बात का जवाब मुझे जरूर दे दें। मैं अपने प्रेमी से मिलने जा रही थी और इतनी दीवानी थी और आप परमात्मा से मिलने गए हुए थे और मेरा धक्का आपको याद आ गया! और मेरा धक्का आपको दिखाई पड़ गया! और मेरे धक्के का आपको पता चल गया! मैं तो अपने साधारण से प्रेमी से मिलने जा रही थी-एक साधारण भौतिक-सी बात; और आप तो आध्यात्मिक नमाज में थे, प्रार्थना में थे; पूजा में थे, ध्यान में थे! आप तो परमात्मा से मिलन कर रहे थे! आपको मेरा धक्का पता चल गया! यह बात मेरी समझ में नहीं आती।'

कहते हैं अकबर का सिर झुक गया शर्म से। उसने अपने जीवन में उल्लेख करवाया है कि उस युवती ने मुझे पहली दफा बताया कि मेरी नमाज सब थोथी है, औपचारिक है। बस करता हूं, क्योंकि करनी चाहिए। उस युवती से मैंने पहली दफा जाना कि नमाज में एक दीवानापन होना चाहिए, एक मस्ती होनी चाहिए। अपने प्रेमी से मिलने जा रही थी तो कैसी मस्त थी, कैसी अलहड़ थी! और मैं परमात्मा से मिलने जा रहा था, क्या खाक मिलने कहीं गए थे! वहीं बैठे थे, नाहक आंखें बंद किए।

ओशो



अकबर एक सांझ जंगल में शिकार खेलने गया था। लौट रहा था, सांझ हो गयी, नमाज पढ़ने बैठा। जब नमाज पढ़ रहा था, अपना दस्तरखान बिछा कर, एक युवती भागती हुई निकली। अल्हड़ युवती रही होगी। थी युवती कि मुझे मिल जाती तो मेरी संन्यासिनी होती। एक धक्का मार दिया अकबर को। वे बेचारे बैठे थे अपना नमाज पढ़ने, धक्का खा कर गिर पड़े। मगर नमाज में बीच में बोलना ठीक भी नहीं। बीच में बोलना तो बहुत चाहा, दिल तो हुआ कि गर्दन पकड़ कर दबा दें इस औरत की, कि गर्दन उतार दें, मगर नमाज बीच में तोड़ी नहीं जा सकती। इसलिए पी गए जहर का घूंट। और युवती जब लौट रही थी तो नमाज तो खत्म हो गयी, अकबर राह देख रहा था उसकी। जब वह लौटी तो अकबर ने कहा कि रूक बदतमीज! तुझे इतनी भी तमीज नहीं कि कोई नमाज पढ़ता हो तो उसे धक्का मारना चाहिए? फिर तुझे यह भी नहीं दिखाई पड़ता कि मैं सम्राट हूं! साधारण आदमी को भी नमाज पढ़ने में धक्का नहीं मारना चाहिए, सम्राट को धक्का मारा!

युवती ने कहा: 'क्षमा करें, अगर आप को धक्का लगा हो! मुझे कुछ याद नहीं। बहुत दिनों बाद मेरा प्रेमी आ रहा था। मैं तो उसका स्वागत करने भागी चली जा रही थी। मुझे कुछ ओर दिखाई पड़ नहीं रहा था सिवाए उसके। मुझे याद भी नहीं। आप कहते हैं तो जरूर धक्का लगा होगा। हालांकि जब आपको धक्का लगा तो मुझको भी लगा होगा, क्योंकि हम दोनों टकराए होंगे; मगर मुझे कुछ याद नहीं। मुझे क्षमा कर दें, या जो दंड देना हो दे दें। मैं दीवानी हूं! मैं प्रेमी के पागलपन में चली जा रही थी भागी, मुझे पता नहीं कौन नमाज पढ़ रहा था, कौन नहीं पढ़ रहा था, कौन रास्तों में था, कौन नहीं था, किससे टकरायी, किससे नहीं टकरायी। लेकिन एक बात आपसे पूछती हूं, सजा जो देनी हो दे दें, एक बात का जवाब मुझे जरूर दे दें। मैं अपने प्रेमी से मिलने जा रही थी और इतनी दीवानी थी और आप परमात्मा से मिलने गए हुए थे और मेरा धक्का आपको याद आ गया! और मेरा धक्का आपको दिखाई पड़ गया! और मेरे धक्के का आपको पता चल गया! मैं तो अपने साधारण से प्रेमी से मिलने जा रही थी-एक साधारण भौतिक-सी बात; और आप तो आध्यात्मिक नमाज में थे, प्रार्थना में थे; पूजा में थे, ध्यान में थे! आप तो परमात्मा से मिलन कर रहे थे! आपको मेरा धक्का पता चल गया! यह ज्ञान मेरी समझ में नहीं आती।'



तुम्हारे भीतर मस्तिष्क
और हृदय का मेल होना चाहिए।
मस्तिष्क-पुरुष; हृदय-स्त्री।
तुम्हारे भीतर अनुभूति और विचार का
मेल होना चाहिए।
तर्क और भाव का मेल होना चाहिए।
तुम्हारे भीतर इनका विवाद
चलता रहे तो तनाव होगा।
तुम दो खंडों में बंटे रहोगे।
और जब तक तुम दो खंडों में बंटे रहोगे,
तब तक तुम्हारे भीतर एक तरह की
कलह चलती रहेगी,
चैन नहीं होगी।

* अजहं चेत गंवार प्रवचन-१९, ओशो *

सूक्ष्म शरीर रहस्य

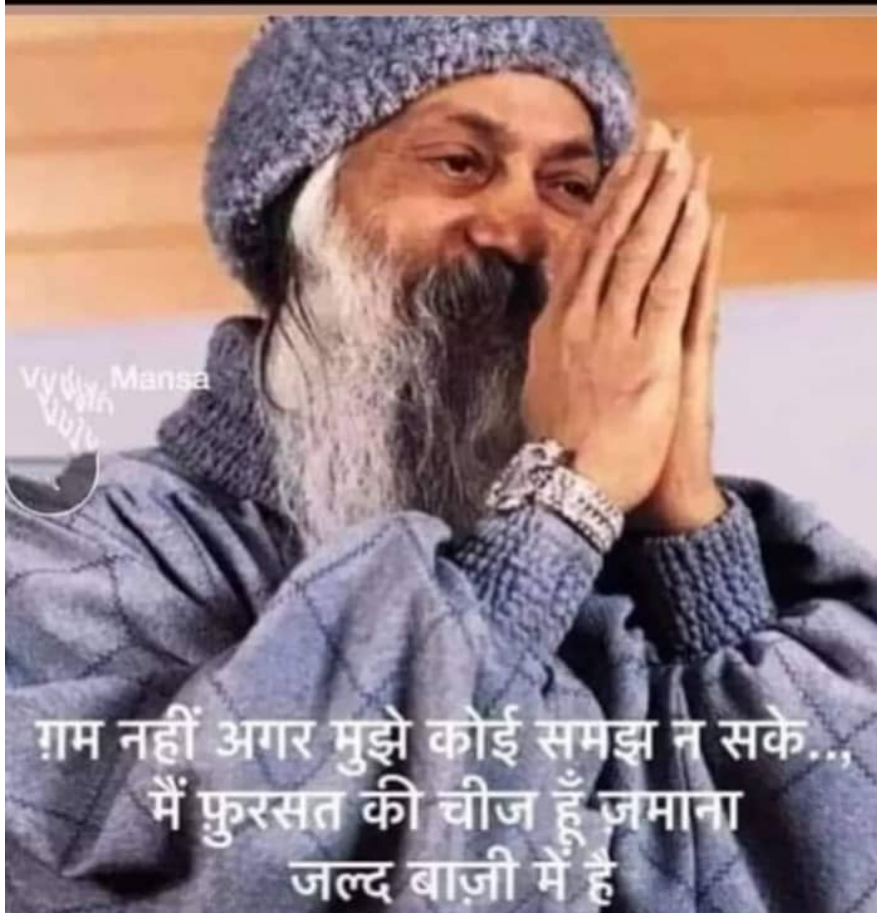
आत्मा दो शरीरों के भीतर वास कर रही है, एक सूक्ष्म शरीर और एक स्थूल शरीर। मृत्यु के समय स्थूल शरीर गिर जाता है। यह जो मिट्टी-पानी से बना हुआ शरीर है, यह जो हड्डी-मांस-मज्जा की देह है, यह गिर जाती है। फिर अत्यंत सूक्ष्म विचारों का, सूक्ष्म संवेदनाओं का, सूक्ष्म वायब्रेशंस का शरीर शेष रह जाता है, सूक्ष्म तंतुओं का।



वह तंतुओं से घिरा हुआ शरीर आत्मा के साथ फिर यात्रा शुरू करता है और नया जन्म फिर नए स्थूल शरीर में प्रवेश करता है। जब एक मां के पेट में नई आत्मा का प्रवेश होता है, तो उसका अर्थ है सूक्ष्म शरीर का प्रवेश।

ओशो

मैं मृत्यु सिखाता हूँ -



पानी से पानी मिले, मिले कीच
से कीच
ज्ञानी से ज्ञानी मिले, मिले नीच
से नीच....👉

जो व्यक्ति अपना
सब समर्पित कर देगा,
अपने को पीछे बचाए बिना,
विद नो विदहोल्डिंग,
पीछे अपने को जरा भी बचाए
बिना जो अपने को
अशेष भाव से,
सब कुछ, पूरा का पूरा,
समग्रीभूत रूप से
समर्पित कर देगा,
वह परमात्मा का
हिस्सा हो जाता है।
हिस्सा कहना भी ठीक नहीं,
भाषा की भूल है,
वह परमात्मा ही
हो जाता है।

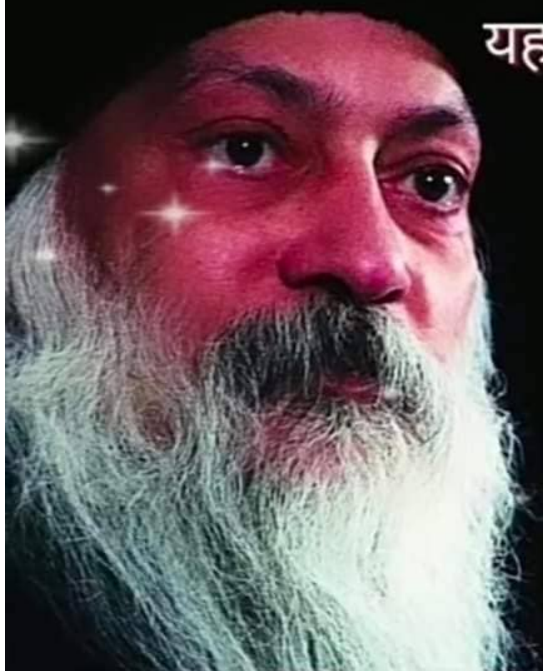
क्योंकि
परमात्मा में कोई
हिस्से नहीं होते,
कोई विभाग नहीं
होता।

निष्काम
रिवाल्व

आचार्य श्री रजनीश Osho
गीतादर्शन अ.9.प्र.11/110 कर्ताभाव का अर्पण

ह संसार एक विद्यालय है
संसार बुरा नहीं है, विद्यालय है
इसको घृणा मत करना
यह अस्तित्व की देने

ओशो..



समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्॥ 29॥
अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः॥ 30॥
क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति।
कौन्तेय प्रति जानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति॥ 31॥

मैं सब भूतों में सम-भाव से व्यापक हूं;
न कोई मेरा अप्रिय है और न प्रिय है।
परंतु जो भक्त मेरे को प्रेम से भजते हैं,
वे मेरे में और मैं भी उनमें प्रकट हूं।
यदि कोई अतिशय दुराचारी भी अनन्य भाव से मेरा भक्त हुआ
मेरे को निरंतर भजता है, वह साधु ही मानने योग्य है;
क्योंकि वह यथार्थ निश्चय वाला है।
इसलिए वह शीघ्र ही धर्मात्मा हो जाता है
और सदा रहने वाली शांति को प्राप्त होता है।

हे अर्जुन, तू निश्चयपूर्वक सत्य जान
कि मेरा भक्त नष्ट नहीं होता।



आचार्य श्री रजनीशOsho
गीतादर्शन अ.9.प्र.12/111 नीति और धर्म

- इस ब्रह्माण्ड में कोई ईश्वर नहीं हैं,
- तथागत गौतम बौद्ध !
- ईश्वर केवल शोषण का नाम हैं,
- सुकरात !
- ईश्वर का जन्म ही गहरी साजिश से हुआ है, - कार्ल मार्क्स !
- इस देश में जो नौजवान ईश्वरवादी हैं मेरी नजर में नामर्द हैं,
- शहीद भगत सिंह !
- पूरे विश्व में अगर कोई यह साबित कर कि ईश्वर हैं तो मैं अपना सर्वस्व उसे दे दूंगा
- स्टीफन हॉकिंग !



619



15



200

श्मशान, कब्रिस्तान इस बात के प्रमाण
हैं कि तुम जिस घर में रहते हो वह
तुम्हारा घर नहीं है। इतने बड़े प्रमाणों
को झुठलाया नहीं जा सकता ।

तुम्हे अपना घर खोज लेना
चाहिए जो घर हो शराय न
हो।

-ओशो ४४



यह बात
तुम्हें बड़ी बेबूझ लगेगी।
श्रम से कभी किसी ने
परमात्मा को नहीं पाया।
श्रम से संसार पाया जाता है,
बाहर की वस्तुएं पाई जाती हैं;
विश्राम से परमात्मा पाया जाता है,
भीतर का अस्तित्व पाया जाता है।
जिसने विश्राम की कला सीख ली,
जिसने विराम का राज समझ लिया,
वह परमात्मा को उपलब्ध हो जाएगा।

ओशो : सुनो भई साधो



**हमारे पास ऐसा कुछ भी नहीं है उसे देने को,
जिसे हम अपना कह सकें। जो कुछ भी है, उसका ही है।**

**लेकिन एक बात जरूर मनुष्य के पास ऐसी है,
जो परमात्मा की दी हुई नहीं है। एक ही बात ऐसी है।**

**कर्ता का भाव, मैं कुछ कर रहा हूं,
यह परमात्मा का दिया हुआ नहीं है;
यह आदमी का अपना अर्जित है।
यह अहंकार कि मैं कुछ कर रहा हूं,
आदमी की अपनी खोज है।
यह आदमी का अपना आविष्कार है।
और जब तक कोई आदमी इस भाव को
उसके चरणों में न चढ़ा दे, तब तक
वह रूपांतरण घटित नहीं होता,
जिसकी कृष्ण बात कर रहे हैं।**

**इसलिए वे कहते हैं कि तू खाए तो,
तू चले तो, बैठे तो, हवन करे तो, तू जो कुछ भी करे,
वह सब मेरे अर्पण कर। कर्मों को मेरे अर्पण कर।
कर्ता होने के भाव को मुझे अर्पण कर।
और जिस क्षण तू यह कर पाएगा, उसी क्षण तू संन्यस्त हो गया।
यह बहुत अदभुत बात है।**

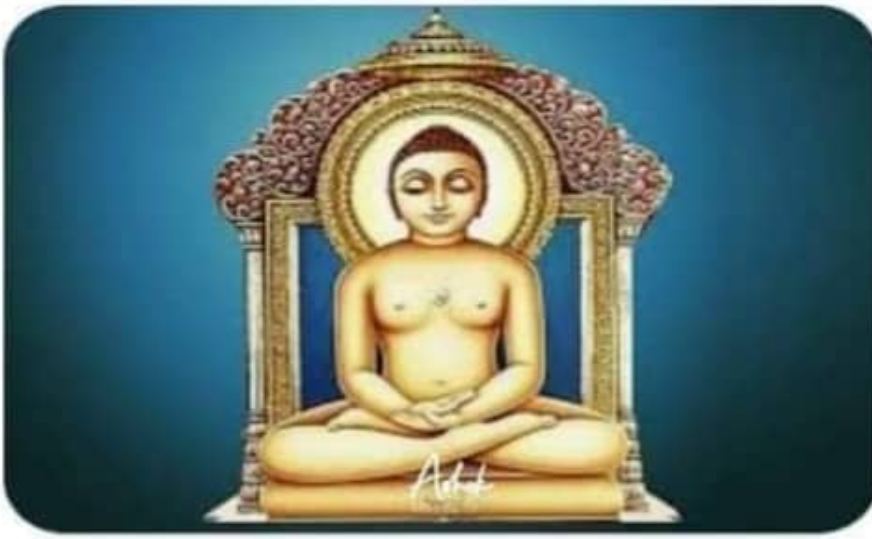
**क्योंकि संन्यास का अर्थ होता है,
कर्म को छोड़ देना, कर्म का त्याग।**

**आचार्य श्री रजनीश Osho
गीतादर्शन अ. 9, प्र. 11/110 कर्ताभाव का अर्पण**

भोग भी एक सपना है
त्याग भी एक सपना है
दोनों- से जो जाग गया
वो साक्षी है
ओशो



अहोभाव



धर्म की शुरुआत
उस व्यक्ति की चेतना में होती है,
जिसे यह दिखाई पड़ना शुरू हो जाता है
कि जिनका मैं पीछा कर रहा हूं,
वे पानी के बबूले हैं;
उन्हें पा भी लूं तो कुछ मिलता नहीं है;
और पाकर बबूला टूट जाता है,
और दुख लाता है;
उन्हें न पा सकूं तो पीड़ा होती है।
इन बबूलों को जब कोई देखता रहता है
तटस्थ भाव से और बह जाने देता है;
न उन्हें पकड़ने की कोशिश करता है,
न उनके फूट जाने से चिंतित होता है;
उनसे अपने को दूर कर लेता है-
वही व्यक्ति भिक्षु है।

महावीर वाणी, भाग-२, प्रवचन # ४८, ओशो

Vishal Sharma



यह सोचकर
कभी कमजोर मत पड़ना कि आप
अकेले हो
बल्कि यह सोचकर डटे रहना की
आप अकेले ही काफी हो।

Osho prem naman — with Surendra Athist and 8 others.

**oshospirituals** @
Reels

OSHONever Born Never Died
Only Visited this Planet Earth Between
Dec 11 1931 - Jan 19 1990

जीवन का भी उत्सव मनाओ और
मृत्यु का भी उत्सव मनाओ। 💖🌸



ACHARYA SHREE RAJNEESH
जीवन का भी उत्सव मनाओ और मृत्यु का भी उत्सव मन... more
(CHANDRA MOHAN JAIN) - OSHO

👍 22

2 shares



Like



Comment



Send



Share



ओ शो वाणी

Krishna Krishna · 11m · 🌐





न ढूँढ तू.....
किसी को किसी में,
पहले ढूँढ तू.....
"खुद" को खुद ही में!!

मूच्छा। एक गहरी मूच्छा है। हम चल लेते हैं, उठ लेते हैं, काम भी कर लेते हैं, किसी तरह जिंदगी बीत जाती है। मगर किसी तरह ! हमें कुछ पता नहीं चलता कि हम कहां थे, क्यों थे, किसलिए थे ? क्यों जन्में, क्यों जीए, क्यों मरे; कौन था जो आया और कौन था जो गया, कुछ पता नहीं चलता ! इसको तुम होश कहोगे ! हां, नाम हम बता सकते हैं। वह नाम हमारा नहीं है, दिया हुआ है। और अपना पता भी बता सकते हैं। वह भी हमारा नहीं है, वह भी दिया हुआ है। तुम्हें अपना पता भी नहीं है। जागो ! झकझोरो अपने को ! अपने प्रत्येक कृत्य को जागरण से जोड़ दो ! जागो ! और जाग तुम सकते हो, वह तुम्हारी संभावना है। वह तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है ! ओशो (Dr Sohan Lal Narang)

“

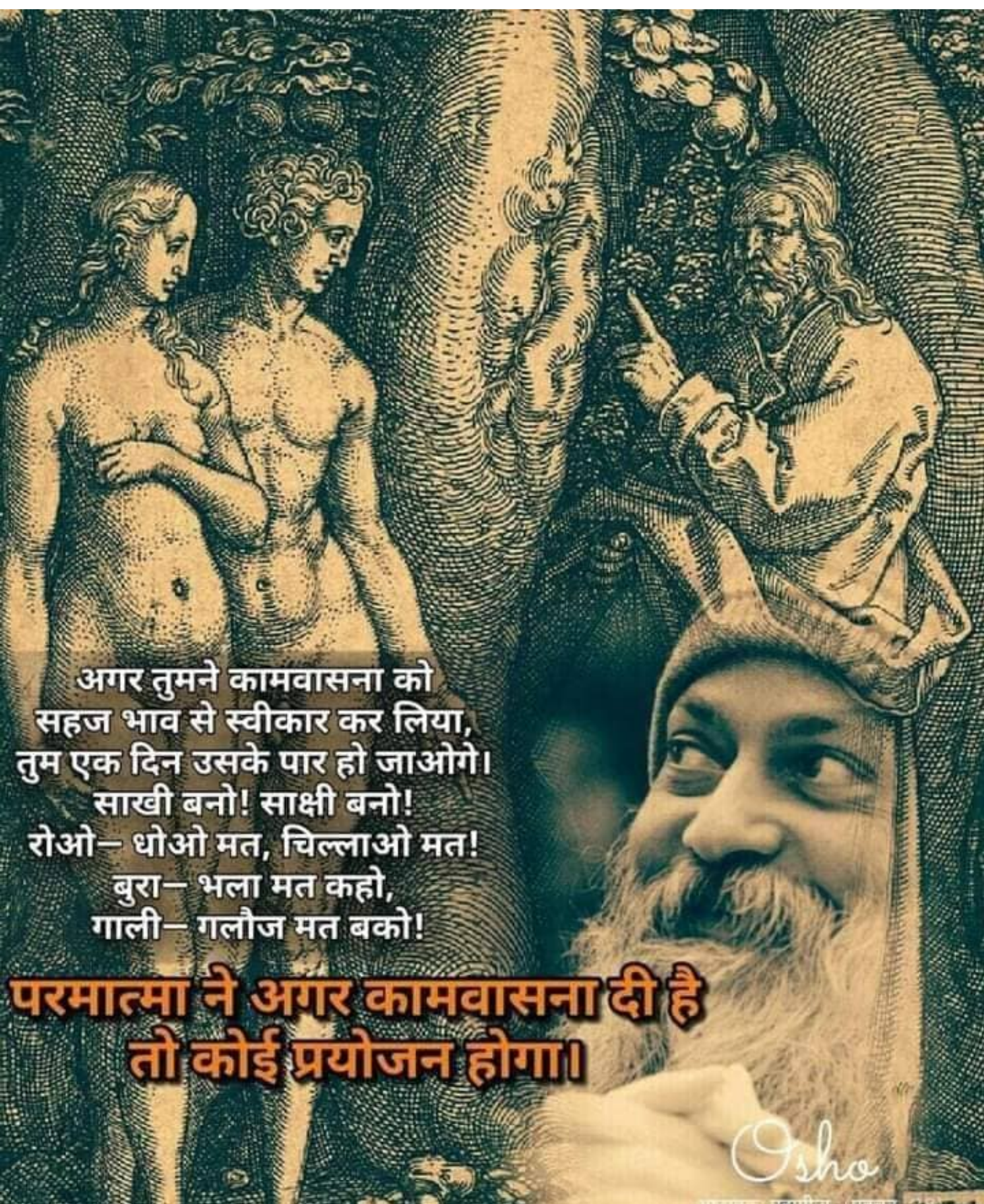
एक दिन
तुम्हारे ही कर्म तुमसे मिलने,
आएंगे बस उस दिन
तुम हैरान ना होना

_ अज्ञात



ओशो

धर्म तो मार्ग है, और
मार्ग मात्र जानने से नहीं,
चलने से तय होता है ।



अगर तुमने कामवासना को
सहज भाव से स्वीकार कर लिया,
तुम एक दिन उसके पार हो जाओगे।
साखी बनो! साक्षी बनो!
रोओ— धोओ मत, चिल्लाओ मत!
बुरा— भला मत कहो,
गाली— गलौज मत बको!

**परमात्मा ने अगर कामवासना दी है
तो कोई प्रयोजन होगा।**

Osho



मोक्ष दो अक्षर का शब्द है। "मो" का अर्थ मोह और "क्ष" का अर्थ क्षय नाश हो जाना। हमारे जीवन में धीरे धीरे मोह का नाश हो जाए, कम हो जाए, उसी को मोक्ष कहते हैं।

मोक्ष के लिये मरने की जरूरत नहीं, बहुत सावधानी से जीने की जरूरत है। पाँच चीजों की मात्रा कम होने लगे तो समझना मोक्ष आ रहा है।

वस्तु - बहुत सी वस्तुओं से आसक्ति कम होने लगे।

वसु - धन संग्रह की वृत्ति कम होने लगे।

विषय - विषयों के प्रति धीरे धीरे उदासीनता आए।

व्यक्ति - एकान्त में सुख मिलने लगे।

विचार - विचार कम होने लगे।

ओशो

एक मेंढक पेड़ की चोटी पर चढ़ने का
सोचता है और आगे बढ़ता है
बाकी के सारे मेंढक शोर मचाने
लगते हैं "ये असंभव है.. आज तक
कोई नहीं चढ़ा.. ये असंभव है..
नहीं चढ़ पाओगे"

मगर मेंढक आखिर पेड़ की चोटी पर
पहुँच ही जाता है.. जानते हैं
क्यों?

क्योंकि वो मेंढक "बहरा" होता
है.. और सारे मेंढकों को
चिल्लाते देख सोचता है कि सारे
उसका उत्साह बढ़ा रहे हैं
इसलिए अगर आपको अपने लक्ष्य पर
पहुँचना है तो नकारात्मक लोगों
के प्रति "बहरे" हो जाइए।।।।



तुम एक प्रयोग करना,
दस मिनट में वह लिख
देना, जो ठीक-ठीक
आपके चित में,
चल रहा है! ईमानदारी
से लिखना, और तुम
हंसोगे खुद पर, की
तुम्हारा चित सारा दिन
किन-किन मूर्खताओं
को दोहराता है..!! {ओशो}



यह ठीक है
कि शरीर महत्वपूर्ण है
लेकिन
यदि वह बोध को
उपलब्ध न हो
सके।
तो बेचारा बेमौत ही मारा
जाता है।

ध्यान क्या है ?

ध्यान यह नहीं है कि तुम सुबह, शाम बीस, तीस मिनट आँखें मूंदकर बैठ गए और फिर वापिस अपनी सामान्य बेहोशी की हालत में आकर अपने कामों में लग गए। यह नितांत मूर्खतापूर्ण है।

ध्यान का एकमात्र कार्य तुम्हें हर वक्त होश में रहने की कला सिखाना है।

काम करते हुए, चलते हुए, बैठे हुए, खाना खाते हुए ; हर पल होशपूर्ण ।

तभी एक दिन वो घड़ी आएगी जब तुम अपने को अपने शरीर से अलग देख पाओगे; और जिस दिन ऐसा घटित हुआ, उसी दिन तुम्हारा जन्म सफल हुआ ।



बुद्ध ने कहा है, जब तक तुम हो, तब तक बंधन है। जब तक तुम हो तब तक संसार है। जब तक तुम हो तब तक अमुक्ति है। इसलिए बुद्ध कहते हैं, वहां तुम भी न बचोगे। वहां कोई 'मैं' न होगा। 'मैं' से मुक्ति ही निर्वाण है।

दीया तले अंधेरा -20

ओशो

इस क्षण के अतिरिक्त और कुछ भी सत्य नहीं है।
और जिस दिन तुम इस क्षण में जीयोगे,
सहज हो जाओगे।

'ओशो' 🙏🌸

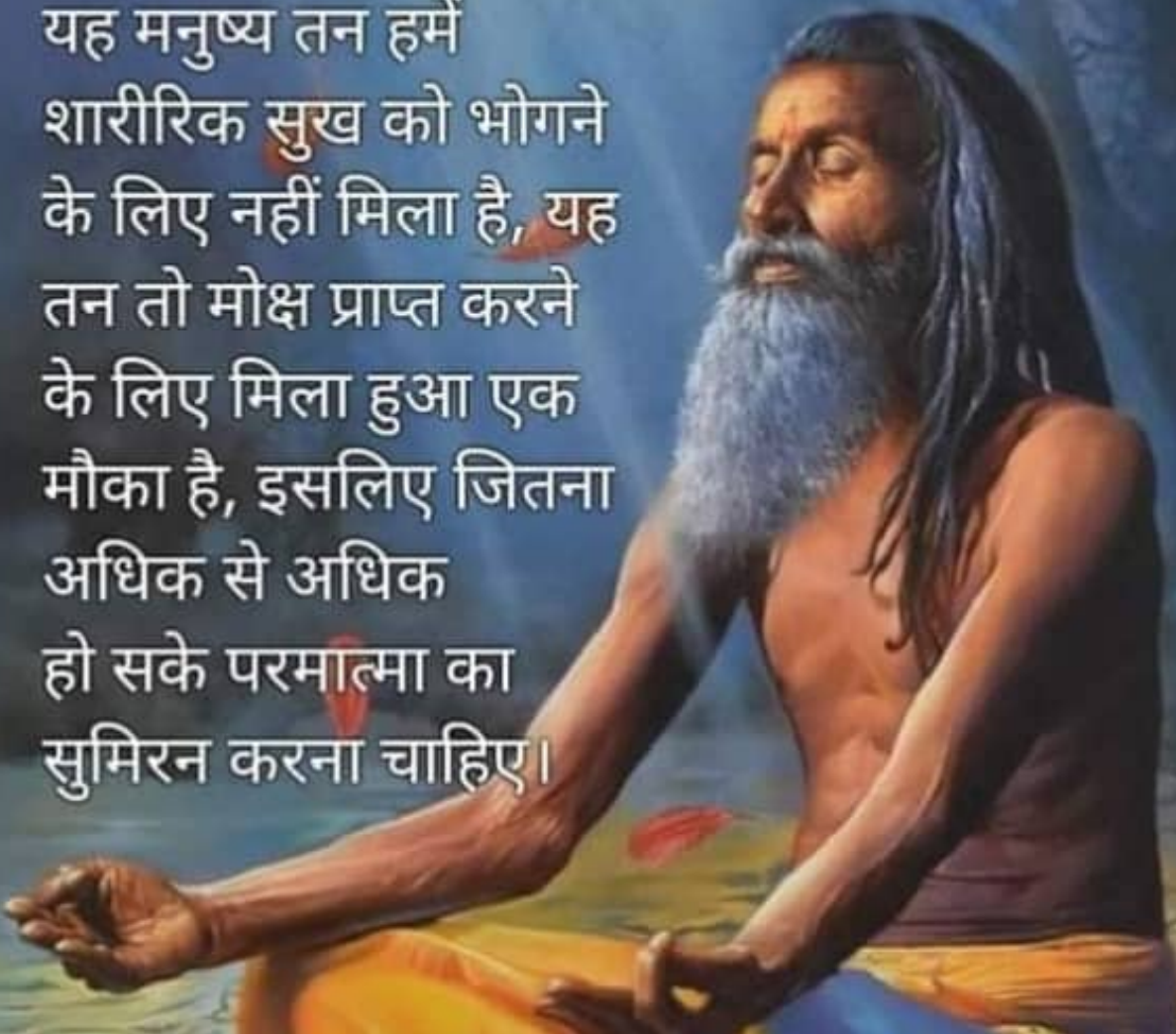


MADE WITH
FONT CANDY

नर तन का फल विषय ना भाई, भजो नाम सब काज बिहाई।

- रामचरितमानस गोस्वामी तुलसीदास जी

यह मनुष्य तन हमें
शारीरिक सुख को भोगने
के लिए नहीं मिला है, यह
तन तो मोक्ष प्राप्त करने
के लिए मिला हुआ एक
मौका है, इसलिए जितना
अधिक से अधिक
हो सके परमात्मा का
सुमिरन करना चाहिए।





बुद्ध ने प्रार्थना की बात ही नहीं की।

बुद्ध ने पूजा की बात ही नहीं की।

बुद्ध ने तो सिर्फ एक सीधा सा

सूत्र दिया ध्यान।

ध्यान का अर्थ है—नींद को तोड़ो,

सपने को तोड़ो और जागो।

एस धम्मो सनन्तानो -प्र-७४ ओशो



सृजन कठिन है, विध्वंस आसान : सृजन कठिन है, विध्वंस आसान है: इस दुनिया में जो लोग बना नहीं सकते, वे मिटाने में लग जाते हैं, जो कविता नहीं रच सकते, वे आलोचक हो जाते हैं। जो धर्म का अनुभव नहीं कर सकते, वे नास्तिक हो जाते हैं। जो ईश्वर की खोज नहीं कर सकते, वे कहते हैं ईश्वर है ही नहीं। अंगूर खट्टे हैं, इनकार करना आसान है, स्वीकार करना कठिन। जो समर्पित नहीं हो सकते, वे कहते हैं-समर्पित होएं क्यों? मनुष्य की गरिमा उसके संकल्प में है, समर्पण में नहीं। जो समर्पित नहीं हो सकते, वे कहते हैं-कायर समर्पित होते हैं, बहादुर, वीर तो लड़ते हैं। ध्यान रखना, सृजन कठिन है, विध्वंस आसान है। जो माइकल एंजेलो नहीं हो सकता। वह अडोल्फ हिटलर हो सकता है। जो कालिदास नहीं हो सकता, वह जोसेफ स्टैलिन हो सकता है। जो बानगांग नहीं हो सकता, वह माओत्से तुंग हो सकता है। विध्वंस आसान है।-ओशो।

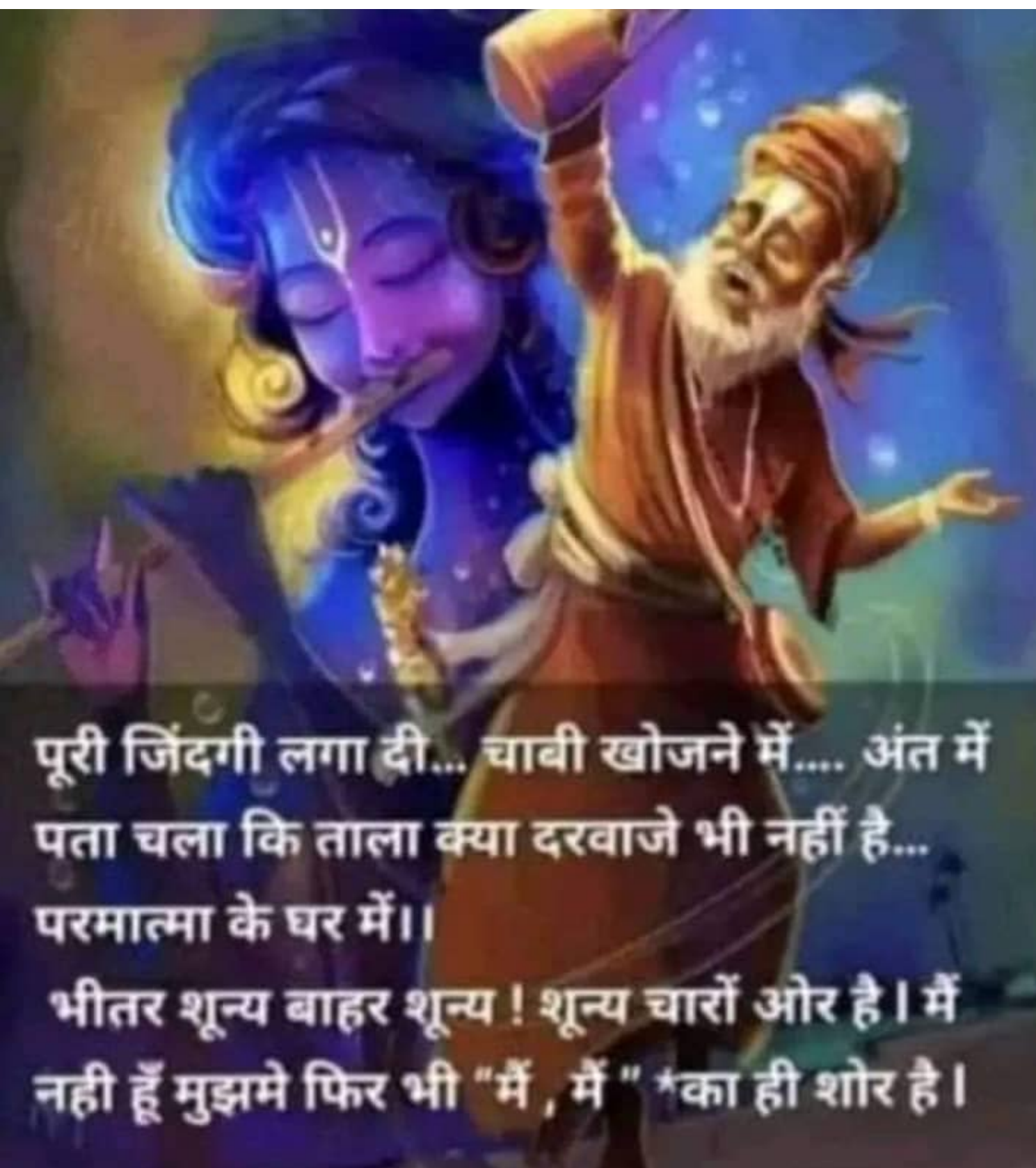
आत्मा भी अंदर है... 🌻

परमात्मा भी अंदर है... 🌺

आत्मा के परमात्मा से... 🌺

मिलने का रास्ता

भी अंदर ही है 🌻



पूरी जिंदगी लगा दी... चाबी खोजने में.... अंत में
पता चला कि ताला क्या दरवाजे भी नहीं है...
परमात्मा के घर में।।

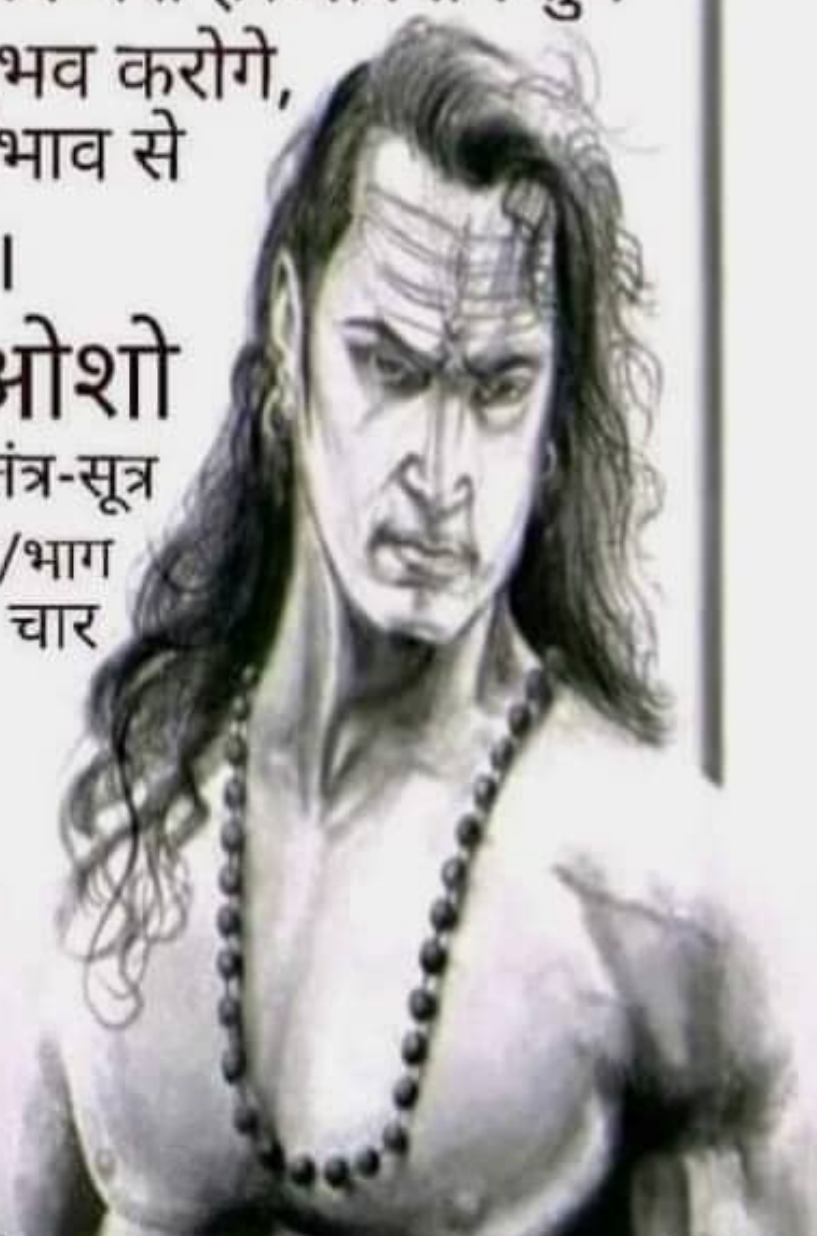
भीतर शून्य बाहर शून्य ! शून्य चारों ओर है। मैं
नहीं हूँ मुझमे फिर भी "मैं , मैं " *का ही शोर है।

शिव कहते हैं: मैं हूँ--इसे
अनुभव करो। और अनुभव
करो कि यह मेरा है।

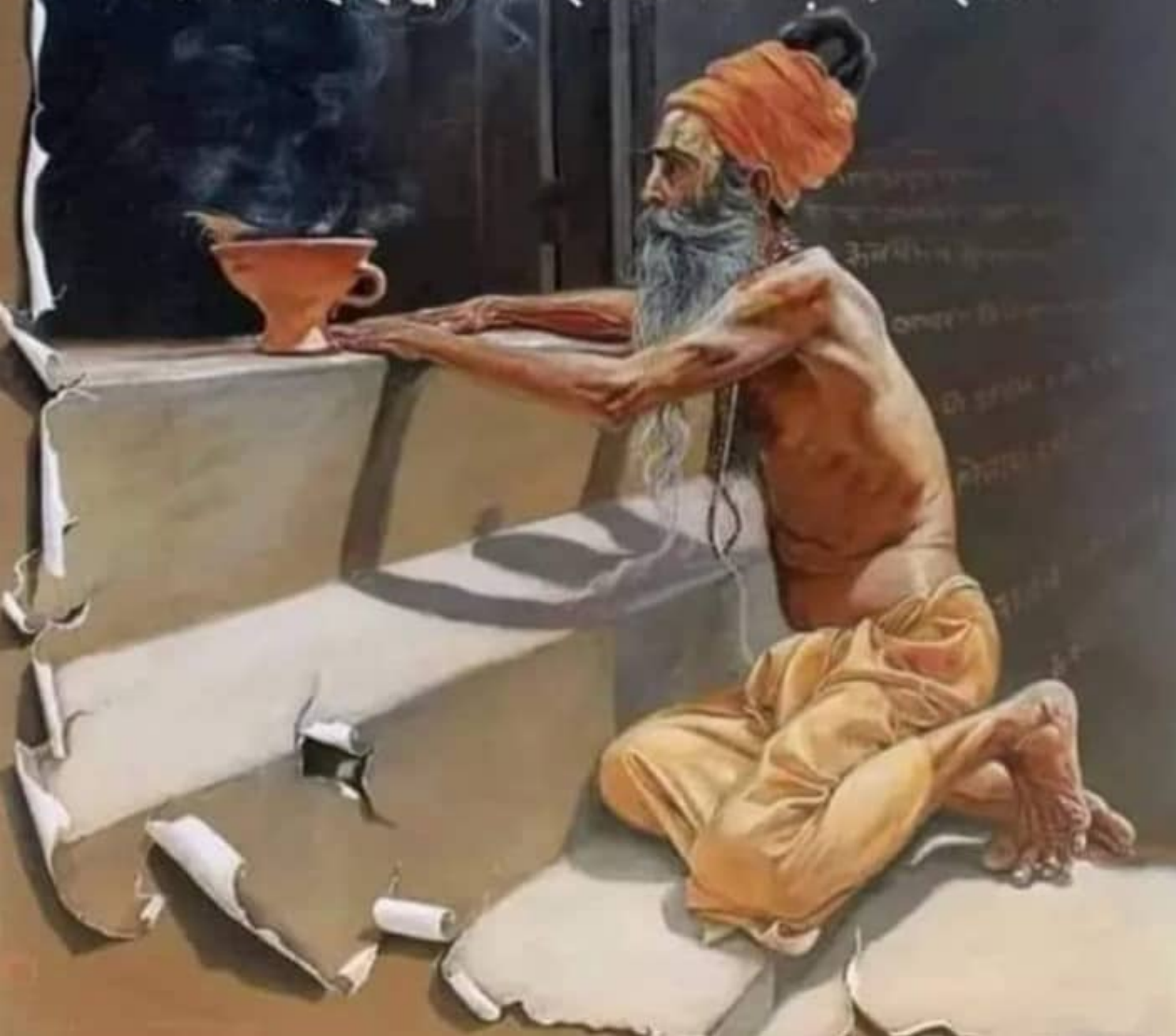
यह बात सतत स्मरण रखनी है कि इसे विचार नहीं बन
लेना है। इसे अनुभव करो, हृदय से अनुभव करो कि यह मेरा
है, यह अस्तित्व मेरा है। और तब तुम
कृतज्ञता अनुभव करोगे,
तब तुम अहोभाव से
भर जाओगे।

-ओशो

आत्म-साधना: तंत्र-सूत्र
विज्ञान भैरव तंत्र/भाग
चार



दोनों सूरतें यकीन की हैं..
कोई ईश्वर के लिये सब छोड़ देता है..
और कोई ईश्वर पर ही सब छोड़ देता है..!!



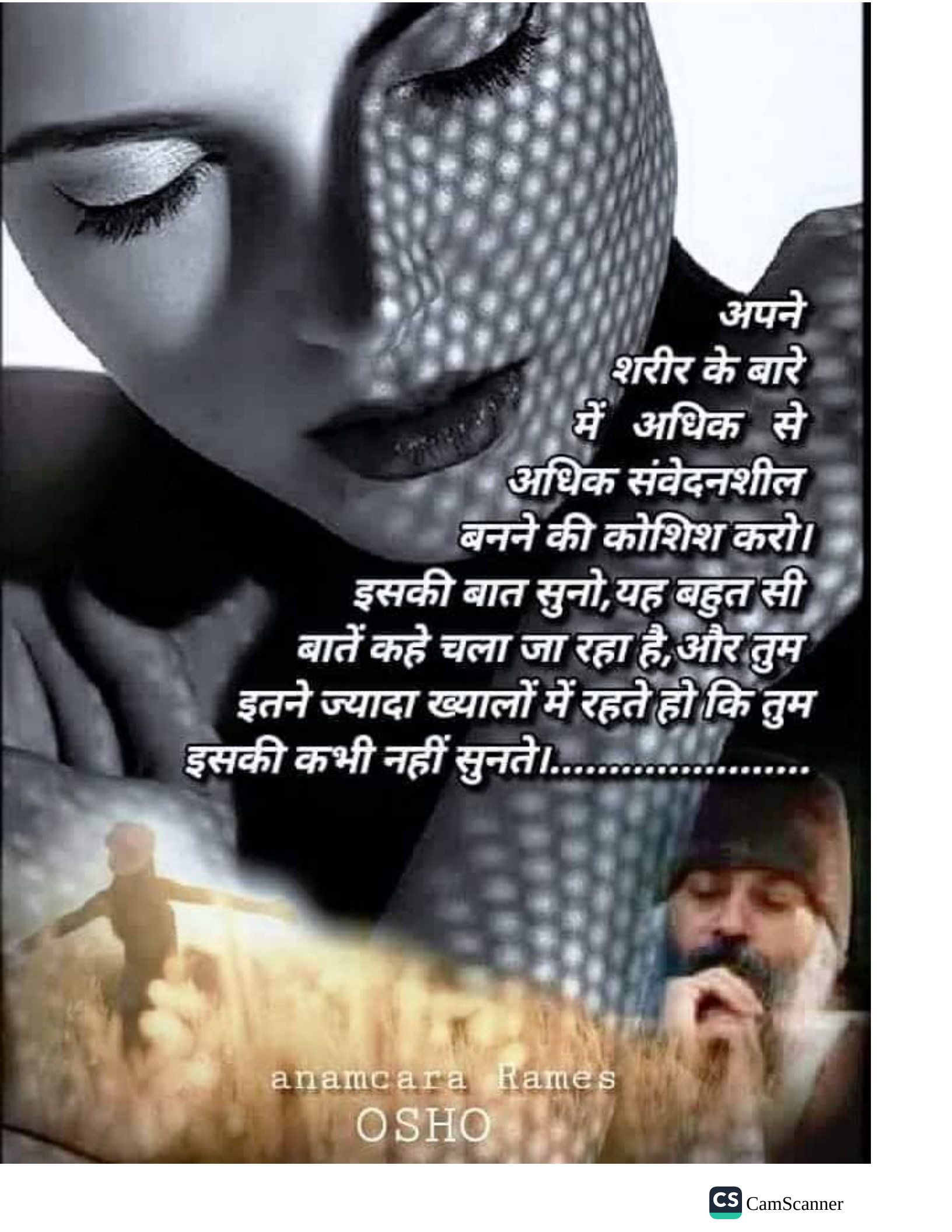
असल में,
वह जो क्षण है
जब श्वास बिलकुल ठहरी हुई है
न बाहर जाती; न भीतर जाती
वह परम संतुलन के जो क्षण हैं,
वही समाधि का क्षण है।
उस क्षण में तुम
अस्तित्व को जानोगे,
जीवन को नहीं।



न नंगा रहने से,
न सिर मुंडवाने से,
न जटाएं रखने से,
न भभूत लगाने से,
न पूजापाठ से,
न नदियो मे स्नान करने से
और न ईश्वर या किसी देवी
देवता का नाम रटने से,
कोई मनुष्य पवित्र नहीं
हो जाता! जिसमे सत्य है,
सदाचार है, शीलवान है,
वही मनुष्य पवित्र है!
न जाति से, न वंश से,
न जन्म से, कोई मनुष्य अपवित्र
नहीं हो जाता! जिसमे सत्य नहीं,
सदाचार नहीं, शीलवान नहीं,
वही मनुष्य अपवित्र है.



बाबासाहेब और बौद्ध धर्म



अपने
शरीर के बारे
में अधिक से
अधिक संवेदनशील
बनने की कोशिश करो।
इसकी बात सुनो, यह बहुत सी
बातें कहे चला जा रहा है, और तुम
इतने ज्यादा ख्यालों में रहते हो कि तुम
इसकी कभी नहीं सुनते।.....

anamcara Rames
OSHO

**The body
cannot
live
without
breath
and the
spirit
cannot
live
without
love.**

#Osho A Rose is a Rose is a Rose



अज्ञानी का अर्थ होता है
ज्ञान का अभाव। मूर्ख का
अर्थ होता है : अज्ञान की
आदतें। मूढ़ का अर्थ होता
है: अज्ञान की जिद।

[See all >](#)**Naye bharat ke khoj**

29m · 🌐

जोरबा दी बुद्धा

जोरबा का अर्थ है:-

सांसारिक रूप से समृद्ध और
जिम्मेदार व्यक्ति!

***बुद्धा का अर्थ है:-* जागा हुआ व्यक्ति!**

मुझे बुद्ध में एक थोड़ी सी कमी नजर आई कि बुद्ध भीतर से संपन्न हैं, आत्मवान हैं, ज्ञानी हैं, संत हैं, आनंदित और जागृत हैं लेकिन भूख लगने पर भीख मांगते हैं, और बरसात में छप्पर की मांग करते हैं। आध्यत्मिक पक्ष तो मजबूत है और सांसारिक पक्ष कमजोर है! और यह त्याग का रास्ता सबके चलने लायक भी नहीं है। अगर सब त्यागी हो गए तो फिर कमाएगा कौन.?

इसलिए मैंने अपने संन्यासियों को जोरबा दी बुद्धा का संदेश दिया।

सांसारिक रूप से अपने

परिवार, मित्रों, समाज, विश्व के

प्रति उत्तरदायित्व से भरा व्यक्ति, और साथ ही बोध से भरा व्यक्ति!

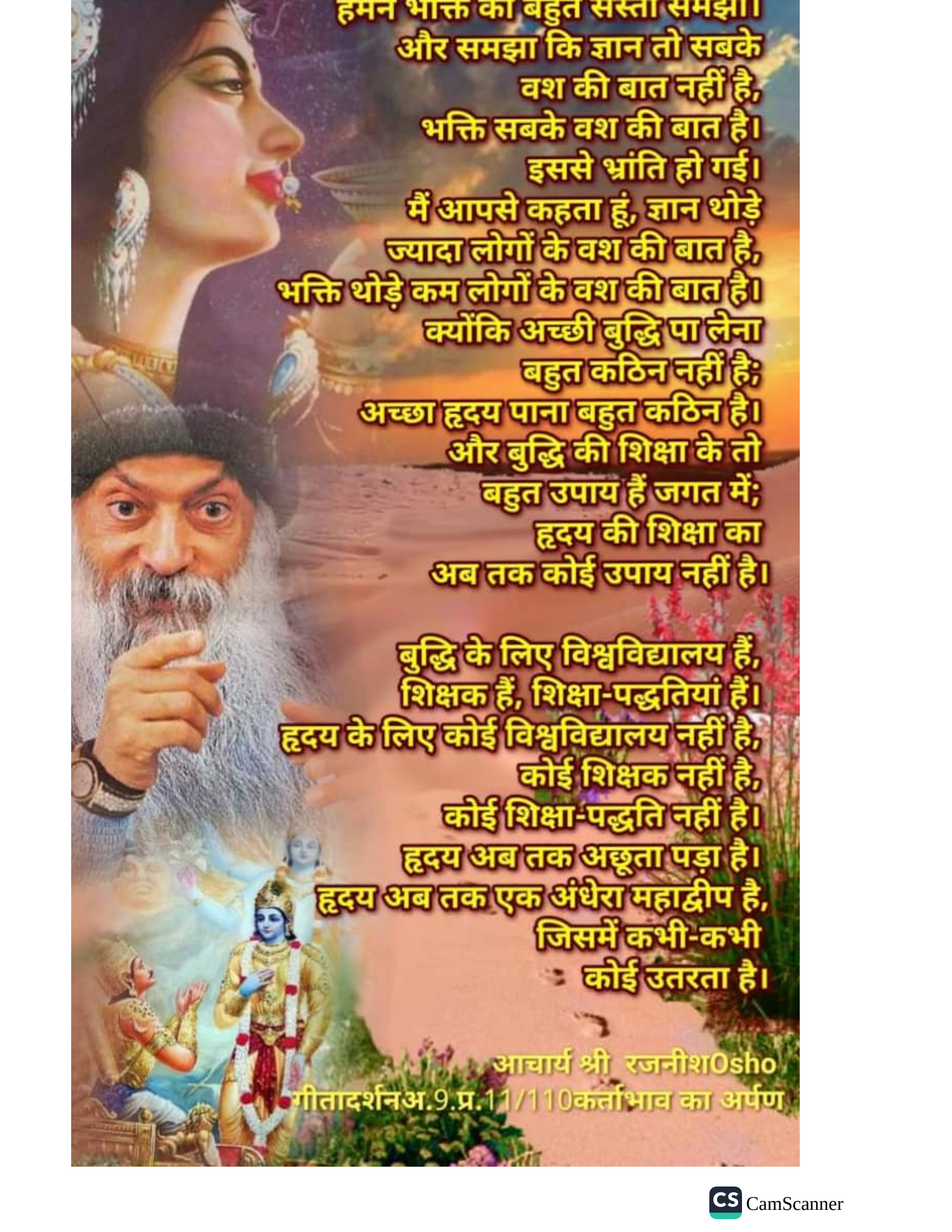
दोनों एक साथ, संन्यास भी और संसार भी! जो दोनों में कुशल है वह

जोरबा दी बुद्धा है!

ओशो



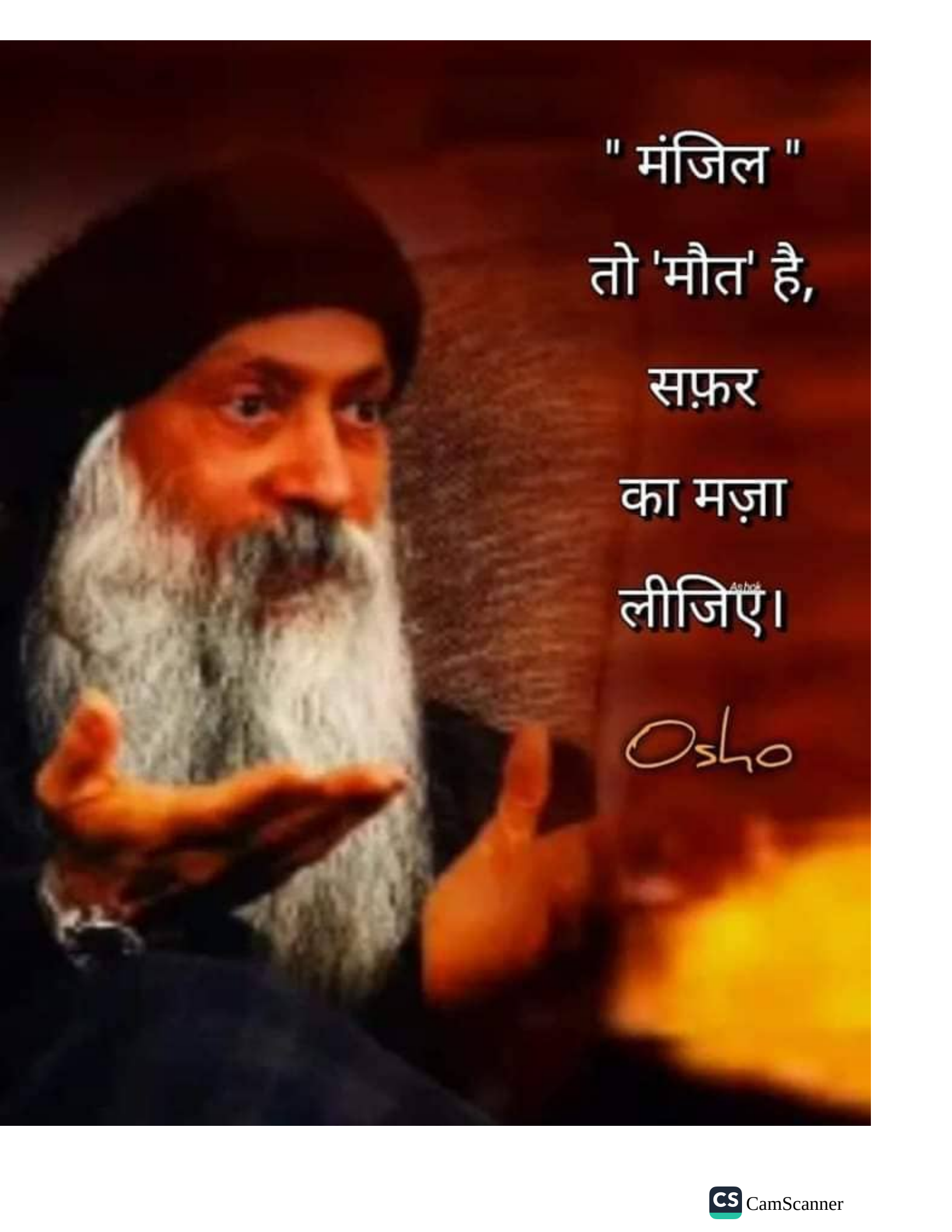
आदमी का हृदय.....!
ना किसी पद से भर सकता है,
ना प्रतिष्ठा से, ना किसी स्त्री से..!
ना धन से, क्यों.....!
क्योंकि हृदय सिर्फ
परमात्मा का प्रेम भरने के लिए है।
ओशो



हमने भक्ति का बहुत सस्ता समझा।
और समझा कि ज्ञान तो सबके
वश की बात नहीं है,
भक्ति सबके वश की बात है।
इससे भ्रांति हो गई।
मैं आपसे कहता हूं, ज्ञान थोड़े
ज्यादा लोगों के वश की बात है,
भक्ति थोड़े कम लोगों के वश की बात है।
क्योंकि अच्छी बुद्धि पा लेना
बहुत कठिन नहीं है;
अच्छा हृदय पाना बहुत कठिन है।
और बुद्धि की शिक्षा के तो
बहुत उपाय हैं जगत में;
हृदय की शिक्षा का
अब तक कोई उपाय नहीं है।

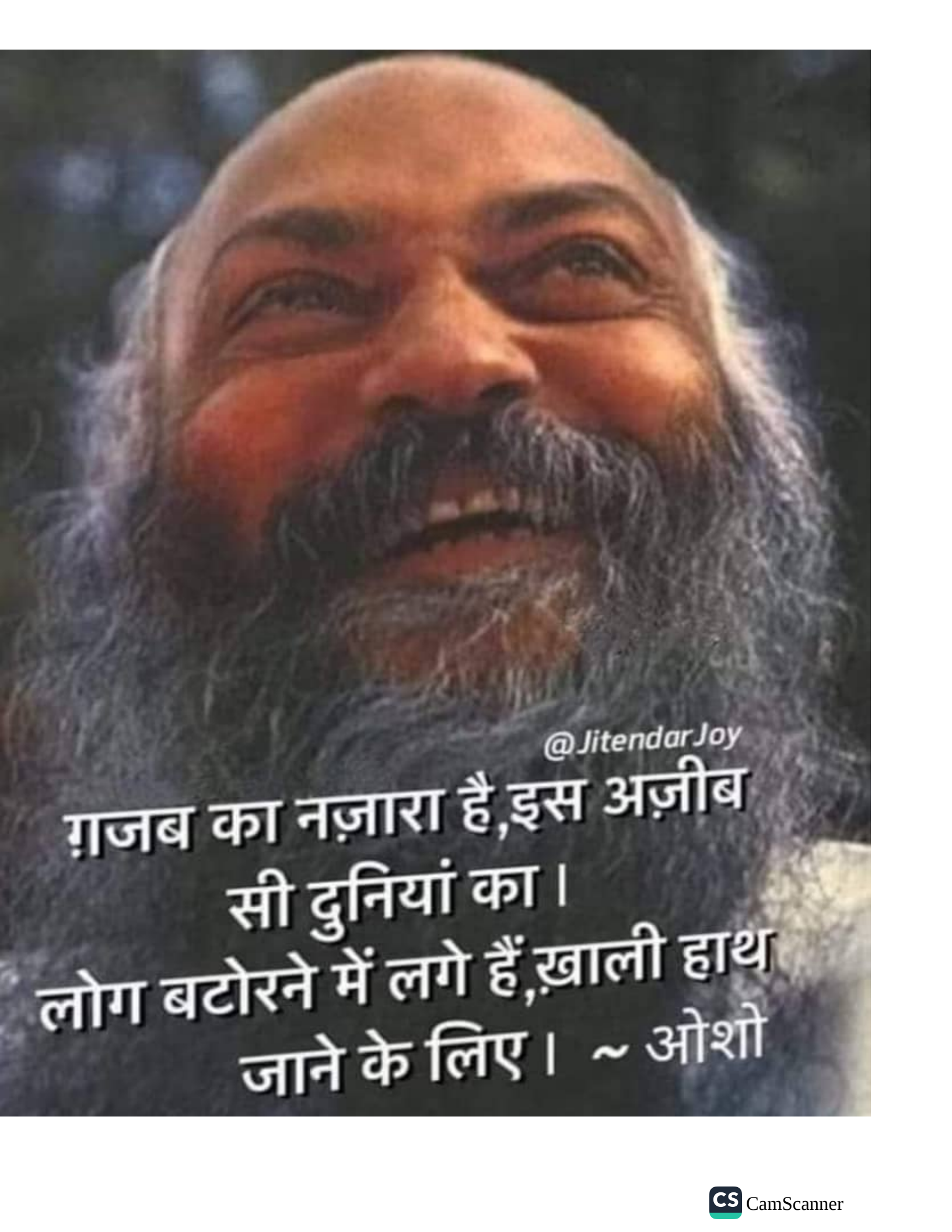
बुद्धि के लिए विश्वविद्यालय हैं,
शिक्षक हैं, शिक्षा-पद्धतियां हैं।
हृदय के लिए कोई विश्वविद्यालय नहीं है,
कोई शिक्षक नहीं है,
कोई शिक्षा-पद्धति नहीं है।
हृदय अब तक अछूता पड़ा है।
हृदय अब तक एक अंधेरा महाद्वीप है,
जिसमें कभी-कभी
कोई उतरता है।

आचार्य श्री रजनीशOsho
गीतादर्शन अ.9.प्र.11/110 कर्ताभाव का अर्पण



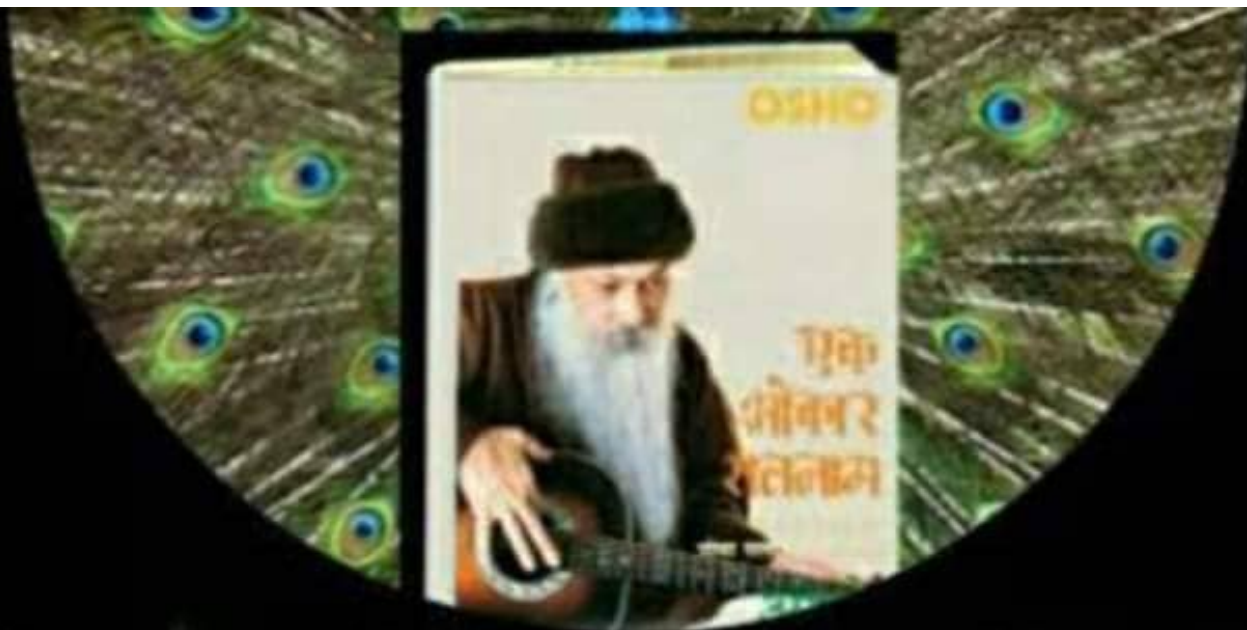
" मंजिल "
तो 'मौत' है,
सफ़र
का मज़ा
लीजिए।

Osho



@JitendarJoy

ग़ज़ब का नज़ारा है, इस अज़ीब
सी दुनियां का ।
लोग बटोरने में लगे हैं, खाली हाथ
जाने के लिए । ~ ओशो



धार्मिक होना चौबीस घंटे का कृत्य है, भाव है।
इसे तुम कभी-कभी नहीं कर सकते।
न कोई धार्मिक दिवस है और न
कोई धार्मिक घड़ी है।
समस्त जीवन उसी का है।
सब क्षण उसी के हैं। तो तुम इस ढंग से जीयो-
-धर्म जीने की एक अलग शैली है-
-तुम इस ढंग से जीयो कि तुम जो भी करो,
वह किसी न किसी रूप में परमात्मा से
संयुक्त हो जाए।

(#-एक ओंकार सतनाम (गुरू नानक) प्रवचन-3)

ओशो



प्रसन्नता का सरल नियम

न अपेक्षा,
न उपेक्षा !



आनंद ही आनंद

••॥सुप्रभात॥••



- हरीश मिश्रा

एक कड़वा सत्य..

जिस कॉपी पर सब विषयों को
संभालने की जिम्मेदारी होती है
वो अक्सर रफ़ कॉपी बन जाती
है,
परिवार में जिम्मेदार इंसान का
भी यही हाल होता है....!!



Likes



105

 Send gift

@aggyatlekhak

महावीर तो नग्न रहते ही थे। पत्नी चिल्लाने लगी। घर भर के लोग इकट्ठे हो गए, पड़ोस के लोग इकट्ठे हो गए। उन्होंने कहा: मजाक को इतना आगे नहीं खींचते। उसने कहा: बात ही खत्म हो गई। क्षत्रिय से मजाक करते ही नहीं। बात जंच ही गई मुझे, कि मैं...आखिर मुझे भी तो महावीर की बात जंची है। यह पत्नी ने मुझे याद दिला दी, मैं उसका धन्यवादी हूं। जो बात जंच गई, फिर कर लेनी है, फिर दांव पर लगा देना है।

फिर वह संन्यस्त ही हो गया। फिर वह दिगंबर मुनि हो गया।

यह कथा मुझे प्रीतिकर लगती है। हिम्मत, साहस, दुस्साहस--जरा सी चिनगारी से प्रदीप्त हो जाता है। मजाक की बात भी कभी गहरी हो जाती है, साहस हो तो। और नहीं तो सदगुरु तुम्हारे सिर पर डंडे मारता रहे, मारता रहे--और तुम झपकी खाते रहोगे और सोए रहोगे।

ओशो... "अजहूं चेत गंवार -20"



Osho Janaki dhyana kendra

9h · 🌐



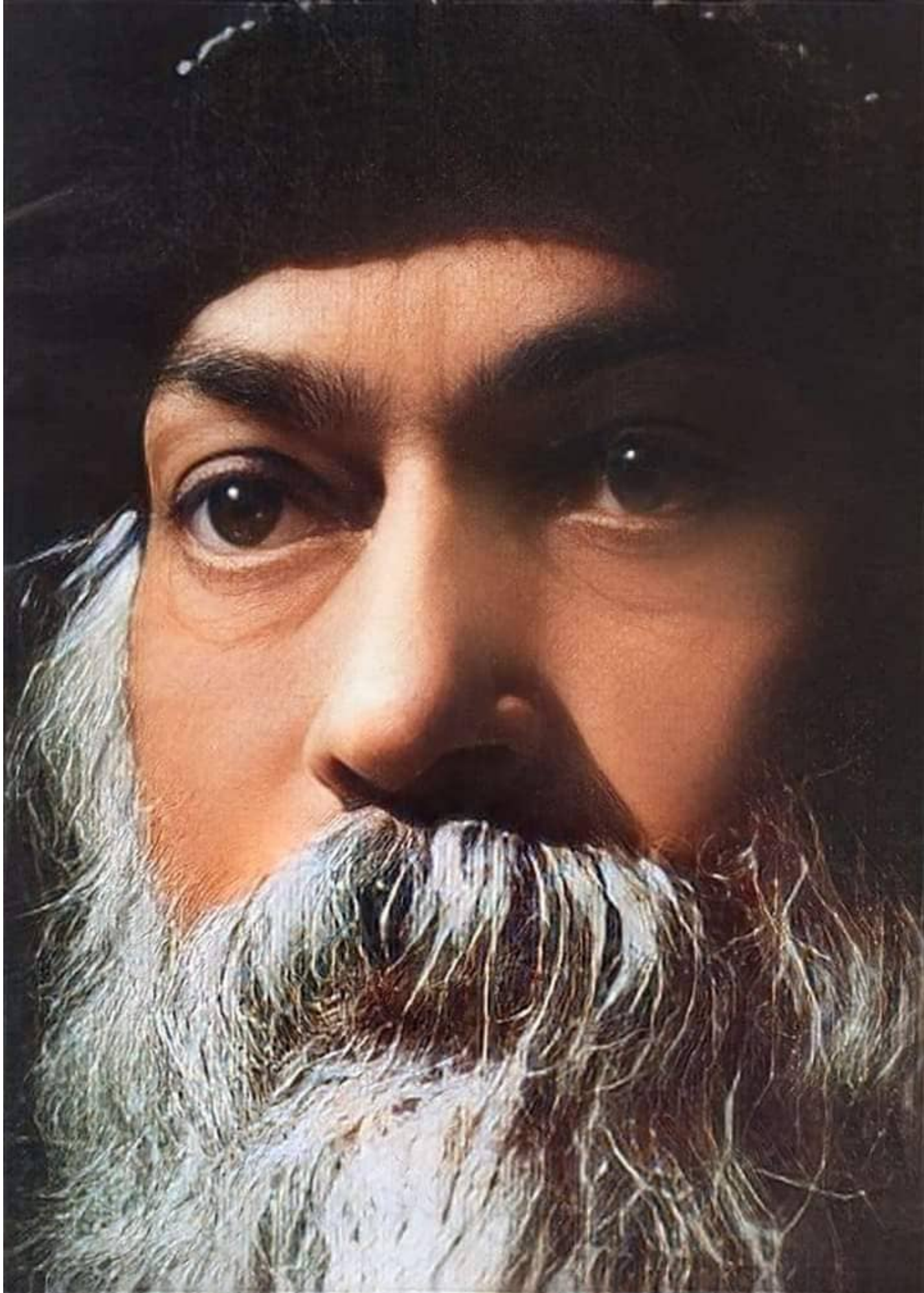
जैन शास्त्रों में उल्लेख है: एक युवक महावीर के वचन सुन कर घर लौटा। पुराने दिन की कहानी है; अब तो वैसा होता नहीं। तो उसकी पत्नी उबटन लगा कर उसे स्नानागार में स्नान करवा रही है। उसके शरीर पर मालिश कर रही है, उबटन लगा रही है, उसे स्नान करवा रही है। वह नग्न बैठा है, स्नान कर रहा है। उसकी पत्नी बात भी करती जाती है। वह कहती है कि महावीर को सुनने गए थे, मेरे भाई भी उन्हें सुनते हैं; मेरे भाई उनमें बड़ा रस लेते हैं, बड़ा सत्संग करते हैं। इतना ही नहीं उन्होंने यह भी तय कर रखा है कि कभी न कभी एक दिन वे संन्यास की दीक्षा लेंगे।

वह युवक स्नान करते-करते हंसने लगा। उसकी पत्नी ने कहा: आप हंसे क्यों? अचानक आप हंसे क्यों? क्या बात आ गई? उसने कहा: मैं हंसा इसलिए कि अगर महावीर की बात जंच गई है तो कभी...! कभी का क्या सवाल है? अभी क्यों नहीं? कभी की बात का तो मतलब यह होता है: तेरा भाई क्षत्रिय नहीं है। मैं तो यही सोचता था, तू क्षत्रिय घर से आती है, क्षत्राणी है। तेरा भाई क्षत्रिय नहीं है?

वह ऐसे मजाक ही में बात चल रही थी, मगर बिगड़ गई बात। कभी-कभी मजाक खिंच जाता है लंबा। पत्नी ने कहा: तुम कहते क्या हो? तो तुम क्या समझते हो तुम क्षत्रिय हो? वह उठ खड़ा हुआ। दरवाजा खोल कर बाहर निकलने लगा। उसकी पत्नी ने कहा: कहां जाते हो? नग्न कहां जाते हो? उसने कहा: बात खत्म हो गई।

क्षत्रिय को छेड़ दिया। वह तो बाहर ही निकल गया। उसने कहा: मैं संन्यस्त हो गया! बात खत्म हो गई। नग्न हूं ही, अब ऐसे ही चला जाऊंगा महावीर के पास।

महावीर तो नग्न रहते ही थे। पत्नी चिल्लाने लगी। घर भर के लोग इकट्ठे हो गए, पड़ोस के लोग इकट्ठे हो गए। उन्होंने कहा: मजाक को इतना आगे नहीं खींचते। उसने कहा: बात ही खत्म हो गई। क्षत्रिय से मजाक करते ही नहीं। बात जंच ही गई मुझे, कि मैं...आखिर मुझे भी तो महावीर की बात जंची है। यह पत्नी ने मुझे याद दिला दी, मैं उसका शन्यासी हूँ। जो बात जंच गई, फिर बुरा लेनी है, फिर दांव पर लगाने देना





सिकंदर ने आधी दुनियाँ जीत ली थी पर जब मरा तो 3 इच्छाएं थी

1. जिन हकीमो ने मेरा इलाज किया, वे मेरे जनाजे को कंधा देंगे, ताकि दुनिया को पता चल सके कि रोग का इलाज करने वाले **हकीम भी मौत को नहीं हरा सकते.**
2. जनाजे की राह में सारी दौलत बिछा दी जाए जो ज़िन्दगी भर इकट्ठा की थी. ताकि सबको ये पता चले कि **जब मौत आती है तो ये दौलत भी काम नहीं आती.**
3. जब जनाजा निकाला जाए तो उसके दोनों हथेली बाहर की ओर लटकाएं जाए, ताकि लोगो को पता चले कि **इंसान धरती पर खाली हाथ आता है और खाली हाथ जाता है.**

facebook



227 people like this

Like

Preview

1,702 people like this

Like

See all >



Anamcara Rames



10h · 🌐

यह बड़े मजे की बात है कि बुरे आदमियों के पास एक तरह का निश्चय होता है, जो भले आदमियों के पास नहीं होता। बुरे आदमी अपनी बुराई में बड़े जिद्दी होते हैं। और बुरे आदमी अपनी बुराई में बड़े पक्के होते हैं। और बुरा आदमी अपनी बुराई का इस तरह पीछा करता है, जैसा कोई भला आदमी अपनी भलाई का कभी नहीं करता। और बुरा आदमी अपनी बुराई से सब तरह के कष्ट पाता है, फिर भी बुराई में अडिग बना रहता है; और भला आदमी कष्ट नहीं भी पाता, फिर भी डांवाडोल होता रहता है!



आचार्य श्री रजनीशOsho
गीतादर्शनअ.9.प्र.12/111
नीति और धर्म





**Naye bharat ke khoj**

2h · 🌐



यदि आप
ओशो को पढ़ते हैं
तो आप निस्संदेह
कृष्ण, पतंजलि, गोरख,
बुद्ध, महावीर, मोहम्मद, जीसस,
मोजेज़, लाओत्से, चवांतजु, बोधिधर्मा,
रामकृष्ण, कबीर, सहजोबाई, मीरा,
नारद, शंकराचार्य, रामकृष्ण, अष्टावक्र,
शंकर, कृष्णमूर्ति –
अनेक नाम है
जिनके प्रेम में पड़ सकते हैं ।

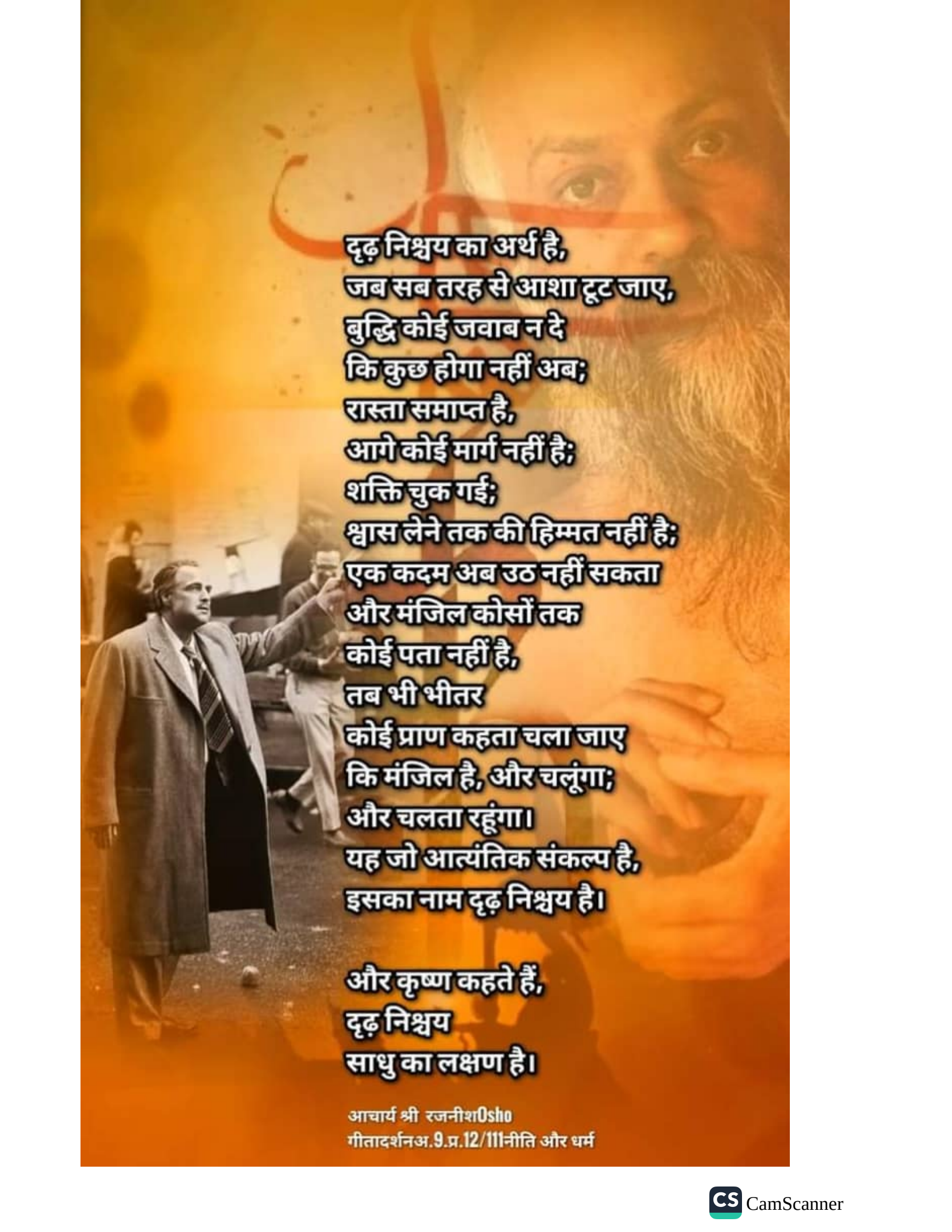
ओशो को पढ़ने पर
आप किसी धर्म के नहीं रह पाएंगे ।
आपका धर्म विलीन हो जाएगा
और फिर एक महाधर्म का उदय होगा ।

आपके अंदर होगा वास्तविक धर्म का आविर्भाव ।
फिर आपके मन में किसी के प्रति घृणा नहीं होगी,
सभी से प्रेम होगा, प्रेम का अदभूत उदभव होगा ।

ओशो की किसी
एक किताब को पढ़ते ही या किसी एक प्रवचन को सुनते ही
आप पूरी तरह से विद्रोही हो जाएंगे,
रूपांतरित हो जाएंगे
और यदि ध्यान घटा तो
आप शरीर में
रहते हुए मृत्यु के पार चले जाएंगे ।

साक्षी बने और ओशो को पढ़िए।
आप देखेंगे आपके जीवन में आनंद की वर्षा होगी ।

अज्ञात 🙏🙏🙏



दृढ़ निश्चय का अर्थ है,
जब सब तरह से आशा टूट जाए,
बुद्धि कोई जवाब न दे
कि कुछ होगा नहीं अब;
रास्ता समाप्त है,
आगे कोई मार्ग नहीं है;
शक्ति चुक गई;
श्वास लेने तक की हिम्मत नहीं है;
एक कदम अब उठ नहीं सकता
और मंजिल कोसों तक
कोई पता नहीं है,
तब भी भीतर
कोई प्राण कहता चला जाए
कि मंजिल है, और चलूंगा;
और चलता रहूंगा।
यह जो आत्यंतिक संकल्प है,
इसका नाम दृढ़ निश्चय है।

और कृष्ण कहते हैं,
दृढ़ निश्चय
साधु का लक्षण है।

आचार्य श्री रजनीशOsho
गीतादर्शन अ.9.प्र.12/111 नीति और धर्म



ओशो का हिन्दी साहित्य

Rahul Kumar Ojha · 9h ·



महावीर घर छोड़ना चाहते थे। अपनी मां से आज्ञा चाही। चरणों में सिर रखा होगा, और कहा कि मैं संन्यासी होना चाहता हूं, संसार छोड़ देना चाहता हूं। लेकिन मां ने कहा कि बस, दोबारा यह बात मेरे सामने मत उठाना। जब मैं मर जाऊं तब तुम्हें जो करना हो करना। मैं न झेल सकूंगी यह बात। मैं न देख सकूंगी तुम्हें जंगल में जाते। तो महावीर, कहते हैं, चुप हो गए। फिर जब मां की मृत्यु हो गई, तो पिता से पूछा। पिता ने कहा: बस, यह बात मेरे सामने करना मत। एक तो तुम्हारी मां चली गई, और अब तुम जंगल जाओगे! मुझ बूढ़े को क्यों सताना? मैं जब मर जाऊं, तब तुम्हें जो करना हो करना। फिर पिता भी चल बसे, तो मरघट से लौटते थे, अपने बड़े भाई से कहा कि अब मुझे आज्ञा मिल जाए। अब मैं काफी प्रतीक्षा कर चुका। मां ने कहा तो रुका, फिर पिता ने कहा तो रुका; अब तुम मत रोकना। भाई ने कहा यह बात ही मत उठाना। मां मर गई, पिता मर गए, तुम ही हो एक अकेले मेरे। मुझे छोड़कर जाओगे...तुम्हें थोड़ी भी दया-ममता नहीं है?

तो महावीर ने कहा: ठीक। वे घर छोड़कर नहीं गए; लेकिन घर में ही ऐसे हो रहे जैसे कि हों ही न। उनकी मौजूदगी का पता चलना ही बंद हो गया। नकार की तरह जीने लगे। किसी के बीच न आए। किसी को बाधा न बनें। किसी को आज्ञा न दें। किसी से काम न करवाएं। इस तरह रहने लगे कि पैर की आवाज भी किसी को सुनाई न पड़े। धीरे-धीरे घर के लोग ही भूल गए कि महावीर हैं भी या नहीं। फिर भाई को लगा कि अब रोकना व्यर्थ है। हमारा रोकना काम नहीं आया। उन्होंने तो घर को ही जंगल बना लिया है।

सारे घर के लोग इकट्ठे हुए और महावीर से प्रार्थना की कि आप जाएं। आप तो जा ही चुके हैं, छाया मात्र रह गई है। आत्मा का पक्षी तो कभी का उड़ गया है। अब आप हमारे बीच हैं नहीं; इसलिए अब हम रोकें, यह उचित भी नहीं है। हमने इतना रोका, उसके लिए क्षमा करें।

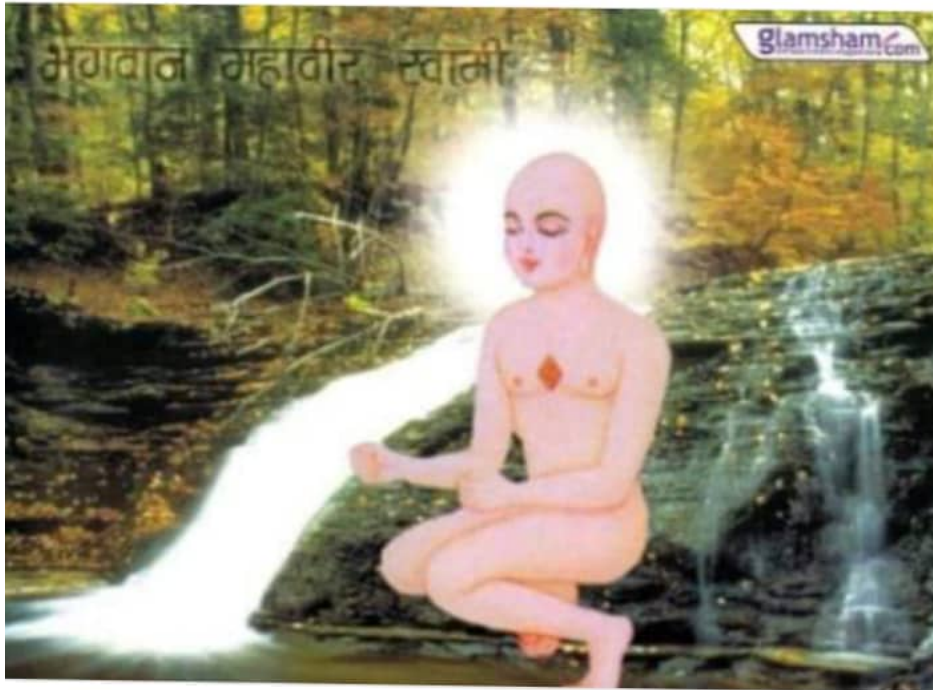
ऐसी आज्ञा मिल गई तो महावीर जंगल चले गए। महावीर जंगल न भी जाते तो भी निर्वाण घट गया था। महावीर जंगल न भी जाते तो भी जंगल घट गया था। एक तो है हिमालय जाना, और एक है हिमालय को अपने भीतर ले आना। दूसरी बात ज्यादा मूल्यवान है। जहां भी हो, धीरे-धीरे अपने को विदा कर दो। अपने को नमस्कार कर लो, अलविदा

8:51 am 0 KB/s 4G 93%
लगे कि पैर को आवाज भी किसी को सुनाई न पड़े। धीरे-धीरे घर के लोग ही भूल गए कि महावीर हैं भी या नहीं। फिर भाई को लगा कि अब रोकना व्यर्थ है। हमारा रोकना काम नहीं आया। उन्होंने तो घर को ही जंगल बना लिया है।

सारे घर के लोग इकट्ठे हुए और महावीर से प्रार्थना की कि आप जाएं। आप तो जा ही चुके हैं, छाया मात्र रह गई है। आत्मा का पक्षी तो कभी का उड़ गया है। अब आप हमारे बीच हैं नहीं; इसलिए अब हम रोकें, यह उचित भी नहीं है। हमने इतना रोका, उसके लिए क्षमा करें।

ऐसी आज्ञा मिल गई तो महावीर जंगल चले गए। महावीर जंगल न भी जाते तो भी निर्वाण घट गया था। महावीर जंगल न भी जाते तो भी जंगल घट गया था। एक तो है हिमालय जाना, और एक है हिमालय को अपने भीतर ले आना। दूसरी बात ज्यादा मूल्यवान है। जहां भी हो, धीरे-धीरे अपने को विदा कर दो। अपने को नमस्कार कर लो, अलविदा कह दो! और इस तरह रहने लगे कि तुमसे किसी को बाधा न पड़े, कि तुम किसी के आड़े न आओ, कि तुम किसी के बीच में विघ्न न बनो, कि तुम किसी के जीवन में किसी तरह का अवरोध न खड़ा करो। तो निर्वाण घट गया। तो तुम निर्गुण हो गए। चुनरी तैयार हो गई। यह बड़ी प्यारी चुनरी है। इसको जिसने ओढ़ लिया, उससे प्यारे को मिलना ही होगा।

🌹🌹 *ओश* 🌹🌹



👍❤️ 36

14 comments • 5 shares

👍 Like

💬 Comment

📧 Send

➦ Share



अहोभाव

6h · 🌐

...



अहोभाव

मेरा संदेश है: ध्यान में डूबो। और ध्यान को कोई गंभीर कृत्य मत समझना। ध्यान को गंभीर समझने से बड़ी भूल हो गई है। ध्यान को हलका-फुलका समझो। खेल-खेल में लो। हंसिबा खेलिबा करिबा ध्यानम्। गोरखनाथ का यह वचन याद रखना: हंसो, खेलो और ध्यान करो। हंसते खेलते ध्यान करो। उदास चेहरा बना कर, अकड़ कर, गुरु-गंभीर होकर धार्मिक होकर, मत बैठ जाना। इस तरह के मुर्दों से पृथ्वी भरी है। वैसे ही लोग बहुत उदास हैं, और तुम और उदासीन होकर बैठ गए। क्षमा करो। लोग वैसे ही बहुत दीनहीन हैं, अब और उदासीनों को यह पृथ्वी नहीं सह सकती। अब पृथ्वी को नाचते हुए, गाते हुए ध्यानी चाहिए। आह्लादित ! एक ऐसा धर्म चाहिए पृथ्वी को, जिसका मूल स्वर आनंद हो; जिसका मूल स्वर उत्सव हो।

ओशो

प्रीतम छबि नैनन बसी-11



भीतरी तत्व को
तुम तभी जान पाओगे
जब तुम बाहर से सब
लेन देन बन्द कर दोगे।
ओशो अहोभाव

शुद्ध बुद्धि का अर्थ है, जहां न वासना रही, न विचार रहा;
जहां दोनों खो गए। तब सिर्फ शुद्ध चेतना रह जाती है।
तो एक शर्त तो

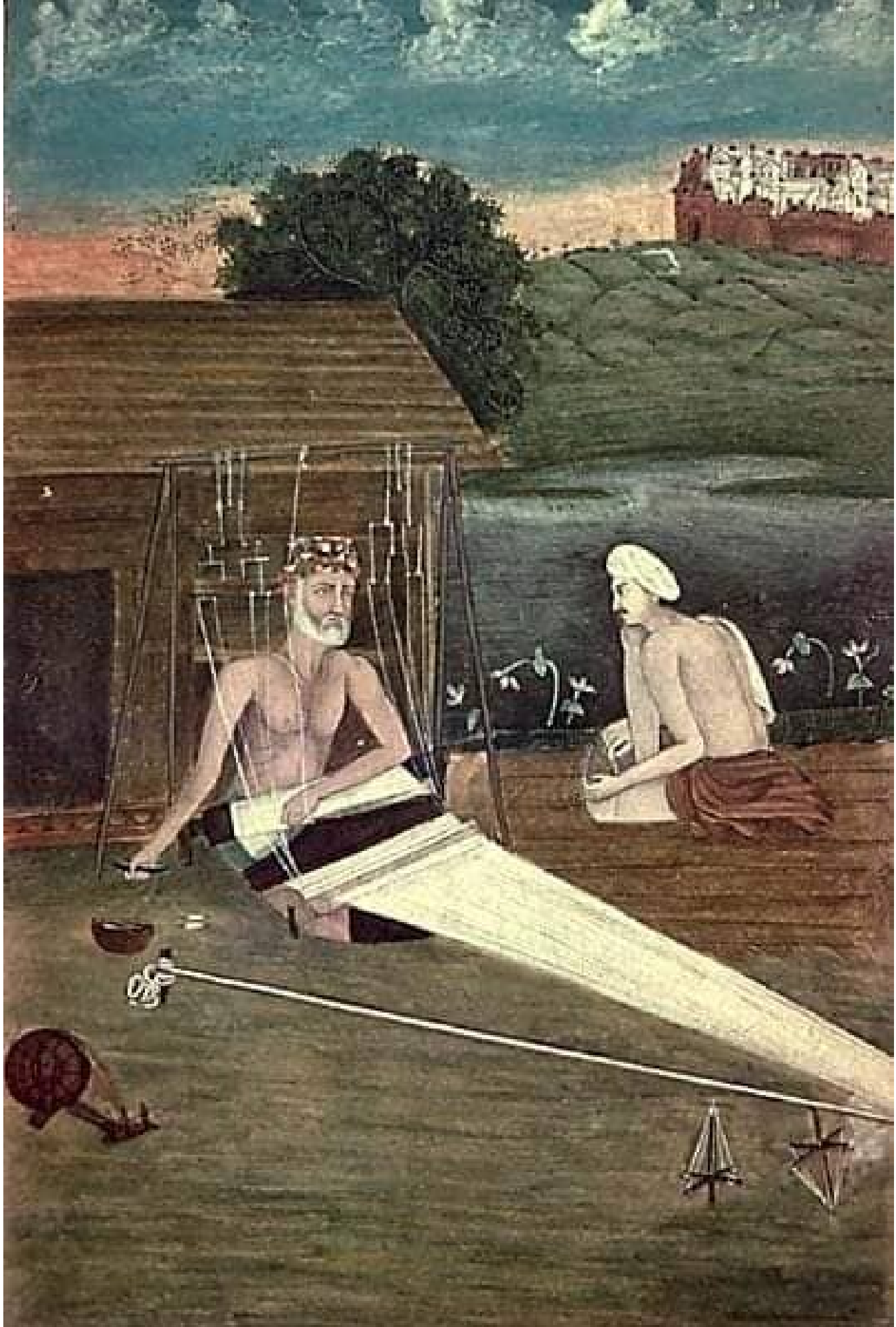
कृष्ण ने कही कि शुद्ध बुद्धि हो और दूसरी बात कही
कि निष्काम प्रेमी हो। प्रेम भी उसका निष्काम हो।

बुद्धि अशुद्ध होती है विचार से;
प्रेम अशुद्ध हो जाता है वासना से, कामना से।
ऐसा समझें कि बुद्धि से अर्थ है आपके चिंतन की क्षमता का,
और प्रेम से अर्थ है आपके हृदय के अनुभव की क्षमता का।
आपका मस्तिष्क अशुद्ध होता है विचार से,
और आपका हृदय अशुद्ध होता है कामना से, वासना से।
और जब तक हृदय और बुद्धि दोनों शुद्ध न हों,
तब तक भक्त का जन्म नहीं होता।

इसलिए मैं निरंतर कहता हूं कि
भक्त को आप ऐसा मत समझना कि वह सरल बात है।
ऐसा लोग अक्सर समझाते हुए सुने जाते हैं कि
भक्ति बड़ी सरल चीज है; ज्ञान तो बड़ा कठिन है।

लेकिन ध्यान रहे, ज्ञान की एक ही शर्त है कि बुद्धि शुद्ध हो।
और भक्ति की शर्त दोहरी है, कि बुद्धि शुद्ध हो
और हृदय निष्काम हो।

आचार्य श्री रजनीश Osho
गीतादर्शन अ.9.प्र.11/110 कर्ताभाव का अर्पण



कबीर जीवन के लिए बड़ा गहरा सूत्र हो सकते हैं। इसे तो पहले स्मरण में ले लें। इसलिए कबीर को मैं अनूठा कहता हूं। महावीर सम्राट के बेटे हैं; कृष्ण भी, राम भी, बुद्ध भी; वे सब महलों से आये हैं। कबीर बिलकुल सड़क से आये हैं; महलों से उनका कोई भी नाता नहीं है। कहा है कबीर ने कि कभी हाथ से कागज और स्याही छुई नहीं-‘मसी कागज छुओ न हाथ।’ ऐसा अपढ़ आदमी, जिसे दस्तखत करने भी नहीं आते, इसने परमात्मा के परम ज्ञान को पा लिया-बड़ा भरोसा बढ़ता है।

तब इस दुनिया में अगर तुम वंचित हो तो अपने ही कारण वंचित हो, परिस्थिति को दोष मत देना। जब भी परिस्थिति को दोष देने का मन में भाव उठे, कबीर का ध्यान करना। कम से कम मां-बाप का तो तुम्हें पता है, घर-द्वार तो है, सड़क पर तो पैदा नहीं हुए। हस्ताक्षर तो कर ही लेते हो। थोड़ी-बहुत शिक्षा हुई है, हिसाब-किताब रख लेते हो। वेद, कुरान, गीता भी थोड़ी पढ़ी है। न सही बहुत बड़े पंडित, छोटे-मोटे पंडित तो तुम भी हो ही। तो जब भी मन होने लगे परिस्थिति को दोष देने का कि पहुंच गए होंगे बुद्ध, सारी सुविधा थी उन्हें, मैं कैसे पहुंचूं, तब कबीर का ध्यान करना। बुद्ध के कारण जो असंतुलन पैदा हो जाता है कि लगता है, हम न पहुंच सकेंगे--कबीर तराजू के पलड़े को जगह पर ले आते हैं। बुद्ध से ज्यादा कारगर हैं कबीर। बुद्ध थोड़े-से लोगों के काम के हो सकते हैं। कबीर राजपथ हैं। बुद्ध का मार्ग बड़ा संकीर्ण है; उसमें थोड़े ही लोग पा सकेंगे, पहुंच सकेंगे।

बुद्ध की भाषा भी उन्हीं की है--चुने हुए लोगों की। एक-एक शब्द बहुमूल्य है; लेकिन एक-एक शब्द सूक्ष्म है। कबीर की भाषा सबकी भाषा है--बेपढ़े-लिखे आदमी की भाषा है। अगर तुम कबीर को न समझ पाए, तो तुम कुछ भी न समझ पाओगे। कबीर को समझ लिया, तो कुछ भी समझने को बचता नहीं। और कबीर को तुम जितना समझोगे, उतना ही तुम पाओगे कि बुद्धत्व का कोई भी संबंध परिस्थिति से नहीं। बुद्धत्व तुम्हारी भीतर की अभीप्सा पर निर्भर है--और कहीं भी घट सकता है; झोपड़े में, महल में, बाजार में, हिमालय पर; पढ़ी-लिखी बुद्धि में, गैर-पढ़ी-लिखी बुद्धि में, गरीब को, अमीर को; पंडित को, अपढ़ को; कोई परिस्थिति का संबंध नहीं है।

ओशो

कबीर के पास बड़ी गहरी समझ चाहिए। बुद्ध के पास तो अनुभव से आ जाती है बात; कबीर को तो समझ से ही लानी पड़ेगी।

गरीब का मुक्त होना अति कठिन है। कठिन इस लिहाज से कि उसे अनुभव की कमी बोध से पूरी करनी पड़ेगी; उसे अनुभव की कमी ध्यान से पूरी करनी पड़ेगी। अगर तुम्हारे पास भी सब हो, जैसा बुद्ध के पास था, तो तुम भी महल छोड़कर भाग जाओगे; क्योंकि कुछ और पाने को बचा नहीं; आशा टूटी, वासना गिरी, भविष्य में कुछ और है नहीं वहां--महल सूना हो गया!

आदमी महत्वाकांक्षा में जीता है। महत्वाकांक्षा कल की--और बड़ा होगा, और बड़ा होगा, और बड़ा होगा... दौड़ता रहता है। लेकिन आखिरी पड़ाव आ गया, अब कोई गति न रही--छोड़ोगे नहीं तो क्या करोगे? तो महल या तो आत्मघात बन जाता है या आत्मक्रांति। पर कबीर के पास कोई महल नहीं है।

बुद्ध बड़े प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं। जो भी श्रेष्ठतम ज्ञान था उपलब्ध, उसमें दीक्षित किये गये थे। शास्त्रों के ज्ञाता थे। शब्द के धनी थे। बुद्धि बड़ी प्रखर थी। सम्राट के बेटे थे। तो सब तरह से सुशिक्षा हुई थी।

कबीर सड़क पर बड़े हुए। कबीर के मां-बाप का कोई पता नहीं। शायद कबीर नाजायज संतान हों। तो मां ने उसे रास्ते के किनारे छोड़ दिया था--बच्चे को-पैदा होते ही। इसलिए मां का कोई पता नहीं। कोई कुलीन घर से कबीर आये नहीं। सड़क पर ही पैदा हुए जैसे, सड़क पर ही बड़े हुए जैसे। जैसे भिखारी होना पहले दिन से ही भाग्य में लिखा था। यह भिखारी भी जान गया कि धन व्यर्थ है, तो तुम भी जान सकोगे। बुद्ध से आशा नहीं बंधती। बुद्ध की तुम पूजा कर सकते हो। फासला बड़ा है; लेकिन बुद्ध-जैसा होना तुम्हें मुश्किल मालूम पड़ेगा। जन्मों-जन्मों की यात्रा लगेगी। लेकिन कबीर और तुम में फासला जरा भी नहीं है। कबीर जिस सड़क पर खड़े हैं-शायद तुमसे भी पीछे खड़े हैं; और अगर कबीर तुमसे भी पीछे खड़े होकर पहुंच गये, तो तुम भी पहुंच सकते हो।

कबीर जीवन के लिए बड़ा गहरा सूत्र हो सकते हैं। इसे तो पहले स्मरण में ले लें। इसलिए कबीर को मैं अनूठा कहता हूं। महावीर सम्राट के बेटे हैं; कृष्ण भी, राम भी, बुद्ध भी; वे सब महलों से आये हैं। कबीर बिलकुल सड़क से आये हैं; महलों से उनका कोई भी नाता नहीं है। कहा



अहोभाव

4h · 🌐



अहोभाव

"कबीर"जीवन के लिए बड़ा गहरा सूत्र हो सकते हैं। इसे तो पहले स्मरण में ले लें। इसलिए कबीर को मैं अनूठा कहता हूं। महावीर सम्राट के बेटे हैं; कृष्ण भी, राम भी, बुद्ध भी; वे सब महलों से आये हैं। कबीर बिलकुल सड़क से आये हैं; महलों से उनका कोई भी नाता नहीं है कबीर अनूठे हैं।

और प्रत्येक के लिए उनके द्वारा आशा का द्वार खुलता है। क्योंकि कबीर से ज्यादा साधारण आदमी खोजना कठिन है। और अगर कबीर पहुंच सकते हैं, तो सभी पहुंच सकते हैं। कबीर निपट गंवार हैं, इसलिए गंवार के लिए भी आशा है; वे-पढ़े-लिखे हैं, इसलिए पढ़े-लिखे होने से सत्य का कोई भी संबंध नहीं है। जाति-पांति का कुछ ठिकाना नहीं कबीर की--शायद मुसलमान के घर पैदा हुए, हिंदू के घर बड़े हुए। इसलिए जाति-पांति से परमात्मा का कुछ लेना-देना नहीं है।

कबीर जीवन भर गृहस्थ रहे--जुलाहे-बुनते रहे कपड़े और बेचते रहे; घर छोड़ हिमालय नहीं गये। इसलिए घर पर भी परमात्मा आ सकता है, हिमालय जाना आवश्यक नहीं। कबीर ने कुछ भी न छोड़ा और सभी कुछ पा लिया। इसलिए छोड़ना पाने की शर्त नहीं हो सकती।

और कबीर के जीवन में कोई भी विशिष्टता नहीं है। इसलिए विशिष्टता अहंकार का आभूषण होगी; आत्मा का सौंदर्य नहीं।

कबीर न धनी हैं, न ज्ञानी हैं, न समादृत हैं, न शिक्षित हैं, न सुसंस्कृत हैं। कबीर जैसा व्यक्ति अगर परमज्ञान को उपलब्ध हो गया, तो तुम्हें भी निराश होने की कोई भी जरूरत नहीं। इसलिए कबीर में बड़ी आशा है।

कबीर गरीब हैं, और जान गये यह सत्य कि धन व्यर्थ है। कबीर के पास एक साधारण-सी पत्नी है, और जान गये कि सब राग-रंग, सब वैभव-विलास, सब सौंदर्य मन की ही कल्पना है।

कबीर के पास बड़ी गहरी समझ चाहिए। बुद्ध के पास तो अनुभव से आ

ज्ञानी है नाउ. कबीर को जो गहरी ज्ञानी मनेगी।



जीवन क्या है?

Reels · 1h · 🌐



#philosophy #lifequotes #osho #oshohindi
#oshohindiquotes #motivation #motivationalquote
#oshomeditation #cadarvesh #love #medi... See more

अंडा उद्योग में, नर चूड़े कचरा हैं

@ जीवन क्या है ? 🙄

325 plays



Like



Comment



Send



Share

दूसरों का सहारा खोज रहे थे। सहारा खो देने पर उनके भीतर अपनी शक्ति जागनी शुरू होती है, जब कोई सहारा नहीं होता।

ज्ञान के लिए हम सहारा लिए हुए हैं, इसलिए ज्ञान कभी जगेगा नहीं। तो ज्ञान के लिए बेसहारा हो जाना जरूरी है। और बेसहारा होने का मतलब है, अज्ञान की स्थिति में खड़े हो जाना। आज तो इतनी ही बात कहूँगा: अज्ञान की स्थिति में खड़े हो जाएं, यदि चाहते हों कि भीतर ज्ञान का जन्म हो। ज्ञात को छोड़ दें, अगर चाहते हों कि अज्ञात के लिए द्वार खुले। जो जानते हैं उसे भूल जाएं, अगर चाहते हों उसे जानना जिसे नहीं जानते हैं। वह जो अभी नहीं जाना है, अगर उसे जानना है, तो उसे छोड़ देना होगा जिसे हम जानते हैं, जिसे हमें ख्याल है कि हम जान रहे हैं। ज्ञान से मुक्त हो जाना जरूरी है, अगर सचमुच ज्ञान को उपलब्ध करना है।



**Sanjeev Mishra**

4h · 🌐



जीवन ऊर्जा का एक नियम है, कि वह तभी जगती है जब बेसहारा होती है। अगर आपको बिना पैर के चलने की सुविधा हो, तो धीरे - धीरे पैरों की ऊर्जा समाप्त हो जाएगी। अगर आपको निरंतर बिना हाथों के काम करने की सुविधा हो मिल जाए हाथों की शक्ति वापस लौट जाएगी और सो जाएगी। अगर एक आदमी को हम आंख बंद करके दो वर्ष जीने को कह दें कि तुम आँख बंद करके जीओ, तो आंखों की शक्ति वापस सो जाएगी भीतर जाकर उसकी कोई जरूरत न रही। अगर हम बोलना बंद कर दें, दो चार वर्ष तो फिर हम नहीं बोल सकेंगे, बोलना खो जाएगा, बोलने की ताकत वापस सो जाएगी।

जीवन शक्ति का एक नियम है :हम जिस शक्ति का उपयोग करते हैं और जिस शक्ति के लिए चुनौती देते हैं, वही शक्ति जगती है और सक्रिय हो जाती है। और जिस शक्ति को हम चुनौती देना बंद कर देते हैं उपयोग बंद कर देते हैं, वह सो जाती है।

हमारे भीतर ज्ञान सोया हुआ है, क्योंकि हम दूसरे के ज्ञान पर विश्वास किए हैं। दूसरे का ज्ञान ही जब काम कर देता है तो खुद के ज्ञान के जगने की कोई जरूरत नहीं रह जाती, जीवन ऊर्जा सोई रह जाती है। अगर हम दूसरों के सारे ज्ञान को अस्वीकार कर दें, अगर दूसरों के ज्ञान को झाड़ दें अपने से, दूसरों के ज्ञान से खाली हो जाएं, तो जो चुनौती पैदा होगी, जो चैलेंज पैदा होगा, जो दबाव पैदा होगा, जो प्रेशर पैदा होगा जीवन में, वही हमारे भीतर जो सोए हुए ज्ञान के स्रोत हैं उनको जगा देगा।

दुनिया में केवल वे ही लोग सत्य की दिशा में जान पाते हैं, जो सत्य के संबंध में जो भी जाना है उसे छोड़ देते हैं। तब उनके प्राण उस बात को संभाल लेते हैं, जो उन्होंने दूसरों के कंधों पर ली थी, जिसके लिए वे दूसरों का सहारा खोज रहे थे। सहारा खो देने पर उनके भीतर अपनी शक्ति जागनी शुरू होती है, जब कोई सहारा नहीं होता।

ज्ञान के लिए हम सहारा लिए हुए हैं, इसलिए ज्ञान कभी जगेगा नहीं। तो ज्ञान के लिए बेसहारा हो जाना जरूरी है। और बेसहारा होने का मतलब है, अज्ञान की स्थिति में खड़े हो जाना। आज तो इतनी ही बात कहूँगा: अज्ञान की स्थिति में खड़े हो जाएं, यदि चाहते हों कि भीतर ज्ञान का जन्म हो। ज्ञात को छोड़ दें, अगर चाहते हों कि अज्ञात के लिए द्वार खुले। जो जानते हैं उसे भूल जाएं, अगर चाहते हों उसे जानना जिसे नहीं जानते हैं। वह जो अभी नहीं जाना है, अगर उसे जानना है,



← Reels ▾



4RABET

LUCKIEST
INDIAN CASINO

कुंवारी के देवता के दर्शन मात्र
से हो जाती है शादी, नीमच के
'बिल्लम बावजी' बना देते हैं जोड़ी,
यहाँ हो चुकी हैं 1500 शादियाँ



115K



951



412



Send



bhaktisagar1130 @

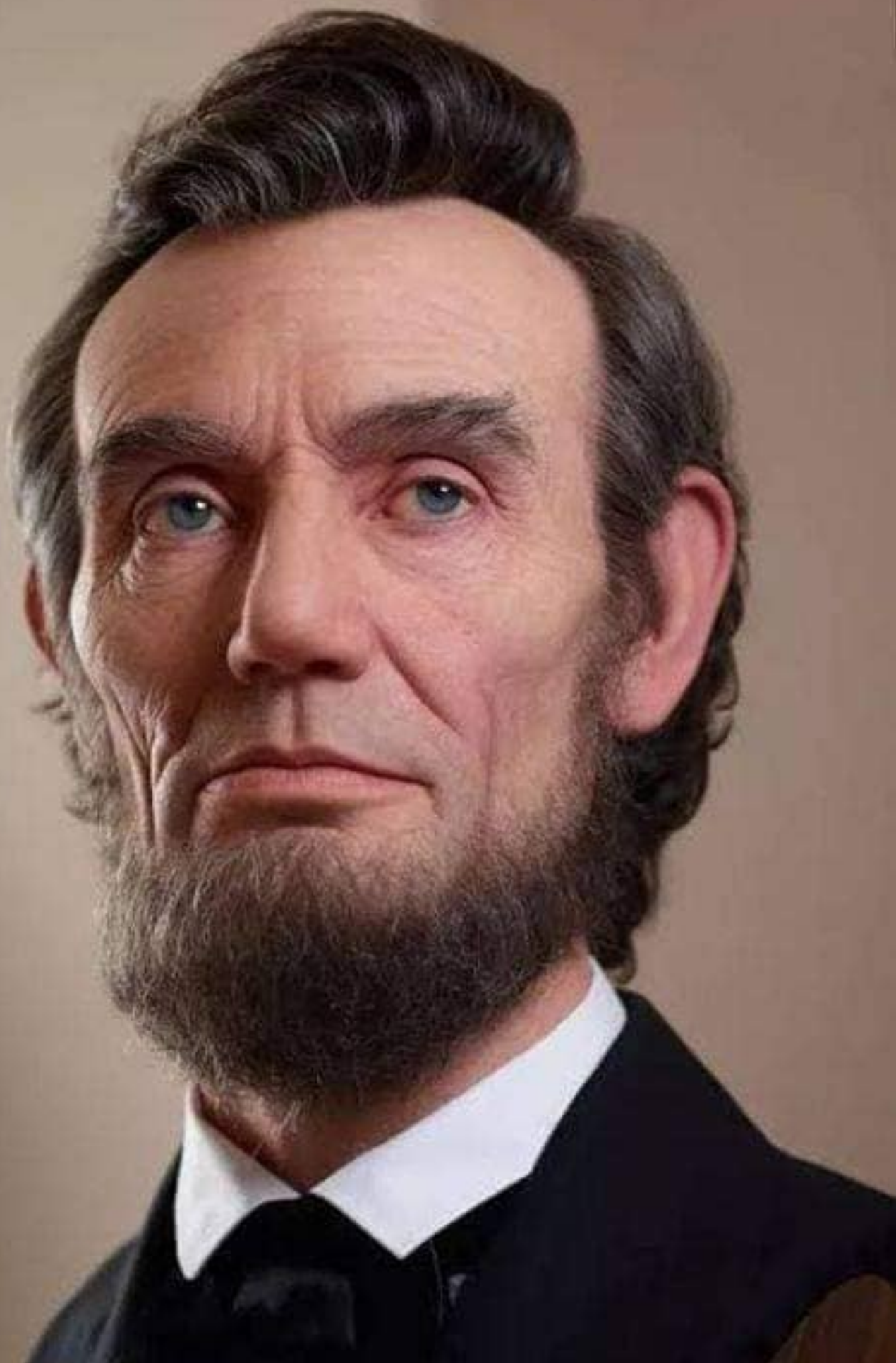
#mandir #neemuch #marriage #mp

🎵 Dhol Tasha

Shubh

Add a comment...







Like



Comment



Send



Share

**Sanjeev Mishra**

4h · 🌐

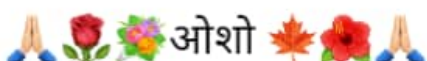


अब्राहिम लिंकन एक सीनेट की बैठक में जा रहा था, बीच में एक सुअर फँस गया एक नाली में। वह भागा हुआ गया और उसने कहा कि 'सीनेट को थोड़ी देर रोकना। मैं अभी आया।' यह अजीब बात थी। अमेरिका की संसद शायद ही कभी रुकी हो इस तरह से। वह वापस लौटा, उसने सुअर को निकाला। उसके सब कपड़े मिड़ गए कीचड़ में। उसे नाली से बाहर निकालकर उसने रखा, फिर अंदर गया। लोगों ने पूछा, 'क्या बात थी? इतने आप घबराए हुए काम रोककर बाहर क्यों गए!' तो उसने कहा, 'एक प्राण संकट में था।'

यह प्रेम का कितना सरल सा कृत्य था, लेकिन कितना अद्भुत है। और ये छोटी छोटी बातें...। अब मैं देखता हूँ, ऐसे लोग हैं जो पानी छान कर पीएँगे कि कोई कीड़ा न मर जाए, लेकिन उनके मन में कोई प्रेम नहीं है। तो उनका पानी छानना बेकार है। वह उनके लिए बिल्कुल ही मैकेनिकल हैबिट की बात है कि वे पानी छान कर पीते हैं; कि रात को खाना नहीं खाते, क्योंकि कोई कीड़ा न मर जाए। लेकिन उनके हृदय में प्रेम नहीं है, तो इससे कोई मतलब नहीं है।

मतलब इससे नहीं है कि पानी छान कर पीते हैं, कि रात को खाना नहीं खाते हैं; कि मांसाहार नहीं करते हैं, इससे भी मतलब नहीं है। एक ब्राह्मण या एक जैन या एक बौद्ध मांसाहार नहीं करेगा तो यह मत समझना कि उसका मन प्रेम से भरा हुआ है। यह केवल आदत की बात है, यह केवल वंश-परम्परागत सुनी हुई बात है, समझी हुई बात है। लेकिन उसके मन में प्रेम नहीं है।

हाँ, अगर यह आपके प्रेम से विकसित हो, तो यह अद्भुत बात हो जाएगी। अहिंसा तब परम धर्म है, जब वह प्रेम से विकसित हो। अगर वह ग्रंथों को पढ़कर और किसी संप्रदाय को मानकर विकसित हो जाए, वह कोई धर्म ही नहीं है।



ओशो

महावीर ने जो प्रयोग
किए! वो पृथ्वी पर किसी
ने नहीं किए..

उनके अनशन और
उपवास बड़े अद्भुत थे!
वे ऐसा संकल्प लेते थे कि,

"मैं गांव में उस घर
से भोजन ग्रहण करूंगा!
जिस घर के आगे काला

"बैल खड़ा हो!

और स्त्री! सफ़ेद साड़ी में
"दरवाज़े पर खड़ी हो!
ऐसे होना.. अगर नियति
चाहती है, तो भोजन हो
जाएगा, नहीं तो वे वापिस

"आनंदित होकर लौट
आते थे, और ऐसे में 3-4
महीने भी निकल जाते.!!

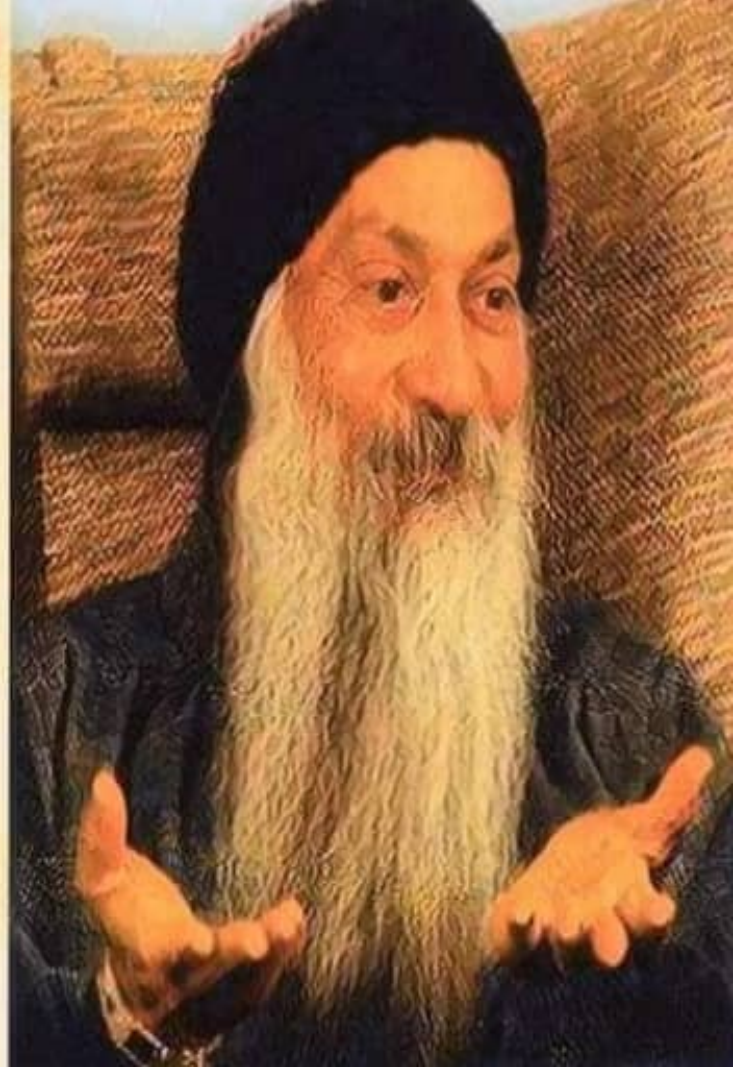
वे पशु पक्षियों और पेड़
पौधों की तरह जीते थे.!!

ओशो





मैंने एक कहावत सुनी है !
जब भी परमात्मा किसी
व्यक्ति को बनाके धरती
पर भेजता है !
तो एक मज़ाक सब के
साथ परमात्मा करता है !
धरती पे भेजने से पहले
उसके कान में एक बात
बोल देता है !
तुमसे ज्यादा सुंदर और
तुम से ज्यादा समझदार
व्यक्ति मैंने इससे पहले
कभी नहीं बनाया है !



तन की सौ-सौ बंदिशें, मन की लगे ना रोक
तन की दो गज कोठरी, मन के तीनों लोक ❁ ❁



जो युद्ध लड़े मैदानों में
वो इंसान वीर कहा जाएँ,
जो युद्ध लड़े अपने मन से
वो महावीर हो जाएँ.



ओशो का हिन्दी साहित्य

Kunal Pandey · 8h · 🌐



जिंदगी शोलों में तपत्तप के निखरती ही गई।
जितनी ताराज हुई और संवरती ही गई।।

घबड़ाओ न..। यह तो इस जीवन के निखारने का उपाय है।

जिंदगी शोलों में तपत्तप के निखरती ही गई।
जितनी ताराज हुई और संवरती ही गई।।

भूल-चूकों से मत डरना। भूल-चूकों से ही आदमी सीखता है। पापों से मत घबड़ाना, क्योंकि पापों से ही प्रार्थनाएं उठती हैं। अगर डरना किसी चीज से तो थोथे पांडित्य से डरना, क्योंकि थोथा पांडित्य अहंकार उठाता है। और अहंकार ही दीवार बन जाती है। अहंकार से बड़ा आंख पर कोई परदा नहीं। गुनहगार पहुंच जाएंगे, मगर तुम्हारे पंडित और पुरोहित नहीं पहुंच सकते।

करना कुल इतना है कि अंधविश्वासों से, जो दूसरों ने तुम्हें दे दिए हैं सब उधार और बासे, उनसे अपनी आंखों को रिक्त कर लेना है, खाली कर लेना है।

ओशो; सांच-सांच सो सांच



उम्र कितना है?

रामतीर्थ बहुत मुश्किल में पड़ गए, उनकी उम्र उस समय तीस ही वर्ष थी। तुम्हारी उम्र कितनी है? रामतीर्थ ने कहा, उम्र तो तीस ही वर्ष है। उस बूढ़े आदमी ने कहा कि बेटे मैं तुमसे कहना चाहता हूं कि तुम्हारा देश क्यों बूढ़ा हो गया है। तुम कुछ भी नहीं करते, तुम सिर्फ मौत की प्रतीक्षा करते हो, तो बूढ़े तो हो ही जाओगे।

फिर मेरा तो ख्याल यह है कि अगर भगवान कहीं भी है, तो इस बूढ़े को देखेगा कि इतना श्रम करता है तो दया करेगा ही। और अगर नहीं है तो उसकी फिक्र ही छोड़ देनी है। और अगर कहीं है, तो इस बूढ़े को बच्चे की तरह मेहनत करते देखकर यह सोचता होगा कि अभी इसे और, और, और उम्र दें। और यह हैरानी की मैंने घटना सुनी है कि वह बूढ़ा पंद्रह साल जिंदा रहा। उसने न केवल चीनी भाषा सीखी, न केवल चीनी किताबें पढ़ी, बल्कि एक चीनी भाषा में किताब भी लिखकर छोड़ गया है! और रामतीर्थ तो दो साल बाद समाप्त हो गए। वह आदमी एक सौ पांच साल जिया।

मैं मानता हूं, उसके जीने में उसकी जो जीवंत धारणा है, वह बहुत कीमती रूप से हाथ बंटायी होगी। और इतनी जद्दोजहद जो जिंदगी के लिये कर रहा हो, उसके लिए भगवान भी अगर कहीं हो, तो थोड़ा ख्याल रखना जरूरी पड़ेगा

🌹🌸 ओशो 🍁🌹



Sanjeev Mishra

4h · 🌐



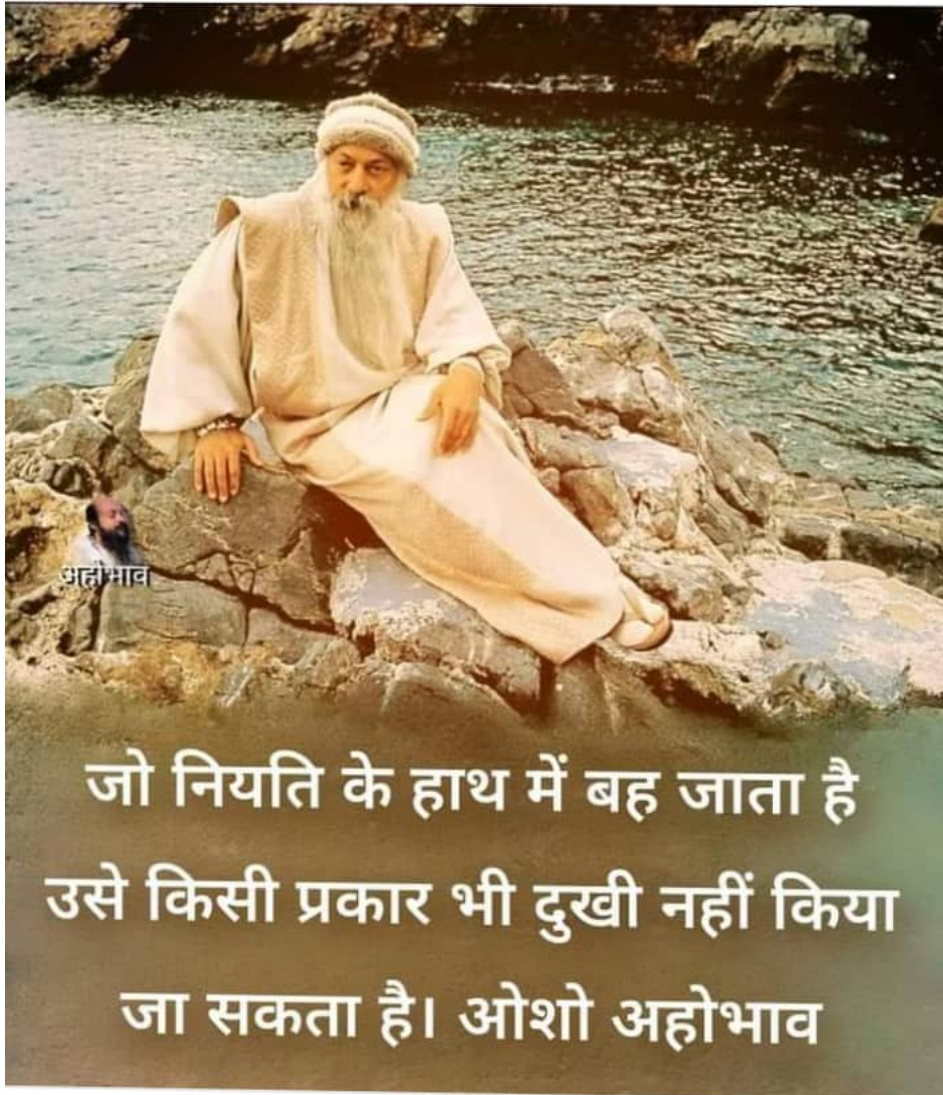
स्वामी राम जापान गए थे। रास्ते में जिस जहाज पर सवार थे - एक बूढ़ा जर्मन भी उस जहाज पर था, जिनकी उम्र कोई नब्बे वर्ष होगी। वह नब्बे वर्ष की उम्र में चीनी भाषा सीख रहा था! चीनी भाषा सीखना कठिन मामला है। शायद पृथ्वी पर उतनी कठिन कोई दूसरी भाषा नहीं है। उसका कारण है कि चीनी भाषा के पास कोई वर्णमाला नहीं है, कोई अलफाबेट नहीं है, कोई ए बी सी, क ख ग कुछ भी नहीं है। चीनी भाषा पिक्टोरियल है, चित्रों की भाषा है। एक - एक शब्द के लिए एक - एक चित्र हैं। अगर झगड़ा लिखना है, लड़ाई लिखनी है तो लड़ाई के लिए कोई शब्द नहीं है - सिर्फ एक छप्पर के नीचे दो औरतें बैठी हुई हैं। एक छप्पर के नीचे दो औरतों के बैठने का मतलब झगड़ा होता है। तो छप्पर बना है, और प्रतीक में दो औरतें बैठी हैं, यह झगड़ा हो गया। तो इस तरह कम से कम एक लाख शब्द सीखने पड़े तो कहीं साधारण चीनी का ज्ञान होता है। नब्बे वर्ष का बूढ़ा चीनी भाषा सीख रहा था, पागल हो गया! रामतीर्थ को लगने लगा, इस बूढ़े को क्या हो गया? वह सुबह से लेकर जहाज के डेक पर जो चीनी भाषा सीखने बैठता है, तो कब सूरज डूब जाता है, उसे पता नहीं चलता। जब अंधेरा घिर जाता है, उसकी बूढ़ी आँखें थक जाती हैं तो वह अंदर वापस लौटता है!

दो - तीन दिन में रामतीर्थ ने उनसे पूछा कि आपको पता है, कि मैंने सुना है कि चीनी भाषा सीखने में कम से कम दस साल लग जाते हैं। आप कब सीख पाओगे? आपकी कितनी उम्र हो गयी है? उस बूढ़े ने कहा, कि उम्र! का हिसाब भगवान रखता होगा, इस फिजूल काम में मैं नहीं पड़ता। यहां काम से फुर्सत कहाँ है? रामतीर्थ ने कहा, वह तो ठीक है, लेकिन फिर भी दस साल लग जाएंगे सीखने में - और आपके बचने की उम्मीद कम है। उस बूढ़े आदमी ने कहा कि नब्बे साल का मेरा अनुभव कहता है कि नब्बे साल तो मैं बचा। मरने की संभावना रोज थी, कभी भी मर सकता था। नब्बे साल तो मैंने मरने को धोखा दे दिया। नब्बे साल का अनुभव यह कहता है, अभी तक नहीं मरा - तो जरा विश्वास बढ़ता है कि जी सकता हूँ और भी जी सकता हूँ। लेकिन तुम्हारी उम्र कितनी है?

रामतीर्थ बहुत मुश्किल में पड़ गए, उनकी उम्र उस समय तीस ही वर्ष थी। तुम्हारी उम्र कितनी है? रामतीर्थ ने कहा, उम्र तो तीस ही वर्ष है। उस बूढ़े आदमी ने कहा कि बेटे मैं तुमसे कहना चाहता हूँ कि तुम्हारा देश क्यों बूढ़ा हो गया है। तुम कुछ भी नहीं करते, तुम सिर्फ मौत की

जिसने समझा। "सबके दाता रात", उसकी सारी चिंता गई। अहंकार गया, तो चिंता गई। कर्ता का भाव गया, तो बेचैनी गई। फिर चैन ही चैन है। फिर असफलता में भी सफलता है; निर्धनता में भी धन है। फिर मृत्यु में भी महाजीवन है। और अभी तो सफलता में भी असफलता ही हाथ लगती है।

ओशो



👍 Indramani Yadav and 79 others

6 comments • 11 shares



Like



Comment



Send



Share



Suggested Pages for you



Suggested Pages for you



ओशो का हिन्दी साहित्य

Sulaxna Dixit Rawat · 9h ·



अजगर करै न चाकरी-सच है। किसने अजगर को नौकरी करते देखा? लेकिन अजगर भी सतत काम में लगा रहता है। पंछी करै न काम-सच है। पंछी दफ्तर में क्लर्की नहीं करते, न मजिस्ट्रेट होते, न स्कूलों में मास्टरी करते, न दुकान चलाते हैं। लेकिन काम में तो चौबीस घंटे लगे रहते हैं। सुबह सूरज निकला नहीं कि पंछी काम पर निकले नहीं। सांझ सूरज ढलेगा, तब काम रुकेगा। अर्जित करेंगे दिन भर, तब रात विश्राम करेंगे।

काम तो विराट चलता है। काम तो छोटी-छोटी चींटी भी करती है। काम से यहां कोई भी खाली नहीं है। फिर क्यों कहा होगा मलूक ने "अजगर करै न चाकरी, पंछी करै काम"? मलूक का अर्थ है: इस काम में कहीं कर्ता का भाव नहीं है; "मैं कर रहा हूं," ऐसी कोई धारणा नहीं है। जो परमात्मा कराये! जिहि विधि राखै रास! जो करा लेता है, वही कर रहे हैं। करने वाला वह है, हम सिर्फ उपकरण मात्र है।

दास मलूका कहि गया, सबके दाता राम।

तो न तो हम कर्ता हैं, न हम भोक्ता है। न हम कर्ता हैं और न हम करने में सफल या असफल हो सकते हैं। वही करता है-वही हो सफल, वही हो असफल। ऐसी जिसकी जीवन-दृष्टि हो, उसके जीव में तनाव न रह जायेगा, चिंता न रह जायेगी।

यह सूत्र तनाव को मिटाने का सबसे बड़ा सूत्र है। यह सूत्र काफी है-मनुष्य के जीवन से सारी चिंता छीन लेने के लिए। चिंता ही क्या है? चिंता एक ही है कि कहीं मैं न हार जाऊं। चिंता एक ही है कि कहीं और कोई न जीत जाए। चिंता एक ही है कि मैं जी पाऊंगा या नहीं? चिंता एक ही है कि कोई भूल-चूक न हो जाए। चिंता एक ही है जिस मंजिल पर निकला हूं, वह मुझे मिलकर रहे।

जिसने समझा। "सबके दाता रात", उसकी सारी चिंता गई। अहंकार गया, तो चिंता गई। कर्ता का भाव गया, तो बेचैनी गई। फिर चैन ही चैन है। फिर असफलता में भी सफलता है; निर्धनता में भी धन है। फिर मृत्यु में भी महाजीवन है। और अभी तो सफलता में भी असफलता ही हाथ



सौंदर्य तो सिर्फ चेतना का होता है।

देह तो मल—मूत्र का घर है।

**देह तो धोखा है। देह के धोखे में मत पड़ना,
बुद्ध कहते हैं। इस बातको स्मरण रखना
कि इसको तुम कितने ही इत्र से छिडको
इस पर, तो भी इसकी दुर्गंध नहीं जाती।
और तुम इसे कितने ही सुंदर वस्त्रों में ढांको,
तो भी इसका असौंदर्य नहीं ढकता है।
और तुम चाहे कितने ही सोने के आभूषण
पहनो, हीरे—जवाहरात सजाओ,
तो भी तुम्हारे भीतर की मांस—मज्जा वैसी
की वैसी है। ओशो... एस धम्मो सनंतन**



Michael O'Byrne, known simply as



All Images Flights News Finance Videos E



Hindustan Times

Why is Jayesh missing from Osho's...



Hindustan Times

Why is Jayesh missing from Osho's...



Osho Friends

Jayesh - Osho Story, Osho's Life a...



nOby

Jayesh Michael O



कोई बहुत गहरी आध्यात्मिक नींद,
कोई स्प्रिचुअल हिप्नोटिक स्लीप,
कोई आध्यात्मिक सम्मोहन की

तंद्रा

मनुष्य को घेरे हुए है।
इसलिए उसे जीवन का
ही पता नहीं चलता
कि **जीवन क्या है।**



anamcara Ramas

Osho



तपस्वी ने आंखें खोलीं और कहा, स्वर्ग की अब मुझे कोई जरूरत नहीं!

इंद्र तो भरोसा भी न कर पाया कि कोई मनुष्य और कहेगा कि स्वर्ग की मुझे अब कोई जरूरत नहीं। इंद्र ने सोचा, तब क्या मोक्ष की आकांक्षा इस तपस्वी को पैदा हुई है। पूछा, क्या मोक्ष चाहिए?

तपस्वी ने कहा, नहीं, मोक्ष का भी मैं क्या करूंगा।

तब तो इंद्र चरणों में सिर रखने को ही था कि यह तो आत्यंतिक बात हो गई, तपश्चर्या का अंतिम चरण हो गया, जहां मोक्ष की आकांक्षा भी खो जाती है। पर झुकने के पहले उसने पूछा, मोक्ष के पार तो कुछ भी नहीं है, फिर तुम क्या चाहते हो?

उस तपस्वी ने कहा, कुछ भी नहीं, वह लकड़ियां बीनने वाली युवती कहां है, वही चाहिए।

हंसना मत; आदमी की ऐसी कमजोरी है। सोचना, हंसना मत; क्योंकि पृथ्वी का ऐसा प्रबल आकर्षण है।

कहानी को कहानी समझ कर टाल मत देना, मनुष्य के मन की पूरी व्यथा है। और ऐसा मत सोचना कि ऐसा विकल्प उस तपस्वी के सामने ही था कि युवती थी, स्वर्ग था, दोनों के बीच चुनना था।

तुम्हारे सामने भी विकल्प वही है; सभी के सामने विकल्प वही है—या तो उन सुखों को चुनो जो क्षणभंगुर हैं, या उसे चुनो जो शाश्वत है; या तो शाश्वत को गंवा दो क्षणभंगुर के लिए, या क्षणभंगुर को समर्पित कर दो शाश्वत के लिए।

और अधिकतम लोग वही चुनेंगे, जो तपस्वी ने चुना। ऐसा मत सोचना कि तुमने कुछ अन्यथा किया है।

ओशो, भज गोविंदम मूढमते-५

अजीब सी है जिंदगी बस उलझती ही जा रही...

फिर एक दिन तपस्वी ने आंख खोलीं। इस वनस्थली से जाने का समय आ गया—तपश्चर्या को और गहन करना है, पर्वत-शिखरों की यात्रा पर जाना है। उसने युवती से कहा कि मैं अब जाऊंगा, यहां मेरा कार्य पूरा हुआ।

अब और भी कठिन मार्ग चुनना है, स्वर्ग को जीत कर ही रहना है। युवती रोने लगी। उसकी आंख से आंसू गिरने लगे। उसने कहा, मैंने कौन सा दुष्कर्म किया कि मुझे अपनी सेवा से वंचित करते हो? और तो कुछ मैंने कभी मांगा नहीं!

तपस्वी ने सोचा, उस युवती के चेहरे की तरफ देखा। ऐसा सौंदर्य कभी देखा नहीं था। स्वप्न में भी ऐसा सौंदर्य कभी देखा नहीं था। युवती पहचानी भी लगती थी और अपरिचित भी लगती थी।

रूप-रेखा तो वही थी, लेकिन कुछ महिमा उतर आई थी। अंग-प्रत्यंग वही थे, लेकिन कोई स्वर्ण-आभा से घिर गए थे। जैसे कोई गीत की कड़ी, भूली-बिसरी, फिर किसी संगीतज्ञ ने बांसुरी में भर कर बजाई हो।

तपस्वी बैठ गया। उसने पुनः आंख बंद कर लीं। वह रुक गया।

उस रात युवती सो न सकी—विजय का उल्लास भी था और साधु को पतित करने का पश्चात्ताप भी। आनंदित थी कि जीत गई और दुखी थी कि किसी को भ्रष्ट किया, किसी के मार्ग में बाधा बन गई, और कोई जो ऊर्ध्वगमन के लिए निकला था, उसकी यात्रा को भ्रष्ट कर दिया। रात भर सो न सकी—रोई भी, हंसी भी।

सुबह निर्णय लिया, आकर तपस्वी के चरणों में झुकी और कहा, मुझे जाना पड़ेगा, मेरा परिवार दूसरे गांव जा रहा है।

तपस्वी ने आशीर्वाद दिया कि जाओ, जहां भी रहो, खुश रहो, मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।

युवती चली गई। वर्ष बीते, तपस्या पूरी हुई। इंद्र उतरा, तपस्वी के चरणों में झुका और कहा, स्वर्ग के द्वार स्वागत के लिए खुले हैं।

**Punjabhai Bharadiya**

2d · 🌐

एक अति प्राचीन कथा है।

घने वन में एक तपस्वी साधनारत था—आंख बंद किए सतत प्रभु-स्मरण में लीन। स्वर्ग को पाने की उसकी आकांक्षा थी; न भूख की चिंता थी, न प्यास की चिंता थी।

एक दिन-दरिद्र युवती लकड़ियां बीनने आती थी वन में। वही दया खाकर कुछ फल तोड़ लाती, पत्तों के दोने बना कर सरोवर से जल भर लाती, और तपस्वी के पास छोड़ जाती। उसी सहारे तपस्वी जीता था।

फिर धीरे-धीरे उसकी तपश्चर्या और भी सघन हो गई—फल बिना खाए ही पड़े रहने लगे; जल दोनों में पड़ा-पड़ा ही गंदा हो जाता—न उसे याद रही भूख की और न प्यास की। लकड़ियां बीनने वाली युवती बड़ी दुखी और उदास होती, पर कोई उपाय भी न था।

इंद्रासन डोला; इंद्र चिंतित हुआ; तपस्या भंग करनी जरूरी है; सीमा के बाहर जा रहा है यह व्यक्ति—क्या स्वर्ग के सिंहासन पर कब्जा करने का इरादा है?

लेकिन कठिनाई ज्यादा न थी, क्योंकि इंद्र मनुष्य के मन को जानता है।

स्वर्ग से जैसे एक श्वास उतरी—सूखी, दीन-दरिद्र, काली-कलूटी वह युवती अचानक अप्रतिम सौंदर्य से भर गई; जैसे एक किरण उतरी स्वर्ग से और उसकी साधारण सी देह स्वर्णमंडित हो गई।

पानी भर रही थी सरोवर से तपस्वी के लिए, अपने ही प्रतिबिंब को देखा, भरोसा न कर पाई—साधारण स्त्री न रही, अप्सरा हो गई; खुद के ही बिंब को देख कर मोहित हो गई! तपस्वी की सेवा उसने करनी जारी रखी।

फिर एक दिन तपस्वी ने आंख खोलीं। इस वनस्थली से जाने का समय आ गया—तपश्चर्या को और गहन करना है, पर्वत-शिखरों की

अजीब सी है जिंदगी बस उलझती ही जा रही...
मोह माया से दूर होना चाहो तो उसी में फंसती जा रही...



ध्यान रखना,
आदमी का मन बड़ा खतरनाक है,
वह संन्यास में भी संसार खीज लेता है।

- आचार्य रजनीश

ओशो



जिस किसी पर तुम अपना ध्यान देते हो , उसी की भाति हो जाते हो । अतः जागरूक रहना । किसी ऐसी चीज की और ध्यान मत देना जिसकी भाति तुम होना ही नहीं चाहते । केवल उसी चीज पर ध्यान देना जिसकी भाति तुम होना चाहते हो क्योंकि यही है प्रारम्भ । बीज बो दिया गया है ध्यान सहित और जल्दी ही वह वृक्ष बन जाएगा । -

  19

8 shares • 199 plays

 Like

 Comment

 Send

 Share



Friends who like Osho tapoban

...



S Iqbal Mohammed · 22h · 

मौन



मौन सबसे अच्छा उत्तर है ऐसे लोगों के लिए
जो आपके शब्दों को महत्व नहीं देते हैं..!!

घर को मंदिर बनाओ! यही मेरी सारी शिक्षा का सार है: घर को मंदिर बनाओ! क्योंकि वह प्रेम का स्थल है। वहां पूजा के दीप जलाओ! वहां जलने दो धूप ! वहां सब मुखौटे एक तरफ रख दिया करो। वहां सारी राजनीति छोड़ दिया करो।



ओशो

अहोभाव

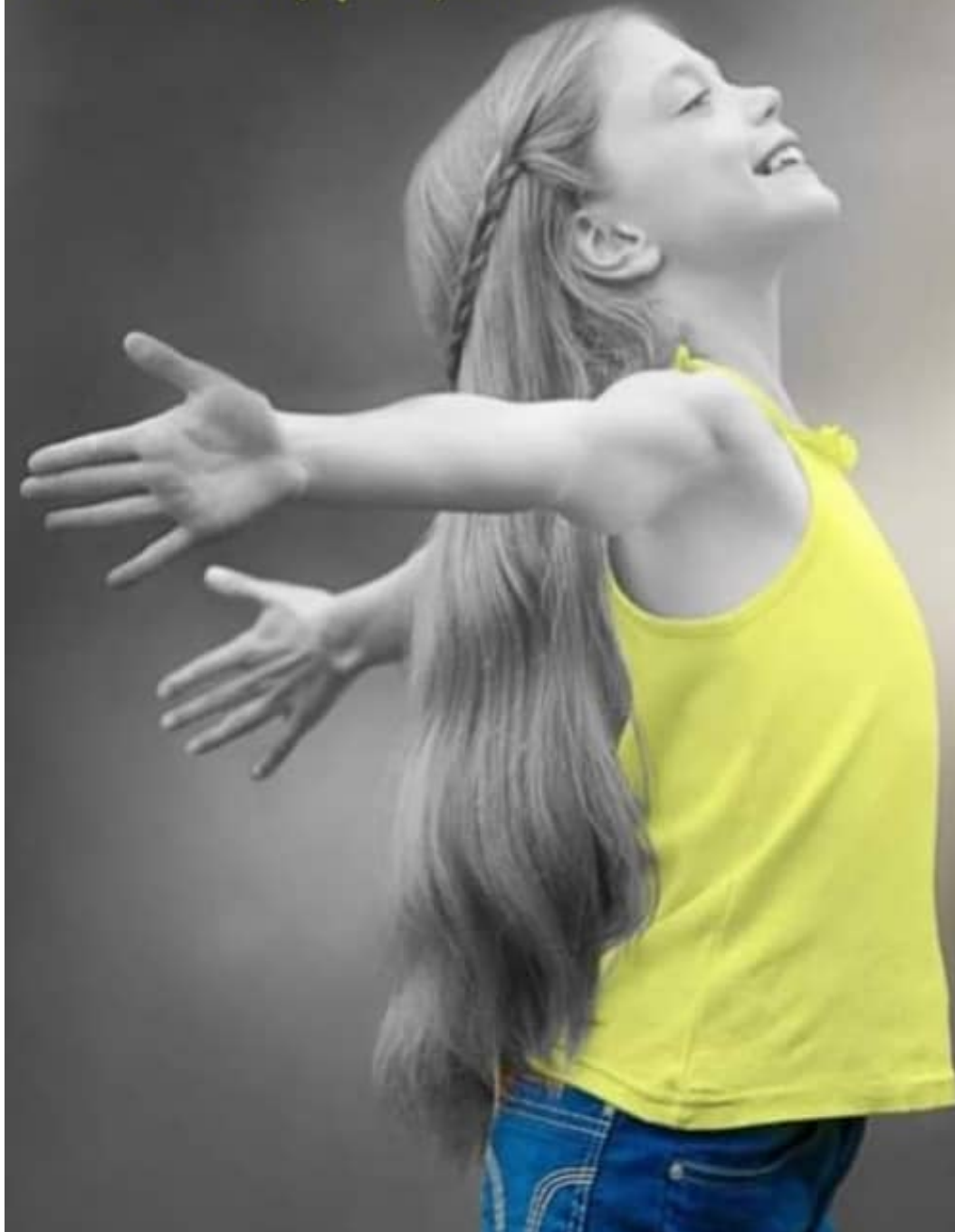
मन ही पूजा मन ही धूप



“बस प्रेम से देखो और तम पाओगे
कि हर व्यक्ति के पास केछ ऐसा है
जो किसी और के पास नहीं है।”

OSHO

ओशो कहते हैं- जो आदमी किसी अजनबी को नमस्ते
कह सकता है, वह फूल को भी नमस्ते कह सकता है,
पेड़ को भी नमस्ते कह सकता है, पक्षियों को गीत गा
सकता है। वो रोज गाते हैं और आपको इसकी ज़रा
भी चिंता नहीं हुई कि किसी दिन आपको कॉल
बैक करना चाहिए। अहोभाव



**निष्काम साधना का
अर्थ है,
परमात्मा को चाहना
उसके ही लिए,
किसी और कारण से
नहीं**

**आचार्य श्री रजनीशOsho
गीतादर्शनअ.9.प्र.9/108॥ वासना और उपासना ॥**







भारत में एक महत प्रयोग किया गया।
(प्रयोग क्या था जानो text message se)
हर प्रयोग के खतरे भी होते हैं। खतरा हुआ।
यह प्रयोग तो संभव नहीं हो सका;
समाज चार हिस्सों में बंट गया। यह प्रयोग तो टूटा;
लेकिन समाज चार शत्रुओं के हिस्सों में टूट गया।
और धीरे धीरे शूद्र व्यक्तित्व का विचार न रहा,
जाति का लक्षण हो गया।
और तब कोई आदमी ब्राह्मण पैदा हो गया,
तो चाहे वह बिलकुल शूद्र के व्यक्तित्व का हो,
तो भी सिर पर बैठ गया।
और तब कोई अगर शूद्र घर में पैदा हुआ
और अगर वह ब्राह्मण की योग्यता का था,
तो भी उसे किसी मंदिर में पूजा की जगह न मिली!



यह खतरा हुआ। हर प्रयोग का खतरा है।
वैज्ञानिकों ने अणु बम की खोज की,
तब सोचा नहीं था कि अणु बम का परिणाम
हिरोशिमा और नागासाकी होगा।



BRAHMANA 1

KSHATRIYA 2

VAISHYA 3

SHUDRA 4



आचार्य श्री रजनीश Osho

गीतादर्शन अ. 9 प्र. 13/112 क्षणभंगुरता का बोध

हर प्रयोग का खतरा है। वैज्ञानिकों ने अणु बम की खोज की, तब सोचा नहीं था कि अणु बम का परिणाम हिरोशिमा और नागासाकी होगा। तब उन्होंने सोचा था कि अणु की ऊर्जा हमारे हाथ में लग जाएगी, तो हम सारी जमीन को खुशहाल कर देंगे; कोई भूखा नहीं होगा, कोई गरीब नहीं होगा। इतनी बड़ी शक्ति हमारे हाथ में लगेगी कि हम सारे जीवन को रूपांतरित कर डालेंगे, पृथ्वी स्वर्ग हो जाएगी।

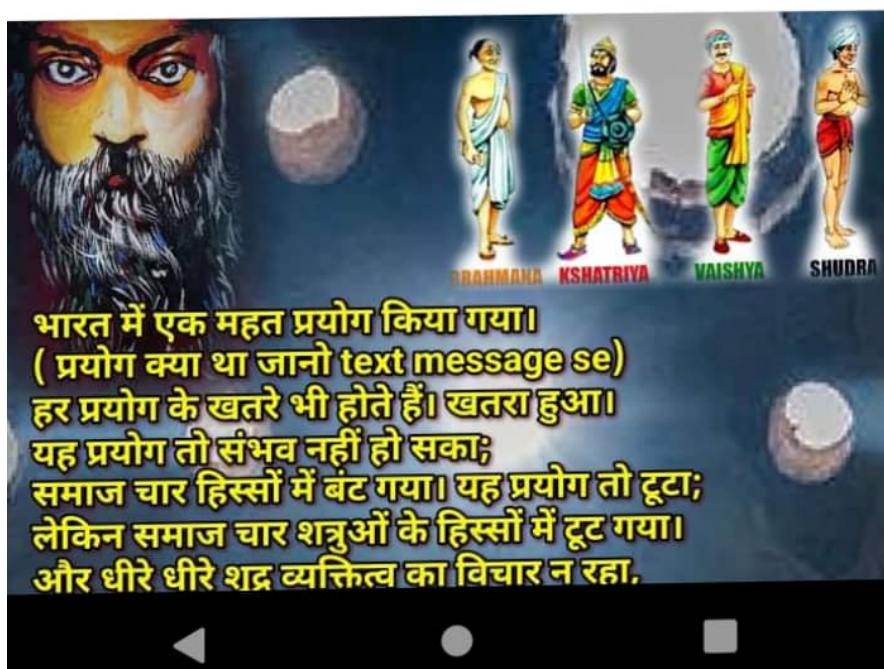
लेकिन यह नहीं हुआ। यह हो सकता था, लेकिन यह नहीं हुआ। हुआ— हिरोशिमा और नागासाकी कब्रगाह बन गए! एक लाख आदमी एक क्षण में जलकर राख हो गए। और अभी सारी दुनिया के पास अणु बम और हाइड्रोजन बम इकट्ठे हैं। किसी भी दिन पूरी दुनिया राख की जा सकती है!

आइंस्टीन मरते वक्त कहकर मरा है कि हमने सोचा भी नहीं था कि इतनी महान ऊर्जा का ऐसा महान दुरुपयोग हो सकेगा। लीनियस पालिंग ने, जो कि अणु की खोज में बड़े वैज्ञानिकों में एक था, आखिरी वक्त सारी दुनिया के वैज्ञानिकों से अपील की कि अब दुबारा कोई बड़ी शक्ति आदमी के हाथ में खोजकर मत देना! क्योंकि हम खोजते हैं पता नहीं किसलिए और आदमी उसका क्या उपयोग करता है!



आचार्य श्री रजनीशOsho

गीतादर्शनअ.9.प्र.13/112क्षणभंगुरता का बोध



यह बड़ा कठिन प्रयोग था, बहुत मुश्किल प्रयोग था। शायद भविष्य में बायोलाजी कुछ इस तरह के प्रयोग करना शुरू करे। लेकिन वे किसी दूसरे ढांचे पर होंगे। क्योंकि विज्ञान अब यह कह रहा है कि हम इस बात की कोशिश जरूर करेंगे आज नहीं कल, कि ज्यादा सुंदर लोग पैदा किए जा सकें, और निर्णायक बना जा सके कि ज्यादा सुंदर व्यक्ति पैदा हों। विज्ञान यह भी कह रहा है कि अब यह कठिनाई नहीं रही कि हम अगर पुरुष पैदा करना चाहें, तो पुरुष पैदा करें; और स्त्री पैदा करना चाहें, तो स्त्री पैदा करें। विज्ञान अब यह भी कह रहा है कि हम यह भी तय कर लेंगे कि जो बच्चा पैदा हो, उसका बुद्धि अंक, उसका आई क्यू. कितना हो, यह हम पहले तय कर लेंगे। हम यह भी तय कर लेंगे कि उसके शरीर का रंग कैसा हो, उसकी उम्र कितनी हो। हम ये सारी बात तय करेंगे।

यह तय करेंगे, तो हमें ब्रीडिंग को नियत करना पड़ेगा। फिर हर कोई, हर किसी से संबंध नहीं बना सकेगा। तब संबंध हमें सीमित करने पड़ेंगे, ताकि वे ही लोग संबंधित हों, जो नियमानुसार एक व्यक्ति को जन्म दे सकें।

ठीक वैसे ही प्रयोग भारत ने किसी और दिशा से किए थे, और समाज को चार हिस्सों में बांट दिया था। इन चार हिस्सों में बांटने का प्रयोजन यह था कि शूद्र शूद्र से ही विवाह करे, और यह पीढ़ी दर पीढ़ी ब्राह्मण ब्राह्मण से ही विवाह करे। तो पचास पीढ़ियों के गुजरने के बाद, यह दो ब्राह्मणों का जो विवाह होगा और इन ब्राह्मणों से जो गर्भ निर्मित होगा, वह निर्मित गर्भ किसी ब्राह्मण आत्मा को आकर्षित करने में ज्यादा संभव होगा, बजाय किसी और गर्भ के। यह बिलकुल वैज्ञानिक है और तर्कयुक्त है। अगर यह हो सकता है, तो यह बिलकुल तर्कयुक्त है।

यह प्रयोग एक महत प्रयोग किया गया। हर प्रयोग के खतरे भी होते हैं। खतरा हुआ। यह प्रयोग तो संभव नहीं हो सका; समाज चार हिस्सों में बंट गया। यह प्रयोग तो टूटा; लेकिन समाज चार शत्रुओं के हिस्सों में टूट गया। और धीरे-धीरे शूद्र व्यक्तित्व का विचार न रहा, जाति का लक्षण हो गया। और तब कोई आदमी ब्राह्मण पैदा हो गया, तो चाहे वह बिलकुल शूद्र के व्यक्तित्व का हो, तो भी सिर पर बैठ गया। और तब कोई अगर शूद्र घर में पैदा हुआ और अगर वह ब्राह्मण की योग्यता का था, तो भी उसे किसी मंदिर में पूजा की जगह न मिली! यह खतरा हुआ।

**Anamcara Rames**

3m · 🌐



हमने एक अनूठा प्रयोग किया था। वह प्रयोग यह था कि न केवल व्यक्ति का मन अलग— अलग है, न केवल उसकी चेतना के ढांचे' अलग— अलग हैं, क्या यह नहीं हो सकता कि प्रत्येक चेतना के ढांचे के व्यक्ति को जन्म भी इस भांति मिले कि वह जन्म से ही अपने ढांचे के अनुकूल पैदा हो सके?

एक व्यक्ति मरता है, तो उसकी आत्मा भटकती है नए जीवन की तलाश में। हर कहीं आकस्मिक जन्म नहीं होता। आत्मा खोजती है अपने अनुकूल, अपने अनुकूल गर्भ को खोजती है। और जब अपने अनुकूल गर्भ मिलता है, तो जन्म लेती है।

तो जन्म की घटना में दो घटनाएं घटती हैं, मां और पिता का गर्भ निर्माण करना और उस निर्मित गर्भ में एक चेतना का प्रवेश। वह चेतना का प्रवेश उस चेतना के अपने समस्त कर्मों का फल है। उसके अनुकूल वह खोजती है। यह खोज बहुत सचेतन नहीं है, कांशस नहीं है, अनकांशस है।

अनकाशस खोज का मतलब यह है कि जैसे हम पानी को बहाते हैं, तो वह गड्ढे को खोज लेता है। भाषा में हम कहेंगे, पानी गड्ढे को खोज लेता है। लेकिन पानी कोई सचेतन रूप से खोजता नहीं, सिर्फ स्वभाव अनुसार वह गड्ढे की तरफ बहता है, जहां नीचाई है, वहां बहता है। पानी ऊपर की तरफ नहीं बह सकता, गड्ढे की तरफ बह सकता है। इसलिए जो सबसे बड़ा गड्ढा है, वहां पहुंच जाता है। कमरे में जहां गड्ढा है, पानी पहुंच जाता है। यह खोज अचेतन है। पानी के स्वभाव से हो जाती है।

ठीक ऐसे ही, प्रत्येक आत्मा अचेतन खोज करती है। जहां उसके अनुकूल गर्भ होता है, वहीं गड्ढा बन जाता है, वहीं आत्मा प्रवेश कर जाती है। भारत ने यह कोशिश की कि क्या यह नहीं हो सकता कि शूद्र आत्माओं के लिए हम एक वर्ग ही नियत कर दें, जहां शूद्र आत्माएं पैदा हो जाएं! क्या यह नहीं हो सकता कि ब्राह्मण आत्माओं के लिए हम ब्राह्मण का एक वर्ग ही नियत कर दें, जहां ब्राह्मण आत्माएं पैदा हो जाएं!

[See all >](#)

ओशो का हिन्दी साहित्य

Rahul Kumar Ojha · 4h · 🌐



एक मित्र ने पूछा है कि चंद्रमा पर आदमी पहुंच गया, लेकिन हिंदू शास्त्रों में लिखा है कि वहां देवताओं का वास है! इसका उत्तर दीजिए।

इधर गीता चल रही है, उससे इसका कोई प्रयोजन नहीं है। इस पर अगर मैं चर्चा करने बैठ जाऊं, तो गीता बंद कर देनी पड़े। फिर चर्चा का दूसरा रुख, वह मेरी आदत नहीं है। जो मैं बात कर रहा हूं, उससे इतर बात करना मुझे पसंद नहीं है। इस तरह के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया जाता है, तो उनको लगता है कि भारी नुकसान हो गया।

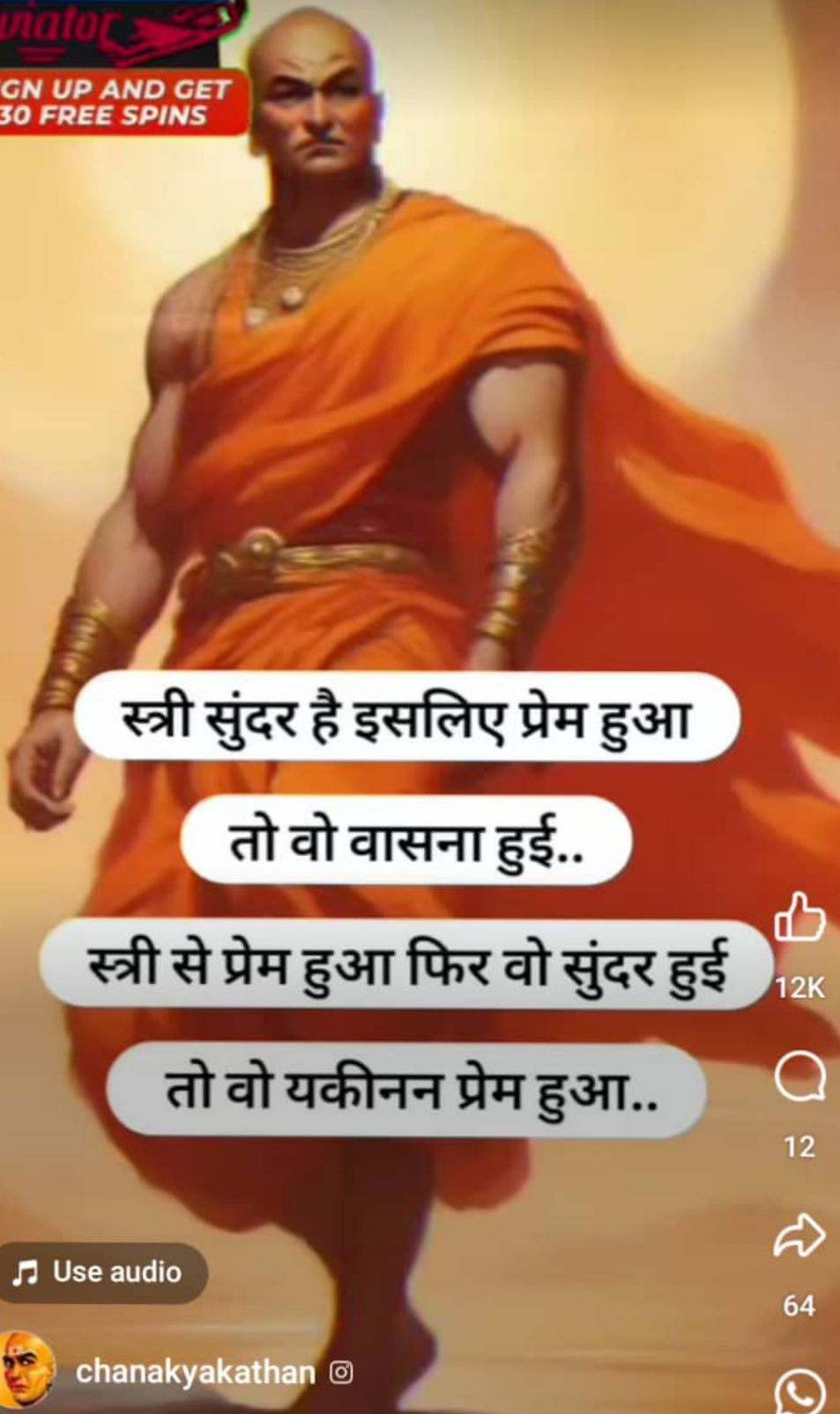
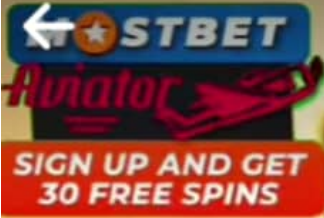
फिर मुझे यह भी समझ में नहीं पड़ता कि साधक को क्या प्रयोजन कि चांद पर देवता रहते हैं कि नहीं रहते।

आपके भीतर कौन रहता है, इसकी फिक्र करनी उचित है। चांद पर न भी रहते हों, तो कुछ हर्जा नहीं है। और रहते भी हों, तो मजे से रहें! आपको कुछ लेना-देना नहीं है। इन सब बातों का साधक के लिए कोई अर्थ नहीं होता।

मैं उतनी ही बातें आपसे कहना पसंद करता हूं, जो किसी तरह आपकी साधना के लिए उपयोगी हों। व्यर्थ की बातों में प्रयोजन मुझे नहीं है। आपका प्रश्न गलत है, यह नहीं कहता। किसी के लिए सार्थक हो सकता है; वह खोज में लगे।

ओशो ❤️🌸❤️🌸

गीतादर्शन अ.9.प्र.12



स्त्री सुंदर है इसलिए प्रेम हुआ

तो वो वासना हुई..

स्त्री से प्रेम हुआ फिर वो सुंदर हुई

तो वो यकीनन प्रेम हुआ..



12K



12



64



Send

Use audio



chanakyakathan @

अगर post अच्छी लगे तो like,comment and sh... more

angelis · Conquest of Par



संसार का अर्थ है : अतीत + भविष्य।

अतीत की तस्वीरें तुम्हें सता रही हैं , भविष्य की कल्पनाएं तुम्हें सता रही हैं। अतीत और भविष्य का जोड़ संसार है। इस संसार से मुक्त होने का एक ही उपाय है। और वह है -- वर्तमान के क्षण में जितनी समग्रता से जी सको जीओ ! उसे ही में ध्यान कहता हूं। वही समस्त बुद्धों की उपदेशनाओं का सार है। क्षण के आगे - पीछे न जाओ , क्षण काफी है। और जब क्षण बीत जाए तो रुकावट न डालो , बीत जाने दो , अलविदा दो - प्रसन्नता से , आनंद से ! ओर जो नहीं आया है उसके हिसाब - किताब मत लगाते रहो : जब आएगा , जब सामने होगा , तब प्रतिफलित होगा तुम्हारे चेतना के दर्पण में। तब उसे जी लेना। जब तक नहीं आया है तब तक योजना न बांधो। ओशो (Dr Sohan Lal Narang)

ओशो



Raj Malhotra

तुम्हारे हृदय में जो उठती है बात,
तुम्हारे जानने के पहले भी परमात्मा
तक पहुंच जाती है। क्योंकि तुम अपने
हृदय से बहुत दूर हो, परमात्मा तुम्हारे
हृदय में विराजमान है। प्रार्थना को
चिल्ला-चिल्लाकर करने की कोई बात
नहीं। कहने की बात ही नहीं है कुछ।
कहने को क्या है? परमात्मा के सामने
सिर झुकाकर बैठ जाना है। असहाय
होकर, प्यासे होकर, उसके हाथों में
अपने को छोड़ देना है.

facebook



Like

Comment

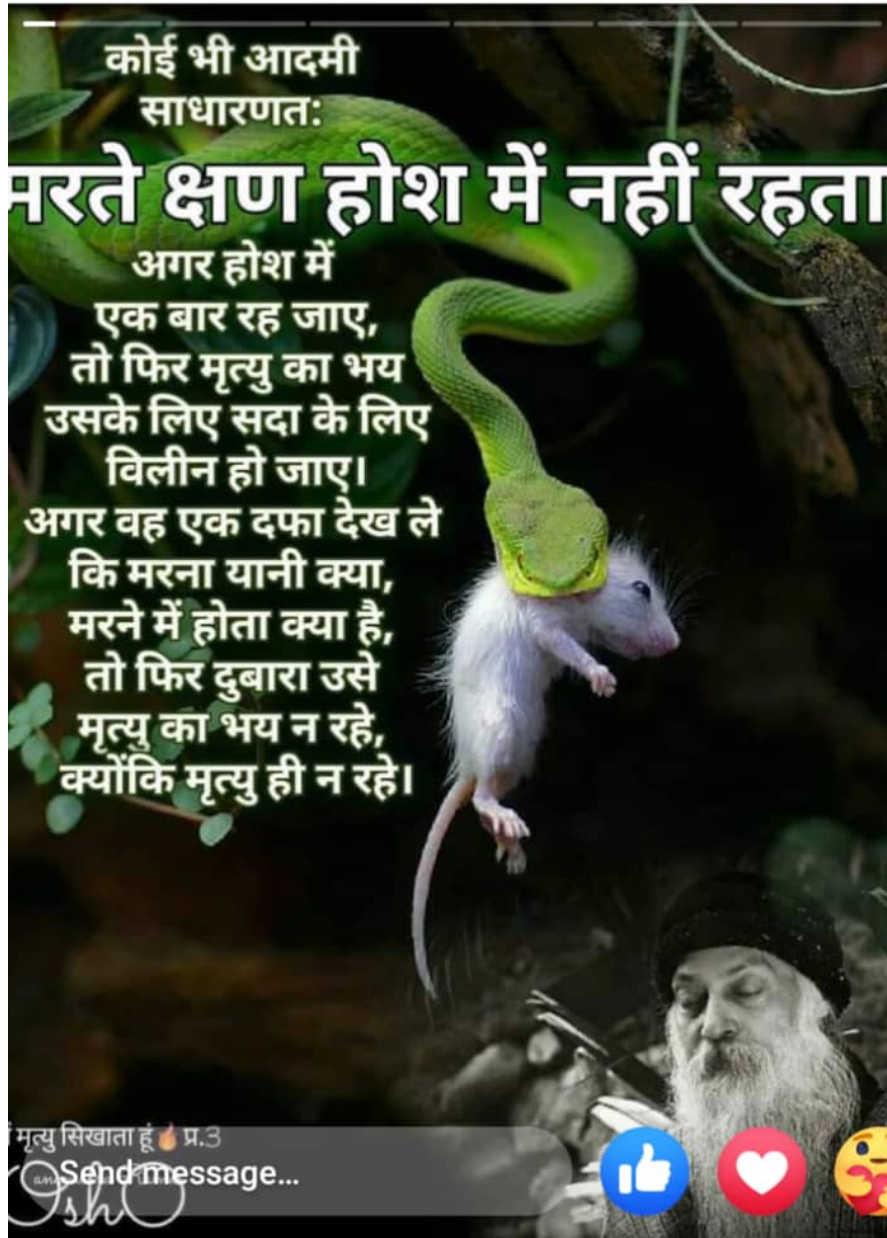
Send

Share



Anamcara Rames

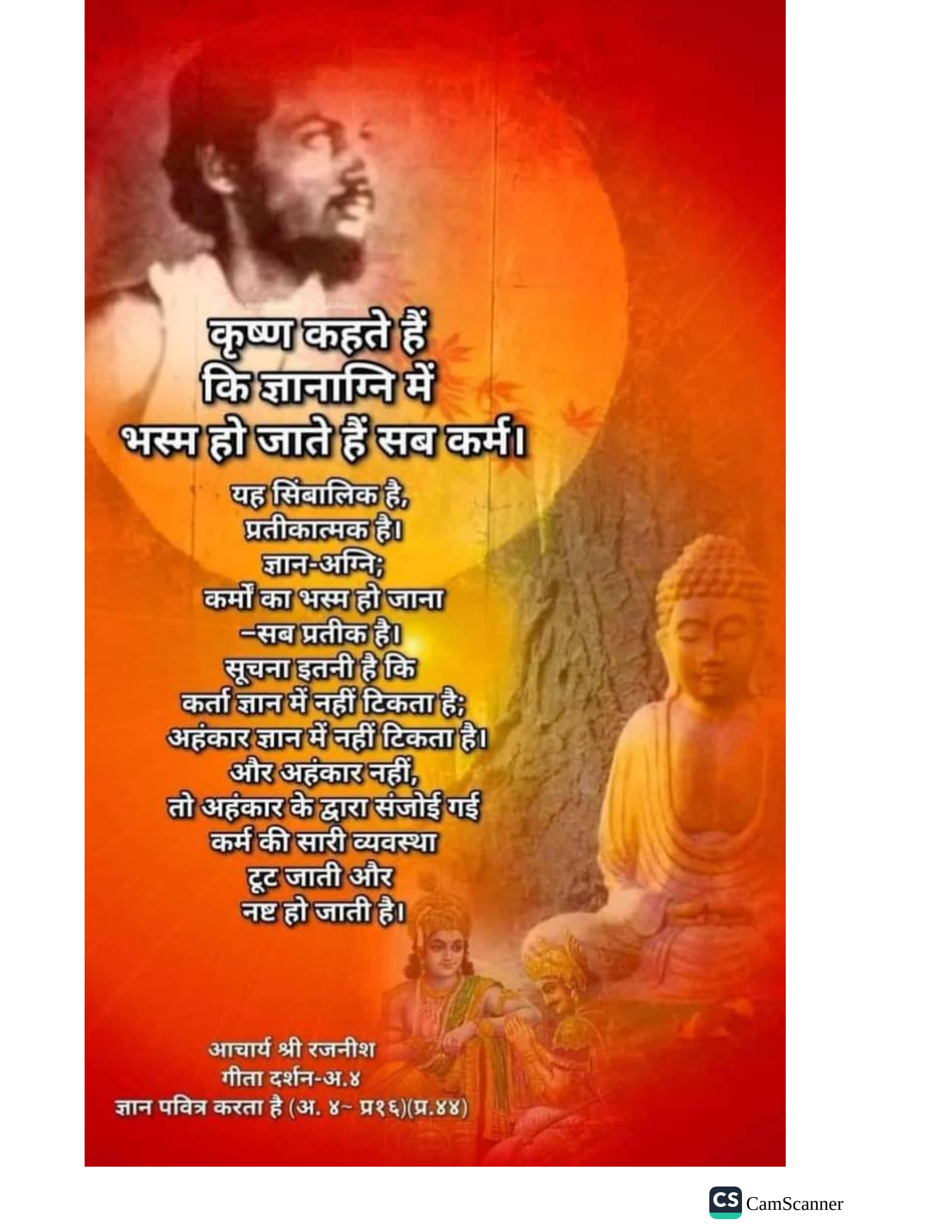
Stories • 6h •



कृष्ण प्रेम ओशो

Bihariju Kridha • Just now •





कृष्ण कहते हैं कि ज्ञानाग्नि में भस्म हो जाते हैं सब कर्म।

यह सिंबालिक है,
प्रतीकात्मक है।
ज्ञान-अग्नि;
कर्मों का भस्म हो जाना
—सब प्रतीक है।
सूचना इतनी है कि
कर्ता ज्ञान में नहीं टिकता है;
अहंकार ज्ञान में नहीं टिकता है।
और अहंकार नहीं,
तो अहंकार के द्वारा संजोई गई
कर्म की सारी व्यवस्था
टूट जाती और
नष्ट हो जाती है।

आचार्य श्री रजनीश
गीता दर्शन-अ.४
ज्ञान पवित्र करता है (अ. ४- प्र१६)(प्र.४४)



फीकी है हर चुनरी
फीका हर बंधेज

जो रंग गया रूह को
वो असली रंगरेज!!!!

तुम सोचते हो, तुम समय कांट रहे हो, तुम गलती में हो, समय तुम्हें कांट रहा है।

लोग कहते हैं, समय कांट रहे हैं। कोई ताश खेल रहा है, कोई शराब पी रहा है, कोई जुआ खेल रहा है, कोई होटल में बैठा है, कोई क्लबघर में बैठा है। उनसे पूछो, क्या कर रहे हो? वे कहते हैं, समय कांट रहे हैं।

जैसे समय जरूरत से ज्यादा है, तो कांट रहे हैं उसे, क्या करें!

यही आदमी मौत के वक्त चीखेगा—चिल्लाएगा कि और चौबीस घंटे मिल जाते, एक रात और पूर्णिमा का चांद देख लेता, एक रात और कर लेता प्रेम, एक रात और रह लेता अपने प्रियजनों के बीच, एक बार और सूरज ऊग जाता, एक वसंत और देख लेता, एक बार और देखता खिलते फूल, एक बार और सुनता गीत गाते पक्षी—पकड़ता है! अब सब जा रहा है, अब नहीं सूझता उसे कि क्या करे, पहले समय कांटता था!

तुम सोचते हो, तुम समय कांट रहे हो, तुम गलती में हो, समय तुम्हें कांट रहा है। तुम समय को क्या काटोगे?

~ ओशो : एष धम्मो सनंतनो

दूसरों के व्यवहार को,
अपने मन की शांति नष्ट करने का -
अधिकार न दे!



Reply



UPC Office himanshu Singh 2

Yesterday, 9:32 pm



VoLTE LTE 86% 9:51 am



5.2k

201 comments • 2.6k shares



Like



Comment



Share



सुविचार / Suvichar • Follow



3 d •

#goodmorning #suvichar #friday

Reply

शुरु-शुरु में उदासी लगेगी, लगने देना--पुराना अभ्यास है! शुरु-शुरु में परेशानी लगेगी, लगने देना। लेकिन एक घड़ी चौबीस घंटे में चुपचाप बैठ जाओ, न कुछ करो, न कुछ गुनो, न माला फेरो, न मंत्र जपो, न प्रार्थना करो--कुछ भी न करो, चुपचाप!

हाँ, फिर भी विचार चलेंगे, चलने दो। देखते रहना निरपेक्ष भाव से, जैसे कोई राह चलते लोगों को देखता है, कि आकाश में उड़ती बदलियों को देखता है। निष्प्रयोजन देखते रहना, तटस्थ देखते रहना--बिना किसी सभी लगाव के, बिना निर्णय के, न अच्छा, न बुरा; चुपचाप देखते रहना। गुजरने देना विचारों को; आएँ तो आएँ, न आएँ तो न आएँ। न उत्सुकता लेना आने में, न उत्सुकता लेना जाने में।

और तब धीरे-धीरे एक दिन वह घड़ी आएगी कि विचार विदा हो गए होंगे, सन्नाटा रह जाएगा!

सन्नाटा जब पहली दफा आता है तो जैसे बिजली का धक्का लगे, ऐसा रोयाँ-रोयाँ कंप जाएगा--क्योंकि तुम प्रवेश करने लगे फिर उस अंतर-अवस्था में, जहाँ गर्भ के दिनों में थे। यह गहरा झटका लगेगा--तुम्हारा संबंध टूटने लगा संसार से, तुम्हारा संबंध छिन्न-भिन्न होने लगा भीड़-भाड़ से; तुम संबंधों के पार उठने लगे--झटका तो भारी लगेगा!

जैसे हवाई जहाज उठेगा जब पहली दफा पृथ्वी से तो जोर का झटका लगेगा, ऐसा ही झटका लगेगा! घबड़ाना मत! एक बार पंख खुल गए आकाश में, एक बार उड़ चले, तो अपूर्व अनुभव है, अपूर्व आनंद है!

फिर एकांत कभी दुःख न देगा। एकांत तो क्या, फिर भीड़ भी दुःख न देगी--क्योंकि तब भीड़ में भी एकांत बना रहता है।

जिसको भीतर सधने की कला आ गई, वह बीच बाजार में खड़े होकर भी ध्यान में हो सकता है। दुकान पर बैठे-बैठे, काम करते-करते, और भीतर धुन बजती रहेगी निस-बासर! रात-दिन! नींद में भी उसकी धुन बजती रहेगी।

✨❤ओशो❤✨

॥ प्रेम रंग रस ओढ़ चदरिया ॥

॥ ✨ ॥ 🧘 ध्यान का स्वरूप 🧘 ✨ ॥

👉 हमारे मन में एक साथ असंख्य कल्पना और विचार चलते रहते हैं। इससे मन-मस्तिष्क में कोलाहल-सा बना रहता है। हम नहीं चाहते हैं फिर भी यह चलता रहता है। आप लगातार सोच-सोचकर स्वयं को कम और कमजोर करते जा रहे हैं। ध्यान अनावश्यक कल्पना व विचारों को मन से हटाकर शुद्ध और निर्मल मौन में चले जाना है।

ध्यान जैसे-जैसे गहराता है व्यक्ति साक्षी भाव में स्थित होने लगता है। उस पर किसी भी भाव, कल्पना और विचारों का क्षण मात्र भी प्रभाव नहीं पड़ता। मन और मस्तिष्क का मौन हो जाना ही ध्यान का प्राथमिक स्वरूप है। विचार, कल्पना और अतीत के सुख-दुख में जीना ध्यान विरुद्ध है।

ध्यान में इंद्रियां मन के साथ, मन बुद्धि के साथ और बुद्धि अपने स्वरूप आत्मा में लीन होने लगती है। जिन्हें साक्षी या दृष्टा भाव समझ में नहीं आता उन्हें शुरू में ध्यान का अभ्यास आंख बंद करने करना चाहिए। फिर अभ्यास बढ़ जाने पर आंखें बंद हों या खुली, साधक अपने स्वरूप के साथ ही जुड़ा रहता है और अंततः वह साक्षी भाव में स्थिति होकर किसी काम को करते हुए भी ध्यान की अवस्था में रह सकता है।

चौबीस घंटे में थोड़ा समय निकालो!

शुरु-शुरु में उदासी लगेगी, लगने देना--पुराना अभ्यास है! शुरु-शुरु में परेशानी लगेगी, लगने देना। लेकिन एक घड़ी चौबीस घंटे में चुपचाप बैठ जाओ, न कुछ करो, न कुछ गुनो, न माला फेरो, न मंत्र जपो, न प्रार्थना करो--कुछ भी न करो, चुपचाप!

हाँ, फिर भी विचार चलेंगे, चलने दो। देखते रहना निरपेक्ष भाव से, जैसे कोई राह चलते लोगों को देखता है, कि आकाश में उड़ती बदलियों को देखता है। निष्प्रयोजन देखते रहना, तटस्थ देखते रहना--बिना किसी सभी लगाव के, बिना निर्णय के, न अच्छा, न बुरा; चुपचाप देखते रहना। गुजरने देना विचारों को; आएँ तो आएँ, न आएँ तो न आएँ। न उत्सुकता लेना आने में, न उत्सुकता लेना जाने में।

और तब धीरे-धीरे एक दिन वह घड़ी आएगी कि विचार विटा हो गए

दुकान पर ही बैठे-बैठे मंदिर हो सकता है। बाजार में ही हिमालय आ सकता है। दृष्टि की बात है। मगर एक खयाल ले लो: रस तो एक ही है। उसी रस को स्मरण करो। और उस एक ही रस को सब तरफ खोजो। तब तुम पाओगे: कुछ जगह मिलता है, कुछ जगह नहीं मिलता। जहां नहीं मिलता, वह अपने आप व्यर्थ होती जाएगी जगह।
ओशो

Osho Prem Naman 🍀 🙏
[Osho international](#)



👍❤️ 223

37 comments • 3 shares

👍 Like

💬 Comment

📧 Send

➦ Share

तुमने जहां भी खोजना चाहा है, वहीं परमात्मा को खोजो। दुकान पर ग्राहक आए तो उसकी आंख में भी झांको और राम को तलाशो। और तुम चकित हो जाओगे: राम का खयाल आते ही ग्राहक से तुम्हारा संबंध बदल जाता है। अब तुम इसको लूट नहीं लेना चाहते। अब तुम इसकी सिर्फ सेवा कर देना चाहते हो। राम आया दरवाजे पर, तो लूटना कैसे चाहोगे! तुम सिर्फ सेवा कर देना चाहते हो। अगर तुम इससे दो पैसे लाभ भी लेते हो तो उससे कह देते हो कि दो पैसे लाभ ले रहा हूं, वह भी सिर्फ इसीलिए कि तुम्हारी सेवा के लिए कल भी मौजूद रहूं; और कोई कारण नहीं है। तुम कल भी आओ तो मौजूद रहूं। तो तुम से दो पैसे लाभ भी ले रहा हूं। यह दस रुपये की चीज है, इसमें दो पैसे यह लाभ है।

तुम्हारा ग्राहक से संबंध बदल जाता है। यह ग्राहक अब ग्राहक न रहा--यह 'राम जी' हो गए!

ऐसे ही तो कबीर कपड़ा बेचने जाते थे। बेचते ही रहे आखिरी तक। भक्तों ने बहुत कहा कि अब आप बेचते हैं, अच्छा नहीं लगता। हम इतने आपके सेवक हैं। आपको क्या कमी? आप कपड़ा बुनें अब इस वृद्धावस्था में और बाजार बेचने जाएं, हमें बड़ी लज्जा आती है। लोग हमसे पूछते हैं कि तुम्हारा गुरु कपड़े बेचता है!

लेकिन कबीर कहते: तुम मेरी तो सोचते हो, रामजीयों की भी तो सोचो! वे जो सदा से मेरा कपड़ा पहनने का रस लेते रहे हैं, उनका क्या होगा! वे मेरी प्रतीक्षा करते हैं। मैं जितने प्रेम से कपड़ा बुनता हूं, कौन उनके लिए बुनेगा!

कबीर जब अपने ग्राहक से भी बोलते थे तो उसे रामजी ही कह कर उदबोधित करते थे। कहते थे: राम जी, सम्हाल कर रखना, यह चदरिया बड़ी मेहनत से बुनी है। झीनी-झीनी बीनी रे चदरिया! खूब जतन से बीनी रे चदरिया! यह ऐसी चदरिया नहीं है--इसमें राम-राम जप-जप कर भरा है। इसमें ध्यान उड़ेली है। यह जिंदगी भर तुम्हारे साथ चलेगी। यह मैंने बड़े भाव से भरी है। यह तुम्हारे लिए ही बनाई है। मैं धन्यभागी कि तुम यह चादर ले जा रहे हो। राम ने पसंद की, मैं अनुगृहीत!

ऐसा कबीर का भाव था।



Osho international

5h · 🌐



दो तो हैं ही नहीं, इसलिए दो में से तो रस हो नहीं सकता। वह भ्रांति छोड़ दो। मेरा सारा शिक्षण यही है कि एक ही है। हां, उसको पाने का ठीक ढंग है और उसको खोने का भी एक ठीक ढंग है। परमात्मा को खोने का ठीक ढंग--संसार। और परमात्मा को पाने का ठीक ढंग--संन्यास। परमात्मा को खोना हो तो उलझो रहो क्षुद्र बातों में, हजार बातों में, दो कौड़ी की बातों में उलझाए रहो अपने मन को; भागे रहो--यहां से वहां, इस लोभ में उस लोभ में, इस पद, उस आकांक्षा में, अहंकार की मानो।

अगर परमात्मा से बचना है तो अहंकार सुनिश्चित तरीका है। कभी नहीं धोखा खाओगे। अगर परमात्मा से बचना है, अहंकार की सुनो और अगर परमात्मा में थोड़ा भी रस है तो समझो कि संसार में रस मिलता कहां है, किसको मिला है, कब मिला है! एक भी तो खबर नहीं है सदियों-सदियों में। इतने लंबे इतिहास में एक आदमी भी तो गवाह नहीं है कि जो कह सके: मुझे संसार में रस मिला। चाहा सभी ने, मिला किसको! चाहोगे तुम भी, गंवाओगे तुम भी--पाओगे नहीं। तो अगर सिर्फ चाहने में ही बात हो तो तुम्हारी मर्जी। लेकिन अगर पाना हो, अगर उत्सुकता पाने में हो, तो रस तो एक ही है--परमात्मा का।

तुम जब अपनी पत्नी में डूबते हो या अपने पति में डूबते हो, तब भी तुम परमात्मा का ही रस लेना चाह रहे हो। सिर्फ तुमने जरा लंबा रास्ता चुना है देह, फिर देह के भीतर मन है, और मन के भीतर आत्मा है--और आत्मा के भीतर परमात्मा छिपा है। तुम पत्नी की देह में ही उलझ गए, तो ऐसा हुआ कि छीलने चले थे प्याज की गांठ को, बस पहली ही पर्त उघाड़ पाए। पत्नी के मन तक पहुंचो--दूसरी पर्त उघड़ेगी। पत्नी की आत्मा तक पहुंचो--तीसरी पर्त उघड़ेगी। और पत्नी के भीतर भी तुम्हें परमात्मा के दर्शन होंगे, पत्नी मंदिर बन जाएगी। और जब तक पत्नी मंदिर न बन जाए और पति मंदिर न बन जाए, तब तक समझना कि प्रेम था ही नहीं, वासना ही थी।

तुमने जहां भी खोजना चाहा है, वहीं परमात्मा को खोजो। दुकान पर ग्राहक आए तो उसकी आंख में भी झांको और राम को तलाशो। और तुम चकित हो जाओगे: राम का खयाल आते ही ग्राहक से तुम्हारा संबंध

facebook



कभी उपवास करके बाजार गए? उस दिन फिर कपड़े की दूकानें नहीं दिखाई पड़तीं, सोने चांदी की दूकानें नहीं दिखाई पड़तीं, सिर्फ रेस्ट्रां, होटल! उपवास करके बाजार में जाओ, सब तरफ से भोजन की गंध आती मालूम पड़ती है, जो पहले कभी नहीं मालूम पड़ी थी। सब तरफ भोजन ही बनता हुआ दिखाई पड़ता है। वह पहले भी बन रहा था, लेकिन तब तुम भूखे न थे।

भूखे को भोजन दिखाई पड़ता है।

प्यासे को पानी दिखाई पड़ता है।

साधक को सदगुरु दिखाई पड़ जाता है।

ओशो:पिव पिव लागी प्यास (दादू), प्रवचन 2

अगर प्यास न हो, धर्म की बात ही छोड़ दो। अभी धर्म का क्षण नहीं आया। अभी थोड़े और भटको। अभी थोड़ा और दुख पाओ। अभी दुख को तुम्हें मांजने दो। अभी दुख तुम्हें और निखारेगा। अभी जल्दी मत करो। अभी बाजार में ही रहो। अभी मंदिर की तरफ पीठ रखो। क्योंकि जब तक तुम ठीक से पीड़ा से न भर जाओ, लाख बार मंदिर आओ, आना न हो पाएगा। हर बार खाली हाथ आओगे, खाली हाथ लौट जाओगे।

मंदिर तो उसी दिन आओगे, जिस दिन बाजार की तरफ पीठ ही हो जाए। तुम जान ही लो कि सब व्यर्थ है। उस दिन तुम बाजार में बैठे-बैठे पाओगे, मंदिर ने तुम्हें घेर लिया। उस दिन तुम्हें गुरु खोजने न जाना पड़ेगा, वह तुम्हारे द्वार पर आकर दस्तक देगा। अपनी प्यास को परख लो।

मगर बड़ा मजा है, लोग प्यास का सवाल ही नहीं उठाते; पूछते हैं, सदगुरु की परीक्षा क्या? तुम अपनी परीक्षा कर लो। तुम तक तुम्हारी परीक्षा काफी है; उससे आगे मत जाओ। तुम्हें प्रयोजन भी क्या है सदगुरु से? तुम अपनी प्यास को पहचान लो। अगर प्यास है, तो तुम जल की खोज कर लोगे--करनी ही पड़ेगी मरुस्थल में भी आदमी जल खोज लेता है, प्यास होनी चाहिए।

और प्यास न हो, तो सरोवर के किनारे बैठा रहता है। जल दिखाई ही नहीं पड़ता। जल के होने से थोड़े ही जल दिखाई पड़ता है! भीतर की प्यास होने से दिखाई पड़ता है।

कभी उपवास करके बाजार गए? उस दिन फिर कपड़े की दूकानें नहीं दिखाई पड़तीं, सोने चांदी की दूकानें नहीं दिखाई पड़तीं, सिर्फ रेस्ट्रॉ, होटल! उपवास करके बाजार में जाओ, सब तरफ से भोजन की गंध आती मालूम पड़ती है, जो पहले कभी नहीं मालूम पड़ी थी। सब तरफ भोजन ही बनता हुआ दिखाई पड़ता है। वह पहले भी बन रहा था, लेकिन तब तुम भूखे न थे।

भूखे को भोजन दिखाई पड़ता है।

प्यासे को पानी दिखाई पड़ता है।

महावीर जब मौजूद थे, तब तुम्हारे पास कृष्ण की परिभाषा थी। महावीर बिलकुल बैठे न उस परिभाषा में। हिंदू-शास्त्रों ने महावीर का उल्लेख ही नहीं किया। इतना महिमावान पुरुष पैदा हुआ और इस देश का बड़े से बड़ा धर्म, इस देश की बहुसंख्या के शास्त्र उसका उल्लेख भी नहीं करते। क्या बात हो गई होगी? एक बार महावीर का नाम नहीं लेते। पक्ष की तो छोड़ दो, विपक्ष में भी कुछ नहीं कहते। प्रशंसा न करो, कम से कम निंदा तो करते!

नहीं, उतना भी ध्यान न दिया। परिभाषा में ही न बैठा यह आदमी। परमात्मा की परिभाषा उनकी और थी। उन्होंने देखा था कृष्ण को मोरमुकुट बांधे, यह आदमी नग्न खड़ा था। इससे कहीं मेल नहीं बैठता था। उन्होंने कृष्ण को देखा था बांसुरी बजाते। इस आदमी की अगर कोई बांसुरी थी, तो इतनी अदृश्य थी, कि किसी को दिखाई नहीं पड़ी। यह इस आदमी के पास कोई बांसुरी ही न थी, यह आदमी उनकी भाषा में कहीं आया नहीं। सब पुराने संकेतों, कसौटियों का कसा नहीं जा सका। तब महावीर चूक गए।

महावीर को जिन थोड़े से लोगों ने समझा, जिनकी प्यास थी, जिन्होंने पहचाना, जो बिना परिभाषा के पहचानने को राजी थे, वे वे ही लोग थे, जिनकी प्यास थी। अब वे दूसरी परिभाषा बना गए। अब उनके अनुयायी उस परिभाषा को ढो रहे हैं। अब बहुत अड़चन है। अगर वे मुझे बैठे इस कुर्सी पर देख लें, अड़चन है। महावीर कुर्सी पर कभी बैठे नहीं। यह आदमी गलत है। कपड़ा पहने देख लें, मुश्किल। क्योंकि महावीर तो नग्न थे। दिगंबरत्व तो लक्षण है।

अभी तो मुझे वे ही लोग पहचान सकते हैं, जिनकी प्यास है। और खतरा उनके साथ भी यही रहेगा, कि मेरे जाने के बाद वे कोई परिभाषा बना लेंगे, जो दूसरों को उलझाएगी क्योंकि फिर दुबारा कोई आता नहीं।

मेरी बात ठीक से समझ लो। जब तक तुम परिभाषा बनाते हो, आदमी चला जाता है। जब तुम्हारी परिभाषा बनकर तैयार हो जाती है, बिलकुल सुनिश्चित हो जाती है, तब दुबारा वैसा आदमी पैदा नहीं होता। धर्म की सारी विडंबना यही है। इसलिए तुम कृपा करो, परिभाषाएं मत पूछो। प्यास पूछो। अपनी प्यास टटोलो।

अगर प्यास न हो, धर्म की बात ही छोड़ दो। अभी धर्म का क्षण नहीं

जब तुम ऐसी उत्कंठा से भरते हो, तब गुरु को पहचानना न पड़ेगा। गुरु के पैरों की आवाज सुनकर तुम्हारे हृदय के घूँघर बज उठेंगे। गुरु की आंख में आंख पड़ते ही सदा के बंद द्वार खुल जाएंगे। गुरु का स्पर्श तुम्हें नचा देगा। उसका एक शब्द--और तुम्हारे भीतर ऐसी ओंकार की ध्वनि गूँजने लगेगी, जो तुमने कभी नहीं जानी थी। तुम एक नई पुलक, एक नए संगीत और नए जीवन से आपूरित हो उठोगे।

नहीं, कोई पहचानने की जरूरत न पड़ेगी। तुम पूछोगे नहीं। और सारी दुनिया भी कहती हो, कि यह आदमी सतगुरु नहीं तो भी कोई तुम्हें फर्क नहीं पड़ेगा तुम्हारे हृदय ने जान लिया। और हृदय की पहचान ही एकमात्र पहचान है।

इसलिए पहले तुम खोज कर लो, कि साधक हो? वहीं भूल हो गई, तो फिर मैं तुम्हें सारा शास्त्र भी बता दूँ, कि इस-इस भांति पहचानना गुरु को, कुछ काम न आएगा।

क्योंकि जितने गुरु हैं उतने ही प्रकार के हैं। कोई परिभाषा काम नहीं आ सकती। महावीर अपने ढंग के हैं, बुद्ध अपने ढंग के, कृष्ण अपने ढंग के, क्राइस्ट अपने ढंग के, मुहम्मद की बात ही और है। सब अनूठे हैं। अगर तुमने कोई परिभाषा बनाई तो वह किसी एक ही गुरु के आधार पर बनेगी। और वैसा गुरु दुबारा पैदा होने वाला नहीं है। इसलिए तुम्हारी परिभाषा में कभी कोई गुरु बैठेगा नहीं।

जो गुरु पैदा होंगे, वे तुम्हारी परिभाषा में न बैठेंगे। और जिसकी तुम परिभाषा लेकर चल रहे हो, वह दुबारा पैदा नहीं होता। कहीं दुबारा बुद्ध होते हैं! कहीं दुबारा महावीर होते हैं! नाटक करना एक बात है, दुबारा महावीर होना तो बहुत मुश्किल है। अभिनय और बात है। रामलीला की बात मत उठाओ, राम होना बहुत मुश्किल है।

अगर तुमने किसी की परिभाषा पकड़ ली, तो तुम मुश्किल में पड़ोगे क्योंकि उस परिभाषा को पूरा करने वाला दुबारा न आएगा। वह आ चुका और जा चुका। और जब वह आया था, तब तुम पहचान न सके क्योंकि तब तुम कोई दूसरी पुरानी परिभाषा लिए बैठे थे।

महावीर जब मौजूद थे, तब तुम्हारे पास कृष्ण की परिभाषा थी। महावीर बिलकुल बैठे न उस परिभाषा में। हिंदू-शास्त्रों ने महावीर का उल्लेख ही

अगर साधक हो, तो जैसे ही गुरु मिलेगा, प्राण जुड़ जाएंगे; तार मिल जाएगा। कोई बताने की जरूरत न पड़ेगी। अगर उजाला आ जाए, तो क्या कोई तुम्हें बताने आएगा, तब तुम पहचानोगे कि यह अंधेरा नहीं, उजाला है? अंधे की आंख खुल जाए, तो क्या अंधे को दूसरों को बताना पड़ेगा, कि अब तेरी आंख खुल गई, अब तू देख सकता है देख। आंख खुल गई, कि अंधा देखने लगता है। रोशनी आ गई कि पहचान ली जाती है, स्वतः प्रमाण है।

सद्गुरु का मिलन भी स्वतः प्रमाण है। नहीं तो आखिर में तुम सवाल पूछोगे, कि जब परमात्मा मिलेगा तो कैसे प्रत्यभिज्ञा होगी, कैसे पहचानेंगे कि यही परमात्मा है? कोई जरूरत ही नहीं है।

जब तुम्हारे सिर में दर्द होता है, तब तुम पहचान लेते हो दर्द। और जब दर्द चला जाता है तब भी तुम पहचान लेते हो, कि अब सब ठीक हो गया--स्वस्थ। दोनों तुम पहचान लेते हो। जब प्राणों में पीड़ा होती है, तब भी तुम पहचान लेते हो; जब प्राण तृप्त हो जाते हैं, तब भी पहचान लेते हो।

नहीं, कोई प्रत्यभिज्ञा का शास्त्र नहीं है। जरूरत ही नहीं है। लेकिन भूल पहली जगह हो जाती है। लोभ के कारण बहुत लोग साधना में प्रविष्ट हो जाते हैं। और अगर लोभ के कारण प्रविष्ट न हों, तो भय के कारण प्रविष्ट हो जाते हैं। वह एक ही बात है। लोभ और भय एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। कोई इसलिए परमात्मा की प्रार्थना कर रहा है कि डर हुआ है, भयभीत है। कोई इसलिए प्रार्थना कर रहा है कि लोभातुर है। पर दोनों एक ही सिक्के के पहलू हैं। दोनों में कोई भी साधक नहीं है। साधक का तो अर्थ ही यह है, कि जीवन के अनुभव से जाना, कि जीवन व्यर्थ है। जीवन से गुजरकर पहचाना, कि कोई सार नहीं है। हाथ सिवाय राख लगी कुछ भी न लगा। सब जीवन के अनुभव देख लिए और खाली पाए; पानी के बबूले सिद्ध हुए। जब सारा जीवन राख हो जाता है, जो भी तुम चाह सकते थे, जो भी तुम मांग सकते थे, जो भी तुम्हारी वासना थी, सब व्यर्थ हो जाती है, सब इंद्रधनुष टूट जाते हैं, खंडहर रह जाता है जीवन का--उस अनुभूति के क्षण में खोज शुरू होती है, कि फिर सत्य क्या है? सब जीवन तो सपना हो गया। न केवल सपना, बल्कि दुख-सपना हो गया; अब सत्य क्या है?

जब तब तेरी जगह से भगने हो तब गुरु को पहचानना न पड़ेगा। गुरु

शास्त्र की परिभाषाओं के अनुसार समझ लिया कि पानी होगा, तो हमेशा संदेह बना रहेगा। क्योंकि अपने भीतर तो कोई भी प्रमाण नहीं है। तुम्हारा कोई संसर्ग तो हुआ नहीं जल से। जलधार से तुम्हारे प्राण तो जुड़े नहीं। तुम तो दूर से ही दूर बने रहे हो। और तुम पानी पी भी लो बिना प्यास के और ठीक असली पानी हो, तो भी तो आनंद उपलब्ध न होगा। उलटा भी हो सकता है। कि वमन की इच्छा हो जाए, उलटी हो जाए।

प्यास न हो, तो पानी पीना खतरनाक है। भूख न हो, तो भोजन कर लेना मंहगा पड़ सकता है। सत्य को चाहा ही न हो, तो सदगुरु का मिलना खतरनाक हो सकता है।

सौ में से निन्यानवे लोग तो लोभ के कारण उत्सुक हो जाते हैं। उपनिषद् गीत गाते हैं। दादू, कबीर उस परम आनंद की चर्चा करते हैं। सदियों-सदियों में मीरा और नानक, चैतन्य नाचे हैं। उनका नाच तुम्हें छू जाता है। उनके गीत की भनक तुम्हारे कान में पड़ जाती है। उन्हें देखकर तुम्हारा हृदय लोलुप हो उठता है। तुम भी ऐसे होना चाहोगे।

बुद्ध के पास जाकर किसका मन नहीं हो उठता, कि ऐसी शांति हमें भी मिले! लेकिन उतनी अशांति तुमने जानी है, जो बुद्ध ने जानी? वही अशांति तो तुम्हारी शांति का द्वार बनेगी। तुमने उस पीड़ा को झेला है, जो बुद्ध ने झेली? तुम उस मार्ग से गुजरे हो--कंटकाकीर्ण--जिससे बुद्ध गुजरे? तो मंजिल पर आकर जो वे नाच रहे हैं, वह उस मार्ग के सारे के सारे दुख अनुभव के कारण।

तुम सीधे मंजिल पर पहुंच जाते हो; मार्ग का तुम्हें कोई पता नहीं। मंजिल भी मिल जाए, तो मिली हुई नहीं मालूम पड़ती। और संदेह तो बना ही रहेगा।

इसलिए यह तो पूछो ही मत, कि सदगुरु मिल गए, इसकी साधक को प्रत्यभिज्ञा कैसे हो, पहचान कैसे हो? सदगुरु की फिक्र छोड़ो। पहली फिक्र यह कर लो, कि साधक हो? पहले तो इसकी ही प्रत्यभिज्ञा कर लो, कि साधक हो?

अगर साधक हो, तो जैसे ही गुरु मिलेगा, प्राण जुड़ जाएंगे; तार मिल जाएगा। कोई बताने की जरूरत न पड़ेगी। अगर उजाला आ जाए, तो

प्रश्न: सदगुरु मिल गए। साधक को इसकी प्रत्यभिज्ञा, पहचान कैसे हो?

साधक हो, तो क्षणभर की देर नहीं लगती। साधक ही न हो, तो प्रत्यभिज्ञा का कोई उपाय नहीं। प्यासा हो, तो पानी मिल गया--क्या इसे किसी और से पूछने जाना पड़ेगा? प्यास ही प्रत्यभिज्ञा बन जाएगी। कंठ की तृप्ति ही प्रमाण हो जाएगी।

लेकिन प्यास ही न हो, जल का सरोवर भरा रहे और तुम्हारे कंठ ने प्यास न जानी हो, तो जल की पहचान न हो सकेगी। पानी तो प्यास से पहचाना जाता है, शास्त्रों में लिखी परिभाषाओं से नहीं।

अगर साधक है कोई--साधक का अर्थ क्या है? साधक का अर्थ है कि खोजी है, आकांक्षी है, अभीप्सा से भरा है। साधक का अर्थ है, कि प्यासा है सत्य के लिए।

सौ साधकों में निन्यानवे साधक होते नहीं, फिर भी साधन की दुनिया में उतर जाते हैं। इससे सारी उलझन खड़ी होती है।

तुम्हें प्यास न लगी हो और किसी दूसरे ने जिसने प्यास को जानी है, प्यास की पीड़ा जानी है और फिर जल के पीने की तृप्ति जानी है, तुमसे अपनी तृप्ति की बात कही: बात-बात में तुम प्रभावित हो गए। तुम्हारे मन में भी लोभ जगा। तुमने भी सोचा, कि ऐसा आनंद हमें भी मिले, ऐसी तृप्ति हमें भी मिले। तुम यह भूल ही गए, कि बिना प्यास के तृप्ति का कोई आनंद संभव नहीं है।

उस आदमी ने जो तृप्ति जानी है, वह प्यास की पीड़ा के कारण जानी है। जितनी गहरी होती है पीड़ा, उतनी ही गहरी होती है तृप्ति। जितनी छिछली होती है पीड़ा, उतनी ही छिछली होती है तृप्ति। और पीड़ा हो ही न, और तुम लोभ के कारण निकल गए पानी पीने, तो प्यास तो है ही नहीं। पहचानोगे कैसे, कि पानी हैं?

शास्त्र की परिभाषाओं के अनुसार समझ लिया कि पानी होगा, तो हमेशा संदेह बना रहेगा। क्योंकि अपने भीतर तो कोई भी प्रमाण नहीं है। तुम्हारा कोई संसर्ग तो हुआ नहीं जल से। जलधार से तुम्हारे प्राण तो जुड़े नहीं। तुम तो दूर से ही दूर बने रहे हो। और तुम पानी पी भी लो

काश वू में हिम्मत होती उन द्वारों में झांकने की, तो वह पाता महाशून्य। और उस महाशून्य में पाता ज्योतिर्मय परमात्मा को। लेकिन वह न देख सका, वह लौट पड़ा। उसने कहा: यह आदमी अशिष्ट है और इसे राज-दरबारों के नियमों का कोई पता नहीं। चूक गया अवसर।

धर्म का संबंध कृत्य से नहीं है--शून्य से है--परम शून्य के भाव से है। इसलिए करने से कोई धार्मिक नहीं होता। तुम क्या करते हो, इससे धार्मिक नहीं होते--तुम क्या हो! तुम अगर शून्य हो तो धार्मिक हो। यही बात है इस वचन में: निर्बल के बल राम। निर्बल से अर्थ है: शून्य हो जाओ, तो पूर्ण उतरेगा। जहां शून्य है वहां पूर्ण उतरता ही है। शून्य यानी तुम और पूर्ण यानी परमात्मा।
ओशो

Osho Prem Naman  
[Osho international](#)

बोधिधर्म ने कहा: हां, इसमें पुण्य कुछ भी नहीं, धर्म कुछ भी नहीं। कृत्य में धर्म कैसा! क्योंकि कृत्य में तो करने वाला आ गया। कृत्य में तो अहंकार आ गया। यह तो अहंकार की ही सजावट चल रही है।

वू थोड़ा नाराज हुआ। उसने प्रश्न बदल दिया, उसने विषय बदला, क्योंकि और लोग भी खड़े थे, और यह आदमी कुछ अजीब सा मालूम पड़ता है! सम्राटों से इस तरह नहीं बोला जाता। मगर उसे पता नहीं कि बोधिधर्म जिस चित्त की दशा में है, वह बुद्ध की दशा है; वह ठीक वहीं हैं जहां बुद्ध हैं। वे कुछ औपचारिक बातें नहीं बोलेंगे।

सम्राट वू ने विषय बदला, ताकि बात जरा फजीहत की न हो जाए। उसने कहा: फिर धर्म की पवित्रता के संबंध में कुछ कहें। बोधिधर्म हंसा। उसने कहा कि धर्म और पवित्रता का क्या संबंध! धर्म यानी शून्यता। पवित्रता? पवित्रता का क्या संबंध धर्म से? पवित्रता--फिर वही अहंकार। पवित्रता-अपवित्रता, पाप-पुण्य--नाम ही बदलते हो, बात वही करते हो। नीति-अनीति, अच्छा-बुरा...धर्म का अच्छे-बुरे से कोई संबंध नहीं। धर्म का संबंध है शून्य-भाव से--न अच्छा न बुरा, न कुछ पवित्र न कुछ अपवित्र। मैं का अभाव--धर्म।

तब तो जरा सम्राट वू भी नाराज हो गया। उसने कहा: फिर आप कौन हैं? अगर धर्म शून्य है, तो आप कौन हैं? यह जो मेरे सामने खड़ा बात कर रहा है, यह कौन है?

बोधिधर्म हंसा और उसने कहा: मुझे पता नहीं। यह बड़ा अपूर्व उत्तर है। उसने कहा: मुझे पता नहीं। पता भी हो तो मैं हो जाऊं। मुझे कुछ पता नहीं। आप देख लो, यह कौन खड़ा है सामने! आप झांक लो, यह कौन खड़ा है सामने! मैं खुला हूं, मेरे द्वार खुले हैं; लेकिन मैं कौन हूं, यह तो मुझे ही पता नहीं। यह तो किसी को भी पता नहीं है।

वू यह पूछ रहा था, नाराजगी में पूछ रहा था, कि आप कौन हैं महाशय, जो इस तरह के कठोर उत्तर दिए चले जा रहे हैं? आप हैं कौन?

और बोधिधर्म कहता है, मुझे पता नहीं। मैं कौन हूं, तुम देख लो। मेरे द्वार खुले हैं।

काश वू में हिम्मत होती उन द्वारों में झांकने की, तो वह पाता महाशून्य।

**RAJNEESHPURAM**

Osho international · 12h · 🌐

जब बोधिधर्म चीन पहुंचा और सम्राट वू ने उससे कहा कि मैंने हजारों मंदिर बनवाए और लाखों बुद्ध की मूर्तियां गड़वाई और मैं सैकड़ों बौद्ध भिक्षुओं को भोजन कराता हूं और मैंने सैकड़ों बौद्ध शास्त्रों का अनुवाद करवाया है, मैंने अपना सारा खजाना धर्म की सेवा में लगा दिया है--मुझे इससे क्या लाभ होगा? इसका क्या पुण्य होगा?

जो और भिक्षु गए थे भारत से इसके पहले, उन सबने उसकी खूब प्रशंसा की थी कि सम्राट वू, आप चक्रवर्ती हैं! आप जैसा धर्म-राजा कभी नहीं हुआ! आप राजाओं में भी महाराजा हैं! आपकी कीर्ति सदा रहेगी। आपका पुण्य बड़ा है। स्वर्ग में आपके लिए स्वर्ण-महल बनाए जा रहे हैं। आपकी प्रतीक्षा की जा रही है। आप सातवें स्वर्ग जाओगे। ऐसी-ऐसी बातें उन्होंने कही थीं। वू बहुत प्रसन्न हुआ था। और वू ने और भी ज्यादा मंदिर बनवाए, और भी भिक्षुओं को भोजन करवाया, और भी शास्त्रों के अनुवाद करवाए, और भी लोगों को बौद्ध धर्म में दीक्षित करवाया। सम्राट वू ने चीन को बौद्ध बनाया।

लेकिन यह बोधिधर्म आया। यह कुछ और ढंग का आदमी था। यह असली आदमी था। ऐसे असली आदमियों के सामने खड़े होने में भी प्राण कंप जाते हैं।

जब बोधिधर्म से पूछा वू ने, जो उसने हमेशा पूछा था और प्रशंसित होकर आनंदित होता था, जब उसने पूछा क्या होगा इसका पुण्य--बोधिधर्म ने उसे ऐसे क्रोध से देखा, बोधिधर्म ने उसकी आंखों में इस तरह भयंकरता से देखा कि जैसे कोई सिंह खड़ा हो और खा जाने को तत्पर हो। उसने कहा कि पुण्य! कैसा पुण्य? नरक में न पड़ो तो बहुत!

नरक में न पड़ो तो बहुत। वू ने कहा: महाराज, आप कहते क्या हैं? वह तो जैसे एक नींद से जागा। अब तक तो किसी ने यह बात नहीं कही थी। उसने कहा: आप कहते क्या हैं? मैंने इतने धर्म के कृत्य किए और मैं नरक में न पड़ूं तो बस...!

आध्यात्मिकता की ओर एक कदम.

गठरी
बाँध बैठा है
अनाड़ी ,
पर जो...साथ
ले जाना था
वो तो कमाया ही नहीं



यह पृथ्वी एक बड़ा पागलखाना है!
इसमें से जागो, इसमें से अगर नहीं जागे !
तो बार-बार मौत आएगी, और तुम बार बार
इस पागलखाने में फेंक दिए जाओगे.!

ओशो

उलझतीं फड़फड़तीं प्राण
पंछी की तरुण पांखें।
लुटाता फूल सौरभ सा
तुम्हें मधु-वात ले आया,
गगन की दूधिया गंगा
लिए ज्यों शशि उतर आया
ढहे मन के महल में भर
गई किस स्वप्न की माया
ठहर जाओ घड़ी-भर और
तुम को देख लें आंखें!
मुझे लगता तुम्हारे सामने
मैं सत्य बन जाता,
न मेरी पूर्णता को देवता
कोई पहुंच पाता,
मुझे चिर प्यास वह अमरत्व
जिसे जगमगा जाता,
ठहर जाओ, घड़ी भर और
तुमको देख लें आंखें!

धीरे-धीरे पुकार उठेगी, प्यास उठेगी, प्रार्थना जगेगी। और जो क्षण-भर को होता है, देर-देर तक टिकने लगेगा। उस प्यारे के साथ संबंध गहन होने लगेगा। और आज नहीं कल, कल नहीं परसों...। प्रतीक्षा और धैर्य--बस इतना ही चाहिए साधक को। घटना निश्चित ही घटती है। और एक दिन ऐसा आ जाता है कि वह प्रीतम सदा को तुम्हारे भीतर ठहर जाता है। द्वारे खुले, फिर बंद नहीं होते। उसी घड़ी निर्वाण की चदरिया तुम्हारे ऊपर पड़ गई चुनरी ओढ़ ली!

निरगुन चुनरी निर्बान, कोउ ओढ़ै संत सुजान!
स्मरण रखो, इस चुनरी की तलाश करनी है। इस चुनरी को बिना लिये इस जगत से मत जाना। क्योंकि इस चुनरी को बिना लिए जो जाता है, वह अकारथ आया, अकारथ गया। यह चुनरी मिलनी ही चाहिए। यह हमारा अधिकार है, इसी की खोज के लिए हम आए हैं। इस खोज को पूरा करना है। जगाओ इस संकल्प को, इस खोज को पूरा करना है। प्राणों को भरो इस संकल्प से--इस खोज को पूरा करना है। और यह खोज पूरी हो जाती है एक छोटे से सूत्र से। उस सूत्र का नाम प्रेम है।

**Naye bharat ke khoj**

6h · 🌐



एक बार तुम्हें भीतर की झलक आने लगे, फिर तुम बाजार में रहोगे, दुकान भी करोगे...करनी ही है, कहीं भागना नहीं है। सब भगोड़े हो जाएंगे तो जगत बहुत बेरौनक हो जाएगा। सब वैसा ही करना है जैसे करते थे लेकिन अब एक याद तुम्हारे भीतर आनी शुरू हो जाएगी। झलक को धीरे-धीरे तुम पकड़ोगे, टिकाओगे। अपने को योग्य बनाओगे कि थोड़ी और टिके, थोड़ी और टिके।

ठहर जाओ, घड़ी भर और
तुमको देख लें आंखें!
अभी कुछ देर मेरे कान--
में स्वर गूंजे तुम्हारा
बहे प्रतिरोम से मेरे
सरस उल्लास का निर्झर
बुझा दिल का दीया शायद
किरण सा खिल उठे जलकर,
ठहर जाओ, घड़ी भर और
तुमको देख लें आंखें!
तुम्हारे रूप का सित आवरण
कितना मुझे शीतल
तुम्हारे कंठ की मधु-बंसरी
जलधारा सी चंचल
तुम्हारे चितवनों की छांह
मेरी आत्मा उज्ज्वल,
उलझतीं फड़फड़तीं प्राण
पंछी की तरुण पांखें।
लुटाता फूल सौरभ सा
तुम्हें मधु-वात ले आया,
गगन की दूधिया गंगा
लिए ज्यों शशि उतर आया
ढहे मन के महल में भर
गई किस स्वप्न की माया
ठहर जाओ घड़ी-भर और
तुम को देख लें आंखें!
मझे लगता तुम्हारे सामने





 Osho Universal / Dhawal Parmar

जरा सी किरकिरी आंख में पड़
जाती है, पहाड़ ओझल हो जाते हैं।
ऐसी जरा सी ही किरकिरी है
अहंकार की, पर उसी की आड़ में,
उसी की ओट में सब कुछ
छिप गया है।

जीवन के आंतरिक नियम भी हैं।
जब तक हम क्षणभंगुर के
घेरे में ही सब कुछ खोजेंगे,
शाश्वत को खोजेंगे,
तब तक हम क्षणभंगुर से खिंचते रहेंगे,
टूटते रहेंगे, परेशान होते रहेंगे।
वह स्थिर हमें उपलब्ध नहीं होगा,
शाश्वत की प्रतीति नहीं होगी।
एक और दिशा भी है, आदमी के पार।
जैसे जमीन के पार दो सौ मील के पार उठने की,
ठीक ऐसे ही, आदमी के प्रेम,
वस्तुओं के आकर्षण के पार,
परमात्मा के प्रेम की तरफ उठने की भी
एक आंतरिक दिशा है।
उस दिशा में उठते ही
सारे नियम दूसरे हो जाते हैं।
यहां सब क्षणभंगुर है,
वहां कुछ भी क्षणभंगुर नहीं है।
यहां सब सुखरहित है,
वहां सब दुखरहित है।

आचार्य श्री रजनीशOsho
गीतादर्शनअ.9.प्र.13/112क्षणभंगुरता का बोध

मूसा ने जब इजिप्त से यात्रा प्रारंभ की थी तब की पीढ़ी लगभग समाप्त हो चुकी थी। बूढ़े मरते गए, जवान बूढ़े हो गए और नए बच्चे पैदा होते रहे। जिस मूल समूह ने मूसा के साथ यात्रा की शुरुआत की थी, वह बचा ही नहीं था। मूसा करीब-करीब एक अजनबी की भांति अनुभव कर रहे थे उन्होंने युवा लोगों शासन और व्यवस्था का कार्यभार सौंपा और इजराइल से विदा हो लिए। यह अजीब बात है कि यहूदी धर्मशास्त्रों में भी, उनकी मृत्यु के संबंध में, उनका क्या हुआ इस बारे में कोई उल्लेख नहीं है। हमारे यहां (कश्मीर में) उनकी कब्र है। उस समाधि पर भी जो शिलालेख है, वह हिब्रू भाषा में ही है। और पिछले चार हजार सालों से एक यहूदी परिवार पीढ़ी-दर-पीढ़ी उन दोनों समाधियों की देखभाल कर रहा है।

मूसा भारत क्यों आना चाहते थे ? केवल मृत्यु के लिए ? हां, कई रहस्यों में से एक रहस्य यह भी है कि यदि तुम्हारी मृत्यु एक बुद्धक्षेत्र में हो सके, जहां केवल मानवीय ही नहीं, वरन भगवत्ता की ऊर्जा तरंगें हों, तो तुम्हारी मृत्यु भी एक उत्सव और निर्वाण बन जाती है। सदियों से सारी दुनिया के साधक इस धरती पर आते रहे हैं। यह देश दरिद्र है, उसके पास भेंट देने को कुछ भी नहीं, पर जो संवेदनशील हैं, उनके लिए इससे अधिक समृद्ध कौम इस पृथ्वी पर कहीं नहीं हैं। लेकिन वह समृद्धि आंतरिक है।

ओशो

मेरा स्वर्णिम भारत

जीसस ने भारत में आना क्यों पसंद किया? क्योंकि युवावास्था में भी वे वर्षों तक भारत में रह चुके थे। उन्होंने अध्यात्म और ब्रह्म का परम स्वाद इतनी निकटता से चखा था कि वहीं दोबारा लौटना चाहा। तो जैसे ही वह स्वस्थ हुए, भारत आए और फिर 112 साल की उम्र तक जिए। कश्मीर में अभी भी उनकी कब्र है। उस पर जो लिखा है, वह हिब्रू भाषा में है। स्मरण रहे, भारत में कोई यहूदी नहीं रहते हैं। उस शिलालेख पर खुदा है, जोशुआ- यह हिब्रू भाषा में ईसामसीह का नाम है। जीसस जोशुआ का ग्रीक रूपांतरण है। जोशुआ यहां आए- समय, तारीख वगैरह सब दी है। एक महान सदगुरु, जो स्वयं को भेड़ों का गड़रिया पुकारते थे, अपने शिष्यों के साथ शांतिपूर्वक 112 साल की दीर्घायु तक यहां रहे। इसी वजह से वह स्थान भेड़ों के चरवाहे का गांव कहलाने लगा। तुम यहां जा सकते हो, वह शहर अभी भी है-पहलगाम, उसका काश्मीरी में वही अर्थ है- गड़रिए का गांव। जीसस यहां रहना चाहते थे ताकि और अधिक आत्मिक विकास कर सकें। एक छोटे से शिष्य समूह के साथ वे रहना चाहते थे ताकि वे सभी शांति में, मौन में डूबकर आध्यात्मिक प्रगति कर सकें। और उन्होंने मरना भी यहीं चाहा, क्योंकि यदि तुम जीने की कला जानते हो तो यहां (भारत में) जीवन एक सौंदर्य है और यदि तुम मरने की कला जानते हो तो यहां (भारत में) मरना भी अत्यंत अर्थपूर्ण है। केवल भारत में ही मृत्यु की कला खोजी गई है, ठीक वैसे ही जैसे जीने की कला खोजी गई है। वस्तुतः तो वे एक ही प्रक्रिया के दो अंग हैं।

यहूदियों के पैगंबर मूसा ने भी भारत में ही देह त्यागी थी!

इससे भी अधिक आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि मूसा (मोजिज) ने भी भारत में ही आकर देह त्यागी थी! उनकी और जीसस की समाधियां एक ही स्थान में बनी हैं। शायद जीसस ने ही महान सदगुरु मूसा के बगल वाला स्थान स्वयं के लिए चुना होगा। पर मूसा ने क्यों कश्मीर में आकर मृत्यु में प्रवेश किया? मूसा ईश्वर के देश इजराइल की खोज में यहूदियों को इजिप्त के बाहर ले गए थे। उन्हें 40 वर्ष लगे, जब इजराइल पहुंचकर उन्होंने घोषणा की कि, यही वह जमीन है, परमात्मा की जमीन, जिसका वादा किया गया था। और मैं अब वृद्ध हो गया हूं और अवकाश लेना चाहता हूं। हे नई पीढ़ी वालों, अब तुम संहारो!

मूसा ने जब इजिप्त से यात्रा प्रारंभ की थी तब की पीढ़ी लगभग समाप्त हो चुकी थी। बड़े मरने गए, जवान बड़े हो गए और नए बच्चे पैदा होते

यह एक मिलीभगत थी, जीसस के शिष्यों की पोंटियस पॉयलट के साथ। पोंटियस यहूदी नहीं था, वो रोमन वायसराय था। जूडिया उन दिनों रोमन साम्राज्य के अधीन था। निर्दोष जीसस की हत्या में रोमन वायसराय पोंटियस को कोई रुचि नहीं थी। पोंटियस के दस्तखत के बगैर यह हत्या नहीं हो सकती थी। पोंटियस को अपराध भाव अनुभव हो रहा था कि वह इस भद्दे और क्रूर नाटक में भाग ले रहा है। चूंकि पूरी यहूदी भीड़ पीछे पड़ी थी कि जीसस को सूली लगनी चाहिए। जीसस वहां एक मुद्दा बन चुका था। पोंटियस पॉयलट दुविधा में था। यदि वह जीसस को छोड़ देता है तो वह पूरी जूडिया को, जो कि यहूदी है, अपना दुश्मन बना लेता है। यह कूटनीतिक नहीं होगा। और यदि वह जीसस को सूली दे देता है तो उसे सारे देश का समर्थन तो मिल जाएगा, मगर उसके स्वयं के अंतःकरण में एक घाव छूट जाएगा कि राजनैतिक परिस्थिति के कारण एक निरपराध व्यक्ति की हत्या की गई, जिसने कुछ भी गलत नहीं किया था।

तो पोंटियस ने जीसस के शिष्यों के साथ मिलकर यह व्यवस्था की कि शुक्रवार को जितनी संभव हो सके उतनी देर से सूली दी जाए। चूंकि सूर्यास्त होते ही शुक्रवार की शाम को यहूदी सब प्रकार का कामधाम बंद कर देते हैं, फिर शनिवार को कुछ भी काम नहीं होता, वह उनका पवित्र दिन है। यद्यपि सूली दी जानी थी शुक्रवार की सुबह, पर उसे स्थगित किया जाता रहा। ब्यूरोक्रेसी तो किसी भी कार्य में देर लगा सकती है। अतः जीसस को दोपहर के बाद सूली पर चढ़ाया गया और सूर्यास्त के पहले ही उन्हें जीवित उतार लिया गया। यद्यपि वे बेहोश थे, क्योंकि शरीर से रक्तस्राव हुआ था और कमजोरी आ गई थी। पवित्र दिन यानि शनिवार के बाद रविवार को यहूदी उन्हें पुनः सूली पर चढ़ाने वाले थे। जीसस के देह को जिस गुफा में रखा गया था, वहां का चौकीदार रोमन था न कि यहूदी। इसलिए यह संभव हो सका कि जीसस के शिष्यगण उन्हें बाहर आसानी से निकाल लाए और फिर जूडिया से बाहर ले गए।

जीसस ने भारत में आना क्यों पसंद किया? क्योंकि युवावास्था में भी वे वर्षों तक भारत में रह चुके थे। उन्होंने अध्यात्म और ब्रह्म का परम स्वाद इतनी निकटता से चखा था कि वहीं दोबारा लौटना चाहा। तो जैसे ही वह स्वस्थ हुए, भारत आए और फिर 112 साल की उम्र तक जिए। कश्मीर में अभी भी उनकी कब्र है। उस पर जो लिखा है, वह हिब्रू भाषा में है। स्मरण रहे, भारत में कोई यहूदी नहीं रहते हैं। उस शिलालेख पर

ईसा जब भारत आए थे, तब बौद्ध धर्म बहुत जीवंत था, यद्यपि बुद्ध की मृत्यु हो चुकी थी। गौतम बुद्ध के पांच सौ साल बाद जीसस यहां आए थे। पर बुद्ध ने इतना विराट आंदोलन, इतना बड़ा तूफान खड़ा किया था कि तब तक भी पूरा मुल्क उसमें डूबा हुआ था। बुद्ध की करुणा, क्षमा और प्रेम के उपदेशों को भारत पिए हुआ था।

जीसस कहते हैं कि अतीत के पैगंबरों द्वारा यह कहा गया था। कौन हैं ये पुराने पैगंबर? वे सभी प्राचीन यहूदी पैगंबर हैं: इजेकिएल, इलिजाह, मोसेस, - कि ईश्वर बहुत ही हिंसक है और वह कभी क्षमा नहीं करता है!? यहां तक कि प्राचीन यहूदी पैगंबरों ने ईश्वर के मुंह से ये शब्द भी कहलवा दिए हैं कि मैं कोई सज्जन पुरुष नहीं हूं, तुम्हारा चाचा नहीं हूं। मैं बहुत क्रोधी और ईर्ष्यालु हूं, और याद रहे जो भी मेरे साथ नहीं है, वे सब मेरे शत्रु हैं। पुराने टेस्टामेंट में ईश्वर के ये वचन हैं। और ईसा मसीह कहते हैं, मैं तुमसे कहता हूं कि परमात्मा प्रेम है। यह ख्याल उन्हें कहां से आया कि परमात्मा प्रेम है? गौतम बुद्ध की शिक्षाओं के सिवाए दुनिया में कहीं भी परमात्मा को प्रेम कहने का कोई और उल्लेख नहीं है। उन 17 वर्षों में जीसस इजिप्त, भारत, लद्दाख और तिब्बत की यात्रा करते रहे। यही उनका अपराध था कि वे यहूदी परंपरा में बिल्कुल अपरिचित और अजनबी विचारधाराएं ला रहे थे। न केवल अपरिचित बल्कि वे बातें यहूदी धारणाओं के एकदम से विपरीत थीं। तुम्हें जानकर आश्चर्य होगा कि अंततः उनकी मृत्यु भी भारत में हुई! और ईसाई रिकार्ड्स इस तथ्य को नजरअंदाज करते रहे हैं। यदि उनकी बात सच है कि जीसस पुनर्जीवित हुए थे तो फिर पुनर्जीवित होने के बाद उनका क्या हुआ? आजकल वे कहां हैं? क्योंकि उनकी मृत्यु का तो कोई उल्लेख है ही नहीं!

सच्चाई यह है कि वे कभी पुनर्जीवित नहीं हुए। वास्तव में वे सूली पर कभी मरे ही नहीं थे। क्योंकि यहूदियों की सूली आदमी को मारने की सर्वाधिक बेहूदी तरीका है। उसमें आदमी को मरने में करीब-करीब 48 घंटे लग जाते हैं। चूंकि हाथों में और पैरों में कीलें ठोक दी जाती हैं तो बूंद-बूंद करके उनसे खून टपकता रहता है। यदि आदमी स्वस्थ है तो 60 घंटे से भी ज्यादा लोग जीवित रहे, ऐसे उल्लेख हैं। औसत 48 घंटे तो लग ही जाते हैं। और जीसस को तो सिर्फ छह घंटे बाद ही सूली से उतार दिया गया था। यहूदी सूली पर कोई भी छह घंटे में कभी नहीं मरा है, कोई मर ही नहीं सकता है।

**Sanjeev Mishra**

1d · 🌐



जब भी कोई सत्य के लिए प्यासा होता है, अनायास ही वह भारत में उत्सुक हो उठता है। अचानक पूरब की यात्रा पर निकल पड़ता है। और यह केवल आज की ही बात नहीं है। यह उतनी ही प्राचीन बात है, जितने पुराने प्रमाण और उल्लेख मौजूद हैं। आज से 2500 वर्ष पूर्व, सत्य की खोज में पाइथागोरस भारत आया था। ईसा मसीह भी भारत आए थे। ईसामसीह के 13 से 30 वर्ष की उम्र के बीच का बाइबिल में कोई उल्लेख नहीं है। और यही उनकी लगभग पूरी जिंदगी थी, क्योंकि 33 वर्ष की उम्र में तो उन्हें सूली ही चढ़ा दिया गया था। तेरह से 30 तक 17 सालों का हिसाब बाइबिल से गायब है! इतने समय वे कहां रहे? आखिर बाइबिल में उन सालों को क्यों नहीं रिकार्ड किया गया? उन्हें जानबूझ कर छोड़ा गया है, कि ईसायत मौलिक धर्म नहीं है, कि ईसा मसीह जो भी कह रहे हैं वे उसे भारत से लाए हैं।

यह बहुत ही विचारणीय बात है। वे एक यहूदी की तरह जन्मे, यहूदी की ही तरह जिए और यहूदी की ही तरह मरे। स्मरण रहे कि वे ईसाई नहीं थे, उन्होंने तो-ईसा और ईसाई, ये शब्द भी नहीं सुने थे। फिर क्यों यहूदी उनके इतने खिलाफ थे? यह सोचने जैसी बात है, आखिर क्यों? न तो ईसाईयों के पास इस सवाल का ठीक-ठाक जवाबा है और न ही यहूदियों के पास। क्योंकि इस व्यक्ति ने किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया। ईसा उतने ही निर्दोष थे जितनी कि कल्पना की जा सकती है।

पर उनका अपराध बहुत सूक्ष्म था। पढ़े-लिखे यहूदियों और चतुर रबाईयों ने स्पष्ट देख लिया था कि वे पूरब से विचार ले रहे हैं, जो कि गैर यहूदी हैं। वे कुछ अजीबोगरीब और विजातीय बातें ले रहे हैं। और यदि इस दृष्टिकोण से देखो तो तुम्हें समझ आएगा कि क्यों वे बार बार कहते हैं- 'अतीत के पैगंबरों ने तुमसे कहा था कि यदि कोई तुम पर क्रोध करे, हिंसा करे तो आंख के बदले में आंख लेने और ईंट का जवाब पत्थर से देने को तैयार रहना। लेकिन मैं तुमसे कहता हूं कि अगर कोई तुम्हें चोट पहुंचाता है, एक गाल पर चांटा मारता है तो उसे अपना दूसरा गाल भी दिखा देना।' यह पूर्णतः गैर यहूदी बात है। उन्होंने ये बातें गौतम बुद्ध और महावीर की देशनाओं से सीखी थीं।

ईसा जब भारत आए थे, तब बौद्ध धर्म बहत जीवंत था, यद्यपि बूद्ध की

मैंने सुना है, एक फकीर एक यूनिवर्सिटी में अध्यापक हो गया। जैसे ही वह नया-नया पहले दिन कक्षा में उपस्थित हुआ तो एक मनचले छात्र ने अपना नाम आने पर खड़े होकर कहा: यस मैडम !

सुनते ही कक्षा में हंसी गूंजने लगी। लेकिन फकीर तो फकीर था! फकीर भी खिलखिला कर हंसा और इतने जोर से हंसा कि कक्षा में धीमी-धीमी जो हंसी चल रही थी, वह एक झटके में बंद हो गयी। और फकीर ने फिर शालीनता से कहा:

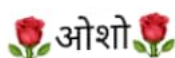
"यह इश्क मोहब्बत की तासीर कोई देखे,
अल्लाह भी मजनूं को लैला नजर आता है।"

अब तो पूरी कक्षा ठहाकों से गूंज उठी। बेचारे मजनूं की हालत सच में देखने जैसी थी।

कौन तुम्हें चौंकाएगा? कौन तुम्हें झकझोरगा? फकीरों से मिलना तो मुश्किल होता जा रहा है। जिनसे तुम मिलोगे भी वे भी बंधनों में बंधे हैं—कोई हिंदु है, कोई मुसलमान है, कोई ईसाई है। और जो हिंदु है, जो मुसलमान है, जो ईसाई है, वह साधु नहीं है, वह साधु नहीं हो सकता।

साधु का क्या कोई धर्म होता है? साधु के तो सब धर्म अपने होते हैं। साधु तो स्वयं धर्म होता है। साधु का कोई विशेषण नहीं होता। जब तक कोई कहे कि जैन साधु तब तक समझना कि साधु नहीं। जब कोई कह सके हिम्मत से कि साधु, विशेषणरहित तब समझना कि कुछ बात हुई, कोई क्रांति घटी।

ऐसा कोई साधु मिल जाए, ऐसी कोई संगति मिल जाए, तो तुम जाग सकते हो—गुरु-परताप साध की संगति—नहीं तो इस संसार में तो सब सुलाने के आयोजन हैं यह संसार तो सोये हुए लोगों की भीड़ है। और सोये हुए लोग जागे हुए आदमी को बर्दाश्त नहीं करते क्योंकि जगा हुआ आदमी कुछ खटर-पटर करेगा, कुछ शोरगुल करेगा, उठेगा, बैठेगा।



ओशो

गुरु प्रताप साध की संगति

facebook



वह संन्यासी कहने लगा :इससे क्या फर्क पड़ता है। बच्चा किसी का तो होगा। इससे क्या फर्क पड़ता है कि किसका है। बच्चा बच्चा है, इतना ही साफ है, इतना ही काफी है। और इससे क्या फर्क पड़ता था, तुमने एक झोपड़ा तो जला ही दिया था और एक आदमी को तो गालियाँ दे ही चुके थे। अब मैं और कहता कि मेरा नहीं है, तो तुम एक झोपड़ा शायद और जलाते, किसी एक आदमी को और गालियाँ देते। उससे फर्क क्या पड़ता था?

पर वे लोग कहने लगे :तुम हो कैसे पागल! तुम्हारी सारी इज्जत मिट्टी में मिल गई और तुम चुपचाप बैठे रहे जब कि बच्चा तुम्हारा नहीं था।

वह संन्यासी कहने लगा :उस इज्जत की अगर हम फिकर करते तो चौथे दरवाज़े पर ही रुक जाते। नहीं, उस इज्जत की कोई चिंता नहीं है, उसकी कोई अपेक्षा नहीं है। वह तुम्हारा जो आदर तुमने दिया था, हमारी तरफ से मांगा नहीं गया था और चाहा नहीं गया था। तुमने छीन लिया, तुम्हारा दिया हुआ आदर था, तुम्हारे हाथ की बात थी, न हमने मांगा था, न छीनते वक़्त हम रोकने के हक़दार थे। नहीं वह कहने लगा चौथे द्वार पर हम रुक जाते। गाँव के लोग पूछने लगे, कौन सा चौथा द्वार?

उसी चौथे द्वार (प्रभु - मंदिर का पहला द्वार :करुणा, दूसरा द्वार :मैत्री, तीसरा द्वार :मुदिता) की मैं आपसे बात कर रहा हूँ। उस चौथे द्वार पर लिखा है :उपेक्षा, इनडिफरेंस। जीवन में जो व्यर्थ है उसके प्रति उपेक्षा। उस संन्यासी ने अद्भुत उपेक्षा प्रकट की। नहीं, जरा भी चिंता न ली इस बात की कि लोग क्या कहेंगे, पब्लिक ओपिनियन, जनमत क्या कहेगा!

जो आदमी जनमत के संबंध में सोचता रहता है, वह कभी परमात्मा तक नहीं पहुँचता है, इसे स्मरण रख लेना। लोग क्या कहेंगे? इससे ज्यादा कमजोर, इस बात को सोचने से ज्यादा नपुंसक कोई वृत्ति नहीं है कि लोग क्या कहेंगे। जो लोग भी इस चिंता में पड़ जाते हैं कि लोग क्या कहेंगे, वे भीड़ के जो असत्य हैं उन्हीं असत्यों में जीते हैं और उन्हीं असत्यों में मर जाते हैं, वे कभी सत्य की खोज नहीं कर पाते हैं।

🌸🌸 ओशो "साधना पथ" 🌸🌸

**Sanjeev Mishra**

2h · 🌐



जापान में एक छोटा सा गाँव था। उस गाँव में आया था एक संन्यासी, एक युवा संन्यासी। बहुत सुंदर, बहुत स्वस्थ, बहुत महिमाशाली। उसकी प्रतिभा का प्रकाश शीघ्र ही दूर - दूर तक फैल गया। उसकी सुगंध बहुत से लोगों को मन को लुभा ली। गाँव का वह प्यारा हो गया। वर्ष बीते, दो वर्ष बीते, वह उस गाँव का प्राण बन गया। उसकी पूजा ही पूजा थी।

लेकिन एक दिन सब उलट हो गया। सारा गाँव उसके प्रति निंदा से भर गया। सुबह ही थी अभी, सर्दी के दिन थे। सारा गाँव उस फकीर के झोपड़े की तरफ चल पड़ा। उन्होंने जाकर उस फकीर के झोपड़े में आग लगा दी। वह फकीर बैठा हुआ था बाहर, धूप लेता था। वह पूछने लगा, क्या हो गया है, क्या बात है आज सुबह ही सुबह इतनी भीड़, आज सुबह ही सुबह इस झोपड़े में आग लगा देना? हो क्या गया है, बात क्या है?

भीड़ में से एक आदमी आगे आया और एक छोटे से बच्चे को लाकर उस संन्यासी की गोद में पटक दिया और कहा :हमसे पूछते हो बात क्या है? इस बच्चे को पहचानो!

उस संन्यासी ने गौर से देखा और उसने कहा :अभी मैं अपने को ही नहीं पहचानता तो इस बच्चे को कैसे पहचान सकूंगा? कौन है यह बच्चा, मुझे पता नहीं है!

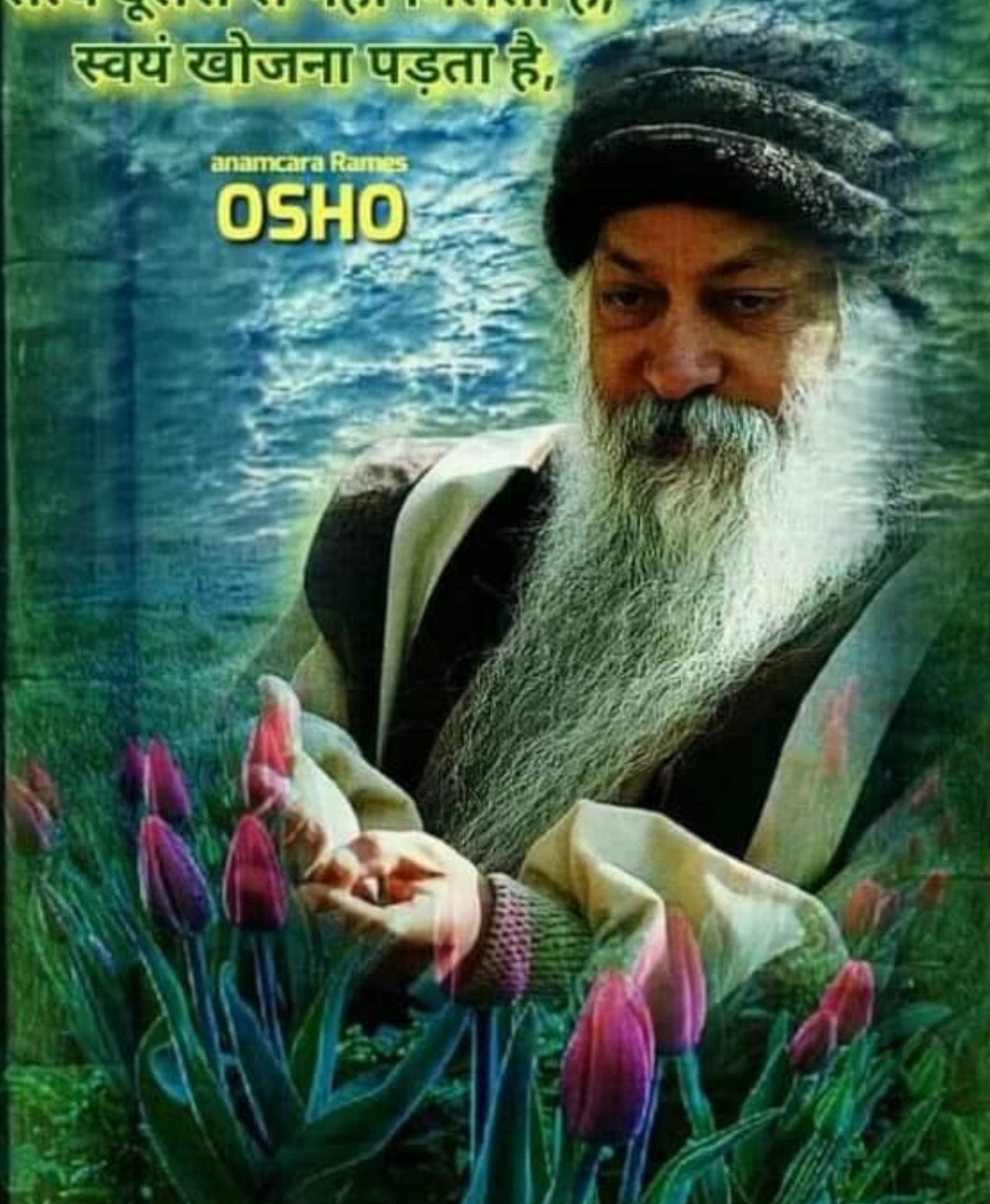
लेकिन भीड़ हंसने लगी और पत्थर फेंकने लगी और कहा बहुत नादान और भोले बनते हो। इस बच्चे की मां ने कहा है कि यह बच्चा तुमसे पैदा हुआ है और इसीलिए हम सारे गाँव के लोग इकट्ठे हुए हैं। हमने तुम्हारी जो प्रतिमा बनायी थी वह खंडित हो गई। हमने तुम्हें जो पूजा दी थी वह हम वापस लेते हैं और इस नगर में हम तुम्हारा मुंह दुबारा नहीं देखना चाहेंगे।

उस संन्यासी ने उनकी तरफ देखा। उतनी प्यार से भरी हुई आँखें - उसकी आँखें तो सदा ही प्यार से भरी हुई थीं, लेकिन उस दिन का उसका प्यार देखने जैसा था। लेकिन वे लोग नहीं पहचान सके उस दिन उस प्यार को, क्योंकि वे इतने क्रोध से भरे थे कि प्यार की खबर उनके हृदय तक नहीं पहुंच सकती थी। नहीं पहचान सके उस दिन उन आँखों को जिनसे करुणा छलक पड़ती थी, क्योंकि अंधे सूरज को कैसे देख सकते हैं? सूरज खड़ा रहे द्वार पर और अंधे वंचित रह जाते हैं। उस दिन वे अंधे थे क्रोध में, निंदा में। उस दिन नहीं दिखाई पड़ा उस संन्यासी का प्रकाश।

सदगुरु वह है
जो तुम्हें श्रद्धा दे और विश्वास से बचाए।
विश्वास से बचाने का अर्थ है,
जो तुम्हें जगाए इस सत्य के प्रति कि
सत्य दूसरों से नहीं मिलता है,
स्वयं खोजना पड़ता है,

anamcara Rames

OSHO



जब तक दुसरो को प्रभावित करना
चाहते हो समझो अहंकार में हो।



9.7K



मांगो ही मत क्योंकि जिसने तुम्हे जीवन
दिया है वह तुमसे ज्यादा समझदार है तुम
अपनी समझदारी मत बताओ!!



27K

~ आचार्य रजनीश 🍁



@bhagwad_geeta_108



चतुराई चोपट करे, ज्ञानी गोते खाए..
भोले भाले लोगन को, नारायण मिल जाए..

॥ बोलो राधे राधे ॥

@bhagwad_geeta_108



153



1



Send



aaushlado



Add a comment...





कबीर

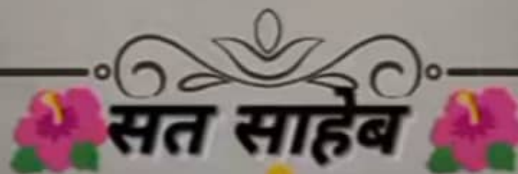
कबीर, जो भजन करते नहीं
करे दान में ढील।
उनके धन को खाएंगे,
वैश्या, वैध और वकील।।



5.8K



14

**Follow****@aadiram.kabir**

844

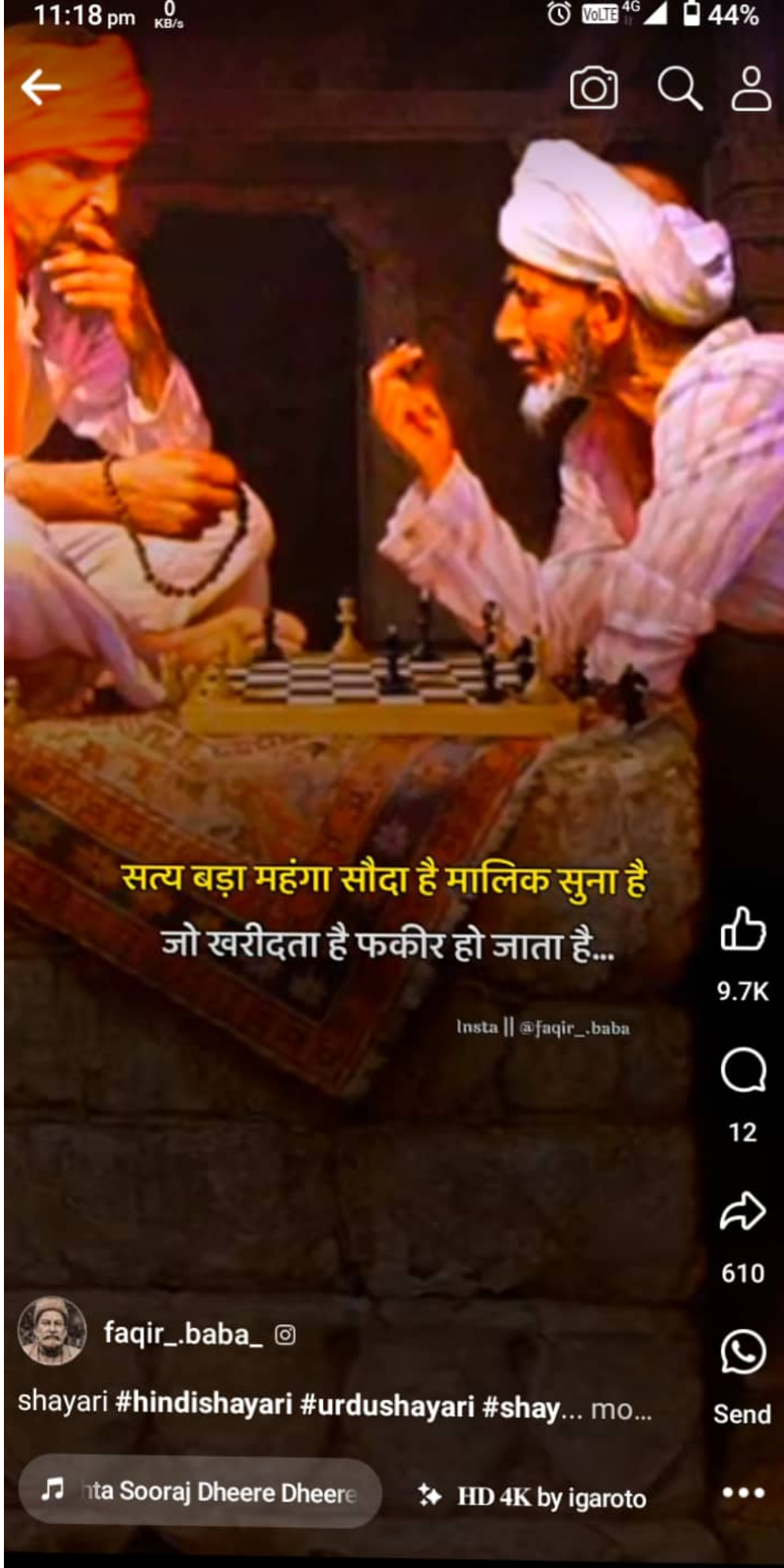


Send



babluverma1388





सत्य बड़ा महंगा सौदा है मालिक सुना है
जो खरीदता है फकीर हो जाता है...

Insta || @faqir_.baba



9.7K



12



610



faqir_.baba_

shayari #hindishayari #urdushayari #shay... mo...



Send



hta Sooraj Dheere Dheere



HD 4K by igaroto



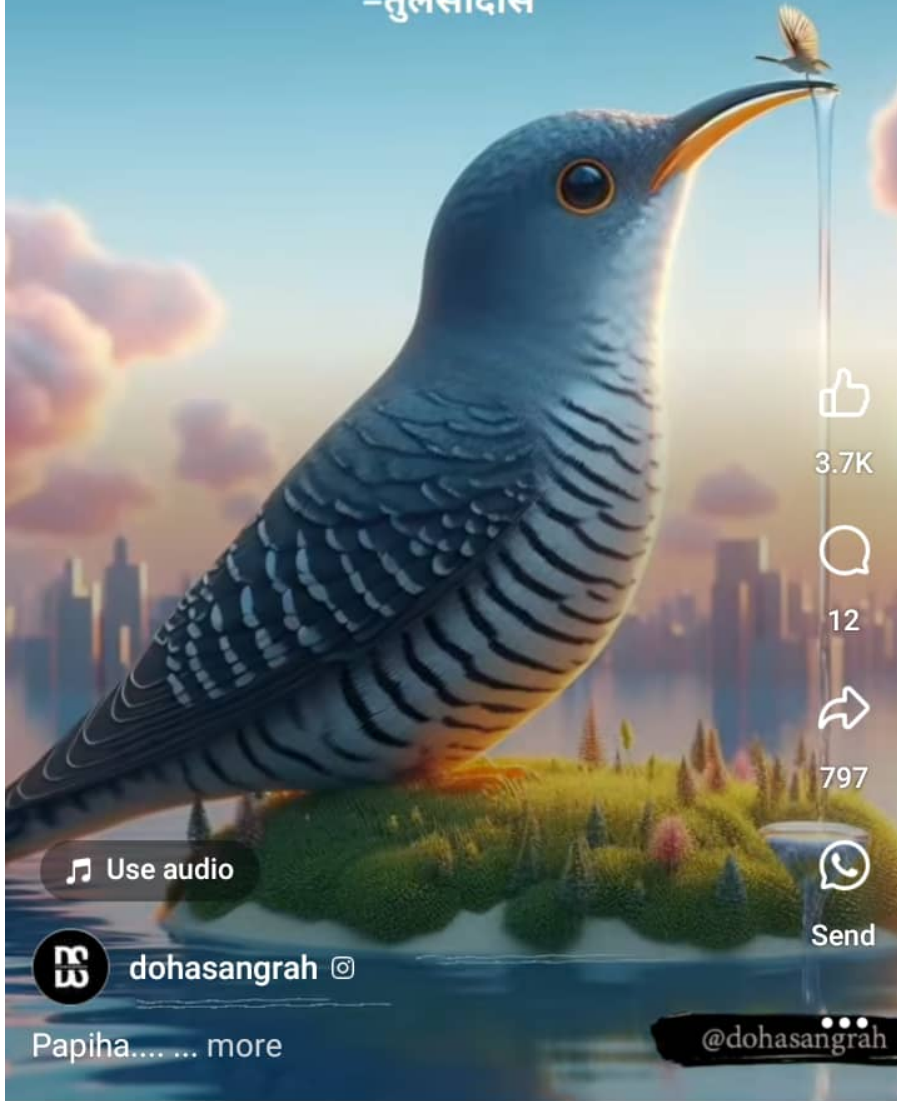


ऊँची जाति पपीहरा, पियत न नीचौ नीर।

कै याचै घनश्याम सों, कै दुःख सहै सरीर॥

पपीहा वास्तव में बड़ी ऊँची जाति का है, जो नीचे ज़मीन पर पड़ा हुआ पानी नहीं पीता। वह या तो बादल से ही पानी माँगता है या अपने शरीर पर दुःख ही झेलता रहता है। भाव यह कि श्रेष्ठ पुरुष तुच्छ वासनाओं में कभी नहीं फँसते, वे सदा उत्कृष्ट गुणों को ही ग्रहण करते हैं।

—तुलसीदास



3.7K



12



797



Send

Use audio



dohasangrah

Papiha.... more

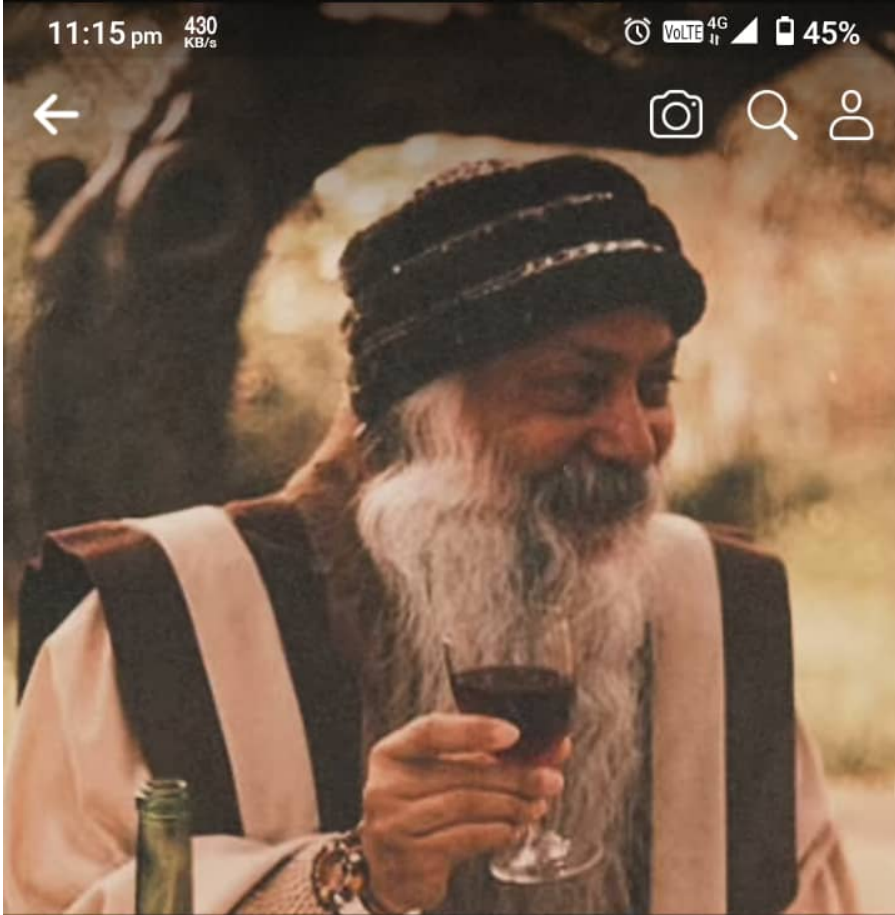
@dohasangrah

Do you want to see more or less reels like this?



Show more

Show less



तेरी खुशबू कहीं और मिलती ही नहीं
फुल सारे खरीद के देखे है हमने!!

~ ओशो 🍁



5.4K



7



216



Send

🎵 Use audio



anmol.oshovani

~ ओशो 🍁 like Share Follow kare ❤️... more

🎵 mental)

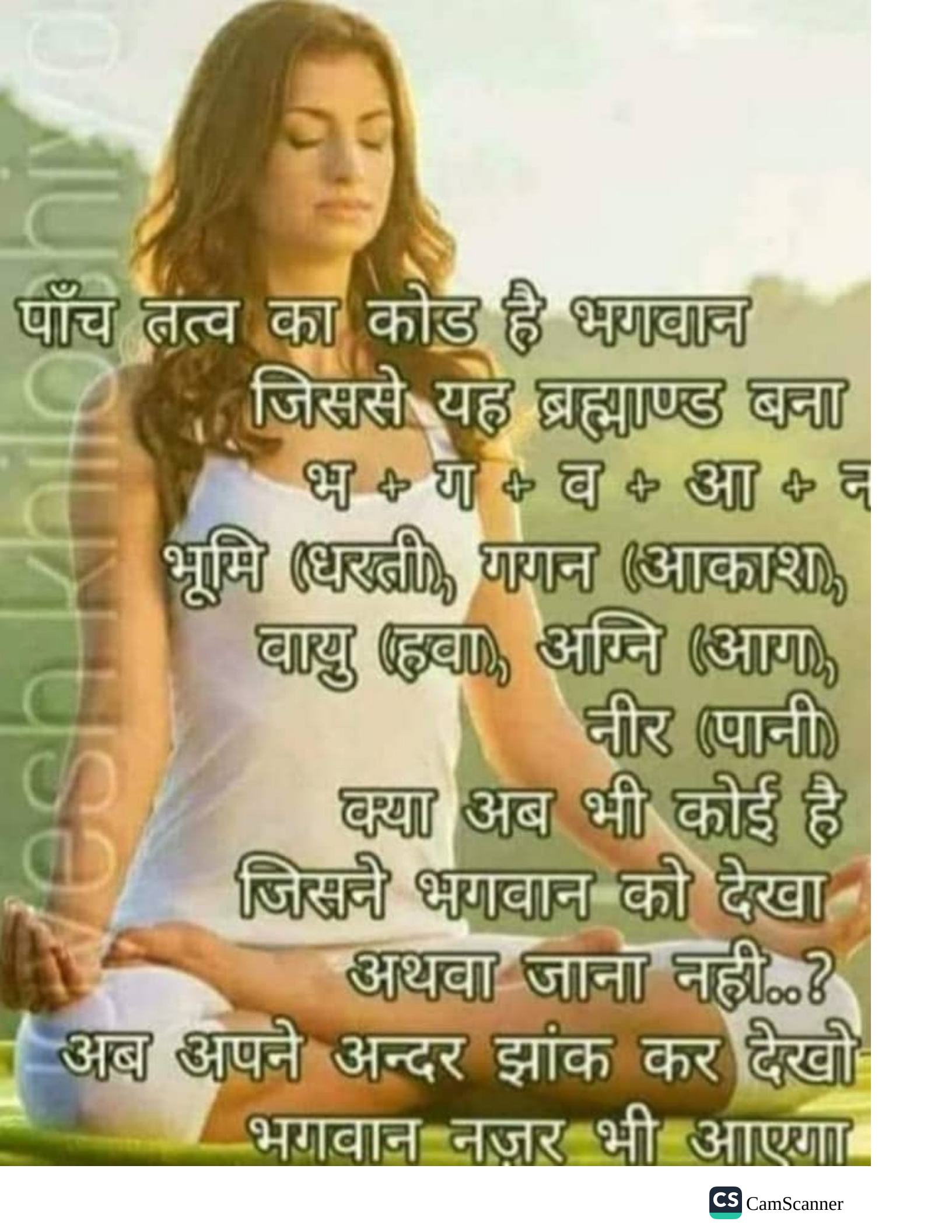
Shah Ruk

🌟 Vintage by dashnyin



Add a comment...



A woman with long brown hair, wearing a white tank top, is sitting in a lotus position on a green mat. She has her eyes closed and a serene expression, with her hands resting on her knees in a mudra. The background is a soft-focus outdoor scene with greenery and a bright sky.

पाँच तत्व का कोड है भगवान
जिससे यह ब्रह्माण्ड बना
भ + ग + व + आ + न
भूमि (धरती), गगन (आकाश),
वायु (हवा), अग्नि (आग),
नीर (पानी)
क्या अब भी कोई है
जिसने भगवान को देखा
अथवा जाना नहीं..?
अब अपने अन्दर झाँक कर देखो
भगवान नज़र भी आएगा



POSITIVE
INSPIRATION

एक पेड़ की तरह बनो
और
मृत पत्तियों को गिरने दो।



रुमी



/positiveinspirationindia

ओशो जम्ज

ओशो - विचार धारा

अहोभाव
D.R

चाह से भरे आदमी में
जागरण नहीं होता, जागरण
से भरे क्षण में चाह नहीं
होती। ये दोनों एक साथ होते
ही नहीं। यह जीवन का
अंतर्निहित विज्ञान है।



तुम अपना कोई मूल्य ही नहीं समझते - ओशो



Govind Shunyam



1.3K



7



296

★ Send a gift



रजनिशी

📌 Whatsapp - 98765-67791 / 73024-9... more



Send



Add a comment...





सुख का आश्वासन देता है जगत, सुख मिलता नहीं। सुख का भरोसा दिलाता है, लेकिन सुख कभी हाथ नहीं आता। जितना तुम खोजते हो, उतना ही दूर होता चला जाता है। सुख बाहर मिल नहीं सकता, बाहर दुख है। सुख भीतर है। सुख स्वभाव है। सुख तुम्हारी निजता में है। सुख अपने घर लौट आने में है। सुख विचारों से मुक्त हो जाने में है। क्योंकि सुख शांति में है और विचार में अशांति है।

★ Send a gift



OSHO Acharya Rajneesh Real Mystic

ओशो



@bhagwad_geeta_108



चतुराई चोपट करे, ज्ञानी गोते खाए..
भोले भाले लोगन को, नारायण मिल जाए..

॥ बोलो राधे राधे ॥

@bhagwad_geeta_108



461K



2.1K



2.3K

Use audio



bhagwad_geeta_108 @

Day (38/365) Collecting कृष्ण भक्त 24.2k/5... more



Send



Old Film by thisishowist



Add a comment...



अधिकांश लोगों को
मरते वक्त पता चलता है
की वो जिंदा थे।

- ओशो

मैंने सुना है, एक फकीर एक यूनिवर्सिटी में अध्यापक हो गया। जैसे ही वह नया-नया पहले दिन कक्षा में उपस्थित हुआ तो एक मनचले छात्र ने अपना नाम आने पर खड़े होकर कहा: यस मैडम !

सुनते ही कक्षा में हंसी गूंजने लगी। लेकिन फकीर तो फकीर था! फकीर भी खिलखिला कर हंसा और इतने जोर से हंसा कि कक्षा में धीमी-धीमी जो हंसी चल रही थी, वह एक झटके में बंद हो गयी। और फकीर ने फिर शालीनता से कहा:

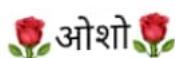
"यह इश्क मोहब्बत की तासीर कोई देखे,
अल्लाह भी मजनूं को लैला नजर आता है।"

अब तो पूरी कक्षा ठहाकों से गूंज उठी। बेचारे मजनूं की हालत सच में देखने जैसी थी।

कौन तुम्हें चौंकाएगा? कौन तुम्हें झकझोरगा? फकीरों से मिलना तो मुश्किल होता जा रहा है। जिनसे तुम मिलोगे भी वे भी बंधनों में बंधे हैं—कोई हिंदु है, कोई मुसलमान है, कोई ईसाई है। और जो हिंदु है, जो मुसलमान है, जो ईसाई है, वह साधु नहीं है, वह साधु नहीं हो सकता।

साधु का क्या कोई धर्म होता है? साधु के तो सब धर्म अपने होते हैं। साधु तो स्वयं धर्म होता है। साधु का कोई विशेषण नहीं होता। जब तक कोई कहे कि जैन साधु तब तक समझना कि साधु नहीं। जब कोई कह सके हिम्मत से कि साधु, विशेषणरहित तब समझना कि कुछ बात हुई, कोई क्रांति घटी।

ऐसा कोई साधु मिल जाए, ऐसी कोई संगति मिल जाए, तो तुम जाग सकते हो—गुरु-परताप साध की संगति—नहीं तो इस संसार में तो सब सुलाने के आयोजन हैं यह संसार तो सोये हुए लोगों की भीड़ है। और सोये हुए लोग जागे हुए आदमी को बर्दाश्त नहीं करते क्योंकि जगा हुआ आदमी कुछ खटर-पटर करेगा, कुछ शोरगुल करेगा, उठेगा, बैठेगा।



ओशो

गुरु प्रताप साध की संगति

facebook



वह संन्यासी कहने लगा :इससे क्या फर्क पड़ता है। बच्चा किसी का तो होगा। इससे क्या फर्क पड़ता है कि किसका है। बच्चा बच्चा है, इतना ही साफ है, इतना ही काफी है। और इससे क्या फर्क पड़ता था, तुमने एक झोपड़ा तो जला ही दिया था और एक आदमी को तो गालियाँ दे ही चुके थे। अब मैं और कहता कि मेरा नहीं है, तो तुम एक झोपड़ा शायद और जलाते, किसी एक आदमी को और गालियाँ देते। उससे फर्क क्या पड़ता था?

पर वे लोग कहने लगे :तुम हो कैसे पागल! तुम्हारी सारी इज्जत मिट्टी में मिल गई और तुम चुपचाप बैठे रहे जब कि बच्चा तुम्हारा नहीं था।

वह संन्यासी कहने लगा :उस इज्जत की अगर हम फिकर करते तो चौथे दरवाज़े पर ही रुक जाते। नहीं, उस इज्जत की कोई चिंता नहीं है, उसकी कोई अपेक्षा नहीं है। वह तुम्हारा जो आदर तुमने दिया था, हमारी तरफ से मांगा नहीं गया था और चाहा नहीं गया था। तुमने छीन लिया, तुम्हारा दिया हुआ आदर था, तुम्हारे हाथ की बात थी, न हमने मांगा था, न छीनते वक़्त हम रोकने के हक़दार थे। नहीं वह कहने लगा चौथे द्वार पर हम रुक जाते। गाँव के लोग पूछने लगे, कौन सा चौथा द्वार?

उसी चौथे द्वार (प्रभु - मंदिर का पहला द्वार :करुणा, दूसरा द्वार :मैत्री, तीसरा द्वार :मुदिता) की मैं आपसे बात कर रहा हूँ। उस चौथे द्वार पर लिखा है :उपेक्षा, इनडिफरेंस। जीवन में जो व्यर्थ है उसके प्रति उपेक्षा। उस संन्यासी ने अद्भुत उपेक्षा प्रकट की। नहीं, जरा भी चिंता न ली इस बात की कि लोग क्या कहेंगे, पब्लिक ओपिनियन, जनमत क्या कहेगा!

जो आदमी जनमत के संबंध में सोचता रहता है, वह कभी परमात्मा तक नहीं पहुँचता है, इसे स्मरण रख लेना। लोग क्या कहेंगे? इससे ज्यादा कमजोर, इस बात को सोचने से ज्यादा नपुंसक कोई वृत्ति नहीं है कि लोग क्या कहेंगे। जो लोग भी इस चिंता में पड़ जाते हैं कि लोग क्या कहेंगे, वे भीड़ के जो असत्य हैं उन्हीं असत्यों में जीते हैं और उन्हीं असत्यों में मर जाते हैं, वे कभी सत्य की खोज नहीं कर पाते हैं।

🌸🌸 ओशो "साधना पथ" 🌸🌸

**Sanjeev Mishra**

2h · 🌐



जापान में एक छोटा सा गाँव था। उस गाँव में आया था एक संन्यासी, एक युवा संन्यासी। बहुत सुंदर, बहुत स्वस्थ, बहुत महिमाशाली। उसकी प्रतिभा का प्रकाश शीघ्र ही दूर - दूर तक फैल गया। उसकी सुगंध बहुत से लोगों को मन को लुभा ली। गाँव का वह प्यारा हो गया। वर्ष बीते, दो वर्ष बीते, वह उस गाँव का प्राण बन गया। उसकी पूजा ही पूजा थी।

लेकिन एक दिन सब उलट हो गया। सारा गाँव उसके प्रति निंदा से भर गया। सुबह ही थी अभी, सर्दी के दिन थे। सारा गाँव उस फकीर के झोपड़े की तरफ चल पड़ा। उन्होंने जाकर उस फकीर के झोपड़े में आग लगा दी। वह फकीर बैठा हुआ था बाहर, धूप लेता था। वह पूछने लगा, क्या हो गया है, क्या बात है आज सुबह ही सुबह इतनी भीड़, आज सुबह ही सुबह इस झोपड़े में आग लगा देना? हो क्या गया है, बात क्या है?

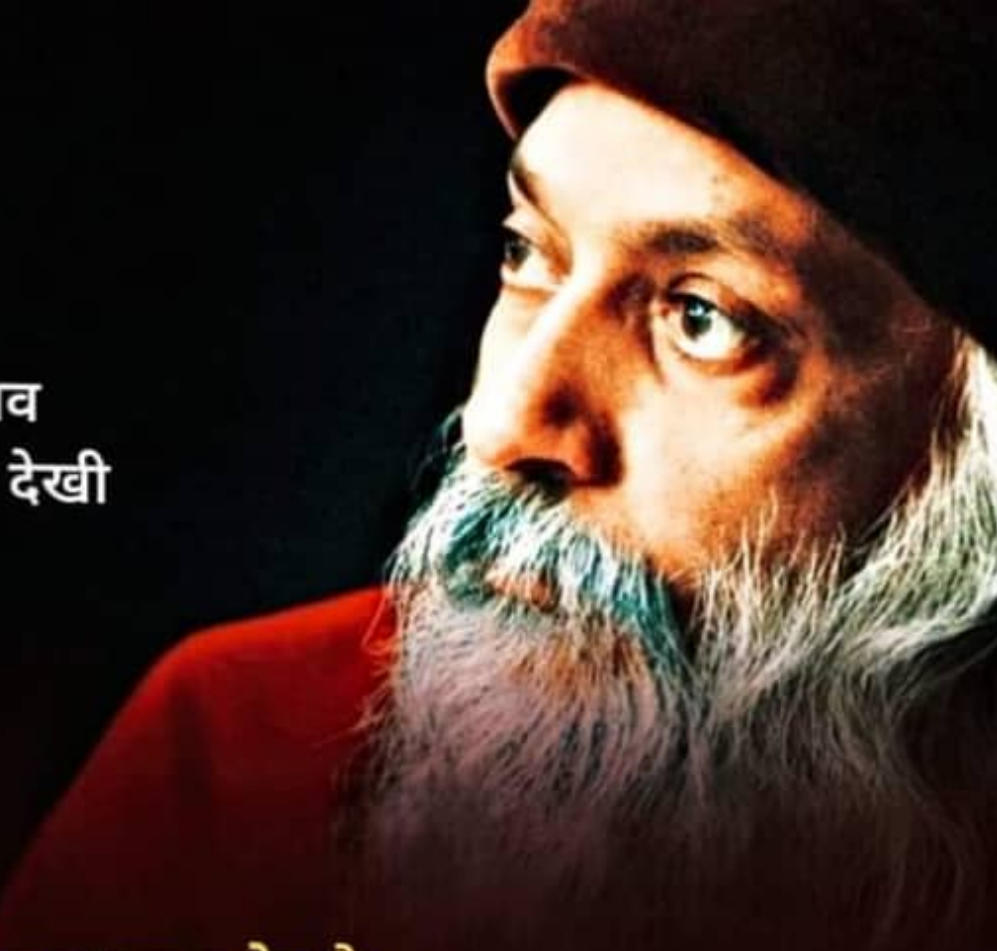
भीड़ में से एक आदमी आगे आया और एक छोटे से बच्चे को लाकर उस संन्यासी की गोद में पटक दिया और कहा :हमसे पूछते हो बात क्या है? इस बच्चे को पहचानो!

उस संन्यासी ने गौर से देखा और उसने कहा :अभी मैं अपने को ही नहीं पहचानता तो इस बच्चे को कैसे पहचान सकूंगा? कौन है यह बच्चा, मुझे पता नहीं है!

लेकिन भीड़ हंसने लगी और पत्थर फेंकने लगी और कहा बहुत नादान और भोले बनते हो। इस बच्चे की मां ने कहा है कि यह बच्चा तुमसे पैदा हुआ है और इसीलिए हम सारे गाँव के लोग इकट्ठे हुए हैं। हमने तुम्हारी जो प्रतिमा बनायी थी वह खंडित हो गई। हमने तुम्हें जो पूजा दी थी वह हम वापस लेते हैं और इस नगर में हम तुम्हारा मुंह दुबारा नहीं देखना चाहेंगे।

उस संन्यासी ने उनकी तरफ देखा। उतनी प्यार से भरी हुई आँखें - उसकी आँखें तो सदा ही प्यार से भरी हुई थीं, लेकिन उस दिन का उसका प्यार देखने जैसा था। लेकिन वे लोग नहीं पहचान सके उस दिन उस प्यार को, क्योंकि वे इतने क्रोध से भरे थे कि प्यार की खबर उनके हृदय तक नहीं पहुंच सकती थी। नहीं पहचान सके उस दिन उन आँखों को जिनसे करुणा छलक पड़ती थी, क्योंकि अंधे सूरज को कैसे देख सकते हैं? सूरज खड़ा रहे द्वार पर और अंधे वंचित रह जाते हैं। उस दिन वे अंधे थे क्रोध में, निंदा में। उस दिन नहीं दिखाई पड़ा उस संन्यासी का प्रकाश।





ओशो अहोभाव
मैं कहता आंखन देखी

हटते केवल कमजोर है;
भागते केवल वे ही हैं जो भयभीत हैं।

जो संसार को झेलने में भयभीत है,
वह परमात्मा को नहीं खेल सकेगा, यह मैं आपसे कह देता हूं।
जो संसार का ही सामना करने में डर रहा है, वह परमात्मा
का सामना कर पाएगा? नहीं कर पाएगा, संसार जैसी
कमजोर चीज जिसे डरा देती है, परमात्मा जैसा
विराट जब सामने आएगा, तो उसकी आंखे
ही झप जाएगी।

**SUCCESS IS NOT FINAL;
FAILURE IS NOT FATAL:
IT IS THE COURAGE TO CONTINUE
THAT COUNTS.**

WINSTON S. CHURCHILL



Fit For Life



 52K

875 comments • 32 shares



Like



Comment

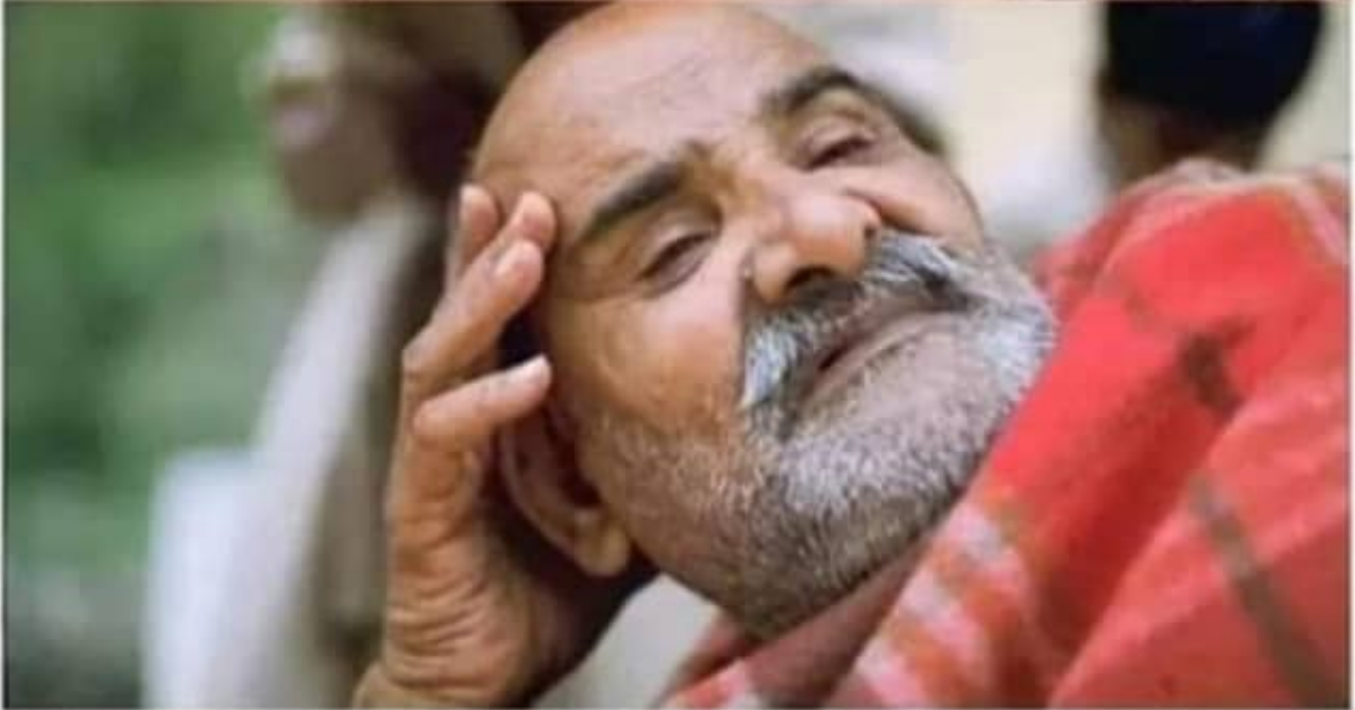
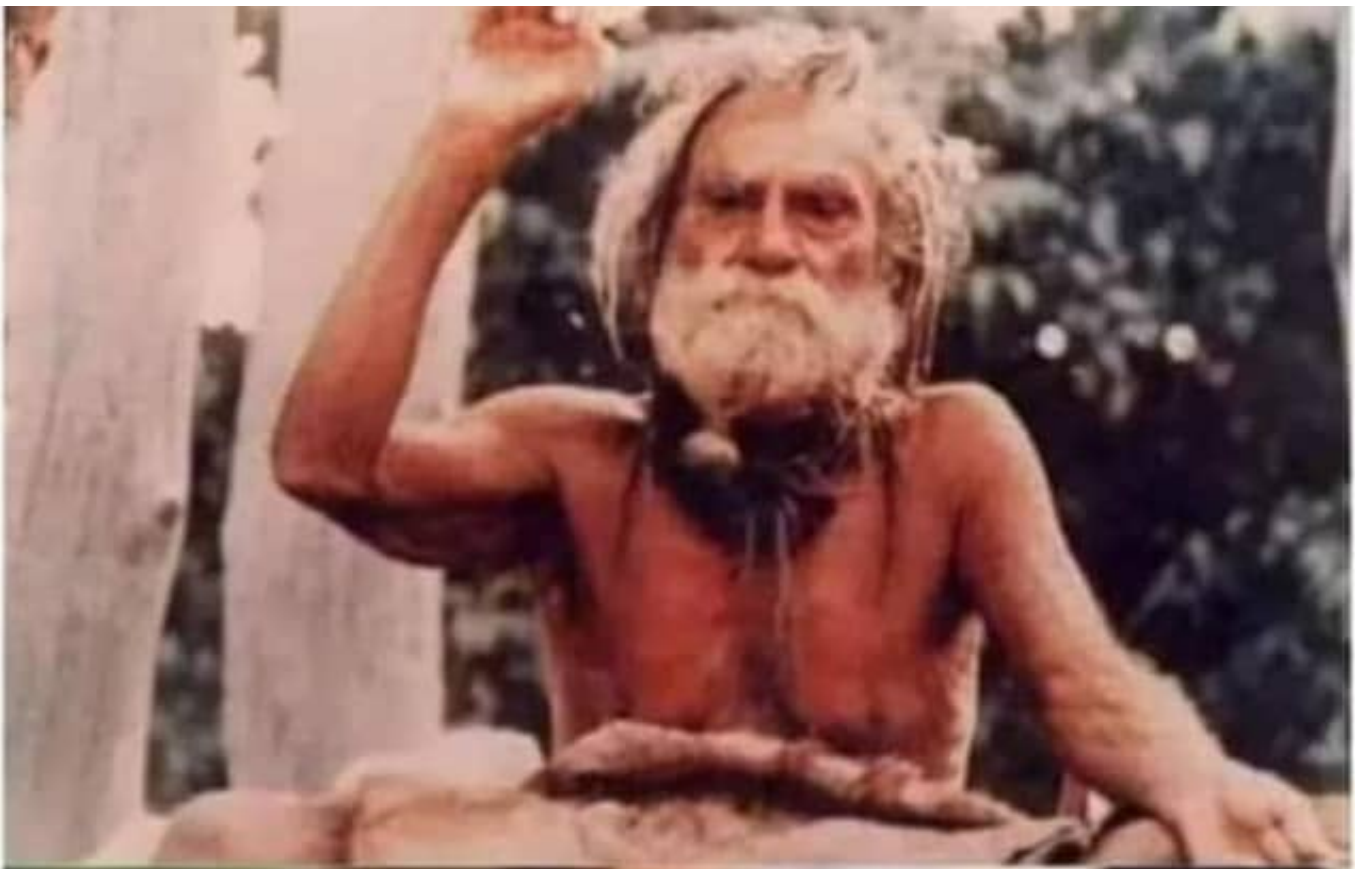


Share



Kissa TV • [Follow](#)





**"नीम करोली बाबा भी अमर है और उन्हें
कभी मृत नहीं समझना । वो हमेशा रहेंगे।"
~ देवरहा बाबा**

मैं विरोधाभासी हूं!

जब भी तुम्हें लगे कि
किसी चीज का मेरे
द्वारा खंडन हो रहा है, तो
उससे घबड़ा मत जाना;
मैं विरोधाभासी हूं।

तुम्हें अच्छी तरह समझ लेना है इसे। मैं अपना ही
खंडन करता जाता हूं। यह भी एक विधि है जिसका
मैं उपयोग कर रहा हूं। यदि तुम अविचलित रहते हो,
तो तुम्हारे भीतर कुछ घनीभूत होता है,
एक क्रिस्टलाइजेशन होता है।..

एक घड़ी आएगी, तुम समझ लोगे कि यह व्यक्ति तुम्हें
कोई सिद्धांत नहीं दे रहा है, क्योंकि हर बात का खंडन
किया जा रहा है। कोई सिद्धांत बचता नहीं। हर बात
नकार देती है हर दूसरी बात को; तुम एक गहन
शून्यता में छूट जाते हो। यही मेरा प्रयास है।

ओशो

पतंजलि: योग सूत्र (भाग - ०३)
प्रवचन - ०६
ऊर्जा का रूपांतरण

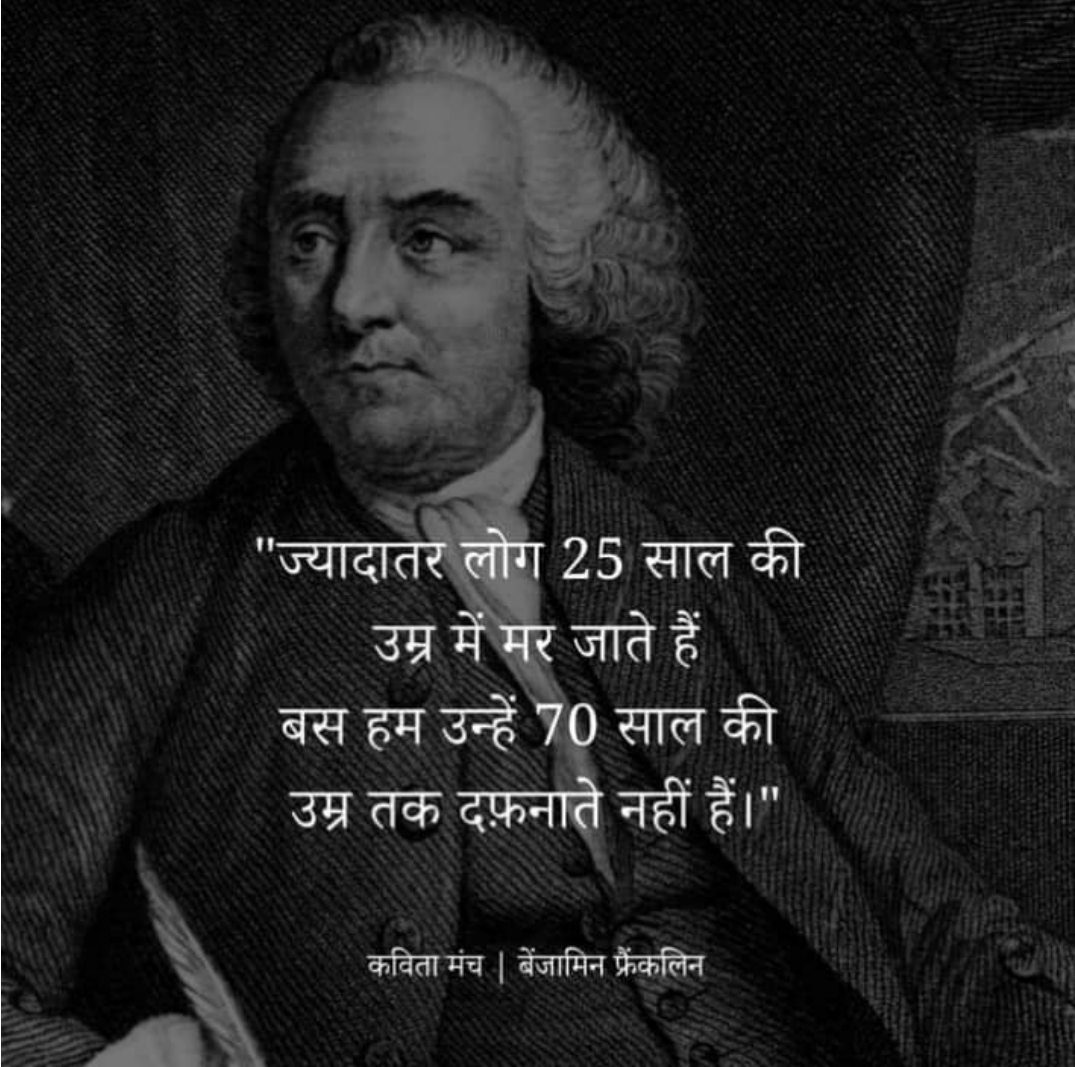
टालो मत। जो करना है उसे आज कर लो। कल पर भी मत टालो; क्योंकि कल मृत्यु है, जीवन आज है। जीवन सदा आज है। मृत्यु सदा कल है। अभी तक तुम मरे नहीं। आज तो जीवन है। अभी उतद्वो जलीवन। है। क्षण भर के बाद की कौन कहे! क्षण भर बाद तुम हो या न हो, इस जीवन का उपयोग इस जीवन का उपयोग तुम करते हो क्षुद्र में, व्यर्थ में; और सोचते हो : कल, जब सब काम चुक जायेगा, जीवन की दूकान बंद करने का समय आ जायेगा, तब फिर याद कर लेंगे परमात्मा को। तुम धोखा दे रहे हो, अपने को धोखा दे रहे हो।

मुक्त होना है तो अभी होना है। ध्यान करना है तो अभी करना है। प्रार्थना से भरना है तो अभी भरना है। एक—एक क्षण में तुम धीरे—धीरे प्रार्थना के मनके पिरोते चले जाओ तो मृत्यु के समय तक तुम्हारे जीवन की माला तैयार हो जायेगी।



ओशो

अष्टावक्र महागीता



"ज्यादातर लोग 25 साल की
उम्र में मर जाते हैं
बस हम उन्हें 70 साल की
उम्र तक दफ़नाते नहीं हैं।"

कविता मंच | बेंजामिन फ्रैंकलिन

आनन्द और उदासी, जीवन मे दोनो को सहर्ष स्वीकार करो

तुम्हारी स्वीकृति में जरा भी भेद न हो।

तुम चुनावरहित स्वीकार करो।

आनंद आए तो आनंद और उदासी आए तो उदासी।

तुम यह मत कहना कि

आनंद आए तो रुके, जाए न;

और तुम यह मत कहना कि

उदासी आई है तो चली जाए, रुके न।

आनंद आए तो आनंद मेहमान बने। स्वागत करना।

और उदासी आए तो उदासी का स्वागत करना--उतना ही
जितना आनंद का किया है।

तब तुम्हारे जीवन में एक क्रांति घट जाएगी।

कैसी क्रांति? कौन सी क्रांति?

तुम्हारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण घटना घटेगी!

और वह घटना यह है कि

तुम्हारे भीतर साक्षी का जन्म हो जाएगा।

तुम आनंद को भी आते देखोगी,

उदासी को भी आते देखोगी;

आनंद को जाते देखोगी,

उदासी को जाते देखोगी।

और तुम्हारे भीतर एक बात स्पष्ट हो जाएगी कि

मैं न तो आनंद हूं और न उदासी।

मैं दोनों का द्रष्टा,साक्षी।

मेरे सामने दोनों आते हैं, नाचते हैं, विदा हो जाते हैं।

मैं अछूता, दर्पण की भांति।

इस साक्षीभाव को अनुभव कर लेना

ही समस्त धर्मों का सार है.....!!

ओशो



जो सीख सकता है एक क्षण में
सीख लेगा ,
जो नहीं सीख सकता वह हजार
साल तक वैसे ही चूका चला
जाएगा...!!

असली सवाल समय का नहीं है
असली सवाल बोध का है,
यह तुमने खयाल किया कुछ
चीजें बोध से समझ आती हैं...!!

(आचार्य श्री रजनीश (Osho)
एस धम्मो सनंतनो-(23))



कोई तुम्हारी स्तुति कर जाता है, तुम फूलने लगते हो। और कोई तुम्हारी निंदा कर जाता है--और पंकचर कर गया और एकदम हवा निकल जाती है। ऐसी छोटी-छोटी बातें अगर तुम्हें आंदोलित करती हैं तो तुम कभी परमात्मा को उपलब्ध न हो सकोगे। उसे पाने के लिए तो तुम्हारे भीतर एक ऐसी परम शांति चाहिए, जिसको कोई चीज खंडित न करती हो--न स्तुति, न निंदा; न सफलता, न असफलता; न जीवन, न मृत्यु। कुछ मिल जाए तो ठीक; कुछ खो जाए तो ठीक। जिसके भीतर का ठीकपन कभी नष्ट ही न होता हो। जिसके भीतर का ठीकपन बना ही रहता हो। इसको जैनों ने सम्यकत्व कहा है। ठीक शब्द उपयोग किया है। सम्यकत्व का अर्थ होता है: ठीकपन। ठीक-ठीक जो बना ही रहता है भीतर। जिसके भीतर के ठीकपन में जरा भी भेद नहीं पड़ता। जो धीर है, थिर है, अकंप है।

ओशो... "अजहं चेत गंवार -19"

खुशहाल
जिंदगी TV

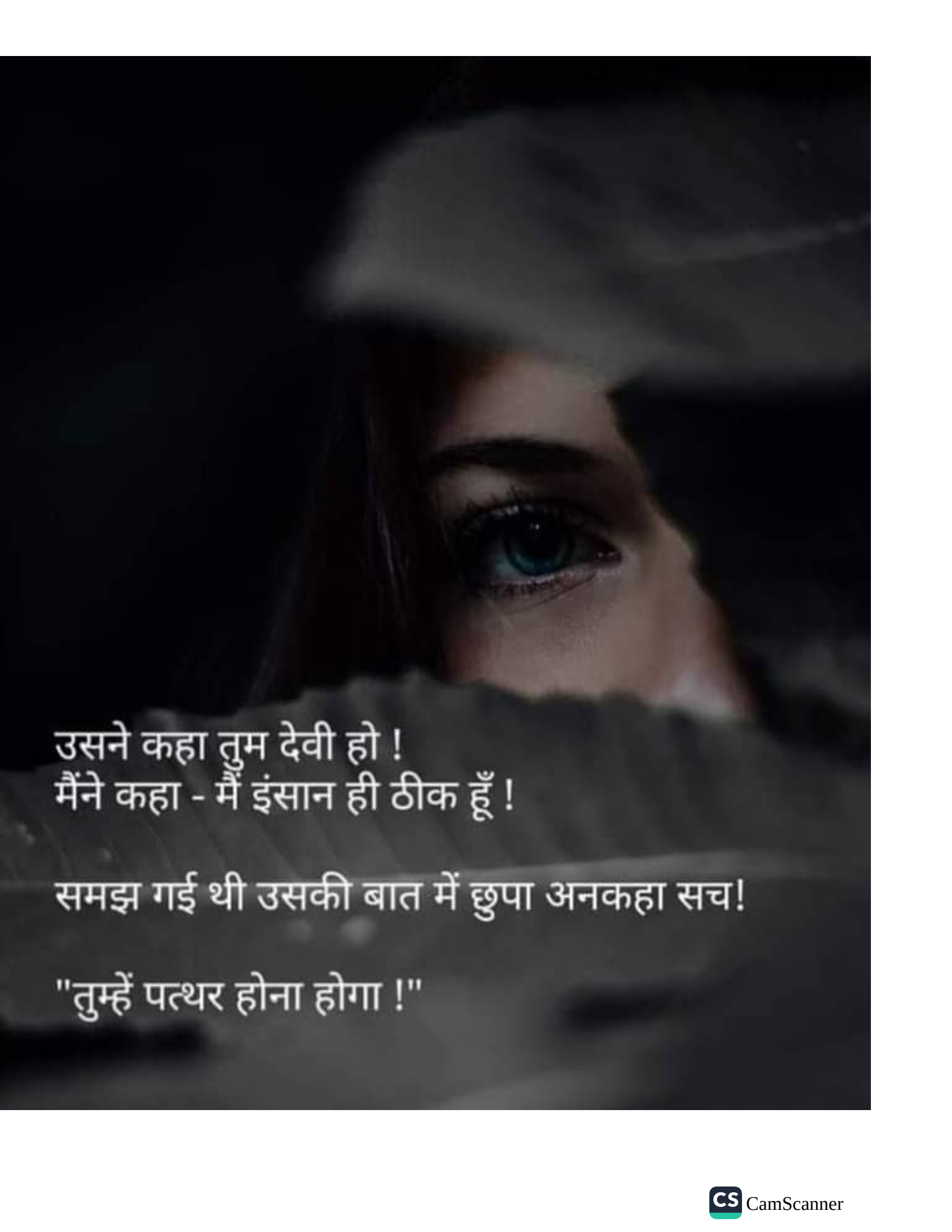
Khushhal Zindagi TV

रूप देख कर न उलझो रे, ये धोखे का जाल...!
सुंदर चिकने चाम के भीतर, भ्रमल मूत्र और कंकाल...!!

ज्यादा देने वाला हमेशा से ठगा गया है,
फिर चाहे वह प्रेम हो, साथ हो,
या विश्वास हो..

IG | Soulful Slogans





उसने कहा तुम देवी हो !
मैंने कहा - मैं इंसान ही ठीक हूँ !

समझ गई थी उसकी बात में छुपा अनकहा सच!

"तुम्हें पत्थर होना होगा !"

फिर जब वे उसे न समझा पाये तो उस नेवले को उन्होंने फांसी दे दी। जेम्स थरबर ने अंतिम वचन इस कहानी में लिखा है, कि *यह शिक्षा मिलती है कि अगर तुम अपने दुश्मनों के हाथ न मारे गये, तो अपने मित्रों के हाथ मारे* *जाओगे। मारे तुम जरूर जाओगे।

समाज भीड़ के मनोविज्ञान से जीता है। समाज में सत्य की चिंता किसे भी नहीं। दूसरों से सहमति बनी रहे इसकी ही चिंता है। समाज के साथ व्यक्ति कैसे समायोजित रहे, एडजस्टेड रहे, इसकी ही चिंता है। *समाज झूठ हो तो व्यक्ति को भी झूठ हो जाना पड़ता है।* व्यक्ति बहुत अकेला है। समाज बड़ा है। और जब तक समाज से बड़े का सहारा न मिले, तब तक इसके अतिरिक्त कोई उपाय भी नहीं कि समाज के साथ सहमत रहा जाये।

केवल वे ही लोग समाज के पार उठ पाते हैं जिन्हें ध्यान का सहारा मिल जाता है; क्योंकि तब उन्होंने विराट और अनंत के साथ अपना संबंध जोड़ लिया। तब उन्होंने सागर से संबंध जोड़ लिया। नदी से संबंध टूट भी जाये, डबरे से संबंध टूट भी जाये, तो कोई अंतर नहीं पड़ता।

ध्यान में प्रविष्ट होते ही व्यक्ति में एक समझ पैदा होती है, वो अंदर से तो विद्रोही होता है, लेकिन बाहर से समाज के साथ सामंजस्य बनाके रखता है। अन्यथा समाज बहुत बड़ी घटना है। चारों तरफ वे ही लोग हैं। उनसे जरा भी तुम भिन्न हुए कि तुम पागल हो। उनसे जरा भी तुम अन्य हुए कि तुम नासमझ हो।

ओशो



Naye bharat ke khoj

1h · 🌐



जेम्स थरबर की एक बहुत प्रसिद्ध कथा है कि सांपों के देश में एक बार एक शांतिप्रिय नेवला पैदा हो गया। नेवलों ने तत्क्षण उसे शिक्षा देनी शुरू की कि सांप हमारे दुश्मन हैं। पर उस नेवले ने कहा, 'क्यों? मेरा उन्होंने अब तक कुछ भी नहीं बिगाड़ा।' पुराने नेवलों ने कहा, 'नासमझ, तेरा न बिगाड़ा हो, लेकिन वे सदा से हमारे दुश्मन हैं। उनसे हमारा विरोध जातिगत है।' पर उस शांतिप्रिय नेवले ने कहा, 'जब मेरा उन्होंने कुछ नहीं बिगाड़ा तो मैं क्यों उनसे शत्रुता पालूं।'

खबर फैल गई नेवलों में कि एक गलत नेवला पैदा हो गया है, जो सांपों का मित्र और नेवलों का दुश्मन है। नेवले के बाप ने कहा, 'यह लड़का पागल है।' नेवले की मां ने कहा, 'यह लड़का बीमार है।' नेवले के भाइयों ने कहा, 'यह लड़का, यह हमारा भाई बुजदिल है।'

समझाया बहुत उसे कि यह हमारा फर्ज है, राष्ट्रीय कर्तव्य है, कि हम सांपों को मारें। हम इसीलिए हैं। इस पृथ्वी को सांपों से खाली कर देना है, क्योंकि उन के कारण ही सारी बुराई है। सांप ही शैतान हैं। उस शांतिप्रिय नेवले ने कहा, 'मैं *तो इसमें कोई फर्क नहीं देखता। सांपों को भी मैं देखता हूं, मुझे उन में कोई शैतान नहीं दिखाई पड़ता।* *उनमें भी संत हैं और शैतान हैं, जैसे हम में भी संत और शैतान हैं।'*

खबर फैल गई कि वह नेवला वस्तुतः सांप ही है। सांपों की तरह रेंगता है। और उससे सावधान रहना। क्योंकि शक्ल उसकी नेवले की है और आत्मा सांप की है। बड़े-बूढ़े इकट्ठे हुए, पंचायत की और उन्होंने आखिरी बार कोशिश की नेवले को समझाने की कि 'तू पागलपन मत कर।' उस नेवले ने कहा, 'लेकिन सोचना-समझना तो जरूरी है।' एक नेवला भीड़ में से बोला, 'सोचना-समझना गद्दारी है।' दूसरे नेवले ने कहा, 'सोचना-समझना दुश्मनों का काम है।'

फिर जब वे उसे न समझा पाये तो उस नेवले को उन्होंने फांसी दे दी। जेम्स थरबर ने अंतिम वचन इस कहानी में लिखा है, कि *यह शिक्षा मिलती है कि अगर तुम अपने दुश्मनों के हाथ न मारे गये, तो अपने मित्रों के हाथ मारे* *जाओगे। मारे तुम जरूर जाओगे।

समाज भीड़ के मनोविज्ञान से जीता है। समाज में सत्य की चिंता किसे भी नहीं। दूसरों से सहमति बनी रहे इसकी ही चिंता है। समाज के साथ व्यक्ति कैसे समायोजित रहे, एडजस्टेड रहे, इसकी ही चिंता है। *समाज झूठ हो तो व्यक्ति को भी झूठ हो जाना पड़ता है।* व्यक्ति बहुत अकेला



संसार में ईश्वर कही नहीं है
उनको ढूंढ़ने में
धन एवं समय व्यर्थ ना करें।



61K



724



209



Send

Use audio



oshoooo_

संसार में ईश्वर कही नहीं है



/a

Armonian · The



Add a comment...



द्वैत और अद्वैत

जब तक जीवन में द्वैत समाप्त नहीं होता।
हमारा जीवन प्रतिक्रियात्मक (REACTIONARY) होता है।

जैसे :- जब तक आपके सामने कोई घटना न घटे तब तक
आप अपनी मर्जी से रो भी नहीं सकते।
जब तक कोई आपका अपमान न कर दे आप क्रोधित हो ही
नहीं सकते।
यहां बाहर जो भी घटता है हम उसी के अनुसार क्रिया करते हैं
इसी को द्वैत कहते हैं
अर्थात् बाहर की स्थितियां आपके भीतर कोई प्रभाव न डाल
पाए यही अद्वैत है।



10K



93



69

🎵 Use audio



_spritual_j0urney_



Send

द्वैत और अद्वैत





ईश्वर चित्र में नहीं चरित्र में
बसते हैं अपनी आत्मा को ही
मंदिर बनाए
(...रजनीश...)



6.8K



15



741



oso_ek_mistory @

ईश्वर चित्र में नहीं चरित्र में बसता है रजनीश. 🙏 100



Send

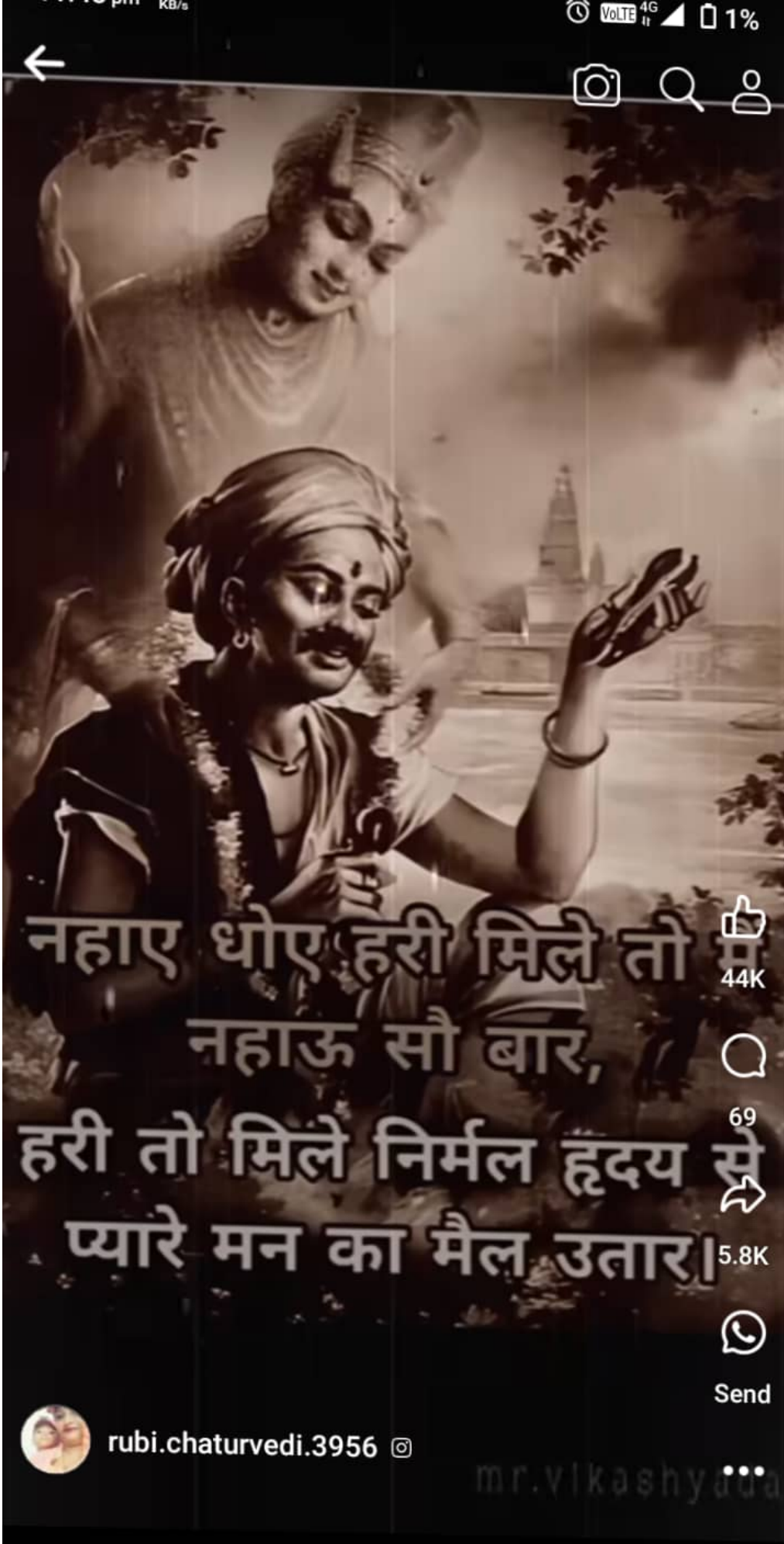
🎵 path of a Tyrant

Ti



Add a comment...





नहाए धोए हरी मिले तो मैं
नहाऊँ सौ बार,
हरी तो मिले निर्मल हृदय से
प्यारे मन का मैल उतार।



44K



69



5.8K



Send



rubi.chaturvedi.3956



mr.vikashyada



CamScanner



शक्तिहीन व्यक्ति, साधु होता है!

धनहीन व्यक्ति, ब्रह्मचारी होता है !

रोगी व्यक्ति, देवभक्त होता है !

बूढ़ी स्त्री, पतिव्रता होती है!

Use audio



chanakyakathan @

अगर post अच्छी लगे तो like,comment and sh... more



Kailash Kher, Bapi Ti



14K



60



313



Send



Add a comment...





भगवान बुद्ध कहते हैं....

भोजन का त्याग करने से
ईश्वर कभी खुश नहीं होते
अगर त्याग करना ही है तो गंदे विचार
अहंकार और गंदे कर्मों का करिए ।



4.7K



209



307

★ Send a gift
motivational suvichar



Motivational Suvichar

Follow



Send

Raj Bhardwaj commented: बुद्ध खुद ईश्वर को नकारते है
अब कौन ईश्वर है बुद्ध के लिये😂

Add a comment...





"बुद्ध ज्ञान"

मृत शरीर को छू लेने से

इंसान दो बार सनान करता है



22K

परंतु वही मूर्ख मनुष्य



पशुओं का मृत शरीर भोजन के रूप में

153

कैसे स्वीकार करता है..?



2.6K

🎵 Use audio



spiritual_being_official



Send

Buddhist Motivational Thoughts... more



ये बड़े मझे की बात है। बुद्धी में
प्रश्न ही प्रश्न, और हृदय में उत्तर
ही उत्तर।



14K



58



1.4K

Use audio



updatedsanyasi

बुद्धि की क्षमता #osho #bhakti



Send

ite)

A.R. Rahman





स्मरण रहे, बुद्धी केवल प्रश्न
उठाने में कुसल है। उत्तर देने में
बिल्कुल नपुंसक है।



14K



58



1.4K

Use audio



updatedsanyasi

बुद्धि की क्षमता #osho #bhakti



Send

A.R. Rahman · Jashn-E-B



अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारे घर-परिवार में
शांति बनी रहे तो अपने घर में ज्योतिषी और
तांत्रिक को कभी मत घुसने देना!!

~ ओशो 🍁



KheloeXch

LINK IN BIO

🎵 Use audio

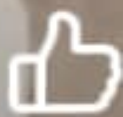


anmol.oshovani



अगर दुनिया अल्लाह ने बनाई तो सबको
मुसलमान क्यों नहीं बनाया और दुनिया ईश्वर ने
बनाई तो सबको हिंदू क्यों नहीं बनाया!!

~ओशो



18K



226



लेकिन दोनों नदी के साथ बह रहे हैं।

osho_gyanvarsha



72K



251



2.7K



Send



osho_gyanvarsha

गीता को लोग समझ नहीं पाए। गीता को लोगों ने समझ... mo...

Add a comment...





जो आदमी गंगा में बह रहा है,

osho_gyanvarsha



72K



251



2.7K



Send



osho_gyanvarsha

गीता को लोग समझ नहीं पाए। गीता को लोगों ने समझ... mo...





सुसाईड नोट

अब इंसानों से मुकाबला
नहीं कर पा रहा हूँ
"रंग बदलने में"

गिरगिताधिराज
(सुन्दर वन)

शक्तिराम



Naye bharat ke khoj

3h · 🌐

...



जो व्यक्तिगत समस्याओं को हटाये...वह गुरु नहीं हो सकता। गुरु वह जो समस्याओं के भीतर से तुम्हें हटा दे....समस्याएं तो आती जाती रहेंगी...बस तुम्हें न छू पायेंगी।

वह जो घर दे , नौकरी दे दे , बच्चे दे वह दे कुछ नहीं रहा हैं। वह सब तो तुम्हें देर अवेर मिल ही जाना हैं। संसार में जाल लेकर तथाकथित गुरु बैठे हैं। संसार के काम गुरु चेला दोनों संसार के जाल में हैं। बड़ी मजे की बात वह अपना नाम भी सरकार रख लेते हैं....ताकि तुम समझ सको कि तुम प्रजा हो। गुरु वह जो तुम्हारे हृदय में बैठ जाए और तुम्हें भी अपने हृदय में जगा दे तभी तो समझ एक हो पायेगी।

एक समय आता हैं जब शिष्य और गुरु में सब समानांतर कोई छोटा नहीं कोई बड़ा नहीं रह जाता । यह तब ही संभव है जब कोई शिष्य ...अपने को मिटा दे...शिष्य भी न रहें तो गुरु धीरे से खिसक लेता हैं और शिष्य ही गुरु हो जाता हैं...मतलब बुद्धपुरुष... बुद्ध...बहुत बुद्ध चाहिए.... किसी भी बुद्ध को कभी भी किसी भी बुद्ध से खतरा नहीं होता....क्योंकि बुद्ध तो बुद्ध ही चाहता हैं। जो बुद्ध नहीं चाहता वह बुद्ध हुआ भी नहीं....
आज इतना ही

**Anamcara Rames**

5d · 🌐

हमारे मन न मालूम कहां-कहां के सवाल उठाते हैं! हम सोचते हैं, भारी काम हो रहा है। वह मित्र कल मुझे चिट्ठी लिखकर दे गए हैं, दो दिन से रोज चिट्ठी लिखकर देते हैं, कि वे यहां आधा घंटा मंच पर आकर एक बात सिद्ध करना चाहते हैं। वे यह सिद्ध करना चाहते हैं कि मैं मूर्ख हूं। इसे सिद्ध करने की कोई जरूरत नहीं है। मैं बिना सिद्ध किए इसे मान लेता हूं। इसे सिद्ध तो तब करना पड़े, जब मैं कहूं कि मैं नहीं हूं या उनकी बात को गलत कहूं। मैं मूर्ख हूं। क्योंकि अगर मैं मूर्ख न होऊं, तो उन जैसे बुद्धिमान जनों को समझाने की कोशिश ही क्यों करूं। सहज-साफ ही है।

इसको सिद्ध करने की कोई जरूरत नहीं है। क्योंकि सिद्ध करने में समय व्यय करना है। मैं मान ही लेता हूं।

कृष्ण के वक्त में अगर वे होते, तो कृष्ण ने एक सूत्र अर्जुन से और कहा होता। उन्होंने कहा होता, हे कौन्तेय, जिनके दिमाग के स्कू थोड़े ढीले हैं, उनमें भी मैं हूं। वह कृष्ण नहीं कह पाए, यह एक नुकसान हुआ। उनकी मौजूदगी जरूरी थी। गीता ज्यादा समृद्ध हुई होती। उसमें एक सूत्र और उपलब्ध हो जाता। लेकिन यह बात पक्की है, स्कू ढीले हों कि ज्यादा कसे हों, मैं उनके भीतर हूं। इसमें कोई शक-शुबहा नहीं है। इस तरह की बातें हमारे मुल्क के मन में न मालूम कैसे-कैसे घूमती रहती हैं! इन सारी बातों ने हमारे मुल्क को एकदम क्षुद्रतम हालत में खड़ा कर दिया है।

सोचें विराट को, खोजें विराट को; व्यर्थ की बातों में समय जाया न करें।



आचार्य श्री रजनीशOsho

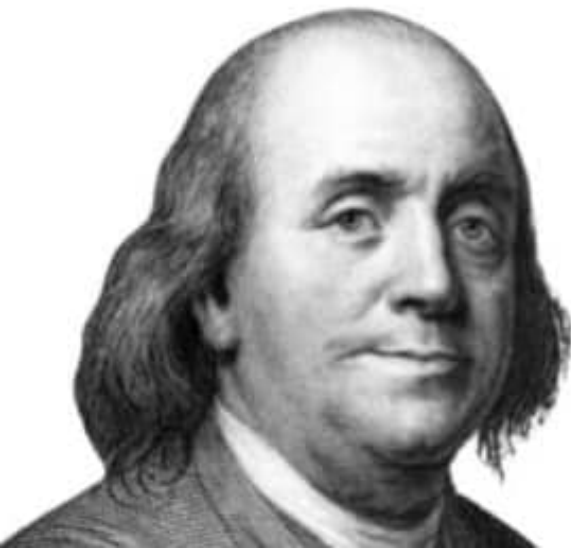
गीतादर्शनअ.9.प्र.12/111 नीति और धर्म

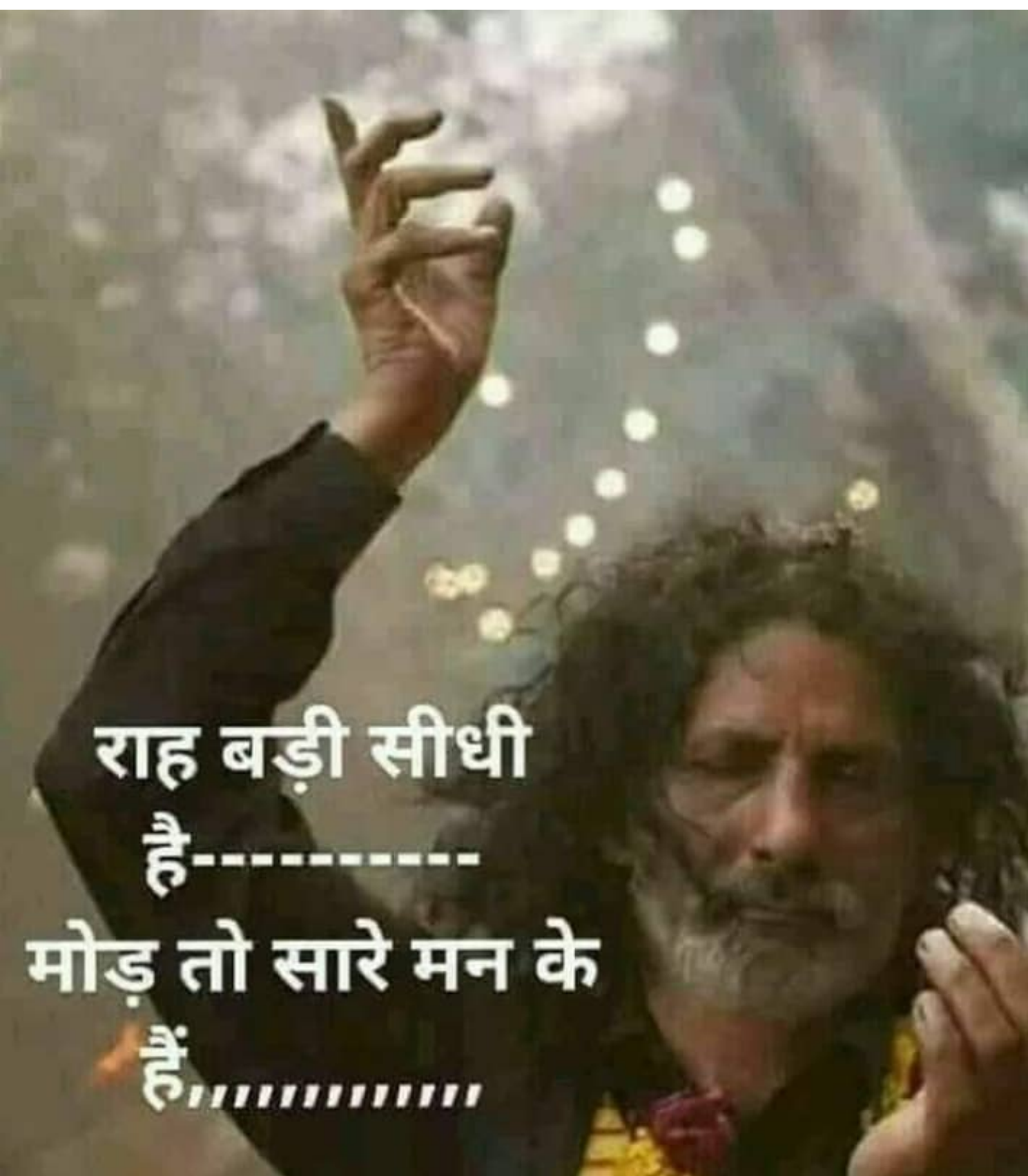


“

तीन वफ़ादार
दोस्त होते हैं,
बूढ़ी पत्नी, बूढ़ा कुत्ता
और नकद धन।

बेंजामिन फ्रैंकलिन | तर्क साहित्य





राह बड़ी सीधी
है-----

मोड़ तो सारे मन के
हैं,//////////



अहोभाव · 1d · 🌐

अहोभाव

भक्ति की शुरूआत का अर्थ है कि न मैं करनेवाला हूं, न मैं कर सकता हूं-मैं हूं ही नहीं, वही है! और तब तुम्हारे मन में उसके प्रति अनन्य प्रेम का जन्म होता है।

तुम्हारा सारा बोझ वही ढो रहा है।

और तब तो भक्त ऐसी घड़ी में आ जाता है कि वह जानता है कि भक्ति भी करने का सवाल नहीं, _ प्रार्थना भी मेरे किये न होगी। वही प्रार्थना करेगा; मुझसे तो होगी। अब तो उसकी तरफ जाना भी मुझसे न होगा; वही चलेगा मेरे पैरों से तो ही पहुंच पाऊंगा।

धीरे-धीरे उसे अपनी असहाय अवस्था का बोध होता है कि मैं तो कुछ भी नहीं हूं। अब तो मुझ गरीब का पैर भी नहीं उठता! वही उठाये तो उठता है। और अब भय भी क्या, हर भी क्या! अगर उसे पहुंचना ही है तो मंजिल खुद ही आकर बीच राह में मुझे ले लेगी।

इस लिए भक्त किनारे को नहीं मांगता। वह तो कहता है, "तू अगर मंझधार में भी डुबा दे तो वही किनारा है।" उसने अपना सारा बोझ उसी को दे दिया।

ओशो

← Reels ▾



॥ शिवत्व ॥

शिवत्व का अर्थ है शिव होना मात्र।
"शिव" एक देवता, एक भगवान, एक विशेष व्यक्तित्व नहीं है।
शिव, मानव की वो अवस्था है जहां मनुष्य में कुछ शेष नहीं रहता।
न मन, न शरीर, न मोक्ष, न बंधन, न धर्म, न अधर्म।
केवल आनंद केवल समाधि।
शिवत्व, ध्यान की ही चरम अवस्था है।

न कामः न अर्थः न धर्मः न मोक्षः
चिदानंदरूपः शिवो ह्य शिवो ह्य।



54K



267



235

🎵 Use audio



_spritual_j0urney_ @

शिव



Send



Neelambari Kirkin



Add a comment...



इसलिए मैं तुम्हें यह भी आगाह कर दूँ कि मेरे चले जाने के बाद तुम मेरे आधार से किसी को मत जांचना, क्योंकि फिर तुम्हारा संबंध न बन पाएगा। तुम जब भी किसी को जांचने जाओ तो खुले मन से जांचना; कोई आधार लेकर मत जाना; कोई पक्षपात लेकर मत जाना। सब पक्षपात हटा कर शांत मौन भाव से सुनना। और जो भी तुम सुनो, जल्दी विश्वास कर लेने की कोई भी जरूरत नहीं है, न अविश्वास करने की कोई जरूरत है। दोनों एक जैसे हैं। कुछ लोग सुनते ही से विश्वास कर लेते हैं और कुछ लोग सुनते ही से अविश्वास कर लेते हैं। ये दोनों ही बातें जल्दबाजी की हैं। न विश्वास की जल्दी करो, न अविश्वास की। अनुभव की चिंता लो। सारी ऊर्जा अनुभव में लगाओ।

तुमने मेरे से कोई बात सुनी, अब तुम परखना इसको अपने अनुभव में। अगर अनुभव कह दे कि ठीक, तो ठीक। अनुभव कह दे गलत, तो किसी ने भी कही हो, किसी बुद्धपुरुष ने कही हो, कोई मूल्य नहीं रखती। अंततः तुम्हारा अनुभव ही निर्णायक है। अंततः तुम ही निर्णायक हो।

ओशो... "अजहं चेत गंवार -19"

मैं हिंदू नहीं हूँ। मुझे वेद के साथ कुछ लेना-देना नहीं है। अगर कभी मैं वेद की किसी बात को सच भी कहता हूँ, तो इसीलिए कि वह मैंने अनुभव की है। बात तो मैं अपनी ही सच कहता हूँ। वेद में भी लिखी है, इसलिए वेद का भी उद्धरण दे देता हूँ। लेकिन वेद में लिखे होने के कारण वह सच नहीं है; मेरे अनुभव में आई है, इसलिए सच है। और जो मेरे अनुभव में आया है और वेद में उसके विपरीत लिखा है, वह गलत है। मुझे वेद से कुछ लेना-देना नहीं है। अगर वेद सही होगा तो मेरी कसौटी पर सही होगा और गलत होगा तो मेरी कसौटी पर गलत होगा। वह जो पंडित है, वह जो सांप्रदायिक वृत्ति का आदमी है: वेद सही ही है, और कोई कसौटी नहीं है। वेद में है, इसलिए सही है।

बुद्ध ने कहा है अपने शिष्यों को कि तुम तब तक मेरी बात मत मान लेना, जब तक कि तुम्हारे अनुभव में न आ जाए। मैं लाख कहूँ, सुन लेना, समझ लेना; मगर मानना मत। मानना तो तभी, जब तुम्हारे अनुभव में आ जाए। और जब तुम्हारे अनुभव में आ जाएगी, तभी सच होगी; नहीं तो झूठ रह जाएगी।

मेरा सत्य मेरा सत्य है। तुम उसे दोहराओगे, झूठ हो जाएगा। जब तुम भी उसे अनुभव में ले आओगे, तभी सच होगा। तुम्हारे अनुभव में आने के कारण सच होगा। उधार अगर सत्य भी ले लिया तो झूठ हो जाता है।

लेकिन हमारी हिम्मत नहीं होती। हमारे संस्कार हैं बंधे हुए। अगर कोई मुसलमान मेरे पास आता है तो वह भीतर से अनजाने, अचेतन मन से, झांकता रहता है कि जो मैं कह रहा हूँ वह कुरान से मेल खाता है या नहीं। अगर खाता है तो ठीक; अगर मेल नहीं खाता है तो गलत। कुरान तो गलत हो ही नहीं सकता। यही अड़चन है। कुरान चौदह सौ साल पुरानी किताब है, चौदह सौ साल पुरानी भाषा है। फिर मोहम्मद एक ढंग के आदमी थे, मैं दूसरे ढंग का आदमी हूँ। मेरी अभिव्यक्ति मेरी है, उनकी अभिव्यक्ति उनकी है। अगर तुम मुझे मोहम्मद से जांचने चले तो तुम्हारा मुझसे कोई संबंध न बन पाएगा। अगर तुम मोहम्मद के भी पास गए होते तो मुझसे तुमने मोहम्मद को जांचा होता, तो मोहम्मद से भी कोई संबंध नहीं बन सकता था।

इसलिए मैं तुम्हें यह भी आगाह कर दूँ कि मेरे चले जाने के बाद तुम मेरे आधार से किसी को मत जांचना, क्योंकि फिर तुम्हारा संबंध न बन

और पलटू कहते हैं: बड़ा मजा चल रहा है। दो-चार कोस में दस-बीस भक्त मिल गए हैं, वे चक्रवर्ती हो गए! सारे संसार में जैसे उनका राज्य स्थापित हो गया! पलटू यह कह रहे हैं कि इन छोटी-छोटी बातों में मत उलझ जाना और इन छोटे-छोटे दुकानदारों में मत उलझ जाना। अगर हिम्मत हो तो किसी से विवाह रचाना, जिसको सत्य मिला हो। अगर हिम्मत हो तो किसी आंख वाले के साथ आंखें मिलाना। अगर हिम्मत हो तो किसी हिम्मतवर से दोस्ती गांठना। उस दोस्ती का कोई परिणाम हो सकता है। उससे क्रांति आ सकती है। बुझे दीयों के पास मत बैठे रहना--जले दीये के पास जाना। पास जाते-जाते किसी क्षण जले दीये से लपट तुम में भी छलांग लगा लेगी; तुम्हारा बुझा दीया भी जल जाएगा। जले दीये का तो कुछ भी न खोएगा। जले दीये का क्या खोता है? तुम एक जलते दीये से हजार दीये जला लो, जलते दीये का कुछ नहीं खोता। ऐसा थोड़ा ही है कि हजार दीये जला लिए तो जला हुआ दीया अब गरीब हो गया, क्योंकि हजार दीये जल गए। लेकिन हजार दीयों को कितना मिल गया, यह तो सोचो, यह मजा तो देखो! जलते का कुछ भी नहीं खोता, बुझे को कितना मिल जाता है!

जलता हुआ दीया कौन?

जिसके पास अपनी रोशनी हो। और हमारी अड़चन यही है कि रोशन आदमी को हम नहीं पहचान पाते। क्योंकि रोशन आदमी अपनी भाषा बोलता है और हम संप्रदाय की भाषा पहचानते हैं। संप्रदाय की भाषा का मतलब होता है: अगर तुम हिंदू हो तो मेरे साथ तुम्हारा संबंध न जुड़ सकेगा; अगर तुम मुसलमान हो तो मेरे साथ संबंध न जुड़ सकेगा। अगर तुम हिम्मतवर मुसलमान हो, तो ही मुझसे संबंध जुड़ सकेगा; हिम्मतवर हिंदू हो तो ही मुझसे संबंध जुड़ सकेगा। अगर तुमने यह सोचा कि मैं यहां वेद को दोहरा रहा होऊंगा और अंधे की तरह वेद में जो कुछ कहा है सबको ठीक कहूंगा, तो तो फिर मुझसे संबंध न जुड़ सकेगा।

मैं हिंदू नहीं हूं। मुझे वेद के साथ कुछ लेना-देना नहीं है। अगर कभी मैं वेद की किसी बात को सच भी कहता हूं, तो इसीलिए कि वह मैंने अनुभव की है। बात तो मैं अपनी ही सच कहता हूं। वेद में भी लिखी है, इसलिए वेद का भी उद्धरण दे देता हूं। लेकिन वेद में लिखे होने के कारण वह सच नहीं है; मेरे अनुभव में आई है, इसलिए सच है। और जो मेरे अनुभव में आया है और नेट में उद्धरण मिलता है वह सच है।

दस-बीस शिष्य परमोधि लिया,
सबसे वह गोड धरावते हैं।
संतन की बानी काटिके, जी
जोरि-जोरि के आप बनावते हैं।

कुछ अपना अनुभव नहीं है, कुछ अपना साक्षात्कार नहीं है। दूसरों की उधार बाते हैं। उन्हीं को दोहराते हैं। अपनी आंख नहीं है; वेद का उद्धरण दे सकते हैं और कुरान की आयत दोहरा सकते हैं। लेकिन न वेद का कोई मूल्य है न कुरान का कोई मूल्य है। जब तक तुम्हारे भीतर वेद का जन्म न हो, जब तक तुम्हारी आंख न खुले--तब तक कोई बात काम की नहीं है। तब तक तुम ग्रामोफोन के रिकॉर्ड हो। तब तक तुम दोहरा सकते हो। कितनी ही शुद्ध भाषा में दोहराओ, तुम्हारे दोहराए का मूल्य दो कौड़ी भी नहीं है। अगर तुम्हें अपना अनुभव हो और संस्कृत भी न आती हो और अरबी भी न आती हो और तुम्हें भाषा का भी कोई ठीक पता न हो, व्याकरण भी न आती हो--तब भी कोई फर्क नहीं पड़ता। अगर तुम्हें अनुभव हुआ तो तुम्हारी टूटी-फूटी भाषा में, तुम्हारे तुतलाने में भी परमात्मा की झलक होगी। पांडित्य से कोई संबंध धर्म का नहीं है--अनुभव से है।

पलटू कोस चारि-चारि के गिर्द में, जी
सोइ चक्रवर्ती कहलावते हैं।।

और पलटू कहते हैं: बड़ा मजा चल रहा है। दो-चार कोस में दस-बीस भक्त मिल गए हैं, वे चक्रवर्ती हो गए! सारे संसार में जैसे उनका राज्य स्थापित हो गया! पलटू यह कह रहे हैं कि इन छोटी-छोटी बातों में मत उलझ जाना और इन छोटे-छोटे दुकानदारों में मत उलझ जाना। अगर हिम्मत हो तो किसी से विवाह रचाना, जिसको सत्य मिला हो। अगर हिम्मत हो तो किसी आंख वाले के साथ आंखें मिलाना। अगर हिम्मत हो तो किसी हिम्मतवर से दोस्ती गांठना। उस दोस्ती का कोई परिणाम हो सकता है। उससे क्रांति आ सकती है। बुझे दीयों के पास मत बैठे रहना--जले दीये के पास जाना। पास जाते-जाते किसी क्षण जले दीये से लपट तुम में भी छलांग लगा लेगी; तुम्हारा बुझा दीया भी जल जाएगा। जले दीये का तो कुछ भी न खोएगा। जले दीये का क्या खोता है? तुम एक जलते दीये से हजार दीये जला लो, जलते दीये का कुछ नहीं खोता। ऐसा थोड़ा ही है कि हजार दीये जला लिए तो जला हुआ


Osho Janaki Dhyana Kendra

54m · 🌐



यह दुनिया कुछ ऐसी है कि यहां मूढ़ से मूढ़ आदमी भी दस-बीस शिष्य पा सकता है। इसमें कुछ अड़चन नहीं है। यहां इतने एक से एक पहुंचे हुए मूढ़ पड़े हैं कि अगर तुमने तय कर लिया तो तुम्हें भी दस-बीस शिष्य मिल जाएंगे, इसमें कोई अड़चन नहीं है। इसमें अड़चन ही क्या है!

दस-बीस शिष्य परमोधि लिया, दस-बीस शिष्य के कान फूंक दिए। सबसे वह गोड़ धरावते हैं! फिर वे दस-बीस उनके पैर दाबने लगे। फिर दूसरों में भी सनक चढ़ती है। ये बीमारियां छूत की होती हैं; लगने लगती हैं दूसरों में भी, कि जब दस-बीस पैर दाब रहे हैं तो कुछ होगा। आदमी इतना बंदर जैसा है!

बंबई में मैं मृदुला के घर में मेहमान था। दो सज्जन मुझे मिलने आए थे--जो मुझे वर्षों से जानते हैं और हमेशा आते थे; कुछ नये नहीं थे; कम से कम दस साल से निरंतर मुझे मिलने आते, जब भी मैं बंबई होता। कभी उन्होंने एक पैसा मेरे चरणों में नहीं रखा था। कोई बात भी नहीं थी, कोई जरूरत भी नहीं थी। उस दिन संयोगवशात एक नये सज्जन मुझे मिलने आए। ये दोनों बैठे थे। उन नये सज्जन ने जल्दी से आकर चरण छुए और सौ रुपये का एक नोट निकाल कर मेरे पैर में रखा। मैं तो चकित हुआ। वे जो दो बैठे थे, जो दस साल से आते थे, उन्होंने भी जल्दी से सौ-सौ के नोट निकाल कर...! मैंने कहा कि भाई तुम्हें क्या हो गया? इन्होंने रखा, ये नये हैं। इनको मैं लौटाने ही जा रहा था, मगर यह तुम्हें क्या हो गया?

छूत की बीमारियां लगती हैं। एक आदमी खांसने लगे यहां, अनेक की खांसी चलने लगेगी। एक आदमी चला बाथरूम की तरफ, तुम्हें भी अचानक खयाल आता है कि अरे...लघुशंका एकदम पकड़ती है।

आदमी नकलची है। तुम एकाध शिष्य बना लो; वह एकाध दस-बीस को ले आएगा।

पलटू कहते हैं:

दस-बीस शिष्य परमोधि लिया,
सबसे वह गोड़ धरावते हैं।

**Anamcara Rames**

3 Apr · 🌐

बुरे आदमी की अपनी नैतिक व्यवस्था है; क्योंकि वह यह समझता है कि बिना उस व्यवस्था के जीना असंभव है। बाहर तो वह लड़ ही रहा है, अगर भीतर अपने गिरोह में भी लड़े, तो अति कठिनाई हो जाएगी। समाज को नैतिकता की व्यवस्था जारी रखनी ही पड़ेगी, क्योंकि आदमी इतना अज्ञानी है। लेकिन समाज यह भी जोर देता है कि जब तक कोई नैतिक न होगा, तब तक वह धार्मिक नहीं हो सकता। यह वक्तव्य जरूरी है, लेकिन खतरनाक है और असत्य है। सचाई उलटी है। सचाई यह है कि जब तक कोई धार्मिक न होगा, तब तक उसकी नैतिकता आरोपित, थोपी हुई, ऊपर से लादी हुई होगी, अस्थाई होगी; आंतरिक नहीं होगी, आत्मिक नहीं होगी।

धार्मिक होकर ही व्यक्ति के जीवन में नीति का आविर्भाव होता है। उस नीति का, जो किसी भय के कारण नहीं थोपी गई होती। न किसी प्रलोभन, न किसी पुरस्कार के लिए, न स्वर्ग के लिए; न नर्क के डर से, न स्वर्ग के लोभ से; न प्रतिष्ठा के लिए, न सम्मान के लिए, न सुविधा के लिए, बल्कि इसलिए कि भीतर अब नैतिक होने में ही आनंद मिलता है और अनैतिक होने में दुख मिलता है। लेकिन ऐसी नैतिकता का जन्म धर्म के बाद होता है।



आचार्य श्री रजनीशOsho

गीतादर्शनअ.9.प्र.12/111

नीति और धर्म

स्वर्ग या देव—योनि का अर्थ है, जहां सुख ही सुख है। जहां सुख ही सुख है, वहां छोड़ने का खयाल ही न उठेगा। इसलिए देवता गुलाम हो जाते हैं, छोड़ने का खयाल ही नहीं उठता।

नरक से भी मुक्ति नहीं हो सकती और स्वर्ग से भी मुक्ति नहीं हो सकती। जिन्होंने ये वक्तव्य दिए हैं, उन्होंने बड़ी गहरी खोज की है। क्योंकि नरक में दुख ही दुख है, और अगर दुख ही दुख हो, तो आदमी दुख का आदी हो जाता है। यह थोड़ा समझ लें।

अगर दुख ही दुख जीवन में हो, सुख की कोई भी अनुभूति न हो, तो आदमी दुख का आदी हो जाता है। और जहां सुख का कोई अनुभव ही न हो, वहां सुख की आकांक्षा भी धीरे—धीरे तिरोहित हो जाती है। सुख की आकांक्षा वहीं पैदा होती है, जहां आशा हो। इसलिए दुनिया में जितनी सुख की आशा बढ़ती है, उतना दुख बढ़ता जाता है।

🍀❤️🍀ओशो🍀❤️🍀

गीता दर्शन--(भाग--6)

प्रवचन--153





स्वर्ग या देव-योनि का अर्थ है, जहां सुख ही सुख है। जहां सुख ही सुख है। जहां सुख ही सुख है।





स्वर्ग है सुख, जो तुम पाना चाहते हो।
नर्क है दुख, जिससे तुम बचना चाहते हो।
दोनों भविष्य हैं। दोनों कामना में हैं।
दोनों मन के फंदे हैं। जब तुम दोनों को ही
छोड़ देते हो, अभी और यहीं जिसे मोक्ष कहो,
निर्वाण कहो, वह उपलब्ध हो जाता है।

ओशो : एस धम्मो सन्नतनो

[← Reels](#) ▾

दो शरीर के बीच संभोग हो तो काम
दो मनो के बीच संभोग हो तो प्रेम
दो आत्माओं के बीच, दो शून्यों के बीच
संभोग हो तो समाधि...



Osho the bhagvan

[★ Send a gift](#)**Osho the bhagvan** 🔒

Mangesh Makode commented: माहाराज जि समझ मे नही आया ???



47



3



1



Send

DJ GROSSU · Nature of Lc

8K ULTRA HD by fvc



Add a comment...



इसलिए तुम्हें गरीब आदमी भला मालूम होता है, क्योंकि उसके पास समय नहीं है उपद्रव करने को। गरीब आदमी में और कुछ खूबी नहीं है। गरीबी में जो अध्यात्म मालूम होता है वह गरीबी में नहीं है; उसका असली कारण केवल इतना है, उसके पास उपद्रव का समय नहीं है। रोटी-रोजी कमाए कि लड़े-झगड़े? बच्चे पाले कि जुआ खेले? किसी तरह छप्पर बचाए, कपड़े लाए कि शराब पीए? समय उसके पास है नहीं। उसके पास सपने तक देखने का समय नहीं है। रात जब सोता है तो घोड़े बेच कर सोता है। अमीर जब रात सोता है तो सो भी नहीं सकता। उसके पास इतना समय है कि वह दिन भर भी आराम करता रहा, अब रात नींद कैसे आए?

विज्ञान ने अहंकार दे दिया। ज्ञान सदा अहंकार देता है। और ज्ञान ने सुविधाएं दे दीं कि काम जल्दी से हो सकते हैं। मैं विज्ञान का विरोधी नहीं हूं, खयाल रखना। और न ही मैं इस बात का विरोधी हूं कि मशीनें समाप्त कर दी जाएं। लेकिन अगर मनुष्य में समझ हो... अगर मैं उस बूढ़े आदमी से मिला होता तो उससे कहता कि जब समय बचे तो ध्यान करना। कोई शतरंज खेलने की मजबूरी थोड़े ही है। कोई जुआ खेलने की जबरदस्ती थोड़े ही है। समय बचे तो ध्यान करना। समय बचे तो प्रार्थना में डूबना। समय बचे तो नाचना--परमात्मा की कृतज्ञता और धन्यवाद में।

लेकिन कनफ्यूशियस की दृष्टि में परमात्मा और प्रार्थना का कोई स्थान नहीं था। इसलिए कनफ्यूशियस उस बूढ़े की बात का जवाब नहीं दे सका। मैं गरीबी के पक्ष में नहीं हूं, क्योंकि गरीबी के कारण जो आदमी में सरलता दिखाई पड़ती है वह थोथी है। मैं तो अमीरी का पक्षपाती हूं। मैं चाहता हूं अमीर हो जाओ जितने हो सकते हो। लेकिन अमीर होने से कोई मतलब यह नहीं है कि तुम्हें शराब ही पीनी पड़ेगी। अरे और भी शराबें हैं! परमात्मा की शराब है। समय होगा तो उसे पीना। समय तो होना चाहिए, लेकिन ठीक दिशा में नियोजित करने के लिए अगर समझ हो तो कोई हर्जा नहीं।

विज्ञान ने अहंकार दे दिया और विज्ञान ने तुमसे प्रतीक्षा छीन ली। तुम धैर्य रखना ही भूल गए। तुम्हें स्मरण ही नहीं रहा कि धैर्य का भी एक आनंद है, कि बैठे चुपचाप समय को गुजर जाने देने का भी एक मजा है।





ओ शो वाणी

Seema Mangal · 3h ·

...



पुरानी चीनी कथा है। एक बूढ़ा आदमी अपने जवान बेटे के साथ कुएं से पानी खींच रहा है। दोनों बैल की तरह जुते हैं और पानी खींच रहे हैं। शहर से आया हुआ एक आदमी, जो कनफ्यूशियस का शिष्य है, वह इन दोनों को इस भरी दोपहरी में, पसीने से लथपथ, और यह बूढ़ा होगा कोई सत्तर साल से भी ज्यादा उम्र का और इसका जवान बेटा और ये दोनों बैलों की तरह जुते हैं। उसने बूढ़े से कहा कि लगता है तुम्हें पता नहीं कि अब पानी खींचने के नये आविष्कार हो गए हैं!

बूढ़े ने कहा, चुप! बिलकुल चुप! पहले मेरे बेटे को चले जाने दो। अभी यह घर जाएगा रोटी लेने, फिर तुमसे बात करूंगा।

बेटा रोटी लेने गया, वह कनफ्यूशियस का अनुयायी बोला कि तुमने मुझे चुप क्यों किया?

उसने कहा, मेरे बेटे के कारण, क्योंकि वह सुन ले तो उसकी जिंदगी नष्ट हो जाए। मुझे पता है कि पानी खींचने के नये यंत्र आविष्कृत हो गए हैं। अब हमें बैलों की तरह जुतने की जरूरत नहीं है।

तो उस कनफ्यूशियस के मानने वाले ने कहा कि फिर तुम कैसे पागल हो! फिर क्यों मेहनत कर रहे हो? कितना समय नहीं बच जाएगा!

उस बूढ़े ने कहा, वह तो मुझे भी मालूम है, समय बच जाएगा। लेकिन मैं यह पूछता हूं, फिर मैं उस समय का क्या करूंगा? लड़ूंगा, झगड़ूंगा, जुआ खेलूंगा, शराब पीऊंगा--फिर मैं उस समय का क्या करूंगा? पहले तुम इसका उत्तर लाओ कि समय बच जाएगा तो मैं उस समय का क्या करूंगा? अपने गुरु कनफ्यूशियस से पूछो कि समय का क्या करूंगा, फिर तुम आना।

जब वह व्यक्ति कनफ्यूशियस के पास पहुंचा तो कनफ्यूशियस ने कहा, तुम्हें उस बूढ़े को परेशान करने की जरूरत नहीं। वह बहुत बुद्धिमान है। उसने ठीक कहा। आदमी समय बचा लेगा तो फिर करेगा क्या? फिर उपद्रव करेगा।

इसलिए तुम्हें गरीब आदमी भला मालूम होता है, क्योंकि उसके पास समय नहीं है उपद्रव करने को। गरीब आदमी में और कुछ खूबी नहीं है। गरीबी में जो अध्यात्म मालूम होता है वह गरीबी में नहीं है; उसका असली कारण केवल इतना है, उसके पास उपद्रव का समय नहीं है। रोटी-रोजी कमाए कि लड़े-झगड़े? बच्चे पाले कि जुआ खेले? किसी तरह छप्पर बचाए, कपड़े लाए कि शराब पीए? समय उसके पास है नहीं। उसके पास सपने तक देखने का समय नहीं है। गत तत्त्व मोता है

कर्म बांधते हैं, लेकिन बांध ही नहीं लेते। कर्म जकड़ते हैं, लेकिन जकड़ ही नहीं लेते। उनकी जंजीरें हैं, लेकिन सब जंजीरें टूट जाती हैं। ऐसी कोई जंजीर नहीं है, जो न टूटे। और जो न टूटे, उसको जंजीर भी नहीं कह सकेंगे। जंजीर बांधती है, लेकिन सब जंजीरें खुलने की क्षमता रखती हैं। अगर ऐसी कोई जंजीर हो, जो फिर खुल ही न सके, तो उसको जंजीर भी नहीं कह सकिएगा। जंजीर वही है, जो बांध भी सके और खोल भी सके। कर्म बंधन है, इसी अर्थों में, कि निर्बंधन भी हो सकता है। और हमारी चेतना हमेशा स्वतंत्र है। हमने जो कदम उठाए हैं, हम जिस रास्ते पर चलकर आए हैं, उस पर लौटने को हम हमेशा स्वतंत्र हैं।

तो अतीत आपको बांधे हुए है, लेकिन भविष्य आपका मुक्त है। एक पैर बंधा है और एक खुला है। अतीत का एक पैर बंधा हुआ है, भविष्य का एक पैर खुला हुआ है। आप चाहें, तो इस भविष्य के पैर को भी उस दिशा में उठा सकते हैं, जिसमें आपने अतीत के पैर को बांधा है। आप बंधते चले जाएंगे। आप चाहें, तो इस भविष्य के पैर को अतीत की दिशा से विपरीत उठा सकते हैं। आप खुलते चले जाएंगे। यह आपके हाथ में है। उस स्थिति को हम मोक्ष कहते हैं, जहां दोनों पैर खुल जाएं। और उस स्थिति को हम परिपूर्ण निम्नतम नर्क कहेंगे, जहां दोनों पैर बंध जाएं।

इस वजह से, अतीत से घबराने की जरूरत नहीं है, न पिछले जन्मों से घबराने की जरूरत है। जिसने वे कदम उठाए थे, वह अब भी कदम उठाने को स्वतंत्र है।

ओशो ❤️❤️

ध्यान सूत्र, प्रवचन 8

इसलिए संभावना है कि जो बंधा है उसे मुक्त कर सकें उसके द्वारा जो कि अभी उठने को स्वतंत्र है। और यह भी संभावना है कि उसे भी बांध सकें उसके द्वारा जो कि बंधा है।

अतीत में आपने जो किया है, वह आपने किया है। आप स्वतंत्र थे करने को; आपने किया है। आपका एक हिस्सा जड़ हो गया है और परतंत्र हो गया है। लेकिन आपका एक हिस्सा अभी भी स्वतंत्र है, उसके विपरीत करने को आप मुक्त हैं। उसके विपरीत करके आप उसको खंडित कर सकते हैं। उससे भिन्न को करके आप उसे विनष्ट कर सकते हैं। उससे श्रेष्ठ को करके आप उसको विसर्जित कर सकते हैं। मनुष्य के हाथ में है कि वह अतीत-संस्कारों को भी धो डाले।

आपने कल तक क्रोध किया था, तो क्रोध करने को आप स्वतंत्र थे। निश्चित ही, जो आदमी बीस वर्षों से रोज क्रोध करता रहा है, वह क्रोध से बंध जाएगा। बंध जाने का मतलब यह है कि एक आदमी, जिसने बीस साल से क्रोध किया है निरंतर, वह एक दिन सुबह सोकर उठता है और अपने बिस्तर के पास अपनी चप्पलें नहीं पाता, एक यह आदमी है; और एक वह आदमी है जिसने बीस सालों से क्रोध नहीं किया, वह भी सुबह उठता है और बिस्तर के पास अपनी चप्पलें नहीं पाता; किस में इस बात से क्रोध के पैदा होने की संभावना अधिक है?

उस आदमी में, जिसने बीस साल से क्रोध किया, क्रोध पैदा होगा। इस अर्थों में वह बंधा है, क्योंकि बीस साल की आदत तत्क्षण उसमें क्रोध पैदा कर देगी कि जो उसने चाहा था, वह नहीं हुआ। इस अर्थों में वह बंधा है कि बीस साल का एक संस्कार उसे आज भी वैसे ही काम करने को प्रेरित करेगा कि करो, जो तुमने निरंतर किया है। लेकिन क्या वह इतना बंधा है कि क्रोधित न हो, यह उसकी संभावना नहीं है?

इतना कोई कभी नहीं बंधा है। अगर वह इसी वक्त सचेत हो जाए, तो रुक सकता है। और क्रोध को न आने दे, यह उसकी संभावना है। आए हुए क्रोध को परिणत कर ले, यह उसकी संभावना है। और अगर वह यह करता है, तो बीस साल की आदत थोड़ी दिक्कत तो देगी, लेकिन पूरी तरह नहीं रोक सकती है। क्योंकि जिसने आदत बनायी थी, अगर वह खिलाफ चला गया है, तो वह तोड़ने के लिए स्वतंत्र है। दस-पांच दफे के प्रयोग करके वह उससे मुक्त हो सकता है।

**Sanjeev Mishra**

1h · 🌐



एक मित्र ने पूछा है कि जन्म-जन्मांतरों से कर्मों के फलस्वरूप ही मनुष्य का कर्म-जीवन बंधा हुआ है। तो फिर इस जन्म में मनुष्य के अधिकार में क्या है? पूछा है कि अतीत के जीवन और अतीत के कर्म और अतीत में किए हुए जो भी जीवन के संस्कार हैं, यदि हम उनसे ही परिचालित होते हैं, तो अब हम क्या कर सकते हैं?

यह बहुत ही ठीक पूछा है। अगर यह बात सच हो कि मनुष्य बिलकुल अतीत के कर्मों से बंधा है, तो उसके हाथ में वर्तमान में करने को क्या रह जाएगा? और अगर यह सच हो कि मनुष्य अतीत के कर्मों से बिलकुल नहीं बंधा है, तो करने का फायदा क्या रह जाएगा? क्योंकि अगर अतीत के कर्मों से नहीं बंधा है, तो अभी जो करेगा, कल उनसे बंधा नहीं रह जाएगा। तो अगर आज शुभ करेगा, तो कल उसे शुभ के मिलने की संभावना नहीं होनी चाहिए। अगर अतीत के कर्मों से बंधा हो पूरी तरह, तो करने में कोई अर्थ नहीं होगा। क्योंकि कर ही नहीं सकता कुछ, पूरी तरह बंधा है। और अगर पूरी तरह स्वतंत्र हो, तो करने में कोई अर्थ नहीं होगा। क्योंकि वह कर लेगा और कल उससे मुक्त हो जाएगा, उसके साथ उसका किया हुआ नहीं होगा। इसलिए मनुष्य न तो पूरी तरह बंधा हुआ है और न पूरी तरह मुक्त है। उसका एक पैर बंधा है और एक खुला है।

एक दफा हजरत अली से किसी ने पूछा, ठीक यही बात पूछी। हजरत अली से किसी ने पूछा कि 'मनुष्य स्वतंत्र है या परतंत्र है अपने कर्मों में?' अली ने कहा, 'अपना एक पैर ऊपर उठाओ!'

अली ने कहा, अपना एक पैर ऊपर उठाओ। वह आदमी स्वतंत्र था, बायां उठाए या दायां उठाए। उसने अपना बायां पैर ऊपर उठाया। अली ने कहा, 'अब दूसरा भी उठा लो।' वह बोला, 'आप पागल हैं! दूसरा अब नहीं उठा सकता हूं।' अली ने कहा, 'क्यों?' उसने कहा, 'एक उठाने को स्वतंत्र था।' अली ने कहा, 'ऐसा ही मनुष्य का जीवन है। उसमें हमेशा दो पैर हैं आपके पास, और एक उठाने को आप हमेशा स्वतंत्र हैं, एक हमेशा बंधा हुआ है।'

इसलिए संभावना है कि जो बंधा है उसे मुक्त कर सकें उसके द्वारा जो कि अभी उठने को स्वतंत्र है। और यह भी संभावना है कि उसे भी बांध

भटकने पर बहुत ज्यादा परेशान
मत हो जाओ। भटकना भी
पहुंचने का हिस्सा है। संसार भी
परमात्मा के मार्ग पर पड़ता है।
गिरो! पड़े ही मत रहो, उठने
की चेष्टा जारी रहे। तो एक दिन
उठना हो जाएगा। जिसके भीतर
उठने की चेष्टा शुरू हो गई,
पहला कदम उठ गया। और एक
छोटे से कदम से हजारों मील की
यात्रा पूरी हो जाती है।

♥ ओशो ♥





V P Niki

28 minutes ago



भरोसा टूटा है वहम की
दवाई मत दो,

,

कहीं और जा कर शरीफ
बनो, मुझे सफाई मत दो।

ब्राह्मण सुधांशु Sudh

f Brahaminsud

Reply



CamScanner



ओशो का हिन्दी साहित्य

Sulaxna Dixit Rawat · 3d ·



मैंने सुना है: एक सूफी संत हुए-सूफी संत खैराबादी; वे अपने गुजारे के लिए सब्जी बेचा करते थे। भोले आदमी थे, सो बहुत लोग उन्हें खोटा सिक्का दे जाते थे। यहीं तक नहीं, कुछ चालाक आदमी तो यह खोटा सिक्का तुम्हारी दुकान से ही हमारे पास आया है, कह कर, उनसे बदलवा भी ले जाते थे। लेकिन खैराबादी उसे चुपचाप स्वीकार कर लेते। और जब भी कोई खोटा सिक्का उनको दे जाता, तो लोग हमेशा देखते कि-जब भी कोई खोटा सिक्का देता, तो वे आकाश की तरफ देखते और हाथ जोड़ते।

यह जिंदगी भर की उनकी आदत थी। फिर उनका अंत समय आया, तब उन्होंने प्रार्थना की, 'हे परवर दिगार, सारी जिंदगी मैं खोटे सिक्के स्वीकार करता रहा। किसी का भी खोटा सिक्का लेने से मैंने इनकार नहीं किया। मैं भी एक खोटा सिक्का हूं और अब तुम्हारे पास आ रहा हूं, मुझे वापस न लौटा देना!'

तब लोगों ने समझा कि वे जिंदगीभर क्यों आकाश की तरफ आंख उठा लेते थे-जब कोई खोटा सिक्का उनको दे जाता था। तब यही प्रार्थना वे जीवन भर करते रहे 'हे परवरदिगार, सारी जिंदगी मैंने खोटे सिक्के स्वीकार किए हैं। किसी का भी खोटा सिक्का लेने से मैंने इनकार नहीं किया। अब मैं भी एक खोटा सिक्का हूं; अब तेरे द्वार आ रहा हूं। मुझे इनकार मत कर देना!

यह है निर-अहंकार भाव-मैं भी एक खोटा सिक्का हूं।

परमात्मा के सामने तुम अहंकार लेकर जाओगे, तो जाओगे ही कैसे? अहंकार तो पत्थर की दीवाल की तरह तुम्हारे सामने खड़ा होगा। तुम परमात्मा को पा न सकोगे। तुम तो वहां मिट कर जाओगे, तो ही मिलन है।

ओशो





Like



Comment



Share



ॐ 🙏 अपरोक्षानुभूति 🙏 ॐ

Chainpal Singh · 8h · 🌐

...



उपनिषदों में जो प्रतीक कथाएं हैं वो अद्भुत हैं। कच को तीव्र जिज्ञासा हुई तो वृहस्पति के पास जाकर ज्ञान के लिए निवेदन किया और पूछा कि ब्रह्मज्ञान का उपाय क्या है? वृहस्पति बोले कि त्याग ही एकमात्र उपाय है। कच ने घर-बार त्याग दिया और वनवास करने लगा लेकिन कुछ न हुआ। फिर आया और बोला कि क्या उपाय है? वृहस्पति बोले कि त्याग ही उपाय है। कच ने खानपान भी छोड़ दिया लेकिन फिर कुछ न हुआ। फिर उसने शरीर त्याग का विचार किया तो वृहस्पति ने कहा कि जिस मन से संसार पकड़ा और अहंकार हुआ उसी मन से संन्यास पकड़ा, त्याग पकड़ा तो क्या फर्क हुआ? जिसमें पकड़ने और छोड़ने का विचार एक ही जगह उगता है उस मन का ही त्याग करो और फिर इस त्याग का भी त्याग करो तो जिसका त्याग नहीं हो सकता वह निर्विशेष ब्रह्म ही शेष रहेगा। कथा है कि कच को तत्काल ज्ञान हो गया।



9



Like



Comment



Send



Share



एकांत

Preeti Verma · 1h · 🌐

...



जिस उम्र में लड़कों को खुल कर मुस्कुराना था,
उस उम्र में बेरोजगारी ने डिप्रेशन में डाल रखा है..❤️
आज के उन लड़कों के लिए जो वास्तव में एक नेक दिल रखते हैं!!🙏



17

8 comments



Like



Comment



Send



ओशो का हिन्दी साहित्य

Sulaxna Dixit Rawat · 3d · 🌐

...



मैंने सुना है: एक सूफी संत हुए-सूफी संत खैराबादी; वे अपने गुजारे के लिए सबकी बेचन करने थे। भोले आदमी थे। जो बहुत लोग उन्हें खोया



मैं तो उसी भक्त को असली
आस्तिक मानता हु जो बीमारी में
तड़प तड़प कर मंदिर - मस्जिद
मे मर जाये, लेकिन दवा लेने
हॉस्पिटल ना जाये !
-पेरियार



थोड़ा भी जानो, लेकिन जानो।
अपने अनुभव से जानो।
थोड़ा भी जानो, लेकिन तुम्हारे ही जीवन का निचोड़ हो।
रस्तीभर काफी है,
लेकिन तुमने प्राणों को डालकर उसे सीखा हो। उधार न हो।
ऊपर-ऊपर न हो। सुना-सुनाया न हो।
तुम्हारे भीतर प्राणों ने गुनगुनाया हो।
तुमने अपनी आंख से जाना हो।
तुमने अपने हाथ से छुआ हो।
तो अल्पतम ज्ञान भी बहुत है।
~ Osho ~ Ananta



॥• आत्म दीपों भव •॥



बुद्ध मात्र ऐसे व्यक्ति है।

जिन्होंने कहा था। मेरी पूजा मत करना
मुझसे कोई उम्मीद मत रखना। मैं कोई
चमत्कार नहीं करूंगा। दुःख तुमने पैदा
किया है तुम्हें ही उसे दूर करना होगा
मैं जिस मार्ग पर चलता हूं वो मार्ग बता
सकता हूं। लेकिन उस मार्ग पर चलना
तुम्हें खुद होगा। मैं कोई भगवान नहीं हूं
मैं मुक्तिदाता नहीं, मार्गदाता हूं।
अपना प्रकाश स्वयं बनो।



13K



116



3.1K



Send



mr_prasad_surya_01

Jay bhim namo buddha 🙏🙏🙏🙏



बुद्ध कहते हैं प्रकृति ही ईश्वर है!

विज्ञान ही सत्य है!

इंसानियत ही धर्म है!

और कर्म ही पूजा हैं!

मानवता ही श्रेष्ठ धर्म है!

एवं मानव की मदद करना सर्वोपरि है!



sahityasathi

तर्क युक्त बातें



साधु सन्तों व साध्वियों का
राजनीति में आना ये साबित करता है
कि ईश्वर एक भ्रम है, मन्दिर में कुछ नहीं है,
संसद में सबकुछ मिलता है !



36K

- ओशो



315



3.9K

Use audio



sahityasathi

बात सच हैं..... सत्ता तो मोह माया है।... more



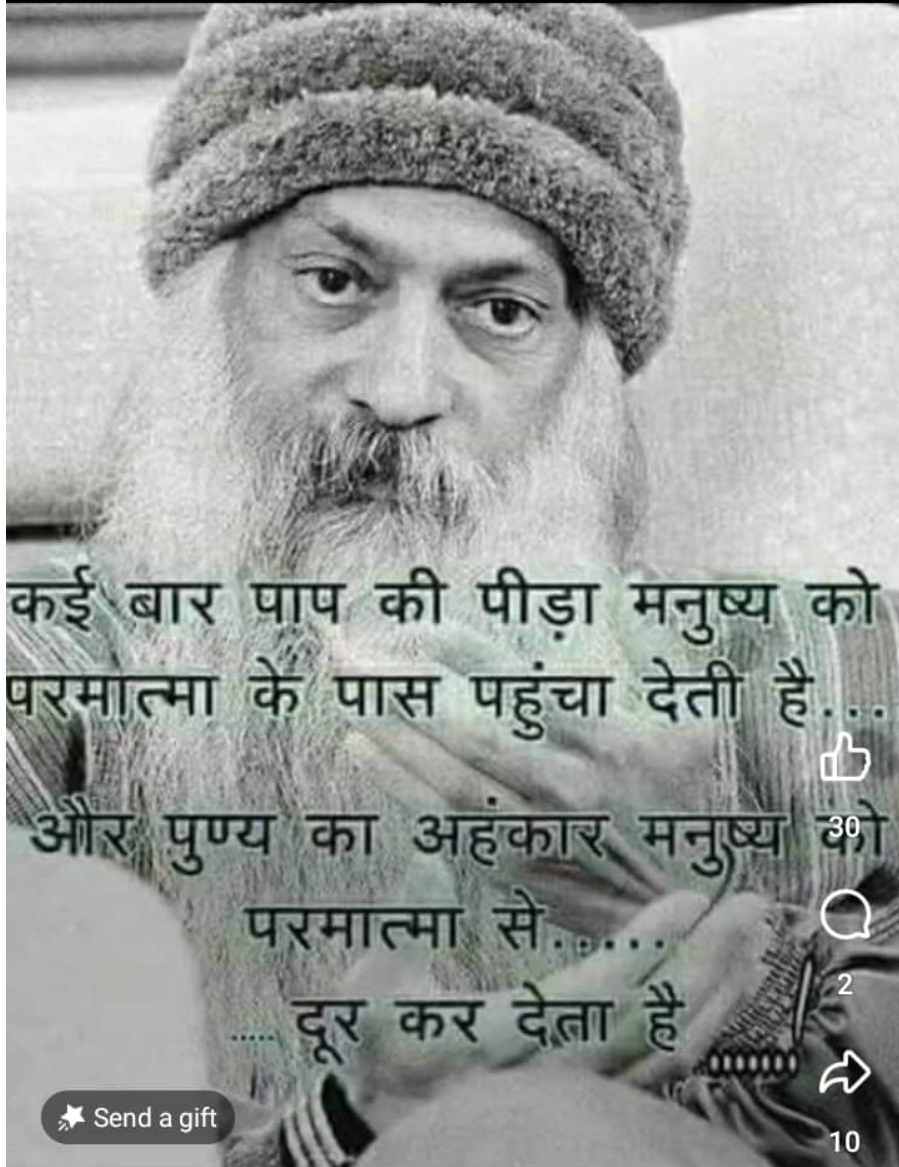
Send

ntal)

Shankar Eh:

OLD FILM^ by _gho





कई बार पाप की पीड़ा मनुष्य को
परमात्मा के पास पहुंचा देती है....

और पुण्य का अहंकार मनुष्य को
परमात्मा से.....

..... दूर कर देता है



★ Send a gift



OSHO Acharya Rajneesh Real Mystic

ओशो ध्यान नमन 🙏🕯️🕯️🕯️🕯️🕯️... more



Send



Buddha's Flute · Osho



Add a comment...



परा-मनोविज्ञान कहता है कि शरीर के
छूटने के बाद कुछ घंटे लग जाते हैं
आत्मा को यह समझने में कि मेरी मृत्यु
हो गई।



SH



कितने तरह के क्रियाकांडों में लोग लगे हैं।
आचरण साध रहे हैं; ऐसा करना, वैसा करना,
यह खाना, वह खाना, यह छोड़ना। कोई नमक
छोड़े बैठा है, कोई घी छोड़े बैठा है। किसी ने
कुछ, किसी ने कुछ। इतनी छोटी-छोटी बातें
तुम जो कर रहे हो, इनसे क्या सार है? यह देह
जिसमें घी जाता है, जल जाएगी; फिर चाहे घी
डालो और चाहे न डालो। यह देह जिसमें नमक
जाता है, मिट्टी में मिल जाएगी; फिर नमक डालो
कि न डालो। तुम्हारे आचरण देह से भीतर जाते
नहीं। और जाना है देह के भीतर। पाना है देह के
भीतर। खोजना है उसे जो देहातीत है। आचरण
तो देह का ही होता है। स्नान कर लिया, रामनाम
चदरिया ओढ़ ली। बैठ गए, उपवास कर लिया
एक दिन। कभी घी छोड़ दिया, कभी नमक
छोड़ दिया। माला भी डाल ली तो कुछ होगा
नहीं; जब तक कि तुम उसकी माला के मनके
न बन जाओ। और क्या हुआ अगर तिलक भी
लगा लिया! ये सब बाहर के प्रतीक हैं, इन पर
रुक मत जाना।



24



7



★ Send a gift

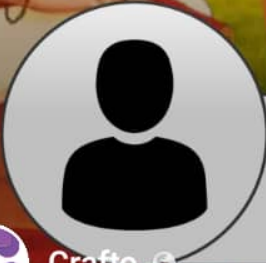
Send



सुविचार

ईश्वर ने संसार को
कर्म प्रधान बना रखा है,
इसमें जो मनुष्य
जैसा कर्म करता है
उसको, वैसा ही फल
प्राप्त होता है।
-गोस्वामी तुलसीदास

37K

 **आपका फोटो**

894

 Crafto

 अपने फोटो के साथ सुविचार पाए

Install now

Sponsored

Add a comment... @



SUBSCRIBE

ध्यान से देखिये



7.7K



52

वक़्त बदलते देर नहीं लगती इसलिये
कभी अहंकार मत करें



1.4K



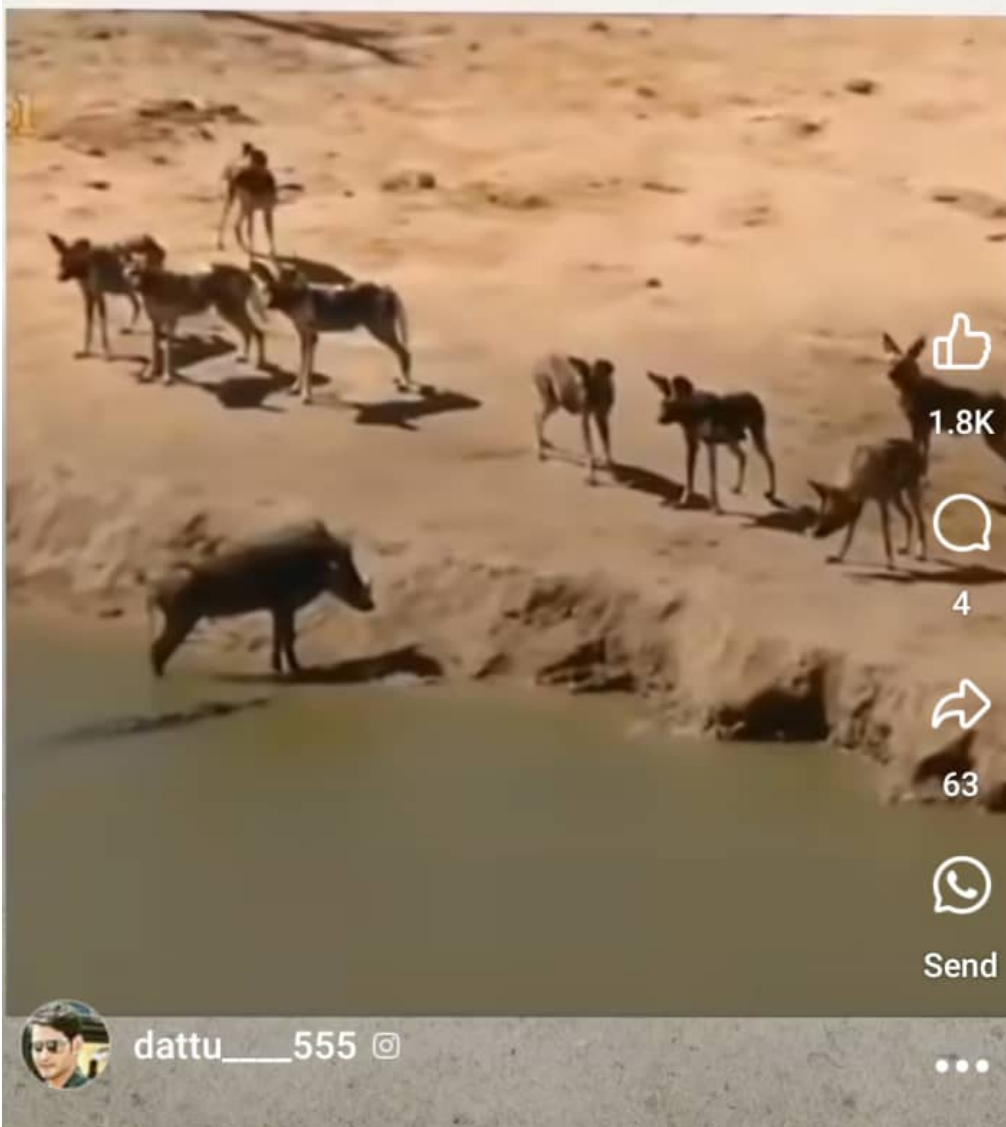
ओशो



भोजन से ऊर्जा मिलती है...
नींद में ऊर्जा संग्रहित होती है...
जागरण में खर्च होती है...
प्राणायाम और व्यायाम से जागती...
धारणा से केंद्रित होती...
ध्यान से ऊपर चढ़ती...
भय से सिकुड़ती...
वासना से नीचे गिरती है
प्रेम में फैलती और विस्तृत होती,
और समाधी में विराट के साथ
एक होती है,
उसमें विलीन होती है।
यह ऊर्जा का पूरा विज्ञान है।



सुना था आज देखा लिया इसे कहते
हैं एक तरफ कुआ और दूसरी तरफ
खाई 🥺💔



dattu__555



**Naye bharat ke khoj**

1h · 🌐

हमने ज्ञानियों को परमहंस कहा है। तुमने कभी समझा, क्यों? दो कारणों से। एक तो हंस सार को असार से अलग कर लेता है। और दूसरा, हंस सभी दिशाओं में गतिवान है। वह जल में तैर सकता है, जमीन पर चल सकता है, आकाश में उड़ सकता है। उसके स्वातंत्र्य पर कहीं कोई सीमा नहीं है। जमीन हो तो चल लेता है। सागर हो तो तैर लेता है। आकाश हो तो उड़ लेता है। तीनों आयामों में, तीनों डायमेंशन्स में उसके लिए कहीं कोई रुकावट नहीं है। जिस दिन तुम सार और असार को पहचानने लगोगे, उस दिन तुम्हारा स्वातंत्र्य भी इतना ही अपरिसीम हो जाएगा जैसा हंस का। इसलिए हमने ज्ञानियों को परमहंस कहा है।

न जानने से ही बंधें हो। जमीन पर ही ठीक से रहना नहीं आता, पानी पर चलने की तो बात अलग! आकाश में उड़ना तो बहुत दूर! शरीर में ही ठीक से रहना नहीं आता, मन की तो बात अलग, आत्मा की तो बात बहुत दूर!

शरीर यानी जमीन। मन यानी जल। आत्मा यानी आकाश। इसलिए मन जल की तरह तरंगायित। शरीर थिर है पृथ्वी की तरह। सत्तर साल तक डटा रहता है। गिर जाता है उसी पृथ्वी में जिससे बनता है। मन बिलकुल पानी की तरह है। पारे की तरह कहो। छितर-छितर जाता है। आत्मा आकाश की तरह निर्मल है। कितने ही बादल घिरे, कोई बादल धुएं की एक रेखा भी पीछे नहीं छोड़ गया। कितनी ही पृथ्वियां बनीं और खो गयीं। कितने ही चांद-तारे निर्मित हुए और विलीन हो गए। आकाश कूटस्थ है, अपनी जगह, हिलता-डुलता नहीं।

शरीर में ही रहना तुमसे नहीं हो पाता, मन की तो बात अलग। मन में जाते ही चिंता पकड़ती है। विचारों का ऊहापोह पकड़ता है। आत्मा तो फिर बहुत दूर है। क्योंकि आत्मा यानी निर्विचार ध्यान, आत्मा यानी समाधि, आकाश, मुक्त, असीम!

ओशो

एस धम्मो संनतनो-(भाग 2)

